॥ सेवक महावीर शरन् ॥

श्रीरामायणी माधवदासजी,
तच्छिष्य रामायणी रामदासजी,

श्रीमते हनुमते नमः

श्रीरामचरित्र मानस रामायण की

॥ भूमिका ॥

सर्व सज्जन महानुभावोंको इस अपार संसार सागर में डूबते हुए जीवों के नाना प्रकार पाखण्ड मतवादी ग्राहादि जल जन्तुओं के भयसे अत्यन्त व्याकुल जीवों को उद्धारणार्थ तथा देवादिकों को भी अत्यन्त दुर्लभ अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ के प्राप्त करने वाले शरीर को व्यर्थ खोते हुये मनुष्यों के उपकारार्थ परम कृपाधाम चारों वेद अठारहों पुराण छवों शास्त्राखिल विद्यापारावारीण अशरण शरण श्री जानकी रमण पदपद्म पराग लुब्ध मधुकर श्री १०८ श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी ने कोटिन कामधेनु कल्पवृक्ष के महिमाको अति क्रमण करनेवाला श्रीरामचरित मानसरामायण नामक ग्रन्थको निर्म्माण करिके हरिनामामृत वारिकी धारा छोड़ करते हुये सज्जन महानुभावोंका हृदयरूप क्षेत्र में कल्पलतासी लहलहाती हुई प्रेम भक्ति को बढ़ाये श्रीसीताराम भक्तिवर्द्धनी कथा में आगार बहुतसे दुर्जन लोगोंने अमृतके तुल्य गोस्वामी जी की उक्तिमें विषरूपी क्षेपक मिलाकर दूषित करदिया इससे श्रीरामायण कथानुरागियों को पठन पाठन में बहुतक्लेश होता रहा और कई एक यंत्रालय में शुद्धकरिके मुद्रित की गई जैसे श्रीकाशी निवासी श्रीमान पण्डित बन्दन पाठकजी इत्यादिके शोधे हुये पुस्तक छपने पर भी महाशयों की शंका निवृत्ति नहुई इस हेतु श्रीअयोध्या निवासी परम वैष्णव श्री १०८ श्रीमहाराज रामायणी माधवदासजी के मु० शिष्य. रामदास जीने बड़े परिश्रमसे जो प्रति सम्वत् १६६१ का लेख श्रीअयोध्या पुरीमें मधुरअली जीके स्थानमें है उससे प० रामगुलाम मिर्जापुर निवासीने १८१४ के सम्वत्की लिखीपुस्तकसे लिखी. उसपरसे लाला छक्कनलाल मिर्जापुर वासीने लिखी और श्रीकाशीजीमें छोटी पियरीपर भगवतदास

शास्त्री के पास १७२१ के सम्वत् की लिखी पुस्तक और दो पोथी १७९८ के सम्वत की लिखी मिली इन पुस्तकों से श्री बन्दन पाठक जी ने पं० रामकुमार जी रामायणी की पोथी पुस्तक से अति परिश्रम से यथार्थ पाठ शुद्ध करके श्री रामायणानुरागियों के लिये नूतन आवृत्ति छपवाई परन्तु अत्यन्त शुद्ध होने के कारण थोड़े ही समय में हाथों हाथ आदर पूर्वक महाशयों ने ग्रहण कर लिया अब थोड़े समय पर एक प्रति भी न रही और सज्जनों की आशा न पूरी होने के कारण नौवीं आवृत्ति पुनः उक्त रामायणी जी से संशोधन कराके अति उत्तम चिकने कागज में श्री अयोध्या निवासी स्वर्गीय महंत श्री विश्वनाथ दास जी के शिष्य व जगोपाल पाठशालाध्यक्ष श्रीमान् महन्त रामदास जी की सहायता से छपवा के प्रकाशित किया वर्तमान समय में कागज व स्याही वगैरह के अत्यन्त महंगे होने पर भी ग्राहक सज्जनों के सुभीते के लिये मूल्य केवल दो ही २) रुपया रक्खा गया है और श्री रामायणी जी ने अपनी शोधी हुई रामायण तथा अपने नाम को सदा के लिये सर्वाधिकार हम को दे दिया है जिससे कोई महाशय उक्त रामायणी जी के नाम से छपा नहीं सकते हैं रामायण जी की शोधी हुई प्रति में यदि किसी महाशय को शंका किसी पाठ में भ्रम हो तो महात्मा जी से संदेह निवारण करके पाठ ठीक करें ॥

शंकानिवृत्त करने का पता

रामायणी रामदास जी प्रमोदवन
श्री रामायणी जी की कुटिया
श्री अयोध्याजी

पुस्तक मिलने का पता

मुंशी मथुराप्रसाद
बुकसेलर श्री अयोध्याजी (अवध)

नोट — डाक महसूल [illegible] पुस्तक लेते समय ऊपर [illegible]

* श्रीः *

अथ श्री १०८ महोस्वामि तुलसीदासजीकृत

श्रीरामचरित्र मानस

रामायण का मुखपत्र

श्री १०८ महाराज परम बैष्णव श्रीअयोध्या निवासी श्रीरामायणी माधवदासजी की शुद्ध की हुई सम्बत् १६६१ की लिखी हुई पुस्तक जो अयोध्या में श्री मधुर अली जी के स्थान में स्थित है उसी के अनुकूल तथा अन्य प्रतियोंसे मिलाकर चतुर्थावृत्ति छापनेको पं० रामरत्न बाजपेयी जी को दी थी परन्तु ईश्वरेक्षा आपका स्वास्थ्य अच्छा न था इस कारण छापेखाने की गल्ती से कुछ अशुद्धियां हो गई हैं जिनका शुद्धाशुद्ध पत्र प्रत्येक काण्ड के अखीर में लगा है जो कोई रामायण अनुरागी पाठ करें व पढ़ें वह शुद्धाशुद्ध पत्र के अनुकूल शुद्ध करलेवें।

ता० ११-७-१८

आप का
श्री रामायणी रामदास जी
श्री रामायणी जी की कुटिया
अयोध्या जी.

❋ श्रीः ❋

सीता स्वामी विजयतेतराम् ।

अथ रामायण बालकाण्डम् ॥

श्लोकाः——वर्णानामर्थसंघानांरसानांछन्दसामपि ॥ मंगलानांचकर्त्तारौ वंदेवाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशंकरौवंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥ याभ्यांविनानपश्यंतिसिद्धा स्वांतस्थमीश्वरं ॥ २ ॥ बंदेबोधमयंनित्यं गुरुंशंकररूपिणं ॥ यमाश्रितोहिवक्रोपिचन्द्रःसर्वत्रवंद्यते ॥ ३ ॥ सीता रामगुणग्रामपुण्यारण्यबिहारिणौ ॥ बंदेविशुद्धविज्ञानौकवीश्वरकपी श्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थिति संहारकारिणींक्लेशहारिणीम् ॥ सर्वश्रेयस्करीं सीतांनतोहंरामवल्लभाम् ॥ ५ ॥ यन्मायावशवर्तिविश्वमखिलंब्रह्मादि देवासुरा । यत्सत्वादमृषैवभातिसकलंरज्जौयथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादप्लवमेक मेवहिभवांभोधस्तितीर्षावतां ॥ वंदेहंतमशेषकारणपरंरामाख्यमीशंह- रिम् ॥ ६ ॥ नानापुराणनिगमागमसंमतंयद्रामायणेनिगदितंक्वचिदन्य तोपि ॥ स्वांतःसुखायतुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबंधमतिमंजुल मातनोति ॥ ७ ॥

सो॰ जो सुमिरत सिधिहोइ, गननायक करिवर वदन ॥
करौ अनुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभगुन सदन ॥ १ ॥
मूकहोइ वाचाल, पंगुचढइ गिरिवर गहन ॥
जासुकृपासो दयाल, द्रवौसकल कलिमल दहन ॥ २ ॥
नीलसरोरुह स्याम, तरुन अरुन वारिज नयन ॥
करौ सो मम उरधाम, सदा छीर सागर सयन ॥ ३ ॥
कुंद इंदुसम देह, उमा रमन करुनाअयन ॥

जाहि दीनपर नेह, करौ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥
बंदौं गुरुपद कंज, कृपासिंधु नर रूप हरि ॥
महा मोहतमपुंज, जासु वचन रविकर निकर ॥ ५ ॥

बंदौं गुरु पद पदुम परागा ❋ सुरुचिसुबास सरसअनुरागा
अमिअमूरि मय चूरनचारू ❋ समनसकलभवरुजपरिवारू
सुकृतसंभुतन विमलविभूती ❋ मंजुल मंगल मोद प्रसूती
जनमनमंजुमुकुरमल हरनी ❋ कियेतिलकगुनगनबसकरनी
श्रीगुर पदनषमनिगनजोती ❋ सुमिरतदिव्यदृष्टिजेहिहोती
दलन मोह तमसो सुप्रकासू ❋ बडे भाग उर आवै जासू
उघरहिंबिमलबिलोचनहीके ❋ मिटहिं दोषदुषभवरजनीके
सूझहिंरामचरितमानिमानिक ❋ गुपुतप्रगटजहँजो जेहिषानिक

दो॰ जथा सु अंजन अंजि दृग, साधक सिद्ध सुजान ॥
कौतुक देषहिं सैलबन, भूतल भूरि निधान ॥ १ ॥

गुरुपद मृदुमंजुलरजअंजन ❋ नयनअमियदृगदोषविभंजन
तेहिकरिबिमलविवेकबिलोचन ❋ बरनउंरामचरित भवमोचन
बंदौं प्रथम मही सुर चरना ❋ मोहजनित संसयसब हरना
सुजनसमाजसकलगुनषानी ❋ करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी
साधुचरितसुभसरिसकपासू ❋ निरसबिसदगुनमयफलजासू
जोसहिदुष पर छिद्रदुरावा ❋ बंदनीय जेहिंजग जसपावा
मुदमंगल मय संत समाजू ❋ जोजग जंगम तीरथ राजू
रामभगतिजहँसुरसरिधारा ❋ सरसै ब्रह्म बिचार प्रचारा
बिधिनिषेधमयकलिमलहरणी ❋ करमकथारविनंदिनि बरनी
हरिहर कथा बिराजतिबेनी ❋ सुनत सकल मुदमंगलदेनी

वटबिश्वासअचलनिजधर्मा ❋ तीरथ राजसमाज सुकर्मा
सबहिसुलभसबदिनसबदेसा ❋ सेवत सादर समन कलेसा
अकथ अलौकिकतीरथराऊ ❋ देइसद्य फलप्रगट प्रभाऊ
दो० सुनिसमुझहिं जनमुदितमन, मज्जहिंअतिअनुराग ।
लहहिं चारिफल अछततन, साधु समाज प्रयाग २ ॥
मज्जनफलपेषिअततकाला ❋ काकहोहिं पिकबकोमराला
सुनिआचरजकरै जनिकोई ❋ सतसंगति महिमानहिंगोई
बाल्मीक नारद घट जोनी ❋ निजरमुषनिकहीनिजहोनी
जलचरथलचरनभचरनाना ❋ जे जड चेतन जीवजहाना
मतिकीरतिगतिभूतिभलाई ❋ जबजेहिजतनजहांजेहिपाई
सो जानब सतसंग प्रभाऊ ❋ लोकहु बेद नआन उपाऊ
विनु सतसंग बिवेक न होई ❋ रामकृपा बिनु सुलभ नसोई
सत संगति मुदमंगल मूला ❋ सोइफलसिधिसबसाधनफूला
सठसुधरहिं सतसंगति पाई ❋ पारस परस कुधातु सुहाई
बिधिवससुजनकुसंगतिपरहीं ❋ फनिमनिसमनिजगुनअनुसरहीं
बिधिहरिहरकबिकोबिदबानी ❋ कहतसाधुमहिमासकुचानी
सोमोसन कहिजातन कैसे ❋ साकबनिकमनिगनगुनजैसे
दो० बंदौं संत समानचित, हित अनहित नहिं कोउ ।
अंजलिगतसुभ सुमन जिमि, समसुगंध करदोउ ॥
संतसरल चितजगत हित, जानि सुभाउ सनेहु ।
बाल बिनय सुनिकरि कृपा, राम चरन रतिदेहु ॥ ३ ॥
बहुरिबंदि षलगन सतिभाए ❋ जेबिनुकाज दाहिनहु बांए
परहितहानिलाभ जिन्हकेरे ❋ उजरे हरष बिषाद बसेरे

हरि हर जस राकेस राहुसे * पर अकाजभट सहसबाहुसे
जेपरदोष लषहिं सह साषी * परहितघृतजिनकेमनमाषी
तेज कृसानु रोष महिषेसा * अघअवगुन धनधनीधनेसा
उदय केतुसमहित सबहीके * कुंभकरन समसोवत नीके
परअकाजलगितनपरिहरहीं * जिमिहिमउपलकृषीदलिगरहीं
बंदौं षल जस सेष सरोषा * सहस बदन बरनै परदोषा
पुनि प्रनवौंपृथुराज समाना * पर अघसुनै सहसदसकाना
बहुरि सक्र समबिनवौंतेही * संतत सुरा नीक हित जेही
बचनबज्र जेहिसदापिआरा * सहस नयन परदोषनिहारा

दो० उदासीन अरिमीतहित, सुनत जरहिं षलरीति ।
जानिपानिजुगजोरिकरि, बिनती करउं सप्रीति ॥ ४॥

मैंअपनीदिसिकीन्हनिहोरा * तिन्हनिजओरनलाउबभोरा
बायसपलिअहिअतिअनुरागा * होंहिंनिरामिषकबहिंकिकागा
बंदौं संत असज्जन चरना * दुषप्रदउभय बीचकछुबरना
बिछुरत एक प्रान हरिलेई * मिलत एक दारुन दुष देई
उपजहिं एकसंग जगमाहीं * जलजजोंकजिमिगुनबिलगाहीं
सुधासुरा समसाधु असाधू * जनकएकजगजलधिअगाधू
भलअनभलनिजनिजकरतूती * लहतसुजसअपलोकबिभूती
सुधासुधाकर सुरसरि साधू * गरलअनलकलिमलसरिब्याधू
गुनअवगुन जानतसबकोई * जो जेहि भाव नीकतेहिसोई

दो० भलो भलाइहिपै लहै, लहै निचाइहि नीच ।
सुधा सराहिअ अमरता, गरल सराहिअ मीच ॥ ५॥

[illegible]साधुगुनगाहा * उभयअपार उदधिअवगाहा

तेहिते कछुगुन दोष बषाने ❋ संग्रहत्यागन बिनु पहिचाने
भलेउपोचसबविधिउपजाए ❋ गनि गुनदोष बेद बिलगाए
कहहिं बेद इतिहास पुराना ❋ बिधिप्रपंचगुनअवगुनसाना
दुष सुष पापपुन्य दिनराती ❋ साधुअसाधुसुजातिकुजाती
दानव देव ऊंच अरु नीचू ❋ अमिअसजीवनमाहुरमीचू
माया ब्रह्म जीव जगदीसा ❋ लच्छिअलच्छिरंकअवनीसा
कासीमगसुरसरिक्रमनासा ❋ मरु मालव महिदेव गवासा
सरगनरक अनुराग बिरागा ❋ निगमअगम गुनदोषबिभागा

दो॰ जड चेतन गुन दोष मय, बिश्व कीन्ह करतार।
संतहंस गुनगहहिं पय, परि हरि बारि बिकार ॥ ६ ॥

असबिबेक जबदेइ बिधाता ❋ तबताजिदोषगुनहिंमनराता
काल सुभाउ करमबरिआई ❋ भलेउ प्रकृतिबमचुकइभलाई
सोसुधारिहरिजनाजिमिलेहीं ❋ दलिदुखदोष बिमलजसदेहीं
षलउ करहि भलपाइ सुसंगू ❋ मिटइनमलिनसुभाउअभंगू
लषि सुवेष जग बंचक जेऊ ❋ बेष प्रताप पूजिअहि तेऊ
उघरहिं अंत न होइ निबाहू ❋ कालनेमि जिमिरावनराहू
किएहुँ कुबेष साधु सनमानू ❋ जिमिजग जामवंत हनुमानू
हानि कुसंग सुसंगति लाहू ❋ लोकहु वेदबिदित सबकाहू
गगन चढै रजपवन प्रसंगा ❋ कीचहि मिलइनीचजलसंगा
साधुअसाधुसदनसुकसारी ❋ सुमिरहिं रामदेहिं गनिगारी
धूम कुसंगति कारिष होई ❋ लिषिअ पुरानमंजुमसि सोई
सोइजलअनलअनिलसंघाता ❋ होइजलदजग जीवन दाता
दो॰ ग्रह भेषजजल पवनपट, पाइ कुजोग सुजोग।

होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग, लषहिं सुलच्छन लोग ॥
सम प्रकास तम पाषदुहूं, नाम भेद बिधि कीन्ह ।
ससिपोषकसोषक समुझि, जगजस अपजस दीन्ह ॥
जड़चेतन जग जीवजत, सकल राममय जानि ।
बंदौं सबके पद कमल, सदा जोरि जुग पानि ॥
देव दनुज नर नाग षग, प्रेत पितर गंधर्व ।
बंदौं किन्नर रजनिचर, कृपाकरहु अब सर्व ॥ ७ ॥

आकर चारिलाष चौरासी ❋ जातिजीवनभजलथलबासी
सीयराममय सबजगजानी ❋ करौं प्रनाम जोरि जुगपानी
जानि कृपाकर किंकर मोहू ❋ सबमिलिकरहुछाडिछलछोहू
निजबुधिबलभरोसमोहिनाहीं ❋ तातेंबिनय करौं सबपाहीं
करनचहौं रघुपतिगुनगाहा ❋ लघुमतिमोरिचरितअवगाहा
सूझन एकौ अंग उपाऊ ❋ मनअति रंक मनोरथ राऊ
मतिअतिनीचिऊंचिरुचिआछी ❋ चहिअअमिअजग जुरैनछाछी
छमिहहिंसज्जनमोरिढिठाई ❋ सुनिहहिं बालबचनमनलाई
ज्योंबालक कहतोतरिबाता ❋ सुनहिंमुदितमनपितुअरुमाता
हँसिहहिंकूरकुटिलकुबिचारी ❋ जे परदूषन भूषन धारी
निजकबित्तकेहिलागन नीका ❋ सरसहोउअथवाअतिफीका
जेपरभनितिसुनत हरषाहीं ❋ ते बरपुरुष बहुत जग नाहीं
जगबहुनर सरिसरसमभाई ❋ जेनिज बाढ़िबढ़हिं जलपाई
सज्जनसकृत सिंधुसमकोई ❋ देषि पूर बिधुबाढ़ै जोई

दो॰ भाग छोट अभिलष बड़, करउँ एक बिस्वास ।
पैहहिं सुष सुनि सुजन जन, षलकरिहहिं उपहास ॥ ८ ॥

षलपरिहास होइ हितमोरा * काक कहहिं कलकंठकठोरा
हंसहि बकगादुर चातकही * हँसहिंमलिनषलबिमलबतकही
कबितरसिक न रामपदनेहू * तिन्हकहँ सुषदहाँसरसएहू
भाषाभनितिभोरिमतिमोरी * हँसिबे जोगहँसे नहिं षोरी
प्रभुपदप्रीतिनसामुझिनीकी * तिन्हहिंकथासुनिलागिहिफीकी
हरिहरपदरतिमतिनकुतरकी * तिन्हकहँमधुरकथा रघुबरकी
रामभगतिभूषित जिअजानी * सुनिहहिंसुजनसराहि सुबानी
कबिनहोउँ नहिंचतुरप्रबीनू * सकल कला सब बिद्याहीनू
आषरअरथ अलंकृतनाना * छंद प्रबंध अनेक बिधाना
भाव भेद रस भेद अपारा * कबितदोषगुनबिबिधिप्रकारा
कबित बिबेक एकनहिंमोरे * सत्यकहौंलिखि कागदकोरे

दो॰ भनिति मोरि सबगुनरहित, बिस्वबिदित गुनएक।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति, जिन्हकें बिमलबिबेक९

एहिमहरघुपतिनामउदारा * अतिपावनपुरान श्रुतिसारा
मंगल भवन अमंगल हारी * उमासहितजेहिजपतपुरारी
भनितिबिचित्रसुकबिकृतजोऊ * रामनाम बिनु सोहतसोऊ
बिधुबदनी सबभांति सँवारी * सोह न बसन बिना बरनारी
सबगुनरहितकुकबिकृतबानी * रामनामजस अंकितजानी
सादरकहहिंसुनहिंबुधताही * मधुकरसरिससंत गुनग्राही
जदपिकबित रसएकौ नाहीं * रामप्रताप प्रगटएहि माहीं
सोइभरोस मोरे मन आवा * केहिनसुसंग बड़पन पावा
धूमौ तजै सहज करुआई * अगर प्रसंग सुगंध बसाई
भनितिभदेसबस्तुभलिबरनी * रामकथा जगमंगल करनी

छं० मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथा रघुनाथकी
गति कूरकविता सरितकीज्यों सरित पावन पाथकी
प्रभुसुजस संगतिभनितिभलिहोइहि सुजनमनभावनी
भवअंगभूति ससान की सुमिरत सुहावनि पावनी

दो० प्रियलागिहि अतिसबहि मम, भनिति रामजससंग।
दारु बिचारुकि करइकोउ, बंदिय मलय प्रसंग॥
स्यामसुरभि पय बिसद अति, गुनदकरहिं सब पान।
गिरा ग्राम्य सियराम जस, गावहिं सुनहिं सुजान १०॥

मनिमानिकमुकुताछबिजैसी * अहिगिरि गजसिरसोहनतैसी
नृपकिरीट तरुनी तनुपाई * लहहिंसकलसोभाअधिकाई
तैसेहिसुकबिकबितबुधकहहीं * उपजहिं अनतअनत छबिलहहीं
भगतिहेतुबिधिभवनबिहाई * सुमिरत सारद आवतिधाई
रामचरितसरबिनुअन्हवाए * सोश्रमजाय न कोटि उपाए
कबिकोबिदअसहृदयबिचारी * गावहिंहरिजसकलिमलहारी
कीन्हेप्राकृतजन गुनगाना * सिरधुनिगिरालगतिपछिताना
हृदयसिंधुमतिसीपिसमाना * स्वातीसारद कहहिं सुजाना
जौबरषै बर बारि बिचारू * होहिंकबितमुकुतामनिचारू

दो० जुगुति बेधिपुनि पोहिअहि, रामचरित बर ताग।
पहिरहिं सज्जन बिमलउर, सोभा अति अनुराग ११

जेजनमें कलिकाल कराला * करतबबायस बेष मराला
चलतकुपंथ बेद मग छांडे * कपटकलेवरकलिमल भांडे
बंचक भगत कहाइ रामके * किंकर कंचन कोह कामके
तिन्ह महँप्रथम रेषजगमोरी * धिगधरमध्वज धंधकधोरी

जौं अपने अवगुनसब कहऊँ * बाढैकथा पार नहिं लहऊँ
तातें मैं अति अलप बषाने * थोरेहिमहँजानिहहिंसयाने
समुझि बिबिधिबिनतीअबमोरी * कोउनकथासुनिदेइहि षोरी
एतेहु पर करिहहिं जेअसंका * मोहुतेअधिकतेजडमतिरंका
कबिनहोउंनहिंचतुरकहावौं * मतिअनुरूप रामगुनगावौं
कहँरघुपतिके चरित अपारा * कहँमतिमोरि निरतसंसारा
जेहिमारुत गिरिमेरुउडाहीं * कहहु तूल केहिलेषे माहीं
समुझत अमितिराम प्रभुताई * करतकथामन अतिकदराई

दो० सारद सेष महेस बिधि, आगम निगम पुरान।
नेतिनेति कहिजासुगुन, करहिं निरंतर गान १२॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई * तदपि कहेबिनु रहा न कोई
तहां वेद अस कारण राषा * भजनप्रभाउभांतिबहुभाषा
एकअनीह अरूप अनामा * अज सच्चिदानंद परधामा
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना * तेहिधरिदेहचरित कृतनाना
सो केवलभगतन्ह हितलागी * परमकृपाल प्रनत अनुरागी
जेहिजनपर ममता अतिछोहू * तेहि करुनाकर कीन्हनकोहू
गई बहोरि गरीब नेवाजू * सरल सबल साहेब रघुराजू
बुधवरनहिंहरिजसअसजानी * करहिंपुनीतसुफलनिजबानी
तेहिबल मैं रघुपति गुनगाथा * कहिहउँ नाइ राम पद माथा
मुनिन्हप्रथमहरि कीरतिगाई * तेहि मगचलतसुगममोहिंभाई

दो० अति अपार जे सरित बर, जौं नृप सेतु कराहिं।
चढिपिपीलको परम लघु, बिनुश्रमपारहिंजाहिं १३॥

एहिप्रकारबलमनहिं देखाई * करिहौं रघुपति कथा सुहाई

व्यासआदिकबिपुंगवनाना ❀ जिन्ह सादर हरि सुजसबषाना
चरन कमल बंदौं तिन्हकेरे ❀ पुरवहु सकल मनोरथ मेरे
कलिकेकबिन्ह करौं परनामा ❀ जिन्हबरनेरघुपतिगुनग्रामा
जे प्राकृतकबि परम सयाने ❀ भाषाजिन्हहरिचरितबषाने
भयेजे अहहिंजेहोइहहिं आगे ❀ प्रनवौं सबनि कपट छलत्यागे
होहु प्रसन्न देहु बरदानू ❀ साधुसमाजभनितिसनमानू
जो प्रबंध बुधनाहिं आदरहीं ❀ सोस्रमबादिबालकबि करहीं
कीरतिभनितिभूति भलिसोई ❀ सुरसरिसमसबकहं हितहोई
रामसुकीरति भनिति भदेसा ❀ असमंजसअसमोहिं अंदेसा
तुम्हरीकृपासुलभ सो उमोरे ❀ सिअनिसुहावनि टाटपटोरे
करहुअनुग्रहअसजियजाना ❀ बिमलजसहिअनुहर सुबानी

दो० सरल कबित कीरति बिमल, सोइ आदरहिं सुजान।
सहज बयर बिसराइरिपु, जो सुनि करहिं बषान॥
सोनहोइबिनुबिमलमति, मोहि मतिबलअतिथोरि।
करहु कृपाहरि जसकहौं, पुनि पुनि करौं निहोरि॥
कबिकोबिदरघुबरचरित, मानस मंजु मराल।
बालबिनयसुनि सुरुचिलषि, मोपर होहु कृपाल॥

सो० बंदौं मुनि पद कंज, रामायनजेहि निरमयेउ।
षर सकोमल मंजु, दोषरहित दूषण सहित॥
बंदौं चारिउ बेद, भववारिधि बोहितसरिस।
जिन्हहि न सपनेहु षेद, बरनतरघुबर बिसदजस॥
बंदौं बिधिपद रेनु, भवसागरजेहि कीन्हयह।
संत सुधासिस धेनु, प्रगटे षल बिष बारुनी॥

दो० बिबुध बिप्रबुध ग्रहचरन, बंदि कहौं कर जोरि ॥
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल, मंजुमनोरथ मोरि १४ ॥

पुनिबन्दौंसारद सुरसरिता ❋ जुगलपुनीतमनोहर चरिता
मज्जन पान पाप हरएका ❋ कहतसुनतएकहर अविवेका
गुरुपितुमातुमहेस भवानी ❋ प्रनवौं दीन बंधु दिनदानी
सेवकस्वामिसषासिय पीके ❋ हितनिरुपधिसबबिधितुलसीके
कलिबिलोकिजगहितहरगिरिजा ❋ साबरमंत्रजालजिन्हसिरिजा
अनमिलआषरअरथनजापू ❋ प्रगट प्रभाउ महेसप्रतापू
सो महेसमोहिपर अनुकूला ❋ करउ कथा मुदमंगलमूला
सुमिरिसिवासिवपाइपसाऊ ❋ बरनउँ रामचरित चितचाऊ
भनितिमोरिसिवकृपाबिभाती ❋ ससिसमाज मिलिमनहुसुराती
जेएहि कथहि सनेहसमेता ❋ कहिहहिंसुनिहहिंसमुझिसचेता
होइहहिंरामचरन अनुरागी ❋ कलिमलरहितसुमंगलभागी

दो० सपनेहु साचेहुं मोहिपर, जौं हर गौरि पसाउ ॥
तौफुर होइजोकहेउँसब, भाषाभनिति प्रभाउ १५ ॥

बंदौंअवधपुरीअति पावनि ❋ सरजूसरिकलिकलुष नसावनि
प्रनवौं पुर नरनारि बहोरी ❋ ममताजिनपरप्रभुहिनथोरी
सियनिंदकअघओघनसाए ❋ लोक बिशोक बनाइ बसाए
बंदौं कौसल्या दिशिप्राची ❋ कीरतिजासुसकलजगमाची
प्रगटेउजहँरघुपति ससिचारू ❋ बिस्वसुषदषलकमल तुसारू
दशरथराउ सहित सबरानी ❋ सुकृत सुमंगल मूरतिखानी
करौं प्रनाम करम मनबानी ❋ करहुकृपा सुत सेवकजानी
जिन्हहिबिरँचिबडभएउबिधाता ❋ महिमाअवधिरामपितुमाता

सो॰ बंदौं अवध भुआल, सत्य प्रेम जेहि रामपद।
बिछुरत दीनदयाल, प्रियतनत्रिनइवपरिहरेउ १६॥

प्रनवौंपरिजन सहित बिदेहू ❋ जाहिराम पद गूढ़ सनेहू
जोग भोग महँ राषेउगोई ❋ रामबिलोकत प्रगटेउ सोई
प्रनवौंप्रथमभरत के चरना ❋ जासुनेम ब्रतजाइ न बरना
रामचरन पंकज मनजासू ❋ लुबुधमधुप इव तजइ न पासू
बंदौं लछिमनपदजलजाता ❋ सीतलसुभगभगतसुषदाता
रघुपतिकीरति बिमलपताका ❋ दंडसमानभयेउ जसजाका
सेषसहस्रसीस जग कारन ❋ जोअवतरेउ भूमिभयटारन
सदा सो सानुकूलरहमोपर ❋ कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर
रिपुसूदनपद कमलनमामी ❋ सूरसुसील भरत अनुगामी
महाबीर बिनवौं हनुमाना ❋ रामजासु जस आपु बषाना

सो॰ प्रनवौं पवनकुमार, षलबन पावक ज्ञान घन।
जासु हृदय आगार, बसहिं रामसरचापधर॥ १७॥

कपिपतिरीछनिसाचरराजा ❋ अंगदादि जे कीस समाजा
बंदौं सबके चरन सुहाए ❋ अधमसरीर राम जिन्हपाए
रघुपति चरन उपासकजेते ❋ षग मृग सुरनरअसुर समेते
बंदौं पद सरोज सब केरे ❋ जे बिनुकाम राम के चेरे
सुकसनकादिभगतमुनिनारद ❋ जेमुनिवर बिज्ञान बिसारद
प्रनवौंसबहिंधरनिधरिसीसा ❋ करहुकृपाजनजानि मुनीसा
जनकसुताजगजननिजानकी ❋ अतिसय प्रियकरुनानिधानकी
ताके जुग पदकमल मनावौं ❋ जासुकृपानिर्मल मति पावौं
पुनिमनबचनकर्मरघुनायक ❋ चरन कमलबंदौं सबलायक

राजिवनयनधर धनुसायक * भगतबिपतिभंजनसुषदायक
दो॰ गिराअरथजल वीचिसम, कहियत भिन्न न भिन्न ॥
बंदौंसीताराम पद, जिन्हहिपरम प्रियषिन्न ॥ १८ ॥
बंदौं नाम राम रघुबरको * हेतु कृसानुभानु हिमकरको
बिधिहरिहरमय बेदप्रानसो * अगुनअनूपमगुननिधानसो
महामंत्रजोइ जपत महेसू * काशी मुकुति हेतु उपदेसू
महिमा जासु जानगनराऊ * प्रथमपूजिअत नामप्रभाऊ
जानआदि कबिनामप्रतापू * भयेउसुद्ध करि उलटाजापू
सहसनामसमसुनिसिवबानी * जपिजेईं पिय संग भवानी
हरषे हेतु हेरि हरही को * किये भूषनतियभूषनतीको
नामप्रभाव जानसिवनीको * कालकूटफलदीन्हअमीको
दो॰ बरषारितु रघुपति भगति, तुलसी सालि सुदास ॥
राम नाम बरबरन जुग, सावन भादौं मास ॥ १९ ॥
आषरमधुर मनोहर दोऊ * बरनाबिलोचनजनजिअजोऊ
सुमिरत सुलभसुषदसबकाहू * लोकलाहु परलोक निबाहू
कहतसुनतसमुझतसुठिनीके * रामलषनसमप्रिय तुलसीके
बरनत बरनप्रीतिबिलगाती * ब्रह्मजीव इवसहज संघाती
नरनारायन सरिससुभ्राता * जगपालकबिशेष जनत्राता
भगतिसुतिअकलकरनबिभूषन * जगहितहेतु बिमलबिधुपूषन
स्वादतोषसमसुगतिसुधाके * कमठसेषसम धरवसुधा के
जनमन कंज मंजुमधुकर से * जीहजसोमति हरिहलधरसे
दो॰ एकछत्र एक मुकुट मनि, सब बरनन्हि पर जोउ ।
तुलसी रघुबर नाम के, बरन बिराजित दोउ ॥ २० ॥

समुझतसरिसनामअरुनामी * प्रीतिपरसपर प्रभुअनुगामी
नाम रूप दोउ ईस उपाधी * अकथअनादिसुसामुझिसाधी
कोबड़छोट कहत अपराधू * सुनिगुनभेदसमुझिहहिंसाधू
देषिअहिरूपनामआधीना * रूपज्ञाननहिं नाम बिहीना
रूप बिसेष नाम बिनुजाने * करतलगतनपरहिं पहिंचाने
सुमिरिअनामरूप बिनुदेषे * आवत हृदय सनेह बिसेषे
नामरूपगुनअकथ कहानी * समुझतसुषदनपरति बषानी
अगुनसगुनाबिचनामसुसाषी * उभय प्रबोधक चतुरदुभाषी
दो० राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ॥
तुलसी भीतर बाहरौ, जौं चाहसि उँजियार ॥ २१ ॥
नामजीहजपिजागहिंजोगी * बिरतिबिरंचिप्रपंच बियोगी
ब्रह्मसुषहिअनुभवहिंअनूपा * अकथअनामय नामनरूपा
जानौ चहहिं गूढ गतिजेऊ * नामजीह जपि जानहिंतेऊ
साधक नामजपहिं लौलाए * होहिंसिद्ध अनिमादिकपाए
जपहिनामजनआरतभारी * मिटहिंकुसंकट होहिंसुषारी
रामभगतजगचारिप्रकारा * सुकृती चारिउ अनघउदारा
चहूंचतुर कहनाम अधारा * ज्ञानी प्रभुहि बिसेष पिआरा
चहुँजुगचहुँश्रुतिनामप्रभाऊ * कलिबिसेषनहिं आनउपाऊ
दो० सकल कामना हीनजे, राम भगति रसलीन ॥
नामप्रेम पीयूषहृद, तिन्हहुँ किये मनमीन ॥ २२ ॥
अगुन सगुनदुइ ब्रह्मसरूपा * अकथअगाधअनादिअनूपा
हमरेमत बड नाम दुहूते * कियेजेहिजुगनिजबसनिजबूते
प्रौढसुजनजनजानहिंजनकी * कहउँप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी

एक दारु गत देषिअ एकू ❋ पावक समजुग ब्रह्मविवेकू
उभयअगमजुगसुगमनामते ❋ कहउँ नामबड ब्रह्मरामते
व्यापक एकब्रह्मअबिनासी ❋ सतचेतन घन आनँदरासी
असप्रभुहृदयअछतअविकारी ❋ सकल जीवजग दीनदुषारी
नाम निरूपननामजतनते ❋ सोउप्रगटताजिमि मोलरतनते
दो० निरगुनतें एहिभांति बड, नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नामबड रामतें, निजबिचार अनुसार २३॥
रामभगत हित नरतनुधारी ❋ सहिसंकट कियेसाधुसुषारी
नामसप्रेमजपत अनयासा ❋ भगत होहिं मुदमंगलवासा
राम एक तापस तियतारी ❋ नामकोटिषलकुमति सुधारी
रिषिहितरामसुकेतुसुताकी ❋ सहितसेनसुतकीन्हबिबाकी
सहितदोष दुषदास दुरासा ❋ दलइनामजिमिरबिनिसिनासा
भंजेउ राम आपु भव चापू ❋ भव भयभंजन नाम प्रतापू
दंडकबनप्रभुकीन्हसुहावन ❋ जनमनअमितिनामकियेपावन
निसिचरनिकरदलेरघुनंदन ❋ नामसकलकालि कलुषनिकंदन
दो० सवरी गीध सुसेवकानि, सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नामउधारे अमितिषल, वेद-बिदित गुनगाथ २४॥
राम सुकंठ बिभीषन दोऊ ❋ राषे सरन जान सबकोऊ
नाम गरीब अनेक निवाजे ❋ लोक वेदबर बिरद बिराजे
रामभालुकपिकटकबटोरा ❋ सेतु हेतु स्रमकीन्ह न थोरा
नाम लेत भवसिंधु सुषाहीं ❋ करहुबिचार सुजनमनमाहीं
रामसकुल रन रावन मारा ❋ सीयसहित निजपुरपगुधारा
राजा राम अवध रजधानी ❋ गावतगुनसुर मुनिवरबानी

सेवक सुमिरत नामसप्रीती ❋ बिनुस्त्रमप्रबलमोहदलजीती
फिरतसनेहमगनसुषअपने ❋ नामप्रसाद सोच नहिं सपने

दो॰ ब्रह्म रामतें नामबड, वर दायक वर दानि ।
रामचरितसतकोटिमहँ, लियेमहेसाजियजानि २५ ॥

नामप्रसाद संभु अबिनासी ❋ साजअमंगल मंगल रासी
सुकसनकादिसाधुमुनिजोगी ❋ नाम प्रसाद ब्रह्म सुषभोगी
नारद जानेउ नाम प्रतापू ❋ जगप्रियहरिहरहारिप्रियआपू
नाम जपतप्रभुकीन्हप्रसादू ❋ भगत सिरोमनि भे प्रहलादू
ध्रुअसगलानिजपेउहरिनाऊ ❋ पायेउ अचल अनूपमठाऊं
सुमिरिपवनसुतपावननामू ❋ अपने वसकरि राषे रामू
अपतअजामिलगजगनिकाऊ ❋ भए मुकुत हरिनाम प्रभाऊ
कहौं कहांलगि नाम बड़ाई ❋ राम न सकहिं नामगुनगाई

दो॰ नाम राम को कल्प तरु, कलि कल्याण निवास।
जो सुमिरतभयो भाँगते, तुलसी तुलसीदास २२ ॥

चहुँजुगतीनिकालतिहुँलोका ❋ भएनामजपि जीवबिसोका
वेद पुराण संत मत एहू ❋ सकल सुकृतफल रामसनेहू
ध्यानप्रथमजुगमषबिधिदूजे ❋ द्वापर परितोषन प्रभु पूजे
कलिकेवलमलमूल मलीना ❋ पापपयोनिधिजनमनमीना
नामकामतरु काल कराला ❋ सुमिरतसमनसकलजंजाला
रामनामकलिअभिमतदाता ❋ हितपरलोकलोकपितुमाता
नहिंकलिकरम न भगतिविवेकू ❋ राम नाम अवलंबन एकू
कालनेमिकलिकपटनिधानू ❋ नामसुमतिसमरथहनुमानू

दो० राम नाम नरकेसरी, कनक कसिपु कलि कालु॥
जापकजन प्रहलादजिमि, पालिहिदलिसुरसालु २७॥

भायकुभाय अनषआलसहूं * नामजपत मंगलदिसिदसहूं
सुमिरिसोनामरामगुनगाथा * करौं नाइरघुनाथहि माथा
मोरिसुधारिहि सोसबभांती * जासुकृपानहिं कृपाअघाती
रामसुस्वामिकुसेवक मोसो * निजदिसिदेखि दयानिधिपोसो
लोकहु बेद सु साहेब रीती * बिनयसुनतपहिचानतप्रीती
गनी गरीब ग्राम नर नागर * पंडित मूढ मलीन उजागर
सुकविकुकविनिजमतिअनुहारी * नृपहि सराहत सब नरनारी
साधुसुजान सुसीलनृपाला * ईस अंसभव परम कृपाला
सुनिसनमानहिसबाहिसुबानी * भनितिभगतिमतिगतिपहिचानी
यहप्राकृत महिपाल सुभाऊ * जानसिरोमनि कोशलराऊ
रीझत रामसनेहनि सोते * को जगमंदमलिन मन मोते

दो० सठसेवक की प्रीतिरुचि, रषिहहिं राम कृपालु।
उपलकियेजलजानजेहिं, सचिव सुमति कपि भालु॥
हौंहु कहावत सब कहत, राम सहत उपहास।
साहेब सीतानाथ से, सेवक तुलसी दास॥ २८॥

अतिबडि मोरिढिठाईषोरी * सुनिअघनरकहुनाकसकोरी
समुझिसहमममोहिअपडरअपने * सोसुधिरामकीन्हनाहिसपने
सुनिअवलोकि सुचित चषचाही * भगतिभोरिमति स्वामिसराही
कहतनसाइ होइ हियनीकी * रीझतराम जानिजन जीकी
रहतिनप्रभुचितचूककिएकी * करत सुरति सयवारहिएकी
जेहिअघबधेउब्याधजिमिबाली * फिरिसुकंठसोइकीन्हकुचाली

सोइकरतूति बिभीषन केरी * सपनेहु सो न राम हिय हेरी
ते भरतहि भेटत सनमाने * राज सभा रघुबीर बषाने

दो॰ प्रभु तरुतर कपि डारपर, ते किए आपु समान।
तुलसी कहूँन रामसे, साहिब सील निधान॥
राम निकाई रावरी, है सबही को नीक।
जौं यह साची है सदा, तौ नीको तुलसीक॥
एहिबिधिनिजगुनदोषकहि, सबहि बहुरि सिर नाइ।
बरनउँरघुबर बिसदजस, सुनिकलिकलुषनसाइ २९॥

जागबलिक जो कथासुहाई * भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई
कहिहौं सोइ संबाद बषानी *सुनहुसकलसज्जनसुषमानी
संभुकीन्ह यहचरितसुहावा *बहुरिकृपाकरिउमहिसुनावा
सोइशिवकागभुसुंडिहिदीन्हा* रामभगतअधिकारीचीन्हा
तेहिसनजागवलिकपुनिपावा* तिन्हपुनिभरद्वाजप्रतिगावा
ते स्रोता बकता समसीला * सवदरसी जानहिंहरिलीला
जानहिंतीनिकालनिजज्ञाना *करतलगतआमलकसमाना
औरो जेहरिभगति सुजाना *कहहिंसुनहिंसमुझहिबिधिनाना

दो॰ मैं पुनिनिज गुरसनसुनी, कथा सो सूकरषेत।
समुझी नहिंतासिबालपन, तबअति रहेउँअचेत॥
स्रोता वकता ज्ञान निधि, कथा राम के गूढ़।
किमिसमुझौंमैंजीवजड, कलिमलग्रसितबिमूढ़ ३०॥

तदपि कहीगुरबारहिं बारा *समुझिपरीकछुमतिअनुसारा
भाषाबंध करब मैं सोई * मोरे मनप्रबोध जेहि होई
जसकछु बुधिबिवेक बलमेरे * तसकहिहौं हियहरिके प्रेरे

निजसंदेह मोहभ्रम हरनी * करौंकथा भवसरिता तरनी
बुधबिश्रामसकलजनरंजनि * रामकथाकलिकलुष बिभंजनि
रामकथा कलिपन्नग भरनी * पुनिबिवेकपावककहुँ अरनी
रामकथा कलि कामदगाई * सुजन सजीवनिमूरि सुहाई
सोइवसुधातलसुधातरंगिनि * भयभंजनिभ्रमभेक भुअंगिनि
असुरसेनसम नरकनिकंदिनि * साधुबिबुधकुलहितगिरिनंदिनि
संत समाज पयोधिरमासी * बिस्वभारधर अचलछमासी
जमगनमुहँमसि जगजमुनासी * जीवनमुकुतिहेतुजनुकासी
रामहिप्रियपावनितुलसीसी * तुलसिदासहितहियहुलसीसी
सिवप्रिय मेकलसैलसुतासी * सकल सिद्धिसुषसंपतिरासी
सदगुनसुरगनअंब अदितिसी * रघुबरभगतिप्रेमपरमितिसी

दो॰ राम कथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ।
तुलसीसुभग सनेहबन, सिय रघुवीर विहारु ॥ ३१ ॥

रामचरित चिंतामनिचारू * संतसुमतितिअ सुभग सिंगारू
जगमंगल गुनग्राम रामके * दानिमुकुतिधनधरमधामके
सदगुर ज्ञान विराग जोगके * बिबुध बेद भवभीम रोगके
जननिजनकसियरामप्रेमके * बीज सकल ब्रत धरम नेमके
समन पाप संताप सोकके * प्रियपालक परलोक लोक के
सचिवसुभटभूपतिविचारके * कुंभज लोभ उदधि अपारके
कामकोहकलिमलकरिगनके * केहरिसावकजनमन बनके
अतिथिपूज्य प्रियतमपुरारिके * कामदघन दारिददवारिके
मंत्रमहामनिबिषयब्यालके * मेटतकठिन कुअंक भालके
हरनमोहतमदिनकर करसे * सेवक सालिपाल जलधरसे

अभिमत दानिदेवतरुवरसे ❋ सेवतसुलभ सुषद हरिहरसे
सुकबिसरदनभमनउडगनसे ❋ रामभगत जन जीवनधनसे
सकलसुकृतफलभूरिभोगसे ❋ जगहितनिरुपधि साधुलोगसे
सेवक मन मानस मरालसे ❋ पावन गंग तरंग मालसे

दो० कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाषंड।
दहन रामगुन ग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड॥
राम चरित राकेस कर, सरिस सुषद सबकाहु।
सज्जनकुमुद चकोर चित, हितबिसेष बड लाहु ३२॥

कीन्हिप्रश्नजेहिभांतिभवानी ❋ जेहिबिधि शंकरकहाबषानी
सो सबहेतु कहब मैं गाई ❋ कथा प्रबंध बिचित्र बनाई
जेहिं यहकथासुनीनहिंहोई ❋ जनि आचरज करै सुनिसोई
कथाअलौकिकसुनहिंजेज्ञानी ❋ नहिंआचरज करहिं असजानी
रामकथाकै मितिजगनाहीं ❋ असिप्रतीति तिनकेमनमाहीं
नानाभांति राम अवतारा ❋ रामायन सतकोटि अपारा
कलप भेदहरिचरित सुहाए ❋ भांति अनेकमुनीसन्हगाये
करियनसंसयअसउरआनी ❋ सुनियकथा सादररतिमानी

दो० राम अनंत अनंत गुन, अमिति कथा बिस्तार।
सुनिआचरजनमानिहहिं, जिन्हकेबिमलबिचार ३३॥

येहिबिधिसबसंसयकरिदूरी ❋ सिरधरि गुरुपद पंकजधूरी
पुनि सबही प्रनवौं करजोरी ❋ करतकथाजेहि लागन षोरी
सादरसिवहिनाइअबमाथा ❋ वरनौं बिसद राम गुनगाथा
संवत सोरहसै इकतीसा ❋ करौं कथाहरिपदधरिसीसा
नौमी भौमवार मधु मासा ❋ अवधपुरीयहचरित प्रकासा

जेहिदिनरामजनमश्रुतिगावहिं * तीरथसकलतहाँचलिआवहिं
असुरनाग षग नरमुनिदेवा * आइकरहिं रघुनायक सेवा
जन्ममहोत्सवरचहिंसुजाना * करहिं रामकलकीरति गाना
दो० मज्जहिं सज्जन बृंद बहु, पावन सरजू नीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर, सुन्दरस्याम सरीर ॥३४॥
दरसपरस मज्जनअरुपाना * हरैपाप कह वेद पुराना
नदीपुनीतअमितिमहिमाअति * कहिनसकैसारदाबिमलमति
रामधामदा पुरी सुहावनि * लोकसमस्त बिदित अतिपावनि
चारिषानि जगजीवअपारा * अवधतजे तन नहिं संसारा
सबबिधिपुरी मनोहरजानी * सकल सिद्धिप्रद मंगलषानी
विमलकथाकरकीन्हअरंभा * सुनतनसाहिं काममददंभा
रामचरितमानसएहिनामा * सुनत स्रवन पाइअ विस्रामा
मनकरिविषयअनलबनजरई * होइसुषी जौं एहि सर परई
रामचरितमानसमुनिभावन * विरचेउ संभुसुहावन पावन
त्रिबिधिदोषदुषदारिददावन * कलिकुचालिकुलिकलुषनसावन
रचिमहेस निज मानसराषा * पाइ सुसमउ सिवासनभाषा
ताते राम चरित मानस वर * धरेउ नाम हियहेरि हरषिहर
कहौं कथासोइ सुषदसुहाई * सादर सुनहु सुजन मनलाई
दो० जसमानस जेहि बिधि भएउ, जग प्रचार जेहि हेतु।
अबसोइ कहौं प्रसंग सब, सुमिरि उमा वृषकेतु ॥३५॥
संभुप्रसादसुमतिहियहुलसी * रामचरितमानसकवितुलसी
करइमनोहर मतिअनुहारी * सुजनसुचितसुनिलेहुसुधारी
सुमतिभूमिथलहृदयअगाधू * वेदपुरान उदधि घन साधू

बरषहिंराम सुजस वर वारी ❋ मधुर मनोहर मंगलकारी
लीलासगुनजोकहहिंबषानी ❋ सोइस्वच्छता करै मलहानी
प्रेमभगति जो बरनि न जाई ❋ सोइ मधुरता सुसीतलताई
सोजलसुकृत सालिहितहोई ❋ रामभगत जनजीवन सोई
मेधामहिगत सोजल पावन ❋ सकिलिश्रवनमग चलेउसुहावन
भरेउसुमानससुथलथिराना ❋ सुषदसीतरुचिचारु चिराना

दो॰ सुठिसुंदर संवाद वर, बिरचे बुद्धि विचारि पा॰ पा॰ १
तेएहिपावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि ॥ ३६ ॥

सप्तप्रबंध सुभग सो पाना ❋ ज्ञाननयननिरषतमनमाना
रघुपतिमहिमाअगुनअबाधा ❋ बरनवसोइ वरवारिअगाधा
रामसीयजससलिलसुधासम ❋ उपमाबीचिविलासमनोरम
पुरइनि सघन चारु चौपाई ❋ जुगति मंजु मनिसीपसुहाई
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा ❋ सोइबहुरंग कमलकुलसोहा
अरथ अनूप सुभावसुभासा ❋ सोइ पराग मकरंद सुवासा
सुकृतिपुंजमंजुलअलिमाला ❋ ज्ञान बिराग विचार मराला
धुनिअवरेवकवितगुनजाती ❋ मीन मनोहर ते बहुभांती
अरथधरम कामादिकचारी ❋ कहब ज्ञान विज्ञान विचारी
नवरसजपतपजोग विरागा ❋ तेसब जलचर चारु तडागा
सुकृतीसाधु नामगुन गाना ❋ तेविचित्रजल विहगसमाना
संतसभा चहुँदिसि अंवराई ❋ स्रद्धा रितुबसंत सम गाई
भगतिनिरूपनविविधिविधाना ❋ छमादया द्रुमलता विताना
संजमनियम फूलफलज्ञाना ❋ हरिपद रतिरस बेद बषाना
औरौ कथा अनेक प्रसङ्गा ❋ तेइसुक पिक बहुबरनविहंगा

दो॰ पुलक वाटिका बाग बन, सुष सुबिहंग बिहारु।
माली सुमन सनेह जल, सीचत लोचन चारु ॥३७॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे ❋ ते एहि ताल चतुर रषवारे
सदा सुनहिं सादर नरनारी ❋ तेइसुरबरमानस अधिकारी
अतिषलजे बिषई बक कागा ❋ एहिसरनिकट न जाहिंअभागा
संबुक भेक सिवार समाना ❋ इहां न बिषयकथा रसनाना
तेहि कारन आवत हियहारे ❋ कामी काकबलाक बिचारे
आवतएहिसरअतिकठिनाई ❋ राम कृपाबिनु आइनजाई
कठिन कुसंग कुपंथकराला ❋ तिन्हकेबचनबाघहरिब्याला
गृह कारज नाना जंजाला ❋ तेइअतिदुर्गम सैल बिसाला
बनबहु बिषम मोह मदमाना ❋ नदी कुतरक भयंकरनाना

दो॰ जेस्रद्धा संवल रहित, नहिं संतन्ह कर साथ।
तिन्हकहँमानसअगमअति, जिन्हहिनप्रियरघुनाथ॥

जौकरि कष्टजाइ पुनिकोई ❋ जातहिं नींद जुडाई होई
जडताजाडबिषम उरलागा ❋ गयहुनमज्जनपावअभागा
करिनजाइ सरमज्जनपाना ❋ फिरिआवैसमेतअभिमाना
जौंबहोरि कोउ पूछन आवा ❋ सरनिन्दाकरि ताहिबुझावा
सकलबिघ्नब्यापहिनाहिंतेही ❋ रामसुकृपा बिलोकहिं जेही
सोइसादर मज्जन सरकरई ❋ महाघोर त्रयताप न जरई
तेनर यहसर तजहिंनकाऊ ❋ जिन्हके रामचरनभलभाऊ
जोनहाइचह एहिसर भाई ❋ सो सतसंग करै मन लाई
असमानसमानसचषचाही ❋ भइकबिबुद्धिबिमलअवगाही
भएउहृदय आनंद उछाहू ❋ उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू

चलीसुभगकबितासरितासो * रामबिमलजसजलभरितासो
सरजू नाम सुमंगल मूला * लोक बेदमत मंजुल कूला
नदी पुनीतसुमानसनंदिनि * कलिमलतृनतरुमूलनिकंदिनि
दो० स्रोता त्रिविधि समाजपुर, ग्रामनगर दुहुँ कूल।
संतसभा अनुपम अवध, सकल सुमंगल मूल॥ ३९॥

रामभगतिसुरसरितहिजाई * मिलीसुकीरति सरजु सुहाई
सानुजराससमर जसपावन * मिलेउमहानदसोनसुहावन
जुगबिचभगतिदेवधुनिधारा * सोहतिमहितसुबिरतिबिचारा
त्रिविधतापत्रासकतिमुहानी * राम सरूप सिंधुसमुहानी
मानसमूल मिलीसुरसरिही * सुनतसुजनमनपावनकरिही
बिचबिचकथाबिचित्रबिभागा * जनुसरितीर तीर बनबागा
उमा महेस बिवाह बराती * तेजलचर अगनितबहुभाँती
रघुबर जनम अनंद बधाई * भवर तरंग मनोहरताई
दो० बालचरित चहुँ बंधुके, बनज बिपुल बहुरंग।
नृपरानी परिजन सुकृत, मधुकर वारि विहंग॥ ४०॥

सीय स्वयंबर कथा सुहाई * सरितसोहावनि सो छबिछाई
नदी नाव पटुप्रश्न अनेका * केवट कुसलउतर सबिबेका
सुनिअनुकथन परसपरहोई * पथिकसमाजसोह सरिसोई
घोर धार भृगुनाथ रिसानी * घाट सबंधु राम बरबानी।
सानुज राम बिवाह उछाहू * सोसुभउमगसुषद सबकाहू
कहतसुनतहरषहिंपुलकाहीं * तेसुकृतीमन मुदित नहाहीं
रामतिलकहितमंगलसाजा * परबजोगजनुजुरेउ समाजा
काईकुमति केकई केरी * परीजासुफल बिपति घनेरी

दो॰ समन अमित उतपात सब, भरतचरित जपजाग ॥
कलिमलअघअवगुनकथन, तेजलमलबगकाग ४१

कीरति सरित छहूँरितु रूरी * समयसुहावनि पावनिभूरी
हिमहिमसैलसुतासिवब्याहू * सिसिरसुषदप्रभुजनमउछाहू
बरनब राम बिवाह समाजू * सोमुद मंगल मय रितुराजू
ग्रीषम दुसह राम बन गवनू * पंथ कथा षर आतप पवनू
बरषा घोर निसाचर रारी * सुरकुलसालि सुमंगलकारी
रामराज सुष बिनय बड़ाई * बिसदसुषद सोइसरदसुहाई
सतीसिरोमनिसियगुनगाथा * सोइगुनअमलअनूपमपाथा
भरत सुभाउ सु सीतलताई * सदाएक रस बरनि न जाई

दो॰ अवलोकनिबोलनिमिलनि, प्रीति परसपरहास ।
भायप भलि चहुँ बंधुकी, जलमाधुरीसुबास ४२ ॥

आरति बिनय दीनतामोरी * लघुताललित सुवारिनषोरी
अदुभुतसलिलसुनतगुनकारी * आसपियास मनोमलहारी
रामसुप्रेमहि पोषत पानी * हरतसकलकलि कलुषगलानी
भवस्रमसोषक तोषकतोषा * समनदुरित दुष दारिददोषा
काम कोह मदमोहनसावन * बिमलबिबेकबिराग बढावन
सादर मज्जन पान किएते * मिटहिंपाप परिताप हिएते
जिन्हएहिवारिनमानसधोए * तेकायर कलिकाल बिगोए
तृषितनिरषिरबिकर भववारी * फिरिहहिंमृग जिमिजीवदुषारी

दो॰ मतिअनुहारि सुबारिगुन, गनगनि मनअन्हवाइ ।
सुमिरि भवानी संकरहि, कहकवि कथा सुहाइ ॥

अबरघुपति पदपंकरुह, हिअधरि पाइ प्रसाद ।
कहौंजुगल मुनि वर्जकर, मिलन सुभग संवाद ४३
भरद्वाजमुनि बसहिंप्रयागा * तिन्हहिरामपद अतिअनुरागा
तापससमदमदया निधाना * परमारथ पथपरम सुजाना
माघ मकरगत रविजबहोई * तीरथ पतिहिआव सबकोई
देवदनुज किन्नर नर स्रेनी * सादरमज्जहिं सकलत्रिवेनी
पूजहिं माधवपदजलजाता * परसिअषयवटहरषहिंगाता
भरद्वाजआश्रमअतिपावन * परमरम्य मुनिवरमनभावन
तहांहोइमुनिरिषयसमाजा * जाहिंजे मज्जनतीरथराजा
मज्जहिं प्रातसमेतउछाहा * कहहिंपरसपर हरिगुनगाहा
दो० ब्रह्म निरूपन धर्म बिधि, बरनहिं तत्व बिभाग ।
कहहिं भगति भगवन्त कै, संजुत ज्ञानबिराग ४४ ॥
एहिप्रकार भरिमाघनहाहीं * पुनिसबनिजानिजआश्रमजाहीं
प्रतिसंवतअतिहोइ अनंदा * मकरमज्जिजगवनहिंमुनिबृन्दा
एक बारभरि मकर नहाए * सबमुनीसआश्रमन्हासिधाए
जागवलिकमुनिपरम बिबेकी * भरद्वाज राषे पद टेकी
सादर चरन सरोज पषारे * अतिपुनीत आसन बैठारे
करिपूजामुनिसुजसबषानी * बोलेअति पुनीत मृदुबानी
नाथ एक संसउ बड मोरे * करगत बेद तत्व सब तोरे
कहतसोमोहिलागतिभयलाजा * जौनकहौंबड होइ अकाजा
दो० संतकहहिं असनीतिप्रभु, स्रुति पुरान मुनिगाव ।
होइन बिमल बिबेक उर, गुरसन किए दुराव ४५ ॥
असबिचारिप्रगटौंनिजमोहू * हरहुनाथ करि जनपरछोहू

रामनामकरअमितिप्रभावा * संतपुरान उपनिषद गावा
संतत जपतसंभु अबिनासी * सिवभगवान ज्ञानगुनरासी
आकरचारिजीवजगअहहीं * कासी मरत परमपद लहहीं
सोपिराममहिमामुनिराया * सिवउपदेस करतकरिदाया
राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं * कहिय बुझाय कृपानिधि मोहीं
एक राम अवधेस कुमारा * तिन्हकरचरितविदितसंसारा
नारिबिरहदुखलहेउअपारा * भए रोष रन रावन मारा
दो० प्रभुसोइराम कि अपर कोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि ।
सत्यधाम सर्वज्ञ तुम्ह, कहहु विवेक बिचारि ॥ ४६ ॥
जैसे मिटै मोह भ्रम भारी * कहहुसोकथानाथ विस्तारी
जागवलिक बोले मुसुकाई * तुम्हहिं विदित रघुपतिप्रभुताई
रामभगततुम्हमन क्रमवानी * चतुराई तुम्हारि मैं जानी
चाहहु सुनै राम गुन गूढ़ा * कीन्हेहुप्रश्नमनहु अतिमूढ़ा
तात सुनहु सादर मनलाई * कहउँ रामकै कथा सुहाई
महामोह महिषेस बिसाला * रामकथा कालिका कराला
रामकथाससिकिरनसमाना * संतचकोर करहिं जेहिपाना
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी * महादेव तब कहा बषानी
दो० कहौंसोमतिअनुहारिअब, उमासंभु संबाद ।
भएउसमयजेहिहेतु जेहि, सुनुमुनिमिटहिंविषाद ४७
एक बार त्रेता जुग माहीं * संभुगए कुंभज रिषि पाहीं
संगसतीजगजननिभवानी * पूजे रिषि अखिलेस्वरजानी
रामकथा मुनिवर्ज बषानी * सुनीमहेस परम सुषमानी
रिषिपूछीहरिभगति सुहाई * कही संभु अधिकारी पाई

कहतसुनतरघुपतिगुनगाथा ❋ कछुदिनतहां रहे गिरिनाथा
मुनिसन बिदा मांगित्रिपुरारी ❋ चलेभवन संग दच्छकुमारी
तेहिअवसरभंजनमहिभारा ❋ हरिरघुबंस लीन्ह अवतारा
पिताबचनतजिराजउदासी ❋ दंडकवनाविचरतअबिनासी

दो० हृदय बिचारत जातहर, केहिविधि दरसन होइ ।
गुपुतरूपअवतरेउ प्रभु, गए जान सब कोइ ॥

सो० संकरउर अतिछोभु, सतीनजानइमरमसोइ ।
तुलसी दरसन लोभ, मनडर लोचन लालची ४८ ॥

रावनमरनमनुज करजांचा ❋ प्रभुबिधिबचन कीन्हचहसांचा
जौंनहिं जाउँरहै पछितावा ❋ करताविचार न बनत बनावा
एहिबिधिभए सोचबसईसा ❋ तेही समय जाइ दससीसा
लीन्हनीच मारीचहि संगा ❋ भएउ तुरत सोइकपटकुरंगा
करि छल मूढ हरी बैदेही ❋ प्रभुप्रभाउतस बिदितनतेही
मृगबधिबंधुसहितप्रभुआए ❋ आश्रम देषि नयनजलछाए
बिरहविकल नर इव रघुराई ❋ षोजत बिपिन फिरत दोउभाई
कबहूं जोगवियोग न जाके ❋ देषा प्रगट विरह दुष ताके

दो० अतिविचित्ररघुपतिचरित, जानहिं परमसुजान ।
जेमतिमंद विमोहवस, हृदयधरहिंकछुआन ४९ ॥

संभुसमयतेहि रामहि देषा ❋ उपजाहियअतिहरषविसेषा
भरिलोचनछविसिंधुनिहारी ❋ कुसमयजानिनकीन्हचिन्हारी
जयसच्चिदानंदजगपावन ❋ असकहिचलेउ मनोजनसावन
चले जात सिवसती समेता ❋ पुनिपुनि पुलकत कृपानिकेता
सती सो दसा संभुकै देखी ❋ उर उपजा संदेह विसेषी

संकर जगत बंद्य जगदीसा * सुरनरमुनिसबनावहिंसीसा
तिन्हनृपसुतहिकीन्हपरनामा * कहिसच्चिदानंद परधामा
भएमगनछबितासुबिलोकी * अजहुँप्रीतिउररहतिनरोकी
दो० ब्रह्मजोब्यापक बिरजअज, अकलअनीह अभेद।
सोकि देहधरि होइनर, जाहिन जानत बेद ५०॥
बिष्णुजोसुरहितनरतनधारी * सोउ सरबज्ञ जथा त्रिपुरारी
षोजै सोकि अज्ञइव नारी * ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी
संभुगिरा पुनि मृषा न होई * सिव सर्वज्ञ जान सब कोई
अससंसयमनभयउअपारा * होइन हृदय प्रबोध प्रचारा
जद्यपिप्रगटनकहेउभवानी * हर अंतरजामी सब जानी
सुनहिसतीतवनारिसुभाऊ * संसयअसन धरिअउरकाऊ
जासुकथा कुंभजरिषि गाई * भगतिजासुमैंमुनिहिसुनाई
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा * सेवतजाहिसदा मुनि धीरा
छं० मुनिधीर जोगीसिद्धसंतत बिमलमनजेहिध्यावहीं।
कहिनेतिनिगमपुरान आगम जासु कीरति गावहीं॥
सोइराम ब्यापकब्रह्म भुअननिकायपति मायाधनी।
अवतरेउअपने भगतहित निजतंत्रनितरघुकुलमनी॥
सो० लाग न उर उपदेस, जदपिकहेउ सिव बार बहु।
बोलेबिहँसिमहेस, हरिमायाबलजानि जिय ५१॥
जौ तुम्हरे मन अति संदेहू * तौ कि न जाइ परिछा लेहू
तबलगि बैठ अहौंबटछाहीं * जबलगितुम्हऐहहुमोहिपाहीं
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी * करेहुसोजतनबिबेकबिचारी
चलीं सती सिव आयसुपाई * करइबिचार करौं का भाई

इहां संभुअसमनअनुमाना * दच्छसुताकहँनहिंकल्याना
मोरेहु कहे न संसय जाहीं * बिधिविपरीति भलाई नाहीं
होइहिसोइ जोरामरचिराषा * को करितरक बढावै सापा
असकहिजपनलगेहरिनामा * गईसतीजहँ प्रभुसुष धामा

दो० पुनिपुनिहृदयबिचारकरि, धरि सीता कररूप ।
आगेहोइचलिपंथतेहि, जेहिआवत नरभूप ॥ ५२ ॥

लछिमन दीषउमाकृतवेषा * चकितभयेभ्रमहृदयविशेषा
कहिनसकतकछुअतिगम्भीरा * प्रभुप्रभाउजानत मतिधीरा
सतीकपटजानेउसुरस्वामी * सबदरसी सब अंतरजामी
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना * सोइ सरवज्ञ राम भगवाना
सतीकीन्ह चहतहुँ दुराऊ * देषहु नारि सुभाउ प्रभाऊ
निजमायाबल हृदय बषानी * बोलेबिहँसि राममृदु बानी
जोरिपानिप्रभु कीन्हप्रनामू * पितासमेतलीन्ह निजनामू
कहेउबहोरि कहां वृष केतू * विपिनअकेलिफिरहु केहिहेतू

दो० रामबचन मृदुगूढ सुनि, उपजा अति संकोच ।
सतीसभीत महेसपहिं, चली हृदय बडसोच ५३ ॥

मैं संकर कर कहा न माना * निज अज्ञान रामपर आना
जाइउतर अब देइहौं काहा * उरउपजा अतिदारुनदाहा
जानाराम सती दुष पावा * निजप्रभाउ कछु प्रगटिजनावा
सतीदीष कौतुकमग जाता * आगेराम सहित श्री भ्राता
फिरिचितवा पाछे प्रभु देषा * सहितबंधु सियसुन्दर बेषा
जहँचितवहितहँप्रभुआसीना * सेवहिंसिद्ध मुनीस प्रबीना
देषेसिव बिधिविष्णुअनेका * अमित प्रभाउ एकतेएका

बंदत चरन करत प्रभु सेवा * बिबिधि वेष देषे सब देवा

दो॰ सतीविधात्री इंदिरा, देषी अमित अनूप।
जेहिजेहि वेषअजादिसुर, तेहितेहितनअनूरूप ५४॥

देषे जहँतहँ रघुपति जेते * सक्तिनसहित सकल सुरतेते
जीव चराचर जे संसारा * देखे सकल अनेक प्रकारा
पूजहिं प्रभुहि देव बहुवेषा * राम रूप दूसर नहिं देषा
अवलोके रघुपति बहुतेरे * सीता सहित न वेष घनेरे
सोइरघुबरसोइलछिमनसीता * देखि सती अतिभईसभीता
हृदयकंपतन सुधिकछुनाहीं * नयन मूँदि बैठी मगमाहीं
बहुरिविलोकेउ नयनउघारी * कछुन दीखतहँ दक्षकुमारी
पुनि पुनिनाइ रामपद सीसा * चली तहाँ जहँ रहे गिरीसा

दो॰ गई समीप महेस तब, हँसि पूँछी कुसलात॥
लीन्ह परिछाकवन विधि, कहहुसत्यसबबात ५५॥

सती समुझि रघुवीर प्रभाऊ * भयवसप्रभुसनकीन्हदुराऊ
कछुन परिछा लीन्ह गुसाईं * कीन्हप्रनामतुम्हारिहिनाईं
जो तुम्हकहा सो मृषानहोई * मोरेमन प्रतीत अतिसोई
तब संकर देखेउ धरिध्याना * सतीजोकीन्हचरितसब जाना
बहुरि राममायहि सिर नावा * प्रेरिसतिहि जेहिझूठकहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना * हृदयबिचारतसम्भुसुजाना
सती कीन्ह सीता कर वेषा * सिवउरभयउ विषादविसेषा
जौं अब करौं सती सनप्रीती * मिटइभगतिपथहोइ अनीती

दो॰ परम पुनीत न जायतजि, किये प्रेम बड पाप॥
प्रगट न कहत महेस कछु, हृदय अधिक संताप ५६॥

तबसंकर प्रभुपद सिर नावा ❋ सुमिरतरामहृदयअसआवा
एहितनसतिहिभेटमोहिनाहीं ❋ सिवसंकल्प कीन्हमनमाहीं
असविचारिसंकरमतिधीरा ❋ चलेभवन सुमिरत रघुबीरा
चलतगगन भइ गिरासुहाई ❋ जयमहेसभलिभगतिदिढ़ाई
असपनतुम्हविनुकरैकोआना ❋ रामभगतसमरथ भगवाना
सुनिनभगिरासतीउरसोचा ❋ पूछा सिवहि समेतसकोचा
कीन्हकवनपनकहहुकृपाला ❋ सत्यधाम प्रभु दीनदयाला
जदपि सती पूछा बहु भांती ❋ तदपिनकहेउत्रिपुरआराती

दो॰ सतीहृदय अनुमानकिय, सबजाने सरवज्ञ ।
कीन्हकपट मैं संभुसन, नारिसहज जडअज्ञ ॥

सो॰ जलुपयसरिसविकाइ, देषहुप्रीति कि रीतिभलि ।
बिलगहोतरसजाइ, कपट षटाई परतही ५७ ॥

हृदयसोचसमुझतनिजकरनी ❋ चिंताअमितिजाइनहिंबरनी
कृपासिंधु सिवपरम अगाधा ❋ प्रगटनकहेउ मोरअपराधा
संकररुष अवलोकि भवानी ❋ प्रभुमोहितजेउहृदयअकुलानी
निजअघसमुझिनकछुकहिजाई ❋ तपै अवांइव उर अधिकाई
सतिहिससोचजानिवृषकेतू ❋ कहीकथा सुन्दर सुख हेतू
बरनतपंथविविधिइतिहासा ❋ विस्वनाथ पहुँचे कैलासा
तहँपुनिसंभुसमुझिपनआपन ❋ बैठेबटतर करि कमलासन
संकर सहज सरूप सँभारा ❋ लागिसमाधि अखंडअपारा

दो॰ सती बसहि कैलास तब, अधिक सोच मनमाहिं ।
मरम न कोऊजान कछु, जुगसमदिवस सिराहिं ५८ ॥

नितनवसोचसती उरभारा ❋ कब जैहों दुष सागर पारा

मैंजोकीन्हरघुपतिअपमाना ❀ पुनिपतिबचनमृषाकरि जाना
सोफलमोहि बिधातादीन्हा ❀ जोकछुउचितरहासोइ कीन्हा
अबबिधिअसबूझिअनहिंतोहीं ❀ संकरबिमुषजिआवसिमोहीं
कहिनजाइकछुहृदयगलानी ❀ मनमहँरामहिसुमिरिसयानी
जौं प्रभुदीनदयालकहावा ❀ आरति हरन बेदजसगावा
तौ मैं बिनयकरौं कर जोरी ❀ छूटौ बेगि देह यह मोरी
जौं मोरे सिव चरन सनेहू ❀ मनक्रम बचन सत्यब्रतएहू
दो० तौ सब दरसीसुनिअप्रभु, करौ सो बेगि उपाय ॥
होइ मरन जेहि बिनहिश्रम, दुसहबिपत्ति बिहाइ ५९
यहिबिधिदुषितप्रजेसकुमारी ❀ अकथनीयदारुण दुखभारी
बीते संबत सहस सतासी ❀ तजीसमाधिसंभुअबिनासी
राम नाम सिव सुमिरनलागे ❀ जानेउसती जगतपतिजागे
जाइ संभु पद बंदन कीन्हा ❀ सनमुषसंकर आसन दीन्हा
लगेकहनहरि कथा रसाला ❀ दच्छप्रजेस भये तेहि काला
देखाबिधिबिचारिसब लायक ❀ दच्छहिकीन्हप्रजापतिनायक
बडअधिकारदच्छजबपावा ❀ अतिअभिमानहृदयतबआवा
नहिअसकोउजनमाजगमाहीं ❀ प्रभुतापाइजाहि मद नाहीं
दो० दच्छ लिये मुनि बोलि सब, करन लगे बडजाग ॥
नवत सादर सकल सुर, जो पावतमष भाग ६० ॥
किन्नर नाग सिद्ध गंधर्बा ❀ बधुन समेत चले सुर सबा
बिष्णु बिरंचि महेस बिहाई ❀ चले सकलसुर जान बनाई
सती बिलोकेब्योमबिमाना ❀ जात चलेसुन्दर बिधिनाना
सुरसुंदरी करहिं कलगाना ❀ सुनतश्रवनछूटहिंमुनि ध्याना

पूछेउ तबसिवकहेउबषानी ❋ पिताजज्ञसुनि कछुहरषानी
जौं महेसमोहि आयसुदेहीं ❋ कछु दिनजाइरहौं मिसएहीं
पतिपरित्यागहृदयदुषभारी ❋ कहइननिजअपराधविचारी
बोली सती मनोहर बानी ❋ भय संकोच प्रेमरस मानी
दो० पिता भवन उत्सव परम, जौं प्रभु आयसुहोइ ।
तौ मैं जाउँ कृपा अयन, सादर देषन सोइ ॥ ६१ ॥
कहेहुनीक मोरेहुमनभावा ❋ यहअनुचितनहिंनेवत पठावा
दच्छसकलनिजसुताबोलाई ❋ हमरे बयर तुम्हौ बिसराई
ब्रह्मसभा हमसन दुखमाना ❋ ताहितेअजहुंकरहिंअपमाना
जौं बिनुबोले जाहु भवानी ❋ रहै न सील सनेह न कानी
जदपिमित्रप्रभुपितुगुर गेहा ❋ जाइय बिनु बोले न संदेहा
तदपि बिरोधमानजहँ कोई ❋ तहाँ गए कल्यान न होई
भांति अनेक संभु समुझावा ❋ भावीबस न ज्ञान उरआवा
कहप्रभुजाहुजोबिनहिंबोलाए❋नहिं भलिबात हमाराहिभाए
दो० कहिदेषा हर जतनबहु, रहै न दच्छकुमारि ।
दिए मुष्य गन संग तब, बिदा कीन्ह त्रिपुरारि ६२ ॥
पिता भवनजब गई भवानी ❋ दच्छत्रास काहुनमनमानी
सादरभलेहिमिलीएकमाता ❋भगिनीमिलींबहु मुसकाता
दच्छ न कछुपूछीकुसलाता ❋सतिहिबिलोकिजरेसबगाता
सती जाइ देषेउ तब जागा ❋ कतहु न दीष संभुकरभागा
तबचितचढेउजोसंकरकहेऊ ❋ प्रभुअपमानसमुझि उरदहेऊ
पाछिलदुषअसहृदयनव्यापा❋ जसयहभएउमहापरितापा
जद्यपिजगदारुन दुष नाना ❋ सबतेकठिनजातिअपमाना

समुझिसोसतिहिभयेउअतिक्रोधा ❀ बहु बिधिजननी कीन्ह प्रबोधा
दो० सिव अपमान न जाइ सहि, हृदय न होइ प्रबोध।
सकलसभहि हठिहटकितब, बोली बचनसक्रोध६३।
सुनहुसभासदसकलमुनिंदा ❀ कहीसुनी जिन्ह संकरनिंदा
सोफल तुरत लहब सबकाहू ❀ भलीभाँति पछिताब पिताहू
संत संभु श्रीपति अपबादा ❀ सुनिअजहाँतहँअसिमरजादा
काटिअतासु जीभजोबसाई ❀ स्रवनमूदि नत चलिअ पराई
जगदातमा महेस पुरारी ❀ जगतजनकसबके हितकारी
पिता मंदमति निंदत तेही ❀ दच्छ सुक्र संभव यह देही
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू ❀ उरधरि चन्द्रमौलि वृषकेतू
असकहिजोगअगिनितनजारा ❀ भयउसकल मष हाहाकारा
दो० सती मरन सुनि संभुगन, लगे करन मष पीस।
जज्ञबिधंस बिलोकिभृगु, रछाकीन्हिमुनीस ॥ ६४॥
समाचार सब सकर पाये ❀ बीरभद्र करि कोप पठाए
जज्ञबिधंसजायतिन्हकीन्हा ❀ सकलसुरनबिधिवतफलदीन्हा
भइजगबिदितदच्छगतिसोई ❀ जसिकछुसंभु बिमुषकै होई
यहइतिहाससकलजगजानी ❀ ताते मैं संछेप बषानी
सतीमरत हरिसनवर मांगा ❀ जनम २ सिव पद अनुरागा
तेहिकारनहिमिगिरिगृहजाई ❀ जनमी पारवती तन पाई
जबते उमा सैल गृह जाई ❀ सकल सिद्धिसंपति तहँ छाई
जहँतहँमुनिन्हसुआश्रमकीन्हे ❀ उचितवास हिमभूधर दीन्हे
दो० सदा सुमन फल सहितसब, द्रुमनव नानाजाति।
प्रगटी सुंदर सैलपर, मनिआकर बहु भांति ॥६५॥

सरितासब पुनीत जलबहहीं ❀ पगमृगमधुप सुषी सबरहहीं
सहज बैर सब जीवन त्यागा ❀ गिरिपरसकलकरहिंअनुरागा
सोहसैल गिरिजा गृह आए ❀ जिमिजन रामभगतिकेपाए
नित नूतन मंगल गृह तासू ❀ ब्रह्मादिकगावहिं जस जासू
नारद समाचार सब पाए ❀ कौतुकहीं गिरि गेह सिधाए
सैलराज बड आदर कीन्हा ❀ पदपषारि बरआसन दीन्हा
नारिसहितमुनिपदशिरनावा ❀ चरनसलिलसबभवन सिचावा
निजसौभाग्यबहुतविधिबरना ❀ सुताबोलि मेली मुनि चरना
दो० त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम्ह, गति सर्वत्र तुम्हारि ।
कहहुसुता के दोष गुन, मुनिवर हृदयविचारि ॥६६॥
कहमुनिबिहँसिगूढमृदुबानी ❀ सुतातुम्हारि सकलगुनषानी
सुंदरि सहज सुसील सयानी ❀ नाम उमा अंबिका भवानी
सब लच्छन संपन्न कुमारी ❀ होइहिसंतत पियहि पियारी
सदाअचलएहिकरअहिवाता ❀ एहिते जस पैहहिं पितुमाता
होइहिपूज्य सकल जगमाहीं ❀ एहिसेवत कछु दुर्लभ नाहीं
एहिकर नामसुमिरि संसारा ❀ त्रियचढिहहिं पतिब्रतअसिधारा
सैलसुलच्छन सुता तुम्हारी ❀ सुनहुजोअबअवगुनदुइचारी
अगुनअमानमातुपितुहीना ❀ उदासीन सबसंसय छीना
दो० जोगी जटिल अकाम मन, नगन अमङ्गल बेष ।
असस्वामी एहिकहँ मिलिहि, परीहस्तअसिरेष ६७
सुनिमुनिगिरासत्यजियजानी ❀ दुष दंपतिहि उमा हरषानी
नारदहू यह भेद न जाना ❀ दसा एक समुझब बिलगाना
सकलसषीगिरिजागिरिमैना ❀ पुलक सरीर भरे जल नैना

होइ न मृषा देव रिषि भाषा ❁ उमा सो बचन हृदय धरि राषा
उपजेउ सिवपद कमल सनेहू ❁ मिलन कठिन भा मन संदेहू
जानि कुअवसर प्रीति दुराई ❁ सषी उछंग बैठि पुनि जाई
झूठि न होइ देव रिषि बानी ❁ सोचहिं दंपति सषी सयानी
उर धरि धीर कहै गिरिराऊ ❁ कहहु नाथ का करिय उपाऊ

दो० कह मुनीस हिमवंत सुनु, जो बिधि लिषा लिलार ।
देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटनि हार ॥ ६८ ॥

तदपि एक मैं कहौं उपाई ❁ होइ करै जौं दैउ सहाई
जस बर मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं ❁ मिलिहि उमाहि तस संसय नाहीं
जे जे बर के दोष बषाने ❁ ते सब सिव पहिं मैं अनुमाने
जौं बिवाह संकर सन होई ❁ दोषौ गुन सम कह सब कोई
जौं अहि सेज सयन हरि करहीं ❁ बुध कछु तिन्ह कर दोष न धरहीं
भानु कृसानु सर्ब रस पाहीं ❁ तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई ❁ सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई
समरथ को नहिं दोष गुसाईं ❁ रवि पावक सुरसरि की नाईं

दो० जौं अस हिसिषा करहिं नर, जड़ बिवेक अभिमान ।
परहिं कलप भरि नरक महुँ, जीव कि ईस समान ॥ ६९ ॥

सुरसरि जल कृत बारुनि जाना ❁ कबहु न संत करहि तहि पाना
सुरसरि मिले सो पावन जैसे ❁ ईस अनीसहि अंतर तैसे
संभु सहज समरथ भगवाना ❁ एहि बिवाह सब बिधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेसू ❁ आसुतोष पुनि किए कलेसू
जौं तप करै कुमारि तुम्हारी ❁ भाविउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी
जद्यपि बर अनेक जग माहीं ❁ एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं

वर दायक प्रनतारतिभंजन ❀ कृपासिंधु सेवक मनरंजन
इच्छितफल बिनुसिवअवराधे ❀ लहिअनकोटिजोगजपसाधे

दो० असकहि नारदसुमिरिहरि, गिरिजहिदीन्ह असीस।
होइहिअब कल्यानसब, संसय तजहु गिरीस ॥७०॥

असकहिब्रह्मभवनमुनिगयऊ ❀ आगिलचरितसुनहुजसभयऊ
पतिहिइकांत पाइ कह मैना ❀ नाथ न मैं बूझे मुनि बयना
जौं घरबर कुल होइ अनूपा ❀ करिअबिवाह सुताअनुरूपा
नत कन्या बरु रहौ कुँआरी ❀ कन्त उमा मम प्रानपिआरी
जौंनमिलिहिबरगिरिजहियोगू ❀ गिरिजडसहजकहिहिसबलोगू
सोइबिचारिपतिकरेहुबिबाहू ❀ जेहि न बहोरि होइ उर दाहू
असकहिपरीचरनधरिसीसा ❀ बोले सहित सनेह गिरीसा
बरुपावक प्रगटै ससि माहीं ❀ नारद बचन अन्यथा नाहीं

दो० प्रिया सोचपरिहरहुअब, सुमिरहु श्रीभगवान।
पारबतिहिनिरमयेउजेहि, सोइकरिहि कल्यान॥७१॥

अब जौं तुम्हहि सुता परनेहू ❀ तौ अस जाइ सिखावन देहू
करइसोतपुजेहिमिलहिंमहेसू ❀ आनउपाइन मिटिहिकलेसू
नारद बचन सगर्भ सहेतू ❀ सुंदर सबगुन निधि बृषकेतू
असबिचारिसबतजहुअसंका ❀ सबहि भाँतिसंकरअकलंका
सुनिपतिबचनहरषिमनमाहीं ❀ गईतुरतउठि गिरिजा पाहीं
उमहिंबिलोकिनयनभरेबारी ❀ सहित सनेह गोद बैठारी
बारहिबार लेति उर लाई ❀ गदगदकंठ न कछु कहिजाई
जगत मातु सर्बज्ञ भवानी ❀ मातुसुखद बोली मृदुबानी

दो॰ सुनहि मातु मैं दीष अस, सपन सुनावौं तोहि ॥
सुंदर गौर सुविप्रवर, अस उपदेसेउ मोहि ७२ पा॰ मा॰
करहि जाइ तप सैलकुमारी ❁ नारद कहा सो सत्य बिचारी
मातुपितहि पुनि यह मत भावा ❁ तप सुषप्रद दुषदोष नसावा
तप बल रचै प्रपंच बिधाता ❁ तपबल बिष्णु सकल जगत्राता
तप बल संभु करहिं संघारा ❁ तप बल सेष धरैं महि भारा
तप अधार सब सृष्टि भवानी ❁ करहि जाइ तप अस जिय जानी
सुनत बचन बिसमित महतारी ❁ सपन सुनायउ गिरिहिं हँकारी
मातु पितहि बहु बिधि समुझाई ❁ चली उमा तपहित हरषाई
प्रियपरिवार पिता अरु माता ❁ भयउ बिकल मुष आव न बाता
दो॰ बेदसिरा मुनि आइ तब, सबहि कहा समुझाइ ।
पारवती महिमा सुनत, रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ७३ ॥
उर धरि उमा प्रानपति चरना ❁ जाइ बिपिन लागी तप करना
अति सुकुमारि न तन तप जोगू ❁ पति पद सुमिरि तजे सब भोगू
नित नव चरन उपज अनुरागा ❁ बिसरी देह तपहि मन लागा
संवत सहस मूल फल पाए ❁ साग पाइ सत बरष गवांए
कछु दिन भोजन बारि बतासा ❁ किए कठिन कछु दिन उपवासा
वेलपात महि परे सुपाई ❁ तीनि सहस संवत सोइ षाई
पुनि परिहरे सुषाने परना ❁ उमहि नाम तब भयउ अपरना
देषि उमहि तप षीन सरीरा ❁ ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा
दो॰ भयउ मनोरथ सुफल तव, सुनु गिरिराज कुमारि ।
परिहरु दुसह कलेस सब, अब मिलिहहि त्रिपुरारि ७४
अस तप काहु न कीन्ह भवानी ❁ भए अनेक धीर मुनि ज्ञानी

अब उर धरहु ब्रह्मबरबानी * सत्यसदा संतत सुचि जानी
आवैपिता बोलावन जबहीं * हठपरिहरि घरजायेहुतबहीं
मिलिहितुमहिजबसप्तरिषीसा * जानिहु तब प्रमानबागीसा
सुनतगिराबिधिगगनबषानी * पुलकगातगिरिजा हरषानी
उमाचरित सुन्दर मैं गावा * सुनहुसंभु कर चरितसुहावा
जबते सती जाइतन त्यागा * तबतेसिवमनभए उबिरागा
जपहिं सदारघुनायकनामा * जहँतहँ सुनहिंरामगुनग्रामा
दो० चिदानंद सुषधाम सिव, बिगत मोहमद काम।
बिचरहिंमहिधरिहृदयहरि, सकललोकअभिराम ७५
कतहुँमुनिन्हउपदेसहिंज्ञाना * कतहुँरामगुन करहिंबषाना
जदपिअकामतदपिभगवाना * भगतबिरहदुषदुपितसुजाना
एहिबिधिगयउकालबहुबीती * नितनइ होइ रामपद प्रीती
नेमप्रेम संकर कर देषा * अबिचलहृदयभगति कैरेषा
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला * रूपसीलनिधि तेजबिसाला
बहुप्रकार संकरहि सराहा * तुम्हबिनुअसब्रतकोनिरबाहा
बहुबिधिरामसिवहिसमुझावा * पारबती कर जनम सुनावा
अतिपुनीतगिरिजाकैकरनी * बिस्तरसहितकृपानिधिबरनी
दो० अब बिनती ममसुनहु सिव, जौं मोपर निज नेहु॥
जाइ बिबाहहु सैलजहि, यह मोहि मागेदेहु ॥ ७६ ॥
कहसिवजदपिउचितअसनाहीं * नाथबचन पुनिमेटिनजाहीं
सिरधरिआयसुकरियतुम्हारा * परम धरम यह नाथहमारा
मातु पिता प्रभु गुरकै बानी * बिनहिबिचारकरिअसुभजानी
तुम्हसबभाँतिपरमहितकारी * अज्ञा सिरपर नाथ तुम्हारी

प्रभुतोषेउ सुनि संकरबचना ❋ भक्ति बिबेक धर्मजुत रचना
कहप्रभु हरतुह्मार पनरहेऊ ❋ अबउरराषेहुहम जो कहेऊ
अंतर धान भए अस भाषी ❋ संकर सोइ मूरति उरराषी
तबहिंसप्तरिषिसिवपहिंआए ❋बोलेप्रभुअति बचन सोहाए
दो॰ पारबती पहिं जाइ तुम्ह, प्रेम परिछा लेहु ।
गिरिहि प्रेरि पठयहु भवन, दूरि करेहु संदेहु ७७ ॥
रिषिन्ह गौरि देषीतहँ कैसी ❋ मूरतिवंत तपस्या जैसी
बोले मुनि सुन सैलकुमारी ❋ करहु कवनकारन तपभारी
केहि अवराधहुकातुम्हचहहू ❋ हमसन सत्यमरम सबकहहू
सुनतरिषिनकेवचनभवानी ❋ बोली गूढ मनोहरबानी
कहतमरममनअतिसकुचाई ❋ हँसिहहुसुनिहमारि जडताई
मनहठ परा नसुनै सिषावा ❋ चहतवारिपरभीत उठावा
नारद कहा सत्य सोइ जाना ❋बिनुपंषन्हहमचहहिंउडाना
देषहु मुनि अविवेक हमारा ❋ चाहियसिवहिसदाभरतारा
दो॰ सुनत बचन बिहँसे रिषय, गिरि संभव तवदेह ॥
नारद कर उपदेस सुनि, कहहु बसेउ किसुगेह ७८ ॥
दच्छसुतन्हि उपदेसेन्हिजाई ❋ तिन्हफिरिभवननदेषाआई
चित्र केतुकरघर उन्ह घाला ❋ कनककसिपुकरपुनिअसहाला
नारद सिषजे सुनहिंनरनारी ❋ अवसिहोहिंतजिभवनभिषारी
मनकपटीतनसज्जनचीन्हा ❋ आपुसारिससबहीचहकीन्हा
तेहिकेबेचनमानि बिस्वासा ❋तुम्हचाहहुपातिसहज उदासा
निर्गुनानिलज कुबेषकपाली ❋ अकुलअगेहदिगंबर ब्याली
कहहुकवनसुष असवर पाए ❋ भल भूलिहु ठगके बौराए

पंचकहैं सिवसती बिवाही ❋ पुनिअवडेरिमराएन्हिताही
दो० अवसुष सोवत सोचनहिं, भीषमागि भवपाहिं ॥
सहज एकाकिन्हके भवन, कबहुँकि नारि षटाहिं ७९
अजहूँ मानहु कहा हमारा ❋ हमतुम्हकहँवर नीकविचारा
अतिसुंदरसुचिसुषदसुसीला ❋ गावहिंवेदजासु जसलीला
दूषन रहित सकलगुनरासी ❋ श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी
असबरतुम्हहिमिलाउबआनी ❋ सुनतबचनकह बिहँसि भवानी
सत्य कहेहुगिरिभवतनएहा ❋ हठ न छूट छूटै बरु देहा
कनको पुनि पषान ते होई ❋ जारेहु सहज न परिहरसोई
नारद बचन न मैं परि हरऊँ ❋ बसौभवन उजरौनहिंडरऊँ
गुरकेबचन प्रतीत न जेही ❋ सपनेहुसुगमनसुख सिधि तेही
दो० महादेव अवगुन भवन, विष्णु सकल गुनधाम ॥
जेहिकर मनरम जाहिसन, तेहि तेही सनकाम ८०
जौंतुम्हमिलतेहुप्रथममुनीसा ❋ सुनति उँसिपतुम्हारि धरिसीसा
अब मैं जनम संभुसैं हारा ❋ कोगुन दूषन करइ बिचारा
जौं तुम्हरे हठहृदय बिसेषी ❋ रहि न जाइ बिनुकिए बरेषी
तौकौतुकिअन्हआलसनाहीं ❋ बरकन्या अनेक जगमाहीं
जनमकोटिलगिरगरिहमारी ❋ बरों संभु नतरहौं कुँआरी
तजौं न नारदकर उपदेसू ❋ आपु कहहिं सतबार महेसू
मैं पाँ परौं कहे जगदंबा ❋ तुम्हगृहगवनहुभएउबिलंबा
देखि प्रेम बोले मुनिज्ञानी ❋ जयजय जगदंबिके भवानी
दो० तुम्हमाया भगवान सिव, सकलजगत पितुमात ।
नाइ चरन सिर मुनि चले, पुनिपुनि हरषतगात ॥ ८१

जाइमुनिन्ह हिमवंत पठाए * करिबिनतीगिरिजहिगृहल्याए
बहुरिसप्तरिषिसिवपाहिंजाई * कथा उमा कै सकल सुनाई
भएमगनसिव सुनतसनेहा * हरषि सप्तरिषि गवने गेहा
मनकरिथिरतवसंभुसुजाना * लगे करन रघुनायक ध्याना
तारकुअसुरभएउतेहिकाला * भुजप्रतापबल तेज बिसाला
तेहिंसबलोकलोकपतिजीते * भए देव सुष संपति रीते
अजरअमरसोजीतिन जाई * हारेसुर करि बिबिधि लराई
तब बिरंचि पहिं जाइ पुकारे * देषे बिधि सब देव दुषारे
दो० सबसन कहाबुझाइ बिधि, दनुज निधन तब होइ।
संभु सुक्र संभूत सुत, एहिजीतै रन सोइ ॥ ८२ ॥
मोरकहा सुनि करहु उपाई * होइहिईस्वर करिहि सहाई
सती जोतजी दच्छमषदेहा * जनमी जाइ हिमाचल गेहा
तेहिंतपकीन्हसंभुपतिलागी * सिव समाधि बैठे सब त्यागी
जदपिअहै असमंजसभारी * तदपि बातयक सुनहु हमारी
पठवहु काम जाइसिवपाहीं * करै छोभ संकर मनमाहीं
तबहम जाइसिवहिसिरनाई * करवाउब बिवाह बरिआई
एहिबिधिभलेहिदेवहितहोई * मतअति नीक कहै सब कोई
अस्तुतिसुरन्हकीन्हिअतिहेतू * प्रगटेउ बिषम बानझष केतू
दो० सुरन्ह कही निजबिपतिसब, सुनि मनकीन्ह बिचार।
संभुबिरोध न कुसलमोहि, बिहंसिकहेउ असमार ८३
तदपि करबमैं काजतुम्हारा * श्रुतिकहपरमधरमउपकारा
परहित लागितजै जे देही * संतत संत प्रसंसहिं तेही
असकहिचलेउसबहिसिरनाई * सुमन धनुष कर लेत सहाई

चलतमारअसहृदयबिचारा ※ सिवबिरोध ध्रुव मरनहमारा
तब आपन प्रभाव विस्तारा ※ निजबसकीन्ह सकलसंसारा
कोपेउ जबहिं वारिचर केतू ※ छनमह मिटेसकल श्रुतिसेतू
ब्रह्मचर्ज ब्रतसंजम नाना ※ धीरज धरमज्ञान बिज्ञाना
सदाचार जपयोग बिरागा ※ सभयबिबेककटकसबभागा

छं० भागेउ बिबेक सहाय सहित सो सुभटसंजुगमहिमुरे ॥
सदग्रंथ पर्बत कंदरनि महँ जाइतेहि अँवसरदुरे ॥
होनिहारका करतारको रषवार जग परभर परा ॥
दुइमाथकहिरति नाथ जेहि कहँ कोपिकर धनुसरधरा ॥

दो० जे सजीव जगचर अचर, नारि पुरुष असनाम ॥
ते निजनिज मरजादताजि, भए सकल बसकाम ८४

सबकेहृदयमदनअभिलाषा ※ लतानिहारिनवहिं तरुसाषा
नदीउमागि अंबुधिकहँ धाई ※ संगमकरहिं तलाव तलाई
जहँअसिदसाजडन्हकैबरनी ※ कोकहि सकै सचेतन करनी
पसु पंछी नभ जलथलचारी ※ भए कामबस समय बिसारी
मदनअंधब्याकुलसबलोका ※ निसिदिन नहिंअवलोकहिंकोका
देवदनुज नरकिन्नरब्याला ※ प्रेत पिशाच भूत बेताला
इन्हकैदसा न कहेउँबषानी ※ सदा काम के चेरे जानी
सिद्ध बिरक्तमहामुनिजोगी ※ तेपि काम बस भए बियोगी

छं० भयकाम बस जोगीस तापस पावरनि की को कहे ॥
देषहिं चराचर नारि मय जे ब्रह्म मय देषत रहे ॥
अवलाबिलोकहिंपुरुषमय जगपुरुष सब अवलामयं ॥
दुइदंड भरिब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं ॥

सो० धरीनकाहू धीर, सबके मन मनसिज हरे।
जे राषे रघुवीर, ते उबरे तेहि कालमहं ॥ ८५ ॥

उभयघरीअसकौतुकभयऊ * जबलगिकामसंभुपहिंगयऊ
सिवहिबिलोकिससंकेउमारू * भएउजथाथितिसब संसारू
भए तुरत सबजीव सुषारे * जिमि मदउतरिगएमतवारे
रुद्रहि देषिमदन भयमाना * दुरा धरष दुर्गम भगवाना
फिरतलाजकछुकरिनहिजाई * मरनठानि मनरचेसिउपाई
प्रगटेसितुरतरुचिररितुराजा * कुसमितनवतरुसषाबिराजा
वन उपवनवापिका तडागा * परमसुभगसबादिसाबिभागा
जहँतहँजनुउमगतअनुरागा * देषिमुएहुमनमनसिजजागा

छं० जागेउमनोभव मुएहुमन वनसुभगतान परैकही ॥
सीतल सुगंध सुमंदमारुतमदन अनलसषासही ॥
विगसेसरन्हि बहुकंज गुंजतपुंज मंजुल मधुकरा ॥
कलहंसपिकसुकसरसरव करिगाननाचहिं अपछरा ॥

दो० सकल कलाकरि कोटि बिधि, हारेउ सेन समेत।
चली न अचलसमाधि सिव, कोपेउहृदयनिकेत ८६

देषिरसाल बिटप वर साषा * तेहिपरचढ़ेउमदनमनमाषा
सुमन चाप निजसरसंधानें * अतिरिसताकिस्रवनलगितानें
छाडे बिषमबिसिषउरलागे * छूटि समाधि संभु तब जागे
भएउ ईसमनछोभ बिसेषी * नयनउघारिसकलदिसिदेषी
सौरभपल्लवमदनविलोका * भएउ कोप कंपेउ त्रैलोका
तबसिवतीसर नयनउघारा * चितवतकामभयउजरिछारा
हा हा कार भयउजगभारी * डरपे सुर भये असुर सुषारी

समुझिकामसुषसोचहिंभोगी * भए अकंटक साधकजोगी

छं० जोगीअकंटकभएपतिगति सुनतरतिमुरछित भई ॥
रोदतिबदति बहुभांति करुनाकरति संकरपहिंगई ॥
अतिप्रेमकरिबिनतीबिबिधिबिधिजोरिकरसनमुषरही
प्रभुआसुतोषकृपाल सिवअबला निरषिबोले सही ॥

दो० अबतेंरति तव नाथकर, होइहि नाम अनंग।
बिनुबपुब्यापिहिसबहिपुनि,सुनुनिजमिलनप्रसंग ८७

जब जदुबंस कृष्ण अवतारा * होइहि हरन महामहिभारा
कृष्ण तनय होइहि पतितोरा * बचन अन्यथा होइन मोरा
रतिगवनीसुनि संकर बानी * कथाअपरअब कहौं बषानी
देवन्ह समाचार सब पाए * ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाए
सबसुर बिष्णुबिरंचिसमेता * गए जहांसिव कृपा निकेता
पृथकपृथकतिन्हकीन्हप्रसंसा * भए प्रसन्न चन्द्र अवतंसा
बोले कृपासिंधु बृषकेतू * कहहु अमर आए केहि हेतू
कहबिधितुह्मप्रभुअंतरजामी * तदपिभगतिबसबिनवौंस्वामी

दो० सकल सुरन्ह के हृदय अस, संकर परम उछाह।
निज नयनन्हि देषा चहैं, नाथ तुम्हार बिबाह ८८॥

यहउत्सवदेखियभरिलोचन * सोइकछुकरहुमदनमदमोचन
कामजारिरतिकहँबरदीन्हा * कृपासिंधुयहअतिभलकीन्हा
सासतिकरिपुनिकरहिंपसाऊ * नाथप्रभुन्हकरसहजसुभाऊ
पारबती तप कीन्ह अपारा * करहुतासु अब अंगीकारा
सुनिबिधिबिनयसमुझिप्रभुबानी * ऐसेइ होउ कहा सुष मानी
तब देवन्ह दुंदुभी बजाई * बरषिसुमन जयजयसुरसाई

अवसरजानिसप्तरिषि आए ❋ तुरतहिबिधिगिरिभवनपठाए
प्रथम गए जहँरही भवानी ❋ बोले मधुर बचन छलसानी

दो० कहाहमार न सुनेउतव, नारद के उपदेस॥
अबभाझूठतुम्हार प्रन, जारेउकाममहेस॥८९॥

सुनिबोली मुसुकाइभवानी ❋ उचितकहेउमुनिवरविज्ञानी
तुम्हरेजान काम अबजारा ❋ अबलगि संभु रहेसविकारा
हमरे जान सदासिवयोगी ❋ अजअनवद्यअकामअभोगी
जौं मैं सिव सेए असजानी ❋ प्रीति समेत करममनबानी
तौ हमार पनसुनहु मुनीसा ❋ करिहहिं सत्यकृपानिधिईसा
तुम्हजोकहा हरजारेउमारा ❋ सोइअतिबडअविवेकतुम्हारा
तातअनलकरसहजसुभाऊ ❋ हिमतेहिनिकटजाइनहिंकाऊ
गएसमीपसो अवसिनसाई ❋ असिमनमथमहेसकइ नाई

दो० हिय हरषे मुनि बचन सुनि, देषिप्रीति बिस्वास॥
चले भवानिहि नाइसिर, गए हिमाचलपास॥९०॥

सबप्रसंगगिरिपतिहि सुनावा ❋ मदनदहनसुनिअतिदुषपावा
बहुरिकहेउरतिकर वरदाना ❋ सुनिहिमवंतबहुतसुष माना
हृदय बिचारि संभु प्रभुताई ❋ सादर मुनिवर लिए बोलाई
सुदिन सुनषतसुघरीसोचाई ❋ बेगिवेद बिधिलगन धराई
पत्रीसप्तरिषिन्ह सो दीन्ही ❋ गहिपदविनयहिमाचलकीन्ही
जाइबिधिहि तिन्हदीन्हिसोपाती ❋ बाँचत प्रीतिन हृदय समाती
लगनबाँचिबिधिसबहिसुनाई ❋ हरषे मुनिसब सुर समुदाई
सुमनवृष्टिनभबाजन बाजे ❋ मंगलसकलदसहुदिसि साजे

दो॰ लगेसवारन सकल सुर, बाहन बिबिधि बिमान॥
होहिंसगुन मंगल सुभग, करहिं अपछरा गान९१

सिवहिंसंभुगनकरहिंसिंगारा * जटामुकुटअहिमौर सँवारा
कुंडल कंकनपहिरे ब्याला * तनबिभूतिपटकेहरि छाला
ससि ललाट सुंदरसिरगंगा * नयन तीन उपबीतभुजंगा
गरलकंठ उरनरसिर माला * असिवबेषसिवधाम कृपाला
करत्रिसूलअरुडमरुबिराजा * चलेबसहचढ़िबाजहिं बाजा
देषिसिवहिसुरत्रिय मुसुकाहीं * बरलायकदुलहिनिजगनाहीं
बिष्णुबिरंचिआदिसुरब्राता * चढ़िचढ़ि बाहन चलेबराता
सुर समाजसबभांतिअनूपा * नहिं बरात दूलह अनुरूपा

दो॰ बिष्णुकहाअसबिहँसि तब, बोलिसकलदिसि राज।
बिलगबिलगहोइचलहु सब, निजनिजसहितसमाज॥

बर अनुहारि बरात न भाई * हँसी करैहहु पर पुर जाई
बिष्णुबचनसुनिसुरमुसकाने * निजनिजसेनसहितबिलगाने
मनहीं मन महेस मुसकाहीं * हरिकेब्यंगबचन नहिं जाहीं
अतिप्रियबचनसुनतप्रियकेरे * भृंगिहि प्रेरि सकलगन टेरे
सिवअनुसासनसुनिसबआए * प्रभुपदजलजसीसतिन्हनाए
नाना बाहन नाना बेषा * बिहँसेसिवसमाज निज देषा
कोउमुषहीनबिपुलमुषकाहू * बिनुपदकरकोउ बहु पदबाहू
बिपुलनयनकोउनयनबिहीना * रिष्टपुष्टकोउ अतितनषीना

छं॰ तनषीनकोउ अतिपीनपावनकोउ अपावनगतिधरें॥
भूषनकरालकपालकर सबसद्यसोनिततनभरें॥

षरस्वानसुअर सृगालमुषगनबेष अगनित कोगनै ॥
बहुजिनसप्रेतपिसाच जोगिजमातिवरतन नहिं बनै ॥

सो० नाचहिं गावहिं गीत, परम तरंगी भूत सब ।
देखतअतिबिपरीत, बोलहिं बचनबिचित्रबिधि९३ ।

जस दूलह तसबनी बराता * कौतुकबिबिधहोहिंमगजाता
इहांहिमाचलरचेउ बिताना * अतिबिचित्रनहिंजात बषाना
सैलसकलजहँलगिजगमाहीं * लघुबिसालनहिंबरनि सिराहीं
वन सागरनद नदी तलावा * हिमगिरिसबकहँनेवत पठावा
काम रूप सुंदर तन धारी * सहितसमाज सहितबरनारी
गए सकल तुहिमाचल गेहा * गावहिं मंगलसहित सनेहा
प्रथमहिगिरिबहुगृह सँवराए * जथाजोग जहँ तहँसबछाए
पुर सोभा अवलोकिसुहाई * लागै लघु बिरंचि निपुनाई

छं० लघुलाग बिधिकी निपुनताअवलोकिपुर सोभासही ॥
वनबाग कूप तडाग सरिता सुभग सबसक को कही ॥
मंगल बिपुल तोरन पताका केतुगृह गृह सोहहीं ॥
बनितापुरुष सुंदरचतुरछबि देखिमुनिमन मोहहीं ॥

दो० जगदंबा जहँ अवतरी, सो पुर बरनि कि जाइ ।
रिधिसिधिसंपतिसकलसुख, नितनूतनअधिकाइ ९४

नगर निकटबरातसुनिआई * पुर षरभर सोभा अधिकाई
करिबनावसजि बाहननाना * चले लेन सादर अगवाना
हिअ हरषे सुर सेननिहारी * हरिहिदेषिअतिभयेसुखारी
सिव समाज जब देषनलागे * बिडरिचले बाहन सबभागे
धरि धीरज तहँ रहे सयाने * बालक सब लैजीव पराने

गए भवन पूछहिं पितुमाता * कहहिंबचनभयकंपितगाता
कहियकाहकहिजाइनबाता * जमकरधारिकिधौंबरियाता
वर बौराह वरद असवारा * ब्यालकपाल बिभूषन छारा
छं० तनछारब्याल कपालभूषन नगनजटिलभयंकरा ।
संगभूतप्रेत पिसाचजोगिनि बिकटमुखरजनीचरा ॥
जोजियतरहिहि बरातदेखत पुन्यबड तेहिकरसही ।
देखिहिसोउमाबिवाहघरघरबातअसिलरिकन्हिकही
दो० समुझिमहेससमाजसब, जननिजनकमुसुकाहिं ।
बालबुझाएबिबिधिबिधि, निडरहोहुडरनाहिं ९५ ।
लै अगवान बरातहिं आए * दिएसबहि जनवाससुहाए
मैना सुभ आरती सँवारी * संग सुमंगल गावहिं नारी
कंचनथार सोह वर पानी * परिछनचलीं हरहिहरपानी
बिकट बेषरुद्रहि जबदेषा * अवलन्हउरभयभएउबिसेषा
भागिभवन पैठीं अतित्रासा * गयउ महेस जहांजनवासा
मैना हृदय भयउ दुखभारी * लीन्हीबोलि गिरीसकुमारी
अधिक सनेह गोद बैठारी * स्यामसरोज नयनभरे वारी
जेहिंबिधितुम्हहिरूपअसदीन्हा * तेहिंजडवरबाउरकस कीन्हा
छं० कसकीन्हबरबौराहबिधिजेहि तुम्हहिंसुंदरतादई ।
जोफलचहिअ सुरतरुहिसो बरबसबबूरहिलागई ॥
तुम्हसहितगिरितगिरौंपावकजरौंजलनिधिमहँपरौं।
घरजाउअपजसहोउजगजीवत बिवाहनहौंकरौं ॥
दो० भईबिकलअबलासकल, दुखितदेखिगिरिनारि ।
करिबिलापरोदतिबदति, सुतासनेहसँभारि ९६ ॥

नारद कर मैं काह बिगारा ❋ भवनमोरजिन्हबसतउजारा
असउपदेसउमाहिजिन्हदीन्हा ❋ बौरे बरहि लागि तप कीन्हा
सांचेउ उनके मोहन माया ❋ उदासीन धन धामनजाया
पर घर घालक लाजनभीरा ❋ बांझ किजान प्रसवकै पीरा
जननिहिबिकलबिलोकिभवानी ❋ बोलीजुत बिबेक मृदुबानी
असबिचारिसोचहिमातिमाता ❋ सो न टरै जो रचै बिधाता
करम लिखा जौं वाउर नाहू ❋ तौकत दोस लगाइअ काहू
तुम्हसनामिटिहिंकिविधिकेअंका ❋ मातुव्यर्थ जानिलेहु कलंका

छं० जानिलेहु मातुकलंककरुनापरिहरहुअवसरुनहीं ।
दुखसुखजो लिषालिलारहमरेजाबजहँपाउबतहीं ॥
सुनिउमाबचन बिनीतकोमलसकलअबलासोचहीं ।
बहुभांतिबिधिहिलगाइदूषननयनबारि बिमोचहीं ॥

दो० तेहि अवसर नारद सहित, अरु रिषि सप्त समेत ।
समाचारसुनितुहिनगिरि, गवनेतुरतनिकेत ॥ ९७ ॥

तब नारद सबही समुझावा ❋ पूरब कथा प्रसंग सुनावा
मयनासत्य सुनहु ममबानी ❋ जगदंबा तव सुता भवानी
अजाअनादिसक्तिअबिनासिनि ❋ सदासम्भुअरधंगनिवासिनि
जगसंभवपालनलयकारिनि ❋ निजइच्छालीलाबपु धारिनि
जनमी प्रथम दच्छ गृह जाई ❋ नाम सती सुंदर तन पाई
तहउँसती संकरहि बिवाहीं ❋ कथाप्रसिद्धसकलजगमाहीं
एक बार आवत सिव संगा ❋ देषेउ रघुकुल कमल पतंगा
भएउमोहसिवकहानकीन्हा ❋ भ्रमबसवेष सीयकरलीन्हा
छं० सियबेषसतीजोकीन्हतोहि अपराधसंकरपरिहरी ॥

हरविरहजाइबहोरिपितुके जग्य जोगानलजरी ।
अबजनमितुम्हरेभवननिजपतिलागिदारुनतपुकिया॥
असजानिसंसयतजहुगिरिजासर्वदा संकरप्रिया ॥

दो० सुनि नारद के बचन तब, सब कर मिटा बिषाद ।
छनमहँब्यापेउसकलपुर, घर घर यह संवाद ॥ ९८ ॥

तब मयना हिमवंत अनंदे ❋ पुनि पुनि पारबती पद बंदे
नारिपुरुषसिसु जुवा सयाने ❋ नगरलोग सब अतिहरषाने
लगे होन पुर मंगल गाना ❋ सजेसबहिं हाटकघटनाना
भाँति अनेक भई जेवनारा ❋ सूपसास्त्रजस कछुब्यवहारा
सोजेवनार कि जाइ बषानी ❋ बसहिंभवनजेहिंमातु भवानी
सादर बोले सकल बराती ❋ बिष्णुबिरंचि देव सब जाती
बिबिधिपाँति बैठी जेवनारा ❋ लागेपरुसन निपुन सुआरा
नारि बृंद सुर जेंवत जानी ❋ लगीं देन गारी मृदु बानी

छं० गारीमधुरसुरदेहिंसुंदरि ब्यंग्यबचनसुनावहीं ।
भोजनकरहिंसुरअतिबिलंबबिनोदसुनिसचुपावहीं ॥
जेवँतजोबढ्यो अनंदसोमुखकोटिहूनपरैकह्यो ।
अचवाइदीन्हेपानगवनेबासजहँजाकोरह्यो ॥

दो० बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहँ, लगन सुनाई आइ ।
समय बिलोकि बिवाह कर, पठये देव बोलाइ ९९ ॥

बोलि सकल सुरसादर लीन्हे ❋ सबहिजथोचितआसनदीन्हे
बेदी बेद बिधान सँवारी ❋ सुभग सुमंगलगावहिं नारी
सिंहासन अतिदिब्यसुहावा ❋ जाइनबरनि बिरंचि बनावा
बैठे सिव बिप्रन सिरनाई ❋ हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुराई

बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई ❋ करि सिंगार सखी लै आई
देखत रूप सकल सुर मोहे ❋ बरनै छबि अस जग कबि को है
जगदंबिका जानि भव भामा ❋ सुरन्ह मनहि मन कीन्ह प्रनामा
सुंदरता मरजाद भवानी ❋ जाइ न कोटिहु बदन बखानी

छं० कोटिहु बदन नहिं बनै बरनत जगजननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद मंदमति तुलसी कहा॥
छबिषानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप सिव जहाँ।
अवलोकि सकहि न सकुच पति पद कमल मन मधुकर तहाँ॥

दो० मुनि अनुसासन गनपतिहि, पूजेउ संभु भवानि॥
कोउ सुनि संसय करै जनि, सुर अनादि जिअ जानि १००

जसि बिबाह कै बिधि श्रुति गाई ❋ महामुनिन्ह सो सब करवाई
गहि गिरीस कुस कन्या पानी ❋ भवहि समरपी जानि भवानी
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा ❋ हिय हरषे तब सकल सुरेसा
बेदमंत्र मुनिवर उच्चरहीं ❋ जय जय जय संकर सुर करहीं
बाजहिं बाजन बिबिधि बिधाना ❋ सुमनबृष्टि नभ भै बिधि नाना
हर गिरिजा कर भयउ बिबाहू ❋ सकल भुवन भरि रहा उछाहू
दासी दास तुरग रथ नागा ❋ धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा
अन्न कनक भाजन भरि जाना ❋ दाइज दीन्ह न जाइ बषाना

छं० दाइज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यो।
का देउँ पूरनकाम संकर चरनपंकज गहि रह्यो॥
सिव कृपासागर ससुर कर संतोष सब भाँतिहि कियो।
पुनि गहे पद पाथोज मयना प्रेम परिपूरन हियो॥

दो० नाथ उमा मम प्रान प्रिय, गृह किंकरी करेहु ।
छमहुसकलअपराधअब, होइप्रसन्नवरुदेहु १०१ ॥

बहुबिधि संभु सासु समुझाई * गवनीभवन चरन सिरनाई
जननीउमाबोलितबलीन्ही * लै उछंग सुंदर सिष दीन्ही
करेहु सदा संकर पद पूजा * नारिधरम पतिदेव न दूजा
बचनकहतभरि लोचन बारी * बहुरिलाइउरलीन्हिकुमारी
कतबिधिसृजीनारि जगमाहीं * पराधीन सपनेहु सुख नाहीं
भइअतिप्रेमबिकलमहतारी * धीरजकीन्हकुसमयबिचारी
पुनिपुनि मिलतिपरतिगहिचरना * परमप्रेमकछु जाइनबरना
सबनारिन्हमिलिभेंटिभवानी * जाइजननिउरपुनिलपटानी

छं० जननिहिंबहुरि मिलिचलीं उचितअसीससबकाहूँदई
फिरिफिरिबिलोकति मातुतन जबसखीलैसिवपहिंगई
जाचकसकलसंतोषि संकरउमासहित भवनहि चले
सब अमरहरषे सुमनबरषि निसाननभबाजे भले

दो० चले संगहिमवंत तब, पहुचावन अति हेतु ।
बिबिध भाँतिपरितोष करि, बिदाकीन्हबृषकेतु १०२

तुरतभवनआए गिरि राई * सकल सैल सर लिये बोलाई
आदर दान बिनयबहुमाना * सबकरबिदाकीन्हहिमवाना
जबहिंसंभु कैलासहि आए * सुरसबनिजनिजलोकसिधाए
जगतमातुपितुसंभु भवानी * तेहि सिंगार न कहौं बखानी
करहिंबिबिधिबिधिभोगबिलासा * गनन्हसमेत बसहिंकैलासा
हरगिरिजाबिहारनितनएऊ * एहिबिधिबिपुलकालचलिगएऊ
तबजनमेउषटबदनकुमारा * तारकुअसुरसमरजेहिंमारा

आगमनिगमप्रसिद्ध पुराना * षटमुखजनमसकलजगजाना
छं० जगजान षटमुख जनमकर्म प्रताप पुरुषारथ महा ।
तेहिहेतु मैं वृषकेतु सुतकर चरित संक्षेपहिं कहा ॥
यह उमासंभु विवाह जेनर नारि सुनहिं जे गावहीं ।
कल्यान काज बिवाह मंगल सर्बदा सुख पावहीं ॥
दो० चरित सिंधु गिरिजा रवन, बेद न पावे पार ।
बरनै तुलसीदासकिमि, अतिमतिमंदगँवार १०३॥
संभुचरित सुनि सरससुहावा * भरद्वाजमुनिअति सुषपावा
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी * नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी
प्रेम बिबस मुषआवन बानी * दसादेखि हरषे मुनि ज्ञानी
अहोधन्य तवजन्म मुनीसा * तुम्हहिप्रानसमप्रियगौरीसा
सिवपदकमलजिन्हहिरतिनाहीं * रामहि तेसपनेहु न सुहाहीं
बिनुछल विश्वनाथ पदनेहू * राम भगत कर लच्छन एहू
सिवसमकोरघुपतिव्रतधारी * बिनुअघतजीसतीअसिनारी
पनकरिरघुपतिभगतिदृढ़ाई * को सिवसम रामहिंप्रियभाई
दो० प्रथमहि कहि मैं सिव चरित, बूझा परम तुम्हार ।
सुचि सेवक तुह्म रामके, रहितसमस्तबिकार १०४॥
मै जाना तुम्हार गुनसीला * कहौं सुनहुअबरघुपतिलीला
सुनुमुनि आजसमागमतोरे * कहिनजायजससुखमनमोरे
रामचरितअति अमितमुनीसा * कहि नसकहिंसतकोटि अहीसा
तदपिजथाश्रुतिकहौंबषानी * सुमिरिगिरापतिप्रभु धनुपानी
सारद दारुनारिसम स्वामी * राम सूत्रधर अंतरजामी
जेहिपरकृपाकरहिंजनजानी * कविउरअजिरनचावहिंबानी

प्रनवौं सोइकृपाल रघुनाथा * बरनौंविसद तासुगुन गाथा
परमरम्य गिरिवर कैलासू * सदाजहां सिवउमा निवासू
दो० सिद्ध तपोधन जोगि जन, सुरकिन्नर मुनि वृन्द।
बसहितहाँसुकृती सकल, सेवहिंसिवसुखकन्द १०५॥
हरिहर बिमुषधर्म रतिनाहीं * तेनरतहं सपनेहु नहिंजाहीं
तेहिगिरिपरवटबिटपबिसाला * नितनूतन सुंदर सब काला
त्रिबिधसमीरसुसीतलछाया * सिवबिस्रामाबिपटश्रुतिगाया
एकबार तेहितर प्रभु गयऊ * तरुबिलोकिउरअतिसुख भयऊ
निजकरडासिनागरिपुछाला * बैठे सहजहिं संभु कृपाला
कुंद इंदुदर गौर सरीरा * भुजप्रलंबपरिधनमुनि चीरा
तरुनअरुन अंबुजसमचरना * नषदुतिभगतहृदयतमहरना
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी * आनन सरदचन्दछबिहारी
दो० जटामुकुट सुरसरित सिर, लोचन नलिनबिसाल।
नीलकंठलावन्यानिधि, सोहबालबिधुमाल १०६॥
बैठे सोह कांम रिपु कैसे * धरे सरीर सांतरस जैसे
पारवती भलअवसर जानी * गईं संभु पहिं मातु भवानी
जानिप्रियाआदरअतिकीन्हा * बामभाग आसनहर दीन्हा
बैठीं सिव समीप हरषाई * पूरब जन्म कथा चितआई
पतिहियहेतुअधिकअनुमानी * बिहंसिउमा बोलीं मृदुबानी
कथाजोसकललोकहितकारी * सोइ पूछन चह सैल कुमारी
बिस्वनाथ ममनाथ पुरारी * त्रिभुवनमाहिमाबिदित तुम्हारी
चरअरु अचर नागनर देवा * सकल करहिंपद पंकजसेवा
दो० प्रभु समरथसरबज्ञ सिव, सकलकला गुनधाम॥

जोगज्ञानबैराग्यनिधि, प्रनतकल्पतरुनाम ॥ १०७ ॥
जौं मोपर प्रसन्न सुषरासी ※ जानियसत्यमोहिनिजदासी
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना ※ कहिरघुनाथकथाबिधिनाना
जासु भवन सुरतरुतर होई ※ सहिकिदरिद्र जनितदुषसोई
ससिभूषनअसहृदयबिचारी ※ हरहुनाथममम‌तिभ्रमभारी
प्रभुजे मुनि परमारथ बादी ※ कहहिं रामकहँ ब्रह्मअनादी
सेस सारदा बेद पुराना ※ सकलकरहिंरघुपतिगुनगाना
तुम्हपुनिरामराम दिनराती ※ सादर जपहु अनंग अराती
रामसोअवधनृपतिसुतसोई ※ कीअजअगुनअलषगतिकोई
दो० जौंनृपतनयतब्रह्मकिमि, नारि बिरहमति भोरि।
देषिचरित महिमा सुनत, भ्रमति बुद्धि अतिमोरि १०८
जौं अनीहव्यापकबिभुकोऊ ※ कहहुबुझाइ नाथमोहसोऊ
अज्ञजानिरिसउर जनिधरहू ※ जेहिबिधिमोहमिटैसोइकरहू
मैं बनदीष राम प्रभुताई ※ अतिभयबिकलनतुम्हहिसुनाई
तदपिमलिनमनबोधनआवा ※ सोफलभली भाँति हमपावा
अजहूं कछुसंसय मनमोरे ※ करहुकृपा बिनवौं करजोरे
प्रभुतबमोहिबहुभाँतिप्रबोधा ※ नाथसोसमुझिकरहुजनिक्रोधा
तबकरअसबिमोहअबनाहीं ※ रामकथा पररुचि मनमाहीं
कहहु पुनीत रामगुन गाथा ※ भुजगराज भूषन सुरनाथा
दो० बंदौं पदधरि धरनिसिर, बिनयकरौं करजोरि।
बरनहुरघुबरबिसदजस, श्रुतिसिद्धांतनिचोरि १०९ मा०पा० १
जदपिजोषिताअनअधिकारी ※ दासीमनक्रमबचनतुम्हारी
गूढौ तत्वनसाधु दुरावहिं ※ आरतअधिकारीजहँपावहिं

अति आरतिपूछौं सुरराया * रघुपतिकथाकहहुकरिदाया
प्रथमसोकारनकहहुबिचारी * निर्गुन ब्रह्म सगुन वपुधारी
पुनिप्रभुकहहुराम अवतारा * बालचरितपुनिकहहुउदारा
कहहु जथा जानकी बिबाही * राजतजा सो दूपनकाही
बनवसिकीन्हे चरितअपारा * कहहुनाथजिमि रावनमारा
राज बैठि कीन्ही बहुलीला * सकलकहहु संकर सुषमीला

दो० बहुरिकिहहुकरुनायतन, कीन्हजोअचरजराम।
प्रजासहितरघुबंससनि, किमिगवने निजधाम ११०॥

पुनिप्रभुकहहुसोतत्वबखानी * जेहिबिज्ञानमगनमुनिज्ञानी
भगतिज्ञान विज्ञान बिरागा * पुनिसबबरनहुसहित बिभागा
औरौ राम रहस्य अनेका * कहहुनाथअतिबिमलबिवेका
जो प्रभु में पूछा नहिं होई * सो उदयाल रापहुजनिगोई
तुम्हत्रिभुवन गुरवेद बषाना * आन जीव पांवरका जाना
प्रश्न उमा के सहज सुहाई * छलबिहीनसुनिसिवमनभाई
हरहियरामचरित सबआए * प्रेमपुलक लोचन जल छाए
श्री रघुनाथ रूप उर आवा * परमानंद अमित सुषपावा

दो० मगनध्यानरसदंडजुग, पुनिमनबाहेर कीन्ह॥
रघुपतिचरितमहेसतब, हरषित बरनै लीन्ह १११॥

झूठेउसत्यजाहि बिनु जानें * जिमिभुजंगबिनुरजुपहिचानें
जेहि जाने जग जाइ हेराई * जागे जथा सपन भ्रमजाई
बंदौंबालरूप सोइ रामू * सबबिधिसुलभजपतजिसुनामू
मंगल भवन अमंगलहारी * द्रवौसोदशरथअजिर बिहारी
करिप्रनामरामहि त्रिपुरारी * हरषि सुधासम गिराउचारी

धन्य धन्यगिरिराज कुमारी * तुमसमाननहिंकोउ उपकारी
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा * सकल लोकजगपावनिगङ्गा
तुम रघुबीर चरन अनुरागी * कीन्हिहुप्रश्नजगतहित लागी
दो॰ रामकृपा ते हिमसुता, सपनेहु तव मन माहिं ॥
सोकमोह संदेह भ्रम, ममबिचारकछुनाहिं॥११२॥
तदपिअसंका कीन्हिहुसोई * कहत सुनत सबकरहितहोई
जिन्हहरिकथासुनीनाहिंकाना * स्रवनरंध्रअहि भवनसमाना
नयनन्हि संत दरसनहिदेषा * लोचन मोर पंष कर लेषा
ते सिरकटुतूबरिसम तूला * जेननमत हरि गुरपद मूला
जिन्हहरिभगतिहृदयनहिआनी * जीवत सवसमान तेइ प्रानी
जो नहिं करै राम गुनगाना * जीहसो दादुरजीह समाना
कुलिसकठोरनिठुरसइ छाती * सुनिहरिचरितनजोहरषाती
गिरिजा सुनहु रामकै लीला * सुरहितदनुजबिमोहनसीला
दो॰ राम कथा सुरधेनुसम, सेवत सब सुष दानि ॥
सतसमाज सुरलोकसम, कोनसुनैअसजानि ११३॥
राम कथा सुंदर करतारी * संसय बिहंग उडावनि हारी
रामकथाकलिविटपकुठारी * सादर सुनु गिरिराजकुमारी
राम नामगुन चरित सुहाए * जनमकरमअगनित श्रुतिगाए
जथा अनंतराम भगवाना * तथा कथा कीरति गुननाना
तदपिजथाश्रुतिजसिमतिमोरी * कहिहौंदेषिप्रीति अतितोरी
उमाप्रश्न तव सहज सुहाई * सुषद संत संमत मोहि भाई
एक बातनहिंमोहिं सोहानी * जदपिमोहबसकहेहुभवानी
तुह्मजोकहारामकोउ आना * जेहिश्रुतिगावधरहिंमुनिध्याना

दो० कहहिं सुनहिं असअधमनर, ग्रसे जो मोहपिसाच।
पाषंडी हरिपद बिमुष, जानहिंझूठ न साँच ११४॥

अज्ञअकोबिद अंध अभागी * काई बिषयमुकुर मन लागी
लंपट कपटी कुटिल बिसेषी * सपनेहु संत सभानहिं देषी
कहहिं ते बेद असंमत बानी * जिन्हहिनसूझलाभनहिंहानी
मुकुरमलिनअरुनयनबिहीना * रामरूपदेषहिं किमि दीना
जिन्हकेअगुननसगुनबिबेका * जल्पहिंकल्पितबचन अनेका
हरिमायाबसजगत भ्रमाहीं * तिन्हहिकहतकछुअघटितनाहीं
बातुल भूत बिबस मतवारे * ते नहिं बोलहिं बचनबिचारे
जिन्हकृतमहामोहमदपाना * तिन्हकरकहाकरिअनहिंकाना

सो० अस निज हृदयबिचारि,तजु संसय भजु राम पद।
सुनु गिरिराजकुमारि, भ्रमतमरबिकरबचनमम ११५

सगुनहिंअगुनहिंनहिंकछुभेदा * गावहिंमुनि पुरानबुध बेदा
अगुनअरूपअलषअजजोई * भगत प्रेमबससगुन सो होई
जोगुनरहितसगुन सोइ कैसे * जलहिम उपलबिलगनहिंजैसे
जासुनामभ्रमतिमिरपतंगा * तेहिकिमिकहिअ बिमोहप्रसंगा
राम सच्चिदानंद दिनेसा * नहिंतहँ मोहनिसा लवलेसा
सहज प्रकासरूप भगवाना * नहिंतहँपुनि बिज्ञानबिहाना
हरष बिषाद ज्ञानअज्ञाना * जीवधर्मअहमितिअभिमाना
राम ब्रह्मब्यापकजगजाना * परमानंद परेस पुराना

दो० पुरुष प्रसिद्ध प्रकासनिधि, प्रगट परावर नाथ।
रघुकुलमनिमसस्वामिसोइ,कहिसिवनाएउमाथ ११६

निजभ्रमनहिंसमुझहिंअज्ञानी * प्रभुपरमोहधरहिंजड प्रानी

जथागगनघन पटलनिहारी * झापेउभानुकहहिंकुबिचारी
चितवजोलोचनअंगुलिलाए * प्रगटजुगलससितेहिकेभाए
उमाराम बिषइकअसमोहा * नभतमधूमधूरिजिमिसोहा
विषयकरन सुरजीव समेता * सकल एकतेएक सचेता
सबकर परमप्रकासक जोई * रामअनादि अवधपतिसोई
जगतप्रकास्यप्रकासक रामू * माया धीस ज्ञान गुनधामू
जासु सत्यतातें जड माया * भाससत्य इव मोह सहाया
दो० रजत सीप महभास जिमि, जथाभानुकर वारि।
जदपिमृषातिहुंकालसोइ, भ्रमनसकैकोउटारि ११७
एहिविधिजगहरि आश्रितरहई * जदपि असत्य देतदुषअहई
जौं सपने सिर काटै कोई * विनु जागें नदूरि दुषहोई
जासुकृपाअसभ्रममिटिजाई * गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई
आदिअंतकोउजासुनपावा * मतिअनुमाननिगमअसगावा
विनुपद चलैसुनै विनु काना * करविनुकरमकरैबिधिनाना
आननरहितसकलरसभोगी * विनुवानी वकता बडजोगी
तनविनुपरस नयनविनुदेषा * ग्रहै घ्रान विनुवास असेषा
असिसबभांति अलौकिककरनी * महिमाजासुजाइनहिंवरनी
दो० जेहि इमि गावहिं वेदबुध, जाहि धरहिं मुनिध्यान।
सोइदसरथसुतभगताहित, कोसलपति भगवान ११८
कासी मरतजंतु अवलोकी * जासुनामबलकरउँ बिसोकी
सोइप्रभुमोर चराचर स्वामी * रघुवर सब उर अंतरजामी
विवसहुजासु नामनरकहहीं * जनमअनेकसंचितअघदहहीं
सादर सुमिरन जेनर करहीं * भववारिधिगोपदइवतरहीं

रामसो परमातमा भवानी * तहँभ्रमअति अविहितनववानी
अससंसय आनत उरमाहीं * ज्ञानविराग म[illegible]नजाहीं
सुनिसिवकेभ्रमभंजनवचना * मिटिगेसव कुतरककेरचना
भइरघुपति पदप्रीतिप्रतीती * दारुन असंभावना वीती

दो० पुनिपुनि प्रभुपद कमलगहि, जोरिपंकरुह पानि ।
बोलीगिरिजा वचन वर, मनहुंप्रेमरस मानि ११९

ससिकरसमसुनिगिरातुम्हारी * मिटा मोह सरदातप भारी
तुम्हकृपाल सबसंसय हरेऊ * रामस्वरूप जानिमोहिंपरेऊ
नाथकृपाअबगयउविषादा * सुषीभयउँ प्रभुचरनप्रसादा
अबमोहिआपनिकिंकरिजानी * जदपिसहजजडनारिअयानी
प्रथम जोमैंपूछासोइ कहहू * जौं मोपर प्रसन्नप्रभु अहहू
रामब्रह्मचिनमयअविनासी * सर्वरहित सब उरपुरवासी
नाथ धरेउ नरतनकेहि हेतू * मोहिसमुझाइ कहहु वृषकेतू
उमाबचनसुनिपरमविनीता * रामकथा पर प्रीति पुनीता

दो० हियहरषे कामारि तब, संकर सहज सुजान ।
बहुविधि उमहि प्रसंसिपुनि, बोले कृपा निधान ॥

सो० सुनुसुभ कथाभवानि, रामचरित मानस विमल ॥
कहाभुसुंडि वषानि, सुनाविहग नायक गरुड ॥
सोसंवाद उदार, जेहिंविधि भा आगे कहव ॥
सुनहुराम अवतार, चरित परम सुंदर अनघ ॥
हरिगुन नामअपार, कथारूप अगनित अमित ॥
मैंनिजमतिअनुसार, कहौंउमासादरसुनहु १२० ॥ नवा० १

सुनुगिरिजाहरिचरितसुहाए * विपुलविसदनिगमागमगाए

हरि अवतार हेतु जेहि होई * इदमित्थं कहि जाइ न सोई
रामअतर्क्य बुद्धिमन बानी * मतहमारअससुनहिसयानी
तदपि संतमुनि वेद पुराना * जसकछुकहहिस्वमति अनुमाना
तस मैं सुमुषिसुनावौं तोही * समुझि परै जस कारन मोही
जबजब होइधरम कै हानी * बाढहिंअसुरअधम अभिमानी
करहिंअनीतिजाइनहिंबरना * सीदहिं बिप्रधेनु सुरधरनी
तबतबप्रभुधरिबिबिधसरीरा * हरहिंकृपानिधिसज्जनपीरा
दो॰ असुर मारिथापहिंसुरन्ह, राषहिंनिज श्रुति सेतु।
जगबिस्तारहिंबिसदजस, राम जनमकरहेतु १२१॥
सोइजसगाइभगतभव तरहीं * कृपासिंधुजनहिततन धरहीं
राम जनम के हेतु अनेका * परम बिचित्र एकतें एका
जनम एक दुइ कहौं बषानी * सावधानसुनुसुमतिभवानी
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ * जयअरुबिजयजानसबकोऊ
बिप्र स्राप तें दूनौं भाई * तामसअसुर देह तिन्ह पाई
कनककसिपुअरुहाटकलोचन * जगतबिदितसुरपतिमदमोचन
बिजई समर बीर बिष्याता * धरिबराह बपु एक निपाता
होइ नरहरिदूसर पुनिमारा * जनप्रहलादसुजस बिस्तारा
दो॰ भएनिसाचर जाइतेइ, महाबीर बलवान।
कुंभकरनरावनसुभट, सुरबिजई जगजान १२२॥
मुकुत न भए हते भगवाना * तीनजनमद्विजबचनप्रमाना
एकबार तिन्हके हितलागी * धरेउसरीर भगत अनुरागी
कस्यपअदितितहांपितुमाता * दशरथ कौसल्या बिष्याता
एककलपएहिबिधिअवतारा * चरित पवित्र किये संसारा

एक कल्पसुर देषि दुषारे * समर जलंधर मनसब हारे
संभु कीन्ह संग्राम अपारा * दनुज महाबल मरै न मारा
परम सती असुराधिपनारी * तेहिबलताहिनजितहिं पुरारी
दो० छलकरि टारेउ तासुब्रत, प्रभुसुर कारज कीन्ह ।
जबतेहिजानेउ मरमतब, स्रापकोप करिदीन्ह १२३
तासुसापहरि कीन्ह प्रमाना * कौतुकनिधिकृपालभगवाना
तहां जलंधर रावन भयऊ * रनहति राम परमपददएऊ
एक जनम करकारन एहा * जेहिलगिरामधरी नर देहा
प्रति अवतार कथाप्रभुकेरी * सुनिमुनिवरनीकविन्हघनेरी
नारद श्राप दीन्ह एकवारा * कल्पएकतेहिलगिअवतारा
गिरिजाचकितभईसुनिबानी * नारदविष्णुभगतपुनिज्ञानी
कारनकवनश्रापमुनिदीन्हा * काअपराधरमा पति कीन्हा
यहप्रसंग मोहि कहहु पुरारी * मुनिमनमोहआचरजभारी
दो० बोले बिहँसिमहेसतब, ज्ञानी मूढ़ न कोइ ।
जेहिजसरघुपतिकरहिं जब, सोतम तेहि छनहोइ ॥
सो० कहौं रामगुनगाथ, भरद्वाज सादर सुनहु ।
भव भंजन रघुनाथ, भजुतुलसी तजि मानमद १२४
हिमगिरिगुहाएकअतिपावनि * बहसमीपसुरसरी सुहावनि
आश्रम परमपुनीत सुहावा * देषिदेवरिषिमनअतिभावा
निरषिसैलसरिबिपिनबिभागा * भएउरमापति पदअनुरागा
सुमिरतहरिहिसापगतिवाधी * सहजबिमलमनलागिसमाधी
मुनिगति देषि सुरेस डेराना * कामहिबोलिकीन्हसनमाना
सहित सहाय जाहु ममहेतू * चलेउहरषिहियजलचर केतू

सुनासीर मनमहँअतित्रासा * चहत देवरिषि ममपुरवासा
जे कामी लोलुप जगमाहीं * कुटिलकाकइवसबहिडेराहीं

दो० सूषहाड़लै भागसठ, स्वान निरषि मृगराज ॥
छीनलेइ जनिजानजड़, तिमिसुरपतिहिनलाज १२५

तेहिआश्रमहिमदनजबगयऊ * निजमाया बसंत निरमयऊ
कुसुमित बिबिधिबिटपबहुरंगा * कूजहिंकोकिल गुंजहिंभृंगा
चलीसुहावनित्रिबिधिबयारी * कामकृसानु जगावनिहारी
रंभादिक सुरनारि नबीना * सकलअसमसरकलाप्रबीना
करहिं गान बहुतान तरंगा * बहुबिधिक्रीडहिंपानिपतंगा
देखि सहाय मदन हरषाना * कीन्हेसिपुनिप्रपंचबिधिनाना
कामकलाकछुमुनिहिनब्यापी * निजभयडरेउमनोभवपापी
सीमकिचापिसकैकोउतासू * बड़ रखवार रमापति जासू

दो० सहित सहाय सभीत अति, मानिहारि मनमैन ॥
गहेसि जाइमुनिचरनकहि, सुठिआरत मृदुबैन १२६

भएउन नारदमनकछुरोषा * कहिप्रियबचनकामपरितोषा
नाइ चरन सिर आयसुपाई * गएउमदनतब सहितसहाई
मुनिसुसीलताआपनिकरनी * सुरपतिसभा जाइसबबरनी
सुनिसबकेमनअचरजआवा * मुनिहिप्रसंसिहरिहिसिरनावा
तब नारद गवने सिवपाहीं * जिताकामअहमितिमनमाहीं
मार चरित संकरहि सुनाए * अतिप्रियजानिमहेससिषाए
बारबार बिनवौं मुनि तोही * जिमियहकथासुनायहुमोही
तिमिजनिहरिहिसुनायहुकबहूँ * चलेहुप्रसंग दुरायहु तबहूँ

दो० संभुदीन्ह उपदेस हित, नहिनारदहि सोहान ॥
भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरिइच्छा बलवान १२७ ॥
रामकीन्ह चाहहिं सोइहोई * करै अन्यथा असनहिंकोई
संभुबचन मुनिमननहिभाए * तबबिरंचिके लोक सिधाए
एकबार करतल बर बीना * गावत हरिगुन गानप्रवीना
छीरसिंधु गवने मुनि नाथा * जहँबसश्रीनिवासश्रुतिमाथा
हरषिमिले उठिरमानिकेता * बैठेआसन रिषिहि समेता
बोले बिहँसिचराचर राया * बहुतेदिनन्हिकीन्हिमुनिदाया
कामचरित नारद सबभाषे * जद्यपिप्रथमबरजि सिवराषे
अतिप्रचंडरघुपति कैमाया * जेहिंनमोहअसकोजगजाया
दो० रूषबदनकरि बचनमृदु, बोले श्रीभगवान ॥
तुम्हरे सुमिरनते मिटहिं, मोह मारमदमान १२८
सुनुमुनिमोह होइ मनताके * ज्ञान बिरागहृदय नहिजाके
ब्रह्मचरज ब्रतरत मतिधीरा * तुम्हहिंकिकरैमनोभवपीरा
नारदकहेउसहितअभिमाना * कृपातुम्हारिसकलभगवाना
करुनानिधिमनदीषबिचारी * उरअंकुरेउ गर्व तरुभारी
बेगि सो मैं डारिहौं उपारी * पन हमार सेवक हितकारी
मुनिकरहितममकौतुकहोई * अवसि उपाय करबिमैंसोई
तब नारद हरिपद सिरनाई * चलहृदयअहमितिअधिकाई
श्रीपति निजमाया तबप्रेरी * सुनहुकठिनकरनीतेहिकेरी
दो० बिरचेउमग महँनगरतेहिं, सत जोजन बिस्तार ।
श्रीनिवासपुरते अधिक, रचना बिबिधप्रकार १२९
बसहिं नगर सुंदर नरनारी * जनुबहुमनसिजरतितनधारी

तेहिपुरबसै सीलनिधि राजा * अगनितहयगयसेनसमाजा
सतसुरेससमाविभव विलासा * रूप तेजबल नीति निवासा
बिस्व मोहनी तासु कुमारी * श्रीविमोहजिसु रूपनिहारी
सोइहरिमाया सब गुनषानी * सोभातासुकि जाइबषानी
करै स्वयंबर सो नृपबाला * आएतहँअगनितमहिपाला
मुनिकौतुकीनगरतेहिगयऊ * पुरबासिन्हसनपूछत भयऊ
सुनिसबचरित भूपगृह आए * करि पूजा नृपमुनि बैठाये
दो॰ आनिदेषाई नारदहि, भूपति राजकुमारि ।
कहहुनाथगुनदोषसब, एहिके हृदयबिचारि १३० ॥
देषिरूपमुनि बिरतिबिसारी * बडी बारलगि रहे निहारी
लच्छनतासुबिलोकि भुलाने * हृदयहरषनहि प्रगटबखाने
जोएहि बरै अमर सोइ होई * समरभूमितेहिजीतन कोई
सेवहिं सकल चराचर ताहीं * बरै सीलनिधि कन्याजाहीं
लच्छनसब बिचारि उरराषे * कछुकबनाइ भूपसन भाषे
सुतासुलच्छनिकहिनृपपाहीं * नारद चले सोच मनमाहीं
करौंजाइसोइ जतन बिचारी * जेहिप्रकारमोहि बरैकुमारी
जपतपकछुनहोइ एहिकाला * हेबिधिमिलैकवनबिधिबाला
दो॰ एहिअवसरचाहिअपरम, सोभारूपबिसाल ।
जोबिलोकिरीझैकुंअरि, तब मेलइजयमाल १३१ ॥
हरि सन मागौं सुंदरताई * होइहि जात गहरुअतिभाई
मोरें हितहरिसमनाहिं कोऊ * एहिऔसर सहायसोइहोऊ
बहुविधिबिनयकीन्हतेहिकाला * प्रगटेउप्रभुकौतुकी कृपाला
प्रभुबिलोकिमुनिनयनजुड़ाने * होइहि काज हिए हरषानें

अतिआरतिकहिकथासुनाई ❋ करहुकृपा प्रभु होहु सहाई
आपन रूप देहु प्रभु मोही ❋ आनभाँति नहिं पावौं ओही
जेहिबिधिनाथहोइहितमोरा ❋ करहुसो बेगि दास मैं तोरा
निजमायाबल देषिबिसाला ❋ हियहँसि बोले दीनदयाला

दो० जेहिबिधि होइहि परमहित, नारदसुनहुतुम्हार ।
सोइहम करब न आनकछु, बचन न मृषाहमार १३२

कुपथमागरुज ब्याकुलरोगी ❋ बैदनदेइ सुनहु मुनि जोगी
एहिबिधिहित तुम्हारमैंठयऊ ❋ कहिअसअंतरहितप्रभुभयऊ
माया बिवस भये मुनिमूढ़ा ❋ समुझीनहि हरिगिरानिगूढ़ा
गवने तुरत तहाँ रिषिराई ❋ जहां स्वयम्बर भूमि बनाई
निजनिज आसन बैठे राजा ❋ बहुबनावकरिसहितसमाजा
मुनिमनहरष रूप अतिमोरे ❋ मोहितजि आनहिंबरिहिनभोरे
मुनिहितकारनकृपानिधाना ❋ दीन्ह कुरूप न जाइबखाना
सोचरित्र लखि काहुनपावा ❋ नारदजानिसबहि सिरनावा

दो० रहेतहां दुइरुद्र गन, ते जानहिं सब भेउ ॥
बिप्रबेषदेषतफिरहिं, परम कौतुकी तेउ १३३ ॥

जेहि समाज बैठेमुनि जाई ❋ हृदयरूपअहमितिअधिकाई
तहँ बैठे महेस गन दोऊ ❋ बिप्रबेष गतिलखइ न कोऊ
करहिं कूट नारदहि सुनाई ❋ नीकि दीन्हि हरिसुंदरताई
रीझिहिराजकुंअरिछबिदेषी ❋ इन्हहिंबरिहिहरिजानिबिसेषी
मुनिहि मोहमनहाथ पराये ❋ हँसहिंसंभुगनअतिसचुपाये
जदपिसुनहिंमुनिअटपटिबानी ❋ समुझिनपरै बुद्धिभ्रमसानी
काहुनलखा सोचरितबिशेषा ❋ सो सरूप नृप कन्या देषा

मर्कट बदन भयंकर देही ❋ देखत हृदय क्रोधभा तेही
दो० सषीसंगलै कुंवरितब, चलिजनु राजमराल।
देषत फिरैमहीप सब, करसरोज जयमाल १३४॥
जेहिदिसि बैठे नारद फूली ❋ सोदिसितेंहिनबिलोकीभूली
पुनिपुनिमुनिउकसहिंअकुलाहीं ❋ देषिदसा हरगन मुसुकाहीं
धरिनृपतनतहँगएउकृपाला ❋ कुअरिहरषिमेलेउजयमाला
दुलहिनिलै गयेलछिनिवासा ❋ नृपसमाजसबभएउनिरासा
मुनिअतिबिकलमोहमतिनाँठी ❋ मनिगिरिगईछूटिजनुगाँठी
तब हरगन बोले मुसुकाई ❋ निजमुषमुकुरबिलोकहुजाई
असकहिदोउभागेभयभारी ❋ बदनदीषमुनिबारि निहारी
बेषुबिलोकिक्रोध अतिबाढा ❋ तिन्हहिसरापदीन्हअतिगाढा
दो० होहु निसाचर जाइ तुम्ह, कपटी पापी दोउ॥
हँसेहुहमहिसोलेहुफल, बहुरिहँसेहुमुनिकोउ १३५
पुनिजल दीषरूप निजपावा ❋ तदपि हृदय संतोषनआवा
फरकत अधरकोपमनमाहीं ❋ सपदिचलेकमलापति पाहीं
देहौं साप कि मरिहौं जाई ❋ जगत मोरिउपहास कराई
बीचहि पंथ मिले दनुजारी ❋ संगरमा सोइ राजकुमारी
बोले मधुर बचन सुर साईं ❋ मुनिकहँचले बिकल कीनाईं
सुनतबचनउपजा अतिक्रोधा ❋ माया बस न रहामन बोधा
परसंपदा सकहु नहिं देषी ❋ तुम्हरे इरिषाकपट बिसेषी
मथतासिंधु रुद्रहि बौराएहु ❋ सुरन्हप्रेरिबिषपान कराएहु
दो० असुर सुरा बिष संकरहि, आपु रमा मनिचारु।
स्वारथसाधककुटिलतुम्हँ, सदा कपट ब्यवहारु१३६

परमस्वतंत्र न सिरपर कोई * भावै मनहि करहुतुम्ह सोई
भलेहिमंदमंदाहि भलकरहू * बिसमयहरषनहियकछुधरहू
डहकिडहकिपरचेहुसबकाहू * अतिअसंक मनसदा उछाहू
कर्मसुभासुभतुम्हहिनबाधा * अबलगितुमहि नकाहूसाधा
भलेभवनअब बायनदीन्हा * पावहुगे फल आपन कीन्हा
बंचेहु मोहिजवनि धरिदेहा * सोइ तनधरहु सापममएहा
कपिआकृतितुम्हकीन्हिहमारी * करिहहिंकीस सहायतुम्हारी
ममअपकारकीन्हतुम्हभारी * नारि बिरह तुम्हहोब दुषारी
दो० सापसीस धरिहरषि हिय, प्रभुबहु बिनती कीन्हि।
निजमायाके प्रबलता, करषि कृपानिधि लीन्हि १२७
जबहरि माया दूरिनिवारी * नहिंतहरमा न राजकुमारी
तबमुनिअतिसभीतहरिचरना * गहेपाहि प्रनतारति हरना
मृषाहोउ मम श्राप कृपाला * ममइच्छा कह दीनदयाला
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे * कहमुनिपापमिटिहिकिमिमेरे
जपहुजाइ संकर सतनामा * होइहि हृदय तुरत बिश्रामा
कोउनहिंसिवसमान प्रियमोरे * असिपरतीतितजहुजनि भोरे
जेहिपरकृपानकरहिं पुरारी * सोनपावमुनिभगतिहमारी
असउरधरिमहि बिरचहुजाई * अबनतुमहि माया नियराई
दो० बहुविधि मुनिहि प्रबोधिप्रभु, तब भये अंतरध्यान।
सत्यलोक नारद चले, करत राम गुन गान १२८॥
हरगनमुनिहि जातपथ देषी * बिगतमोहमन हरष बिसेषी
अतिसभीतनारदपहि आए * गहि पदआरतबचनसुनाए
हरगन हमन बिप्रमुनिराया * बडअपराधकीन फलपाया

सापअनुग्रह करहु कृपाला ❋ बाल नारद दीन दयाला
निशिचरजाइहोहु तुम्हदोऊ ❋ वैभवविपुल तेज बलहोऊ
भुजबलविस्वजितवतुम्हजहिआ ❋ धरिहहिंविष्णु मनुजतनुतहिआ
समरमरनहरि हाथतुम्हारा ❋ होइहहुमुकुत नपुनिसंसारा
चलेजुगलमुनिपद सिरनाई ❋ भए निसाचरकालहि पाई
दो० एककलपएहि हेतुप्रभु, लीन्ह मनुजअवतार।
सुररंजन सज्जन सुषद, हरिभंजनभुविभार १३९॥
एहिविधिजनमकरमहरिकेरे ❋ सुंदर सुषद बिचित्रघनेरे
कलपकलपप्रतिप्रभुअवतरहीं ❋ चारुचरितनानाबिधिकरहीं
तबतब कथामुनीसन्ह गाई ❋ परमविचित्र प्रबंध बनाई
बिविध प्रसंग अनूपबषाने ❋ करहिंनसुनिआचरजसयाने
हरिअनंत हरिकथा अनंता ❋ कहहिंसुनहिंबहुविधिश्रुतिसंता
रामचन्द्र के चरित सुहाए ❋ कलपकोटिलगिजाहिंनगाए
यहप्रसंग मैं कहा भवानी ❋ हरिमाया मोहहिंमुनिज्ञानी
प्रभुकौतुकी प्रनतहितकारी ❋ सेवतसुलभ सकल दुषहारी
सो० सुरनरमुनि कोउनाहि, जहि न मोहमाया प्रबल।
असबिचारिमनमाहि, भजिअमहामायापतिहि १४०
अपर हेतुसुनु सैल कुमारी ❋ कहौं बिचित्र कथाविस्तारी
जेहिकारनअजअगुनअनूपा ❋ ब्रह्मभएउ कोसलपुर भूपा
जोप्रभुबिपिनफिरततुम्हदेखा ❋ बंधुसमेत धरें मुनि बेषा
जासुचरितअवलोकिभवानी ❋ सती सरीररहिहु बौरानी
अजहुनछायामिटतितुम्हारी ❋ तासुचरितसुनुभ्रमरुजहारी
लीलाकीन्हिजोतेहिअवतारा ❋ सोसबकहिहौंमतिअनुसारा

भरद्वाज मुनिसंकर बानी ❋ सकुचिसप्रेम उमामुसकानी
लगेबहुरि बरनै वृषकेतू ❋ सो अवतार भए उ जेहिहेतू

दो० सो मैं तुम्हसनकहौं सब, सुनुमुनीस मनलाइ।
रामकथा कलिमल हरनि, मंगलकरनि सुहाइ १४१

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा ❋ जिन्हते भै नरसृष्टि अनूपा
दंपति धरम आचरननीका ❋ अजहुँगावश्रुतिजिन्हकैलीका
नृपउत्तानपाद सुत तासू ❋ ध्रुवहरिभगतभए उसुतजासू
लघुसुत नामप्रियव्रत ताही ❋ वेदपुरान प्रसंसहि जाही
देवहुती पुनितासु कुमारी ❋ जो मुनिकर्दमकै प्रियनारी
आदि देवप्रभु दीनदयाला ❋ जठरधरे उ जेहिंकपिलकृपाला
सांष्यसास्त्रजिन्हप्रगटबखाना ❋ तत्वबिचार निपुनभगवाना
तेहिमनुराजकीन्हबहुकाला ❋ प्रभुआयसुबहुबिधिप्रतिपाला

सो० होइन विषय विराग, भवन बसतभा चौथपनु॥
हृदय बहुत दुख लाग, जनमगए उ हरिभगतिबिनु १४२

बरबसराजसुतहि नृपदीन्हा ❋ नारिसमेत गवनबनकीन्हा
तीरथबर नैमिष बिष्याता ❋ अतिपुनीतसाधकसिधिदाता
बसहिंतहाँमुनिसिद्धसमाजा ❋ तहँहिअहरषिचलेमनुराजा
पंथजात सोहहिं मतिधीरा ❋ ज्ञानभगति जनु धरे सरीरा
पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा ❋ हरषि नहाने निरमल नीरा
आएमिलनसिद्धमुनिज्ञानी ❋ धरमधुरंधर नृपरिषि जानी
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाए ❋ मुनिन्हसकलसादरकरवाए
कृससरीरमुनिपटपरिधाना ❋ सतसमाजनितसुनहिंपुराना

दो॰ द्वादस अच्छर मंत्रवर, जपहिं सहित अनुराग ॥
वासुदेव पदपंकरुह, दंपति मन अतिलाग १४३॥

करहिं अहारसाकफलकंदा ❋ सुमिरहिं ब्रह्मसच्चिदानंदा
पुनिहरि हेतुकरन तपलागे ❋ बारि अधार मूलफलत्यागे
उरअभिलाष निरंतर होई ❋ देषिअनयन परम प्रभु सोई
अगुन अषंड अनंत अनादी ❋ जेहिचिंतहिं परमारथ वादी
नेति नेतिजेहि बेद निरूपा ❋ चिदानंद निरुपाधि अनूपा
संभु विरंचिविस्नु भगवाना ❋ उपजहिं जासु अंसतेनाना
ऐसेउप्रभुसेवक बस अहई ❋ भगत हेतुलीला तन गहई
जौयहवचनसत्यश्रुतिभाषा ❋ तौहमारपूजिहि अभिलाषा

दो॰ एहिबिधि बीते बरष षट, सहस बारि आहार ॥
संवत सप्त सहस्र पुनि, रहे समीर आधार १४४॥

बरषसहसदसत्यागेउ सोऊ ❋ ठाढे रहे एकपद दोऊ
बिधिहरिहरतपदेषि अपारा ❋ मनु समीप आए बहुबारा
मागहुबरबहु भांति लोभाए ❋ परमधीरनहिंचलहिं चलाए
अस्थिमात्रहोइरहेउ सरीरा ❋ तदपिमनागमनाहिंमहिंपीरा
प्रभु सर्वज्ञ दास निजजानी ❋ गति अनन्यतापसनृपरानी
मागुमागु बरभै नभ बानी ❋ परम गँभीर कृपामृतसानी
मृतकजिआवनिगिरासुहाई ❋ स्रवनरंध्रहोइ उर जब आई
रिष्ट पुष्ट तन भए सुहाए ❋ मानहु अबहिं भवनतेआए
दो॰ श्रवनसुधासमबचन सुनि, पुलकप्रफुल्लितगात मा॰पा॰८
बोलेमनु करिदंडवत, प्रेमन हृदय समात ॥ १४५॥
सुनुसेवक सुरतरु सुरधेनू ❋ बिधिहरिहर बंदित पदरेनू

सेवत सुलभसकलसुपदायक * प्रनतपालसचराचर नायक
जौंअनाथ हितहम परनेहू * तौ प्रसन्न होइ यहवर देहू
जोसरूप बस सिवमन माहीं * जेहिकारनमुनि जतनकराहीं
जो भुसुंडि मनमानसहंसा * सगुनअगुन जेहिनिगम प्रसंसा
देषहिंहमसोरूपभरिलोचन * कृपाकरहु प्रनतारतिमोचन
दंपतिबचन परम प्रियलागे * मृदुल बिनीत प्रेमरस पागे
भगतवछलप्रभुकृपानिधाना * बिस्ववास प्रगटे भगवाना

दो॰ नीसरोरुह नीलमनि, नील नीरधर स्याम ॥
लाजहिंतनसोभानिरषि, कोटिकोटिसतकाम १४६

सरद मयंक वदन छबिसींवा * चारुकपोल चिबुकदरग्रीवा
अधर अरुनरदसुंदर नासा * बिधुकरनिकरबिनिंदकहासा
नवअंबुजअंबकछबि नीकी * चितवनिललितभावती जीकी
भृकुटिमनोजचापछबिहारी * तिलकललाटपटलदुतिकारी
कुंडलमकरमुकुटसिर भ्राजा * कुटिलकेसजनुमधुप समाजा
उर श्रीवत्स रुचिरबनमाला * पदिकहारभूषन मनि जाला
केहरि कंधर चारु जनेऊ * बा बिभूषन सुंदर तेऊ
करिकरसरिससुभगभुजदंडा * कटिनिषंगकर सरकोदंडा

दो॰ तडित बिनिंदकपीतपट, उदर रेषवर तीनि ॥
नाभि मनोहर लेतिजनु, जमुनभँवरछबिछीनि १४७

पदराजीववरनिनाहिं जाहीं * मुनिमनमधुपबसहिं जिन्हमाहीं
वामभागसोभति अनुकूला * आदिसक्तिछबिनिधिजगमूला
जासुअंसउपजहिं गुनषानी * अगनितलच्छिउमाब्रह्मानी
भृकुटिबिलासजासुजगहोई * राम बाम दिसि सीतासोई

छबि समुद्र हरिरूपबिलोकी ❋ एकटक रहे नयनपटरोकी
चितवहिं सादर रूप अनूपा ❋ तृप्तिनमानहिं मनु सतरूपा
हरष बिबसतनदसाभुलानी ❋ परे दंडइव गहि पद पानी
सिरपरसेप्रभु निजकरकंजा ❋ तुरत उठाए करुना पुंजा
दो० बोलेकृपानिधानपुनि, अतिप्रसन्नमोहिजानि।
मागहुवरजोइभावमन, महादानिअनुमानि ॥१४८॥
सुनिप्रभुबचनजोरिजुगपानी ❋ धरि धीरज बोले मृदुबानी
नाथ देषि पदकमलतुम्हारे ❋ अब पूरे सबकाम हमारे
एक लालसा बडिउर माहीं ❋ सुगमअगमकहिजातसोनाहीं
तुम्हहिदेतअतिसुगमगुसाईं ❋ अगमलागमोहि निजकृपिनाई
जथा दरिद्र बिबुध तरुपाई ❋ बहु संपति मागत सकुचाई
तासु प्रभाउ न जानहि सोई ❋ तथा हृदय मम संसय होई
सोतुम्हजानहु अंतर जामी ❋ पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी
सकुचिबिहाइमागुनृपमोही ❋ मोरे नहिं अदेय कछु तोही
दो० दानिसिरोमनिकृपानिधि, नाथकहौं सति भाउ।
चाहातुम्हहि समानसुत, प्रभुसनकवनदुराव १४९॥
देषिप्रीतिसुनि बचनअमोले ❋ एवमस्तु करुना निधिबोले
आपु सरिसषोजौं कहँ जाई ❋ नृपतव तनय होब मैं आई
सतरूपहिबिलोकि करजोरें ❋ देबि मागु बरजो रुचितोरें
जोवरनाथ चतुरनृप मागा ❋ सोइकृपालमोहि अतिप्रियलागा
प्रभु परंतु सुठिहोतिढिठाई ❋ जदपिभगताहिततुम्हहिसुहाई
तुम्हब्रह्मादिजनकजगस्वामी ❋ ब्रह्म सकलउर अंतरजामी
अस समुझत मन संसयहोई ❋ कहाजोप्रभुप्रमान पुनिसोई

जेनिजभगतनाथतबअहहीं * जोसुखपावहिंजोगतिलहहीं
दो० सोइसुखसोइगतिसोइभगति, सोइनिजचरनसनेहु।
सोइविवेकसोइरहनिप्रभु, हमहिंकृपाकरिदेहु १५० ॥
सुनिमृदुगूढ रुचिरवचरचना * कृपासिंधु बोले मृदु बचना
जोकछुरुचि तुम्हरेमनमाहीं * मैं सो दीन्ह सबसंसयनाहीं
मातुविवेक अलौकिक तोरे * कबहुंनमिटिहिअनुग्रहमोरे
वंदि चरन मनु कहेउ बहोरी * अवरएक विनती प्रभुमोरी
सुत विषैक तबपदराति होऊ * मोहिबडमूढकहै किनकोऊ
मनिविनुफनिजिमिजलविनुमीना * ममजीवनतिमितुम्हहिअधीना
असवरमांगिचरनगहिरहेऊ * एवमस्तुकरुनानिधि कहेऊ
अबतुम्हममअनुसासनमानी * बसहुजाइ सुरपतिरजधानी
सो० तहँकरिभोगविसाल, तातगएँ कछुकालपुनि।
होइहहुअवधभुआल, तब मैं होब तुम्हारसुत १५१
इच्छा मय नर वेष सँवारे * होइहौं प्रगट निकेततुम्हारे
अंसन्ह सहितदेहधरिताता * करिहौंचरितभगतसुखदाता
जे सुनिसादर नरबड भागी * भवतरिहहिंममतामदत्यागी
आदिसक्तिजेहिजग उपजाया * सोउअवतरिहिमोरयहमाया
पुरवब मैं अभिलाषतुम्हारा * सत्यसत्य प्रन सत्य हमारा
पुनिपुनिअसकहिकृपानिधाना * अन्तर धानभए भगवाना
दंपतिउरधरिभगतिकृपाला * तेहिआस्रमनिवसेकछुकाला
समयपाइतनतजिअनयासा * जाइकीन्ह अमरावतिवासा
दो० यहइतिहासपुनीतअति, उमहिकहीवृषकेतु।
भरद्वाजसुनुअपरपुनि, रामजनमकरहेतु ॥ १५२ ॥

सुनुमुनि कथापुनीतपुरानी ※ जोगिरिजाप्रतिसंभुबखानी
बिस्वविदित एककैकय देसू ※ सत्य केतु तहँ बसै नरेसू
धरम धुरंधर नीति निधाना ※ तेज प्रताप सील बलवाना
तेहिके भए जुगल सुतवीरा ※ सबगुन धाम महारन धीरा
राजधनी जो जेठसुतआही ※ नामप्रताप भानु असताही
अपरसुतहि अरिमर्दननामा ※ भुजबलअतुलअचल संग्रामा
भाइहि भाइ परसपर प्रीती ※ सकलदोषछलबर जितरीती
जेठेसुताहि राज नृप दीन्हा ※ हरिहितआपुगवनवनकीन्हा
दो॰ जब प्रताप रबिभयउ नृप, फिरी दोहाई देस।
प्रजापाल अति बेदबिधि, कतहुँ नहीं अघ लेस १५३

नृपहितकारकसचिवसयाना ※ नामधरमरुचिसुक्र समाना
सचिव सयान बंधुबल बीरा ※ आपु प्रताप पुंज रनधीरा
सेनसंग चतुरंग अपारा ※ अमितसुभटसबसमरजुझारा
सेन बिलोकि राउ हरषाना ※ अरु बाजे गह गहे निसाना
बिजय हेतु कटकई बनाई ※ सुदिनसाधिनृपचलेउबजाई
जहँ तहँ परी अनेक लराई ※ जीते सकल भूप बरिआई
सप्तदीप भुजबल बसकीन्हे ※ लैलै दंड छाडि नृप दीन्हे
सकलअवनिमंडलतेहिकाला ※ एक प्रतापभानु महिपाला
दो॰ स्ववसबिस्व करिबाहु बल, निजपुर कीन्ह प्रवेस।
अरथ धरम कामादिसुष, सेवै समय नरेस ॥१५४॥

भूप प्रतापभानु बल पाई ※ काम धेनु भै भूमि सुहाई
सब दुष बरजितप्रजासुषारी ※ धरम सील सुंदर नरनारी
सचिवधरमरुचिहरिपदप्रीती ※ नृपहितहेतुसिषवनितनीती

गुरुसुर संत पितरमहि देवा * करै सदा नृप सबके सेवा
भूप धरम जे बेद बषाने * सकल करै सादर सुपमाने
दिनप्रतिदेइबिबिधिबिधिदाना * सुनै सास्त्र बर बेद पुराना
नाना बापी कूप तडागा * सुमन वाटिका सुंदर बागा
विप्रभवन सुरभवन सुहाये * सब तीरथन्ह बिचित्रबनाए
दो० जहं लगि कहे पुरान श्रुति, एक एक सबजाग ॥
बार सहस्र सहस्र नृप, किए सहित अनुराग १५५
हृदयनकछुफल अनुसंधाना * भूप बिबेकी परम सुजाना
करइ जेधरमकरममनबानी * बासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी
चढि बरबाजिबार एकराजा * मृगयाकर सबसाजिससाजा
बिंध्याचल गंभीर बन गयऊ * मृग पुनीत बहुमारतभयऊ
फिरत बिपिन नृपदीपबराहू * जनुबनदुरेउससिहिग्रसिराहू
बडबिधुनहिसमातमुपमाहीं * मनहुक्रोधबस उगिलतनाहीं
कोलकरालदसनछबि गाई * तनबिसालपीवर अधिकाई
घुरघुरात हय आरौ पाएं * चकितबिलोकतकानउठाएं
दो० नील महीधर सिषरसम, देषि बिसाल बराहु ॥
चपरि चलेउहयसुट्टकिनृप, हांकिनहोइनिबाहु १५६
आवतदेषि अधिकरवबाजी * चलेउबराहमरुतगतिभाजी
तुरतकीन्ह नृपसर संधाना * महिमिलिगयउ बिलोकतबाना
तकितकितीरमहीसचलावा * करिछलसुअरसरीर बचावा
प्रगटत दुरत जाइमृगभागा * रिसवसभूपचलेउ संगलागा
गएउ दूरिघन गहन बराहू * जहंनाहिनगजबाजि निबाहू
अतिअकेलबनबिपुलकलेसू * तदपिन मृग मगतजै नरसू

कोलविलोकि भूप बडधीरा * भागि पैठगिरि गुहागँभीरा
अगमदेषिन्नृपअतिपछिताई * फिरेउ महाबन परेउभुलाई

दो० षेदषिन्न छुद्धित तृषित, राजा बाजि समेत ॥
षोजत ब्याकुलसरितसर, जलबिनुभएउअचेत १५७

फिरतबिपिनआस्रमएकदेषा * तहँबसनृपतिकपटमुनिवेषा
जासुदेस नृप लीन्ह छडाई * समर सेन तजिगयउ पराई
समयप्रताप भानुकर जानी * आपनअतिअसमयअनुमानी
गएउनगृहमनबहुतगलानी * मिलानराजाहिनृपअभिमानी
रिसउरमारिरंकजिमिराजा * बिपिन बसै तापसके साजा
तासुसमीपगवननृपकीन्हा * यहप्रतापरबितेहितबचीन्हा
राउतृपितनाहिंसोपाहिचाना * देषि सुबेष महामुनि जाना
उतरि तुरगते कीन्हप्रनामा * परमचतुरनकहेउनिजनामा

दो० भूपति तृपित बिलोकि तेहि, सरवर दीन्ह देषाइ ।
मज्जन पानसमेत हय, कीन्ह नृपति हरषाइ १५८॥

गैस्रम सकलसुषी नृपभयऊ * निजआस्रम तापसलैगयऊ
आसनदीन्हअस्तरबिजानी * पुनितापस बोलेउमृदुबानी
कोतुम्हकसबनफिरहुअकेले * सुंदर जुवा जीवपर हेले
चक्रबर्ति के लछन तोरें * देषत दया लागि अति मोरें
नाम प्रताप भानु अवनीसा * तासु सचिवमें सुनहुमुनीसा
फिरत अहेरें परेउँ भुलाई * बडे भाग देषउँ पग आई
हमकह दुर्लभ दरस तुम्हारा * जानतहौंकछुभलहोनिहारा
कहमुनितातभएउअंधियारा * जोजनसत्तरि नगर तुम्हारा

दो० निसाघोरगंभीर बन, पंथ न सुनहु सुजान ॥
बसहु आजतुम्ह जानि अस, जाएहु होत बिहान ॥
तुलसी जसि भवितव्यता, तैसी मिलै सहाइ ॥
आपु न आवैताहि पहिं, ताहि तहां लैजाइ १५९ ॥

भलेहिनाथआयसुधरिसीसा ※ बांधि तुरग तरु बैठ महीसा
नृपबहुभांति प्रसंसेउ ताही ※ चरनबंदिनिजभाग्यसराही
पुनिबोलेउ मृदुगिरा सुहाई ※ जानि पिताप्रभु करौंढिठाई
मोहिमुनीससुतसेवकजानी ※ नाथ नामनिजकहहुबषानी
तेहिनजाननृपनृपहिसो जाना ※ भूपसुहृद सो कपटसयाना
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा ※ छलबलकीन्हचहैनिज काजा
समुझिराजसुषदुषितअराती ※ अवाअनल इव सुलगैछाती
सरलबचननृपके सुनिकाना ※ बयरसंभारि हृदय हरषाना

दो० कपट बोरि बानी मृदुल, बोलेउ जुगुति समेत ॥
नाम हमार भिषारि अब, निरधन रहितनिकेत १६०

कह नृपजे बिज्ञान निधाना ※ तुम्हसारिषेगलितअभिमाना
सदारहहिं अपनपौ दुराएं ※ सबबिधि कुसलकुबेषबनाएं
तेहि तें कहहिं संतश्रुति टेरे ※ परम अकिंचन प्रियहरिकेरे
तुम्हसमअधनभिषारिअगेहा ※ होत बिरंचि सिवहि संदेहा
जोसिसोसितवचरननमामी ※ मोपरकृपाकरिअअबस्वामी
सहज प्रीति भूपतिकै देषी ※ आपुबिषय बिस्वासबिसेषी
सबप्रकार राजहि अपनाई ※ बोलेउअधिक सनेह जनाई
सुनुसतिभाउकहौंमहिपाला ※ इहां बसत बीते बहु काला

दो० अबलगि मोहि न मिलेउ कोउ, मैं न जनावौं काहु।
लोक मान्यता अनल सम, कर तप कानन दाहु॥

सो० तुलसी देषि सुवेषु, भूलहिं मूढ़ न चतुर नर॥
सुंदर केकिहि पेषि, वचन सुधा सम असन अहि १६१

तातें गुपुत रहौं बन माहीं ❋ हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं
प्रभु जानत सब बिनहि जनाएँ ❋ कहहु कवन सिधि लोग रिझाएँ
तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरे ❋ प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरे
अब जौं तात दुरावा तोहा ❋ दारुन दोष घटै अति मोहीं
जिमि जिमि तापस कथै उदासा ❋ तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा
देषा स्वबस कर्म मन बानी ❋ तब बोला तापस बगध्यानी
नाम हमार एक तन भाई ❋ सुनि नृप बोलेउ पुनि सिर नाई
कहहु नाम कर अरथ बषानी ❋ मोहि सेवक अति आपन जानी

दो० आदि सृष्टि उपजी जबहि, तब उतपति भइ मोरि।
नाम एक तन हेतु तेहि, देह न धरी बहोरि॥१६२॥

जनि आचरज करहु मन माहीं ❋ सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं
तपबल तें जग सृजै बिधाता ❋ तपबल बिष्णु भए परित्राता
तपबल संभु करहिं संघारा ❋ तप तें अगम न कछु संसारा
भएउ नृपहि सुनि अति अनुरागा ❋ कथा पुरातन कहै सो लागा
करम धरम इतिहास अनेका ❋ करइ निरूपन बिरति बिबेका
उदभव पालन प्रलय कहानी ❋ कहेसि अमित आचरज बषानी
सुनि महीस तापस बस भयऊ ❋ आपन नाम कहन तब लयऊ
कह तापस नृप जानौं तोही ❋ कीन्हेउ कपट लाग भल मोही

सो॰ सुनुमहीसअसिनीति जहँ, तहँ नामन कहहिं नृप ।
मोहितोहिपरअतिप्रीति, सोइचतुरताबिचारितव १६३
नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा * सत्यकेतु तव पिता नरेसा
गुरुप्रसादसब जानि अराजा * कहियनआपन जानिअकाजा
देषितातत्तव सहज सुधाई * प्रीतिप्रतीति नीतिनिपुनाई
उपजिपरी ममता मनमोरें * कहौं कथा निज पूछेतोरें
अब प्रसन्न मैं संसय नाही * मागुजो भूपभावमन माही
सुनिसुबचन भूपति हरपाना * गहिपदबिनयकीन्हबिधिनाना
कृपासिंधु मुनिदरसन तोरें * चारि पदारथ करतल मोरें
प्रभुहितथापिप्रसन्नविलोकी * मागिअगमबरहोउँबिसोकी
दो॰ जरामरनदुपरहिततन, समर जितौजनिकोउ ।
एकछत्ररिपुहीनमहि, राज कल्पसतहोउ ॥ १६४ ॥
कह तापस नृप ऐसेइ होऊ * कारन एक कठिनसुनुसोऊ
कालौ तुअ पदनाइहिसीसा * एकविप्रकुल छाडि महीसा
तपवल विप्र सदा वरिआरा * तिन्हकेकोपनकोउरपवारा
जौंविप्रन्हबस करहु नरेसा * तौतुअवसबिधिविश्नुमहेसा
चलैनब्रह्मकुलसनबरि आई * सत्यकहौं दोउभुजा उठाई
बिप्रसाप बिनुसुनु महिपाला * तोरनासनहिं कवनेहु काला
हरषेउराउ बचनसुनि तासू * नाथन होइ मोर अवनासू
तवप्रसाद प्रभुकृपा निधाना * मोकहँ सर्व काल कल्याना
दो॰ एवमस्तु कहिकपट मुनि, बोलाकुटिल बहोरि ।
मिलवहमार भुलावनिज, कहहुतहमहिनषोरि १६५
तातेंमै तोहि बरजौं राजा * कहें कथातवपरम अकाजा

छठेंस्रवन यह परत कहानी * नासतुम्हार सत्य ममवानी
यहप्रगटैं अथवा द्विजसापा * नासतोर सुनुभानु प्रतापा
आनउपाय निधनतवनाहीं * जौंहरिहरकोपहि मनमाहीं
सत्यनाथपदगहि नृपभाषा * द्विजगुरकोप कहहुको राषा
राषइ गुरुजौं कोप बिधाता * गुरबिरोधनाहिंकोउजगत्राता
जौंनचलव हम कहे तुम्हारे * होउनास नहि सोच हमारे
एकहि डर डरपत मनमोरा * प्रभुमहिदेवसाप अतिघोरा
दो० होहिबिप्रवसकवनबिधि, कहहु कृपाकरिसोउ ।
तुम्हतजि दीनदयाल निज, हितूनदेखौंकोउ १६६ ॥
सुनुनृपबिबिधिजतनजगमाहीं * कष्टसाध्यपुनिहोहिकिनाहीं
अहइएक अतिसुगमउपाई * तहां परंतु एक कठिनाई
ममआधीन जुगुतिनृपसोई * मोरजाब तव नगर न होई
आजलगें अरुजबते भयऊँ * काहूके गृहग्राम न गयऊँ
जौंन जाउँ तौ होइ अकाजू * बनाआइ असमंजस आजू
सुनिमहीसबोलेउ मृदुवानी * नाथनिगमआसिनीति बषानी
बडेसनेहलघुन्ह पर करहीं * गिरिनिजसिरन्हिसदातृनधरहीं
जलधिअगाधमौलिवहफेनू * संतत धरनि धरतासिरुरेनू
दो० असकहि गहेनरेसपद, स्वामी होहुकृपाल ।
मोहिलागि दुषसहिअप्रभु, सज्जनदीनदयाल १६७
जानिनृपहिआपनआधीना * वोला तापसकपट प्रवीना
सत्यकहौं भूपति सुनुतोही * जगनाहिन दुर्लभकछुमोही
अवसिकाज मैं करिहौं तोरा * मनक्रमबचन भगततैंमोरा
जोग जुगुतिजपमंत्र प्रभाऊ * फलैतवहिंजवकरिअ दुराऊ

जौनरेस मैं करौं रसोई * तुम्हपरमहुमोहि जाननकोई
अन्नसोजोइजोइभोजनकरई * सोइसोइतवआयसुअनुसरई
पुनितिन्हकेगृह जेंवें जोऊ * तव वसहोइ भूपसुनु सोऊ
जाइ उपाय रचहु नृप एहू * संवतभरि संकल्प करेहू
दो० नितनूतन द्विजसहस सत, वरेहु सहित परिवार।
मैं तुम्हरे संकल्पलगि, दिनहिंकरवि जेवनार १६८
एहिविधि भूपकष्टअति थोरें * होइहहिंसकल विप्रवसतोरें
करिहहिं विप्र होम मपसेवा * तेहिप्रसंगसहज हिंवस देवा
औरएक तोहि कहौंलखाऊ * मैं एहि वेष न आउव काऊ
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया * हरिआनवमैंकरिनिजमाया
तपबलतेहिंकरिआपुसमाना * रखिहौं इहां वरष परमाना
मैं धरि तासु वेप सुनु राजा * सवविधितोर संवारवकाजा
गैनिसिबहुत सैन अवकीजे * मोहितोहिं भूपभेंटदिनतीजे
मैं तपबलतोहिं तुरगसमेता * पहुचैहौं सोवतहि निकेता
दो० मैं आउव सोइ वेषधरि, पहिचानहु तव मोहि।
जब एकांत वोलाइ सव, कथा सुनावौं तोहि १६९
सयनकीन्हनृपआयसुमानी * आसन जाइ वैठ छलज्ञानी
स्रमित भूप निद्राअति आई * सोकिमिसोचसोचअधिकाई
कालकेतु निसिचरतहँआवा * जेहिसूकरहोइनृपहिभुलावा
परममित्र तापस नृपकेरा * जानै सो अतिकपट घनेरा
तेहिकेसत सुत अरुदसभाई * षलअतिअजय देवदुखदाई
प्रथमहिंभूप समर सब मारे * विप्र संत सुर देखि दुखारे
तेहिषलपाछिलवयरसंभारा * तापसनृपमिलिमंत्र बिचारा

जेहिरिपुछयसोइरचेन्हिउपाऊ ❋ भावीबस न जानकछुराउ
दो० रिपु तेजसी अकेल अपि, लघुकरि गनिअनताहु ॥
अजहुँ देतदुष रबि ससिहि, सिर अवसेषितराहु १७०
तापसनृपनिजसषहिनिहारी ❋ हरषिमिलेउउठि भएउ सुषारी
मित्रहिकहिसब कथासुनाई ❋ जातुधान बोला सुखपाई
अब साधेउ रिपुसुनहुनरेसा ❋ जौतुम्ह कीन्ह मोरउपदेसा
परिहरि सोच रहहुतुम्ह सोई ❋ बिनओषधबिआधि बिधिषोई
कुलसमेत रिपु मूल बहाई ❋ चौथे दिवस मिलबमैं आई
तापसनृपहि बहुतपरितोषी ❋ चलामहा कपटी अतिरोषी
भानुप्रतापहि बाजि समेता ❋ पहुँचाएसि छनमाझनिकेता
नृपहिनारिपहिं सयनकराई ❋ हयगृहबाँधेसि बाजिबनाई
दो० राजाके उपरोहितहि, हरिलै गयउ बहोरि ।
लैराखेसि गिरि षोहमहँ, माया करि मतिभोरि १७१
आपुबिरचि उपरोहितरूपा ❋ परेउ जाइतेहि सेजअनूपा
जागेउ नृपअनभए बिहाना ❋ देषिभवनअतिअचरजमाना
मुनिमहिमामनमहँअनुमानी ❋ उठेउगवहिजेहिजाननरानी
काननगएउ बाजिचढ़ितेहीं ❋ पुरनरनारि न जानेउ केहीं
गएजाम जुगभूपति आवा ❋ घरघर उत्सवबाज बधावा
उपरोहितहि देष जब राजा ❋ चकित बिलोकसुमिरिसोईकाजा
जुगसमनृपहिगएउदिनतीनी ❋ कपटीमुनिपदरहमति लीनी
समयजानिउपरोहितआवा ❋ नृपहिमतेसबकहिसमुझावा
दो० नृपहरषेउ पहिचानिगुरु, भ्रमबसरहा नचेत ।
बरेतुरतसत सहसवर, बिप्रकुटुम्बसमेत ॥ १७२ ॥

उपरोहितजेवनार बनाई * छरमचारिविधि जसिश्रुतिगाई
मायामय तेहि कीन्हरसोई * बिंजनबहुगनि सकै न कोई
बिबिधिमृगन्हकर आमिषरांधा * तेहिमहं बिप्रमासपउ सांधा
भोजनकहँसब बिप्र बोलाए * पदपषारि सादर बैठाए
परुसनजबहिंलागमहिपाला * भइअकासबानीतेहि काला
बिप्रबृंद उठि उठि गृहजाहू * हैबडिहानि अन्नजनिखाहू
भएउरसोई भूसुर मासू * सबद्विजउठे मानिबिस्वासू
भूपबिकल मतिमोहभुलानी * भावीबस न आवमुषबानी
दो० बोलेबिप्रसकोपतब, नहि कछु कीन्ह बिचार।
जाइनिसाचर होहुनृप, मूढसहित परिवार॥१७३॥
छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई * घालै लिए सहित समुदाई
इस्वर राषा धरम हमारा * जैहसि तै समेत परिवारा
सम्वत मध्यनास तव होऊ * जलदाता न रहै कुल कोऊ
नृपसुनिसापबिकलअति[illegible]सा * भइबहोरिबरगिरा अकासा
बिप्रहुसाप बिचारिन दीन्हा * नहिअपराध भूपकछुकीन्हा
चकितबिप्रसबसुनिनभबानी * भूप गए उजहं भोजनपानी
तहँनअसननहिंबिप्रसुआरा * फिरउराउमनसोचअपारा
सबप्रसंग महिसुरन सुनाई * त्रसितपरेउअवनीअकुलाई
दो० भूपति भावी मिटैनहि, जदपि न दूषनतोर॥
किए अन्यथा होइ नाहिं, बिप्रसाप अतिघोर १७४
असकहिसबमहिदेवसिधाए * समाचार पुरलोगन्ह पाए
सोचहिं दूषन दैवहिं देहीं * बिरचत हंसकागकिअजेहीं
उपरोहितहि भवन पहुँचाई * असुरतापसहिं षबरिजनाई

तेहिषल जहँतहँ पत्रपठाए * साजिसाजि सेन भूपसबधाए
घेरेन्हिनगर निसानबजाई * बिबिधिभांतिनितहोइलराई
जूझेसकल सुभटकरिकरनी * बंधुसमेत परेउ नृप धरनी
सत्यकेतुकुलकोउनहिंबांचा * बिप्रसाप किमिहोइअसांचा
रिपुजितिसवनृपनगरबसाई * निजपुरगवने जयजसपाई
दो० भरद्वाज सुनु जाहिजब, होइ बिधाता बाम ॥
धूरिमेरु समजनकजम, ताहि ब्यालसमदाम १७५
कालपाइमुनिसुनु सोइराजा * भएउनिसाचरसहितसमाजा
दस सिरताहि बीसभुजदंडा * रावन नाम बीर बरि बंडा
भूप अनुजअरि मर्दननामा * भएउसोकुंभकरनबलधामा
सचिवजोरहाधरमरुचिजासू * भएउबिमात्र बंधुलघुतासू
नामाबिभीषनजेहिजगजाना * बिष्णुभगतबिज्ञाननिधाना
रहेजेसुत सेवक नृपकेरे * भए निसाचर घोर घनेरे
कामरूपषल जिनसअनेका * कुटिलभयंकरविगताबिबेका
कृपारहित हिंसक सब पापी * बरनिनजाहिंबिस्वपरितापी
दो० उपजे जदपिपुलस्त्यकुल, पावन अमल अनूप ।
तदपि महीसुर सापबस, भएसकल अघरूप १७६ ॥
कीन्हबिबिधितपतीनिउभाई * परम उग्रनहि बरनिसोजाई
गयउनिकटतपदेषिबिधाता * मागहु बर प्रसन्न मै ताता
करिबिनतीपदगहिदससीसा * बोले बचन सुनहु जगदीसा
हमकाहूके मरहिं न मारे * बानरमनुज जाति दुइ बारे
एवमस्तु तुमबडतप कीन्हा * मैंब्रह्मामिलि तेहि बरदीन्हा
पुनिप्रभुकुंभकरनपहिगएऊ * तेहिबिलोकिमनबिसमयभयऊ

जौएहिपलनितकरवअहारू * होइहि सब उजारि संसारू
सारद प्रेरि तासुमति फेरी * मागेसि नीदमास षटकेरी
दो० गएबिभीषन पासपुनि, कहेउपुत्र बरमागु ।
तेहिमागेउ भगवंत पद, कमल अमलअनुरागु १७७
तिन्हहि देइबर ब्रह्मसिधाए * हरषिततेे अपने गृहआए
मयतनुजा मंदोदरि नामा * परमसुंदरी नारि ललामा
सोइमयदीन्हिरावनहिआनी * होइहि जातुधानपति रानी
हरषित भएउनारिभलिपाई * पुनिदोउबंधुबिआहेसिजाई
गिरित्रिकूटएकसिंधुमझारी * बिधिनिर्मितदुर्गमअतिभारी
सोइमयदानव बहुरिसंवारा * कनकरचितमनिभवनअपारा
भोगावतिजसिअहिकुलवासा * अमरावतिजसिसक्रनिवासा
तिन्हतेअधिकरम्यअतिबंका * जगबिख्यात नामतेहिलंका
दो० षाँई सिंधु गंभीर अति, चारिहुंदिसि फिरिआव ।
कनककोट मनिषचित दृढ़, बरनि न जाइबनाव ॥
हरिप्रेरित जेहिकलप जोइ, जातुधानपति होइ ।
सूरप्रतापी अतुलबल, दलसमेत बससोइ १७८ ॥
रहेतहां निसिचर भटभारे * ते सब सुरन्ह समर संघारे
अबतहँ रहहिं सक्र के प्रेरे * रछक कोटि जछपति केरे
दसमुषकतहुषबरिअसिपाई * सेनसाजि गढ़घेरेसि जाई
देषिबिकटभटबडिकटकाई * जछजीव लै गए पराई
फिरिसबनगर दसानन देषा * गएउसोच सुषभएउबिसेषा
सुंदरसहज अगमअनुमानी * कीन्हि तहां रावनरजधानी
जेहिजसजोगबाटिगृहदीन्हे * सुषीसकल रजनीचर कीन्हे

एकबार कुबेर पर धावा * पुष्पक जान जीतिलै आवा
दो॰ कौतुकहीं कैलास पुनि, लीन्हिसिजाइ उठाइ ॥
मनहु तौलि निजबाहु बल, चला बहुत सुषपाइ १७९॥
सुष संपति सुतसेन सहाई * जयप्रताप बलबुद्धि बडाई
नित नूतन सब बाढतजाई * जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई
अतिवलकुंभकरनअस भ्राता * जेहिकहंनहिप्रतिभटजग जाता
करइ पान सोवै षटमासा * जागत होइतिहूं पुर त्रासा
जौंदिन प्रतिअहार करसोई * बिस्वबेगि सवचौपट होई
समरधीरनहिंजाइ बखाना * तोहिसमअधिकनकोउबलवाना
बारिदनाद जेठसुत तासू * भटमहंप्रथमलीकजगजासू
जेहिन होइरन सनमुष कोई * सुर पुरनितहि परावनहोई
दो॰ कुमुष अकंपन कुलिसरद, धूमकेतु अतिकाय ॥
एक एक जगजीति सक, ऐसे सुभट निकाय १८०
कामरूप जानहिसब माया * सपनहुजिन्हकेधरमनदाया
दसमुष बैठसभा एकबारा * देषिअमितआपनपरिवारा
सुतसमूहजनपरिजन नाती * गनैको पारनिसाचर जाती
सेनविलोकिसहजअभिमानी * बोला बचनक्रोध मदसानी
सुनहुसकल रजनीचर जूथा * हमरे बैरी बिबुध बरूथा
तेसनमुष नाहिं करहिं लराई * देषिसबल रिपु जाहिं पराई
तिन्हकरमरन एकबिधिहोई * कहौंबुझाइ सुनहु अबसोई
द्विज भोजनमषहोमसराधा * सबकै जाइ करहुतुम्हबाधा
दो॰ छुधाछीन बलहीन सुर, सहजेहि मिलिहहिं आइ।
तबमारिहौंकिछाडिहौं, भलीभांतिअपनाइ १८१ मा॰पा॰१

मेघनाद कहँ पुनि हँकरावा ❋ दीन्ही सिषबलबयरबढावा
जेसुर समरधीर बलवाना ❋ जिन्हकेलरिबेकर अभिमाना
तिन्हहिजीतिरनआनेसुबांधी ❋ उठिसुतपितुअनुसासनकांधी
एहिबिधिसबहीअज्ञा दीन्ही ❋ आपुनचलेउगदाकरलीन्ही
चलतदसानन डोलतअवनी ❋ गर्जत गर्भस्रवत सुररवनी
रावन आवतसुनेउ सकोहा ❋ देवन्हतकेमेरु गिरि षोहा
दिगपालन्हकेलोक सिधाए ❋ सूनेसकल दसानन पाए
पुनिपुनिसिंहनादकरिभारी ❋ देइ देवतन्ह गारि पचारी
रनमद मत्तफिरइजगधावा ❋ प्रतिभटषोजतकतहुनपावा
रबिससि पवन बरुन धनधारी ❋ अगिनिकालजमसबअधिकारी
किन्नरसिद्धमनुजसुर नागा ❋ हठिसबहीके पंथहि लागा
ब्रह्मसृष्टि जहँलग तन धारी ❋ दससुष बस वर्ती नरनारी
आयसुकरहिंसकलभयभीता ❋ नवहिआइनितचरन बिनीता

दो० भुजबल बिस्व बस्य करि, राषेसि कोउन सुतंत्र ॥
मंडलीकमनि रावन, राजकरै निज मंत्र ॥
देवजछगंधर्ब नर, किन्नर नाग कुमारि ।
जीतिबरी निजबाहु बल, बहु सुंदरिबरनारि १८२ ॥

इंद्रजीतसन जो कछु कहेऊ ❋ सो सबजनुपहिलहिकरिरहेऊ
प्रथमहिजिन्हकहँआयसुदीन्हा ❋ तिन्हकरचारितसुनहुजोकीन्हा
देषत भीमरूप सब पापी ❋ निसिचरनिकरदेवपरितापी
करहिं उपद्रवअसुरनिकाया ❋ नाना रूपधरहिं करिमाया
जेहिबिधि होइधर्म निर्मूला ❋ सो सबकरहिं बेदप्रतिकूला
जेहिजेहिदेसधेनुद्विजपावहिं ❋ नगरगांउपुरआगिलगावहिं

सुभआचरन कतहुँ नहिंहोई * देव विप्रगुरु मान न कोई
नहिंहरिभगतिजज्ञतपज्ञाना * सपनेहु सुनिअन वेदपुराना
छं० जपजोगविरागातपमषभागा स्रवन सुनैदससीसा ॥
आपुन उठिधावैरहैनपावै धरिसबघालैषीसा ॥
असभ्रष्टअचाराभासंसारा धर्मसुनिअनहिंकाना ॥
तेहिबहुविधित्रासै देसनिकासैजोकहवेदपुराना ॥
सो० बरनिनजाइअनीति, घोर निसाचरजोकरहिं ॥
हिंसापरअतिप्रीतितिन्हकेपापहिकवनिमिति १८३
वाढे षल बहुचोर जुआरा * जेलंपट पर धन पर दारा
मानहिं मातु पितानहिदेवा * साधुन्हसन करवावहिं सेवा
जिन्हकेयहआचरनभवानी * तेजानहु निसिचरसमप्रानी
अतिसै देषि धर्म कै हानी * परमसभीत धरा अकुलानी
गिरिसरिसिंधुभारनहिंमोही * जसमोहिगरुअ एकपरद्रोही
सकल धर्म देषै बिपरीता * कहिन सकै रावनभयभीता
धेनु रूप धरि हृदय विचारी * गईतहां जहँ सुर मुनि झारी
निज संताप सुनाएसि रोई * काहूते कछु काज न होई
छं० सुरमुनिगंधर्वामिलिकरि सर्वागेविरँचिके लोका ॥
संगगोतनधारीभूमिविचारीपरमविकल भयसोका॥
ब्रह्मासवजानामनअनुमाना मोरोकछुनबसाई ॥
जाकरितैदासीसोअविनासी हमरेउतोरसहाई ॥
सो० धरनिधरहिंमनधीर, कहविरंचिहरिपदसुमिरु ॥
जानतजनकीपीर, प्रभुभंजिहिदारुनविपति १८४ ॥
बैठे सुर सब करहिं बिचारा * कहँपाइयप्रभु करियपुकारा

पुर बैकुंठ जान कह कोई * कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई
जाके हृदय भगति जस प्रीती * प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहि रीती
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊँ * अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ
हरि ब्यापक सर्वत्र समाना * प्रेम ते प्रगट होहि मैं जाना
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं * कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं
अग जगमय सब रहित बिरागी * प्रेम ते प्रभु प्रगटै जिमि आगी
मोर बचन सब के मन माना * साधु साधु कहि ब्रह्म बषाना

दो० मुनि बिरंचि मन हरष तन, पुलक नयन बह नीर ॥
अस्तुति करत जोरि कर, सावधान मति धीर १८५ ॥

छं० जय जय सुरनायक जन सुषदायक प्रनतपाल भगवंता ॥
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कन्ता ॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानै कोई ॥
जो सहज कृपाला दीनदयाला करौ अनुग्रह सोई ॥
जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा ॥
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिवृंदा ॥
निसि बासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा ॥
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिय भगति न पूजा ॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा ॥
मन बच क्रम बानी छाडि सयानी सरन सकल सुर जूथा ॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहँ कोउ नहिं जाना ॥
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवौ सो श्रीभगवाना ॥

भववारिधिमंदरसबविधिसुंदरगुनमंदिर सुषपुंजा ॥
मुनिसिद्धिसकलसुरपरमभयातुरनमतनाथपद कंजा

दो०जानिसभय सुरभूमि सुनि, बचन समेत सनेह ॥
गगन गिरा गंभीर भइ, हरनि सोकसन्देह ॥ १८६ ॥

जनिडरपहु मुनिसिद्धसुरेसा * तुम्हहिलागिधरिहौंनरवेसा
अंसनसहित मनुजअवतारा * लेहौं दिन करवंस उदारा
कस्यपअदितिमहातपकीन्हा * तिनकहँ मै पूरववर दीन्हा
ते दसरथ कौसल्या रूपा * कोसल पुरी प्रगटनर भूपा
तिन्हकेगृह अवतरिहौं जाई * रघुकुलतिलकसो चारिउ भाई
नारदबचनसत्य सब करिहौं * परमसक्तिसमेत अवतरिहौं
हरिहौं सकल भूमिगरु आई * निर्भय होहु देव समुदाई
गगनब्रह्म बानी सुनि काना * तुरत फिरेसुरहृदय जुडाना
तवब्रह्मा धरनिहि समुझावा * अभयभईभरोसजियआवा

दो० निजलोकहि विरंचिगे, देवन्ह इहै सिषाइ ।
वानरतनधरिधरिमहि, हरिपदसेवहु जाइ ॥ १८७ ॥

गएदेव सबनिज निज धामा * भूमिसहित पाए विस्रामा
जोकछुआयसुब्रह्मा दीन्हा * हरषे देव वेलंवन कीन्हा
बनचरदेह धरीछिति माहीं * अतुलितबलप्रताप तिन्ह पाहीं
गिरितरुनषआयुधसबवीरा * हरिमारगचितवहिंमतिधीरा
गिरिकाननजहँतहँमहिपूरी * रहेनिजानिजअनीकर चिरूरी
यहसबरुचिर चरितमैंभाषा * अबसोसुनहुजोबीचहिराषा
अवधपुरी रघुकुलमनिराऊ * वेदविदिततेहिदसरथ नाऊ
धर्म धुरंधर गुननिधि ज्ञानी * हृदयभगतिमतिसारंगपानी

दो० कौसल्यादि नारि प्रिय, सब आचरन पुनीत ।
पतिअनकूलप्रेमदृढ़, हरिपदकमलविनीत ॥ १८८ ॥
एक समै भूपति मन माहीं * भै गलानि मोरे सुतनाहीं
गुरगृह गएतुरत महिपाला * चरनलागिकरिविनयविसाला
निजदुषसुपसबगुरुहिसुनाएउ * कहिवसिष्ठबहुविधिसमुझाएउ
धरहु धीरहोइहहिं सुतचारी * त्रिभुवनविदितभगतभयहारी
शृंगी रिषिहिवसिष्ठबोलावा * पुत्र काम सुभ जग्य करावा
भगतिसहितमुनिआहुतिदीन्हे * प्रगटे अगिनिचरूकरलीन्हे
जोवसिष्ठ कछुहृदय विचारा * सकलकाजभासिद्धतुम्हारा
यह हविबांटि देहु नृपजाई * जथा जोग जेहिभागबनाई
दो० तबअदृस्यभएपावक, सकलसभहि समुझाइ ।
परमानंदमगननृप, हरष न हृदय समाइ ॥ १८९ ॥
तबहि रायप्रियनारि बोलाई * कौसल्यादितहां चलिआई
अर्द्धभाग कौसल्याहिदीन्हा * उभयभाग आधेकरकीन्हा
कैकेई कहँ नृप सोइ दयऊ * रह्योसो उभयभागपुनि भयऊ
कौसल्या कैकई हाथ धरि * दीन्हसुमित्रहिमनप्रसंनकरि
एहिविधिगर्भसहितसबनारी * भईहृदयं हरषित सुष भारी
जादिन तेहरि गर्भहि आए * सकललोकसुप संपति छाए
मंदिर महँ सब राजहिरानी * सोभा सील तेजकी पानी
सुषजुतकछुककाल चलिगयऊ * जेहिप्रभुप्रगट सो अवसरभयऊ
दो० जोगलगनग्रहबार तिथि, सकलभएअनुकूल ।
चरअरुअचरहरषजुत, रामजनमसुषमूल ॥ १९० ॥
नौमीतिथि मधुमासपुनीता * सुकलपछअभिजितहरिप्रीता

मध्यदिवसअतिसीतनघामा ❀ पावन काललोक बिस्रामा
सीतल मंद सुरभिवहबाऊ ❀ हरषित सुरसंतन्हमनचाऊ
बनकुसुमितगिरिगनमनिआरा ❀ स्रवहिंसकलसरितामृतधारा
सो अवसरबिरंचिजबजाना ❀ चलेसकलसुरसाजि बिमाना
गगनबिमल संकुलसुरजूथा ❀ गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा
बरषहिंसुमनसुअंजलिसाजी ❀ गहगहि गगन दुंदभी बाजी
अस्तुतिकरहिंनागमुनिदेवा ❀ बहुबिधिलावहिंनिजनिजसेवा

दो० सुरसमूह बिनतीकरि, पहुँचे निजनिज धाम ॥
जगनिवास प्रभुप्रगटे, अखिललोक बिश्राम ॥

छं० भएप्रगटकृपालापरमदयाला कौसल्या हितकारी ॥
हरषितमहँतारीमुनिमन हारीअद्भुत रूप निहारी ॥
लोचनअभिरामंतनु घनस्यामंनिजआयुधभुजचारी ॥
भूषन बन माला नयन बिसालासोभा सिंधु परारी ॥
कहदुइकरजोरीअस्तुतितोरीकेहिबिधिकरउँअनंता ॥
माया गुनज्ञाना तीतअमाना बेद पुरान भनंता ॥
करुनासुपसागरसबगुनआगरजेहिगावहिं श्रुतिसंता ॥
सोममहितलागीजन अनुरागी भएप्रगट श्रीकंता ॥
ब्रह्मांडनिकायानिर्मितमायारोमरोमप्रतिबेदकहै ॥
ममउरसोबासीयहउपहासीसुनतधीरमतिथिरनरहै ॥
उपजाजबज्ञानाप्रभुमुसुकानाचरितबहुतबिधिकीन्हचहै
कहिकथा सुनाई मातुबुझाई जेहिप्रकार सुतप्रेमलहै ॥
मातापुनि बोली सोमति डोली तजहुतातयहरूपा ॥
कीजैसिसुलीलाअतिप्रियसीला यहसुपपरमअनूपा ॥

सुनिबचनसुजानारोदनठानाहोइबालकसुरभूपा ॥
यहचरितजेगावहिंहरिपदपावहिंतेनपरहिंभवकूपा॥

दो० बिप्रधेनु सुरसंत हित, लीन्हमनुज अवतार ॥
निजइच्छा निर्मिततन, माया गुनगोपार १९२ ॥

सुनिसिसुरुदनपरमप्रियबानी ❀ संभ्रमचलिआई सब रानी
हरषित जहँतहँ धाईं दासी ❀ आनंदमगनसकलपुरबासी
दसरथ पुत्रजन्म सुनिकाना ❀ मानहु ब्रह्मानंद समाना
परम प्रेम मन पुलक सरीरा ❀ चाहतउठन करतमतिधीरा
जाकर नाम सुनत सुभहोई ❀ मोरे गृह आवा प्रभु सोई
परमानंद पूरि मन राजा ❀ कहाबोलाइ बजावहु बाजा
गुरुबसिष्ट कहँगयउ हँकारा ❀ आएद्विजन्हसहितनृपद्वारा
अनुपमबालक देषिन्हिजाई ❀ रूपरासिगुन कहिनसिराई

दो० नंदीमुष सराध करि, जात करम सब कीन्ह ॥
हाटक धेनु बसन मनि, नृपबिप्रन कहँ दीन्ह १९३

ध्वज पताकतोरन पुरछावा ❀ कहिनजाइजेहिभाँतिबनावा
सुमन बृष्टि अकास तें होई ❀ ब्रह्मानंद मगन सब कोई
बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाई ❀ सहजासिंगारकिएँ उठिधाई
कनककलसमंगलभरिथारा ❀ गावत पैठहिं भूप दुआरा
करिआरतीनिछावरिकरहीं ❀ बारबार सिसुचरनन्हिपरहीं
मागध सूत बंदिगन गायक ❀ पावनगुन गावहिं रघुनायक
सर्बसदान दीन्ह सब काहूँ ❀ जेहिं पावा राषानहिं ताहूँ
मृगमदचंदनकुमकुमकीचा ❀ मचीसकलबीथिन्हबिचबीचा

दो० गृह गृह बाज बधाव सुभ, प्रगटेउ प्रभुसुष कंद ॥
हरष वंत सब जहँ तहँ, नगर नारिनर वृंद १९४ ॥
कैकय सुता सुमित्रा दोऊ ❋ सुंदर सुतजनमतभईं ओऊ
वोहसुषसंपतिसमयसमाजा ❋ कहिनसकै सारदअहिराजा
अवधपुरी सोहै येहि भांती ❋ प्रभुहिंमिलनआई जनुराती
देषि भानुजनुमनसकुचानी ❋ तदपिवनी संध्याअनुमानी
अगर धूपबहुजनुअंधियारी ❋ उडैअवीर मनहुं अरुनारी
मंदिर मनिसमूहजनु तारा ❋ नृपगृहकलससो इंदुउदारा
भवनवेदधुनिअतिमृदुबानी ❋ जनुषगमुषरसमयसुषसानी
कौतुक देषि पतंग भुलाना ❋ एक मांसतेइ जातन जाना
दो० मांस दिवस कर दिवसभा, मरम नजानै कोइ ॥
रथसमेत रबिथाकेउ, निसा कवनि बिधि होइ १९५
यह रहस्य काहू नहि जाना ❋ दिनमनि चलेकरत गुनगाना
देषि महोत्सवसुरमुनिनागा ❋ चलेभवनबरनतनिज भागा
औरो एककहौं निज चोरी ❋ सुनुगिरिजाअति दृढमतितोरी
काकभुसुंडिसंग हम दोऊ ❋ मनुज रूपजानै नहिं कोऊ
परमानंद प्रेम सुष फूले ❋ बीथिन्हफिराहिंमगन मन भूले
यहसुभ चरित जान पै सोई ❋ कृपा राम कै जापर होई
तेहिअवसरजोजेहिविधिआवा ❋ दीन्हभूपजोजेहिमन भावा
गजरथ तुरग हेमगो हीरा ❋ दीन्हेनृप नानाबिधि चीरा
दो० मनसंतोष सबनिके, जहँ तहँ देहिं असीस ॥
सकल तनय चिरजीवहु, तुलसि दास के ईस ॥ १९६
कछुक दिवसबीतेयहिभांती ❋ जातनजानिअदिनअरुराती

नामकरन करअवँसरजानी * भूपबोलि पठएमुनि ज्ञानी
करिपूजा भूपति असभाषा * धरियनाम जोमुनिगुनिराषा
इन्हके नाम अनेकअनूपा * मैंनृपकहबस्वमतिअनुरूपा
जो आनंद सिंधु सुप रासी * सीकरते त्रैलोक सुपासी
सो सुषधाम रामअस नामा * अपिललोकदायकबिश्रामा
विस्वभरन पोषनकर जोई * ताकरनाम भरत असहोई
जाके सुमिरनते रिपु नासा * नाम सत्रुहन वेद प्रकासा
दो० लछन धाम राम प्रिय, सकल जगत आधार ॥
गुरुवसिष्ठ तेहिराषा, लछिमन नाम उदार १९७
धरे नाम गुरु हृदय बिचारी * वेदतत्व नृप तव सुत चारी
मुनिधनजनसरबससिवप्राना * बालकेलिरसतेंहिंसुप माना
बारेहिते निजहितपतिजानी * लछिमनरामचरनरतिमानी
भरत शत्रुहन दूनो भाई * प्रभुसेवकजासिप्रीति बढाई
स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी * निरषहिंछबिजननीतृनतोरी
चारिउ सीलरूप गुन धामा * तदपिअधिकसुपसागररामा
हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा * सूचत किरनमनोहर हासा
कबहुँउछंग कबहुबर पलना * मातुदुलारै कहिप्रियललना
दो० ब्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुन विगत बिनोद ॥
सोअज प्रेमभगति बस, कौसल्या के गोद १९८ ॥
कामकोटिछबिस्यामसरीरा * नील कंज बारिद गंभीरा
अरुन चरन पंकजनषजोती * कमलदलन्हि बैठेजनुमोती
रेषकुलिसध्वज अंकुससोहैं * नूपुरधुनिसुनिमुनिमनमोहैं
कटिकिंकिनी उदरत्रयरेषा * नाभिगंभीरजानजेहि देषा

भुजाविसाल भूषन जुतभूरी ※ हियहरिनषअतिसोभारूरी
उरमनिहारपदिककी सोभा ※ बिप्रचरन देषतमन लोभा
कंबुकंठ अतिचिबुक सुहाई ※ आननअमितमदन छबिछाई
दुइदुइदसन अधर अरुनारे ※ नासातिलक को बरनै पारे
सुंदर स्रवन सुचारु कपोला ※ अतिप्रियमधुरतोतरे बोला
नीलकमलदोउनयन बिसाला ※ बिकटभृकुटि लटकनबरभाला
चिक्कनकच कुंचित गभुआरे ※ बहुप्रकार रचिमातु संवारे
पीत झंगुलियातन पाहिराई ※ जानुपानिबिचरनिमोहिभाई
रूपसकहिंनाहिकाहिश्रुतिसेषा ※ सो जानै सपनेहु जेहि देषा
दो॰ सुष संदोह मोह पर, ज्ञानागिरा गोतीत ॥
दंपतिपरमप्रेमबस, करसिसुचरितपुनीत १९९ ॥
एहिबिधिरामजगतापितुमाता ※ कोसलपुरबासिन्हसुषदाता
जिन्हरघुनाथचरनरतिमानी ※ तिन्हकीयहगति प्रगटभवानी
रघुपतिबिमुषजतनकरकोरी ※ कवनसकैभव बंधन छोरी
जीव चराचर बसकै राषे ※ सोमाया प्रभुसोंभय भाषे
भृकुटि बिलासनचावै ताही ※ असप्रभुछाडि भजियकहुकाही
मनक्रमबचनछाडि चतुराई ※ भजतकृपा करिहहिंरघुराई
एहिबिधिसिसुबिनोदप्रभुकीन्हा ※ सकलनगरबासिन्हसुषदीन्हा
लैउछंग कबहुँक हलरावै ※ कबहुँ पालने घालि झुलावै
दो॰ प्रेम मगन कौसल्या, निसि दिन जात न जान ॥
सुत सनेह बस माता, बाल चरित करगान २०० ॥
एकबार जननी अन्हवाए ※ करिसिंगार पलना पौढाए
निज कुलइष्ट देव भगवाना ※ पूजाहेतु कीन्ह अस्नाना

करि पूजानैबेद चढावा ❋ आपु गई जहं पाक बनावा
बहुरिमातु तहँवाचलि आई ❋ भोजन करतदेषि सुतजाई
गइजननीसिसुपहिंभयभीता ❋ देषा बाल तहां पुनि सूता
बहुरि आइ देखा सुतसोई ❋ हृदय कंप मनधीर न होई
इहाँ उहां दुइ बालक देषा ❋ मतिभ्रममोरिकि आनविसेषा
देखिराम जननी अकुलानी ❋ प्रभुहंसिदीन्हमधुरमुसुकानी

दो॰ देखरावामातहिनिज, अद्भुतरूप अखंड ॥
रोम रोमप्रतिलागे, कोटि कोटि ब्रह्मंड २०१ ॥

अगिनित रविससिसिवचतुरानन ❋ बहुगिरिसरितासिंधुमहिकानन
काल कर्म गुनज्ञान सुभाऊ ❋ सोउदेखा जो सुनानकाऊ
देखी माया सब बिधिगाढी ❋ अतिसभीत जोरें करठाढी
देखा जीवनचावै जाही ❋ देखी भगति जो छोरैताही
तनपुलकितमुखबचननआवा ❋ नयनमूंदिचरननिसिरनावा
बिसमयवंत देखि महतारी ❋ भए बहुरि सिसुरूपखरारी
अस्तुतिकरिनजाइभयमाना ❋ जगतपितामैंसुतकरिजाना
हरिजननीबहुबिधि समुझाई ❋ यहजनिकतहुँकहसिसुनुमाई

दो॰ बारबार कौसल्या, बिनयकरै कर जोरि ।
अबजानि कबहूँ व्यापइ, प्रभुमोहि मायातोरि २०२

बालचरितहरिबहुबिधिकीन्हा ❋ अतिअनंददासन्हकहँदीन्हा
कछुक कालबीते सबभाई ❋ बड़े भएपरिजन सुषदाई
चूडा करन कीन्ह गुरजाई ❋ बिप्रन्ह पुनिदछिनाबहुपाई
परममनोहर चरित अपारा ❋ करताफिरतचारिउसुकुमारा
मनक्रमबचन अगोचर जोई ❋ दसरथअजिरबिचरप्रभुसोई

भोजन करत बोलजबराजा ❋ नहिआवततजिबालसमाजा
कौसल्या जब बोलन जाई ❋ ठुमुकठुमुकप्रभु चलहिंपराई
निगमनेतिसिव अंतनपावा ❋ ताहिधरै जननी हठि धावा
धूसरधूरि भरेतन आए ❋ भूपति बिहँसि गोद बैठाए
दो० भोजन करत चपलचित, इतउतअवँसर पाइ ॥
भाजिचले किलकतमुष, दधि ओदनलपटाइ २०३
बालचरित अतिसरलसुहाए ❋ सारद सेष संभु श्रुति गाए
जिन्हकरमनइन्हसननहिंराता ❋ तेजनवंचित किए बिधाता
भएकुमार जबहिं सबभ्राता ❋ दीन्हजनेऊ गुरुपितु माता
गुरुगृह गए पढन रघुराई ❋ अलपकाल बिद्यासबआई
जाकीसहज स्वासश्रुतिचारी ❋ सो हरिपढ यहकौतुकभारी
विद्याबिनय निपुनगुनसीला ❋ षेलहिंषेल सकलनृप लीला
करतलबानधनुष अतिसोहा ❋ देषतरूप चराचर मोहा
जिन्हबीथिनबिहरहिंसबभाई ❋ थकितहोहिंसबलोग लुगाई
दो० कोसलपुर बासीनर, नारिबृद्ध अरु बाल।
प्रानहुते प्रिय लागत, सबकहँ राम कृपाल २०४ ॥
बंधुसषा संगलेहिं बोलाई ❋ बनमृगयानित षेलहिं जाई
पावनमृगमारहिंजियजानी ❋ दिनप्रतिनृपहिदेषावहिंआनी
जेमृग राम बानके मारे ❋ ते तनतजि सुरलोक सिधारे
अनुजसषासंगभोजनकरहीं ❋ मातुपिता अज्ञा अनुसरहीं
जेहिविधिसुषीहोहिपुरलोगा ❋ करहिंकृपानिधिसोइसंजोगा
वेदपुरान सुनहिं मनलाई ❋ आपुकहहिंअनुजन्हसमुझाई
प्रातकाल उठिकै रघुनाथा ❋ मातुपिता गुरनावहिं माथा

आयसुमाँगिकरहिंपुरकाजा ❋ देषिचरित हरषे मनराजा
दो० व्यापक अकल अनीह अज, निर्गुननामनरूप ।
भगतहेतु नाना विधि, करत चरित्र अनूप २०५ ॥
यह सब चरित कहा मैं गाई ❋ आगिलिकथासुनहुमनलाई
विस्वामित्र महामुनि ज्ञानी ❋ बसहिंविपिनसुभआश्रमजानी
तहँजपजोगजज्ञ मुनिकरहीं ❋ अतिमारीच सुबाहुहिडरहीं
देषतजज्ञ निसाचर धावहिं ❋ कराहिं उपद्रवमुनिदुषपावहिं
गाधितनयमन चिंताव्यापी ❋ हरिबिनुमराहिंनानिसिचरपापी
तवमुनिवरमनकीन्हविचारा ❋ प्रभुअवतरेउहरन महिभारा
एहिमिस देषौं प्रभुपदजाई ❋ करिविनती आनौंदोउभाई
ज्ञानविरागसकलगुनअयना ❋ सोप्रभु मैं देषव भरि नयना
दो० बहुविधि करत मनोरथ, जातलागि नहि बार ॥
करि मज्जन सरजू जल, गएभूप दरबार २०६ ॥
मुनिआगमनसुनाजबराजा ❋ मिलनगएउ लैविप्रसमाजा
करिदंडवतमुनिहिसनमानी ❋ निजआसनबैठारेन्हिआनी
चरन पषारिकीन्हअतिपूजा ❋ मोसमआजुधन्यनाहि दूजा
बिबिधिभांतिभोजनकरवावा ❋ मुनिवरहृदयहरषअतिपावा
पुनिचरननिं मेले सुत चारी ❋ रामदेषि मुनि देह बिसारी
भएमगन देखत मुखसोभा ❋ जनुचकोर पूरन ससिलोभा
तबमनहरषि वचनकहराऊ ❋ मुनिअसकृपानकीन्हिहु काऊ
केहिकारनआगमनतुम्हारा ❋ कहहुसो करतनलावौं बारा
असुर समूहसतावहिं मोहीं ❋ मैंजाचन आएउँ नृप तोहीं
अनुज समेत देहु रघुनाथा ❋ निसिचरबध मैंहोव सनाथा

दो॰ देहु भूपमन हरषित, तजहु मोह अज्ञान ॥
धर्मसुजसनृपतुम्हको, इन्हकहँअतिकल्यान २०७

मुनिराजाअति अप्रियवानी ❋ हृदयकंपमुष दुतिकुँमलानी
चौथेपन पायउँ सुत चारी ❋ बिप्रबचननहिंकहेहु बिचारी
माँगहु भूमिधेनु धन कोसा ❋ सर्बस देउँ आजु सहरोसा
देह प्रान ते प्रियकछु नाहीं ❋ सोउमुनिदेउँनिमिषएकमाहीं
सबसुतप्रियमोहिप्रानकिनाईं ❋ रामदेत नहिं बनइ गोसाईं
कहँनिसिचरअतिघोरकठोरा ❋ कहँसुंदर सुतपरम किसोरा
सुनिनृप गिराप्रेम रससानी ❋ हृदय हरषमानामुनिज्ञानी
तबवासिष्टबहुबिधिसमुझावा ❋ नृप संदेह नास कहँ पावा
अतिआदरदोउतनयबोलाए ❋ हृदयलाइ बहुभांतिसिषाए
मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ ❋ तुम्हमुनिपिताआननहिकोऊ

दो॰ सौंपे भूपरिषिहि सुत, बहु बिधि देय असीस ॥
जननी भवन गए प्रभु, चलेनाइ पद सीस ॥

सो॰ पुरुषसिंह दोउबीर, हरषि चलेमुनि भयहरन ॥
कृपासिंधुमतिधीर, अखिलविस्व कारनकरन २०८

अरुननयनउरबाहु बिसाला ❋ नीलजलजतनस्यामतमाला
कटिपट पीतकसेवर माथा ❋ रुचिर चापसायकदुहुँ हाथा
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई ❋ बिस्वामित्र महानिधि पाई
प्रभु ब्रह्मन्य देव मै जाना ❋ मोहिनिति पितातजेउभगवाना
चलेजात मुनिदीन्हि देखाई ❋ सुनिताडकाक्रोध करिधाई
एकहि बानप्रान हरि लीन्हा ❋ दीनजानितेहिनिजपददीन्हा
तबरिषिनिजनाथहिजियचीन्हा ❋ विद्यानिधिकहाविद्यादीन्हा

जात लाग न छुधापियासा ❋ अतुलितबलतनतेजप्रकासा

दो० आयुध सर्बसमर्पिकै, प्रभुनिज आस्रम आनि ॥
कंदमूल फलभोजन, दीन्ह भगतहितजानि २०९ ॥

प्रात कहा मुनिसन रघुराई ❋ निर्भय जज्ञकरहु तुम जाई
होमकरन लागे मुनि झारी ❋ आपुरहे मखकी रखवारी
सुनिमारीच निसाचरकोही ❋ लैसहाय धावा मुनि द्रोही
बिनु फरबानरामतेहि मारा ❋ सत योजन गा सागर पारा
पावकसरसुबाहु पुनि जारा ❋ अनुजनिसाचरकटकसंघारा
मारिअसुरद्विजनिर्भयकारी ❋ अस्तुतिकरहिंदेवमुनिझारी
तहँपुनिकछुकादिवसरघुराया ❋ रहेकीन्ह बिप्रन्ह पर दाया
भगति हेतुबहु कथा पुराना ❋ कहे बिप्र जद्यपि प्रभुजाना
तबमुनि सादर कहा बुझाई ❋ चरितएक प्रभु देखिअजाई
धनुष यज्ञसुनिरघुकुलनाथा ❋ हरषि चले मुनिबरके साथा
आश्रम एकदीखमग माहीं ❋ खगमृग जीवजंतुतहंनाहीं
पूँछा मुनिहि सिलाप्रभुदेखी ❋ सकलकथामुनिकहीबिसेखी

दो० गौतमनारिसापबस, उपलदेहधरिधीर ॥
चरन कमलरजचाहति, कृपाकरहु रघुबीर २१० ॥

छं० परसतपदपावन सोकनसावन प्रगटभईतपपुंजसही ॥
देखतरघुनायकजनसुखदायकसन्मुखहोइकरजोरिरही ॥
अतिप्रेमअधीरापुलकसरीरामुखनहिंआवैवचन कही ॥
अतिसयबडभागीचरनन्हिलागीजुगलनयनजलधारबही ॥
धीरजमनकीन्हाप्रभुकहुँचीन्हारघुपतिकृपाभगतिपाई ॥
अतिनिर्मलबानी अस्तुतिठानीज्ञानगम्यजयरघुराई ॥

मैनारिअपावनप्रभुजगपावनरावनारिपु जनसुखदाई ॥
राजीवविलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिसरनहिंआई ॥
मुनिसापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैं माना ॥
देखेउँभरिलोचनहरिभवमोचनइहैलाभसंकरजाना ॥
बिनतीप्रभुमोरीममतिभोरीनाथनवरमागौंआना ॥
पदकमलपरागारसअनुरागाममनमधुपकरइपाना ॥
जेहिपदसुरसरितापरमपुनीताप्रगटभईसिवसीसधरी ॥
सोईपदपंकजजेहिपूजतअजममसिरधरेउकृपालहरी ॥
येहिभांतिसिधारीगौतमनारीबारबारहरिचरनपरी ॥
जोअतिमनभावासोबरपावागैपतिलोकअनंदभरी ॥

दो० असप्रभु दीनबंधु हरि, कारन रहित दयाल ॥
तुलसिदाससठतेहिभजु, छांडिकपटजंजाल २११ ॥

चलेराम लछिमन मुनिसंगा * गए जहां जगपावनिगंगा
गाधिसूनु सबकथा सुनाई * जेहिप्रकारसुरसरिमहिआई
तबप्रभुरिषिन्ह समेतनहाये * बिबिधदान महिदेवन्हपाये
हरषि चले मुनि बृंदसहाए * बेगिविदेह नगर नियराए
पुररम्यता राम जब देषी * हरषे अनुज समेत बिसेषी
वापी कूप सरित सरनाना * सलिलसुधासममनिसोपाना
गुंजत मजुमत्तरस भृंगा * कूजत कलबहुबरन बिहंगा
बरन बरन बिकसे वन जाता * त्रिविधसमीरसदासुखदाता

दो० सुमन बाटिका बागवन, बिपुल बिहंगनिवास ।
फूलत फलत सुपल्लवत, सोहत पुर चहुँपास २१२॥

बनइ न वरनत नगर निकाई * जहांजाइ मनतहंई लोभाई

चारु बजार बिचित्र अवांरी ❋ मनिमयजनु बिधिम्वकरमँवारी
धनिकबनिकवरधनदममाना ❋ बैठे मकल वस्तुलै नाना
चौहट सुन्दर गली सुहाई ❋ मन्तत रहहिं सुगंधमिचाई
मंगल मय मन्दिर सब केरे ❋ चित्रितजनुरति नाथचितेरे
पुरनरनारिसुभग सुचिसंता ❋ धरम मील ज्ञानी गुनवंता
अतिअनूपजहँजनकनिवासू ❋ बिथकहिंबिबुधबिलोकिबिलासू
होतचकितचितकोटबिलोकी ❋ मकलभुअनमोभाजनुरोकी

दो० धवलधाम मनि पुरटपटु, सुघटित नानाभांति।
सियनिवास सुंदरसदन, सोभाकिमिकहिजाति २१३

सुभगद्वारसबकुलिसकपाटा ❋ भूप भीरनट मागधभाटा
बनीविसाल वाजिगजमाला ❋ हयगयरथ मंकुल मबकाला
सूरसचिव सेनप बहुतेरे ❋ नृपगृह मरिमसदन मबकेरे
पुर बाहेर सरसरित समीपा ❋ उतरे जहंतहं बिपुलमहीपा
देषि अनूप एक अंबराई ❋ मबसुपास मब भांतिसुहाई
कौसिककहेउमोरमनमाना ❋ इहां रहिअरघुबीर सुजाना
भलेहिनाथकहिकृपानिकेता ❋ उतरे तहंमुनि वृन्दसमेता
विस्वामित्र महामुनि आए ❋ समाचार मिथिलापतिपाए

दो० संगसचिव सुचि भूरिभट, भूसुर वरगुरु ज्ञाति॥
चलेमिलनमुनिनायकहिं, मुदितराउयेहिभांति २१४

कीन्हप्रनामचरन धरिमाथा ❋ दीन्हिअसीसमुदितमुनिनाथा
बिप्र वृन्द सब सादर बन्दे ❋ जानिभाग्यबडराउअनन्दे
कुसल प्रस्नकहिंवारहिंवारा ❋ बिश्वामित्र नृपहि बैठारा
तेहिअवसर आए दोउभाई ❋ गये रहे देषन फुलवाई

स्यामगौरमृदुवयस किसोरा ❋ लोचनसुपद बिस्वचितचोरा
उठे सकलजबरघुपतिआए ❋ बिस्वामित्र निकट बैठाए
भये सबसुषीदेषिदोउभ्राता ❋ बारिबिलोचनपुलकितगाता
मूरति मधुर मनोहर देखी ❋ भयेउ बिदेहु बिदेह बिसेखी
दो० प्रेम मगन मन जानिनृप, करि बिवेक धरि धीर ॥
बोलेउमुनिपदनाइसिर, गदगद गिरागँभीर २१५॥
कहहु नाथसुंदरदोउबालक ❋ मुनिकुल तिलककिनृपकुलपालक
ब्रह्मजोनिगमनेतिकहिगावा ❋ उभयबेषधरिकीसोइ आवा
सहज बिरागरूप मन मोरा ❋ थकितहोताजिमिचंदचकोरा
ताते प्रभु पूछौं साति भाऊ ❋ कहहुनाथ जनिकरहु दुराऊ
इन्हहिबिलोकतअतिअनुरागा ❋ बरबसब्रह्मसुषहिमन त्यागा
कहमुनिबिहँसि कहेहुनृप नीका ❋ बचनतुम्हारनहोइ अलीका
एप्रियसबहि जहांलगिप्रानी ❋ मनमुसुकाहिंरामसुनिबानी
रघुकुलमनि दसरथके जाए ❋ ममहितलागि नरेस पठाए
दो० रामलषन दोउबंधुवर, रूप सील बलधाम ॥
मखराखेउ सबसाखि जग, जिते असुर संग्राम २१६
सुनितवचरनदेखिकह राऊ ❋ कहिनसकौंनिजपुन्य प्रभाऊ
सुंदर स्याम गौरदोउभ्राता ❋ आनँदहू के आनँद दाता
इन्हकैप्रीति परसपरपावनि ❋ कहिनजाइमनभावसुहावनि
सुनहुनाथ कहमुदित बिदेहू ❋ ब्रह्मजीव इव सहज सनेहू
पुनिपुनिप्रभुहिचितवनरनाहू ❋ पुलकगातउरअधिकउछाहू
मुनिहि प्रसंसिनाइपद सीसू ❋ चलेउलेवाइ नगर अवनीसू
सुंदरसदन सुखदसबकाला ❋ तहांवासलै दीन्ह भुआला

करिपूजासब विधि सेवकाई ❋ गए3 रा3 ग्रह विदाकराई
दो० रिषयसंगरघुबंसमनि, करिभोजनविश्राम मा०षा०।६।
बैठेप्रभुभ्रातासहित, दिवमरहाभरिजाम ॥ २१७ ॥
लषनहृदयलालसा बिशेषी ❋ जाइजनकपुर आइय देषी
प्रभुभयबहुरिमुनिहिसकुचाहीं ❋ प्रगटनकहहिं मनहिं मुसुकाहीं
रामअनुजमनकीगतिजानी ❋ भगतबछलताहियहुलसानी
परमविनीतसकुचिमुसुकाई ❋ बोले गुरु अनुसामन पाई
नाथ लषनपुर देषन चहहीं ❋ प्रभुसकोचडरप्रगटन कहहीं
जौं राउरआयसु मैं पावऊं ❋ नगर देषाइ तुरत लैआवऊँ
सुनिमुनीसकहवचन सप्रीती ❋ कसनरामतुम्ह राषहु नीता
धरम सेतुपालक तुम ताता ❋ प्रेमबिबस सेवक सुपदाता
दो० जाइदेखिआवहुनगर, सुपनिधानदोउ भाइ ।
करहु सुफल सबके नयन, सुंदर बदन देषाइ २१८ ॥
मुनिपदकमलबंदिदोउभ्राता ❋ चलेलोक लोचनसुप दाता
बालक बृंद देषिअति सोभा ❋ लगे संग लोचन मन लोभा
पीतबसनपरिकरकटिभाथा ❋ चारु चापसर सोहत हाथा
तन अनुहरत सुचंदन षोरी ❋ स्यामल गोरमनोहर जोरी
केहरि कंधर बाहु बिसाला ❋ उरअतिरुचिरनागमनिमाला
सुभगसोनसरसीरुह लोचन ❋ बदनमयंकतापत्रय मोचन
काननिहकनकफूलछबिदेहीं ❋ चितवतचितहिचोरिजनुलेहीं
चितवनिचारुभृकुटिबरबाँकी ❋ तिलकरेखसोभाजनु चाँकी
दो० रुचिर चौतनीं सुभग सिर, मेचक कुंचित केस ।
नखसिख सुंदर बंधु दोउ, सोभा सकल सुदेस २१९

देखन नगर भूप सुत आये ❋ समाचार पुरबासिन्ह पाए
धाए धाम काम सब त्यागी ❋ मनहुंरंक निधिलूटनलागी
निरखि सहजसुंदरदोउभाई ❋ होहिंसुखी लोचन फलपाई
जुवतीभवनझरोखन्हिलागीं ❋ निरखहिं रामरूप अनुरागीं
कहहिं परस्पर बचनसप्रीती ❋ सषिउन्हकोटि कामछबिजीता
सुरनरअसुरनाग मुनिमाहीं ❋ सोभाअसिकहुँसुनिअतिनाहीं
बिष्णुचारिभुजाविधिमुखचारी ❋ बिकट बेख मुष पंच पुरारी
अपरदेउ असकोउनआहीं ❋ यहछबिसषीपटतरिअजाहीं
दो० वयकिसोर सुखमा सदन, स्याम गौरसुष धाम ॥
अंग अंग परवारि अहि, कोटि कोटि सतकाम २२०
कहहु सषी असको तनधारी ❋ जोन मोह यह रूप निहारी
कोउ सप्रेम बोली मृदुबानी ❋ जोमैंसुनासो सुनहु सयानी
ए दोउ नृप दसरथके ढोटा ❋ बालमरालन्हिके कलजोटा
मुनि कौसिकमषके रषवारे ❋ जिन्हरनअजिरनिसाचरमारे
स्यामगातकलकंजबिलोचन ❋ जोमारीचसुभुजमदमोचन
कौसल्यासुत सो सुखखानी ❋ नाम राम धनुसायक पानी
गोर किसोर बेषबर काछें ❋ कर सरचाप रामके पाछें
लछिमननामरामलघुभ्राता ❋ सुनुसखितासुसुमित्रा माता
दो० बिप्रकाज करिबंधुदोउ, मग मुनिबधू उधारि ॥
आये देषन चाप मष, सुनिहरषींसबनारि ॥२२१॥
देषिरामछबिकोउएककहई ❋ जोगजानकिहियहबरअहई
जौं सखिइन्हहिं देष नरनाहू ❋ पनपरिहरि हठि करैबिवाहू
कोउकह ए भूपति पहिचाने ❋ मुनिसमेत सादर सनमाने
सषि परंतुपन राउ न तजई ❋ बिधिबसहठिअबिबेकहि भजई

कोउकहजौंभलअहैविधाता * सबकहँसुनिअउचितफलदाता
तौजानकिहिमिलिहिवरएहू * नाहिन आलि इहां संदेहू
जौंविधिवसअस वनैसँजोगू * तौकृतकृत्य होइ सबलोगू
सषिहमरे आरति अतितातें * कबहुकए आवहिंएहि नाते

दो० नाहित हमकहं सुनहुसषि, इन्हकर दरसनदूरि ॥
यहसंघट तबहोइ जब, पुन्य पुराकृतभूरि २२२ ॥

बोलीअपर कहेउसषिनीका * एहिबिआहअतिहितसबहीका
कोउकह संकर चाप कठोरा * एस्यामलमृदुगात किसोरा
सबअसमंजस अहइसयानी * यहसुनिअपरकहइमृदुबानी
सषिइन्हकहंकोउ२ असकहहीं * बडप्रभाउ देषतलघु अहहीं
परसि जासु पद पंकज धूरी * तरी अहल्या कृतअघ भूरी
सोकिरहिहिबिनुसिवधनुतोरें * यहप्रतीतिपरिहरिअनभोरें
जेहिबिरंचिरचि सीयसवारी * तेहिस्यामलवररचेउबिचारी
तासुबचनसुनि सबहरषानी * ऐसेइ होउ कहहिं मृदुबानी

दो० हियहरषहिंबरषहिंसुमन, सुमुषि सुलोचनि वृंद ।
जाहिं जहां जहं बंधुदोउ, तहं तहं परमानंद २२३ ॥

पुर पूरब दिसिगे दोउ भाई * जहधनुमषहित भूमिबनाई
अति बिस्तार चारुगचढारी * विमलवेदिका रुचिरसँवारी
चहुँदिसिकंचन मंचबिसाला * रचेजहां बैठहिं महिपाला
तेहि पाछे समीप चहुं पासा * अपर मंचमंडली बिलासा
कछुकऊंचिसब भांतिसुहाई * बैठहिं नगरलोग जहँ जाई
तिन्हके निकटबिसालसोहाए * धवल धाम बहु बरन बनाए
जहँ बैठे देषहिं सब नारी * जथाजोगनिजकुलअनुहारी

पुरबालककहिकहिमृदुबचना ❀ सादर प्रभुहिंदेषावहिंरचना
दो॰ सबसिसुयहिमिस प्रेमबस,परसि मनोहर गात ॥
तनपुलकहिंअतिहरषहिय, देषि दखिदोउभ्रात२२४
सिसु सब रामप्रेम बस जाने ❀ प्रीति समेत निकेत बखाने
निजनिजरुचिसबलेहिंबोलाई ❀ सहितसनेहजाहिं दोउभाई
रामदेषावहिंअनुजहिरचना ❀ कहिमृदुमधुरमनोहरबचना
लवनिमेषमहँभुवननिकाया ❀ रचै जासु अँनुसासनमाया
भगतिहेतुसोइ दीन दयाला ❀ चितवतचकितधनुषमषसाला
कौतुक देषिचले गुरुपाहीं ❀ जानिबिलंब त्रासमनमाहीं
जासु त्रासडरकहँ डर होई ❀ भजन प्रभाव देषावतसोई
कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई ❀ किएबिदा बालक बरिआई
दो॰ सभय सप्रेम बिनीतअति, सकुचसहितदोउभाइ ॥
गुरुपद पंकज नाइसिर, बैठे आयसु पाइ ॥ २२५ ॥
निसिप्रवेसमुनिआयसुदीन्हा ❀ सबहीं संध्याबंदन कीन्हा
कहतकथा इतिहासपुरानी ❀ रुचिररजनिजुगजामसिरानी
मुनिवरसयनकीन्हितबजाई ❀ लगेचरन चापन दोउभाइ
जिन्हके चरनसरोरुहलागी ❀ करतबिबिधजपजोगबिरागी
तेइदोउ बंधुप्रेम जनु जीते ❀ गुरपद पदुम पलोटत प्रीते
बारबार मुनि आज्ञा दीन्हीं ❀ रघुबरजाइसयन तबकीन्हीं
चापत चरनलषन उरलाए ❀ सभय सप्रेम परमसचुपाए
पुनिपुनिप्रभुकहसोवहुताता ❀ पौढे धरिउर पद जलजाता
दो॰ उठेलषननिसिबिगतसुनि, अरुनसिषाधुनिकान ॥
गुरुतैंपहिलेहि जगतपति, जागे राम सुजान २२६ ॥

सकल सौच करि जाइनहाये ❋ नित्यनिबाहि मुनिहिसिरनाये
समयजानिगुरु आयसु पाई ❋ लेनप्रसून चले दोउ भाई
भूपबाग बरदेखेउ जाई ❋ जहं बसन्तऋतुरही लोभाई
लागे बिटप मनोहर नाना ❋ बरनबरनबर बेलि बिताना
नवपल्लव फल सुमनसुहाए ❋ निजसंपति सुररूप लजाए
चातककोकिल कीरचकोरा ❋ कूजतविहगनचतकलमोरा
मध्यबाग सरसोह सुहावा ❋ मनिसोपानबिचित्र बनावा
बिमलसलिलसरसिजबहुरंगा ❋ जलखगकूजतगुंजत भृंगा

दो० बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु, हरषे बन्धु समेत ॥
परम रम्य आराम यह, जो रामहि सुखदेत २२७ ॥

चहुदिसिचितइपूछिमालीगन ❋ लगेलेन दलफूल मुदितमन
तेहि अवसर सीता तहं आई ❋ गिरजापूजनजननि पठाई
संगसखीं सब सुभग सयानीं ❋ गावहिं गीतमनोहर बानीं
सरसमीप गिरिजागृह सोहा ❋ बरनिनजाइ देखि मनमोहा
मज्जनकरिसरसखिन्हसमेता ❋ गईमुदितमन गौरि निकेता
पूजाकीन्हिअधिकअनुरागा ❋ निजअनुरूपसुभगबरमांगा
एक सखी सिय संग बिहाई ❋ गई रही देखन फुलवाई
तेहि दोउबंधु बिलोके जाई ❋ प्रेम बिबस सीतापहिं आई

दो० तासुदसा देखी सखिन्ह, पुलक गात जल नयन ।
कहु कारन निजहरष कर पूछहिं सब मृदुबयन २२८

देखन बाग कुअँरदुइ आए ❋ बयकिसोर सबभाँतिसुहाए
स्यामगौरकिमिकहउँबखानी ❋ गिराअनयननयनबिनुबानी
सुनिहरषीं सबसखी सयानी ❋ सियहियअतिउतकंठाजानी

एक कहइ नृपसुततेइ आली ❋ सुनेजेमुनि संगआए काली
जिन्ह निजरूपमोहनीडारी ❋ कीन्हे स्ववस नगरनरनारी
बरनत छबिजहंतहंसबलोगू ❋ अवसिदेषिअहिदेखनजोगू
तासुबचनअतिसियहिसुहाने ❋ दरसलागिलोचनअकुलाने
चलींअग्रकरि प्रियसषिसोई ❋ प्रीति पुरातन लषै न कोई
दो० सुमिरि सीय नारद बचन, उपजी प्रीति पुनीत ॥
चकितबिलोकतिसकलदिसि,जनुसिसुमृगीसभीत२२९
कंकनकिंकिनिनूपुरधुनिसुनि ❋ कहतलषनसनरामहृदयगुनि
मानहु मदन दुंदभी दीन्ही ❋ मनसाबिस्वबिजयकहँकीन्ही
असकहिफिरिचितयेतेहिओरा ❋ सियमुषससिभयेनयनचकोरा
भए बिलोचनचारुअ चंचल ❋ मनहुंसकुचिनिमित जेदृगंचल
देखि सीयसोभासुख पावा ❋ हृदयसराहत बचन नआवा
जनुबिरंचिसबनिजनिपुनाई ❋ बिरचि बिस्वकहँप्रगटदेषाई
सुंदरता कहँ सुंदर करई ❋ छबिगृहदीप सिषाजनुबरई
सबउपमा कबिरहे जुठारी ❋ केहिपटतरौं बिदेह कुमारी
दो० सियसोभाहियबरनिप्रभु, आपनिदसाबिचारि ॥
बोलेसुचिमनअनुजसन, बचनसमयअनुहारि२३०
तात जनक तनयायह सोई ❋ धनुषजग्य जेहिकारनहोई
पूजन गौरि सषीं लै आई ❋ करतप्रकासफिरहिं फुलवाई
जासुबिलोकिअलौकिकसोभा ❋ सहजपुनीतमोरमन छोभा
सोसब कारन जानबिधाता ❋ फरकहिंसुभगअंगसुनु भ्राता
रघुबंसिन्हकरसहज सुभाऊ ❋ मनकुपंथपग धरैं न काऊ
मोहिअतिसयप्रतीतमनकेरी ❋ जेहिंसपनेहुपरनारिन हेरी

जिन्हकैलहहिंनरिपुरनपीठी * नहिपावहिंपरतियमनडीठी
मंगनलहहिं न जिन्हकै नाहीं * ते नर बर थोरे जग माहीं

दो० करतबतकहीअनुजसन, मनसियरूपलोभान ॥
मुषसरोजमकरंदछबि, करैमधुपइवपान २३१ ॥

चितवतिचकितचहूंदिसिसीता * कहंगएनृपकिसोरमनचिंता
जहँबिलोकमृगसावकनयनी * जनुतहंबरिसकमलसित स्रेनी
लताओटतबसखिन्हलषाए * स्यामलगौर किसोर सुहाए
देखि रूप लोचन ललचाने * हरषेजनुनिजनिधिपहिचाने
थकेनयन रघुपति छबि देषे * पलकन्हिहूंपरिहरीं निमेषे
अधिक सनेह देहभइभोरी * सरदससिहिजनुचितवचकोरी
लोचनमगरामहि उर आनी * दीन्हे पलककपाट सयानी
जबसियसषिन्हप्रेमबस जानी * कहिनसकहिं कछुमनसकुचानी

दो० लताभवनतेंप्रगटभए, तेहिअवसर दोउभाइ ॥
निकसेजनुजुगबिमलबिधु, जलदपटल बिलगाइ २३२

सोभा सींवसुभग दोउबीरा * नीलपीत जलजात सरीरा
काकपक्ष सिर सोहत नीके * गुच्छेबिचबिचकुसुम कलीके
भाल तिलक श्रमबिंदुसुहाए * स्रवनसुभगभूषन छबिछाए
बिकटभृकुटि कचघूघरवारे * नव सरोज लोचन रतनारे
चारुचिबुकनासिकाकपोला * हासबिलास लेत मनमोला
सुषछबिकहिनजाइमोहिपाहीं * जोबिलोकिबहुकाम लजाहीं
उरमनिमालकंबुकल ग्रीवाँ * कामकलभकरभुजबलसीवाँ
सुमन समेत बामकर दोना * साँवरकुँअरसषी सुठिलोना

दो० केहरिकटिपटपीतधर, सुखमासीलनिधान ॥
देषिभानुकुलभूषनहिं, बिसरासखिन्हअपान २३३

धरिधीरजएक आलिसयानी ❋ सीतासन बोली गहिपानी
बहुरि गौरिकर ध्यान करेहू ❋ भूपकिसोर देखि किनलेहू
सकुचिसीय तबनयन उघारे ❋ सनमुखदोउरघुसिंह निहारे
नषसिष देखिरामकै सोभा ❋ सुमिरिपितापनमनअतिछोभा
परबससषिन्हलखीजबसीता ❋ भयेउगहरुसबकहहिं सभीता
पुनिआउबएहि बेरिआं काली ❋ असकहिमनबिहंसी एकआली
गूढगिरासुनिसियसकुचानी ❋ भयेउ बिलंबमातुभयमानी
धरि बड़धीर राम उरआने ❋ फिरीअपनपउपितुवसजाने

दो० देषनमिसमृगाबिहँगतरु, फिरइबहोरि बहोरि ॥
निरषिनिरषि रघुबीरछबि, बाढ़प्रीतिनथोरि २३४ ॥

जानिकठिनासिवचापबिसूरति ❋ चलीराषिउर स्यामलमूरति
प्रभुजबजात जानकी जानी ❋ सुखसनेहसोभा गुनखानी
परमप्रेममयमृदु मसिकीन्ही ❋ चारुचित्रभीतालिषि लीन्ही
गई भवानी भवन बहोरी ❋ बन्दिचरन बोली करजोरी
जयजयगिरिवरराजकिसोरी ❋ जयमहेस मुखचन्दचकोरी
जयगजबदनषडानन माता ❋ जगतजननिदामिनिदुतिगाता
नहितबआदिमध्यअवसाना ❋ अमितप्रभाउबेदनहिजाना
भवभवबिभवपराभवकारिनि ❋ बिस्व बिमोहनिस्वबसबिहारिनि

दो० पतिदेवता सुतीयमहँ, मातुप्रथम तब रेष ॥
महिमा अमित न सकहिंकहि, सहससारदासेष २३५

सेवततोहि सुलभफल चारी ❋ बरदायनी पुरारि पियारी

देवि पूजिपदकमल तुम्हारे ❋ सुरनर मुनिसबहोहिं सुखारे
मोर मनोरथ जानहु नीके ❋ बसहु सदा उरपुर सबहीके
कीन्हेउँ प्रगटनकारन तेही ❋ असकहि चरनगहे बैदेही
बिनय प्रेमबस भई भवानी ❋ खसीमाल मूरति मुसुकानी
सादर सियप्रसादसिरधरेऊ ❋ बोलीगौरि हरष हियभरेऊ
सुनुसिय सत्यअसीसहमारी ❋ पूजिहिमनकामना तुम्हारी
नारदबचनसदा सुचिसाचा ❋ सोबरमिलिहि जाहिमनराचा

छं० मनजाहिराचेउ मिलिहि सोबरसहज सुन्दर साँवरो ।
करुनानिधान सुजानसीलसनेह जानतरावरो ॥
एहिभाँतिगौरिअसीससुनिसियसहितहियहरषींअलीं
तुलसीभवानिहिपूजिपुनिपुनि मुदितमनमंदिरचलीं ।

सो० जानिगौरिअनुकूल, सियहियहरषनजायकहि ॥
मंजुलमंगलमूल, बामअंगफरकनलगे ॥ २३६ ॥

हृदय सराहत सीय लोनाई ❋ गुरु समीप गवने दोउभाई
राम कहासबकौसिक पाहीं ❋ सरलसुभाउ छुआछलनाहीं
सुमन पाइ मुनिपूजाकीन्ही ❋ पुनिअसीसदुहुंभाइनदीन्ही
सुफल मनोरथ होहु तुम्हारे ❋ रामलषन सुनिभए सुखारे
करिभोजन मुनिवरविज्ञानी ❋ लगेकहन कछु कथापुरानी
बिगतदिवसगुरु आयसु पाई ❋ संध्या करन चलेदोउभाई
प्राचीदिसिससिउएउसुहावा ❋ सियमुखसरिसदेषिसुखपावा
बहुरिबिचार कीन्हमनमाहीं ❋ सीयबदनसमहिमकरनाहीं

दो० जनमसिंधुपुनिबंधुबिष, दिनमलीन सकलंक ॥
सियमुख समतापावकिमि, चंदबापुरोरंक ॥ २३७ ॥

घटै बढ़ै बिरहिनि दुखदाई ॥ ग्रसैराहु निज संधिहि पाई
कोक सोकप्रद पंकज द्रोही ॥ अवगुन बहुत चंद्रमा तोही
वैदेही मुख पटतर दीन्हे ॥ होइदोष बडअनुचितकीन्हे
सियमुखछबि बिधुब्याजबखानी ॥ गुरुपहिंचलेनिसाबडिजानी
करिमुनिचरनसरोजप्रनामा ॥ आयसुपाइ कीन्ह बिस्रामा
बिगतनिसा रघुनायक जागे ॥ बंधुबिलोकि कहनअसलागे
उएउअरुनअवलोकहुताता ॥ पंकजकोकलोक सुखदाता
बोले लषन जोरि युग पानी ॥ प्रभुप्रभाउ सूचक मृदुबानी

दो॰ अरुनोदय सकुचे कुमुद, उडगनजोतिमलीन ॥
जिमितुम्हारआगमनसुनि, भएनृपति बलहीन २३८

नृपसबनखतकरहिंउजिआरी ॥ टारिनसकहिं चापतमभारी
कमलकोकमधुकरखगनाना ॥ हरषेसकल निसाअवसाना
ऐसेहिं प्रभुसबभगततुम्हारे ॥ होइहहिं टूटे धनुष सुखारे
उएउभानुबिनुस्रमतमनासा ॥ दुरे नखत जग तेज प्रकासा
रबिनिजउदयब्याजरघुराया ॥ प्रभुप्रतापसबनृपन्हदेखाया
तबभुजबलमहिमाउदघाटी ॥ प्रगटाधनु बिघटनपरिपाटी
बंधुबचनसुनि प्रभु मुसकाने ॥ होइसुचिसहजपुनीत नहाने
नित्यक्रियाकरि गुरपहिंआए ॥ चरनसरोज सुभग सिरनाए
सतानन्द तब जनकबुलाए ॥ कौसिकमुनिपहिंतुरतपठाए
जनकबिनयतिन्हआइसुनाई ॥ हरषेबोलि लिए दोउ भाई

दो॰ सतानंद पद बंदि प्रभु, बैठेगुरु पाहिंजाइ ॥
चलहुतातमुनि कहेउतब, पठवा जनक बोलाइ २३९

सीय स्वयंबर देखिअजाई ॥ ईस काहि धौं देइ बडाई

लषन कहा जसभाजन सोई * नाथ कृपा तव जापर होई
हरषे मुनिसब सुनिबरबानी * दीन्हि असीसबहिसुखमानी
पुनिमुनि वृंद समेतकृपाला * देखन चले धनुष मखसाला
रंगभूमि आये दोउ भाई * असिसुधिसबपुरबासिन्हपाई
चलेसकल गृह काजबिसारी * बाल जुवान जरठ नर नारी
देखी जनक भीर भ भारी * सुचिसेवक सबलिये हंकारी
तुरतसकललोगन्हपहिंजाहू * आसन उचित देहु सबकाहू

दो० कहि मृदुवचन विनीत तिन्ह, बैठारे नरनारि ॥
उत्तममध्यमनीचलघु, निजनिजथलअनुहारि २४०

राजकुँअरतेहि अवसरआए * मनहु मनोहरता तन छाए
गुन सागर नागर बर बीरा * सुंदर स्यामल गौर सरीरा
राज समाज बिराजत रूरे * उडुगनमहं जनु जुग बिधुपूरे
जिन्हकें रही भावना जैसी * प्रभु मूरति तिन्हदेखी तैसी
देषहिं भूप महारन धीरा * मनहुबीर रस धरे सरीरा
डरेकुटिलनृपप्रभुहिनिहारी * मनहु भयानक मूरतिभारी
रहे असुर छलछोनिप बेषा * तिन्हप्रभुप्रगटकालसमदेषा
पुर बासिन्ह देखे दोउ भाई * नरभूषन लोचन सुखदाई

दो० नारिबिलोकहिं हरषि हिय, निज निज रुचि अनुरूप
जनुसोहत सृंगारधरि, मूरति परम अनूप ॥ २४१ ॥

बिदुखन्हप्रभुबिराटमयदीसा * बहुमुखकरपग लोचनसीसा
जनकजातिअवलोकहिंकैसे * सजनसगे प्रियलागहिं जैसे
सहितबिदेहबिलोकहिं रानी * सिसुसमप्रीतिनजातिबखानी
जोगिन्हपरमतत्वमयभासा * सांतसुद्धसम सहज प्रकासा

हरि भगतन्हदेखेदोउभ्राता * इष्टदेव इवसब सुख दाता
रामहिंचितवभावजेहिसीया * सोसनेहसुषनहि कथनीया
उरअनुभवातिनकहि सकसोऊ * कवन प्रकारकहैकबिकोऊ
एहिबिधिरहाजाहिजसभाऊ * तेहितसदेषउ कोसलराऊ

दो॰ राजत राजसमाज महँ, कोसलराज किसोर ॥
सुंदर स्यामल गौरतन, बिस्व बिलोचन चोर २४२ ॥

सहज मनोहरमूरति दोऊ * कोटिकामउपमा लघुसोऊ
सरदचंद निंदक मुख नीके * नीरजनयन भावते जीके
चितवनिचारुमारमनहरनी * भावतिहृदयजातिनहिबरनी
कलकपोलश्रुतिकुंडललोला * चिबुकअधर सुंदरमृदुबोला
कुमुद बंधुकर निंदकहासा * भृकुटीबिकटमनोहरनासा
भालबिसालतिलकझलकाहीं * कचबिलोकिअलिअवलिलजाहीं
पीतचौतनी सिरन्हिसुहाई * कुसुमकली बिचबीचबनाई
रेषैंरुचिर कंबुकल ग्रीवाँ * जनुतिभुअनसुखमाकीसींवाँ

दो॰ कुंजरमनि कंठाकलित, उरन्हि तुलसिका माल ॥
बृषभकंधकेहरिठवनि, बलनिधिबाहु बिसाल २४३ ॥

कटितूनीर पीतपट बांधे * करसर धनुषबाम बरकांधे
पीतजग्य उपबीत सुहाए * नषसिखमंजु महाछबिछाए
देखिलोग सबभए सुखारे * एकटकलोचन चलतनतारे
हरषे जनक देखि दोउभाई * मुनिपदकमल गहेतब जाई
करिबिनतीनिजकथासुनाई * रंगअवनिसबमुनिहिदेखाई
जहँजहँजाहिंकुँअरबर दोऊ * तहँतहँ चकितचितवसबकोऊ
निजनिजरुचि रामहि सबदेखा * कोउनजानकछुमरमबिसेषा

भलिरचनामुनिनृपमनकहेऊ ❋ राजामुदित महासुपलहेऊ
दो० सबमंचन्हतेंमंचएक, सुंदरबिसदबिसाल ॥ नवाह २ ॥
मुनिसमेत दोउबंधु तहं, बैठारमहिपाल ॥ २४४ ॥
प्रभुहिदेषि सबनृपहिय हारे ❋ जनुराकेस उदय भये तारे
असिप्रतीतिसबके मनमाहीं ❋ रामचाप तोरबसक नाहीं
बिनुभंजेहुभवधनुपबिसाला ❋ मेलिहि सीय राम उरमाला
असबिचारिगवनहु घरभाई ❋ जसप्रताप बलतेज गंवाई
बिहँसेअपर भूपसुनि बानी ❋ जेअबिबेक अंधअभिमानी
तोरेहुधनुप ब्याहअवगाहा ❋ बिनुतोरे को कुवँरि बिवाहा
एकबार कालउकिनहोऊ ❋ सियहितसमरजितवहमसोऊ
यहसुनिअवरमहिपमुसुकाने ❋ धरमसीलहरि भगतसयाने
सो० सीयबिआहबि राम, गरबदूरिकरिनृपन्हको ।
जीतिकोसक संग्राम, दसरथके रनबांकुरे २४५ ॥
ब्यर्थमरहु जनिगालबजाई ❋ मनमोदकन्हिकिभूखबुताई
सिखहमारिसुनिपरमपुनीता ❋ जगदंबा जानहु जियसीता
जगतपितारघुपतिहिबिचारी ❋ भरिलोचनछबि लेहुनिहारी
सुंदरसुखद सकल गुनरासी ❋ एदोउ बंधुसंभु उर बासी
सुधा समुद्र समीप बिहाई ❋ मृगजलनिरखिमरहुकतधाई
करहुजाइजाकहंजोइ भावा ❋ हमतोआज जनमफलपावा
असकहिभलेभूप अनुरागे ❋ रूपअनूप बिलोकन लागे
देखहिं सुरनभचढे बिमाना ❋ बरषहिंसुमनकरहिंकलगाना
दो० जानिसुअवसर सीयतब, पठईजनकबोलाइ ।
चतुरसखी सुंदरसकल, सादर चलीं लवाइ २४६ ॥

सियसोभा नहिंजाइबखानी ❋ जगदंबिका रूपगुन खानी
उपमासकलमोहिलघुलागीं ❋ प्राकृतनारि अंग अनुरागीं
सिय बरनियतेइ उपमा देई ❋ कुकबिकहाइ अजसकोलेई
जौंपटतरिअतीय समसीया ❋ जगअसिजुवतिकहाँकमनीया
गिरामुषरतन अरध भवानी ❋ रतिअतिदुषितअतनपतिजानी
बिष बारुनी बंधुप्रिय जेही ❋ कहियरमासम किमि बैदेही
जौंछबि सुधापयोनिधि होई ❋ परमरूप मयकच्छप सोई
सोभारजु मन्दर सिंगारू ❋ मथैपानि पंकजनिज मारू
दो० एहिंबिधिउपजैलच्छिजब, सुंदरतासुखमूल।
तदपिसकोच समेतकबि, कहहिंसियसमतूल २४७॥
चली संगलै सखी सयानी ❋ गावत गीत मनोहरबानी
सोहनवलतन सुन्दर सारी ❋ जगतजननिअतुलितछबिभारी
भूषन सकल सुदेस सुहाए ❋ अंगअंगरचिसखिन्हबनाए
रंगभूमि जबासिय पगुधारी ❋ देखिरूप मोहे नर नारी
हरषि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ❋ बरषि प्रसून अपछरा गाई
पानि सरोज सोहजयमाला ❋ अवचटचितएसकल भुआला
सीयचकितचितरामहिचाहा ❋ भयेमोह बस सब नरनाहा
मुनि समीप देषे दोउ भाई ❋ लगेललकिलोचननिधिपाई
दो० गुरजनलाजसमाजबड़, देषिसीयसकुचानि।
लागिबिलोकनसखिन्हतन, रघुबीरहिउरआनि २४८
रामरूप अरुसिय छबिदेखें ❋ नरनारिन्ह परिहरीनिमेखें
सोचहिंसकलकहतसकुचाहीं ❋ बिधिसनबिनय करहिंमनमाहीं
हरुबिधि बेगिजनकजड़ताई ❋ मतिहमारिअसिदेहि सुहाई

बिनु बिचारपनताजिनरनाहू * सीय रामकर करैं बिवाहू
जगभलकहिहिभावसबकाहू * हठ कीन्हे अंतहु उरदाहू
येहिलालसा मगन सबलोगू * वर साँवरो जानकी जोगू
तब बंदीजन जनक बोलाए * बिरदावली कहतचलिआए
कहनृप जाइ कहहुपनमोरा * चले भाटहिय हरपन थोरा
दो० बोले बंदी बचन बर, सुनहु सकल महिपाल ॥
पनबिदेहकरकहहिं, भुजा उठाइ बिसाल ॥ २४९ ॥
नृपभुजबलबिधुसिवधनुराहू * गरुअकठोर बिदितसबकाहू
रावन बान महा भट मारे * देखिसरासन गवहिं सिधारे
सोइ पुरारि को दंड कठोरा * राजसमाज आजजोइतोरा
त्रिभुवन जय समेत बैदेही * बिनहिं बिचारबरै हठितेही
सुनिपनसकलभूपअभिलाषे * भटमानीअतिसयमनमाषे
परिकर बाँधि उठे अकुलाई * चले इष्ट देवन्ह सिरनाई
तमकिताकितकिसिवधनुधरहीं * उठइनकोटिभाँति बलकरहीं
जिन्हकेकछुबिचारमनमाहीं * चाप समीप महीपनजाहीं
दो० तमकि धरहिं धनुमूढ़ नृप, उठै न चलहिं लजाइ ।
मनहु पाइभटबाहुबल, अधिक अधिक गरुआइ २५०
भूप सहसदस एकहिं बारा * लगे उठावन टरै न टारा
डगै न संभु सरासन कैसें * कामी बचन सतीमन जैसें
सबनृप भये जोग उपहासी * जैसें बिनुबिराग सन्यासी
कीरति बिजय बीरता भारी * चले चापकर बरबस हारी
श्रीहत भए हारि हिय राजा * बैठेनिज निजजाइ समाजा
नृपन्हबिलोकिजनकअकुलाने * बोलेबचन रोपजनु साने

दीप दीप के भूपति नाना * आए सुनि हम जो पन ठाना
देव दनुज धरि मनुज सरीरा * विपुल बीर आए रनधीरा

दो० कुँवरि मनोहर बिजयबड़ि, कीरति अति कमनीय ।
पावनिहार बिरंचि जनु, रचेउ न धनु दमनीय २५१ ॥

कहहु काहि यह लाभ न भावा * काहु न संकर चाप चढ़ावा
रहौ चढ़ाउब तोरब भाई * तिलभरि भूमि न सके छुड़ाई
अब जनि कोउ माखै भटमानी * बीर बिहीन मही मैं जानी
तजहु आस निज निज गृह जाहू * लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू
सुकृत जाइ जौं पन परिहरऊँ * कुँअरि कुँआरि रहौ का करऊँ
जौं जनतेउँ बिनु भट भुमि भाई * तौ पन करि होतेउँ न हँसाई
जनक बचन सुनि सब नर नारी * देषि जानकिहि भए दुषारी
माषे लषन कुटिल भै भौंहैं * रदपट फरकत नयन रिसौहैं

दो० कहि न सकत रघुबीर डर, लगे बचन जनु बान ॥
नाइ राम पद कमल सिर, बोले गिरा प्रमान ॥ २५२ ॥

रघुबंसिन्ह महँ जहँ कोउ होई * तेहि समाज अस कहै न कोई
कही जनक जसि अनुचित बानी * बिद्यमान रघुकुलमनि जानी
सुनहु भानुकुल पंकज भानू * कहौं सुभाव न कछु अभिमानू
जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं * कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं
काचे घट जिमि डारौं फोरी * सकौं मेरु मूलक जिमि तोरी
तो प्रताप महिमा भगवाना * को बापुरो पिनाक पुराना
नाथ जानि अस आयसु होऊ * कौतुक करउँ बिलोकि असोऊ
कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौं * जोजन सत प्रमान लै धावौं

दो० तोरौं छत्रक दंड जिमि, तव प्रताप बलनाथ ॥
जौं नकरौं प्रभुपद सपथ, कर नधरौं धनुनाथ २५३॥
लषनसकोप बचनजब बोले ॥ डगमगानिमहिदिग्गजडोले
सकल लोग सब भूप डेराने ॥ सियहियहरष जनक सकुचाने
गुररघुपतिसबमुनिमनमाहीं ॥ मुदितभए पुनिपुनिपुलकाहीं
सयनहिरघुपतिलषननिवारे ॥ प्रेम समेत निकट बैठारे
बिस्वामित्र समयसुभजानी ॥ बोले अतिसनेह मयबानी
उठहुराम भंजहु भवचापा ॥ मेटहुतात जनक परितापा
सुनिगुरबचनचरनसिरनावा ॥ हरषविषादन कछुउरआवा
ठाढभए उठिसहज सुभाएँ ॥ ठवनि जुबामृगराज लजाएँ
दो० उदितउदयगिरिमंचपर, रघुबरबालपतंग पा० पा० ७
बिकसेसंतसरोजसब, हरषेलोचनभृंग ॥ २५४ ॥
नृपन्हकेरिआसानिसिनासी ॥ बचननखतअलीन प्रकासी
मानीमहिप कुमुदसकुचाने ॥ कपटी भूप उलूक लुकाने
भएबिसोक कोक मुनिदेवा ॥ बरिसहिंसुमनजनावहिंसेवा
गुरपद बंदिसहित अनुरागा ॥ रामसुनिन्हसनआयसु मागा
सहजहिचलेसकलजगस्वामी ॥ मत्त मंजुवर कुंजर गामी
चलत रामसबपुर नरनारी ॥ पुलकपूरितन भए सुखारी
बंदिपितर सुरसुकृत संभारे ॥ जौं कछुपुन्य प्रभाउ हमारे
तौं सिवधनु मृनालकी नाईं ॥ तोरहिं राम गनेस गोसाईं
दो० रामहिप्रेमसमेतलषि, सषिन्हसमीपबोलाय ॥
सीतामातुसनेहबस, बचनकहेबिलषाइ ॥ २५५ ॥
सखिसब कौतुक देषनिहारे ॥ जेउ कहावत हितू हमारे

कोउन बुझाइकहै नृपपाहीं * एबालकअसिहठभलिनाहीं
रावन बान छुआनहिंचापा * हारे सकलभूप करिदापा
सोधनुराज कुँअर करदेहीं * बाल मरालकि मन्दरलेहीं
भूपसयानप सकल सिरानी * सषिविधिगतिकछुजातिनजानी
बोली चतुर सषी मृदुबानी * तेजवंतलघुगनिअ न रानी
कहँकुंभज कहँसिंधु अपारा * सोखेउसुजस सकलसंसारा
रबिमंडल देखत लघुलागा * उदयतासुतिभुवनतमभागा
दो० मंत्रपरम लघुजासु बस, बिधिहरिहर सुरसर्ब ।
महामत्तगजराज कहँ, बस करअंकुस षर्ब ॥ २५६ ॥
कामकुसुमधनुसायकलीन्हे * सकलभुअनअपनेबसकीन्हे
देबितजिअसंसउअसजानी * भंजब धनुष रामसुनुरानी
सखीबचनसुनि भै परतीती * मिटाबिषादबढीअतिप्रीती
तब रामहि बिलोकि बैदेही * सभयहृदयाबिनवतिजेहितेही
मनहीमन मनावअकुलानी * होहुप्रसन्न महेस भवानी
करहुसफलआपनि सेवकाई * करिहितहरहु चापगरुआई
गन नायक बरदायक देवा * आजुलगे कीन्हेउतुअसेवा
बार बार बिनती सुनिमोरी * करहुचापगरुता अतिथोरी
दो० देखिदेखिरघुबीरतन, सुरमनावधरिधीर ॥
भरेबिलोचनप्रेमजल, पुलकावलीसरीर ॥ ५२७ ॥
नीकेनिरखिनयनभरिसोभा * पितुपनसुमिरिबहुरिमनछोभा
अहहतात दारुन हठठानी * समुझतनहिकछुलाभनहानी
सचिवसभयासिख देइनकोई * बुधसमाजबडअनुचितहोई
कहँधनुकुलिसहुँचाहिकठोरा * कहँस्यामलमृदुगात किसोरा

बिधिकेहिभांतिधरोंउरधीरा * सिरससुमनकनबेधिअहीरा
सकलसभाकेमतिभैभोरी * अबमोहिंसंभुचापगतितोरी
निजजडतालोगन्हपरडारी * होहिहरुअरघुपतिहिनिहारी
अतिपारितापसीयमनमाहीं * लवनिमेषजुगसयसमजाहीं

दो० प्रभुहिचितइपुनिचितवमहि, राजतलोचनलोल ।
खेलतमनसिजमीनजुग, जनुबिधुमंडलडोल २५८ ॥

गिराअलिनिमुखपंकजरोकी * प्रगटनलाजनिसाअवलोकी
लोचनजलरहलोचनकोना * जैसेंपरमकृपिनकरसोना
सकुचीव्याकुलताबडिजानी * धरिधीरजप्रतीतिउरआनी
तनमनबचनमोरपनसाचा * रघुपतिपदसरोजमनराचा
तौभगवानसकलउरबासी * करिहिमोहिरघुबरकैदासी
जेहिकेजेहिपरसत्यसनेहू * सोतेहिमिलनकछुसन्देहू
प्रभुतनचितैप्रेमपनठाना * कृपानिधानराममबजाना
सियहिबिलोकितकेउधनुकैसे * चितवगरुडलघुब्यालहिजैसे

दो० लषनलषेउरघुबंसमनि, ताकेउहरकोदंड ॥
पुलकिगातबोलेबचन, चरणचापिब्रह्मंड ॥ २५९ ॥

दिसिकुञ्जरहुकमठअहिकोला * धरहुधरनिधरिधीरनडोला
रामचहहिंसंकरधनुतोरा * होहुसजगसुनिआयसुमोरा
चापसमीपरामजबआए * नरनारिन्हसुरसुकृतमनाए
सबकरसंसउअरुअज्ञानू * मंदमहीपन्हकरअभिमानू
भृगुपतिकेरिगरबगरुआई * सुरमुनिबरन्हकेरिकदराई
सियकरसोचजनकपछितावा * रानिन्हिकरदारुनदुषदावा
संभुचापबडबोहितपाई * चढेजाइसबसंगबनाई

रामबाहु बल सिंधु अपारू ❋ चहतपारुनहिंकोउकडहारू
दो० रामबिलोके लोगसब, चित्रलिखेसेदेषि।
चितईसीयकृपायतन, जानीबिकलबिसेषि २६०
देखी बिपुल बिकल बैदेही ❋ निमिषबिहातकलपसमतेही
तृषितबारिबिनुजोतनत्यागा ❋ मुए करैका सुधा तडागा
का बरषा सब कृषी सुखाने ❋ समय चुकेपुनिकापाछिताने
असजियजानिजानकीदेखी ❋ प्रभुपुलकेलखिप्रीतिबिसेखी
गुरहिप्रनाममनहिमनकीन्हा ❋ अतिलाघवउठाइधनुलीन्हा
दमकेउदामिनिजिमिजवलयऊ ❋ पुनिधनुनभ मंडलसमभयऊ
लेत चढावत खैंचत गाढे ❋ काहुन लखा देख सबठाढे
तेहिछनराम मध्य धनुतोरा ❋ भरेभुवन धुनिघोर कठोरा
छं० भरेभुवनघोरकठोररवरबि बाजितजिमारग चले॥
चिक्करहिंदिग्गजडोलमहिअहिकोलकूरमकलमले॥
सुरअसुरमुनिकरकानदीन्हेसकलबिकलबिचारहीं॥
कोदंडषंडेउ रामतुलसी जयतिबचन उचारहीं॥
सो० संकरचाप जहाज, सागर रघुबर बाहुबल॥
बूडसोसकलसमाज, चढाजो प्रथमहि मोहबस २६१
प्रभु दोउ चापखंडमहिडारे ❋ देषि लोग सबभये सुषारे
कौसिकरूपपयोनिधिपावन ❋ प्रेमबारि अवगाह सुहावन
राम रूप राकेस निहारी ❋ बढतबीचिपुलकावलिभारी
बाजे नभ गह गहे निसाना ❋ देवबधू नाचहिं करि गाना
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा ❋ प्रभुहिप्रसंसहिं देहिंअसीसा
वरसहिंसुमन रंग बहुमाला ❋ गावहिं किन्नर गीतरसाला

रहीभुअनभरिजयजयवानी ❋ धनुपभंगधुनि जातनजानी
मुदितकहहिजहंतहंनरनारी ❋ भंजउ राम संभुधनु भारी
दो० वंदीमागध सूतगन, बिरदबदहिं मतिधीर।
करहिं निछावरिलोगसब, हयगयधनमनिचीर २६२
झांझ मृदंग संख सहनाई ❋ भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई
बाजहिं बहु बाजने सुहाए ❋ जहंतहंजुवतिन्ह मंगलगाए
सषिन्हसहितहरषीअतिरानी ❋ सूखत धान परा जनु पानी
जनक लहेउसुखसोचबिहाई ❋ पैरत थके थाह जनु पाई
श्रीहत भए भूप धनु टूटे ❋ जैसे दिवस दीप छबि छूटे
सीयसुषहिबरनियकेहि भांती ❋ जनुचातकीपाइजल स्वाती
रामहि लषन बिलोकतकैसे ❋ ससिहिचकोरकिसोरकजैसे
सतानंद तब आयसु दीन्हा ❋ सीतागमन रामपहिंकीन्हा
दो० संग सषी सुन्दर चतुर, गावहिं मंगल चार।
गवनीबाल मराल गति, सुषमा अंग अपार २६३
सषिनमध्यसियसोहतिकैसी ❋ छबिगनमध्यमहाछबिजैसी
कर सरोज जयमाल सुहाई ❋ बिस्वबिजयसोभाजेहिछाई
तनसकोच मन परम उछाहू ❋ गूढ़प्रेम लखिपरै न काहू
जाइ समीप रामछबि देषी ❋ रहिजनुकुअरिचित्रअवरेषी
चतुर सषी लषिकहा बुझाई ❋ पहिरावहु जयमाल सुहाई
सुनतजुगलकर मालउठाई ❋ प्रेमबिबस पहिराय न जाई
सोहतजनुजुगजलजसनाला ❋ ससिहिसभीतदेतजयमाला
गावहिंछबिअवलोकिसहेली ❋ सियजयमाल रामउरमेली
सो० रघुबरउरजयमाल, देषि देवबरसहिंसुमन।
सकुचेसकलभुवाल, जनुबिलोकिरबिकुमुदगन २६४

पुरअरु ब्योमबाजने बाजे * षलभएमलिनसाधु सबराजे
सुरकिन्नर नर नागमुनीसा * जयजयजयकहिदेहिं असीसा
नाचहिंगावहिं बिबुधबधूटी * बारबार कुसुमांजलि छूटी
जहँतहँ बिप्रबेदधुनि करहीं * बंदी बिरदावलि उच्चरहीं
महिपातालब्योमजसब्यापा * रामबरी सिय भंजेउ चापा
करहिं आरती पुर नर नारी * देहिं निछावरि बित्तबिसारी
सोहति सीय राम कै जोरी * छबिसिंगार मनहुँ इकठोरी
सखीकहहिंप्रभुपदगहुसीता * करतिनचरनपरसअतिभीता
दो० गौतमतियगतिसुरति करि, नहिपरसतिपगपानि।
मनबिहँसेरघुबंशमनि, प्रीतिअलौकिकजानि २६५
तबसियदेखि भूपअभिलाषे * कूर कपूत मूढ मन माषे
उठिउठिपहिरिसनाहअभागे * जहँतहँ गाल बजावनलागे
लेहुछड़ाइ सीयकह कोऊ * धरिबाँधहु नृपबालक दोऊ
तोरे धनुष चाडनहिं सरई * जीवतहमहिकुअँरिकोबरई
जौंबिदेह कछु करइ सहाई * जीतहुसमरसहितदोउभाई
साधु भूप बोले सुनि बानी * राज समाजहिलाजलजानी
बल प्रताप बीरता बड़ाई * नाकपिनाकहि संग सिधाई
सोइसूरता किअबकहुँ पाई * असिबुधितौबिधिमुहँमसिलाई
दो० देखहुरामहिं नयन भरि, तजिइरषा मदमोह॥
लषन रोषपावकप्रबल, जानिसलभ जनिहोहु २६६॥
बैनतेयबलि जिमिचह कागू * जिमिससचहैनागअरिभागू
जिमिचहकुसलअकारनकोही * सब संपदा चहै सिवद्रोही
लोभलोलुपकलकीरतिचहई * अकलंकता कि कामीलहई

हरिपदविमुषसुगतिजिमिचाहा ❋ तमतुम्हार लालचनरनाहा
कोलाहलसुनिसीयसकानी ❋ सखी लवाइगईं जहं रानी
राम सुभाय चले गुर पाहीं ❋ सियसनेह बरनतमनमाहीं
रानिन्हसहितसोचवससीया ❋ अवधौंबिधिहिकाहकरनीया
भूपवचनसुनिइतउततकहीं ❋ लषनरामडरबोलिनसकहीं
दो० अरुन नयन भृकुटीकुटिल, चितवतनृपन्हसकोप।
मनहुँमत्तगजगननिरखि, सिंहकिसोरहिचोप २६७
खरभरदेखि बिकलनरनारीं ❋ सबमिलिदेहिंमहीपन्हगारीं
तेहिअवसरसुनिसिवधनुभंगा ❋ आयउभृगुकुलकमलपतंगा
देषिमहीप सकल सकुचाने ❋ बाजझपटजनु लवा लुकाने
गौरसरीर भूतिभलभ्राजा ❋ भालबिसाल त्रिपुंड बिराजा
सीसजटाससिबदन सुहावा ❋ रिसवसकछुकअरुनहोइआवा
भृकुटींकुटिलनयनरिसराते ❋ सहजहुचितवतमनहुरिसाते
बृषभकंधउर बाहु बिसाला ❋ चारुजनेउ माल मृगछाला
कटि मुनिवसन तूनदुइबांधे ❋ धनुसरकरकुठार कलकांधे
दो० सांतबेष करनी कठिन, बरनिनजाइ सरूप।
धरिमुनितनजनुबीररस, आएउजहं सबभूप २६८
देखत भृगुपति बेष कराला ❋ उठेसकलभयबिकलभुआला
पितुसमेतकहिरनिजनामा ❋ लगेकरन सब दंड प्रनामा
जेहिसुभाय चितवहिंहितजानी ❋ सोजानै जनु आइ खुटानी
जनकबहोरिआइसिरनावा ❋ सीयबोलाइ प्रनाम करावा
आसिषदीन्ह सखींहरषानी ❋ निजसमाज लैगईं सयानीं
बिस्वामित्र मिले पुनि आई ❋ पदसरोज मेले दोउ भाई

रामलखनदशरथ के ढोटा ❋ दीन्हअसीसदेखिभलजोटा
रामहिंचितइ रहेथकिलोचन ❋ रूपअपार मार मदमोचन

दो० बहुरि बिलोकि बिदेहसन, कहहु काह अतिभीर ॥
पूछतिजानि अजानजिमि, व्यापेउकोप शरीर २६९

समाचारकहि जनकसुनाये ❋ जेहिकारन महीपसब आये
सुनतबचनफिरअनतनिहारे ❋ देखे चापखंड महि डारे
अतिरिसबोलबचन कठोरा ❋ कहुजडजनकधनुषकेइंतोरा
बेगि देखाउ मूढनत आजू ❋ उलटौंमहिजहलगितवराजू
अतिडर उतरदेतनृप नाहा ❋ कुटिल भूप हरषे मनमाहीं
सुरमुनि नागनगर नरनारी ❋ सोचहिं सकलत्रासउरभारी
मनपछिताति सीयमहतारी ❋ बिधिअबसवरीबातबिगारी
भृगुपतिकरसुभाउसुनिसीता ❋ अरधनिमेषकलप समबीता

दो० सभय बिलोके लोग सब, जानि जानकी भीरु ॥
हृदयनहरषबिषाद कछु, बोले श्री रघुबीरु २७० ॥

नाथसंभु धनु भंजनि हारा ❋ होइहिकोउएकदासतुम्हारा
आएसुकाहकहिअकिनमोही ❋ सुनि रिसाइबोलेमुनिकोही
सेवकसो जो करै सेवकाई ❋ अरिकरनीकरिकरिअलराई
सुनहुरामजेहिंसिव धनुतोरा ❋ सहसबाहु समसोरिपु मोरा
सोबिलगाउबिहाइ समाजा ❋ नत मारेजैहहिं सब राजा
सुनिमुनिबचनलषनमुसुकाने ❋ बोले परसुधरहि अपमाने
बहुधनुही तोरी लरिकाईं ❋ कबहुनतुम्हरिसकीन्हगोसाईं
येहिधनुपर ममता केहिहेतू ❋ सुनिरिसाइकहभृगुकुलकेतू

दो० रे नृपबालक कालबस, बोलत तोहि न संभार ॥
धनुही सम तिपुरारिधनु, विदित सकल संसार २७१ ॥

लषन कहा हँसि हमरे जाना ❋ सुनहु देव सब धनुष समाना
काछतिलाभ जून धनु तोरे ❋ देखा राम नए के भोरे
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू ❋ मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू
बोले चितै परसु की ओरा ❋ रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा
बालक बोलि बधौं नहिं तोही ❋ केवल मुनि जड जानहि मोही
बालब्रह्मचारी अति कोही ❋ बिस्वबिदित छत्रियकुलद्रोही
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही ❋ बिपुल बार महि देवन्ह दीन्ही
सहसबाहु भुज छेदन हारा ❋ परसु बिलोकु महीप कुमारा

दो० मातु पितहि जनि सोचबस, करसि महीप किसोर ।
गर्भन के अर्भक दलन, परसु मोर अति घोर २७२ ॥

बिहँसि लषन बोले मृदु बानी ❋ अहो मुनीस महाभट मानी
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू ❋ चहत उडावन फूंकि पहारू
इहाँ कुम्हडबतिआ कोउ नाहीं ❋ जे तरजनी देखि मरि जाहीं
देखि कुठार सरासन बाना ❋ मैं कछु कहा सहित अभिमाना
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी ❋ जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई ❋ हमरे कुल इन्ह पर न सुराई
बधे पाप अपकीरति हारे ❋ मारतहू पाँ परिअ तुम्हारे
कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा ❋ ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा

दो० जो बिलोकि अनुचित कहेउँ, छमहु महामुनि धीर ।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि, बोले गिरा गँभीर २७३ ॥

कौसिक सुनहु मंद यह बालक ❋ कुटिल कालबस निजकुलघालक

भानुबंस राकेस कलंकू ❀ निपटनिरंकुसअबुधअसंकू
कालकवलहोइहि छनमाहीं ❀ कहौंपुकारिषोरिमोहिनाहीं
तुम्हहटकहु जोचहहु उबारा ❀ कहिप्रताप बलरोष हमारा
लषनकहेउमुनिसुजसतुम्हारा ❀ तुम्हहिंअछतकोबरनै पारा
अपनेमुखतुम्हआपनिकरनी ❀ बारअनेक भाँतिबहु बरनी
नहिंसंतोषतौपुनिकछुकहहू ❀ जनिरिसरोकिदुसह दुषसहहू
बीरब्रती तुम्हधीर अछोभा ❀ गारी देत न पावहु सोभा
दो० सूरसमरकरनीकरहिं, कहिनजनावहिं आप ॥
विद्यमानरनपाइरिपु, कायरकथहिं प्रलाप २७४ ॥
तुम्हतौ कालहाँकजनुलावा ❀ बारबारमोहिलागि बोलावा
सुनतलषन के बचनकठोरा ❀ परसु सुधारिधर्यो करघोरा
अब जनिदेइदोषमोहिलोगू ❀ कटुबादी बालक बधजोगू
बाल बिलोकिबहुत मैं बाँचा ❀ अब यहमरनिहारभा साँचा
कौसिककहाछमिअअपराधू ❀ बालदोषगुन गनहिन साधू
करकुठार मै अकरन कोही ❀ आगे अपराधी गुरु द्रोही
उतर देत छाडौं बिनु मारें ❀ केवलकौसिक सील तुम्हारें
नतएहिकाटि कुठारकठोरे ❀ गुरहिउरिन होतेउँ स्रमथोरे
दो० गाधिसूनुकहहृदयहँसि, मुनिहिहरिअरेइसूझ ॥
अयमयषाँडनऊषमय, अजहुँनबूझअबूझ २७५ ॥
कहेउलषनमुनिसीलतुम्हारा ❀ कोनाहिजान बिदित संसारा
माताहिपिताहिउरिनभयनीके ❀ गुरुरिनरहा सोच बडजीके
सो जनुहमरहि माथें काढा ❀ दिनचलिगएब्याजबडबाढा
अबआनियब्योहरिआबोली ❀ तुरत देउँ मैं थैली खोली

सुनिकटुबचनकुठारसुधारा ❋ हायहायसब सभा पुकारा
भृगुबर परसु देषावहु मोही ❋ बिप्र बिचारिबचौंनृप द्रोही
मिलेन कबहुसुभटरन गाढ़े ❋ द्विज देवता घरहिं के बाढ़े
अनुचितकहिसबलोगपुकारे ❋ रघुपतिसयनहिंलषन नेवारे
दो० लषनउतरआहुतिसरिस, भृगुबरकोप कृसानु ।
बढ़तदेखिजलसमबचन, बोलेरघुकुलभानु २७६ ॥
नाथ करहु बालकपर छोहू ❋ सूधदूध मुष करियनकोहू
जौपै प्रभुप्रभाउ कछुजाना ❋ तौकिबराबरि करइ अयाना
जौंलरिकाकिछुअचगरिकरहीं ❋ गुरुपितुमातुमोदमन भरहीं
करिअकृपासिसुसेवकजानी ❋ तुम्हसमसीलधीरमुनिज्ञानी
रामबचनसुनिकछुकजुड़ाने ❋ कहिकछुलषनबहुरिमुसुकाने
हँसतदेखिनपासिषरिसब्यापी ❋ राम तोर भ्राता बड़पापी
गौर सरीर स्याम मनमाहीं ❋ कालकूटसुखपयमुख नाहीं
सहज टेढ़ अनुहरै न तोही ❋ नीचमीचसम देखन मोही
दो० लखनकहेउहँसिसुनहुमुनि, क्रोधपापकरमूल ॥
जेहिबसजनअनुचितकरहिं, होहिंबिस्वप्रतिकूल २७७
मैंतुम्हार अनुचर मुनिराया ❋ परिहरिकोपकरिअअबदाया
टूटचापनहिंजुरिहि रिसाने ❋ बैठिअहोइहहिं पाय पिराने
जौंअतिप्रियतौकरिअउपाई ❋ जोरिअकोउबड़गुनीबुलाई
बोलतलषनहिजनक डेराहीं ❋ मष्टकरहुअनुचितभलनाहीं
थरथर कॉंपहिं पुरनर नारी ❋ छोटकुमारखोटअति भारी
भृगुपतिसुनिसुनिनिरभयबानी ❋ रिसतन जरैहोइ बलहानी
बोले रामहि देइ निहोरा ❋ बचौं बिचारि बंधुलघु तोरा

मन मलीन तन सुंदर कैसे ❋ बिषरसभरा कनकघट जैसे
दो० मुनिलछिमनबिहँसेबहुरि, नयनतरेरेराम ।
गुरुसमीपगवनेसकुचि, परिहरिबानीबाम ॥ २७८ ॥
अतिबिनीतमृदुसीतलबानी ❋ बोले रामजोरि जुगपानी
सुनहुनाथतुम्हसहजसुजाना ❋ बालकबचनकरियनहिंकाना
बररै बालक एक सुभाऊ ❋ इन्हहिनबिदुषबिदूषहिंकाऊ
तेहिनाहीं कछुकाजबिगारा ❋ अपराधी मैं नाथ तुम्हारा
कृपाकोप बधबंध गोसाईं ❋ मोपर करिअ दासकी नाईं
कहिअबेगिजेहिबिधिरिसजाई ❋ मुनिनायकसोइकरउँउपाई
कहमुनि रामजाइ रिसकैसें ❋ अजहुँअनुजतवचितवअनैसें
एहिकें कंठ कुठारन दीन्हा ❋ तौ मैं काहकोप करिकीन्हा
दो० गर्भस्रवहिं अवनिपरवनि, सुनिकुठार गतिघोर ।
परसु अछतदेखौंजियत बैरीभूप किसोर ॥ २७९ ॥
बहैनहाथ दहै रिसछाता ❋ भाकुठार कुंठित नृपघाती
भयेउबामाबिधिफिरेउसुभाऊ ❋ मोरेहृदय कृपा कसि काऊ
आज दयादुष दुसहसहावा ❋ सुनिसौमित्रिबिहँसिसिरनावा
बाउकृपा मूरति अनुकूला ❋ बोलतबचन झरत जनुफूला
जौपैकृपा जरहिं मुनिगाता ❋ क्रोधभये तनराख बिधाता
देखुजनक हठि बालक एहू ❋ कीन्ह चहत जडजमपुरगेहू
बेगिकरहुकिनआंषिन्हओटा ❋ देखत छोट खोट नृपढोटा
बिहँसेलषन कहामुनिपाहीं ❋ मूदेंआंखिकतहुं कोउ नाहीं
दो० परसुराम तब रामप्रति, बोलेउरअतिक्रोध ।
संभुसरासन तोरिसठ, करसिहमार प्रबोध २८० ॥

बंधु कहै कटु संमत तोरें * तूंछल विनयकरसिकरजोरें
करु परितोष मोर संग्रामा * नाहितछाडु कहाउबरामा
छलतजिकरहिसमरशिवद्रोही * बंधुसहित नत मारों तोही
भृगुपतिबकहिं कुठारउठाए * मनमुसुकाहिंराम सिरनाए
गुनह लषनकर हमपररोषू * कतहुं सुधाइहुते बडदोषू
टेढ जानि संका सबकाहू * वक्रचंद्रमहि ग्रसै न राहू
रामकहेउरिसतजिअमुनीसा * करकुठार आगेएहि सीसा
जेहिरिसजाइकरिअसोइस्वामी * मोहिजानिअआपन अनुगामी

दो० प्रभुहिसेवकहि समरकस, तजहु विप्रवररोम ।
बेषबिलोकेंकहेसिकछु, बालकहूंनहिंदोम ॥ २८१ ॥

देखिकुठार बानधनु धारी * भइलरिकहिरिसबीरबिचारी
नामजानपै तुम्हहिनचीन्हा * बंससुभाय उतरतेहिदीन्हा
जौतुम्हऔतेहु मुनिकी नाईं * पदरजसिरसिसुधरतगोसाईं
छमहुचूक अनजानत केरी * चहियविप्र उर कृपा घनेरी
हमहितुम्हहिसरबरिकसिनाथा * कहहुनकहां चरनकहंमाथा
राम मात्र लघु नाम हमारा * परसुसहितवडनामतुम्हारा
देव एक गुन धनुष हमारे * नवगुन परमपुनीत तुम्हारे
सबप्रकार हम तुम्हसन हारे * छमहु विप्र अपराध हमारे

दो० बारबारमुनि बिप्रबर, कहा राममन राम ।
बोले भृगुपति सरुप हसि, तहूं बंधुसमबाम २८२ ॥

निपटहिद्विजकरिजानहिमोही * मैं जस विप्र सुनावौं तोही
चापश्रुवासर आहुति जानू * कोपमोर अति घोरकृसानू
समिधिसेन चतुरंग सुहाई * महामहीप भएपसु आई

मैंएहिपरसुकाटिबलि दीन्हे ❋ समरजग्यजगकोटिन्ह कीन्हे
मोरप्रभाउ बिदितनहिंतोरे ❋ बोलसिनिदरिबिप्रकें भोरे
भंजेउ चाप दाप बडबाढा ❋ अहमितिमनहुजीतिजगठाढा
रामकहामुनि कहहु बिचारी ❋ रिसअतिबाडिलघुचूकहमारी
छुअतहिटूटपिनाक पुराना ❋ मैं केहिहेतु करौं अभिमाना
दो० जौंहमनिदरहिंबिप्रबदि, सत्य सुनहुभृगुनाथ ।
तौअसकोजगसुभटजेहि, भयबसनावहिंमाथ २८३
देवदनुजभूपति भट नाना ❋ समबलअधिकहोउबलवाना
जौ रन हमहि पचारै कोऊ ❋ लरहिंसुखेनकाल किनहोऊ
छत्रियतनधरिसमर सकाना ❋ कुलकलंक तेहिपाँवरआना
कहौंसुभाउनकुलहि प्रसंसी ❋ कालहु डरहिं न रनरघुबंसी
बिप्र बंसकै असि प्रभुताई ❋ अभयहोइजो तुम्हहिडेराई
सुनिमृदुगूढबचन रघुपतिके ❋ उघरेपटलपरसुधर मतिके
राम रमापति करधनु लेहू ❋ खैंचहु मिटै मोर संदेहू
देतचाप आपुहिचढिगयऊ ❋ परसराममनाबिसमय भयऊ
दो० जानारामप्रभाउतब, पुलकप्रफुल्लितगात ।
जोरिपानिबोलेबचन, हृदयन प्रेम अमात ॥२८४॥
जय रघुबंस बनजबनभानू ❋ गहनदनुजकुलदहन कृसानू
जयसुर बिप्र धेनु हितकारी ❋ जयमदमोहकोहभ्रम हारी
बिनयसीलकरुनागुनसागर ❋ जयतिबचनरचनाअतिनागर
सेवकसुषदसुभग सब अंगा ❋ जयसरीरछबिकोटिअनंगा
करौं काह मुखएक प्रसंसा ❋ जयमहेस मनमानस हंसा
अनुचितबहुतकहेउँअज्ञाता ❋ छमहुछमामंदिर दोउभ्राता

कहिजयजयजयरघुकुलकेतू * भृगुपतिगये बनहिंतप हेतू
अपभय कुटिलमहीपडेराने * जहं तहं कायर गवहिपराने
दो० देवन्हदीन्हींदुंदुभी, प्रभुपरबरपहिंफूल ।
हरषेपुरनरनारि सब, मिटीमोहमयसूल ॥ २८५ ॥
अति गह गहे बाजने बाजे * सबहिमनोहरमंगल साजे
जूथजूथमिलिसुमुपि सुनयनीं * करहिंगानकलकोकिलबयनी
सुखबिदेह करबरनि नजाई * जन्म दरिद्रमनहु निधिपाई
बिगतत्रासभइ सीय सुपारी * जनुबिधु उदयचकोरकुमारी
जनककीन्हकौसिकहिप्रनामा * प्रभुप्रसाद धनुभंजउरामा
मोहिकृतकृत्यकीन्हदुहुंभाई * अबजो उचित सोकहिअगोसांई
कहमुनि सुनुनरनाथप्रबीना * रहा बिबाह चाप आधीना
टूटतही धनु भयउ बिबाहू * सुरनरनाग बिदितसबकाहू
दो० तदपि जाइतुम्हकरहुअब, जथा बंसब्यवहार ।
बूझि बिप्रकुल बृद्धगुरु, बेदबिदित आचार ॥ २८६ ॥
दूत अवधपुर पठवहु जाहीं * आनहिंनृपदसरथहिबोलाई
मुदितराउकहिभलेहिकृपाला * पठए दूतबोलि तेहि काला
बहुरिमहाजनसकलबोलाए * आइसबन्हिसादरसिर नाए
हाट बाट मंदिर सुर बासा * नगर सँवारहु चारिहु पासा
हरषिचलेनिजनिजगृहआए * पुनिपरिचारक बोलिपठाए
रचहु बिचित्र बितानबनाई * सिर धरिबचनचले सचुपाई
पठए बोलिगुनीतिन्ह नाना * जेबितानबिधिकुसलसुजाना
बिधिहिबंदितिन्हकीन्हअरंभा * बिरचेकनक कदलिके षंभा
दो० हरित मानिन्हके पत्रफल, पदुमराग के फूल ।
रचना देखिबिचित्र अति, मनाबिरंचिकरभूल २८७

बेनुहरित मनिमयसबकीन्हे * सरलसपरनपरहिंनाहिचीन्हे
कनककलितअहिबेलिबनाई * लखिनहि परइ सपरन सुहाई
तेहिके रचिपचिबंध बनाए * बिचबिच मुकतादामसुहाए
मानिकमरकत कुलिसपिरोजा * चीरिकोरि पचिरचे सरोजा
किए भृंगबहुरंग बिहंगा * गुंजहिकूजहिं पवन प्रसंगा
सुरप्रतिमाषंभन्हिगढिकाढीं * मंगल द्रब्य लिए सब ठाढीं
चौकें भाँति अनेक पुराई * सिंधुरमनिमय सहज सुहाई
दो० सौरभ पल्लव सुभग सुठि, किए नीलमनिकोरि ॥
हेमबौरिमरकत घवरि, लसति पाटमयडोरि २८८ ॥
रचे रुचिर बर बंदनिवारे * मनहु मनोभव फंद सँवारे
मंगल कलस अनेक बनाए * ध्वजपताक पटचमरसुहाए
दीप मनोहर मनिमयनाना * जाइनबरनिबिचित्रबिताना
जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही * सोबरनै असिमतिकबिकेही
दूलह राम रूप गुन सागर * सोबितानतिहुँलोकउजागर
जनकभवन कइसोभाजैसी * गृहगृह प्रतिपुर देषिअतैसी
जेहितेरहुतितेहिसमयनिहारी * तेहिलघुलाग भुवनदसचारी
जो संपदा नीच गृह सोहा * सोबिलोकिसुरनायकमोहा
दो० बसैनगर जेहिलछिकरि, कपटनारिबरबेष पा० पा० ८
तेहि पुरकै सोभाकहत, सकुचहिं सारदसेष २८९ ॥
पहुँचे दूत राम पुर पावन * हरषे नगर बिलोकिसुहावन
भूपद्वार तिन्हषबरि जनाई * दसरथनृपसुनिलिए बोलाई
करिप्रनामतिन्हपातीदीन्ही * मुदितमहीपआपउठिलीन्ही
बारि बिलोचन बांचतपाती * पुलकगात आई भरि छाती

रामलषन उरकर वर चीठी ❋ रहिगए कहतन पाटीमीठी
पुनिधरि धीर पत्रिका बांची ❋ हरषी सभा बातसुनि सांची
षेलत रहे तहां सुधि पाई ❋ आए भरत सहितहित भाई
पूछतअति सनेह सकुचाई ❋ तात कहां ते पाती आई

दो० कुसल प्रान प्रियबंधुदोउ, अहहिंकहहु केहिदेस ॥
सुनिसनेहसानेवचन, बांचीबहुरि नरेस ॥ २९० ॥

सुनिपाती पुलकेदोउ भ्राता ❋ अधिकसनेहसमातनगाता
प्रीति पुनीत भरत के देषी ❋ सकलसभासुषलहेउविसेषी
तब नृप दूत निकट बैठारे ❋ मधुर मनोहर बचन उचारे
भैआकहहु कुसल दोउबारे ❋ तुम्हनीकें निजनयननिहारे
स्यामलगौर धरें धनुभाथा ❋ वयकिसोरकौसिकमुनिसाथा
पहिचानहुतुम्हकहहुसुभाऊ ❋ प्रेमबिवसपुनिपुनि कहराऊ
जादिनतें मुनि गए लिवाई ❋ तबतें आजु सांचि सुधिपाई
कहहुबिदेहकवनिबिधिजाने ❋ सुनिप्रियबचनदूत मुसुकाने

दो० सुनहुमहीपतिमुकुटमनि, तुम्हसमधन्यनकोउ ॥
रामलषन जाकेतनय, बिस्वबिभूषनदोउ ॥ २९१ ॥

पूछन जोग न तनय तुम्हारे ❋ पुरुषसिंह तिहुंपुर उंजिआरे
जिन्हके जस प्रतापके आगें ❋ ससिमलीनरबिसीतल लागें
तिन्हकहँकहियनाथकिमिचीन्हे ❋ देषिअरबिकि दीपकरलीन्हे
सीय स्वयंबर भूप अनेका ❋ सीमिटे सुभट एकते एका
संभु सरासन काहुन टारा ❋ हारे सकल बीर बरिआरा
तीनिलोकमहँजे भट मानी ❋ सबकैसकति संभुधनुभानी
सकइ उठाइ सरासुर मेरू ❋ सोउहियहारिगएउकरिफेरू

जेहिकौतुक सिवसैलउठावा ❀ सोउतेहिसभापराभउपावा

दो॰ तहाँरामरघुबंसमनि, सुनिअ महामहिपाल ॥
भंजेउचापप्रयासबिनु, जिमिगजपंकजनाल २९२ ॥

सुनिसरोष भृगुनायकआए ❀ बहुतभांतितिन्हआँषिदेषाए
देखिरामबलनिजधनुदीन्हा ❀ करिबहुबिनयगवनबनकीन्हा
राजन राम अतुलबल जैसे ❀ तेजनिधान लषन पुनितैसे
कंपहिभूप बिलोकत जाकें ❀ जिमिगजहरिकिसोरकेंताकें
देवदेषि तव बालक दोऊ ❀ अबनआँषितरआवतकोऊ
दूतबचन रचनाप्रिय लागी ❀ प्रेम प्रताप बीररस पागी
सभा समेत राउ अनुरागे ❀ दूतन देन निछावरि लागे
कहि अनीतितेमूदहिं काना ❀ धरमबिचारिसबहिंसुखमाना

दो॰ तबउठिभूपबासिष्ठकहँ, दीन्हिपत्रिकाजाइ ॥
कथासुनाईगुरुहिसब, सादरदूतबोलाइ ॥ २९३

सुनिबोले गुरुअति सुखपाई ❀ पुन्यपुरुषकहँ महिसुखछाई
जिमिसरितासागरमहँजाहीं ❀ जद्यपि ताहि कामनानाहीं
तिमिसुखसंपतिबिनाहिंबोलाए ❀ धरमसीलपहिं जाहिंसुभाए
तुम्ह गुरु बिप्रधेनु सुरसेवी ❀ तसिपुनीत कौसल्या देवी
सुकृतीतुम्हसमानजगमाहीं ❀ भयउनहै कोउहोनेउनाहीं
तुम्हतेअधिकपुन्यबडकाके ❀ राजन राम सरिससुतजाके
बीर बिनीत धरम ब्रतधारी ❀ गुनसागर बरबालक चारीं
तुम्हकहँ सर्बकालकल्याना ❀ सजहुबरात बजाइ निसाना

दो॰ चलहु बेगिसुनि गुरुबचन, भलेहिनाथ सिरनाइ ।
भूपतिगवने भवन तब, दूतन्ह बास देवाइ २९४ ॥

राजा सब रनिवास बोलाई * जनक पत्रिका बाचिसुनाई
सुनि संदेस सकल हरषानी * अपरकथा सब भूपबषानी
प्रेम प्रफुल्लित राजहिंरानी * मनहुँसिखिनिसुनि बारिदबानी
मुदित असीस देहिंगुरुनारी * अतिआनंद मगनमहतारी
लेहिंपरस्पर अतिप्रियपाती * हृदयलगाइ जुड़ावहिंछाती
राम लषनकै कीरति करनी * बारहिं बार भूपबर बरनी
मुनि प्रसादकहि द्वारसिधाए * रानिन्ह तब महिदेव बुलाए
दिए दान आनंद समेता * चले बिप्रबर आसिष देता

सो० जाचकलिए हँकारि, दीन्हिनिछावरि कोटिबिधि ॥
चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्तिदसरथ्थके २९५ ॥

कहत चले पहिरे पटनाना * हरषि हने गहगहे निसाना
समाचार सब लोगन्हपाए * लागे घर घर होन बधाए
भुअनचारि दसभरा उछाहू * जनकसुतारघुबीर बिआहू
सुनिसुभकथालोग अनुरागे * मगगृहगलीं सवारन लागे
जद्यपिअवध सदैवसुहावनि * रामपुरी मंगलमय पावनि
तदपि प्रीतिकै रीति सुहाई * मंगल रचना रची बनाई
ध्वज पताक पटचामरचारू * छावा परम बिचित्र बजारू
कनककलसतोरनमनिजाला * हरददूब दधिअच्छतमाला

दो० मंगलमय निज निज भवन, लोगन्ह रचेबनाइ ॥
बीथींसींची चतुरसम, चौकेंचारु पुराइ ॥ २९६ ॥

जहँतहँजूथजूथमिलिभामिनि * सजिनवसप्तसकलदुतिदामिनि
बिधुबदनीमृगसावकलोचनि * निजसरूपरतिमान बिमोचनि
गावहिं मंगल मंजुल बानी * सुनिकलरवकलकंठिलजानी

भूपभवन किमि जाइबषाना * बिस्वविमोहनरचेउबिताना
मंगल द्रव्य मनोहर नाना * राजतबाजतबिपुलनिसाना
कतहुँ बिरद वंदी उच्चरहीं * कतहुँवेदधुनि भूसुर करहीं
गावहिं सुंदरि मंगल गीता * लैलैनाम राम अरु सीता
बहुत उछाहभवनअतिथोरा * मानहुउमगिचलाचहुँओरा
दो० सोभादसरथ भवन कइ, को कविबरनै पार ॥
जहाँसकलसुरसीसमनि, रामलीन्हअवतार २९७ ॥
भूपभरत पुनि लिए बोलाई * हयगयस्यंदन साजहु जाई
चलहु वेगि रघुबीर बराता * सुनतपुलक पूरे दोउ भ्राता
भरत सकल साहनीबोलाए * आएसुदीन्हमुदितउठिधाए
रचिरुचिजीनतुरगातिन्हसाजे * बरनबरन बर बाजि बिराजे
सुभगसकलसुठिचंचलकरनी * अयइवजरतधरतपग धरनी
नाना जाति न जाहिं बषाने * निदरिपवनजनुचहतउडाने
तिन्हसबछयलभएअसवारा * भरतसरिससब राजकुमारा
सब सुंदर सब भूषन धारी * कर सर चापतून कटिभारी
दो० छरेछबीले छैल सब, सूर सुजान नवीन ॥
जुगपदचरअसवारप्रति, जेअसिकलाप्रवीन २९८ ॥
बाँधे बिरद वीर रन गाढे * निकसिभये पुरवाहेर ठाढे
फेरहिंचतुर तुरगगति नाना * हरषहिंसुनिधुनिपनवनिसाना
रथ सारथिन्ह बिचित्रबनाए * ध्वजपताकमनिभूषन लाए
चँवर चारुकिंकिनिधुनिकरहीं * भानु जान सोभाअपहरहीं
सावकरन अगनित हयहोते * तेतिन्हरथन्हसारथिन्हजोते
सुंदर सकल अलंकृत सोहे * जिन्हहिं बिलोकतमुनिमनमोहे

जे जलचलहिंथलहि कीनाई * टापन बूड बेग अधिकाई
अस्त्र सस्त्र सबसाज बनाई * रथीसारथिन्ह लिए बोलाई
दो० चढि चढि रथबाहेर नगर, लागी जुरन बरात ॥
होतसगुन सुंदर सबहि, जोजेहि कारज जात २९९ ॥
कलितकरिवरन्हिपरीअँवारी * कहिन जाइजेहिभाँतिसँवारी
चले मत्त गज घंट विराजी * मनहुसुभगसावनघन राजी
वाहनअपर अनेक बिधाना * सिबिकासुभगसुपासनजाना
तिन्ह चढिचले बिप्रवरबृंदा * जनुतनधरें सकलश्रुति छंदा
मागध सूत वंदि गुनगायक * चलेजानचढिजोजेहिलायक
बेसर ऊटबृषभ बहु जाती * चलेवस्तुभरिअगनित भाँती
कोटिन्हकांवरिचले कँहारा * बिबिधि बस्तुको बरनैपारा
चले सकल सेवक समुदाई * निजनिजसाजसमाजबनाई
दो० सबके उर निर्भर हरष, पूरितपुलकसरीर ।
कबहिंदेषिबेनयनभरि, रामलषन दोउबीर ३०० ॥
गरजहिं गज घंटा धुनिघोरा * रथरवबाजिहिंसहिंचहुँओरा
निदरिघनहिघुम्मरहिंनिसाना * निजपराइकछुसुनिअनकाना
महा भीर भूपति कें द्वारे * रजहोइ जाइ पषान पवारे
चढी अटारिन्ह देषहिंनारी * लिएं आरती मंगल थारी
गावहिं गीत मनोहर नाना * अति आनंद न जाइ बषाना
तब सुमंत्र दुइस्यंदन साजी * जोते रविहय निंदक बाजी
दोउरथरुचिर भूपपहिं आने * नहिंसारदपहिं जाहिंवषाने
राज समाज एक रथसाजा * दूसर तेज पुंज अति भ्राजा
दो० तेहिरथ रुचिर बसिष्टकहं, हरषि चढाइ नरेस ।
आपचढेउ स्यंदन सुमिरि, हरगुरु गौरिगनेस ३०१ ॥

सहितवसिष्ठ सोहनृप कैसें ❀ सुरगुर संग पुरंदर जैसें
करिकुलरीतिबेद विधिराऊ ❀ देखिसबहिंसबभांतिबनाऊ
सुमिरि रामगुर आयसुपाई ❀ चले महीपति संख बजाई
हरषे बिबुध बिलोकिबराता ❀ बरषहिं सुमन सुमंग दाता
भयेउ कोलाहलहय गयगाजे ❀ ब्योम बरात बाजने बाजे
सुरनर नारि सुमंगल गाई ❀ सरसराग बाजहिं सहनाई
घंटघंटिधुनि बरनिनजाहीं ❀ सरवकरहिं पाइक फहराहीं
करहिं बिदूषककौतुकनाना ❀ हासकुसलकलगान सुजाना
दो० तुरगनचावहिं कुअरवर, अकनिमृदंगनिसान
नागरनटचितवहिं चकित, डगहिंनतालबंधान ३०२
बनैनबरनत बनी बराता ❀ होहिं सगुन सुंदर सुभदाता
चाराचाषु बामदिसि लेई ❀ मनहुसकलमंगल कहि देई
दाहिन कागसुषेत सुहावा ❀ नकुल दरस सबकाहू पावा
सानकूलबह त्रिबिधिबयारी ❀ सघटसवाल आवबर नारी
लोआफिरिफिरिदरसदेषावा ❀ सुरभी सनमुष सिसुहिपियावा
मृगमालाफिरिदाहिनिआई ❀ मंगलगन जनुदीन्हि देषाई
छेमकरी कहछेम बिसेषी ❀ स्यामावाम सुतरु परदेखी
सनमुखआएउदधि अरुमीना ❀ करपुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना
दो० मंगलमय कल्यानमय, अभिमति फलदातार॥
जनुसब साँचे होनहित, भएसगुन एकबार ३२३॥
मंगलसगुन सुगम सबताके ❀ सगुन ब्रह्मसुंदर सुत जाके
रामसरिसबरदुलहिनि सीता ❀ समधी दसरथजनकपुनीता
सुनिअसब्याहसगुन सबनाचे ❀ अबकीन्हे बिरंचि हमसाँचे

एहिविधिकीन्हबरात पयाना ॥ हयगय गाजहिंहने निसाना
आवत जानि भानुकुलकेतू ॥ सरितन्हि जनक बंधाएसेतू
बीचबीच बरबास बनाए ॥ सुरपुर सरिस संपदा छाए
असनसयनबर बसनसुहाए ॥ पावहिंसबनिजनिजमनभाए
नितनूतन सुखलखि अनुकूले ॥ सकल बरातिन्ह मंदिर भूले

दो० आवत जानि बरातबर, सुनि गहगहे निसान ॥
सजिगजरथपदचरतुरग, लेनचले अगवान २०४ ॥

कनककलसकलकोपरथारा ॥ भाजनललित अनेकप्रकारा
भरेसुधा समसब पकवाने ॥ भांतिभांति नहिंजाहिंबखाने
फलअनेक बरवस्तु सुहाई ॥ हरषिभेंट हित भूप पठाई
भूषन बसनमहामनि नाना ॥ खगमृगहयगयबहुबिधिजाना
मंगलसगुन सुगंध सुहाये ॥ बहुतभांति महिपाल पठाए
दधिचिउरा उपहार अपारा ॥ भरिभरिकांवरि चलेकहारा
अगवानन्ह जबदेखिबराता ॥ उरआनंद पुलक भरेगाता
देख बनावसहित अगवाना ॥ मुदित बरातीहने निसाना

दो० हरषि परसपर मिलनहित, कछुकचले बगमेल ॥
जनुआनंद समुद्र दोइ, मिलत बिहाइ सुबेल २०५

बरषिसुमनसुरसुंदरि गावहिं ॥ मुदितदेव दुंदुभी बजावहिं
वस्तुसकल राखी नृप आगे ॥ बिनय कीन्हतिन्ह अतिअनुरागे
प्रेमसमेत रायसब लीन्हा ॥ भैबकसीस जाचकन्हिदीन्हा
करिपूजा मान्यता बड़ाई ॥ जनवासे कहं चले लवाई
बसन बिचित्रपाँवडे परहीं ॥ देखिधनदधनमद परिहरहीं
अतिसुंदरदीन्हेउ जनवासा ॥ जहंसबकहंसबभाँतिसुपासा

जानीसिय बरात पुरआई ❀ कछुनिजमहिमाप्रगटिजनाई
हृदयसुमिरिसबासिद्धिबोलाई ❀ भूप पहुनई करन पठाई

दो० सिधिसब सिय आयसु अकनि, गई जहाँ जनवास।
लिएसंपदा सकल सुख, सुरपुर भोग बिलास ३०६

निज २ बासबिलोकिबराती ❀ सुरसुषसकलसुलभसब भांती
बिभवभेदकछुकोउनजाना ❀ सकलजनककरकरहिंबषाना
सियमहिमारघुनायकजानी ❀ हरषे हृदय हेतु पहिचानी
पितुआगवनसुनतदोउभाई ❀ हृदयन अतिआनंद अमाई
सकुचन्हकहिनसकतगुरपाहीं ❀ पितुदरसनलालचमनमाहीं
बिस्वामित्र बिनय बडिदेषी ❀ उपजाउर संतोष बिसेषी
हरषिबंधु दोउहृदय लगाए ❀ पुलक अंग अंबक जलछाए
चले जहां दसरथ जनवासे ❀ मनहुसरोवरतकेउ पिआसे

दो० भूप बिलोके जबहिं मुनि, आवत सुतन्ह समेत ॥
उठेहरषिसुखसिंधुमहं, चले थाह सी लेत ॥ ३०७ ॥

मुनिहिदंडवतकीन्हमहीसा ❀ बारबार पदरज धरि सीसा
कौसिकराउ लिये उरलाई ❀ कहिअसीस पूछी कुसलाई
पुनि दंडवत करत दोउभाई ❀ देखिनृपतिउरसुखनसमाई
सुतहिय लाइ दुसह दुखमेंटे ❀ मृतक सरीर प्रानजनु भेंटे
पुनिबासिष्टपदसिरतिन्हनाए ❀ प्रेममुदित मुनिवर उरलाए
बिप्र बृंद बन्दे दुहुं भाई ❀ मन भावती असीसें पाई
भरतसहानुज कीन्हप्रनामा ❀ लिये उठाइ लाइ उररामा
हरषे लषन देखि दोउ भ्राता ❀ मिले प्रेम परिपूरित गाता

दो० पुरजन परिजन जाति जन, जाचक मंत्री मीत ॥
मिलेजथाविधिसबहिप्रभु, परमकृपालविनीत २०८॥

रामहिदेखि बरात जुड़ानी * प्रीतिकिरीतिनजातिबखानी
नृपसमीप सोहहिं सुतचारी * जनुधनधरमादिकतनुधारी
सुतन्हसमेत दसरथहि देखी * मुदितनगरनरनारिबिसेखी
सुमनबरसिसुरहनहिंनिसाना * नाकनटीनाचहिं करिगाना
सतानंदअरुबिप्र सचिवगन * मागधसूत विदुष बंदीजन
सहित बरातराउ सनमाना * आयसुमांगिफिरे अगवाना
प्रथम बरात लगनतें आई * तातेंपुर प्रमोद अधिकाई
ब्रह्मानंद लोगसब लहहीं * बढ़हुदिवसनिसिबिधिसन कहहीं

दो० रामसीय सोभा अवधि, सुकृत अवधि दोउराज ॥
जहँतहंपुरजनकहहिंअस, मिलिनरनारिसमाज २०९

जनक सुकृत मूरति बैदेही * दसरथसुकृत रामधरे देही
इन्हसमकाहुनसिवअवराधे * काहुनइन्हसमान फललाधे
इन्हसमकोउनभएउजगमाहीं * है नहिकतहूँ होनेउ नाहीं
हमसबसकल सुकृतकै रासी * भए जगजनमिजनकपुरबासी
जिन्हजानकीरामछबिदेखी * कोसुकृतीहमसारिसबिसेखी
पुनि देखब रघुबीर बिआहू * लेब भलीबिधि लोचनलाहू
कहहिंपरसपरकोकिलबयनी * एहिबिवाहबडलाभसुनयनी
बडें भाग बिधि बात बनाई * नयनअतिथिहोइहहिंदोउभाई

दो० बारहिंबारसनेहबस, जनकबोलाउबसीय ॥
लेनआइहहिंबंधुदोउ, कोटिकामकमनीय ॥ २१० ॥

बिबिधिभांति होइहिपहुनाई * प्रियनकाहिअस सासुरमाई
तबतबराम लषनहि निहारी * होइहहिंसबपुरलोग सुखारी

सखिजसरामलषनकरजोटा ❋ तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा
स्यामगौर सब अंग सुहाए ❋ तेसबकहहिं देखि जेआए
कहा एक मै आज निहारे ❋ जनुबिरंचि निजहाथसँवारे
भरत राम हीकी अनुहारी ❋ सहसालखिनसकहिंनरनारी
लषन सत्रसूदन एक रूपा ❋ नखसिखतें सबअंग अनूपा
मनभावहिंमुखबरनिनजाहीं ❋ उपमाकहंत्रिभुअनकोउनाहीं
छं० उपमानकोउकहदासतुलसी कतहुँकबिकोबिदकहै ॥
वलविनयबिद्या सीलसोभा सिंधुइन्हसमएइ अहै ॥
पुरनारिसकलपसारिअंचलबिधिहिवचनसुनावहीं ॥
ब्याहिअहुचारिउ भाइ एहिपुरहम सुमंगलगावहीं ॥
सो० कहहिंपरसपरनारि, बारिबिलोचनपुलकतन ॥
सखिसबकरवपुरारि, पुन्यपयोनिधिभूप दोउ ३११
एहिंबिधिसकलमनोरथकरहीं ❋ आनँदउमगिउमगिउरभरहीं
जेनृपसीय स्वयंबर आए ❋ देखिबंधुसब तिन्हसुखपाए
कहतरामजसबिसदबिसाला ❋ निजनिज गेहगयेमहिपाला
गएबीतिकछुदिनएहिभाँती ❋ प्रमुदितपुरजनसकलबराती
मंगल मूललगनदिन आवा ❋ हिमरितुअगहनमाससुहावा
ग्रहतिथिनखतजोगवरवारू ❋ लगनसोधिबिधिकीन्हबिचारू
पठै दीन्हनारद सन सोई ❋ गनीजनककेगनकन्ह जोई
सुनीसकललोगन्हयह बाता ❋ कहहिंजोतिषीअपरबिधाता
दो० धेनुधूरि बेला बिमल, सकल सुमंगल मूल ॥
बिप्रन्ह कहेउ बिदेहसन, जानिसगुन अनुकूल ३१२
उपरोहितहि कहेउनरनाहा ❋ अबबिलंबकरकारन काहा

सतानंद तब सचिव बोलाए * मंगलसकलसाजिसबल्याए
संख निसान पनवबहु बाजे * मंगलकलससगुन सुभसाजे
सुभगसुआसिनिगावहिंगीता * करहिंबेदधुनिबिप्र पुनीता
लेनचले सादर एहि भांती * गए जहां जनवास बराती
कोसलपति करदेखिससमाजू * अतिलघुलागतिन्हहिसुरराजू
भएउसमउअवधारिअपाऊ * यहसुनिपरानिसानन्हिघाऊ
गुरहिपूछिकरिकुलबिधिराजा * चलेसंगमुनि साधुसमाजा

दो० भाग्य बिभवअवधेसकर, देखिदेवब्रह्मादि ॥
लगेसराहनसहससुख, जानिजनमनिजबादि २१३

सुरन्हसुमंगलअवसर जाना * बरषहिंसुमनबजाइनिसाना
सिवब्रह्मादिक बिबुध बरूथा * चढे बिमानन्हि नानाजूथा
प्रेमपुलक तन हृदय उछाहू * चले बिलोकन रामबिआहू
देखिजनक पुरसुर अनुरागे * निजनिजलोकसबहिं लघुलागे
चितवहिंचकितबिचित्रबिताना * रचनासकलअलौकिकनाना
नगरनारि नर रूप निधाना * सुघरसुधरमसुसील सुजाना
तिन्हहिं देषिसबसुरसुरनारी * भएनषत जनुबिधु उंजियारी
बिधिहिभएउआचरजबिसेषी * निजकरनीकछुकतहुंनदेषी

दो० सिव समुझाए देवसब, जनि आचरज भुलाहु ॥
हृदय बिचारहु धीरधरि, सियरघुबीर बिआहु २१४

जिन्हकर नामलेतजगमाहीं * सकल अमंगलमूल नसाहीं
करतल होहिंपदारथ चारी * तेइ सियराम कहे उकामारी
एहिबिधिसंभुसुरन्हसमुझावा * पुनिआगे बरबसह चलावा
देवन्ह देषे दसरथ जाता * महामोद मनपुलकितगाता

साधु समाज संगमहिं देवा ॥ जनुतन धरे करहिं सुरसेवा
सोहत साथ सुभगसुतचारी ॥ जनुअपवरगसकलतनधारी
मरकतकनक बरनबरजोरी ॥ देषिसुरन्ह भै प्रीति नथोरी
पुनिरामहिबिलोकिहियहरषे ॥ नृपहिसराहिसुमनतिन्हबरषे
दो० रामरूप नषसिष सुभग, बारहि बार निहारि ॥
पुलकगात लोचनसजल, उमासमेतपुरारि ३१५ ॥
कोकिकंठ द्युतिस्यामल अंगा ॥ तड़ितबिनिंदकबसनसुरंगा
ब्याहबिभूषनबिबिधिबनाए ॥ मंगल मयसबभाँति सुहाए
सरदबिमलबिधुबदनसुहावन ॥ नयननवलराजी वलजावन
सकलअलौकिक सुन्दरताई ॥ कहिनजाइ मनहींमनभाई
बन्धु मनोहर सोहहिं संगा ॥ जात नचावत चपल तुरंगा
राजकुँअर बरबाजिनचावहिं ॥ बंसप्रसंसक बिरद सुनावहिं
जेहि तुरगपर राम बिराजे ॥ गतिबिलोकिषगनायकलाजे
कहिनजाइसबभाँतिसुहावा ॥ बाजिवेषजनु काम बनावा
छं० जनुबाजिवेषबनाइमनसिजरामहितअतिसोहई ॥
आपनेवयबलरूपगुनगति सकल भुअनबिमोहई ॥
जगमगतजीनजरावजोतिसुमोतिमनिमानिकलगे ॥
किंकिनिललामलगामललिताबिलोकिसुरनरमुनिठगे ॥
दो० प्रभुमनसाहिलयलीनमन, चलतचाल छबिपाव ।
भूषितउडगनतड़ितघन, जनुबरबरहि नचाव ३१६
जेहिवरबाजि राम असवारा ॥ तेहिसारदउ न बरनै पारा
संकर राम रूप अनुरागे ॥ नयनपंचदस अतिप्रियलागे
हरिहितसहितरामजब जोहे ॥ रमा समेत रमापति मोहे

निरखिरामछबिबिधिहरषाने ❋ आठैनयनजानि पछिताने
सुरसेनप उरबहुत उछाहू ❋ बिधितें डेवढ़ सुलोचन लाहू
रामहि चितवसुरेस सुजाना ❋ गौतमसापपरमहित माना
देवसकलसुर पतिहिसिहाहीं ❋ आजपुरंदर समकोउ नाहीं
मुदित देवगन रामहिं देषी ❋ नृपसमाज दुहुहरष बिसेषी

छं० अतिहरष राजसमाज दुहुँदिसिदुंदुभीबाजाहिंघनी ॥
बरषहिंसुमनसुरहरषिकहिजयजयतिजयरघुकुलमनी
एहिभांति जानिबरात आवत बाजने बहुबाजहीं ॥
१रानीसुआसिनि बोलि परिछनि हेतमंगल साजहीं ॥

दो० सजि आरती अनेक बिधि, मंगल सकल सवारि ॥
चलींमुदितपरिछनिकरन, गजगामिनिवरनारि ३१७

बिधुबदनीसबसबमृग लोचनि ❋ सबनिजतनछबिरतिमदमोचनि
पहिरे बरन बरन बरचीरा ❋ सकल बिभूषन सजेसरीरा
सकल सुमंगल अंग बनाए ❋ करहिंगानकल कंठिलजाए
कंकनकिंकिनि नूपरबाजहिं ❋ चालबिलोकिकामगजलाजहिं
बाजहिंबाजनबिबिधिप्रकारा ❋ नभअरुनगर सुमंगलचारा
सची सारदा रमा भवानी ❋ जेसुरतियसुचिसहजसयानी
कपट नारि बरबेष बनाई ❋ मिलींसकलरनिवासहिआई
करहिं गानकल मंगलबानी ❋ हरषबिबससबकाहुनजानी

छं० कोजानकेहि आनन्दबससबब्रह्मबर परिछनचली ।
कलगानमधुरनिसान बरषहिं सुमन सुरसोभाभली ॥
आनंद कंदबिलोकि दूलह सकल हिय हरषितभई ॥
अंभोज अंबक अंबुउमगि सुअंगपुलकावलिछई ॥

दो० जो सुखभासियमातुमन, देखिराम बरवेष ॥
सोनसकहिंकहिकलपसत, सहससारदासेष ३१८ ॥
नयन नीरहठिमंगल जानी ❋ परिछनिकरहिं मुदितमनरानी
बेदबिहितअरुकुल आचारू ❋ कीन्हभली बिधि सब ब्यवहारू
पंच सबदधुनि मंगल गाना ❋ पटपाँवडे परहिं बिधिनाना
करिआरतीअरघातिन्हदीन्हा ❋ रामगवन मंडपतब कीन्हा
दसरथसहितसमाज बिराजे ❋ बिभव बिलोकि लोकपतिलाजे
समयसमयसुर बरषहिंफूला ❋ सांतिपढहिं महिसुर अनुकूला
नभअरुनगर कोलाहलहोई ❋ आपनिपर कछुसुनइनकोई
एहिंबिधिराममंडपहि आए ❋ अरघ देइ आसन बैठाए
छं० बैठारिआसनआरतीकरिनिरषिवरसुषपावहीं ॥
मनिवसनभूषनभूरिवारहिंनारिमंगलगावहीं ॥
ब्रह्मादिसुरवर बिप्रवेषबनाइ कौतुक देखहीं ॥
अवलोकिरघुकुलकमलरबिछबिसुफलजीवन लेखहीं ॥
दो० नाऊबारी भाटनट, राम निछावरि पाइ ॥
मुदितअसीसहिंनाइसिर, हरषनहृदयसमाइ ॥ ३१९॥
मिलेजनकदसरथअति प्रीती ❋ करिबैदिक लौकिक सबरीती
मिलतमहादोउ राजबिराजे ❋ उपमाखोजिखोजि कबिलाजे
लहीनकतहुँहारि हियमानी ❋ इन्हसमएइउपमाउरआनी
साँमध देषिदेव अनुरागे ❋ सुमनवरषिजस गावनलागे
जगबिरंचि उपजावा जबतें ❋ देखेसुने ब्याह बहु तबतें
सकलभाँति सबसाजसमाजू ❋ सम समधी देषे हम आजू
देवगिरा सुनि सुंदर साँची ❋ प्रीति अलौकिकदुहु दिसिमाची

देत पाँवडे अरघ सुहाये * सादरजनक मंडपहिल्याए
छं० मंडप बिलोकिबिचित्र रचनारुचिरता मुनिमनहरे।
निजपानि जनकसुजान सबकहँ आनि सिंहासनधरे॥
कुलइष्ट सरिस बसिष्टपूजे बिनयकरि आसिषलही।
कौसिकहि पूजत परमप्रीति कि रीति तौनपरैकही॥
दो० वामदेव आदिक रिषय, पूजेमुदित महीस॥
दियेदिव्यआसन सबहि, सबसनलही असीस ३२०॥
बहुरिकीन्हकोसलपतिपूजा * जानिईससम भाउ न दूजा
कीन्ह जोरिकरविनयबड़ाई * कहिनिजभाग्य बिभवबहुताई
पूजे भूपति सकल बराती * समधीसमसादर सब भाँती
आसन उचितदिए सबकाहू * कहौं कहामुष एकउछाहू
सकल बरात जनक सनमानी * दानमान बिनती बरबानी
बिधिहरिहरदिसिपतिदिनराऊ * जेजानहिं रघुबीर प्रभाऊ
कपट बिप्र बरबेष बनाएँ * कौतुक देषहिं अतिसचुपाएँ
पूजे जनक देव सम जाने * दिएसुआसनबिनु पहिचाने
छं० पहिचानको केहिजानसबहि अपानसुधिभोरीभई॥
आनंदकंदबिलोकिदूलह उभयदिसिआनँदमई॥
सुरलखे रामसुजानपूजे मानसिकआसन दए॥
अवलोकिसीलसुभाउप्रभुकोबिबुधमनप्रमुदित भए॥
दो० रामचंद्रमुषचंद्र छबि, लोचनचारु चकोर।
करतपानसादरसकल, प्रेमप्रमोद न थोर॥
समउबिलोकिवसिष्टबोलाये * सादर सतानंद मुनिआए
बेगिकुअँरिअबआनहु जाई * चले मुदितमुनिआयसुपाई

रानी सुनि उपरोहित बानी ※ प्रमुदितसखिन्हसमेत सयानी
विप्र बधूकुल वृद्ध बोलाईं ※ करिकुल रीति सुमंगलगाईं
नारि बेष जे सुर बरबामा ※ सकल सुभाय सुंदरी स्यामा
तिन्हहिंदेखिसुखपावहिं नारी ※ बिनुपहिचानिप्रानते प्यारी
बार बार सनमानहिं रानी ※ उमारमा सारद सम जानी
सीय सँवारि समाज बनाई ※ मुदित मंडपहि चलीलवाई

छं० चलिल्यायसीतहिसषीसादरसाजिसुमंगलभामिनी ॥
नवसप्तसाजेंसुंदरीसबमत्तकुंजरगामिनी ॥
कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिंकामकोकिललाजहीं ॥
मंजीरनूपुरकलितकंकनतालगतिबरबाजहीं ॥

दो० सोहतबनिता वृंदमहं, सहजसुहावनिसीय ॥
छबिललनागनमध्यजनु, सुखमातियकमनीय॥३२२॥

सिय सुंदरता बरनि न आई ※ लघुमति बहुत मनोहरताई
आवत दीषिबरातिन्हसीता ※ रूपरासिसब भांति पुनीता
सबहिंमनहिंमनकिएप्रनामा ※ देषिराम भए पूरन कामा
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता ※ कहिनजाइउर आनँदजेता
सुरप्रनामकरिबरिसहिं फूला ※ मुनिअसीसधुनिमंगलमूला
गाननिसानकोलाहल भारी ※ प्रेम प्रमोद मगन नरनारी
एहिबिधिसीयमंडपहि आई ※ प्रमुदितसांतिपढहिमुनिराई
तेहिअवँसरकरबिधिब्यवहारू ※ दुहुँकुलगुरुसबकीन्हअचारू

छं० आचारकरिगुरुगौरिगनपतिमुदिताबिप्रपुजावहीं ॥
सुरप्रगटिपूजालेहिंदेहिं असीसअतिसुषपावहीं ॥
मधुपर्कमंगलद्रव्यजोजेहिसमयमुनिमनमहँचहैं ॥

भरेकनककोपरकलसमोतवलिएपरिचारकरहैं ॥
कुलरीतिप्रीतिसमेतरविकहिदेतसबसादरकिए ॥
एहिभाँतिदेवपुजाइसीतहिसुभगासिंघासनदिए ॥
सियरामअवलोकनिपरसपरप्रेमकाहुनलषिपरै ॥
मनबुद्धिबरबानी अगोचरप्रगटकबिकैसेंकरै ॥

दो० होमसमयतनधरिअनल, अतिसुखआहुतिलेहिं ॥
बिप्रबेषधरिबेदसब, कहिबिवाहबिधिदेहिं ३२३ ॥

जनकपाटमहिषीजगजानी ❋ सीयमातुकिमिजाइबखानी
सुजससुकृत सुष सुंदरताई ❋ सबसमेटि बिधिरची बनाई
समउजानिमुनिवरन्हबोलाई ❋ सुनतसुआसिनिसादरल्याई
जनकबामदिसिसोहसुनयना ❋ हिमगिरिसंगबनीजनुमयना
कनककलसमनि कोपररूरे ❋ सुचि सुगंध मंगल जलपूरे
निजकरमुदितरायअरुरानी ❋ धरे रामके आगे आनी
पढहिंबेद मुनि मंगलबानी ❋ गगनसुमनझरिअवसरजानी
बरबिलोकि दंपति अनुरागे ❋ पायपुनीत पषारन लागे

छं० लागेपषारनपायपंकजप्रेमतनपुलकावली ॥
नभनगरगाननिसानजयधुनिउमगिजनुचहुँदिशिचली
जेपदसरोजमनोजअरि उरसरसदैवबिराजहीं ॥
जेसुकृतसुमिरतबिमलतामनसकलकलिमलभाजहीं ॥
जेपरसिमुनिबनितालहीगतिरहीजोपातक मई ॥
मकरंदजिन्हकोसंभुसिरसुचिताअवधिसुरवरनई ॥
करिमधुपमनमुनिजोगिजनजेसेइअभिमतगतिलहैं ॥
तेपदपषारतभाग्यभाजनजनकजयजयसबकहैं ॥

बरकुँअरिकरतलजोरिसाषोच्चारदोउकुलगुरुकरैं ॥
भयोपानिगहनविलोकिबिधिसुरमनुजमुनिआँनदभरैं
सुषमूलदूलहदेखिदंपतिपुलकतनहुलस्योहियो ॥
करिलोकवेदबिधानकन्यादानन्रृप भूषनकियो ॥
हिमवंत जिमिगिरिजा महेसहि हरिहि श्रीसागरदई ॥
तिमिजनक रामहिंसियसमर्पीविस्वकलकीरतिनई ॥
क्यौंकरैविनय विदेह कियोविदेह मूरति साँवरी ॥
करि होम बिधिवतगाँठि जोरीहोन लागी भाँवरी ॥

दो॰ जयधुनिबंदीवेदधुनि, मंगलगाननिसान ॥
सुनिहरषहिंबरषहिंबिबुध, सुरतरुसुमनसुजान ३२४॥

कुँअरिकुँअरकलभाँवरिदेहीं * नयन लाभ सब सादरलेहीं
जाइ न वरनिमनोहर जोरी * जोउपमाकछुकहौंसो थोरी
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं * जगमगातिमनिखंभन्हमाहीं
मनहुमदनरति धरि बहुरूपा * देखत राम विवाह अनूपा
दरस लालसा सकुचन थोरी * प्रगटत दुरत बहोरिबहोरी
भए मगन सब देखिनिहारे * जनकसमानअपान विसारे
प्रमुदित मुनिन्हभाँवरीफेरी * नेगसहितसब रीति निवेरी
राम सीय सिरसेंदुर देहीं * सोभाकहिनजातिबिधिकेहीं
अरुनपराग जलजभरिनीके * ससिहि भूषअहिलोभअमीके
बहुरिबसिष्टदीन्हअनुसासन * वरदुलहिनबैठे एक आसन

छं॰ बैठेबरासनरामजानकिमुदितमनदसरथभए ॥
तनपुलकपुनिपुनिदेखिअपनेसुकृतसुरतरुफलनए ॥
भरिभुअनरहाउछाहरामबिवाहभासबहीकहा ॥

केहिभांतिवरनिसिरातरसना एकयहमंगलमहा ॥
तबजनकपाइवसिष्टआयसुव्याहसाजसंवारिकै ॥
मांडवीश्रुतिकीरतिउर्मिलाकुअरिलईहंकारिकै ॥
कुसकेतुकन्या प्रथमजोगुनसीलसुखसोभामई ॥
सबरीतिप्रीतिसमेतकरिसोव्याहिनृपभरतहिदई ॥
जानकीलघुभगिनीसकलसुंदरिसिरोमनिजानिकै ॥
सोजनकदीन्हीव्याहिलषनहिसकलविधिमनमानिकै
जेहिनामश्रुतिकीरतिसुलोचनिसुमुषिसबगुन आगरी
सोदई रिपुसूदनहिं भूपतिरूप सील उजागरी ॥
अनुरूपबरदुलहिनिपरसपरलषिसकुचिहियहरषहीं ॥
सबमुदित सुंदरतासराहहिं सुमन सुरगन बरषहीं ॥
सुंदरी सुंदर बरन्हसह सबएक मंडप राजहीं ॥
जनुजीवउरचारिउअवस्थाविभुन सहितविराजहीं ॥

दो॰ मुदितअवधपतिसकलसुत, वधुन्हसमेतनिहारि पा॰ प्र॰
जनुपाएमहिपालमनि, क्रियनसहितफलचारि ३२५॥

जसिरघुबीरव्याहाबिधिवरनी ❋ सकलकुअरव्याहेतेहिकरनी
कहिनजाइ कछुदाइज भूरी ❋ रहा कनकमनि मंडप पूरी
कंवल बसन बिचित्र पटोरे ❋ भांति भांति बहुमोलनथोरे
गजरथतुरंग दासअरुदासीं ❋ धेनुअलंकृत काम दुहासीं
वस्तुअनेककरिअकिमिलेषा ❋ कहिनजाइजानहिंजिन्हदेषा
लोकपाल अवलोकिसिहाने ❋ लीन्हअवधपतिसबसुषमाने
दीन्हजाचकन्हिजोजेहिभावा ❋ उबरा सो जनवासहि आवा
तबकरजोरिजनकमृदुबानी ❋ बोलेसब बरात सनमानी

छं० सनमानि सकलबरात आदरदानविनयबडाइकै ॥
प्रमुदित महामुनि बृंद बंदे पूजि प्रेम लडाइ कै ॥
सिरनाइ देवमनाइ सबसन कहतकरसंपुटकिएँ ॥
सुरसाधुचाहतभाउसिंधुकि तोषजलअंजलिदिएँ ॥
करजोरि जनक बहोरिबंधुसमेत कोसलरायसो ॥
बोलेमनोहर बयन सानिसनेह सील सुभायसो ॥
संबंधराजन रावरें हमबडे अब सबबिधि भए ॥
येहिराज साजसमेत सेवक जानिबोबिनुगथलए ॥
एदारिका परिचारिका करि पालिबी करुनामई ॥
अपराध छमिबो बोलि पठएबहुत हौं ढीठ्योदई ॥
पुनिभानुकुलभूषनसकल सनमानबिधिसमधीकिए ॥
कहिजातिनहिं बिनतीपरस्पर प्रेमपरिपूरनहिए ॥
बृंदारकागनसुमन बरिसहिं राउ जनवासे चले ॥
दुंदुभीजय धुनिवेद धुनि नभ नगर कौतूहलभले ॥
तबसखीं मंगलगान करत मुनीस आयसु पाइकै ॥
दूलहदुलहिनिन्ह सहितसुंदरिचलीं कोहबरल्याइकै ॥

दो० पुनिपुनि रामहिचितवसिय, सकुचतिमनसकुचैन ॥
हरत मनोहर मीनछबि, प्रेम पियासे नैन ३२६ ॥

स्यामसरीर सुभाय सुहावन ※ सोभाकोटिमनोजलजावन
जावक जुतपद कमल सुहाए ※ मुनिमनमधुपरहतजिन्हछाए
पीत पुनीत मनोहर धोती ※ हरतिबालरबिदामिनिजोती
कलकिंकिनिकटिसूत्रमनोहर ※ बाहुबिसाल बिभूषन सुन्दर
पीत जनेउ महा छबि देई ※ करमुद्रिका चोरि चितलेई

सोहत ब्याह साजसब साजे ❋ उर आयत उर भूषन राजे
पिअर उपरना काँषा सोती ❋ दुहुँआचरन्हिलगेमनिमोती
नयनकमलकलकुंडलकाना ❋ बदनसकलसोंदर्ज निधाना
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा ❋ भालतिलकरुचिरता निवासा
सोहत मौर मनोहर माथें ❋ मंगलमयमुकुतामनिगाथें
छं॰ गाथेंमहामनि मौरमंजुल अंग सब चित चोरहीं ॥
पुरनारि सुरसुंदरी बरन्ह बिलोकिसबतिनतोरहीं ॥
मनिबसन भूषनवारिआरति करहिंमंगलगावहीं ॥
सुरसुमनबरिसहिं सूतमागधबंदि सुजससुनावहीं ॥
कोहबरहिआनेकुँअरकुँअरिसुआसिनिन्हसुपपाइकै ॥
अतिप्रीति लौकिक रीतिलागींकरनमंगलगाइकै ॥
लहकौरि गौरिसिषाव रामहि सीय सनसारदकहैं ॥
रनिवासहास बिलासरसबस जन्मकोफलसबलहैं ॥
निजपानिमनिमहँदेषि प्रतिमूरति सरूपनिधानकी ॥
चालतिनभुजबल्ली बिलोकनिबिरहभयबसजानकी ॥
कौतुकबिनोदप्रमोदप्रेमनजाइकहि जानहिंअली ॥
बरकुँअरिसुंदरसकलसषीलवाइजनवासे चली ॥
तेहिसमयसुनिअअसीसजहँतहँनगरनभआनंदमहा ॥
चिरजिअहुजोरीचारुचारयौमुदितमनसबहींकहा ॥
जोगींद्रसिद्धमुनीसदेव बिलोकिप्रभु दुंदुभि हनी ॥
चलेहरषिबरषिप्रसूननिजनिजलोकजयजयजयभनी॥

दो॰ सहितबधूटिन्हकुँअरसब, तबआएपितुपास ॥
सोभामंगलमोदभरि, उमगेउजनुजनवास ॥ ३२७॥

पुनि जेवनार भई बहुभाँती * पठए जनक बोलाइ बराती
परतपाँवडे बसन अनूपा * सुतनसमेत गवनकियोभूपा
सादर सबके पाँय पखारे * जथाजोग पीढन बैठारे
धोएजनक अवधपतिचरना * सीलसनेह जाइनहिं बरना
बहुरि रामपद पंकज धोए * जे हर हृदय कमल महँगोए
तीनिउ भाइ रामसमजानी * धोएचरनजनक निजपानी
आसनउचितसबहिन्नृपदीन्हे * बोलिसूपकारक सबलीन्हे
सादर लगे परन पनवारे * कनककील मनिपानसँवारे
दो० सूपोदन सुरभी सरपि, सुंदर स्वाद पुनीत ॥
छनमहँसबके परसिगे, चतुरसुआर विनीत ३२८ ॥
पंच कवलिकरि जेवन लागे * गारिगानसुनिअतिअनुरागे
भाँतिअनेक परे पकवाने * सुधासरिसनहिंजाहिंबखाने
परुसन लगे सुआर सुजाना * बिंजनविविधनामकोजाना
चारिभाँति भोजनविधिगाई * एकएकबिधिबरनि नजाई
छरसरुचिर बिंजन बहुजाती * एकएकरस अगनितभाँती
जेंवतदेहिं मधुरधुनि गारीं * लैलैनाम पुरुष अरु नारीं
समयसुहावनिगारिविराजा * हँसतराउसुनिसहितसमाजा
एहिविधिसबहीं भोजनकीन्हा * आदरसहितआचमनलीन्हा
दो० देइ पानपूजे जनक, दसरथ सहित समाज ॥
जनवासेहि गवने मुदित, सकलभूप सिरताज ३२९ ॥
नितनूतन मंगल पुरमाहीं * निमिषसरिसदिनजामिनिजाहीं
बडेभोर भूपति मनिजागे * जाचक गुनगनगावन लागे
देषिकुँअर बरवधुन्ह समेता * किमिकहिजातमोदमन जेता

प्रातक्रुया करिगे गुरु पाहीं * महाप्रमोद प्रेम मनमाहीं
करि प्रनाम पूजा कर जोरी * बोले गिराअमिअ जनुबोरी
तुम्हरीकृपासुनहु मुनिराजा * भएउँआज मैं पूरन काजा
अबसब विप्रबोलाइ गोसाँई * देहुधेनु सब भाँति बनाई
सुनिगुरुकरिमहिपालबडाई * पुनिपठए मुनिवृंद बोलाई
दो० बामदेउअरुदेवरिषि, वालमीकिजावालि ॥
आएमुनिवरनिकरतव, कौसिकादितपसालि ३२० ॥
दंडप्रनाम सबहि नृपकीन्हे * पूजिसप्रेम बरासन दीन्हे
चारि लच्छ वरधेनु मगाई * कामसुरभिसम सीलसुहाई
सबविधिसकलअलंकृतकीन्ही * मुदितमाहिप महिदेवन्ह दीन्ही
करतविनयबहुबिधिनरनाहू * लहेउँ आजजगजीवन लाहू
पाइ असीस महीस अनंदा * लिएबोलिपुनिजाचक वृंदा
कनकबसनमनिहयगयस्यंदन * दियेबूझिरुचिरविकुल नंदन
चलेपढत गावत गुन गाथा * जयजयजयादिनकरकुलनाथा
एहिविधिरामबिवाहउछाहू * सकैन वरनि सहस मुखजाहू
दो० बारबारकौसिकचरन, सीसनाइ कहराउ ।
यहसबसुखमुनिराजतव, कृपाकटाच्छ प्रभाउ ३२१॥
जनक सनेह सील करतूती * नृप सब राति सराहत बीती
दिनउठिबिदाअवधपतिमागा * राषहिंजनकसहितअनुरागा
नितनूतन आदर अधिकाई * दिनप्रातिसहसभाँतिपहुनाई
नितनवनगर अनंद उछाहू * दसरथगवन सोहाइनकाहू
बहुत दिवस बीतेएहि भाँती * जनुसनेह रजु बँधे बराती
कौसिक सतानंद तब जाई * कहाबिदेह नृपहि समुझाई

अब दसरथ कहँ आयसुदेहू ❋ जद्यपिछाडि न सकहुसनेहू
भलेहिनाथकहिसचिवबोलाए❋कहिजयजीवसीसतिन्हनाए

दो॰ अवध नाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाउ ।
भएप्रेमबस सचिव सुनि, बिप्रसभासदराउ ३३२ ॥

पुरबासी सुनिचलिहिबराता ❋ बूझत बिकलपरस पर बाता
सत्यगवनसुनि सबबिलषाने ❋ मनहुसाँझसरसिजसकुचाने
जहँजहँ आवत बसे बराती ❋ तहँतहँ सिद्धचला बहुभाँती
बिबिधिभाँतिमेवापकवाना ❋ भोजनसाज नजाइ बखाना
भरिभरिबसहअपार कहारा ❋ पठए जनक अनेक सुआरा
तुरग लाखरथ सहसपचीसा ❋ सकलसँवारे नष अरु सीसा
मत्त सहसदससिंधुर साजे ❋जिन्हहिदेखिदिसिकुंजरलाजे
कनकबसनमनिभरि२जाना❋ महिषीधेनु बस्तुबिधिनाना

दो॰ दाइज अमिति नसकिअ कहि, दीन्हबिदेहबहोरि ॥
जोअवलोकतलोकपति, लोकसंपदाथोरि ३३३ ॥

सबसमाज एहिभाँतिबनाई ❋ जनक अवधपुर दीन्हपठाई
चलीबरात सुनत सब रानी ❋ बिकलमीनगनजनुलघुपानी
पुनिपुनिसीय गोदकरिलेहीं ❋ देइअसीस सिखावन देहीं
होएहु संततपिअहिपियारी ❋ चिरअहिवात असीसहमारी
सासु ससुर गुरुसेवा करेहू ❋ पतिरुषलषिआयसुअनुसरेहू
अतिसनेहबस सखीसयानी ❋ नारिधरमसिषवहिंमृदुबानी
सादरसकलकुँअरि समुझाई ❋ रानिन्ह बार बार उरलाई
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी ❋ कहहिंबिरंचि रचीं कतनारी

दो॰ तेहिअवसर भाइन्हसहित, राम भानु कुलकेतु।
चलेजनक मंदिरमुदित, बिदाकरावनहेतु ॥ ३३४ ॥
चारिउ भायसुभाय सुहाए ❋ नगर नारिनर देखन धाये
कोउकहचलनचहतहहिंआजू ❋ कीन्हबिदेह बिदाकर साजू
लेहु नयन भरि रूपनिहारी ❋ प्रिय पाहुने भूपसुत चारी
कोजानै केहिसुकृत सयानी ❋ नयनअतिथिकीन्हेबिधिआनी
मरनसील जिमि पाव पियूषा ❋ सुरतरु लहै जनमकर भूषा
पाव नारकी हरिपद जैसें ❋ इन्हकरदरसनहमकहँ तैसें
निरखि रामसोभा उर धरहू ❋ निजमनफनिमूरतिमनि करहू
येहिबिधिसबहिनयन फलदेता ❋ गएकुँवर सब राज निकेता
दो॰ रूपसिंधु सब बंधुलषि, हरषि उठेउ रनिवासु ॥
करहिंनिछावरिआरती, महामुदित मनसासु ३३५ ॥
देखिरामछबिअतिअनुरागी ❋ प्रेमबिबसपुनिपुनिपदलागी
रही न लाज प्रीति उर छाई ❋ सहजसनेहबरनिकिमिजाई
भाइन्हसहितउबटिअन्हवाए ❋ छरसअसनअतिहेत जेंवाए
बोले राम सुअवसर जानी ❋ सीलसनेह सकुचमय बानी
राव अवधपुर चहत सिधाए ❋ बिदाहोन हम इहाँ पठाए
मातु मुदित मन आयसुदेहू ❋ बालकजानि करब नितनेहू
सुनतबचनबिलषेउरनिवासू ❋ बोलिन सकहिंप्रेमबस सासू
हृदयलगाइकुँअरिसबलीन्ही ❋ पतिन्हसौंपिबिनतीअतिकीन्ही
छं॰ करिबिनयसियरामहिंसमरपीजोरिकरपुनिपुनिकहै ॥
बलिजाउँतातसुजानतुम्हकहँबिदितगतिसबकीअहै ॥
परिवारपुरजनमोहिराजहिप्रानप्रियसियजानिबी ॥
तुलसीसुसीलसनेहलषिनिजकिंकरीकरिमानबी ॥

सो० तुम्हपरि पूरन काम, जानसिरोमनि भावप्रिय ॥
जनगुनगाहकराम, दोषदलनकरुनायतन ॥ ३३६ ॥
असकहिरहीचरन गहिरानी * प्रेमपंकजनु गिरा समानी
सुनि सनेह सानी बरबानी * बहुबिधिरामसासुसनमानी
रामबिदा माँगा करजोरी * कीन्हप्रनाम बहोरि बहोरी
पाइ असीस बहुरि सिरनाई * भाइन्ह सहित चलेरघुराई
मंजुमधुर मूरति उर आनी * भईसनेह सिथिल सबरानी
पुनिधीरजधरिकुँअरिहँकारी * बारबार भेंटहिं महँतारी
पहुचावहिंफिरिमिलहिंबहोरी * बढीपरसपर प्रीतिन थोरी
पुनिपुनिमिलतसखिनबिलगाई * बालबच्छ जिमिधेनु लवाई
दो० प्रेम बिवसनरनारिसब, सखिन्ह सहित रनिवास ॥
मानहुकीन्हबिदेहपुर, करुनाबिरहानिवास ३३७ ॥
सुकसारिका जानकी ज्याए * कनकपिंजरान्हिराखिपढाए
ब्याकुल कहहिं कहाँबैदेही * सुनिधीरज परिहरैन केही
भएबिकलखगमृगएहिभाँती * मनुजदसा कैसे कहिजाती
बंधुसमेत जनक तब आए * प्रेमउमगि लोचन जलछाए
सीयबिलोकि धीरता भागी * रहे कहावत परम बिरागी
लीन्हिरायउर लाइ जानकी * मिटीमहामरजाद ज्ञानकी
समुझावतसबसचिव सयाने * कीन्हबिचार अनवसरजाने
बारहिं बार सुता उर लाई * सजिसुन्दर पालकी मगाई
दो० प्रेमबिबस परिवारसब, जानिसुलगन नरेस ॥
कुँअरि चढाई पालकिन्ह, सुमिरेसिद्धगनेस ३३८ ॥
बहुबिधि भूपसुता समुझाई * नारिधरम कुलरीति सिषाई

दासी दास दिए बहुतेरे * सुचिसवकजे प्रिय सिय केरे
सीयचलतब्याकुल पुरबासी * होहिं सगुनसुभ मंगलरासी
भूसुरसचिव समेत समाजा * संगचले पहुँचावन राजा
समय बिलोकिबाजने बाजे * रथगजबाजिबरातिन्हसाजे
दसरथ बिप्र बोलिसब लीन्हे * दानमान परिपूरन कीन्हे
चरनसरोज धूरिधरि सीसा * मुदितमहीपतिपाइअसीसा
सुमिरिगजाननकीन्हपयाना * मंगलमूल सगुन भय नाना

दो० सुरप्रसून बरषहिं हरषि, करहिं अपछरागान ।
चलेअवधपति अवधपुर, मुदितबजाइ निसान ३३९ ॥

नृपकरि बिनय महाजनफेरे * सादर सकल मांगने टेरे
भूषनबसन बाजिगज दीन्हे * प्रेमपोषि ठाढे सब कीन्हे
बारबार बिरदावलि भाषी * फिरेसकल रामहि उरराषी
बहुरिबहुरिकोसलपतिकहहीं * जनक प्रेमबसफिरैनचहहीं
पुनिकह भूपति बचनसुहाए * फिरिअमहीसदूरिबाडिआए
राउबहोरि उतरि भएठाढे * प्रेमप्रवाह बिलोचन बाढे
तबबिदेह बोले करजोरी * बचन सनेह सुधाजनु बोरी
करौंकवनबिधिबिनयबनाई * महाराज मोहि दीन्हबडाई

दो० कोसलपतिसमधीसजन, सनमाने सबभांति ।
मिलनिपरसपरबिनयअति, प्रीतिनहृदयसमाति ३४० ॥

मुनिमंडलिहिजनकसिरनावा * आसिरबादसबहि सनपावा
सादर पुनि भेंटे जामाता * रूपसीलगुननिधिसबभ्राता
जोरि पंकरुहपानि सुहाए * बोले बचन प्रेम जनु जाए
रामकरौं केहिभांति प्रसंसा * मुनिमहेस मनमानस हंसा

करहिंजोगजोगी जेहिलागी * कोह मोहममता मदत्यागी
व्यापकब्रह्मअलषअबिनासी * चितानंद निरगुनगुनरासी
मनसमेतजेहिजानन बानी * तरकिनसकहिंसकलअनुमानी
महिमानिगमनेतिकहिकहई * जोतिहुँकाल एकरस अहई

दो॰ नयनबिषयमो कहँभयउ, सो समस्तसुषमूल ।
सबइसुलभजगजीवकहँ, भएईसअनुकूल ॥ ३४१ ॥

सबहिभाँतिमोहि दीन्हिबडाई * निजजनजानिलीन्ह अपनाई
होहिं सहस दससारद सेषा * करहिंकलपकोटिकभरिलेषा
मोरभाग्यराउर गुन गाथा * कहिनासिराहिंसुनहुरघुनाथा
मैंकछुकहौं एकबल मोरे * तुमरीझहु सनेह सुठि थोरे
बारबार माँगौं करजोरे * मनपरि हरै चरन जनिभोरे
सुनिबर बचन प्रेमजनुपोषे * पूरन काम राम परितोषे
करिबरबिनय ससुरसनमाने * पितुकौसिकबासिष्टसमजाने
बिनतीबहुतभरतसनकीन्ही * मिलिसप्रेमपुनिआसिषदीन्ही

दो॰ मिलेलषन रिपुसूदनहि, दीन्हि असीसमहीस ।
भएपरस पर प्रेम बस, फिरिफिरि नावहिंसीस ३४२ ॥

बारबार करि बिनय बडाई * रघुपति चले संगसब भाई
जनकगहे कौसिक पदजाई * चरनरेनुसिरनयननन्हि लाई
सुनु मुनीसबर दरसन तोरें * अगमनकछुप्रतीतमन मोरें
जोसुखसुजसलोकपतिचहहीं * करतमनोरथसकुचतअहहीं
सोसुषसुजससुलभमोहिस्वामी * सबसिधितबदरसनअनुगामी
कीन्हबिनयपुनिपुनिसिरनाई * फिरेमहीस आसिषा पाई
चली बरात निसान बजाई * मुदितछोटबड सबसमुदाई

रामहिंनिरषि ग्रामनरनारी ❀ पाइनयनफल होहिं सुषारी
दो० बीचबीच वरवासकरि, मगलोगन्हसुपदेत ।
अवधसमीप पुनीतदिन, पहुँचीआइजनेत ३४३ ॥
हने निसान पनव वरवाजे ❀ भेरिसंखधुनि हय गयगाजे
झांझ वीन डिंडिमी सुहाई ❀ सरसराग बाजहिं सहनाई
पुरजनआवतअकनिबराता ❀ मुदितसकलपुलकावलिगाता
निजनिज सुंदर सदनसँवारे ❀ हाट बाट चौहट पुर द्वारे
गलीं सकलअरगजा सिंचाई ❀ जहँ तहँ चौकें चारु पुराई
बना बजार न जाइ बखाना ❀ तोरन केतुपताक बिताना
सफलपूंगफल कदलिरसाला ❀ रोपे वकुल कदंव तमाला
लगे सुभगतरु परसतधरनी ❀ मनिमयआलवालकलकरनी
दो० बिबिधभाँति मंगलकलस, गृहगृह रचे सँवारि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सव, रघुवर पुरी निहारि ३४४ ॥
भूपभवन तेहि अवसरसोहा ❀ रचनादेखि मदन मनमोहा
मंगल सगुन मनोहर ताई ❀ रिधिसिधिसुषसंपदा सुहाई
जनु उछाहसबसहजसुहाए ❀ तनधरिधरिदसरथ गृहछाए
देखन हेतु राम बैदेही ❀ कहहु लालसा होइन केही
जूथजूथमिलिचलींसुआसिनि ❀ निजछविनिदरहिंमदनबिलासिनि
सकलसुमंगल सजे आरती ❀ गावहिं जनुबहु बेषभारती
भूपति भवन कोलाहल होई ❀ जाइनवरनि समउसुखसोई
कोसल्यादि राम महतारी ❀ प्रेमबिबसतनदसा बिसारी
दो० दियेदानबिप्रन्हबिपुल, पूजिगनेस पुरारि ।
प्रमुदितपरम दरिद्रजनु, पायपदारथचारि ३४५ ॥

प्रेम प्रमोद विवस सब माता * चलहिं न चरन सिथिल भये गाता
रामदरस हित अति अनुरागीं * परिछन साज सजन सब लागीं
बिबिध बिधान बाजने बाजे * मंगल मुदित सुमित्रा साजे
हरद दूब दधि पल्लव फूला * पान पूँगफल मंगल मूला
अछत अंकुर रोचन लाजा * मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा
छुहे पुरट घट सहज सुहाए * मदन सकुन जनु नीड बनाए
सगुन सुगंध न जाहि बषानी * मंगल सकल सजहिं सब रानी
रचीं आरतीं बहुत बिधाना * मुदित करहिं कल मंगल गाना
दो॰ कनक थार भरि मंगलन्हि, कमल करन्हि लियें मातु ॥
चलीं मुदित परिछनि करन, पुलक पल्लवित गातु ३४६॥
धूप धूम नभ मचक भएऊ * सावन घन घमंड जनु ठयऊ
सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं * मनहुँ बलाक अवलि मन करषहिं
मंजुल मनिमय बंदनि वारे * मनहु पाकरिपु चाप सँवारे
प्रगटहिं दुरहिं अटन्हि पर भामिनि * चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि
दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा * जाचक चातक दादुर मोरा
सुर सुगंध सुचि बरषहिं वारी * सुखी सकल ससि पुर नर नारी
समउ जानि गुरु आयसु दीन्हा * पुर प्रबेस रघुकुल मनि कीन्हा
सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा * मुदित महीपति सहित समाजा
दो॰ होहिं सगुन बरषहिं सुमन, सुर दुंदुभी बजाइ ॥
बिबुध बधू नाचहिं मुदित, मंजुल मंगल गाइ ॥ ३४७॥
मागध सूत बंदि नट नागर * गावहिं जस तिहुँ लोक उजागर
जयधुनि बिमल बेद बर बानी * दस दिसि सुनिय सुमंगल सानी
बिपुल बाजने बाजन लागे * नभ सुर नगर लोग अनुरागे

बने बराती बरनिन जाहीं * महामुदितमनसुखनसमाहीं
पुरबासिन्ह तबराउ जोहारे * देखत रामहिं भए सुखारे
करहिंनिछावरिमनिगनचीरा * बारि बिलोचनपुलकसरीरा
आरतिकरहिंमुदितपुरनारी * हरषहिंनिरखिकुँअरवरचारी
सिविकासुभगओहारउघारी * देखिदुलहिनिन्हहोहिंसुषारी
दो॰ एहिबिधि सबहीदेत सुख, आए राज दुआर ॥
मुदितमातुपरिछनि करहिं, बधुन्हसमेतकुमार ३४८॥
करहिं आरती बारहिबारा * प्रेम प्रमोद कहै को पारा
भूषन मनिपट नाना जाती * करहिंनिछावरि अगनित भाँती
बधुनसमेत देखिसुतचारी * परमानंद मगन महतारी
पुनिपुनिसीय रामछबिदेषी * मुदितसफलजगजीवनलेषी
सषीसीयमुखपुनिपुनिचाहीं * गानकरहिंनिजसुकृतसराहीं
बर्षहिं सुमनछनहिंछनदेवा * नाचहिंगावहिं लावहिं सेवा
देषि मनोहर चारिउ जोरी * सारद उपमा सकल ढँढोरी
देतनबनहिंनिपटलघुलागी * एकटकरहीं रूप अनुरागी
दो॰ निगम नीति कुलरीति करि, अरघ पांवडे देत ॥
बधुनसहितसुतपरिछिसब, चलींलवाइ निकेत ३४९॥
चारिसिंहासन सहज सुहाए * जनुमनोज निजहाथबनाए
तिन्हपरकुँअरि कुँअरबैठारे * सादर पाय पुनीत पषारे
धूप दीप नैबेद बेद बिधि * पूजेवरदुलहिनि मंगलनिधि
बारहि बार आरती करहीं * ब्यजनचारुचामरसिरढरहीं
बस्तु अनेक निछावरिहोहीं * भरीप्रमोद मातुसब सोहीं
पावा परम तत्त्वजनु जोगी * अमृतलहेउ जनुसंततरोगी

जनमरंकजनु पारस पावा ❋ अंधहिलोचन लाभसुहावा
मूक बदन जनु सारद छाई ❋ मानहु समर सूर जय पाई
दो० यहिसुखतें सतकोटिगुन, पावहिं मातु अनंद ।
भाइन्हसहित बिआहिघर, आए रघुकुलचंद ॥
लोकरीति जननी करहिं, बरदुलहिनिसकुचाहिं ।
मोदबिनोदबिलोकिबड, राममनहिं मुसुकाहिं ३५० ॥
देवपितर पूजे बिधि नीकी ❋ पूजींसकल बासना जीकी
सबहिं बंदिमागहिं बरदाना ❋ भाइन्हसहित रामकल्याना
अंतरहित सुर आसिष देहीं ❋ मुदितमातु अंचलभरिलेहीं
भूपति बोलि बराती लीन्हे ❋ जानबसन मनिभूषनदीन्हे
आयसुपाइराषि उर रामहि ❋ मुदितगएसबनिज२धामहि
पुरनर नारि सकल पहिराए ❋ घरघर बाजन लगे बधाए
जाचकजनजाचहिंजोइजोई ❋ प्रमुदितराउ देहिं सोइ सोई
सेवकसकलबजनिआनाना ❋ पूरन किए दान सनमाना
दो० देहिं असीस जोहारि सब, गावहिं गुनगन गाथ ॥
तबगुरु भूसुरसहितगृह, गवनकीन्हनरनाथ ३५१ ॥
जो बसिष्टअनुसासनदीन्ही ❋ लोकबेदबिधि सादरकीन्ही
भूसुर भीर देषि सब रानी ❋ सादरउठीं भाग्यबडजानी
पायपषारि सकलअन्हवाए ❋ पूजिभली बिधि भूपजेवांए
आदर दान प्रेम परि पोषे ❋ देतअसीस चले मन तोषे
बहुविधिकीन्हिगाधिसुतपूजा ❋ नाथमोहि सम धन्यनदूजा
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी ❋ रानिन्हसहितलीन्हिपगधूरी
भीतर भवन दीन्ह बरबासू ❋ मनजोगवतरहनृप रनिवासू

पूजे गुरुपद कमल बहोरी ❋ कीन्हिबिनयउरप्रीतिनथोरी
दो॰ बधुन्हसमेत कुमार सब, रानिन्ह सहित महीस ॥
पुनिपुनिवंदतगुरुचरन, देतअसीसमुनीस ३५२ ॥
विनयकीन्हिउर अतिअनुरागे ❋ सुत संपदा राषि सब आगे
नेगमागिमुनिनायकलीन्हा ❋ आसिरबादबहुताबिधिदीन्हा
उरधरिरामहि सीय समेता ❋ हरषिकीन्हगुरुगवननिकेता
बिप्र बधू सब भूप बोलाई ❋ चैल चारु भूषन पहिराई
बहुरिबोलाइसुआसिनिलीन्ही ❋ रुचिबिचारिपहिरावनि दीन्ही
नेगी नेग जोग सब लेहीं ❋ रुचिअनुरूप भूपमनि देहीं
प्रिय पाँहुने पूज्य जे जाने ❋ भूपति भलीभाँति सनमाने
देव देषि रघुवीर विवाहू ❋ बरषिप्रसून प्रसंसि उछाहू
दो॰ चले निसान बजाइ सुर, निज निज पुरसुषपाइ ॥
कहतपरसपररामजस, प्रेमनहृदयसमाइ ३५३ ॥
सबबिधिसबहिसमादिनरनाहू ❋ रहाहृदय भरि पूरि उछाहू
जहँ रनिवास तहाँ पगुधारे ❋ सहितबधूटिन्हकुँअरनिहारे
लिए गोदकरि मोद समेता ❋ कोकहिसकै भए सुष जेता
बधू सप्रेम गोद बैठारीं ❋ बारबारहिय हरषि दुलारीं
देषिसमाज मुदितरनिवासू ❋ सबकेउर अनंदकियो बासू
कहेउभूपजिमिभएउबिवाहू ❋ सुनिसुनिहरषहोइ सबकाहू
जनकराज गुन सीलबडाई ❋ प्रीति रीति संपदा सुहाई
बहुबिधिभूपभाटजिमिबरनी ❋ रानीसबप्रमुदितसुनिकरनी
दो॰ सुतन्ह समेत नहाइनृप, बोलिबिप्र गुरज्ञाति ॥
भोजनकीन्हअनेकबिधि, घरीपंचगइराति ३५४ ॥

मंगलगानकरहिंबरभामिनि ✻ भैसुषमूलमनोहर जामिनि
अचैपान सबकाहू पाए ✻ स्त्रगसुगंध भूषित छबिछाए
रामहि देषि रजायसु पाई ✻ निजनिजभवनचलेसिरनाई
प्रेमप्रमोद बिनोद बढाई ✻ समउ समाज मनोहरताई
कहिनसकहिं सतसारदसेसू ✻ बेद बिरंचि महेस गनेसू
सोमैं कहौं कवनबिधिबरनी ✻ भुमिनाग सिरधरै किधरनी
नृपसबभाँतिसबहिसनमानी ✻ कहिमृदु बचनबोलाईंरानी
बधू लरिकनी परघर आईं ✻ राषेहुनयन पलककी नाईं
दो॰ लरिकास्त्रमितउनींदबस, सयन करावहु जाइ ॥
असकहिंगेबिस्रामगृह, रामचरनचितलाइ ३५५ ॥
भूपबचन सुनिसहज सुहाए ✻ जटितकनकमनिपलँगडसाए
सुभगसुरभिपयफेन समाना ✻ कोमलकलित सुपेती नाना
उपबरहन बरबरनि न जाहीं ✻ स्त्रगसुगंध मनिमंदिर माहीं
रतनदीप सुठिचारुचँदोवा ✻ कहतनबनैजान जेहिंजोवा
सेजरुचिर रचि राम उठाए ✻ प्रेमसमेत पलँग पौढाए
अज्ञापुनिपुनिभाइन्हदीन्ही ✻ निजनिजसेजसयनतिन्हकीन्ही
देषि स्याम मृदुमंजुल गाता ✻ कहहिंसप्रेमबचन सबमाता
मारगजात भयावनि भारी ✻ केहिबिधितातताडकामारी
दो॰ घोरनिसाचरबिकटभट, समरगनहिं नहिंकाहु ॥
मारेसहितसहायकिमि, षलमारीच सुबाहु ३५६ ॥
मुनिप्रसादबलिताततुम्हारी ✻ ईस अनेक करवरैं टारी
मष रखवारी करि दुहुँभाई ✻ गुरुप्रसाद सब बिद्या पाई
मुनि तियतरी लगतपगधूरी ✻ कीरतिरही सुअनभरिपूरी

कमठ पीठिपबिकूट कठोरा ❋ नृपसमाजमहँसिवधनुतोरा
बिस्वबिजयजसजानकिपाई ❋ आएभवन ब्याहि सबभाई
सकलअमानुष करमतुम्हारे ❋ केवल कौसिक कृपा सुधारे
आजसुफलजगजनमहमारा ❋ देपितात बिधुबदन तुम्हारा
जेदिन गएतुम्हहि बिनु देषे ❋ तेबिरंचि जनि पारहिंलेषे

दो० रामप्रतोषीमातुसब, कहिबिनीतमृदुबयन ॥
सुमिरिसंभुगुरुबिप्रपद, किएनीदबसनयन २५७ ॥

नीदउबदन सोहसुठि लोना ❋ मनहुँसाँझ सरसीरुहसोना
घरघरकरहिं जागरन नारी ❋ देहिं परसपर मंगल गारी
पुरी बिराजति राजतिरजनी ❋ रानीकहहिंबिलोकहुसजनी
सुन्दर बधुन्ह सासुलै सोई ❋ फनिकन्हजनु सिरमनिउरगोई
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे ❋ अरुनचूड बर बोलन लागे
बंदिमागधन्हि गुनगनगाए ❋ पुरजन द्वारजोहारन आए
बंदि बिप्र सुरगुरु पितुमाता ❋ पाइअसीसमुदित सबभ्राता
जननिन्हिसादरबदननिहारे ❋ भूपति संग द्वार पग धारे

दो० कीन्हिसौचसबसहजसुचि, सरित पुनीत नहाइ ॥
प्रातक्रियाकरितातपहि, आए चारिउभाइ ॥ २५८ ॥

भूपबिलोकि लिए उर लाई ❋ बैठेहरषि रजायसु पाई
देखिराम सबसभा जुडानी ❋ लोचनलाभअवधि अनुमानी
पुनिबसिष्ठमुनिकौसिकआए ❋ सुभगआसनन्हिमुनिबैठाए
सुतन्हसमेत पूजि पग लागे ❋ निरषिरामदोउगुरुअनुरागे
कहहिंबसिष्ठधरम इतिहासा ❋ सुनहिमहीससहितरनिवासा
मुनिमनअगमगाधिसुतकरनी ❋ मुदितबसिष्ठ बिपुलबिधिबरनी

बोले बामदेउ सब साचीं * कीरतिकलितलोकतिहुँमाचं
सुनिआनंदभयउसब काहू * रामलषनउरअतिहिउछाहू
दो० मंगल मोदउछाह नित, जाहि दिवस एहिभाँति ।
उमगीअवधअनंदभरि, अधिकअधिकअधिकाति ३५९॥
सुदिनसाधिकल कंकनछोरे * मंगल मोद विनोदन थोरे
नितनवसुखसुरदेखिसिहाहीं * अवधजनमजाचहिंबिधिपाहीं
बिस्वामित्रचलननितचहहीं * रामसप्रेम बिनयबस रहहीं
दिनादिनसयगुनभूपतिभाऊ * देखि सराह महामुनिराऊ
माँगत बिदा राउ अनुरागे * सुतन्ह समेतठाढभएआगे
नाथ सकल संपदातुम्हारी * मैं सेवक समेत सुत नारी
करवसदा लरिकन्हपर छोहू * दरसन देतरहब मुनिमोहू
असकहिराउसहितसुतरानी * परेउचरनमुष आवनबानी
दीन्ह असीस बिप्रबहुभाँती * चलेनप्रीतिरीति कहिजाती
राम सप्रेम संग सब भाई * आयसु पाइ फिरे पहुँचाई
दो० राम रूप भूपति भगति, व्याह उछाह अनंद ।
जात सराहत मनहिमन, मुदितगाधिकुलचंद ३६०॥
बामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी * बहुरिगाधिसुत कथाबषानी
सुनिमुनिसुजसमनहिमन राऊ * बरनतआपन पुन्य प्रभाऊ
बहुरे लोग रजायसु भयऊ * सुतन्हसमेतनृपतिगृहगयेऊ
जहँतहँ रामब्याह सबगावा * सुजसपुनीतलोकतिहुँछावा
आये व्याहि रामघर जबतें * बसेंअनंद अवधसब तबतें
प्रभुबिआहजसभएउउछाहू * सकहिंनवरानिगिराअहिनाहू
कविकुलजीवनपावनजानी * रामसीय जसमंगल षानी

तेहि तें मैं कछु कहा वषानी ❋ करन पुनीतहेत निजवानी

छं० निजगिरापावनिकरनकारनरामजसतुलसीकह्यो ।
रघुबीरचरितअपारबारिधिपारकविकौनेलह्यो ॥
उपवीतब्याहउछाहमंगलसुनिजेसादरगावहीं ॥
वैदेहिरामप्रसादतेजनसर्वदासुषपावहीं ॥

सो० सियरघुबीर बिवाह, जेसप्रेमगावहिंसुनहिं मा०प०१०
तिन्हकहँसदाउछाह,मंगलायतनरामजस३६१ नबाह१ ॥

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने
प्रथमोसोपानःसमाप्तः ॥

ग्रंथ संख्या श्लोक ३११३
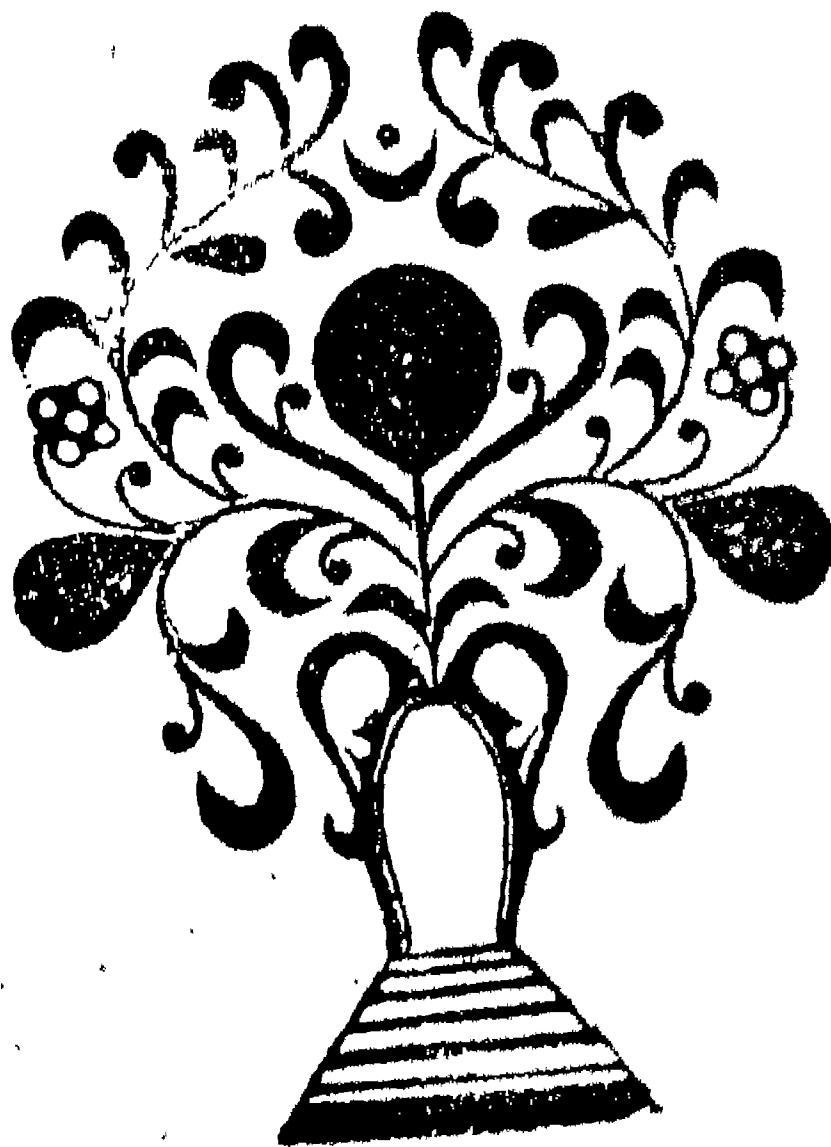
❋ शुद्धाशुद्ध पत्र बालकाण्ड २ ❋

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५८	१६	जान	जाने
५९	२०	श्रुत	श्रुति
	२३	काउ	कोउ
६०	२२	मस	मम
६१	२२	दहहा	दहहीं
६२	१६	जोह	जेहि
६३	६	वरना	वरनी
६५	२	ज	जे
७१	;	बाल	बोले
७३	१९	रध्र	रंध्र
७४	८	नी	नील
८१	८	दुरावानाहा	दुरावौंतोही
८१	६	कथे	कथै
८४	१	जा	जौं
८६	१४	मासा	त्रासा
१०३	१६	चल	चलै
१०४	६	आत	जाते
	१६	दंषव	देषति
१०५	३	सास	साप
११४	२	मंगन दाहन	मंगल लहहिन
१२१	६	स	सम
१२२	७	कहहि	कहहि हम
१२३	७	म	मानी
१२४	१६	मुन्हि	मुनिन्हि
१२६	१	मंग	भंग
१३५	४	विनात	विनीत
१३७	१५	परस	परसु
१४५	१४	सान	सानु
	१६	अभिमनि	अभिमन
१६२	१	प्रम	प्रेम
१६४	१५	हेत	हेतु
	१६	वाल	बोले
१६७	२२	कान्ह	कीन्ह

इति

बालकाण्ड ।

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	स्वामा	स्वामी
३	१	राज	साज
७	१६	सोहत	सोहन
१०	२	मरे	मोरें
१०	१०	मोर	मोरें
१२	१६	जविन	जेविनु
१२	१२	ज्ञान	ज्ञान
१३	१	धर	धरें
	७	जाई	जोई
	१७	प्रति	प्रीति
१४	१५	जपाहु	जपाहिं
	२२	दुहूँत	दुहूँते
३२	१६	नेवत	नेवते
	२०	सवा	सवो
	२२	जात चल	जात चले
३४	२	महस	महेस
	१६	रार	रारि
३६	२०	स्वामा	स्वामी
३८	२	राध	राधे
४१	२१	तेहिक	तेहिके
४२	११	तेह	तेही
४४	६	कहि	केहि
	१०	ज	जे
	११	त	ते
४७	१	जाम	जामि
५०	१३	चष	वेष
	१६	सर	सुर
	२०	घिरिन	गिरिते
५५	१८	म	मै
५५	१६	य	म
५७	६	रामसा	रामसो
५७	२१	श्र	श्रु

❋ श्रीः ❋

अथ रामायण अयोध्याकाण्ड ॥

॥ श्रीजानकी बल्लभोविजयते ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

श्लोक——बामांकेचबिभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके ॥ भालेबालबिधुर्गलेचगरलंयस्योरसिब्यालराट् ॥ सोयंभूतिबिभूषणः सुरबरः सर्बाधिपः सर्बदा ॥ सर्बः सर्बगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातुमां ॥ १ ॥ प्रसन्नतांयानगताभिषेकतस्तथानमम्लेबनबासदुःखतः ॥ मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्यमेसदास्तुसामंजुलमंगलप्रदा ॥ २ ॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितबामभागं ॥ पाणौमहासायकचारुचापंनमामिरामंरघुबंशनाथं ॥ ३ ॥

दो० श्रीगुरुचरन सरोजरज, निजमन मुकुर सुधारि।
बरनउँरघुबरबिमलजस, जोदायकफलचारि ॥ १ ॥

जबते राम ब्याहि घर आए ❀ नितनव मंगलमोद बधाए
भुअन चारिदस भूधरभारी ❀ सुकृतमेघ बरषहिं सुखबारी
रिधिसिधिसंपतिनदी सुहाई ❀ उमगिअवधअंबुधिकहँआई
मनिगनपुरनरनारिसुजाती ❀ सुचिअमोल सुंदर सबभाँती
कहिनजाइकछुनगराबिभूती ❀ जनुएतनिअबिरंचिकरतूती
सबबिधिसब पुरलोग सुखारी ❀ राम चन्द मुखचंद निहारी
मुदित मातु सबसखी सहेली ❀ फलितबिलोकिमनोरथबेली
रामरूप गुनसील सुभाऊ ❀ प्रमुदित होइदेखि सुनिराऊ

दो० सबकें उरअभिलाषअस, कहहिं मनाइ महेस ॥
आपु अछतजुबराजपद, रामहि देउनरेस ॥ १ ॥

एकसमयसबसहित समाजा ❋ राज सभा रघुराज बिराजा
सकल सुकृतमूरति नरनाहू ❋ रामसुजससुनिअतिहिउछाहू
नृपसबरहहिं कृपाअभिलाषे ❋ लोकपकरहिं प्रीतिरुपराषे
तिभुअनतीनिकालजगमाहीं ❋ भूरिभाग दसरथ समनाहीं
मंगल मूलराम सुत जासू ❋ जोकछुकहिअथोर सबतासू
रायसुभाय मुकुर करलीन्हा ❋ बदनबिलोकिमुकुटसमकीन्हा
श्रवनसमीप भए सितकेसा ❋ मनहुँ जरठपनअस उपदेसा
नृप जुबराज रामकहँ देहू ❋ जीवन जनम लाहुकिनलेहू

दो० यह बिचार उरआनिनृप, सुदिन सुअवसर पाइ ॥
प्रेमपुलकितन मुदितमन, गुरहि सुनाएउजाइ ॥ २ ॥

कहइभुआलसुनिअमुनिनायक ❋ भएरामसबबिधिसबलायक
सेवक सचिवसकल पुरबासी ❋ जेहमरे अरि मित्र उदासी
सबहिरामप्रियजेहिबिधिमोही ❋ प्रभुअसीसजनुतनधरिसोही
बिप्र सहित परिवार गोसाईं ❋ करहिंछोह सबरौरेहि नाईं
जेगुर चरन रेनु सिर धरहीं ❋ तेजनसकल बिभववसकरहीं
मोहिसमयहअनुभएउनदूजे ❋ सबपाएउँ रजपावनि पूजे
अबअभिलाष एक मनमोरें ❋ पूजिहि नाथअनुग्रह तोरें
मुनिप्रसन्न लषिसहज सनेहू ❋ कहेउ नरेस रजायसु देहू

दो० राजन राउर नामजस, सब अभिमत दातार ॥
फलअनुगामीमहिपमनि, मनअभिलाषतुम्हार ३ ॥

सबबिधिगुरुप्रसन्नजिअजानीं ❋ बोलेउराउर हँसि मृदुबानी

नाथराम करिअहि जुबराजू * कहिअकृपाकरिकरिअसमाजू
मोहिअछत यह होइ उछाहू * लहहिंलोग सब लोचनलाहू
प्रभुप्रसादसिवसबइ निबाहीं * यहलालसा एक मन माहीं
पुनिन सोचतनरहउकिजाऊ * जेहिन होइ पाछें पछिताऊ
सुनिमुनिदसरथबचनसुहाए * मंगल मोद मूलमन भाए
सुनुनृपजासुबिमुखपछिताहीं * जासुभजनबिनुजरनिनजाहीं
भएउतुम्हारतनयसोइस्वामी * राम पुनीत प्रेम अनुगामी
दो० बेगि बिलंबन करिअ नृप, साजिअ सबइसमाज॥
सुदिन सुमंगल तबहिंजब, रामहोहिं जुबराज॥ ४॥
मुदित महीपति मंदिरआए * सेवकसचिवसुमंत्र बोलाए
कहिजयजीवसीसतिन्हनाए * भूप सुमंगल बचन सुनाए
प्रमुदितमोहि कहेउगुरुआजू * रामहि रायदेहु जुबराजू
जौंपाँचहि मतलागइ नीका * करहुहरषिहियरामहिटीका
मंत्री मुदित सुनत प्रियबानी * अभिमतबिरवपरेउजनुपानी
बिनतीसचिवकरहिंकरजोरी * जिअहुजगतपतिबरिसकरोरी
जगमंगल भलकाजबिचारा * बेगिहि नाथन लाइअ बारा
नृपहिमोदसुनिसचिव सुभाषा * बढतबौंड जनुलहीं सुसाषा
दो० कहेउभूपमुनिराजकर, जोइजोइआयसुहोइ॥
रामराजअभिषेकहित, बेगिकरहुसोइसोइ॥ ५॥
हरषिमुनीस कहेउ मृदुबानी * आनहुसकलसुतीरथ पानी
औषध मूल फूल फल पाना * कहेनामगनि मंगल नाना
चामर चमर बसन बहुभाँती * रोमपाटपट अगनितजाती
मनिगन मंगल बस्तुअनेका * जोजगजोग भूप अभिषेका

बेदबिहितकहिसकल बिधाना * कहेउरचहुपुरबिबिधबिताना
सफल रसाल पूँगफल केरा * रोपहु बीथिन पुर चहुं फेरा
रचहु मंजुमनि चौकइ चारू * कहहु बनावन बेगि बजारू
पूजहु गनपति गुरुकुल देवा * सबबिधिकरहु भूमि सुरसेवा
दो० ध्वजपताकतोरनकलस, सजहुतुरगरथनाथ ॥
सिरधरिमुनिवरबचनसब, निजनिजकाजहिलाग ॥६॥
जोमुनीसजेहिआयसुदीन्हा * सोतेहिकाजप्रथमजनुकीन्हा
बिप्र साधु सुरपूजत राजा * करतरामहितमंगल काजा
सुनतराम अभिषेक सुहावा * बाजगहागह अवधबधावा
रामसीय तनसगुन जनाए * फरकहिं मंगल अंगसुहाए
पुलकि सप्रेमपरसपर कहहीं * भरतआगमनसूचक अहहीं
भए बहुतदिन अतिअवँसेरी * सगुनप्रतीत भेंटप्रिय केरी
भरतसरिसप्रियकोजगमाहीं * इहइसगुन फलदूसर नाहीं
रामहि बंधुसोच दिन राती * अंडनिकमठहृद उजेहि भांती
दो० यहिअवसर मंगलपरम, सुनि रहँसेउ रनिवास ॥
सोभतलषिबिधुबढतजनु, बारिधिबीचिबिलास ॥ ७ ॥
प्रथमजाइजिन्हबचनसुनाए * भूषनबसन भूरितिन्ह पाए
प्रेमपुलकितनमन अनुरागीं * मंगलकलससजन सबलागीं
चौंकइ चारु सुमित्रा पूरी * मनिमयबिबिधि भांतिअतिरूरी
आनँद मगन राम महँतारी * दिएदान बहुबिप्र हँकारी
पूजी ग्राम-देबि सुर नागा * कहे बहोरि देन बलि भागा
जेहि बिधिहोइ रामकल्यानू * देहुदया करि सो बरदानू
गावहिंमंगल कोकिलबयनी * बिधुबदनीमृगसावकनयनी

दो० रामराजअभिषेकसुनि, हियहरषेनरनारि ॥
लगेसुमंगलसजनसब, बिधिअनुकूलबिचारि ॥ ८ ॥
तब नरनाह बसिष्ठ बोलाए ❋ राम धाम सिषदेन पठाए
गुरु आगमनसुनत रघुनाथा ❋ द्वार आइ पद नाएउ माथा
सादर अरघ देइ घरआने ❋ सोरह भांतिपूजि सनमाने
गहे चरन सियसहित बहोरी ❋ बोले राम कमल करजोरी
सेवक सदन स्वामिआगमनू ❋ मंगलमूल अमंगल दमनू
तदपिउचितजनबोलिसप्रीती ❋ पठइअकाज नाथ असनीती
प्रभुताताजि प्रभु कीन्ह सनेहू ❋ भएउ पुनीत आजयहगेहू
आयसुहोइ सो करौं गोसांई ❋ सेवकलहइ स्वामि सेवकाई
दो० सुनिसनेह सानेबचन, मुनिरघुबरहिप्रसंस ॥
रामकसन तुम्हकहहु अस, हंसबंसअवतंस ॥ ९ ॥
बरनिराम गुन सील सुभाऊ ❋ बोलेप्रेम पुलकि मुनिराऊ
भूपसजेउ अभिषेकसमाजू ❋ चाहत देन तुम्हहि जुबराजू
रामकरहु सब संजम आजू ❋ जौंबिधिकुसलनिबाहइकाजू
गुरुसिखदेइ रायपहिं गयऊ ❋ रामहृदयअसबिस्मउभयऊ
जनमे एकसंग सब भाई ❋ भोजनसयन केलिलरिकाई
करन बेधउपबीत बिआहा ❋ संगसंग सबभए उछाहा
बिमलबंसयह अनुचित एकू ❋ बंधुबिहाय बडेहि अभिषेकू
प्रभुसप्रेम पछितानि सुहाई ❋ हरउभगत मनकैकुटिलाई
दो० तेहिअवसरआएलषन, मगन प्रेमआनन्द ॥
सनमाने प्रियबचनकहि, रघुकुलकैरवचन्द ॥ १० ॥
बाजहिबाजनबिबिधिबिधाना ❋ पुरप्रमोद नहिं जाइबखाना

भरतआगमनसकलमनावहिं ❋ आवहुवेगिनयनफलपावहिं
हाटबाट घरगली अथाई ❋ कहहिंपरसपर लोगलोगाई
कालिलगनभलिकेतिकबारा ❋ पूजिहिंविधिअभिलाषहमारा
कनकसिंहासन सीयसमेता ❋ बैठहिं राम होइचित चेता
सकलकहहिंकबहोइहिकाली ❋ बिघनमनावहिं देवकुचाली
तिन्हहिंसोहाइनअवधबधावा ❋ चोरहिं चंदिनिरातिन भावा
सारदबोलि बिनयसुरकरहीं ❋ बारहि बार पांय लइ परहीं
दो० बिपतिहमारिबिलोकिबडि, मातुकरिअसोइआज ।
रामजाहिंबनराजतजि, होइसकलसुरकाज ॥ ११ ॥
सुनिसुरबिनयठाढिपछिताती ❋ भइउँसरोजबिपिनहिमराती
देषिदेव पुनि कहहिं निहोरी ❋ मातुतोहिनाहिं थोरिवषोरी
बिसमय हरषरहित रघुराऊ ❋ तुम्हजानहु सबरामप्रभाऊ
जीवकरम बससुष दुषभागी ❋ जाइअअवधदेव हितलागी
बारबारगहि चरन सकोची ❋ चलीबिचारिबिबुधमतिपोची
ऊँचनिवास नीचि करतूती ❋ देषिनसकहिं पराइ बिभूती
आगिलकाजबिचारि बहोरी ❋ करिहहिंचाहकुसलकबिमोरी
हरषिहृदय दसरथ पुरआई ❋ जनुग्रहदसा दुसह दुषदाई
दो० नाम मंथरा मंदमति, चेरी कैकै केरि ।
अजसपेटारी ताहिकरि, गई गिरामतिफेरि ॥ १२ ॥
देषि मंथरा नगर बनावा ❋ मंजुलमंगल बाज बधावा
पूछेसि लोगन्ह काहउछाहू ❋ रामतिलक सुनिभाउरदाहू
करैबिचार कुबुद्धि कुजाती ❋ होइअकाजकवनबिधिराती
देषिलागिमधुकुटिलाकिराती ❋ जिमिगँवतकइलेउँ केहिभांती

भरतमातुपहिंगइ बिलषानी * काअनमनिहसिकहहँसिरानी
ऊतरदेइ न लेइ उसाँसू * नारि चरितकरिढारइआँसू
हँसि कहरानिगालबड़ तोरे * दीन्हलषनासिषअसमनमोरे
तबहुँनबोलचेरिबडिपापिनि * छाडइस्वासकारि जनुसाँपिनि

दो० सभयरानि कहकहसिकिन, कुसलराममहिपाल ॥
लषनभरत रिपुदवनसुनि, भाकुबरी उरसाल ॥ १३ ॥

कतसिषदेइ हमहिकोउमाई * गालकरब केहिकर बलपाई
रामहिछाडिकुसलकेहिआजू * जिन्हहिं जनेस देइ जुबराजू
भयउकौसिलहिबिधिअतिदाहिन * देषतगरब रहत उरनाहिन
देषहु कसनजाइ सब सोभा * जोअवलोकिमोरमनछोभा
पूतबिदेस न सोच तुम्हारे * जानतिहहु बस नाह हमारे
नींदबहुत प्रियसेज तुराई * लषहुन भूपकपट चतुराई
सुनिप्रियबचनमलिनमन जानी * झुकीरानिअबरहु अरगानी
पुनिअसकबहुकहसिघरफोरी * तबधरिजीभ कढावौं तोरी

दो० काने षोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि ॥
तियाबिसेषिपुनिचेरिकहि, भरतमातु मुसकानि ॥ १४ ॥

प्रियबादिनिसिषदीन्हिउँतोही * सपनेहु तोपरकोपन मोही
सुदिन सुमंगल दायक सोई * तोरकहाफुरजेहि दिन होई
जेठस्वामि सेवक लघुभाई * यह दिनकरकुलरीतिसुहाई
रामतिलक जौं साँचेहु काली * देउँमागुमन भावत आली
कौसल्या समसब महतारी * रामहिसहजसुभायपिआरी
मोपर करहिं सनेह बिसेषी * मैं करि प्रीति परीछा देषी
जौंबिधिजनम देइकरि छोहू * होहु राम सियपूत पतोहू

प्रानतेंअधिकरामप्रिय मोरें ❋ तिन्हकतिलकछोभकसतोरें
दो॰ भरतसपथतोहिसत्यकहु, परिहरिकपटदुराउ ॥
हरषसमयबिसमउकरासि, कारन मोहि सुनाउ ॥१५॥
एकहि बार आस सब पूजी ❋ अबकछुकहबजीभकरिदूजी
फोरइ जोग कपार अभागा ❋ भलेउकहतदुपरोरेहि लागा
कहहिं झूठिफुरि बात बनाई ❋ तेप्रियतुम्हहिं करुइ में माई
हमहुँकहबअबठकुरसोहाती ❋ नाहितमौनरहब दिनराती
करिकुरूपाबिधिपरबस कीन्हा ❋ बवासोलुनिअलहिअजोदीन्हा
कोउन्नृपहोउहमहिकाहानी ❋ चेरिछाडि अबहोबाकिरानी
जारइ जोग सुभाउ हमारा ❋ अनभलदेखिनजाइ तुम्हारा
ताते कछुकबात अनुसारी ❋ छमिअदेबिबडिचूकहमारी
दो॰ गूढकपटप्रियबचनसुनि, तीयअधरबुधिरानि ॥
सुरमायाबसबैरिनिहि, सुहृदजानिपतिआनि ॥ १६ ॥
सादरपुनिपुनिपूछति ओही ❋ सबरीगान मृगीजनु मोही
तसिमतिफिरीअहइजसिभावी ❋ रहँसीचेरि घातभलिफावी
तुम्ह पूँछहु मैं कहतडेराऊं ❋ धरेहु मोर घर फोरी नाऊँ
सजिप्रतीतिबहुबिधिगढिछोली ❋ अवधसाढसातीजनु बोली
प्रियसियरामकहातुम्ह रानी ❋ रामहितुम्हप्रियसोफुरिबानी
रहा प्रथम अबते दिन बीते ❋ समउफिरे रिपुहोहिंपिरीते
भानुकमलकुलपोषनि हारा ❋ बिनुजलजारिकरइसो छारा
जरितुम्हारिचहसवति उपारी ❋ रूँधहु करि उपाउ बरवारी
दो॰ तुम्हहिनसोचसोहागबल, निजबसजानहुराउ ॥
मनमलीनमुहँमीठन्नृप, राउरसरलसुभाउ ॥ १७ ॥

चतुर गँभीर राम महतारी ❋ बीचपाइ निज बात सँवारी
पठए भरत भूप ननिऔरें ❋ राम मातु मत जानब रौरें
सेवहिंसकलसवतिमोहिनीकें ❋ गरबित भरत मातुबलपीकें
सालतुम्हार कौसलहि माई ❋ कपटचतुर नहिं होइ जनाई
राजहिं तुमपर प्रेम बिसेषी ❋ सवतिसुभाउसकइ नहिंदेषी
रचिप्रपंच भूपहि अपनाई ❋ रामतिलकहितलगन धराई
यहकुलउचितरामकहँटीका ❋ सबहिसोहाइमोहिसुठिनीका
आगिलबातसमुझिडरमाही ❋ देउदैउफिरि सोफलओही
दो॰ रचिपचिकोटिककुटिलपन, कीन्हेसिकपटप्रबोध।
कहेसिकथासतसवतिकै, जेहिबिधिबाढबिरोध ॥१८॥
भावी बस प्रतीति उर आई ❋ पूँछरानि पुनि सपथ देवाई
कापूँछहुतुमअजहुँ न जाना ❋ निजहितअनहितपसुपहिंचाना
भएउपाषदिन सजतसमाजू ❋ तुम्हपाईसुधिमोहिसनआजू
षाइअपहिरिअ राज तुम्हारें ❋ सत्य कहेंनहिं दोष हमारें
जौं असत्यकछु कहबबनाई ❋ तौबिधिदइहि हमहिसजाई
रामहितिलककालिजौभयऊ ❋ तुमकहँबिपतिबीजबिधिबयऊ
रेष षचाइकहउँ बल भाषी ❋ भामिनिभइहु दूधकी माषी
जौसुतसहित करहु सेवकाई ❋ तौ घर रहहु न आन उपाई
दो॰ कद्रूबिनतहि दीन्हदुष, तुम्हहि कौसिलादेव ॥
भरत बंदि गृह सेइहहिं, लषनरामकेनेव ॥ १९ ॥
कैकयसुता सुनत कटुबानी ❋ कहिनसकइकछुसहमिसुषानी
तनपसेवकदली जिमिकाँपी ❋ कुबरीदसन जीभतब चाँपी
कहि२कोटिककपटकहानी ❋ धीरजधरहु प्रबोधिसि रानी

कीन्हिसिकठिनपढाइकुपाठू ❋ फिरिननवइजिमिउकठिकुकाठू
फिराकरमाप्रियलागि कुचाली ❋ बकिहिमराहइ मानिमराली
सुनुमंथरा बात फुरि तोरी ❋ दहिनिआंपिनितफरकइमोरी
दिनप्रतिदेषउँराति कुसपने ❋ कहउंनतोहि मोहबमअपने
कहाकरौं साषि सूध सुभाऊ ❋ दाहिनवाम न जानउँ काऊ
दो० अपनेचलतनआजलागि, अनभलकाहुककीन्ह ॥
केहिअघएकहिबारमोहि, दइअदुसहदुपदीन्ह ॥२०॥
नैहरजनम भरब बरु जाई ❋ जिअतिनकरबमवतिमेवकाई
अरिबसदैउजिआवतजाही ❋ मरननीक तेहिजीवन चाही
दीनबचन कहबहुबिधिरानी ❋ सुनिकुवरी तियमाया ठानी
असकसकहहुमानिमनऊना ❋ सुषसोहागतुमकहंदिनदूना
जेहिराउरअतिअनभलताका ❋ सोइपाइहियहफलपरिपाका
जबतेकुमतसुनामैंस्वामिनि ❋ भूषनबासरनींद नजामिनि
पूँछेउगुनिन्हरेषतिन्हषाँची ❋ भरतभुआलहोहिं यहमाँची
भामिनिकरहुतकहउँउपाऊ ❋ है तुम्हरी सेवा बम राऊ
दो० परौंकूपतुअ बचनपर, सकौं पूत पति त्यागि ॥
कहसिमोरदुखदेखिबड, कसनकरबहितलागि ॥२१॥
कुबरी करि कबूलि कैकेई ❋ कपट छुरी उर पाहन टेई
लषइनरानिनिकट दुखकैसे ❋ चरइहरिततिन बलपसु जैसे
सुनत बात मृदुअंत कठोरी ❋ देतिमनहु मधु माहुर घोरी
कहइचेरिसुधिअहइकिनाहीं ❋ स्वामिनिकहिहुकथामोहिपाहीं
दुइबरदान भूप सन थाती ❋ माँगहु आज जुडावहु छाती
सुतहि राज रामहि बनबासू ❋ देहुलेहु सब सवति हुलासू

भूपति रामसपथ जबकरई ❋ तबमाँगेहु जेहिबचननटरई
होइअकाज आजानिसिबीतें ❋ बचनमोर प्रियमानहु जीतें
दो० बडकुघात करिपातकिनि कहेसि कोपगृहजाहु ॥
काजसँवारेहुसजगसब, सहसा जनि पतिआहु ॥ २२ ॥
कुबरिहिरानिप्रानप्रियजानी ❋ बारबार बडिबुद्धि बखानी
तोहिसम हितनमोर संसारा ❋ बहेजात कइ भइसि अधारा
जौंबिधि पुरबमनोरथ काली ❋ करौंतोहि चषपूतरि आली
बहुबिधि चेरिहि आदर देई ❋ कोप भवन गवनी कैकेई
बिपति बीज बरषारितु चेरी ❋ भुइँभइ कुमतिकइकई केरी
पाइकपटजल अंकुर जामा ❋ बरदो उदलदुषफलपरिनामा
कोपसमाजसाजि सब सोई ❋ राजकरतनिजकुमतिबिगोई
राउर नगरकोलाहल होई ❋ यहकुचालि कछुजाननकोई
दो० प्रमुदितपुरनरनारिसब, सजाहिंसुमंगल चार ॥
एकप्रबिसहिं एकनिर्गमहिं, भीरभूपदरबार ॥ २३ ॥
बालसखा सुनिहियहरषाहीं ❋ मिलिदसपाँचरामपहिंजाहीं
प्रभु आदरहिं प्रेमपहिचानी ❋ पूँछहिं कुसलषेम मृदुबानी
फिरहिंभवनप्रियआयसुपाई ❋ करत परसपर राम बडाई
को रघुबीर सरिस संसारा ❋ सील सनेह निबाहनिहारा
जेहि२जोनिकरमबसभ्रमहीं ❋ तहँतहँ ईस देउ यह हमहीं
सेवक हमस्वामी सियनाहू ❋ होहु नात यह ओर निबाहू
असअभिलाषनगरसबकाहू ❋ कैकयसुता हृदयअति दाहू
को न कुसंगति पाइ नसाई ❋ रहै न नीच मते चतुराई
दो० साँझसमयसानंदनृप, गयउकैकईगेह ।
गवननिठुरतानिकटकिय, जनुधरिदेहसनेह ॥ २४ ॥

कोप भवनसुनिसकुचे राऊ ❋ भयबसअगहुडपरइन पाऊ
सुरपतिबसइ बाँहबल जाकें ❋ नरपतिसकलरहहिंरुष ताकें
सोसुनितियरिसगएउसुषाई ❋ देषहु कामप्रताप बडाई
सूलकुलिसअसिअँगवनिहारे ❋ तेरतिनाथ सुमन सरमारे
सभय नरेस प्रियापहिंगएऊ ❋ देषिदसादुष दारुन भयऊ
भूमि सयन पट मोटपुराना ❋ दिएडारितन भूषन नाना
कुमतिहिकसिकुबेषताफाबी ❋ अनअहिवातसूचजनुभावी
जाइनिकटनृपकहमृदुबानी ❋ प्रानप्रियाकेहिहेतु रिसानी

छं० केहिहेतुरानिरिसानिपरसतपानिपतिहिनेवारई ॥
मानहुसरोषभुअंगभामिनि बिषमभाँतिनिहारई ॥
दोउबासनारसनादसनवर मरमठाहरदेषई ॥
तुलसीनृपति भवतव्यताबस कामकौतुकलेषई ॥

सो० बारबारकहराउ, सुमुषिसुलोचनिपिकबचनि ॥
कारनमोहिसुनाउ, गजगामिनिनिजकोपकर ॥२५॥

अनहिततोरप्रियाकेइकीन्हा ❋ केहिदुइसिरकेहि जमचहलीन्हा
कहु केहि रंकहि करौं नरेसू ❋ कहुकेहिनृपहिनिकासउँदेसू
सकौंतोर अरिअमरउमारी ❋ काहकीट बपुरे नर नारी
जानसि मोर सुभाव बरोरू ❋ मनतव आननचंद चकोरू
प्रियाप्रान सुत सरबस मोरें ❋ परिजन प्रजा सकलबसतोरें
जौंकछुकहउँकपटकरितोही ❋ भामिनिरामसपथसतमोही
बिहँसिमाँगुमनभावतिबाता ❋ भूषनसजहि मनोहरगाता
घरी कुघरी समुझि जियदेषू ❋ बेगि प्रियापरिहरहि कुबेषू

दो० यहसुनिमनगुनिसपथबडि, बिहँसिउठीमतिमंद ॥
भूषनसजतिबिलोकिमृग, मनहुकिरातिनिफंद ॥२६॥

पुनिकहराउसुहृदजिअजानी * प्रेमपुलकिमृदु मंजुल बानी
भामिनिभएउ तोरमनभावा * घरघरनगर अनंद बधावा
रामहि देउँ कालि जुबराजू * सजहिसुलोचनिमंगलसाजू
दलकिउठेउसुनिहृदयकठोरू * जनुछुइगएउपाकबर तोरू
ऐसिउपीर बिहाँसि उर गोई * चोरनारिजिमिप्रगटिनरोई
लषीन भूप कपट चतुराई * कोटिकुटिलमनिगुरुपढाई
यद्यपिनीति निपुन नरनाहू * नारिचरितजलनिधिअवगाहू
कपट सनेह बढाइ बहोरी * बोलीबिहँसिनयनमुहँ मोरी

दो॰ मागुमागु पै कहहु पिय, कबहुँन देहु नलेहु ॥
देनकहेहुबरदानदुइ, तेउपावतसंदेहु ॥ २७ ॥

जानेउँमरमराउहँसि कहई * तुम्हहिंकोहाबपरमप्रियअहई
थातीराखिनमाँगिहु काऊ * बिसरिगयउमोहिभोरसुभाऊ
झूँठेहुँ हमहिंदोस जनिदेहू * दुइकैचारि माँगि मकुलेहू
रघुकुलरीति सदा चलिआई * प्रानजाहु बरुबचन नजाई
नहिंअसत्यसमपातक पुंजा * गिरिसमहोहिंकिकोटिकगुंजा
सत्य मूल सब सुकृतसुहाए * वेदपुरान बिदित मनुगाए
तेहिपरराम सपथ करिआई * सुकृत सनेह अवधिरघुराई
बातदिढाइकुमति हँसिबोली * कुमतकुबिहँगकुलह जनुषोली

दो॰ भूपमनोरथसुभगवन, सुष सुबिहंगसमाज ।
भिल्लनिजिमिछाडनचहति, वचनभयंकरबाज ॥ २८ ॥

सुनहु प्रानप्रियभावतजीका * देहुएक बरभरतहि टीका
मागौं दूसर बर करजोरी * पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी
तापस वेषविसेषि उदासी * चौदहबरिस रामबनवासी

सुनिमृदुबचन भूप हियसोकू ❋ ससिकर छुअत बिकल जिमि कोकू
गएउ सहमि नहिं कछु कहि आवा ❋ जनु सचान बन झपटे उ लावा
बिवरन भएउ निपट नरपालू ❋ दामिनि हनेउ मनहु तरु तालू
माथे हाथ मूदि दोउ लोचन ❋ तन धरि सोच लाग जनु सोचन
मोर मनोरथ सुरतरु फूला ❋ फरत करिनि जिमि हनेउ समूला
अवध उजारि कीन्ह कैकेई ❋ दीन्हिसि अचल बिपति कै नेई

दो॰ कवने अवँसर का भएउ, गयउँ नारि बिस्वास ॥
जोग सिद्धि फल समय जिमि, जतिहि अविद्या नास ॥ २९ ॥

एहि बिधि राउ मनहि मन झांषा ❋ देषि कुभांति कुमति मन मांषा
भरत कि राउर पूत न होहीं ❋ आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं
जो सुनि सर अस लाग तुम्हारें ❋ काहे न बोलेहु बचन सभारें
देहु उतर अरु कहहु कि नाहीं ❋ सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं
देन कहेहु अब जनि बर देहू ❋ तजहु सत्य जग अप जस लेहू
सत्य सराहि कहेहु बरदेना ❋ जानेहु लेइहि मांगि चबेना
सिबि दधीच बलि जो कछु भाषा ❋ तन धन तजेउ बचन पन राषा
अति कटु बचन कहति कैकेई ❋ मानहु लोन जरे पर देई

दो॰ धरम धुरंधर धीर धरि, नयन उघारे राय ॥
सिर धुनि लीन्हि उसास असि, मारेसि मोहि कुठाय ३०

आगे दीषि जरति रिस भारी ❋ मनहु रोष तरवारि उघारी
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई ❋ धरि कुबरी पर सान बनाई
लषी महीप कराल कठोरा ❋ सत्य कि जीवन लेइहि मोरा
बोले राउ कठिन करि छाती ❋ बानी सबिनय तासु सोहाती
प्रिया बचन कस कहसि कुभांती ❋ भीरु प्रतीति प्रीति करि हाती

मोरे भरत रामदुइ आँषी * सत्यकहउँकरि संकर साषी
अवसि दूतमैं पठउब प्राता * ऐहिंबेगि सुनतदोउभ्राता
सुदिनसोधिसबसाज सजाई * देउँभरत कहँ राज बजाई
दो० लोभन रामहि राजकर, बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बडछोटबिचारिजिय, करतरहेउँनृपनीति ॥ ३१ ॥
रामसपथ सतकहउँ सुभाऊ * राममातुकछु कहेउनकाऊ
मैंसबकीन्हतोहि बिनु पूछे * तेहिते परेउ मनोरथ छूछे
रिसपरिहरुअब मंगल साजू * कछु दिनगएभरत जुबराजू
एकहिबातमोहि दुष लागा * बरदूसर असमंजस मागा
अजहूँहृदयजरततोहि आँचा * रिसपरिहाँसाकिसाँचेहुसाँचा
कहु तजि रोष राम अपराधू * सबकोउकहइरामसुठिसाधू
तुहूँसराहसि करसि सनेहू * अबसुनि मोहिंभएउ संदेहू
जासुसुभाउअरिहुं अनुकूला * सोकिमिकरिहिमातुप्रतिकूला
दो० प्रिया हाँसरिस परिहरहि, मागु बिचारि बिबेक ॥
जेहिदेषौं अब नयन भरि, भरतराजअभिषेक ॥३२॥
जिऐमीनबरु बारि बिहीना * मनिबिनुफनिकजिएदुषदीना
कहउँसुभाउनछलमनमाहीं * जीवनमोर राम बिनु नाहीं
समुझिदेषुजियप्रिया प्रबीना * जीवन रामदरस आधीना
सुनिमृदुबचनकुमतिअतिजरई * मनहुअनलआहुति घृतपरई
कहइकरहुकिनकोटि उपाया * इहाँनलागिहि राउरि माया
देहुकिलेहु अजसकरि नाहीं * मोहिनबहुत परपंच सुहाहीं
राम साधुतुम्हसाधु सयाने * राममातु भलिसबपहिचाने
जसकौसिलामोर भलताका * तसफल उन्हहिदेउँकरिसाका

दो० होत प्रात मुनिवेषधरि, जौं न राम बन जाहिं ॥
मोरमरन राउरअजस, नृपसमुझिअमनमाहिं ॥३३॥

असकहिकुटिलभईउठिठाढी ❋ मानहु रोष तरंगिनि बाढी
पाप पहार प्रगट भइ सोई ❋ भरीक्रोधजल जाइन जोई
दोउवरकूल कठिन हठधारा ❋ भँवर कूबरी बचन प्रचारा
ढाहति भूपरूप तरु मूला ❋ चलीविपतिबारिधिअनुकूला
लषी नरेस बात सबसाची ❋ तियमिससीचसीसपरनाची
गहिपदबिनयकीन्हि बैठारी ❋ जनिदिनकरकुलहोसिकुठारी
मागुमाथ अबहीं देउँतोही ❋ रामबिरह जनि मारसिमोही
राषुराम कहँजेहितेहिभांती ❋ नाहित जरिहि जनम भरिछाती

दो० देषी ब्याधि असाधिनृप, परेउ धरनि धुनिमाथ ॥
कहत परमआरत बचन, रामराम रघुनाथ ॥३४॥

ब्याकुलराउसिथिलसबगाता ❋ करिनिकलपतरुमनहुँनिपाता
कंठ सूष मुष आवन बानी ❋ जनुपाठीन दीनबिनु पानी
पुनि कहकटु कठोर कैकेई ❋ मनहु घाय महमाहुर देई
जौं अंतहुअस करतब रहेऊ ❋ मागुमागु तुम्हकेहिबल कहेऊ
दुइकिहोंहिंएकसमयभुआला ❋ हसबठठाइ फुलाउब गाला
दानिकहाउब अरुकृपनाई ❋ होइकि षेम कुसल रौताई
छाडहुबचनकि धीरज धरहू ❋ जनिअबलाजिमि करुनाकरहू
तनतियतनयधामधनधरनी ❋ सत्यसंधकहँत्रिनसम बरनी

दो० मरम बचनसुनि राउकह, कहु कछुदोषन तोर ॥
लागेउतोहिपिसाचजिमि, कालकहावतमोर ॥ ३५॥

चहतन भरत भूपपद भोरे ❋ बिधिबसकुमतिबसीजियतोरे

सोसब मोर पाप परिनामू ❀ भयउ कुठाहर जेहिं बिधि बामू
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई ❀ सब गुनधाम राम प्रभुताई
करिहहिं भाइ सकल सेवकाई ❀ होइहि तिहुँपुर राम बड़ाई
तोर कलंक मोर पछिताऊ ❀ मुएहु नमिटिहि न जाइहि काऊ
अब तोहि नीक लाग करु सोई ❀ लोचन वोट बैठु मुहँ गोई
जब लगि जिअउँ कहउँ कर जोरी ❀ तब लगि जनि कछु कहसि बहोरी
फिरि पछितैहसि अंत अभागी ❀ मारसि गाइ नहारू लागी
दो० परेउ राउ कहि कोटि बिधि, काहे करसि निदान ॥
कपट सयानि न कहति कछु, जागति मनहु मसान ॥३६॥
रामराम रट बिकल भुआलू ❀ जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू
हृदय मनाव भोर जनि होई ❀ रामहि जाइ कहइ जनि कोई
उदय करहु जनि रबि रघुकुलगुर ❀ अवध बिलोकि सूल होइहि उर
भूप प्रीति कैकइ कठिनाई ❀ उभय अवधि बिधि रची बनाई
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा ❀ बीना बेनु संख धुनि द्वारा
पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक ❀ सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक
मंगल सकल सोहाहिं न कैसे ❀ सहगामिनिहि बिभूषन जैसे
तेहि निसि नींद परी नहिं काहू ❀ रामदरस लालसा उछाहू
दो० द्वार भीर सेवक सचिव, कहहिं उदित रबि देखि मा०पा० ११
जागेउ अजहुँ न अवधपति, कारन कवन बिसेखि ॥३७॥
पछिले पहर भूप नित जागा ❀ आज हमहि बड़ अचरज लागा
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई ❀ कीजिअ काज रजायसु पाई
गये सुमंत्र तब राउर पाहीं ❀ देखि भयावन जात डेराहीं
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा ❀ मानहु बिपति बिषाद बसेरा

पूछे कोउन ऊतर देई ❋ गए जेहिभवन भूप कैकेई
कहिजयजीवबैठ सिरनाई ❋ देखिभूप गतिगएउ सुखाई
सोचबिकलबिबरनमहिपरेऊ ❋ मानहुँकमल मूलपरिहरेऊ
सचिव सभीत सकैनहिपूछी ❋ बोली असुभ भरीसुभछूछी
दो० परीन राजहिं नींद निसि, हेतु जान जगदीस ॥
रामराम रटि भोर किय, कहइनमरममहीस ॥३८॥
आनहु रामहि बेगि बोलाई ❋ समाचार तब पूँछहु आई
चलेउसुमंत्रराय रुखजानी ❋ लखीकुचालिकीन्हिकछुरानी
सोचविकल मगपरइन पाऊ ❋ रामहिबोलिकहिहिकाराऊ
उरधरि धीरज गएउदुआरे ❋ पूछहिंसकल देखिमन मारे
समाधान करिसो सबहीका ❋ गयउजहाँदिनकरकुलटीका
रामसुमंत्रहि आवत देखा ❋ आदरकीन्ह पितासमलेखा
निरखिबदन कहिभूप रजाई ❋ रघुकुलदीपहि चलेउलेवाई
रामकुभाँतिसचिवसँगजाहीं ❋ देखिलोगजहँतहबिलखाहीं
दो० जाइदीख रघुबंस मनि, नरपति निकट कुसाज ॥
सहमिपरेउ लखिसिंघिनिहि, मनहु वृद्धगजराज ३९॥
सूखहिं अधर जरइ सबअंगू ❋ मनहु दीनमनिहीन भुअंगू
सरुष समीप दीषि कैकेई ❋ मानहु मीचघरी गनिलेई
करुना मयमृदु राम सुभाऊ ❋ प्रथमदीषदुषसुना न काऊ
तदपिधीरधरिसमउ बिचारी ❋ पूछीमधुर बचन महतारी
मोहिकहुमाततातदुष कारन ❋ करिअजतन जेहिहोइनिवारन
सुनहु राम सब कारन एहू ❋ राजहि तुमपर बहुत सनेहू
देनकहेन्हिमोहिदुइबरदाना ❋ मांगेउजोकछुमोहिसोहाना

सो सुनिभएउ भूपउरसोचू ※छाडिनसकहिंतुम्हारसकोच
दो० सुतसनेह इत बचन उत, संकट परेउ नरेस ॥
सकहुत आयसु धरहु सिर, मेटहु कठिन कलेस ४०।
निधरक बैठिकहै कटुबानी ※सुनतकठिनताअतिअकुलानी
जीभकमान बचन सरनाना ※ मनहुमहिपमृदुलच्छसमाना
जनु कठोर पनधरे सरीरू ※ सिषइधनुष बिद्या बरबीरू
सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई ※ बैठिमनहुतन धरिनिठुराई
मनमुसुकाइँ भानुकुल भानू ※ रामसहज आनंदनिधानू
बोलेबचन बिगत सब दूषन ※ मृदुमंजुलजनुबाग बिभूषन
सुनुजननीसोइसुतबडभागी ※ जोपितुमातुबचनअनुरागी
तनय मातु पितुतोषनिहारा ※ दुर्लभजननि सकल संसारा
दो० मुनिगनमिलन बिसेषिबन, सबहिभाँतिहितमोर ॥
तेहिमहँपितुआयसुबहुरि, सम्मत जननी तोर ॥४१॥
भरतप्रानप्रिय पावहिं राजू ※ बिधिसबबिधिमोहिसन्मुषआजू
जौं न जाउँबनऐसहु काजा ※प्रथमगनिअमोहिमूढसमाजा
सेवहि अरंडकलपतरुत्यागी ※परिहरिअमृतलेहिंविषमाँगी
ते उनपायअससमउ चुकाहीं※ देषुविचारि मातुमन माहीं
अब एक दुषमोहि बिसेषी ※ निपटबिकलनरनायकदेषी
थोरेहिबात पितहिदुष भारी※होतिप्रतीतिनमोहिमहँतारी
राउधीर गुनउदधि अगाधू ※ भामोहितेकछुबड अपराधू
जातेमोहिन कहतकछु राऊ ※ मोरिसपथतोहिकहु सतिभाऊ
दो० सहजसरल रघुबरबचन, कुमतिकुटिल करिजान ॥
चलइजोंक जिमिबक्रगति, यद्यपिसलिलसमान ४२॥

रहँसी रानि रामरुष पाई ❋ बोली कपट सनेह जनाई
सपथतुम्हारभरतकइआना ❋ हेतुन दूसर मैं कछु जाना
तुम्हअपराधजोगनहितताता ❋ जननीजनक बंधुसुपदाता
रामसत्य सबजोकछु कहहू ❋ तुम्हपितुमातुबचनरतअहहू
पितहिंबुझाइ कहहु बलिसोई ❋ चौथेपन जेहिअजसन होई
तुम्हसमसुअनसुकृतजेहिदीन्हे ❋ उचितनतासुनिरादरकीन्हे
लागहिं कुमुषबचन सुभकैसे ❋ मगह गयादिक तीरथजैसे
रामहि मातु बचन सब भाए ❋ जिमिसुरसरिगतसलिलसुहाए
दो० गइमुरछा रामहि सुमिरि, नृपफिरि करवटलीन्हि ॥
सचिवरामआगमनकहि, बिनयसमयसमकीन्हि ४३॥
अवनिपअकनिरामपगधारे ❋ धरिधीरज तबनयन उघारे
सचिव सँभारि राव बैठारे ❋ चरनपरत नृपराम निहारे
लिए सनेह बिकल उरलाई ❋ गइमनिमनहुफनिकफिरिपाई
रामहि चितइ रहेउ नरनाहू ❋ चला बिलोचनबारि प्रबाहू
सोकबिबसकछु कहइनपारा ❋ हृदयलगावत बारहिं बारा
बिधिहिमनावराउमनमाहीं ❋ जेहिरघुनाथनकानन जाहीं
सुमिरिमहेसहि कहइनिहोरी ❋ बिनतीसुनहुसदासिवमोरी
आसुतोष तुहम्अवढर दानी ❋ आरातिहरहु दीनजनजानी
दो० तुम्ह प्रेरक सबके हृदय, सोमति रामहि देहु ॥
बचन मोरि तजिरहहिं घर, परिहरिसीलसनेहु ॥४४॥
अजसहोउजगसुजसनसाऊ ❋ नरकपरौं बरुसुरपुर जाऊ
सबदुष दुसह सहावहु मोहीं ❋ लोचन वोटराम जनि होहीं
असमनगुनइराउ नहिंबोला ❋ पीपरपात सरिसमन डोला

रघुपतिपितहि प्रेमबसजानी * पुनिकछुकहिहिमातुअनुमानी
देसकाल अवँसर अनुसारी * बोलेबचन बिनीत बिचारी
तात कहौं कछुकरौं ढिठाई *अनुचितछमबजानिलरिकाई
अतिलघुबातलागि दुषपावा * काहुनमोहिकहिप्रथमजनावा
देषि गोसाँइहि पूछिउँमाता * सुनिप्रसंगभए सीतलगाता
दो० मंगलसमय सनेहबस, सोचपरिहरिअतात ।
आयसुदेइअहरषि हिय, कहिपुलके प्रभुगात ४५ ॥
धन्य जनम जगतीतलतासू * पितहिप्रमोदचरितसुनिजासू
चारिपदारथ करतल ताके * प्रियपितुमातुप्रानसमजाके
आयसुपालिजनम फलपाई * ऐहउँ बेगिहि होउ रजाई
बिदामातुसन आवौं माँगी * चलिहौंबनहिबहुरिपगलागी
असकहिरामगवनतबकीन्हा * भूपसोक बस उतरनदीन्हा
नगरब्यापिगइबात सुतीछी * छुअतचढीजनुसबतनबीछी
सुनिभएबिकलसकलनरनारी * बेलिबिटपाजिमिदेषिदवारी
जोजहँसुनइ धुनइ सिरसोई * बडाबिषादनहि धीरज होई
दो० मुषसुषाहिंलोचनश्रवहिं, सोकनहृदय समाइ ।
मनहुकरुन रसकटकई, उतरीअवधबजाइ ४६ ॥
मिलेहिमाँझबिधिबातबिगारी * जहँतहँ देहिं कैकइहिगारी
एहिपापिनिहि बूझिकापरेऊ * छाइभवन परपावक धरेऊ
निजकरनयनकाढिचहदीषा * डारिसुधा बिषचाहतिचीषा
कुटिलकठोरकुबुद्धिअभागी * भइ रघुबंस बेनुबन आगी
पालव बैठिपेडएहि काटा * सुषमहँ सोकठाटधरिठाटा
सदाराम एहि प्रान समाना *कारनकवनकुटिलपनठाना

सत्यकहहिंकबिनारिसुभाऊ ❋ सबबिधिअगहअगाधदुराऊ
निजप्रतिबिंबबरुकगहिजाई ❋ जानिनजाइनारिगति भाई

दो० काहनपावकजारिसक, कानसमुद्र समाइ।
कानकरइ अबलाप्रबल, केहिजगकालनपाइ ४७

कासुनाइ बिधिकाहसुनावा ❋ कादेपाइ चहकाह देपावा
एककहहिं भलभूपनकीन्हा ❋ बरबिचारिनहिकुमतिहिदीन्हा
जोहठिभएउसकलदुषभाजनु ❋ अबलाबिबसग्यानगुनगाजनु
एकधरमपरमिति पहिचाने ❋ नृपहि दोमनहिदेहिं मयाने
सिबिदधीचिहरिचंद कहानी ❋ एकएक मनकहहिं बपानी
एकभरतकर संमत कहहीं ❋ एकउदास मायसुनि रहहीं
कानमूँदिकर रदगहि जीहा ❋ एककहहिंयह बातअलीहा
सुकृतजाहिंअसकहततुम्हारे ❋ रामभरत कहं परमपिआरे

दो० चंदचवइबरुअनलकन, सुधाहोइ बिषतूल॥
सपनेहुकबहुं नकरहिं कछु, भरतरामप्रतिकूल ४८

एक बिधातहि दूषन देहीं ❋ सुधादिषाइ दीन्ह बिषजेहीं
षरभरनगर सोच सब काहू ❋ दुसह दाहउरमिटा उछाहू
बिप्रबधूकुल मान्य जठेरी ❋ जोप्रियपरम कैकइ केरी
लगीं देनसिषसील सराही ❋ बचनबान समलागहिंताही
भरतनमोहिप्रियरामसमाना ❋ सदाकहहुयहसबजगजाना
करहु रामपर सहज सनेहू ❋ केहिअपराध आज बनदेहू
कबहुँन किएहु सवतिआरेसू ❋ प्रीतिप्रतीति जान सबदेसू
कौसल्या अब काह बिगारा ❋ तुम्हजेहिलागिबज्र पुरपारा

दो० सीयकिपियसँगपरिहरिहि, लषन किरहिहहिंधाम ॥
राजकिभूँजबभरतपुर, नृपकिजिइहिबिनुराम ४९ ॥
असबिचारि उरछाडहु कोहू * सोककलंक कोठिजनिहोहू
भरतहिअवसि देहु जुबराजू * कानन काहराम कर काजू
नाहिन राम राज के भूषे * धरमधुरीन बिषय रसरूषे
गुरग्रह बसहु रामतजि गेहू * नृपसन असबर दूसर लेहू
जौं नहिंलगिहहु कहे हमारे * नहिंलागिहिकछुहाथतुम्हारे
जौंपरिहाँस कीन्हकछु होई * तौकहिप्रगट जनावहु सोई
रामसरिससुतकानन जोगू * काहकहिहिसुनितुम्ह कहँलोगू
उठहुबेगि सोइ करहुउपाई * जेहिबिधिसोककलंकनसाई
छं० जेहिभाँतिसोककलंकजाइउपायकरिकुलपालही ॥
हठिफेररामहिजातबनजनिबातदूसरचालही ॥
जिमिभानुबिनुदिनप्रानबिनुतनचंदबिनुजिमिजामिनी
तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनुसमुझुधौंजियभामिनी ॥
सो० सखिन्ह सिखावनदीन्ह, सुनतमधुरपरि नामहित ॥
तेहि कछुकान न कीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी ५० ॥
उतरन देइ दुसहरिसरूषी * मृगिन्हचितवजनुबाघिनिभूषी
ब्याधिअसाधिजानितिन्हत्यागी * चलींकहतमतिमंद अभागी
राजकरत येहिदैव बिगोई * कीन्हेसिअसजसकरइनकोई
एहिबिधिबिलपहिंपुरनरनारी * देहिंकुचालिहिकोटिकगारी
जरहिंबिषमजरलेहिंउसासा * कवनिरामबिनुजीवनआसा
बिपुलबियोगप्रजाअकुलानी * जनुजलचरगन सूषत पानी
अतिबिषादबस लोगलोगाई * गए मातु पहिंराम गोसाँई

मुषप्रसन्न चितचौगुन चाऊ * इहइ सोचजनि राषै राऊ
दो० नवगयंद रघुबीर मनु, राज अलान समान ॥
छूटजानिबनगवनसुनि, उरअनंद अधिकान ५१ ॥
रघुकुलतिलकजोरिदोउहाथा * मुदितमातुपदनाएउ माथा
दीन्हि असीसलाइउरलीन्हे * भूषन बसननिछावरिकीन्हे
बार बार मुष चूमति माता * नयननेहजलपुलकितगाता
गोदराषि पुनि हृदय लगाए * श्रवतप्रेम रमपयद सुहाए
प्रेम प्रमोदनकछु कहिजाई * रंकधनद पदवी जनु पाई
सादर सुंदर बदन निहारी * बोलीमधुर बचन महतारी
कहहुतात जननी बलिहारी * कबहिंलगनमुदमंगल कारी
सुकृत सीलसुष सींव सुहाई * जनमलाभकइअवधिअघाई
दो० जेहिचाहत नरनारिसब, अतिआरत एहिभांति ॥
जिमिचातकचातकि तृषित, वृष्टिसरदरितुस्वाति ५२
तात जाउँबलि बेगि नहाहू * जोमनभाव मधुर कछुषाहू
पितुसमीप तबजाएहु भैया * भै बडिबार जाइबलि मैया
मातुबचनसुनिअतिअनुकूला * जनुसनेह सुरतरुके फूला
सुषमकरंद भरे श्री मूला * निरषिराम मनभवँरनभूला
धरमधुरीन धरमगति जानी * कहेउमातुसन अति मृदुबानी
पितादीन्ह मोहिकाननराजू * जहँ सबभांतिमोरबडकाजू
आयसुदेहिमुदित मनमाता * जेहिमुदमंगलकानन जाता
जनिसनेहबस डरपसि मोरें * आनँद अंब अनुग्रह तोरें
दो० बरषचारिदसबिपिनबसि, करिपितु बचन प्रमान ॥
आइपाइपुनि देषिहौं, मनजनि करसिमलान ५३ ॥

बचन बिनीत मधुररघुबरके * सरसमलगे मातु उरकरके
सहमिसूषिसुनिसीतल बानी * जिमिजवासपरेपावस पानी
कहिनजाइकछुहृदय बिषादू * मनहुमृगी सुनि केहरिनादू
नयनसजलतनथरथर कांपी * मांजहिषाइमीनजनु मापी
धरि धीरज सुत बदननिहारी * गदगदबचनकहतिमहतारी
तात पितहितुम्हप्रानपियारे * देषिमुदितनितचरिततुम्हारे
राजदेन कहँ सुभदिनसाधा * कहेउजानबनकेहिअपराधा
तातसुनावहु मोहि निदानू * कोदिनकरकुलभएउकृसानू
दो॰ निरषि रामरुष सचिवसुत, कारन कहेउ बुझाइ ॥
सुनिप्रसंग रहिमूकजिमि, दसाबरनिनहिजाइ ॥५४॥
राषिनसकइनकहिसक जाहू * दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू
लिषत सुधाकरगालिषिराहू * बिधिगतिबामसदासबकाहू
धरम सनेह उभयमति घेरी * भइगतिसाँपछुछुँदरि केरी
राषौं सुतहि करौं अनुरोधू * धरमजाइ अरुबंधु बिरोधू
कहौंजान बनतौ बाड़ि हानी * संकटसोच बिबस भइरानी
बहुरिसमुझितियधरम सयानी * रामभरतदोउसुतसमजानी
सरल सुभाउ राम महतारी * बोली बचन धीरधरि भारी
तातजाउँबलिकीन्हेहुनीका * पितुआयसुसबधरमकटीका
दो॰ राजदेन कहि दीन्ह बन, मोहिन सोच दुष लेस ॥
तुम्हबिनुभरतहिभूपतिहि, प्रजहि प्रचंडकलेस ॥५५॥
जौं केवलपितुआयसु ताता * तौजानिजाहुजानिबाड़ि माता
जौं पितुमातुकहेउबनजाना * तौकाननसतअवधसमाना
पितु बनदेव मातु बनदेवी * षगमृगचरन सरोरुह सेवी

अंतहुँउचित नृपहि बनबासू ❋ बयबिलोकि हियहोइहरासू
बडभागी बनअवधअभागी ❋ जोरघुबंसतिलकतुम्हत्यागी
जौं सुतकहौं संग मोहि लेहू ❋ तुम्हरे हृदय होइ संदेहू
पूतपरमप्रिय तुम्ह सबहीके ❋ प्रान प्रानके जीवन जीके
तेतुम्हकहहु मातुबन जाऊँ ❋ मैं सुनिबचनबैठिपाछिताऊँ

दो० यहबिचारि नहिं करौं हठ झूठ सनेह बढाइ ॥
मानिमातुकरनातबलि, सुरतिबिसरिजानिजाइ ॥५६॥

देवपितरसबतुम्हहिं गोसाईं ❋ राषहु पलकनयनकी नाईं
अवधिअंबुप्रियपरिजनमीना ❋ तुम्हकरुनाकरधरमधुरीना
असबिचारिसोइकरेहुउपाई ❋ सबहिजिअतजेहिभेंटहुआई
जाहुसुषेन बनहि बलिजाऊँ ❋ करिअनाथजनपरिजनगाऊँ
सबकरआजसुकृतफलबीता ❋ भएउकरालकाल बिपरीता
बहुबिधिबिलपिचरनलपटानी ❋ परमअभागिनिआपुहिजानी
दारुन दुसह दाहउर व्यापा ❋ बरानिनजाइबिलाप कलापा
राम उठाइ मातु उरलाई ❋ कहिमृदुवचनबहुरिसमुझाई

दो० समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाइ ॥
जाइसासु पदकमल जुग, बंदि बैठि सिरनाइ ॥ ५७॥

दीन्हिअसीससासु मृदुबानी ❋ अतिसुकुमारिदेषिअकुलानी
बैठि नमितमुषसोचतिसीता ❋ रूपरासि पतिप्रेम पुनीता
चलन चहतबन जीवननाथू ❋ केहिसुकृतीसनहोइहिसाथू
कीतन प्रानकिकेवलप्राना ❋ बिधिकरतबकछुजाइनजाना
चारु चरन नषलेषतिधरनी ❋ नूपुरमुषरमधुर कबिबरनी
मनहु प्रेमबसबिनती करहीं ❋ हमहिसीयपदजनिपरिहरहीं

मंजु बिलोचन मोचतिबारी ※ बोली देषि राम महँतारी
तातसुनहुसियअतिसुकुमारी ※ सासुससुरपरिजनहिपिआरी

दो० पिताजनक भूपाल मनि, ससुर भानु कुल भानु ।
पतिरबिकुल कैरवबिपिन, बिधुगुनरूपनिधानु ॥५८॥

मैं पुनि पुत्रबधू प्रियपाई ※ रूपरासि गुनसील सुहाई
नयनपुतरिकरि प्रीतिबढाई ※ राषेउँप्रान जानकिहि लाई
कलपबेलिजिमिबहुबिधिलाली ※ सींचिसनेहसलिलप्रतिपाली
फूलतफलतभएउबिधिबामा ※ जानिनजाइ काहपरिनामा
पलँगपीठितजिगोदहिं डोरा ※ सियनदीन्हपगअवनिकठोरा
जिअनमूरिजिमिजोगवतरहऊँ ※ दीपबातिनाहिं टारन कहऊँ
सोइसियचलनचहतिबनसाथा ※ आयसु काहहोइ रघुनाथा
चंदकिरिन रसरसिकचकोरी ※ रबिरुषनयनसकैकिमिजोरी

दो० करि केहरि निसिचर चरहिं. दुष्ट जंतु बन भूरि ।
बिषबाटिका किसोहसुत, सुभग सजीवनिमूरि ॥५९॥

बनहितकोलकिरातकिसोरी ※ रचीबिरंचि बिषयसुष भोरी
पाहनकृमिजिमि कठिनसुभाऊ ※ तिन्हहिंकलेसनकानन काऊ
कैतापस तियकानन जोगू ※ जिन्हतपहेतु तजासबभोगू
सियबनबसिहिताकेहिभांती ※ चित्रलिषितकपिदेषिडेराती
सुरसर सुभगबनज बनचारी ※ डाबर जोग कि हंस कुमारी
असबिचारि जसआयसुहोई ※ मैंसिषदेउँ जानकिहि सोई
जौंसिय भवनरहइकह अंबा ※ मोहिं कहँहोइबहुतअवलंबा
सुनिरघुबीर मातु प्रियबानी ※ सीलसनेह सुधाजनु सानी

दो० कहि प्रिय बचन बिबेकमय, कीन्हमातु परितोष ॥
लगेप्रबोधनजानकिहि, प्रगटिबिपिनगुनदोष ॥ ६० ॥

मातुसमीप कहत सकुचाहीं * बोलेसमउसमुझि मनमाहीं
राजकुमारिसिषावन सुनहू * आनभाँतिजिय जनि कछुगुनहू
आपन मोरनीक जौं चहहू * बचनहमार मानि गृहरहहू
आयसु मोर सासु सेवकाई * सबबिधिभामिनि भवनभलाई
येहितेअधिक धरमनहिंदूजा * सादरसासु ससुरपद पूजा
जबजबमातुकरिहिसुधिमोरी * होइहिप्रेमबिकलमतिभोरी
तबतबतुम्हकहिकथापुरानी * सुंदरि समुझाएहु मृदुबानी
कहौंसुभाव सपथसत मोही * सुमुखि मातुहितराखौं तोही

दो० गुरु श्रुति संमत धरमफल, पाइअबिनाहिं कलेस ॥
हठवस सब संकट सहे, गालवनहुष नरेस ॥ ६१ ॥

मैं पुनिकरिप्रमान पितुबानी * बेगिफिरबसुनुसुमुखि सयानी
दिवसजातनहिंलागिहिबारा * सुंदरिसिषवन सुनहु हमारा
जौं हटकरहु प्रेम बस बामा * तौतुम्ह दुषपाउबपरिनामा
काननकठिन भयंकर भारी * घोर घामहिमबारि बयारी
कुसकंटक मगकाँकर नाना * चलबपयादेहिबिनुपदत्राना
चरनकमल मृदुमंजु तुम्हारे * मारग अगम भूमिधरभारे
कंदर षोह नदी नद नारे * अगमअगाधनजाहिंनिहारे
भालु बाघ वृक केहरिनागा * करहिंनादसुनिधीरजभागा

दो० भूमिसयन बलकल बसन, असन कंदफल मूल ॥
तेकिसदा सबदिनामिलहिं, समयसमयअनुकूल ॥ ६२ ॥

नरअहार रजनीचर करहीं * कपटबेषबिधिकोटिकधरहीं

लागइ अति पहारकर पानी * बिपिनबिपतिनाहिं जाइबषानी
ब्यालकरालबिहंग बनघोरा * निसिचर निकरनारि नरचोरा
डरपहिं धीरगहनसुधिआये * मृगलोचनितुम्हभीरुसुभाए
हंसगवनितुम्हनाहिंबनजोगू * सुनिअपजसमोहिं देइहिलोगू
मानससलिलसुधाप्रतिपाली * जिअइकिलवन पयोधिमराली
नवरसाल वनबिहरन सीला * सोहकिकोकिल बिपिन करीला
रहहुभवनअसहृदय बिचारी * चंदबदनि दुष कानन भारी
दो॰ सहजसुहृदगुरुस्वामिसिष, जोनकरइ सिरमानि ॥
सो पछिताइ अघाइउर, अवसिहोइहितहानि ॥६३॥
सुनिमृदुबचनमनोहरपियके * लोचनललितभरे जलसियके
सीतलिसिष दाहक भइकैसे * चकइहिसरदचंद निसिजैसे
उतरन आव बिकल बैदेही * तजनचहतसुचि स्वामिसनेही
बरबसरोकि बिलोचन बारी * धरिधीरजउरअवनिकुमारी
लागिसासुपग कहकरजोरी * छमबि देबिबड़ि अबिनयमोरी
दीन्हिप्रानपतिमोहिं सिषसोई * जेहिबिधिमोरपरमहितहोई
मैं पुनिसमुझिदीषमनमाहीं * पियबियोगसमदुष जगनाहीं
दो॰ प्रान नाथ करुना यतन, सुंदर सुषद सुजान ॥
तुम्हबिनुरघुकुलकुमुद बिधु, सुरपुरनरकसमान ॥६४॥
मातु पिताभगिनीप्रियभाई * प्रियपरिवार सुहृद समुदाई
सासु ससुरगुरु सुजन सहाई * सुतसुंदर सुसील सुषदाई
जहलगि नाथनेह अरुनाते * पियबिनु तिअहितरनिहुतेताते
तनधन धामधरनि पुरराजू * पति बिहीनसब सोकसमाजू
भोग रोग सम भूषन भारू * जमजातना सरिस संसारू

प्राननाथतुम्हबिनुजगमाहीं ॥ मोकहँसुषदकतहुँ कछुनाहीं
जियबिनुदेह नदी बिनुबारी ॥ तैसिअनाथ पुरुष बिनुनारी
नाथ सकलसुषसाथ तुम्हारे ॥ सरदाबिमलबिधुबदन निहारे

दो० षगमृग परिजन नगरबन, बलकल बिमल दुकूल ।
नाथसाथ सुरसदन सम, परनसालसुषमूल ॥ ६५ ॥

बन देवी बनदेव उदारा ॥ करिहहिं सासु ससुर समसारा
कुसकिसलय साथरी सुहाई ॥ प्रभुसँग मंजुमनोज तुराई
कंदमूलफल अमिअअहारू ॥ अवधसौधसत सरिसपहारू
छिनछिनप्रभुपदकमलबिलोकी ॥ रहिहौंमुदित दिवसजिमिकोकी
बन दुषनाथ कहे बहुतेरे ॥ भयबिषाद परिताप घनेरे
प्रभुबियोग लवलेस समाना ॥ सबमिलिहोहिंन कृपानिधाना
असजियजानिसुजानसिरोमनि ॥ लेइअसंगमोहिंछाडि अजनि
बिनती बहुतकरौंका स्वामी ॥ करुनामय उरअंतरजामी

दो० राषिअअवधजोअवधि लगि, रहतजानिअहि प्रान ।
दीनबंधु सुंदर सुषद, सील सनेह निधान ॥ ६६ ॥

मोहिमगचलतनहोइहिहारी ॥ छिनछिनचरनसरोज निहारी
सबहिभाँतिपिअसेवाकरिहौं ॥ मारगजनितसकलश्रमहरिहौं
पाय पषारि बैठि तरु छाहीं ॥ करिहौंबाउमुदितमनमाहीं
श्रमकनसहित स्यामतनदेषे ॥ कहँदुषसमउ प्रानपति पेषे
सममहित्रिनतरुपल्लवडासी ॥ पायपलोटिहिसब निसिदासी
बार बार मृदु मूरति जोही ॥ लागिहितातिबयारि न मोही
कोप्रभुसँगमोहि चितवनिहारा ॥ सिंधुबधुहिजिमि ससकसियारा
मैं सुकुमारि नाथबन जोगू ॥ तुम्हहि उचिततपमोकहँभोगू

दो० ऐसेउबचन कठोर सुनि जौंन हृदउ बिलगान ॥
तौप्रभु बिषम बियोग दुष, सहिहहिं पाँवरप्रान॥६७॥
असकहिसीयबिकलभइभारी * बचनबियोगनसकी सँभारी
देषिदसारघुपति जिअजाना * हठिराषेनहि राषिहिप्राना
कहेउ कृपालभानुकुल नाथा * परिहरिसोचचलहुबनसाथा
नहिंबिषादकरअवसर आजू * बेगिकरहुबन गवन समाजू
कहिप्रियबचनप्रियासमुझाई * लगेमातु पद आसिष पाई
बेगि प्रजादुष मेटब आई * जननीनिठुरबिसरिजनिजाई
फिरिहिदसाबिधिबहुरिकिमोरी * देषिहौंनयन मनोहर जोरी
सुदिनसुघरीतात कबहोइहि * जननी जिअतबदनबिधुजोइहि
दो० बहुरि बछकहि लालकहि, रघुपति रघुबर तात ॥
कबहिं बोलाइलगाइहिय, हरषिनिरषिहौं गात ॥६८॥
लषिसनेह कातरि महतारी * बचननआवबिकलभइभारी
रामप्रबोधकीन्ह बिधिनाना * समउ सनेहन जाइ बषाना
तब जानकी सासुपग लागी * सुनिअमायमैंपरमअभागी
सेवासमय दइअबन दीन्हा * मोरमनोरथसफलनकीन्हा
तजबछोभजनिछाडिअछोहू * करमकठिनकछुदोषनमोहू
सुनिसियबचनसासुअकुलानी * दसाकवनिबिधिकहौं बषानी
बारहिंबार लाइउर लीन्ही * धरिधीरजसिषआसिषदीन्ही
अचलहोहुअहिवात तुम्हारा * जबलगिगंगजमुनजलधारा
दो० सीतहि सासुअसीससिष, दीन्ह अनेक प्रकार ॥
चलीनाइपदपदुमासिर, अतिहित बारहिबार ॥६९॥
समाचारजब लछिमनपाये * ब्याकुलबिलषबदन उठिधाये

कंपपुलकतन नयन सनीरा ❋ गहेचरन अतिप्रेम अधीरा
कहिनसकतकछुचितवत ठाढ़े ❋ मीनदीन जनुजलतें काढे
सोचहृदयबिधिकाहोनिहारा ❋ सबसुषसुकृतसिरान हमारा
मोकहँकाह कहब रघुनाथा ❋ रषिहहिंभवनकिलेइहिंसाथा
राम बिलोकि बंधुकर जोरे ❋ देह गेहसब सन त्रिन तोरे
बोले बचन राम नयनागर ❋ सीलसनेह सरल सुषसागर
तात प्रेमबस जनिकदराहू ❋ समुझिहृदयपरिनाम उछाहू

दो॰ मातु पितागुरु स्वामिसिष, सिरधरिकरहिंसुभायँ ॥
लहेउलाभतिन्हजनमकर, नतरुजनमजगजाय ॥ ७० ॥

असजियजानिसुनहुसिषभाई ❋ करहुमातु पितु पद सेवकाई
भवनभरत रिपुसूदन नाहीं ❋ रावबृद्धमम दुष मन माहीं
मैंबनजाउँतुम्हहिलेइ साथा ❋ होइसबहिंबिधिअवधअनाथा
गुरु पितुमातुप्रजा परिवारू ❋ सबकह परैदुसह दुषभारू
रहहु करहु सबकर परितोषू ❋ नतरुतात होइहि बड दोषू
जासुराज प्रियप्रजा दुषारी ❋ सोनृपअवसिनरकअधिकारी
रहहुतात असिनीतिबिचारी ❋ सुनतलषनभयेब्याकुलभारी
सिअरे वचन सूषिगए कैसे ❋ परसततुहिन तामरस जैसे

दो॰ उतरुनआवत प्रेमबस, गहे चरनअकुलाइ ॥
नाथदाससमइ स्वामितुम्ह, तजहुतकाहबसाइ ॥ ७१ ॥

दीन्हिमोहिसिषनीकिगोसांई ❋ लागिअगमअपनी कदराई
नरबर धीर धरम धुरधारी ❋ निगमनीतिकहतेअधिकारी
मैंसिसु प्रभुसनेह प्रतिपाला ❋ मंदर मेरुकि लेहिं मराला
गुरु पितुमातु नजानौं काहू ❋ कहौं सुभाउनाथ पतिआहू

जहँलगि जगत सनेहसगाई * प्रीतिप्रतीतिनिगमनिजगाई
मोरेसबइ एक तुम्ह स्वामी * दीनबंधु उर अन्तर जामी
धरम नीति उपदेसिअताही * कीरतिभूतिसुगतिप्रियजाही
मनक्रम बचन चरनरतहोई * कृपासिंधुपरिहरिअकिसोई
दो० करुना सिंधुसुबंधु के, सुनि मृदुबचन बिनीत ॥
समुझाए उरलाय प्रभु, जानिसनेह सभीत ॥७२॥
मागहु बिदा मातु सन जाई * आवहुबेगि चलहु बनभाई
मुदितभए सुनि रघुबरबानी * भए उलाभबडगइबडिहानी
हरषितहृदय मातु पहिंआए * मनहुँ अंधफिरिलोचनपाए
जाइजननिपदनाएउमाथा * मनुरघुनंदन जानकिसाथा
पूँछे मातु मलिन मन देषी * लषनकही सबकथा बिसषी
गई सहामिसुनि बचनकठोरा * मृगीदेषि दवजनु चहुँओरा
लषन लषे उभाअनरथआजू * एहि सनेहबसकरब अकाजू
मागतबिदासभय सकुचाहीं * जाइसंगबिधिकहिहिकिनाहीं
दो० समुझि सुमित्रा रामसिय, रूप सुसील सुभाउ ॥
नृपसनेह लषिधुनेउ सिर, पापिनिदीन्हकुदाउ ॥७३॥
धीरज धरेउ कुअवसरजानी * सहजसुहृय बोली मृदुबानी
तात तुम्हारि मातु बैदेही * पिताराम सबभाँति सनेही
अवधतहाँजहँ राम निवासू * तहँइदिवसजहँ भानुप्रकासू
जौंपै सीय राम बन जाहीं * अवधतुम्हारकाजकछुनाहीं
गुर पितुमातु बंधुसुरसाँई * सेइअहि सकलप्रानकीनाँई
रामप्रानाप्रिय जीवन जीके * स्वारथ रहितसषा सबहीके
पूजनीय प्रिय परम जहाँते * सबमानिअहि रामके नाते

असजियजानि संगबनजाहू ❋ लेहुतात जग जीवन लाहू
दो० भूरिभागभाजनभएउ, मोहिसमेतबलिजाउँ मा०प० १२
जौं तुम्हरेमन छाडिछल, कीन्हरामपदठाउँ ७४ ॥
पुत्रवती जुबती जग सोई ❋ रघुपति भगतजासुसुतहोई
नतरुबाँझभलिबादिबिआनी ❋ राम बिमुषसुततेहितजानी
तुम्हरेहिभागराम बनजाहीं ❋ दूसर हेतु तात कछु नाहीं
सकल सुकृतकरबड फलयेहू ❋ राम सीयपद सहज सनेहू
राग रोषइरिषामद मोहू ❋ जानि सपनेहुइन्हकेबसहोहू
सकल प्रकार बिकार बिहाई ❋ मनक्रमबचनकरेहु सेवकाई
तुम्हकहँबनसबभाँति सुपासू ❋ सँगपितुमातु रामसियजासू
जेहिनराम बनलहहिं कलेसू ❋ सुतसोइकरेहु इहइ उपदेसू
छं० उपदेसयहजेहिजाततुम्हरेरामसियसुषपावहीं ॥
पितुमातुप्रियपरिवारपुरसुषसुरतिबनबिसरावहीं ॥
तुलसीप्रभुहिसिषदेइआयसुदीन्हपुनिआसिषदई ॥
रतिहोउअबिरलअमलसियरघुबीरपदनितनितनई ॥
सो० मातु चरन सिरनाइ, चले तुरत संकितहृदय ।
बागुर बिषम तोराइ, मनहुभागमृगभागबस ॥ ७५ ॥
गएलषन जहँ जानकिनाथू ❋ भेमन मुदितपाइप्रियसाथू
बंदिराम सियचरन सुहाए ❋ चले संग नृप मंदिर आए
कहहिं परसपर पुरनरनारी ❋ भलिबनाइबिधिबातबिगारी
तनकृसमनदुष बदन मलीने ❋ बिकलमनहु माषीमधुछीने
करमीजहिंसिरधुनिपछिताहीं ❋ जनुबिनुपषबिहगअकुलाहीं
भइ बडि भीर भूप दरबारा ❋ बरनिनजाइबिषाद अपारा

सचिव उठाइ राउ बैठारे * कहिप्रियबचन रामपगधारे
सियसमेतदोउतनयनिहारी * ब्याकुलभयउभूमिपतिभारी
दो० सीयसहितसुतसुभगदोउ, देखिदेखिअकुलाइ ॥
बारहिंबार सनेहबस, राउलेइ उर लाइ ॥ ७६ ॥
सकइनबोलि बिकलनरनाहू * सोक जनित उर दारुनदाहू
नाइसीस पदअति अनुरागा * उठिरघुबीर बिदातबमागा
पितुअसीसआयसु मोंहिदीजै * हरषसमयाबिसमउकतकीजै
तात किए प्रिय प्रेमप्रमादू * जसजगजाइ होइ अपबादू
सुनिसनेह बसउठिनरनाहाँ * बैठारे रघुपति गहि बाहाँ
सुनहुताततुम्हकहँ मुनिकहहीं * राम चराचर नायक अहहीं
सुभअरुअसुभकरम अनुहारी * ईसदेइ फल हृदय बिचारी
करै जो करम पावफलसोई * निगम नीति असिकहसबकोई
दो० औरकरइअपराधकोउ, औरपावफल भोग ॥
अतिबिचित्रभगवंतगति, को जगजानइजोग ॥७७॥
राय राम राखनहित लागी * बहुतउपायकिए छलत्यागी
लखीराम रुख रहतन जाने * धरम धुरंधर धीर सयाने
तबनृपसीय लाइउर लीन्ही * अतिहितबहुतभाँतिसिषदीन्ही
कहि बनके दुषदुसह सुनाए * सासुससुरपितुसुष समुझाए
सियमनरामचरन अनुरागा * घरनसुगमबनाबिषमन लागा
औरौ सबहिंसीय समुझाई * कहिकहि बिपिनबिपतिअधिकाई
सचिवनारिगुर नारिसयानी * सहितसनेहकहहिं मृदुबानी
तुम्हकहँतौ न दीन्हबनबासू * करहुजोकहहिंससुर गुरसासू
दो० सिषसीतलहितमधुरमृदु, सुनिसीतहिनसोहानि ॥
सरदचंदचांदिनिलगत, जनुचकईअकुलानि ॥ ७८ ॥

सीयसकुच बस उतरनदेई * सो सुनि तमकिउठीकैकेई
मुनिपटभूषनभाजन आनी * आगे धरि बोली मृदुबानी
नृपहिप्रानप्रियतुम्ह रघुबीरा * सीलसनेह न छाडिहिभीरा
सुकृतसुजस परलोक नसाऊ * तुम्हहिजानबनकहिहिनकाऊ
असबिचारिसोइकरहु जोभावा * रामजननिसिषसुनिसुषपावा
भूपहि बचन बान समलागे * करहिंनप्रानपयान अभागे
लोगबिकल मुरछितनरनाहू * काहकरिअककुसूझन काहू
रामतुरत मुनि वेष बनाई * चलेजनकजननिहिसिरनाई

दो० सजिबनसाजसमाजसब, बनिताबंधुसमेत ॥
बंदिबिप्रगुरचरनप्रभु, चलेकरिसबहि अचेत ॥ ७९ ॥

निकसि बसिष्ट द्वारभएठाढे * देषे लोग बिरह दवदाढे
कहिप्रियबचनसकल समुझाए * बिप्र बृंद रघुबीर बोलाए
गुरसनकहि बरषासन दीन्हे * आदरदान बिनयबसकीन्हे
जाचक दान मान संतोषे * मीत पुनीत प्रेम परितोषे
दासी दास बोलाइ बहोरी * गुरहि सौंपि बोले करजोरी
सबकै सार सँभार गोसाईं * करबिजनकजननी कीनाईं
बारहिं बार जोरि जुगपानी * कहतराम सबसन मृदुबानी
सोइसबभाँतिमोर हितकारी * जेहिते रहइभुआल सुषारी

दो० मातुसकलमोरे बिरह, जेहिनहोहिंदुषदीन ॥
सोइउपाउतुम्हकरेहुसब, पुरजनपरमप्रबीन ॥ ८० ॥

एहिबिधिरामसबहिंसमुझावा * गुरपदपदुमहरषि सिरनावा
गनपति गौरि गिरीसमनाई * चले असीस पाइ रघुराई
रामचलतअतिभएउ बिषादू * सुनिनजाइ पुरआरत नादू

कुसगुनलंकअवधअतिसोकू * हरष बिषादबिबस सुरलोकू
गइमुरछा तब भूपति जागे * बोलिसुमंत्र कहनअसलागे
राम चलेबन प्रान न जाहीं * केहिसुपलागिरहततनमाहीं
एहितें कवनब्यथा बलवाना * जोदुषपाइ तजहितनप्राना
पुनि धरिधीर कहैनरनाहू * लैरथ संगसषा तुम्ह जाहू
दो॰ सुठिसुकुमारकुमारदोउ, जनकसुतासुकुमारि ॥
रथचढाइदेषराइबन, फिरेहुगएदिनचारि ॥ ८१ ॥
जौंनहिं फिरहिंधीरदोउभाई * सत्य संध दृढब्रत रघुराई
तौतुम्हबिनय करेहुकरजोरी * फेरिअप्रभुमिथिलसकिसोरी
जब सिय कानन देषिडराई * कहेहुमोरिसिष अवसरपाई
सासु ससुर असकहेउ सँदेसू * पुत्रिफिरिअबन बहुतकलेसू
पितुगृहकबहुं कबहुँससुरारी * रहेउजहाँ रुचिहोइतुम्हारी
एहिबिधिकरेहु उपाइकदंबा * फिरइत होइ प्रान अवलंबा
नाहित मोरमरन परिनामा * कछुनबसाइभए बिधिबामा
असकहिमुरुछिपरामहिराऊ * रामलषनसियआनिदेषाऊ
दो॰ पाइरजायसुनाइसिर, रथअतिबेगबनाइ ॥
गएउजहाँ बाहेरनगर, सीयसहितदोउभाइ ॥ ८२ ॥
तबसुमंत्र नृप बचन सुनाए * करिबिनती रथराम चढाए
चढिरथसीयसहित दोउभाई * चलेहृदयअवधहि सिरनाई
चलतरामलषिअवधअनाथा * बिकल लोगसबलागे साथा
कृपासिंधुबहुबिधिसमुझावहिं * फिरहिंप्रेमबसपुनिफिरिआवहिं
लागतिअवधभयावनिभारी * मानहु कालरातिआँधियारी
घोरजंतु समपुर नर नारी * डरपहिं एकहिएक निहारी

घरमसान परिजनजनु भूता ❋ सुतहितमीतमनहु जमदूता
बागन्हविटपवेलिकुँभिलाहीं ❋ सरितसरोवर देखि नजाहीं

दो॰ हयगयकोटिन्हकेलिमृग, पुरपसुचातकमोर ।
पिकरथाँगसुकसारिका, सारस हंसचकोर ॥ ८३ ॥

रामवियोग विकल सवठाढ़ें ❋ जहँतहँमनहु चित्रलिपिकाढ़ें
नगर सफलवनगहवर भारी ❋ षगमृगविपुलसकलनरनारी
विधिकैकईकिरातिनिकीन्ही ❋ जेहिंदवदुसहदसहुदिसिदीन्ही
सहिनसके रघुवर विरहागी ❋ चलेलोग सवव्याकुलभागी
सवहिंविचारकीन्हमनमाहीं ❋ रामलषनसियविनुसुषनाहीं
जहाँरामतहँ सवइ समाजू ❋ विनुरघुवीरअवधनहिकाजू
चले साथ असमंत्र दिढाई ❋ सुरदुर्लभसुपसदन विहाई
रामचरनपंकजप्रियजिन्हहीं ❋ विषयभोगवस करहिंकितिन्हहीं

दो॰ बालकवृद्धविहाइगृह, लगे लोग सव साथ ।
तमसातीरनिवासकिय, प्रथमदिवसरघुनाथ ॥ ८४ ॥

रघुपति प्रजाप्रेमबस देषी ❋ सदयहृदयदुषभयउविसेषी
करुनामय रघुनाथ गोसाँई ❋ वेगिपाइअहिं पीर पराई
कहिसप्रेम मृदुवचन सुहाए ❋ वहुविधि रामलोगसमुझाए
किएधरम उपदेस घनेरे ❋ लोगप्रेम वसफिरहिंन फेरे
सीलसनेह छाडिनहिं जाई ❋ असमंजस बसभे रघुराई
लोगसोग श्रमबस गएसोई ❋ कछुक देवमाया मतिमोई
जवहिंजामजुगजामिनिबीती ❋ रामसचिवसनकहेउसप्रीती
षोजमारि रथहाँकहु ताता ❋ आनउपायवनिहिनहिंबाता

दो० रामलषन सियजानचढ़ि, संभुचरनासिरनाइ ।
सचिवचलाएउ तुरतरथ, इतउतषोजदुराइ ॥ ८५ ॥

जागेसकल लोगभए भोरू ❋ गेरघुनाथभएउ अति सोरू
रथकरषोजकतहुँनहिंपावहिं ❋ रामरामकहिचहुदिसिधावहिं
मनहुँ बारिनिधिबूड जहाजू ❋ भएउबिकलबड बनिकसमाजू
एकहिएक देहिं उपदेसू ❋ तजे रामहमजानि कलेसू
निंदहि आपसराहहिं मीना ❋ धिगजीवन रघुबीर बिहीना
जौंपैप्रियबियोगबिधिकीन्हा ❋ तौ कसमरन नमागेदीन्हा
एहिबिधिकरतप्रलापकलापा ❋ आए अवधभरे परितापा
विषम बियोगनजाइ बषाना ❋ अवधिआससबराषहिंप्राना

दो० रामदरसहितनेमब्रत, लगे करननरनारि ॥
मनहु कोककोकी कमल, दीनबिहीनतमारि ॥ ८६ ॥

सीतासचिवसहित दोउभाई ❋ सृंगबेरपुर पहुँचे जाई
उतरे राम देवसरि देषी ❋ कीन्हदंडवत हरष बिसेषी
लषनसचिवसियाकिए प्रनामा ❋ सबहिंसहितसुषपाएउरामा
गंग सकल मुदमंगल मूला ❋ सबसुषकरनिहरनिसबसूला
कहिकहिकोटिककथाप्रसंगा ❋ राम बिलोकहि गंगतरंगा
सचिवहिअनुजहिप्रियहिसुनाई ❋ बिबुधनदीमहिमाअधिकाई
मज्जनकीन्हपंथस्रम गयऊ ❋ सुचिजलपिअतमुदितमनभयऊ
सुमिरतजाहिमिटइश्रमभारू ❋ तेहिस्रमयहलौकिकब्यवहारू

दो० शुद्ध सच्चिदानंदमय, कन्द भानुकुलकेतु ॥
चरितकरतनरअनुहरत, संसृतिसागरसेतु ॥ ८७ ॥

यहसुधिगुहनिषाद जब पाई ❋ मुदितलिए प्रियबंधु बोलाई

लिएफलमूल भेंट भरिभारा * मिलनचले उहिअहरष अपारा
करि दंडवत भेंटधरि आगे * प्रभुहिविलोकतअति अनुरागे
सहज सनेह बिवस रघुराई * पूँछी कुसल निकट बैठाई
नाथ कुसल पद पंकज देषे * भए उँभागभा/जन जनलेषे
देवधरनि धनधाम तुम्हारा * मैंजन नीचसहित परिवारा
कृपाकरिअ पुर धारिअपाऊ * थापिअजनसबलोगसिहाऊ
कहेहु सत्यसबसषा सुजाना * मोहिदीन्हापितुआयसुआना

दो० बरषचारिदस बासबन, मुनिव्रतबेष अहार ॥
ग्रामबासनहिंउचितसुनि, गुहहिभए उदुपभार ॥८८॥

रामलषनसिय रूप निहारी * कहहिं सप्रेमग्राम नरनारी
तेपितुमातु कहहु सषिकैसे * जिन्हपठए बनबालक ऐसे
एककहहिंभलभूपतिकीन्हा * लोचनलाहुहमहिबिधिदीन्हा
तबनिषादपतिउरअनुमाना * तरुसिंसुपा मनोहर जाना
लै रघुनाथहिं ठाँव देषावा * कहेउ रामसबभाँति सुहावा
पुरजनकरिजोहार घरआए * रघुबर संध्याकरन सिधाए
गुह सँवारि साथरी डसाई * कुसकिसलयमयमृदुल सुहाई
सुचिफलमूलमधुर मृदुजानी * दोनाभरिभरि राषेसिआनी

दो० सियसुमंत्र भ्राता सहित, कंदमूल फलपाइ ॥
सयनकीन्हि रघुबंसमनि, पायपलोटत भाइ ८९ ॥

उठेलषन प्रभुसोवत जानी * कहिसचिवहिसोवनमृदुबानी
कछुकदूरिसजिबान सरासन * जागन लगे बैठि बीरासन
गुह बोलाइ पाहरू प्रतीती * ठाँव ठाँव राषे अति प्रीती
आपु लषन पहिं बैठेउ जाई * कटिभाथा सरचाप चढाई

सोवतप्रभुहिंनिहारि निषादू * भएउ प्रेमबस हृदयबिषादू
तनपुलकितजल लोचनबहई * बचन सप्रेमलषनसन कहई
भूपति भवनसुभाय सुहावा * सुरपतिसदन नपटतरपावा
मनिमय रचित चारुचौवारे * जनुरतिपतिनिजहाथसँवारे
दो० सुचि सुबिचित्र सुभोगमय, सुमन सुगंध सुबास ॥
पलँगमंजुमनिदीपजहँ, सबबिधिसकलसुपास ॥९०॥
बिबिधिबसन उपधानतुराई * छीरफेन मृदु बिसद सुहाई
तहँसियरामसयननिसिकरहीं * निजछबिरतिमनोजमदहरहीं
तेइसियराम साथरी सोए * श्रमितबसनबिनुजाहिंनजोए
मातुपिता परिजनपुर बासी * सषासुसील दास अरुदासी
जोगवहिंजिन्हहिंप्रानकीनाईं * महिंसोवत तेइराम गोसाईं
पिताजनकजगबिदित प्रभाऊ * ससुर सुरेस सषा रघुराऊ
रामचंद पति सो बैदेही * सोवतिमहिबिधिबामनकेही
सियरघुबीर कि काननजोगू * करमप्रधान सत्यकह लोगू
दो० कैकयनंदिनिमंदमति, कठिन कुटिल पनकीन्ह ॥
जेहिंरघुनंदन जानकिहि, सुषअँवसर दुषदीन्ह ॥९१॥
भइदिनकरकुलबिटपकुठारी * कुमतिकीन्हिसबबिस्वदुषारी
भयउ बिषादनिषादहिभारी * रामसीयमहिसयन निहारी
बोले लषन मधुर मृदुबानी * ग्यानबिरागभगतिरससानी
काहुनकोउसुषदुषकरदाता * निजकृतकरमभोगसबभ्राता
जोगबियोग भोग भलमंदा * हितअनाहितमध्यम भ्रमफंदा
जनममरनजहँलगिजगजालू * संपतिबिपतिकरमअरुकालू
धरनिधाम धनपुर परिवारू * सरगनरकजहँलगिब्यवहारू

देषिअसुनिअगुनिअ मनमाहीं ❋ मोहमूल परमारथ नाहीं
दो० सपने होइ भिषारि नृप, रंकनाक पति होइ
जागेलाभन हानिकछु, तिमि प्रपंच जियजोइ ॥९२॥
असबिचारिनाहिंकीजिअरोसू ❋ काहुहि बादिन देइअ दोसू
मोह निसासब सोवनि हारा ❋ देषिअसपन अनेक प्रकारा
एहिजगजामिनि जागहिं जोगी ❋ परमारथी प्रपंच बियोगी
जानिअतबहिंजीवजग जागा ❋ जबसबविषयबिलासबिरागा
होइ बिबेक मोह भ्रम भागा ❋ तब रघुनाथ चरन अनुरागा
सषा परम परमारथ एहू ❋ मनक्रम बचन रामपद नेहू
रामब्रह्म परमारथ रूपा ❋ अबिगतअलषअनादिअनूपा
सकलबिकार रहितगतभेदा ❋ कहिनितनेतिनिरूपहिंबेदा
दो० भगत भूमिभूसुर सुरभि, सुरहित लागि कृपाल ॥
करतचरितधरिमनुजतन, सुनतमिटहिंजगजाल॥९३॥
सषा समुझिअसपरिहरिमोहू ❋ सियरघुबीर चरन रतहोहू
कहत रामगुन भाभिनुसारा ❋ जागे जगमंगल दातारा
सकलसौचकरि रामनहावा ❋ सुचिसुजान बटछीरमँगावा
अनुजसहितसिरजटाबनाए ❋ देषिसुमंत्र नयनजल छाए
हृदयदाहअति बदनमलीना ❋ कहकरजोरिबचनअतिदीना
नाथकहेउअस कौसलनाथा ❋ लै रथजाहु रामके साथा
बनदेषाइ सुरसरि अन्हवाई ❋ आनेहु फेरिबेगि दोउभाई
लषनराम सिय आनेहुफेरी ❋ संसयसकल सकोच निबेरी
दो० नृपअस कहेउ गोसाइँजस, कहिय करौं बलिसोइ ॥
करिबिनतीपायन्हपरेउ, दीनबालजिमिरोइ ९४ ॥

तातकृपा करिकीजिअसोई * जाते अवध अनाथ न होई
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा * तातधरममगतुम्हसब सोधा
सिबि दधीच हरिचंदनरेसा * सहेधरमहित कोटि कलेसा
रंतिदेव बलिभूप सुजाना * धरमधरेउसहि संकटनाना
धरमन दूसर सत्य समाना * आगमनिगम पुरानबषाना
मैंसोइधरमसुलभ करिपावा * तजे तिहूँपुर अपजसछावा
संभावित कहँ अपजसलाहू * मरनकोटिसम दारुन दाहू
तुम्हसनतात बहुतकाकहऊँ * दिएउतरफिरिपातकलहऊँ

दो० पितुपदगहि कहि कोटिनति, बिनयकरबकरजोरि ॥
चिंताकवनिहुबातकै, तातकरिअजनिमोरि ॥ ९५ ॥

तुम्हपुनिपितुसमअतिहितमोरें * बिनती करौंतात करजोरें
सबबिधिसोइकरतब्यतुम्हारे * दुषन पाव पितु सोच हमारे
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू * भएउसपरिजनबिकलनिषादू
पुनिकछुलषनकहीकटुबानी * प्रभुबरजेबड अनुचितजानी
सकुचिराम निजसपथदेवाई * लषनसँदेसकहिअजानिजाई
कहसुमंत्र पुनि भूपसंदेसू * सहिनसकिहिसियबिपिनकलेसू
जोहिबिधिअवधआवफिरिसीया * सोइरघुबरहितुम्हहिकरनीया
नतरुनिपट अवलंबबिहीना * मैंनजिअबजिमि जलबिनुमीना

दो० मइकेससुरेसकलसुष, जबहिंजहाँमनमान ॥
तहँतबरहहिसुषेनसिय, जबलगिबिपतिबिहान ॥ ९६ ॥

बिनती भूपकीन्हजेहिभाँती * आरातिप्रीतिनसोकहिजाती
पितुसँदेससुनिकृपानिधाना * सियहिदीन्हिसिषकोटिबिधाना
सासुससुरगुर प्रिय परिवारू * फिरहुतसबकरमिटइषभारू

सुनिपतिबचनकहति बैदेही ❋ सुनहुप्रान पति परमसनेही
प्रभु करुनामय परमबिबेकी ❋ तनतजिरहतिछांहकिमिछेकी
प्रभाजाइ कहँभानु बिहाई ❋ कहँचंद्रिका चंदतजि जाई
पतिहि प्रेममय बिनयसुनाई ❋ कहतिसचिवमनगिरासुहाई
तुम्हपितुससुरसरिसहितकारी ❋ उतरदेउँकरिअनुचितभारी
दो० आरतिबससनमुषभइउँ, बिलगनमानबतात ॥
आरजसुतपदकमलबिनु, बादिजहांलगिनात ॥९७॥
पितु बैभव बिलाससमयडीठा ❋ नृपमनिमुकुट मिलितपदपीठा
सुषनिधान असपितुगृहमोरे ❋ पियबिहीन मन भावनभोरे
ससुर चक्कवइ कोसलराऊ ❋ भुअनचारिदसप्रगटप्रभाऊ
आगेहोइ जेहि सुरपति लेई ❋ अरध सिंघासन आसनदेई
ससुरएतादृस अवध निवासू ❋ प्रियपरिवार मातु समसासू
बिनुरघुपति पदपदुमपरागा ❋ मोहिकेउसपनेहुसुपदनलागा
अगमपंथ बनभूमि पहारा ❋ करिकेहरि सरसरितअपारा
कोल किरात कुरंग बिहंगा ❋ मोहिसबसुपदप्रानपतिसंगा
दो० सासुससुरसनमोरिहुंति, बिनयकरबि परिपांय ॥
मोरिसोचजनिकरिअकछु, मेंबनसुषीसुभाय ॥ ९८॥
प्राननाथ प्रिय देवर साथा ❋ बीरधुरीन धरेधनु भाथा
नहिमगश्रमभ्रमदुषमनमोरे ❋ मोहिलगिसोचकरिअजनिभोरे
सुनिसुमंत्रसिय सीतलबानी ❋ भएउबिकलजनुफनिमनिहानी
नयनसूझनहिं सुनइ नकाना ❋ कहिनसकइकछुअतिअकुलाना
रामप्रबोध कीन्ह बहुभांती ❋ तदपिहोतिनहिंसीतलछाती
जतन अनेकसाथहितकीन्हे ❋ उचितउतर रघुनंदन दीन्हे

मेटिजाइ नाहिं राम रजाई * कठिनकरमगतिकछुनबसाई
रामलषन सियपद सिरनाई * फिरेउबनिक जनुमूरगँवाई
दो० रथहाँकेउ हयरामतन, हेरिहेरि हिहिनाहिं ॥
देषिनिषाद बिषादबस, धुनहिंसीसपछिताहिं॥९९॥
जासुबियोग बिकलपसु ऐसे * प्रजामातु पितुजीहहिं कैसे
बरबस राम सुमंत्र पठाए * सुरसरि तीर आपुतबआए
माँगी नाव न केवट आना * कहइतुम्हार मरममैं जाना
चरनकमलरजकहँ सबकहई * मानुषकरनिमूरि कछुअहई
छुवतसिला भइनारिसुहाई * पाहन ते न काठ कठिनाई
तरनिउमुनिघरनीहोइ जाई * बाट परै मोरि नाउ उड़ाई
येहिप्रतिपालउँ सब परिवारू * नहिं जानौंकछुअवरकबारू
जौंप्रभु पारअवसि गा चहहू * मोहिपदपदुमपषारन कहहू
छं० पदकमलधोइ चढ़ाइनावननाथउतराई चहौं ॥
मोहिरामराउरिआनदसरथसपथसबसाँचीकहौं ॥
बरुतीरमारहुलषनपैजबलगिनपायपषारिहौं ॥
तबलगिनतुलसीदासनाथकृपालपारउतारिहौं ॥
सो० सुनि केवटकेबयन, प्रेम लपेटे अटपटे ॥
बिहँसेकरुनाअयन, चितइजानकीलषनतन ॥१००॥
कृपासिंधु बोले मुसुकाई * सोइकरुजेहिंतवनावनजाई
बेगि आनुजलपाय पषारू * होत बिलंब उतारहि पारू
जासुनाम सुमिरत एकबारा * उतरहिंनर भवसिंधुअपारा
सोइकृपालु केवटहिनिहोरा * जेहिंजगकिएतिहुँपगहुतेथोरा
पदनषनिरषि देवसरिहरषी * सुनिप्रभुबचनमोह मतिकरषी

केवट राम रजायसु पावा ❋ पानिकठवताभरिलेइआवा
अतिआनंद उमगिअनुरागा ❋ चरन सरोज पषारन लागा
बरषिसुमनसुरसकलसिहाहीं ❋ एहिसमपुन्यपुंजकोउनाहीं
दो॰ पदपषारि जलपान करि, आपुसहित परिवार ॥
पितरपारकरिप्रभुहिपुनि, मुदितगएउलेपार ॥१०१॥
उतरि ठाढभए सुरसरिरेता ❋ सीय रामगुहलषन समेता
केवट उतरिदंडवत कीन्हा ❋ प्रभुहिसकुचएहिनहिकछुदीन्हा
पियहियकीसियजाननिहारी ❋ मनिमुंदरीमनमुदितउतारी
कहेउ कृपाल लेहि उतराई ❋ केवट चरन गहे अकुलाई
नाथ आजमइंकाहन पावा ❋ मिटे दोष दुष दारिद दावा
बहुतकालमँइ कीन्हिमजूरी ❋ आजदीन्हिविधिबनिभलिभूरी
अबकछुनाथ न चाहिअमोरें ❋ दीन दयाल अनुग्रह तोरें
फिरती बार मोहिजोइ देवा ❋ सोप्रसाद मइंसिर धरिलेवा
दो॰ बहुत कीन्ह प्रभुलषनसिय, नहिंकछु केवट लेइ ॥
बिदाकीन्ह करुनायतन, भगतिबिमलबरदेइ॥१०२॥
तबमज्जनकरिरघुकुलनाथा ❋ पूजिपारथिव नाएउ माथा
सियसुरसरिहिकहेउकरजोरी ❋ मातु मनोरथ पुरउबिमोरी
पति देवर सँगकुसल बहोरी ❋ आइकरउँ जेहिपूजा तोरी
सुनिसियविनयप्रेमरससानी ❋ भइतबबिमलबारि बरबानी
सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही ❋ तबप्रभाउजगबिदितनकेही
लोकप होहिं विलोकततोरें ❋ तोहिसेवहिसबासिधिकरजोरें
तुमजोहमहिबडिविनयसुनाई ❋ कृपाकीन्हमोहिदीन्हि बडाई
तदपि देबिमइंदेब असीसा ❋ सफलहोनहितनिजबागीसा

दो० प्राननाथ देवर सहित, कुसल कोसला आइ ॥
पूजिहिसबमनकामना, सुजसरहिहिजगछाइ ॥१०३॥
गंगबचन सुनिमंगल मूला * मुदितसीयसुरसरिअनुकूला
तबप्रभुगुहहि कहेउघरजाहू * सुनत सूषमुष भाउर दाहू
दीन बचनगुहकहकरजोरी * बिनयसुनहुरघुकुलमनिमोरी
नाथ साथ रहि पंथदिखाई * करिदिनचारि चरन सेवकाई
जेहि बनजाइ रहब रघुराई * परन कुटीमहँकरबि सुहाई
तबमोहिकहँजसिदोबिरजाई * सोइकरिहौं रघुबीर दोहाई
सहज सनेह रामलषि तासू * संगलीन्ह गुहहृदय हुलासू
पुनिगुहग्यातिबोलिसबलीन्हे * करिपरितोषबिदासबकीन्हे
दो० तबगनपति सिवसुमिरिप्रभु, नाइसुरसरिहिमाथ ॥
सषाअनुजासियसहितबन, गवनकीन्हरघुनाथ ॥१०४॥
तेहिदिनभएउबिटपतरबासू * लषन सषासबकीन्हसुपासू
प्रातप्रातकृत करि रघुराई * तीरथ राजदीष प्रभु जाई
सचिव सत्यसर्द्धा प्रियनारी * माधवसरिसमीतहितकारी
चारि पदारथ भरा भँडारू * पुन्य प्रदेस देस अतिचारू
छेत्र अगम गढगाढसुहावा * सपनेहुनहिप्रतिपक्षिन्हपावा
सेन सकल तीरथ बरबीरा * कलुषअनीकदलनरन धीरा
सँगमसिंघासन सुठि सोहा * छत्रअषयबटमुनिमनमोहा
चँवर जमुन अरुगंग तरंगा * देषिहोहिं दुष दारिद भंगा
दो० सवहिं सुकृती साधु सुचि, पावहिं सब मनकाम ॥
बंदी वेद पुरान गन, कहहिं विमल गुनग्राम ॥१०५॥
कोकहिसकइ प्रयागप्रभाऊ * कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ

अस तीरथ पतिदेषिसुहावा * सुषसागर रघुवर सुषपावा
कहिसियलषनहिसषहिसुनाई * श्रीमुष तीरथ राज बडाई
करि प्रनाम देषत बनबागा * कहतमहातमअतिअनुरागा
एहिविधिआइविलोकीबेनी * सुमिरत सकल सुमंगलदेनी
मुदितनहाइकीन्हिसिवसेवा * पूजिजथाविधि तीरथ देवा
तब प्रभु भरद्वाज पहिआए * करत दंडवत मुनिउरलाए
मुनिमनमोदनकछुकहिजाई * ब्रह्मानंद रासि जनु पाई
दो० दीन्हि असीस मुनीसउर, अतिअनंदअसजानि ॥
लोचनगोचरसुकृतफल, मनहुँकिएविधिआनि ॥ १०६ ॥
कुसलप्रश्नकरिआसनदीन्हे * पूजिप्रेम परिपूरन कीन्हे
कंदमूल फल अंकुर नीके * दिएआनिमुनिमनहु अमीके
सीयलषन जनसहित सुहाए * अतिरुचिराम मूलफलषाए
भए विगत स्रमराम सुषारे * भरद्वाज मृदुवचन उचारे
आजसुफलतपतीरथत्यागू * आजसुफलजपजोगविरागू
सफलसकलसुभसाधनसाजू * रामतुम्हहिअवलोकतआजू
लाभअवधिसुषअवधिनदूजी * तुम्हरेदरस आसमब पूजी
अबकरि कृपा देहु वर एहू * निजपदसरसिजसहजसनेहू
दो० करमवचनमनछाडिछल, जबलगिजनन तुम्हार ॥
तबलगिसुषसपनेहुनहीं, किएँकोटिउपचार ॥ १०७ ॥
सुनिमुनिबचनरामसकुचाने * भावभगति आनंद अघाने
तबरघुबरमुनि सुजससुहावा * कोटिभाँतिकहिसबहिंसुनावा
सोबड सोसब गुनगनगेहू * जेहिमुनीस तुम्हआदर देहू
मुनिरघुबीर परसपर नवहीं * बचनअगोचरसुषअनुभवहीं

यहसुधिपाइ प्रयागनिवासी * बटुतापसमुनिसिद्धउदासी
भरद्वाज आश्रम सब आए * देषनदसरथ सुअन सुहाए
रामप्रनाम कीन्ह सबकाहू * मुदितभएलहि लोचनलाहू
देहिंअसीस परम सुषपाई * फिरे सराहत सुंदरताई
दो० रामकीन्ह बिश्रामनिसि, प्रातप्रयागनहाइ ॥
चलेसहितसियलषनजन, मुदितमुनिहिसिरनाइ १०८॥
रामसप्रेम कहेउ मुनिपाहीं * नाथकहिअहमकेहिमगजाहीं
मुनिमनबिहँसिरामसनकहहीं * सुगमसकलमगतुम्हकहँअहहीं
साथलागिमुनिसिष्यबुलाए * सुनिमनमुदितपचासकआए
सबन्हिराम पदप्रेम अपारा * सकलकहहिंमगदीष हमारा
मुनिबटुचारिसंग तब दीन्हे * जिन्हबहुजनमसुकृतसबकीन्हे
करिप्रनामरिषि आयसुपाई * प्रमुदित हृदयचले रघुराई
ग्रामनिकटनिकसहिंजबजाई * देषहिंदरस नारिनर धाई
होहिंसनाथ जनमफलपाई * फिरहिंदुषित मनसंगपठाई
दो० बिदाकिएबटु बिनयकरि, फिरेपाइमनकाम
उतरिनहाए जमुनजल, जोसरीरसमस्याम ॥१०९॥
सुनततीर बासी नरनारी * धाएनिजानिज काजबिसारी
लषन रामसिय सुंदर ताई * देषिकरहिं निजभाग्यबडाई
अतिलालसासबहिमन माहीं * नाउँगाउँ बूझत सकुचाहीं
जेतिन्हमहँबयाबिरिधसयाने * तिन्हकरिजुगुतिरामपहिचाने
सकलकथातिन्हसबहिसुनाई * बनहिचले पितुआयसुपाई
सुनिसबिषादसकलपछिताहीं * रानीराय कीन्ह भलनाहीं
तेहिअवसरएकतापसआवा * तेजपुंजलघु बयस सुहावा

कबिअलषितगतिबेषबिरागी ❋ मनक्रमबचन रामअनुरागी

दो० सजल नयनतन पुलकिनिज, इष्टदेउपहिचानि ॥
परेउदंडजिमिधरानितल, दसानजाइबपानि ॥११०॥

रामसप्रेम पुलकि उरलावा ❋ परमरंकजनु पारस पावा
मनहुप्रेम परमारथ दोऊ ❋ मिलत धरेतनकहसबकोऊ
बहुरिलषन पायनसोइलागा ❋ लीन्हउठाइउमगिअनुरागा
पुनिसियचरनधूरिधरिसीसा ❋ जननिजानिसिसुदीन्हिअसीसा
कीन्ह निषाददंडवत तेही ❋ मिलेउमुदितलषिरामसनेही
पिअत नयनपुटरूप पियूषा ❋ मुदितसुअमनपाइजिमिभूषा
तेपितुमातु कहहु सषिकैसे ❋ जिन्हपठए बनबालक ऐसे
रामलषन सियरूप निहारी ❋ सोचसनेह बिकल नरनारी

दो० तबरघुबीर अनेकबिधि, सषहिसिषावनदीन्ह ।
रामरजायसुसीसधरि, भवनगवनतेइंकीन्ह ॥१११॥

पुनिसियरामलषनकरजोरी ❋ जमुनहिकीन्हप्रनामबहोरी
चलेससीयमुदित दोउभाई ❋ रबितनुजा कैकरत बडाई
पथिकअनेकमिलहिंमगजाता ❋ कहहिंसप्रेम देषिदोउभ्राता
राजलषन सब अंगतुम्हारे ❋ देषिसोच अति हृदयहमारे
मारग चलहु पयादेहि पाएँ ❋ जोतिष झूंठ हमारें भाएँ
अगम पंथगिरिकाननभारी ❋ तेहिमहंसाथनारि सुकुमारी
करि केहरि बनजाइन जोई ❋ हमसँगचलहिंजोआयसुहोई
जावजहाँलगि तहं पहुँचाई ❋ फिरबबहोरि तुम्हहिसिरनाई

दो० येहिबिधि पूँछहिं प्रेमबस, पुलकगात जलनैन ॥
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहिं, कहिबिनीतमृदुबैन ॥११२॥

जेपुरगाँव बसहिं मगमाहीं ❀ तिन्हहिंनागसुरनगर सिहाहीं
केहिंसुकृती केहिघरी बसाए ❀ धन्यपुन्य मयपरम सुहाए
जहँजहँरामचरन चलिजाहीं ❀ तिन्हसमानअमरावतिनाहीं
पुन्यपुंजमग निकटनेवासी ❀ तिन्हहिंसराहहिंसुरपुरवासी
जेभरिनयनविलोकहिंरामहिं ❀ सीतालषनसहितघनस्यामहिं
जेसरसरितराम अव गाहहिं ❀ तिन्हहिंदेउसरसरितसराहहिं
जेहितरु तरप्रभु बैठहिं जाईं ❀ करहिं कल्पतरुतासु बडाईं
परसि रामपद पदुम परागा ❀ मानति भूमिभूरिनिजभागा

दो॰ छाँहकरहिं घनविवुधगन, बरषहिं सुमनसिहाहिं ॥
देषत गिरिवनविहंग मृग, रामचलेमग जाहिं ॥११३॥

सीता लषन सहित रघुराई ❀ गाँवनिकटजबनिकसहिंजाई
सुनिसब बालवृद्ध नरनारी ❀ चलहिंतुरतगृहकाजबिसारी
राम लषन सिय रूपनिहारी ❀ पाइनयन फलहोहिं सुषारी
सजलविलोचन पुलकसरीरा ❀ सबभएमगन देषिदोउबीरा
बरनिन जाइदसा तिन्हकेरी ❀ लहिजनुरंकन्हिसुरमनिढेरी
एकन्ह एकबोलि सिषदेहीं ❀ लोचन लाहु लेहुछन एहीं
रामहि देषि एक अनुरागे ❀ चितवत चलेजाहिंसँग लागे
एकनयनमगछबिउरआनी ❀ होहिंसिथिलतनमनबरबानी

दो॰ एक देषिबट छांहभलि, डासिमृदुल त्रिनपात ॥
कहहिंगवाइअछिनकश्रम, गवनबअबहिंकिप्रात ११६

एककलसभरि आनहिंपानी ❀ अँचइअनाथकहहिंमृदुबानी
सुनिप्रियबचनप्रीतिअतिदेषी ❀ राम कृपाल सुसील बिसेषी
जानीस्रमितसीय मनमाहीं ❀ घरिकबिलंब कीन्हबटछाहीं

मुदितनारिनर देषहिं सोभा ❋ रूपअनूप नयन मनलोभा
एकटकसबसोहहिं चहुँओरा ❋ रामचंद मुषचंद चकोरा
तरुन तमाल बरन तनसोहा ❋ देषत कोटिमदन मनमोहा
दामिनिबरनलषनसुठिनीके ❋ नषसिषसुभग भावते जीके
मुनिपटकटिन्ह कसेतूनीरा ❋ सोहहिंकरकमलनिधनुतीरा

दो० जटामुकुट सीसनिसुभग, उरभुज नयन बिसाल ॥
सरदपरबबिधुबदनबर, लसतस्वेदकनजाल ॥११५॥

बरनिन जाइ मनोहर जोरी ❋ सोभाबहुत थोरिमति मोरी
राम लषन सिय सुंदरताई ❋ सबचितवहिंचितमनमतिलाई
थके नारिनर प्रेम पिआसे ❋ मनहुँमृगी मृगदेषि दियासे
सीयसमीप ग्रामतिय जाहीं ❋ पूँछतअति सनेह सकुचाहीं
बार बार सब लागहिं पाए ❋ कहहिंबचन मृदुसरलसुभाए
राजकुमारिबिनयहमकरहीं ❋ तियसुभाय कछुपूछत डरहीं
स्वामिनिअबिनयछमबिहमारी ❋ बिलगनमानबिजानिगवारी
राजकुँअरदोउसहजसलोने ❋ इन्हतेलहिदुतिमरकत सोने

दो० स्यामल गौर किसोरबर, सुंदर सुषमा अयन ॥
सरद सर्बरी नाथमुष, सरद सरोरुह नयन ॥११४॥

कोटि मनोज लजावनि हारे ❋ सुमुषिकहहुकोआहिं तुमारे
सुनि सनेहमय मंजुल बानी ❋ सकुचिसीयमनमहँमुसुकानी
तिन्हहिबिलोकिबिलोकतिधरनी ❋ दुहुँसकोचसकुचतिबरबरनी
सकुचिसप्रेम बालमृगनयनी ❋ बोलीमधुरबचनापिकबयनी
सहजसुभाय सुभगतन गोरे ❋ नाम लषनलघु देवरमोरे
बहुरिबदनबिधुअंचलढाँकी ❋ पिअतनचितइभौंहकरिबाँकी

षंजन मंजुतिरीछे नयननि * निजपतिकहेउतिन्हहिसियसयननि
भई मुदित सब ग्रामबधूटी * रंकन्ह रायरासि जनु लूटी
दो० अतिसप्रेम सियपाय परि, बहुबिधि देहिं असीस ॥
सदासोहागिनिहोहुतुम्ह, जबलगिमहिअहिसीस॥११७
पारबती सम पति प्रियहोहू * देबिन हमपर छाँडबिछोहू
पुनिपुनिबिनयकरिअकरजोरी * जौंएहिमारगफिरिअबहोरी
दरसनदेबजानि निजदासी * लषीसीय सब प्रेम पिआसी
मधुरबचनकहिकहि परितोषी * जनुकुमुदिनी कौमुदीपोषी
तबहिलषन रघुबररुषजानी * पूछेउमगलोगन्हि मृदुबानी
सुनत नारिनर भए दुषारी * पुलकितगात बिलोचनबारी
मिटामोदमन भए मलीने * बिधिनिधिदीन्हिलेतजनुछीने
समुझिकरमगतिधीरजकीन्हा * सोधिसुगममगतिन्ह कहि दीन्हा
दो० लषन जानकी सहिततब, गवन कीन्ह रघुनाथ ॥
फेरे सबप्रिय बचनकहि, लिएलाइमनसाथ ॥११८॥
फिरतनारिनरअति पछिताहीं * दैअहि दोषदेहिं मनमाहीं
सहिताबिषादपरसपरकहहीं * बिधिकरतबउलटेसबअहहीं
निपटनिरंकुस निठुरनिसंकू * जेहिंससिकीन्हसरुजसकलंकू
रूषकलपतरु सागर षारा * तेहिंपठए बन राजकुमारा
जौंपै इन्हहि दीन्ह बनबासू * कीन्हबादिबिधिभोगबिलासू
एबिचरहिंमगबिनुपद त्राना * रचेबादिबिधि बाहन नाना
एमहि परहिंडासिकुसपाता * सुभगसेजकतसृजतबिधाता
तरुतरबासइन्हहिबिधिदीन्हा * धवलधामरचिरचिश्रमकीन्हा
दो० जौंएमुनि पटधर जटिल, सुंदर सुठि सुकुमार ॥
बिबिधिभाँति भूषनबसन, बादिकिएकरतार ॥११९॥

जौंए कंदमूल फल षाहीं ❋ बादिसुधादिअमनजगमाहीं
एक कहहिं एसहज सुहाए ❋ आपप्रगटभएविधिनबनाए
जहँलगिबेदकहीबिधि करनी ❋ श्रवननयनमनगोचर बरनी
देषहुषोजि भुवनदस चारी ❋ कहँअसपुरुषकहाँअसिनारी
इन्हहिंदेषिबिधिमनअनुरागा ❋ पटतर जोग बनावइ लागा
कीन्ह बहुतश्रमऐकन आए ❋ तेहिइरिषावन आनिदुराए
एककहहिंहमबहुतनजानहिं ❋ आपुहिपरमधन्यकरि मानहिं
तेपुनि पुन्य पुंजहम लेषे ❋ जेदेषहिं देषिहहिं जिन्हदेषे

दो० एहिबिधिकहिकहिबचनप्रिय, लेहिंनयनभरिनीर ॥
किमिचलिहहिंमारगअगम, सुठिसुकुमारसरीर १२० ॥

नारि सनेह बिकलबसहोहीं ❋ चकई सांझसमय जनुसोहीं
मृदुपदकमलकठिनमगजानी ❋ गहबरिहृदयकहहिंमृदुबानी
परसतमृदुल चरन अरुनारे ❋ सकुचतिमहिजिमि हृदयहमारे
जौंजगदीसइन्हहिंबन दीन्हा ❋ कसनसुमनमयमारगकीन्हा
जौंमाँगापाइअबिधि पाहीं ❋ एराषिअहिसषिआँषिन्हमाहीं
जेनरनारिन अवँसर आए ❋ तिन्हसिय रामन देषनपाए
सुनिसरूपबूझहिं अकुलाई ❋ अबलगिगए कहाँलगिभाई
समरथ धाइबिलोकहिंजाई ❋ प्रमुदितफिरहिंजनमफलपाई

दो० अबला बालकवृद्ध जन, कर मीजहिं पछिताहिं ॥
होहिं प्रेमबस लोगइमि, रामजहाँ जहँ जाहिं ॥ १२१ ॥

गाँव गाँव असहोइ अनंदू ❋ देषिभानुकुल कैरव चंदू
जेकछु समाचारसुनिपावहिं ❋ तेनृपरानिहि दोसु लगावहिं
कहहिंएक अतिभलनरनाहू ❋ दीन्हहमहिंजेहिलोचनलाहू

कहहिं परसपर लोग लोगाईं * बातें सरल सनेह सुहाईं
तेपितुमातुधन्य जिन्हजाए * धन्यसो नगर जहाते आए
धन्यसो देस सैलबन गाऊँ * जहँजहँजाहिंधन्यसोइठाऊँ
सुष पाएउ बिरंचि रचितेही * एजेहिकेसब भाँति सनेही
रामलषन पथि कथा सुहाई * रहीसकल मगकानन छाई
दो० एहिबिधि रघुकुल कमलरबि, मगलोगन्ह सुषदेत ॥
जाहिं चलेदेषत बिपिन, सिय सौमित्र समेत ॥१२२॥
आगे रामलषन पुनिपाछे * तापस बेषबिराजत काछे
उभयबीचसियसोहति कैसे * ब्रह्मजीव बिचमाया जैसे
बहुरिकहउँछबिजसिमनबसई * जनुमधुमदनमध्यरतिलसई
उपमाबहुरिकहउँजियजोही * जनुबुधबिधुबिचरोहिनिसोही
प्रभुपदरेषबीचबिच सीता * धरतिचरनमगचलति सभीता
सीयराम पदअंक बराए * लषनचलहिं मगदाहिनलाए
रामलषनसियप्रीति सुहाई * बचन अगोचरकिमिकहिजाई
षगमृगमगन देषिछबिहोही * लिएचोरि चितराम बटोही
दो० जिन्हजिन्ह देषेपथिकप्रिय, सियसमेत दोउभाइ ॥
भवमग अगम अनंदतेइ, बिनुश्रम रहेसिराइ ॥१२३॥
अजहुँजासुउर सपनेहुकाऊ * बसहिं लषनसियरामबटाऊ
राम धाम पथ पाइहि सोई * जोपथपावकबहुँ मुनि कोई
तबरघुबीरस्त्रमितसियजानी * देषिनिकटबट सीतलपानी
तहँबसि कंदमूल फल पाई * प्रात नहाइचले रघुराई
देषतबनसर सैल सुहाए * बालमीक आश्रमप्रभु आए
राम दीषमुनि बाससुहावन * सुंदर गिरिकाननजलपावन

सरनिसरोज बिटप बन फूले * गुंजतमंजु मधुपरस भूले
षगमृगविपुलकोलाहलकरहीं * बिरहितबैर मुदितमनचरहीं

दो० सुचिसुंदरआश्रमनिरषि, हरषेराजिवनयन ॥
मुनिरघुबर आगमनसुनि, आगेआए उलैन ॥१२४॥

मुनिकहँ रामदंडवतकीन्हा * आसिरबाद बिप्रबर दीन्हा
देषिरामछबि नयनजुड़ाने * करिसनमानआश्रमहिंआने
मुनिवरअतिथिप्रानप्रियपाए * कंदमूलफल मधुर मगाए
सियसौमित्रि रामफलषाए * तबमुनि आसन दिएसुहाए
बालमीकि मनआनंदभारी * मंगल मूरति नयननिहारी
तबकर कमल जोरिरघुराई * बोलेबचन श्रवन सुषदाई
तुम्हत्रिकालदरसीमुनिनाथा * बिस्वबदरजिमितुम्हरेहाथा
असकहिप्रभुसबकथाबषानी * जेहिजेहिभांतिदीन्हवनरानी

दो० तात बचनपुनिमातु हित, भाइ भरत असराउ ॥
मोकहँदरसतुम्हारप्रभु, सबममपुन्यप्रभाउ ॥१२५॥

देषिपाय मुनिराय तुम्हारे * भएसुकृत सब सुफल हमारे
अब जहँ राउर आयसुहोई * मुनिउदबेगन पावइ कोई
मुनितापसजिन्हतेदुषलहहीं * तेनरेस बिनुपावक दहहीं
मंगल मूल बिप्र परितोषू * दहइकोटि कुल भूसुर रोषू
असजियजानिकहियसोइठाऊं * सियसौमित्रिसहितजहँजाऊँ
तहँरचिरुचिरपरनात्रिनसाला * बासकरउँकछुकाल कृपाला
सहजसरलसुनिरघुबरबानी * साधुसाधु बोलेमुनिग्यानी
कसनकहहुअस रघुकुलकेतू * तुम्ह पालक संततश्रुतिसेतू

छं० श्रुतिसेतु पालकरामतुम्ह जगदीस माया जानकी ॥
जोसृजतिजगपालतिहरति रुपपाइकृपानिधानकी ॥
जोसहससीस अहीसमहिधरलषन सचराचरधनी ॥
सुरकाजधरिनरराजतनचलेदलनषलनिसिचरअनी ॥

सो० राम सरूप तुम्हार, बचन अगोचर बुद्धिपर ॥
अविगतअलषअपार, नेतिनेतिनितनिगमकह १२६

जगपेषन तुम्हदेषन्हिहारे ॥ बिधिहरिसंभुनचावनि हारे
तेउनजानहिं मरमतुम्हारा ॥ अवरतुम्हहिंकोजाननिहारा
सोइजानइ जेहिदेहु जनाई ॥ जानततुम्हहिंतुम्हइहोइजाई
तुम्हरिहिकृपातुम्हहिरघुनंदन ॥ जानहिंभगतभगतउरचंदन
चिदानंद मयदेह तुम्हारी ॥ बिगतबिकारजानअधिकारी
नरतन धरेहु संतसुरकाजा ॥ कहहु करहुजस प्राकृतराजा
रामदेषिसुनि चरिततुम्हारे ॥ जड़मोहहिंवुध होहिंसुषारे
तुम्हजोकहहु करहुसवसाँचा ॥ जसकाछिअतसचाहिअनाचा

दो० पुछेहुमोहि कि रहौं कहँ, मैं पूछत सकुचाउँ
जहँनहोहुतहँदेहुकहि, तुम्हहि देषावउँठाउँ ॥१२७॥

सुनिमुनिबचनप्रेमरस साने ॥ सकुचिराममनमहँ मुसुकाने
बालमीकिहँसिकहहिबहोरी ॥ बानीमधुर अमिअरसबोरी
सुनहुरामअवकहउँनिकेता ॥ जहाँबसहुसिअ लषनसमेता
जिन्हकेश्रवनसमुद्रसमाना ॥ कथातुम्हारिसुभगसरिनाना
भरहिं निरंतर होहिंन पूरे ॥ तिन्हके हियतुम्हकहँगृहरूरे
लोचनचातकजिन्हकरिराषे ॥ रहहिंदरसजलधरअभिलाषे
निदरहिंसरित सिंधुसरबारी ॥ रूपबिंदुजल होहिं सुषारी

तिन्हकेहृदयसदन सुषदायक * बसहुबंधु सियसहरघुनायक

दो॰ जसतुह्मार मानसबिमल, हंसिनिजीहा जासु ॥
मुकताहलगुनगनचुनइ, रामबसहुमनतासु १२८ ॥

प्रभुप्रसादसुचिसुभगसुबासा * सादरजासु लहइनित नासा
तुम्हहिनिबेदितभोजनकरहीं * प्रभुप्रसाद पटभूषन धरहीं
सीस नवहिंसुरगुरद्विजदेषी * प्रीतिसहितकरिबिनयबिसेषी
करनितकरहिं रामपदपूजा * रामभरोस हृदयनहिं दूजा
चरनराम तीरथ चलिजाहीं * रामबसहु तिन्हके मनमाहीं
मंत्रराज नितजपहिं तुह्मारा * पूजहिंतुम्हहिसहितपरिवारा
तरपनहोमकरहिंबिधिनाना * बिप्र जेंवाइ देहिंबहु दाना
तुम्हतेअधिकगुरहिंजियजानी * सकलभायसेवहिं सनमानी

दो॰ सबकरि माँगहिं एक फल, राम चरन रतिहोउ ॥
तिनकेमनमंदिरबसहु, सियरघुनंदन दोउ १२९ ॥

कामकोहमद मानन मोहा * लोभन छोभन रागनद्रोहा
जिनकेकपटदंभनहिं माया * तिन्हके हृदयबसहु रघुराया
सबके प्रियसबके हितकारी * दुषसुषसरिस प्रसंसागारी
कहहिंसत्यप्रियबचन बिचारी * जागतसोवत सरनतुह्मारी
तुम्हहिंछाड़िगतिदूसरिनाहीं * रामबसहु तिन्हकेमनमाहीं
जननी समजानहिंपरनारी * धनपराव बिपते बिषभारी
जे हरषहिं परसंपति देषी * दुषितहोहिंपरबिपतिबिसेषी
जिन्हहिरामतुह्मप्रान पिआरे * तिन्हकेमनसुभसदनतुम्हारे

दो॰ स्वामिसषा पितुमातुगुर, जिन्हके सबतुम्हतात ॥
मनमंदिर तिन्ह केबसहु, सीयसहित दोउभ्रात १३० ॥

अवगुनतजिसबकेगुनगहहीं ❀ बिप्र धेनुहित संकट सहहीं
नीतिनिपुनजिन्हकइजगलीका ❀ घरतुम्हारतिन्हकरमननीका
गुनतुम्हारसमुझइनिजदोसा ❀ जेहिसबभाँतितुम्हारभरोसा
रामभगत प्रियलागहिंजेही ❀ तेहिउर बसहुसहित बैदेही
जातिपाँति धनधरमबडाई ❀ प्रियपरिवार सदन सुषदाई
सबतजितुम्हहिंरहइलउलाई ❀ तिहि के हृदय रहहु रघुराई
सरग नरकअपबरगसमाना ❀ जहँतहँ देष धरे धनु बाना
करम बचन मनराउर चेरा ❀ रामकरहु तेहिके उरडेरा

दो॰ जाहिनचाहिअ कबहुँकछु, तुम्हसनसहजसनेह ॥
बसहुनिरंतरतासुमन, सोराउरनिजगेह ॥ १३१ ॥

एहिबिधिमुनिबरभवनदेषाए ❀ बचन सप्रेमराम मन भाए
कहमुनिसुनहुभानुकुलनायक ❀ आश्रमकहउँसमय सुषदायक
चित्रकूट गिरि करहुनिवासू ❀ जहँ तुम्हारसबभाँतिसुपासू
सैल सुहावन कानन चारू ❀ करिकेहरिमृगबिहँग बिहारू
नदी पुनीत पुरान बषानी ❀ अत्रिपियानिजतपबलआनी
सुरसरि धारनाउँमंदाकिनि ❀ जोसब पातकपोतकडाकिनि
अत्रिआदिमुनिवरबहुबसहीं ❀ करहिंजोगजपतपतन कसहीं
चलहुसफलश्रमसबकरकरहू ❀ रामदेहु गौरव गिरिवरहू

दो॰ चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाइ ॥
आइ नहाए सरितबर, सियसमेतदोउभाइ ॥ १३२ ॥

रघुबर कहेउ लषनभलघाटू ❀ करहु कतहुँ अबठाहरठाटू
लषनदीष पयउतर करारा ❀ चहुँदिसिफिरेउधनुषजिमिनारा
नदीपनच सरसमदमदाना ❀ सकलकलुषकलिसाउजनाना

चित्रकूट जनु अचल अहेरी ※ चुकइन घात मारमुठ भेरी
असकहि लषन ठाउँदेषरावा ※ थलविलोकिरघुवर सुपपावा
रमेउ राम मनदेवन्ह जाना ※ चले सहितसुरपतिपरधाना
कोल किरात बेषसब आए ※ रचेपरन त्रिनसदन सुहाए
बरनिन जाहिं मंजुदुइसाला ※ एकललितलघुएक बिसाला
दो० लषनजानकीसहितप्रभु, राजत रुचिर निकेत ॥
सोहमदनमुनिबेषजनु, रतिरितु राज समेत ॥१२३॥
अमरनागकिन्नरदिसिपाला ※ चित्रकूट आए तेहिकाला
रामप्रनाम कीन्ह सबकाहू ※ मुदितदेव लहिलोचन लाहू
बरषि सुमन कहदेवसमाजू ※ नाथ सनाथ भए हम आजू
करिबिनतीदुषदुसह सुनाए ※ हरषितनिजानिजसदनसिधाए
चित्रकूट रघुनंदन छाए ※ समाचारमुनिसुनिमुनिआए
आवत देषिमुदित मुनिबृंदा ※ कीन्हदंडवत रघुकुल चंदा
मुनिरघुबरहि लाइ उरलेहीं ※ सुफलहोन हितआसिषदेहीं
सियसौमित्रिरामछबिदेषहिं ※ साधनसकलसफलकरिलेषहिं
दो० जथाजोग सनमानि प्रभु, बिदाकिए मुनिवृन्द नवा०४
करहिंजोगजपजागतप, निजआश्रमन्हिसुछन्द १२४
यहसुधिकोलकिरातन्हपाई ※ हरषे जनुनवनिधिघर आई
कंदमूलफल भरिभरि दोना ※ चले रंकजनु लूटन सोना
तिन्हमहँजिन्हदेषेदोउभ्राता ※ अपरतिन्हहिंपूछहिंमगजाता
कहत सुनत रघुबीर निकाई ※ आइ सबन्हि देषे रघुराई
करहिं जोहार भेंटधरिआगे ※ प्रभुहिविलोकहिंअतिअनुरागे
चित्रलिषे जनुजहँ तहँ ठाढे ※ पुलकसरीर नयन जलबाढे

राम सनेह मगनसब जाने ❀ कहिप्रियबचनसकलसनमाने
प्रभुहि जोहारिबहोरिबहोरी ❀ बचनबिनीतकहहिंकरजोरी

दो० अबहम नाथसनाथ सब, भए देषि प्रभुपाय ॥
भाग हमारे आगमन, राउर कोसलराय १३५ ॥

धन्यभूमि बन पंथ पहारा ❀ जहँजहँनाथ पाउतुम्ह धारा
धन्यबिहँग मृगकाननचारी ❀ सफलजनमभएतुम्हहिनिहारी
हमसब धन्यसहितपरिवारा ❀ दीषदरसभरि नयनतुम्हारा
कीन्हबासभलिठाउँबिचारी ❀ इहाँसकल रितुरहब सुषारी
हमसबभाँति करब सेवकाई ❀ करिकेहरि अहि बाघबराई
बनबेहड गिरि कन्दरषोहा ❀ सबहमार प्रभुपगपग जोहा
जहँतहँतुम्हहिअहेरषेलाउब ❀ सरनिझर भलठाँउ देषाउब
हम सेवक परिवार समेता ❀ नाथनसकुचब आयसु देता

दो० बेद बचन मुनिमन अगम, ते प्रभुकरुना अयन ॥
बचनकिरातनकेसुनत, जिमिपितुबालकबयन १३६

रामहि केवल प्रेम पियारा ❀ जानिलेउ जो जाननिहारा
रामसकल बनचर तब तोषे ❀ कहिमृदुबचन प्रेमपरितोषे
बिदाकिए सिरनाइ सिधाए ❀ प्रभुगुनकहतसुनत घरआए
एहिबिधिसियसमेत दोउभाई ❀ बसहिंबिपिनसुरमुनि सुषदाई
जबते आइरहे रघुनायक ❀ तबते भएउबनमंगलदायक
फूलहिंफलहिंबिटपबिधिनाना ❀ मंजुबलितबर बेलि बिताना
सुरतरुसरिस सुभायसुहाए ❀ मनहुबिबुधबनपरिहरिआए
गुंज मंजु तर मधुकर श्रेनी ❀ त्रिबिधबयारि बहइसुषदेनी

दो० नीलकंठ कलकंठ सुक, चातक चक्क चकोर ॥
भाँतिभाँतिबोलहिंबिहँग, श्रवनसुपदचितचोर॥१३७॥
करिकेहरि कपिकोलकुरंगा ❋ बिगतबैरबिचरहिं सब संगा
फिरत अहेर रामछबि देषी ❋ होहिंमुदित मृगबृंद बिसेषी
बिबुधबिपिनजहँलगिजगमाहीं ❋ देषिराम बनसकल सिहाहीं
सुरसरिसरसइदिनकरकन्या ❋ मेकलसुता गोदावरि धन्या
सब सर सिंधुनदी नदनाना ❋ मंदाकिनिकरकरहिं बषाना
उदयअस्तगिरि अरुकैलासू ❋ मंदरमेरु सकल सुरबासू
सैलहिमाचल आदिक जेते ❋ चित्रकूट जसगावहिं तेते
बिंधिमुदित मनसुषनसमाई ❋ स्रमबिनु बिपुलबडाई पाई
दो० चित्रकूटके बिहँगमृग, बेलि बिटपत्रिन जाति ।
पुन्यपुंजसबधन्यअस, कहहिं देवदिनराति ॥ १३८॥
नयनवंत रघुबरहिं बिलोकी ❋ पाइजनमफलहोहिंबिसोकी
परसिचरनरजअचरसुषारी ❋ भएपरम पदके अधिकारी
सोबन सैलसुभाय सुहावन ❋ मंगलमयअति पावनपावन
महिमाकहिअ कवनबिधितासू ❋ सुषसागरजहँकीन्ह निवासू
पयपयोधितजिअवधबिहाई ❋ जहँ सियलषनरामरहे आई
कहिनसकहिंसुषमाजसिकानन ❋ जौंसतसहसहोंहिं सहसानन
सो मैं बरनि कहौंबिधिकेहीं ❋ डावरकमठ किमंदरलेहीं
सेवहिं लषनकरममनबानी ❋ जाइ न सीलसनेह बषानी
दो० छिनछिन लषिसियरामपद, जानिआपुपरनेह ॥
करत न सपनेहु लषनचित, बंधु मातुपितुगेह ॥१३९॥
रामसंग सियरहति सुषारी ❋ पुरपरिजनगृहसुरतिबिसारी

छिनछिनपियविधुबदननिहारी * प्रमुदितमनहुचकोरकुमारी
नाहनेह नितबढतबिलोकी * हरषितरहतिदिवसजनुकोकी
सियमनरामचरनअनुरागा * अवधसहससमबनाप्रियलागा
परनकुटीप्रियप्रिअतमसंगा * प्रियपरिवार कुरंग बिहंगा
सासुससुरसममुनितियमुनिवर * असन अमिअसमकंदमूलफर
नाथ साथ साथरी सुहाई * मयन सयनसयसमसुखदाई
लोकपहोहिंबिलोकत जासू * तोहिकिमोहिसकबिषयबिलासू
दो० सुमिरतरामहितजहिंजन, त्रिनसमबिषय बिलासु।
रामप्रियजगजननिसिय, कछुनआचरजुतासु॥१४०॥
सीयलषनजेहिबिधसुखलहहीं * सोइरघुनाथकरहिंसोइकहहीं
कहहिंपुरातन कथाकहानी * सुनहिंलषनसियअतिसुषमानी
जबजबरामअवधसुधिकरहीं * तबतबबारि बिलोचनभरहीं
सुमिरिमातुपितुपरिजनभाई * भरत सनेह सील सेवकाई
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी * धीरजधरहिंकुसमउबिचारी
लषिसियलषनबिकलहोइजाहीं * जिमिपुरुषहिंअनुसरपरिछाहीं
प्रियाबंधु गति लषिरघुनंदन * धीरकृपालभगतउर चंन्दन
लगे कहनकछुकथा पुनीता * सुनिसुपलहहिंलषनअरुसीता।
दो० रामलषन सीता सहित, सोहत परन निकेत।
जिमिबासव बस अमरपुर, सची जयंत समेत॥१४१॥
जोगवहिंप्रभुसियलषनहिंकैसे * पलकबिलोचनगोलकजैसे
सेवहिंलषन सीयरघुबीरहिं * जिमिअबिबेकीपुरुषसरीरहिं
एहिबिधिप्रभुबनबसहिंसुपारी * षगमृगसुरतापस हितकारी
कहेउँराम बनगवन सुहावा * सुनहुसुमंत्रअवधजिमिआवा

फिरेउनिषादप्रभुहिपहुँचाई ❋ सचिवसहितरथदेपिसिआई
मंत्रीबिकलबिलोकिनिषादू ❋ कहिनजाइजसभएउबिषादू
रामरामसियलषन पुकारी ❋ परेउधरनितलब्याकुलभारी
देषिदषिनदिसिहयहिहिनाहीं ❋ जनुबिनुपंखबिहंगअकुलाहीं

दो० नहिंत्रिनचरहिं न पिअहिंजल, मोचहिंलोचनबारि ।
ब्याकुलभएउनिषादपति, रघुबरबाजिनिहारि १४२॥

धरिधीरजतब कहइ निषादू ❋ अबसुमंत्र परिहरहु बिषादू
तुम्हपंडित परमारथ ज्ञाता ❋ धरहुधीरलपिबिमुपबिधाता
बिबिधकथाकहिकहिमृदुबानी ❋ रथ बैठारेउ बरबस आनी
सोकसिथिलरथसकैनहाँकी ❋ रघुबर बिरहपीर उरबाँकी
तरफराहिं मगचलहिं नघोरे ❋ बनमृगमनहु आनिरथजोरे
अढुकिपरहिंफिरिहेरहिंपीछे ❋ रामबियोगबिकलदुप तीछे
जो कह राम लषन बैदेही ❋ हिकरि हिकरिहितहेरहिंतेही
बाजिबिरहगतिकहिकिमिजाती ❋ बिनुमनिफनिक बिकलजेहिभांती

दो० भएउ निषाद बिषाद बस, देषत सचिव तुरंग ।
बोलि सुसेवक चारितब, दिए सारथी संग ॥ १४३ ॥

गुहसारथिहि फिरेउपहुँचाई ❋ बिरहबिषादबरनिनहिंजाई
चलेअवधलेइरथहि निषादा ❋ होहिंछिनहिंछिनमगनबिषादा
सोचसुमंत्रबिकल दुखदीना ❋ धिगजीवन रघुबीर बिहीना
रही न अंतहु अधम सरीरू ❋ जसुनलहेउबिछुरतरघुबीरू
भएअजस अघभाजनप्राना ❋ कवनहेतुनहिं करत पयाना
अहह मंदमन अवसर चूका ❋ अजहुँन हृदय होतदुइटूका
मीजिहाथसिरधुनिपछताई ❋ मनहुकृपिनधनरासि गँवाई

बिरद बाँधि बरबीर कहाई * चलेउ समरजनुसुभटपराई
दो॰ विप्रबिबेकीबेदबिद, संमतसाधु सुजाति।
जिमिधोषे मदपानकर,सचिवसोचतेहिभाँति ॥१४४॥
जिमिकुलीनातियसाधुसयानी * पतिदेवता करम मन बानी
रहैकरम बस परिहरि नाहू * सचिवहृदयतिमिदारुनदाहू
लोचनसजलडीठि भइथोरी * सुनइनश्रवनबिकलमतिभोरी
सूषहिंअधरलागि मुहँलाटी * जिउनजाइउरअवधि कपाटी
बिबरनभयउनजाइनिहारी * मारेसि मनहुपिता महतारी
हानिगलानिबिपुलमनब्यापी * जमपुरपंथ सोचजिमिपापी
बचन न आवहृदयपछिताई * अवध काह मैं देषब जाई
रामरहित रथदेषिहि जोई * सकुचिहिमोहिबिलोकतसोई
दो॰ धाइपूछिहहिं मोहिजब, बिकलनगरनरनारि।
उतरदेबमैं सबहितब, हृदयबज्रबैठारि १४५मा॰ प॰ १४
पुछिहहिंदीनदुषितसबमाता * कहबकाहमैंतिन्हहिबिधाता
पूछिहिजबहिंलषनमहतारी * कहिहौंकवन सँदेस सुषारी
रामजननि जबआइहि धाई * सुमिरिबछ जिमिधेन लवाई
पूछत उतर देबमैं तेही * गेबन राम लषन बैदेही
जोइपूछिहितेहि ऊतर देबा * जाइअवध अबएह सुषलेबा
पूछिहिजबहिं राउदुष दीना * जिवनजासुरघुनाथअधीना
देहौं उतर कवन मुहलाई * आएउँ कुसलकुअँरपहुँचाई
सुनत लषनसियराम सँदेसू * त्रिनजिमितनपरिहरिहिनरेसू
दो॰ हृदउन बिदरेउ पंकजिमि, बिछुरतप्रीतमनीर।
जानतहौं मोहिदीन्हबिधि, यहजातनासरीर ॥१४६॥

एहिबिधिकरतपंथपछितावा ❋ तमसातीर तुरतरथ आवा
बिदाकिएकरिबिनय निषादा ❋ फिरेपायपरि बिकलबिषादा
पैठत नगर सचिव सकुचाई ❋ जनुमारेसि गुरु बाभनगाई
बैठिबिटपतरदिवस गँवावा ❋ सांझसमय तब अँवसरपावा
अवधप्रबेसकीन्ह अँधिआरे ❋ पैठभवन रथराषि दुआरे
जिन्ह २ समाचार सुनिपाए ❋ भूपद्वाररथ देखन आए
रथपहिचानिबिकललषिघोरे ❋ गरहिंगातजिमिआतपओरे
नगरनारिनर ब्याकुल कैसे ❋ निघटतनीर मीनगन जैसे
दो० सचिवआगमनसुनतसब, बिकलभएउरनिवास ॥
भवनभयंकर लागतेहि, मानहुप्रेतनिवास ॥ १४७ ॥
अतिआरतिसबपूछहिंरानी ❋ उतरनआवबिकलभइबानी
सुनइनश्रवननयननहिंसूझा ❋ कहहुकहां नृपजेहितेहिबूझा
दासिन्हदीषसचिवबिकलाई ❋ कौशल्या गृहगई लवाई
जाइसुमंत्र दीषकस राजा ❋ अमिअरहितजनुचंदबिराजा
आसनसयन बिभूषन हीना ❋ परेउभूमितलनिपटमलीना
लेइ उसास सोचएहिं भाँती ❋ सुर पुरतेजनुषसेउ जजाती
लेतसोचभरिछिन २ छाती ❋ जनुजरि पंषपरेउ संपाती
रामराम कह राम सनेही ❋ पुनिकह रामलषन बैदेही
दो० देषिसचिव जयजीव कहि, कीन्हेउ दंडप्रनाम ॥
सुनतउठेउब्याकुलनृपति. कहुसुमंत्रकहँराम ॥ १४८ ॥
भूप सुमंत्र लीन्ह उरलाई ❋ बूडतकछु अधार जनुपाई
सहितसनेह निकट बैठारी ❋ पूछतराउ नयन भरिबारी
रामकुसल कहुसषा सनेही ❋ कहँ रघुनाथ लषन बैदेही

आनेफेरिकि बनहिं सिधाए * सुनतसचिवलोचनजलछाए
सोक बिकल पुनिपूछनरेसू * कहु सियराम लषन संदेसू
रामरूप गुनसील सुभाऊ * सुमिरिसुमिरउरसोचतराऊ
राज सुनाइ दीन्ह बनबासू * सुनि मनभएउनहरषहरासू
सोसुत बिछुरत गएन प्राना * को पापी बड मोहिसमाना
दो० सषाराम सियलषनजहँ, तहाँ मोहि पहुँचाउ ॥
नाहिंत चाहतचलनअब, प्रान कहौं सतिभाउ १४९
पुनिपुनि पूछत मंत्रिहि राऊ * प्रियतमसुअनसँदेससुनाऊ
करहु सषा सोइबेगि उपाऊ * रामलषन सियनयनदेषाऊ
सचिवधीरधरि कहमृदुबानी * महाराजतुम्ह पंडित ज्ञानी
बीर सुधीर धुरंधर देवा * साधुसमाज सदा तुम्हसेवा
जनममरनसबदुषसुषभोगा * हानिलाभप्रियमिलन बियोगा
कालकरमबस होहिं गोसाँई * बरबसराति दिवसकी नाँई
सुषहरषहिंजडदुषबिलषाहीं * दोउसमधीरधरहिंमनमाहीं
धीरज धरहु बिबेक बिचारी * छाड़िअसोचसकल हितकारी
दो० प्रथम बास तमसाभएउ, दूसर सुरसरि तीर ॥
न्हाइरहे जलपानकरि, सिय समेत दोउबीर॥१५०॥
केवट कीन्ह बहुत सेवकाई * सोजामिनि सिगरौं रगवाँई
होतप्रात बटछीर मगावा * जटामुकुटनिजसीसबनावा
राम सषा तबनाव मँगाई * प्रिया चढ़ाइ चले रघुराई
लषन बान धनुधरे बनाई * आपुचढे प्रभु आयसु पाई
बिकलबिलोकिमोहिरघुबीरा * बोलेमधुर बचन धरि धीरा
तातप्रनाम तातसन कहेहू * बार बार पद पंकज गहेहू

करविपाय परिविनय बहोरी ❋ तातकरिअजनिचिंता मोरी
बनमग मंगल कुसल हमारे ❋ कृपाअनुग्रह पुन्य तुमारे
छं० तुम्हरेअनुग्रहतातकाननजातसबसुप पाइहों ॥
प्रतिपालिआयसुकुसलदेषनपायपुनिफिरिआइहौं ॥
जननीसकलपरितोषिपरिपारिपायकरिबिनतीघनी ॥
तुलसीकरेहुसोइजतनजेहि बिधिकुसलरहकोसलधनी
सो० गुरसनकहब सँदेस, बारबार पद पदुमगहि ।
करबसोइउपदेस, जेहिनसोचमोहिअवधपति॥१५१॥
पुरजनपरिजनसकल निहोरी ❋ तात सुनायउ बिनतीमोरी
सोइसबभाँतिमोर हितकारी ❋ जाते रह नरनाह सुषारी
कहबसँदेस भरत के आए ❋ नीतिनतजिअराजपद पाए
पालेहुप्रजाहि करममनबानी ❋ सेएहुमातु मकल समजानी
ओर निबाहेहु भायपभाई ❋ करिपितुमातुसुजनसेवकाई
तात भाँति तेहि राषब राऊ ❋ सोचमोरजेहिकराहिंन काऊ
लषनकहे कछु बचनकठोरा ❋ बरजिरामपुनिमोहिनिहोरा
बार बार निज सपथ देवाई ❋ कहबिनतात लपनलरिकाई
दो० कहिप्रनामकछु कहनलिय, सियभइमिथिलसनेह ।
थकितबचनलोचनसजल,पुलकपल्लवितदेह ॥१५२॥
तेहि अँवसर रघुबर रुषपाई ❋ केवट पारहि नाव चलाई
रघुकुलतिलकचलेएहिभाँती ❋ देषउँठाढकुलिसधरि छाती
मैंआपन किमिकहौं कलेसू ❋ जियत फिरेउँलेइरामसँदेसू
असकहिसचिवबचनरहिगयऊ ❋ हानिगलानिसोचबसभयऊ
सूतबचन सुनतहि नरनाहू ❋ परेउ धरनि उरदारुन दाहू

तलफतबिषममोहमनमाँपा * माँजामनहु मीनकहँब्यापा
करिबिलापसब रोवहिंरानी * महाबिपति किमिजाइबषानी
सुनि बिलाप दुषहूदुषलागा * धीरजहू करधीरज भागा
दो० भयउकोलाहलु अवधअति, सुनिनृपराउर सोर ॥
बिपुलबिहँगबनपरेउनिसि, मानहुकुलिसकठोर १५३
प्रानकंठगत भएउ भुवालू * मनिबिहीनजनुब्याकुलब्यालू
इन्द्रीसकलबिकलभइभारी * जनुसरसरसिजबनबिनुबारी
कौसल्या नृप दीषमलाना * रबिकुलरबिअथयउजियजाना
उर धरिधीर राम महतारी * बोली बचन समय अनुसारी
नाथसमुझिमन करिअबिचारू * रामबियोग पयोधि अपारू
करनधारतुम्ह अवधजहाजू * चढेउसकल प्रिय पथिकसमाजू
धीरजधरिअति पाइअपारू * नाहित बूडिहि सबपरिवारू
जौंजिअधरिअबिनयपियमोरी * रामलषनसियमिलहिंबहोरी
दो० प्रियाबचन मृदुसुनतनृप, चितएउ आँखिउघारि ॥
तलफतमीनमलीनजनु, सींचेउसीतलबारि ॥ १५४॥
धरिधीरज उठिबैठभुआलू * कहुसुमंत्र कहँ रामकृपालू
कहाँ लषन कहँराम सनेही * कहँ प्रियपुत्र बधू बैदेही
बिलपतराउबिकलबहुभाँती * भइजुगसरिसिसिरातिनराती
तापस अंध साप सुधिआई * कौसल्यहि सबकथा सुनाई
भएउबिकलबरनत इतिहासा * रामरहित धिगजीवनआसा
सोतन राषि करबिमैं काहा * जेहिंन प्रेमपन मोरनिबाहा
हा रघुनंदन प्रान पिरीते * तुम्हबिनुजियतबहुतदिनबीते
हा जानकी लषन हा रघुबर * हापितुहितचितचातकजलधर

दो० राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ॥
तन परिहरि रघुबर बिरह, राउगएउ सुरधाम ॥१५५॥

जिअनमरनफलदसरथपावा ❋ अंडअनेक अमलजसछावा
जिअतरामबिधुबदन निहारा ❋ रामबिरह भलिमरनसँवारा
सोकबिकल सबरोवहिंरानी ❋ रूपसील बलतेज बषानी
करहिंबिलापअनेक प्रकारा ❋ परहिं भूमितल बारहिंबारा
बिलपहिंबिकलदासअरुदासी ❋ घरघररुदन करहिं पुरबासी
अथयउआजभानुकुलभानू ❋ धरमअवधि गुनरूपनिधानू
गारी सकल कैकइहिं देहीं ❋ नयनबिहीन कीन्हजगजेहीं
एहिबिधिबिलपतरैनिबिहानी ❋ आएसकलमहामुनिग्यानी

दो० तबबसिष्ट मुनिसमय सम, कहिअनेक इतिहास ॥
सोकनिवारेउ सबहिकर, निजबिग्यानप्रकास ॥१५६॥

तेलनाव भरिनृपतन राषा ❋ दूतबोलाइबहुरि असभाषा
धावहु बेगि भरत पहिंजाहू ❋ नृपसुधिकतहुंकहहुजनिकाहू
एतनेइ कहहुभरत सनजाई ❋ गुरु बोलाइ पठए दोउभाई
सुनिमुनिआयसुधावनधाए ❋ चलेबेग बरबाजि लजाए
अनरथअवध अरंभेउजबते ❋ कुसगुनहोहिं भरतकहँतबते
देषहिंराति भयानकसपना ❋ जागिकरहिंकटुकोटिकलपना
बिप्र जेंवाइ देहिं दिन दाना ❋ सिवअभिषेककरहिंबिधिनाना
माँगहिं हृदय महेस मनाई ❋ कुसलमातुपितुपरिजनभाई

दो० एहिबिधि सोचत भरतमन, धावन पहुँचे आइ ॥
गुरअनुसासन श्रवनसुनि, चलेगनेस मनाइ ॥१५७॥

चले समीर बेग हय हांके ❋ नाघत सरित सैल बनबांके

हृदउसोचबड कछुनसोहाई * असजानहिंजियजाउँ उडाई
एक निमेषि बरष समजाई * एहिबिधिभरतनगर निअराई
असगुन होहिं नगर पैठारा * रटहिकुभाँति कुषेतकरारा
षर सिआर बोलहिंप्रतिकूला * सुनिसुनिहोइभरतमन सूला
श्रीहत सरसरिता बनबागा * नगर बिसेषि भयावनलागा
षगमृगहयगय जाहिंनजोए * रामबियोग कुरोग बिगोए
नगरनारि नर निपटदुषारी * मनहुसबन्हिसबसंपतिहारी
दो॰ पुरजनमिलहिंनकहहिंकछु, गँवहिजोहारहिंजाहिं ॥
भरतकुसलपूछिनसकहिं, भयबिषादमनमाहिं॥१५८॥
हाटबाट नहिं जाइ निहारी * जनुपुरदहदिसिलागिदवारी
आवतसुतसुनिकैकयनंदिनि * हरषी रबिकुलजल रुहचंदिनि
सजिआरतीमुदित उठिधाई * द्वारेहिभेंटि भवनलेइ आई
भरत दुषित परिवारनिहारा * मानहु तुहिनबनजबनमारा
कैकेई हरषित एहि भाँती * मनहुमुदितदवलाइकिराती
सुतहिससोच देषि मनमारे * पूछति नैहर कुसल हमारे
सकलकुसलकहिभरतसुनाई * पूछीनिजकुल कुसलभलाई
कहुकहँ तातकहाँ सबमाता * कहँसियरामलषनप्रियभ्राता
दो॰ सुनिसुतबचन सनेह मय, कपटनीर भरिनयन ॥
भरत श्रवनमन सूलसम, पापिनिबोलीबयन ॥१५९॥
तात बातमैं सकल सँवारी * भइमंथरा सहाय बिचारी
कछुककाजबिधिबीचबिगारेउ * भूपतिसुरपतिपुरपगु धारेउ
सुनतभरतभएबिबसबिषादा * जनुसहमेउकरिकेहरिनादा
तात तात हातात पुकारी * परेभूमितल ब्याकुल भारी

चलतन देषन पाएउँ तोही ❋ तातन रामहि सौंपेहु मोही
बहुरि धीरधरि उठे सँभारी ❋ कहु पितुमरनहेतुमहतारी
सुनिसुत बचनकहति कैकेई ❋ मरम पाछिजनु माहुर देई
आदिहुते सब आपनिकरनी ❋ कुटिलकठोरमुदितमनबरनी

दो० भरतहि बिसरेउ पितुमरन, सुनतरामबनगौन ॥
हेतुअपनपउजानिजिय, थकितरहे धरिमौन॥१६०॥

बिकलबिलोकि सुतहिसमुझावति ❋ मनहुजरेपरलोनलगावति
तात राउ नहिं सोचइ जोगू ❋ बिढइसुकृतजस कीन्हेउभोगू
जीवतसकल जनम फलपाए ❋ अंतअमरपति सदनसिधाए
असअनुमानि सोच परिहरहू ❋ सहित समाजराजपुरकरहू
सुनिसुठि सहमेउराजकुमारू ❋ पाकेछत जनुलागअँगारू
धीरजधरिभरिलीन्हउसासा ❋ पापिनिसबहिभाँतिकुलनासा
जौंपै कुरुचिरही अतितोही ❋ जनमत काहेन मारेमोही
पेडकाटितइँ पालउ सींचा ❋ मीनजिअननितिबारिउलीचा

दो० हंसबंस दसरथ जनक, रामलषनसे भाइ ॥
जननी तूजननी भई, बिधि सनकछुन बसाइ॥१६१॥

जबतेकुमतिकुमतजिअठयऊ ❋ पंडपंडहोइ हृदयउन गयऊ
बरमागत मनभइनहिंपीरा ❋ गरिनजीहमुहपरेउ नकीरा
भूपप्रतीतितोरिकिमिकीन्ही ❋ मरनकालबिधिमतिहरिलीन्ही
बिधिहुननारिहृदयगतिजानी ❋ सकलकपटअघअवगुनषानी
सरल सुसील धरम रतराऊ ❋ सोकिमिजानइतीय सुभाऊ
असको जीवजंतु जगमाहीं ❋ जेहिरघुनाथप्रान प्रियनाहीं
भेअतिअहितरामतेउतोही ❋ कोतू अहसिसत्यकहु मोही

जोहसिसोहसिमुँहमासिलाई * आँषिवोट उठि बैठहिजाई

दो० रामविरोधी हृदयते, प्रकट कीन्ह बिधि मोहि ॥
मोसमान कोपातकी, बादिकहउँ कछुतोहि ॥१६२॥

सुनिशत्रुघन मातुकुटिलाई * जरहिंगातरिस कछुनबसाई
तेहिअवसर कुबरी तहँआई * बसनबिभूषन बिबिध बनाई
लषिरिसभरे उलषनलघुभाई * बरतअनल घृतआहुति पाई
हुमगि लाततकि कूबरमारा * परिमुहभरमहिकरतिपुकारा
कूबर टूटेउ फूट कपारू * दलितदसनमुषरुधिरप्रचारू
आहिदइअ मैं काहनसावा * करतनीकफलअनइसपावा
सुनिरिपुहनलषिनषसिषषोटी * लगेघसीटन धरिधरि झोंटी
भरतदयानिधिदीन्ह छुटाई * कौसल्या पहिंगे दोउ भाई

दो० मलिनबसन बिबरन बिकल, कृससरीरदुषभार ॥
कनककलपबरबेलिबन, मानहुहनीतुसार ॥१६३॥

भरतहि देषि मातु उठिधाई * मुरछितअवनि परीझँइआई
देषतभरत बिकलभयेभारी * परेचरन तनदसा बिसारी
मातु तात कहँ देहि देषाई * कहँसियरामलषनदोउभाई
कइकइकतजनमीजगमाझा * जौंजनमितभइ काहेनबाँझा
कुलकलंकजेहिजनमेउमोही * अपजसभाजनप्रियजनद्रोही
कोतिभुअनमोहिसरिसअभागी * गतिअसितोरिमातुजेहिलागी
पितु सुरपुरवन रघुबर केतू * मैं केवल सबअनरथ हेतू
धिगमोहिभएउँबेनुबनआगी * दुसह दाह दुष दूषन भागी

दो० मातुभरतके बचन मृदु, सुनिपुनि उठी सँभारि ॥
लिए उठाइ लगाइ उर, लोचनमोचतिबारि ॥ १६४॥

सरलसुभाय माय हियलाए * अतिहितमनहुरामफिरिआए
भेंटेउबहुरि लषन लघुभाई * सोकसनेह न हृदय समाई
देषि सुभाउ कहत सबकोई * राममातु असकाहे न होई
माता भरत गोद बैठारे * आँसुपोंछि मृदुबचन उचारे
अजहुँ बछुबलि धीरज धरहू * कुसमउसमुझिसोकपरिहरहू
जनिमानहुहियहानिगलानी * कालकरमगति अघटितजानी
काहुहि दोसदेहु जनि ताता * भामोहिसबबिधि बामबिधाता
जोएतेहुदुष मोहि जिआवा * अजहुँकोजानैकातेहिभावा
दो० पितु आयसु भूषन बसन, तात तजे रघुबीर ॥
बिसमउहरषनहृदयकछु, पहिरेबलकलचीर ॥१६५॥
मुष प्रसन्न मन रागन रोषू * सबकरसबबिधिकरिपरितोषू
चलेबिपिनसुनिसियसँगलागी * रहइ न राम चरन अनुरागी
सुनतहिलषनचलेउठिसाथा * रहहिंनजतन किएरघुनाथा
तब रघुपति सबही सिरनाई * चले संगसिय अरु लघुभाई
रामलषनसियबनहिंसिधाए * गइउँन संग न प्रान पठाए
यहसबभाइन्हआँषिनआगे * तउनतजातन जीव अभागे
मोहिनलाजनिजनेहनिहारी * राम सरिस सुत मैं महतारी
जिअइमरइभलभूपतिजाना * मोरहृदयसतकुलिससमाना
दो० कौसल्या के बचनसुनि, भरतसहित रनिवास ॥
ब्याकुलबिलपतराजगृह, मानहुसोकनिवास १६६ ॥
बिलपहिं बिकलभरतदोउभाई * कौसल्या लिए हृदय लगाई
भाँतिअनेक भरत समुझाए * कहिबिबेकमय बचनसुनाए
भरतहु मातु सकल समुझाई * कहि पुरानश्रुति कथासुहाई

छलबिहीनसुचिसरल सुबानी ❋ बोले भरत जोरि जुगपानी
जे अघमातु पिता गुरुमारे ❋ गाइगोठ महिसुर पुरजारे
जे अघतियबालकबधकीन्हे ❋ मीतमहीपतिमाहुर दीन्हे
जेपातकउपपातक अहहीं ❋ करमबचनमनभवकबिकहहीं
तेपातक मोहिहोहु बिधाता ❋ जौंयहुहोइ मोर मत माता
दो॰ जेपरिहरि हरिहरचरन, भजहिं भूत घन घोर ॥
तिन्हकइगतिमोहिदेउबिधि, जौंजननीमतमोर १६७॥
बेचहिं बेद धरम दुहिलेहीं ❋ पिसुनपराय पाप कहिदेहीं
कपटीकुटिलकलहप्रियक्रोधी ❋ बेदबिदूषक बिस्व बिरोधी
लोभी लंपट लोलुप चारा ❋ जेताकहिं परधन परदारा
पावउँमैंतिन्हकइगतिघोरा ❋ जौंजननी यह संमतमोरा
जेनहिं साधु संग अनुरागे ❋ परमारथपथ बिमुषअभागे
जेनभजहिंहरि नरतन पाई ❋ जिन्हहिनहरिहरसुजससोहाई
तजिश्रुतिपंथबामपथचलहीं ❋ बंचक बिरचिबेषजगछलहीं
तिन्हकइ गतिमोहिसंकरदेऊ ❋ जननी जौंयहजानउँ भेऊ
दो॰ मातु भरतके बचन सुनि, साँचे सरल सुभाय ॥
कहतिरामप्रियताततुम्ह, सदाबचनमनकाय ॥१६८॥
रामप्रानहुते प्रान तुम्हारे ❋ तुम्हरघुपतिहिप्रानहुते प्यारे
बिधुबिषचवइश्रवइ हिमआगी ❋ होइबारिचर बारि बिरागी
भएग्यान बरुमिटइन मोहू ❋ तुम्ह रामहि प्रतिकूलनहोहू
मततुम्हारयहजोजगकहहीं ❋ सोसपनेहुसुषसुगतिनलहहीं
असकहिमातुभरतहियलाए ❋ थनपयश्रवहिंनयनजलछाए
करतबिलाप बहुतएहिभाँती ❋ बैठेहि बीतिगई सब राती

बामदेव बसिष्ठ तब आए ❋ सचिवमहाजनसकलबोलाए
मुनि बहुभाँतिभरतउपदेसे ❋ कहिपरमारथ बचन सुदेसे
दो० तातहृदय धीरज धरहु, करहुजो अवसर आज ॥
उठे भरतगुरबचनसुनि, करनकहेउसबकाज ॥१६९॥
नृपतनबेदबिहितअन्हवावा ❋ परमबिचित्रबिमान बनावा
गहिपग भरतमातु सबराषी ❋ रहींरामदरसन अभिलाषी
चंदन अगर भारबहुआए ❋ अमित अनेक सुगंधसुहाए
सरजूतीर रचि चिताबनाई ❋ जनुसुरपुर सोपान सुहाई
एहिबिधिदाहाक्रियासबकीन्ही ❋ बिधिवतन्हाइतिलांजलिदीन्ही
सोधिसुम्रिति सब बेदपुराना ❋ कीन्हभरतदसगात बिधाना
जहँजसमुनिवरआयसुदीन्हा ❋ तहँतससहसभाँतिसबकीन्हा
भए बिसुद्ध दिए सबदाना ❋ धेनुबाजि गजबाहन नाना
दो० सिंघासन भूषनबसन, अन्न धरनि धन धाम ॥
दिएभरत लहि भूमिसुर, भे परिपूरन काम ॥१७०॥
पितुहितभरत कीन्हजसकरनी ❋ सोमुषलाप जाइनहिंबरनी
सुदिनसोधिमुनिवरतबआए ❋ सचिवमहाजनसकलबोलाए
बैठे राज सभा सब जाई ❋ पठए बोलि भरतदोउभाई
भरतबसिष्ठ निकट बैठारे ❋ नीतिधरम मयबचनउचारे
प्रथमकथासबमुनिवरबरनी ❋ कइकइकुटिलकीन्हिजसिकरनी
भूपधरम ब्रत सत्य सराहा ❋ जेहिंतनपरिहरिप्रेम निबाहा
कहतराम गुनसीलसुभाऊ ❋ सजलनयनपुलकेउमुनिराऊ
बहुरिलषनसियप्रीतिबषानी ❋ सोकसनेहमगन मुनि ज्ञानी
दो० सुनहुभरत भावी प्रबल, बिलषिकहेउ मुनिनाथ ॥
हानिलाभजीवनमरन, जसअपजस बिधिहाथ ॥१७१॥

असबिचारिकेहि देइअ दोसू ❀ ब्यरथकाहिपरकीजिअरोसू
तात बिचार करहु मनमाहीं ❀ सोचजोग दसरथनृपनाहीं
सोचिअ बिप्रजो बेद बिहीना ❀ तजिनिजधरमबिषयलयलीना
सोचिअनृपतिजो नीतिनजाना ❀ जोहिनप्रजाप्रियप्रानसमाना
सोचिअ बयस कृपिन धनवानू ❀ जोन अतिथिसिवभगतिसुजानू
सोचिय सूद्र बिप्र अपमानी ❀ मुखरमान प्रियग्यानगुमानी
सोचिअपुनि पतिबंचकनारी ❀ कुटिलकलह प्रियइच्छाचारी
सोचिअबटुनिजब्रतपरिहरई ❀ जोनहिंगुर आयुस अनुसरई
दो० सोचिअ गृहीजो मोहबस, करइकरम पथत्याग ॥
सोचिअ जतीप्रपंच रत, बिगतबिबेकबिराग ॥१७२॥
बैषानस सोइ सोचइ जोगू ❀ तप बिहाइजेहिभावइभोगू
सोचिअपिसुनअकारनक्रोधी ❀ जननिजनकगुरुबंधुबिरोधी
सबबिधिसोचिअपर अपकारी ❀ निजतनपोषकनिरदयभारी
सोचनीय सबही बिधिसोई ❀ जोनछाडि छलहरिजनहोई
सोचनीअ नहिं कोसलराऊ ❀ भुअनचारिदसप्रगट प्रभाऊ
भएउनअहइनअबहोनिहारा ❀ भूपभरतजस पिता तुम्हारा
बिधिहरिहरसुरपतिदिसिनाथा ❀ बरनहिं सबदसरथगुनगाथा
दो० कहहुतात केहि भाँति कोउ, करिहि बडाई तासु ॥
रामलषनतुम्ह सत्रुहन, सरिससुअनसुचिजासु १७३॥
सबप्रकार भूपति बडभागी ❀ बादिबिषादकरिअतेहिलागी
यहसुनिसमुझिसोचपरिहरहू ❀ सिरधरि राजरजायसु करहू
रायराजपदतुम्हकहं दीन्हा ❀ पिताबचनफुरचाहिअकीन्हा
तजेरामजेहि बचनहिं लागी ❀ तनपरिहरेउ रामबिरहागी

नृपहिबचनप्रियनहिं प्रियप्राना ❋ करहुताता पितुबचनप्रमाना
करहु सीस धरि भूप रजाई ❋ हइतुम्हकहँ सब भांतिभलाई
परसुराम पितु अग्या राषी ❋ मारीमातु लोग सबसाषी
तनयजजातिहिजो बनदयऊ ❋ पितुअग्याअघअजसनभयऊ
दो० अनुचितउचिताबिचारतजि, जेपालहिं पितुबयन।
तेभाजनसुषसुजसके, बसहिंअमरपतिअयन॥ १७४॥
अवसि नरेसबचन फुरकरहू ❋ पालहुप्रजा सोक परिहरहू
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू ❋ तुम्हकहँसुकृतसुजसनहिंदोषू
बेदबिहित संमत सबहीका ❋ जेहिपितुदेइसोपावइटीका
करहु राज परिहरहु गलानी ❋ मानहुमोरबचनहितजानी
सुनि सुष लहब राम बैदेही ❋ अनुचितकहबनपंडितकेही
कौसल्यादि सकलमहतारी ❋ तेउप्रजा सुषहोहिं सुषारी
प्रेमतुम्हाररामकर जानिहि ❋ सोसबबिधितुम्हसनभलमानिहि
सौंपेहुराज राम के आए ❋ सेवा करेहु सनेह सुहाए
दो० कीजिअगुरआयसुअवसि, कहहिंसचिवकरजोरि॥
रघुपतिआएउचितजस, तसतबकरबबहोरि॥ १७५॥
कौसल्या धरि धीरजकहई ❋ पूतपथ्यगुर आयसु अहई
सोआदरिअकरिअहितमानीं ❋ तजिअबिषाद कालगतिजानीं
बन रघुपति सुरपुर नरनाहू ❋ तुम्हएहि भाँतितातकदराहू
परिजनप्रजासचिवसबअंबा ❋ तुम्हहीसुत सबकहँअवलंबा
लषिबिधिबामकालकठिनाई ❋ धीरज धरहुमातु बलिजाई
सिरधरिगुरआयसुअनुसरहू ❋ प्रजा पालिपुरजन दुषहरहू
गुरकेबचनसचिवअभिनंदन ❋ सुनेभरतहियहितजनुचंदन

सुनी बहोरिमातु मृदुबानी * सीलसनेह सरल रस सानी
छं० सानी सरल रसमातुबानी सुनिभरत ब्याकुलभए ॥
लोचन सरोरुहश्रवतसींचत बिरहउरअंकुरनए ॥
सो दसादेषतसमयतेहिबिसरीसबहिसुधिदेहकी ॥
तुलसीसराहतसकलसादरसींवसहज सनेहकी ॥
सो० भरत कमल करजोरि, धीरधुरंधर धीर धरि ॥
बचन अमिय जनुबोरि, देतउचितउत्तरसबहि १७६॥
मोहिउपदेस दीन्हगुरनीका * प्रजासचिवसंमत सबहीका
मातुउचितपुनिआयसुदीन्हा * अवसिसीसधरिचाहौंकीन्हा
गुरपितुमातुस्वामिहितबानी * सुनिमनमुदितकरिअभलिजानी
उचितकिअनुचितकिएबिचारू * धरमजाइ सिरपातक भारू
तुम्हतौ देहुसरल सिष सोई * जो आचरत मोरभल होई
जद्यपि यहसमुझतहउँनीके * तदपि होत परितोषनजीके
अबतुम्हबिनयमोरिसुनलेहू * मोहिअनुहरत सिषावनदेहू
उत्तर देउँ छमब अपराधू * दुषितदोषगुनगनाहिंन साधू
दो० पितुसुरपुर सियरामबन, करन कहहु मोहिराज ॥
एहिते जानहु मोरहित, कैआपन बडकाज॥१७७॥
हितहमारासिय पतिसेवकाई * सो हरिलीन्हमातुकुटिलाई
मैं अनुमानि दीषमनमाहीं * आन उपाय मोरहितनाहीं
सोक समाज राज केहिलेषे * लषनराम सियपदबिनु देषे
बादिबसन बिनुभूषनभारू * बादिबिरतिबिनुब्रह्मबिचारू
सरुजसरीर बादि बहुभोगा * बिनुहरिभगतिजायजपजोगा
जाय जीव बिनु देहसुहाई * बादिमोर सब बिनु रघुराई

जाउँ रामपहिं आयसु देहू ❋ एकहि आँक मोर हितएहू
मोहिन्रपकरिभल आपनचहहू ❋ सोउसनेह जडतावस कहहू

दो० कैकइ सुअन कुटिलमति, राम बिमुष गतलाज ॥
तुम्हचाहत सुषमोहबस, मोहिसेअधमकेराज १७८

कहौं साँचसबसुनिपतिआहू ❋ चाहिअधरम सीलनरनाहू
मोहिराजहठि देइहहुजबहीं ❋ रसारसातल जाइहि तबहीं
मोहिसमानको पापनिवासू ❋ जेहिलगि सीयरामबनवासू
रायराम कहँकानन दीन्हा ❋ बिछुरत गमन अमरपुरकीन्हा
मैं सठसब अनरथ करहेतू ❋ बैठबात सब सुनउँ सचेतू
बिनुरघुबीर बिलोकिअवासू ❋ रहेप्रानसहि जग उपहासू
राम पुनीत बिषय, रसरूषे ❋ लोलुप भूमि भोगके भूषे
कहँलगिकहौंहृदयकठिनाई ❋ निदरिकुलिसजेहिंलहीबडाई

दो० कारनते कारज कठिन, होइ दोस नहिं मोर ॥
कुलिस अस्थिते उपलते, लोहकरालकठोर १७९ ॥

कैकेई भवतन अनुरागे ❋ पाँवर प्रान अघाइ अभागे
जौंप्रियाबिरह प्रानप्रियलागे ❋ देषब सुनब बहुत अबआगे
लषनरामसियकहँबनुदीन्हा ❋ पठइअमरपुरपतिहितकीन्हा
लीन्हबिधवपनअपजसआपू ❋ दीन्हेउप्रजहि सोक संतापू
मोहिदीन्ह सुषसुजससुराजू ❋ कीन्ह कइकई सबकरकाजू
एहिते मोरकाह अब नीका ❋ तेहिपरदेन कहहुतुम्हटीका
कइकइजठरजनमिजगमाहीं ❋ यहमोहिकहँकछुअनुचितनाहीं
मोरिबातसबबिधिहि बनाई ❋ प्रजापाँच कतकरहु सहाई

दो० ग्रहग्रहीत पुनिबातबस, तेहिपुनिबीछीमार ॥
तेहिपिआइअबारुनी, कहहु कवन उपचार १८० ॥
कैकइसुअन जोग जगजोइ * चतुरबिरंचिदीन्ह मोहिसोई
दसरथ तनय राम लघुभाई *दीन्हिमोहिबिधिबादिबडाई
तुम्हसबकहहुकढावनटीका * रायराज सबही कहँ नीका
उतरदेउँकेहिबिधि केहिकेही* कहहुसुषेन जथारुचिजेही
मोहि कुमातु समेत बिहाई * कहहुकाहिहिकेकीन्हि भलाई
मोबिनुको सचराचर माहीं *जेहिसियरामप्रानप्रियनाहीं
परमहानि सबकहँ बडलाहू * अदिनमोरनहिं दूषन काहू
संसयसील प्रेम बसअहहू *सबइउचितसबजोकछुकहहू
दो० राममातुसुठिसरलचित, मोपरप्रेमबिसेषि ॥
कहइसुभायसनेहबस, मोरिदीनता देषि ॥ १८१ ॥
गुरबिबेकसागर जगजाना * जिन्हहिबिस्वकरबदरसमाना
मोकहँतिलकसाजसजसोऊ * भयेबिधिबिमुष बिमुषसबकोऊ
परिहरि रामसीय जगमाहीं * कोनाकहहि मोर मतनाहीं
सोमैं सुनबसहब सुषमानी * अंतहु कीचतहाँजहँ पानी
डरनमोहिजगकहिहिकिपोचू * परलोकहु करनाहिन सोचू
एकइ उरबट दुसह दवारी * मोहिलगिभेसियरामदुषारी
जीवनलाहु लषनभल पावा * सबतजि रामचरनमनलावा
मोरजनम रघुबर बनलागी * झूठकाह पछिताउँ अभागी
दो० आपनिदारुन दीनता, कहउँ सबहिसिरनाइ ॥
देषेबिनुरघुनाथपद, जिअकै जरनिनजाइ ॥१८२॥
आनउपाउमोहि नहिसूझा * को जिअकै रघुबर बिनुबूझा

एकहि आँकइहै मनमाहीं ❀ प्रातकाल चलिहौं प्रभुपाहीं
जद्यपिमैंअनभल अपराधी ❀ भइमोहिकारनसकल उपाधी
तदपिसरनसनमुष मोहिदेषी ❀ छमिसबकरिहहिंकृपाबिसेषी
सीलसकुचसुठिसरलसुभाऊ ❀ कृपासनेह सदन रघुराऊ
अरिहुकअनभलकीन्हनरामा ❀ मैंसिसुसेवक जद्यपि बामा
तुम्हपै पाँचमोर भलमानी ❀ आयसु आसिष देहुसुबानी
जेहिसुनिबिनयमोहिजनजानी ❀ आवहिंबहुरि रामरजधानी

दो० जद्यपिजनमकुमातुते, मैं सठसदासदोस ॥
आपनजानिनत्यागिहहिं, मोहिरघुबीरभरोस १८३॥

भरतबचनसबकहँप्रियलागे ❀ रामसनेह सुधा जनु पागे
लोगबियोगबिषम बिषदागे ❀ मंत्रसबीज सुनत जनुजागे
मातुसचिव गुरपुर नरनारी ❀ सकलसनेहबिकलभएभारी
भरतहिकहहिंसराहिसराही ❀ रामप्रेम मूरति तन आही
तातभरत असकाहेनकहहू ❀ प्रानसमान रामप्रिय अहहू
जो पाँवर अपनी जडताई ❀ तुम्हहिसुगाइमातु कुटिलाई
सोसठ कोटिकपुरुषसमेता ❀ बसहिंकलपसतनरकानिकेता
अहिअघअवगुननहिमनिगहई ❀ हरइगरलदुष दारिद दहई

दो० अवसिचलियबनरामजहँ, भरतमंत्रुभल कीन्ह ॥
सोकसिंधुबूडतसबहि, तुम्हअवलंबनदीन्ह१८४मा०पा०१५

भासबके मनमोद न थोरा ❀ जनुघनधुनिसुनिचातकमोरा
चलबप्रातलषिनिरनउनीके ❀ भरतप्रान प्रियभे सबहीके
मुनिहिबंदिभरतहिसिरनाई ❀ चले सकलघर बिदाकराई
धन्यभरत जीवनजगमाहीं ❀ सीलसनेह सराहत जाहीं

कहहिं परसपर भा बडकाजू * सकलचलै करसाजहिं साजू
जेहिं राषहिं रहुघररखवारी * सोजानै जनु गरदनि मारी
कोउकहरहनकहिअनहिकाहू * कोनचहइ जग जीवनलाहू
दो० जरउसो संपतिसदनसुष, सुहृद मातुपितुभाइ ॥
सनमुषहोतजो रामपद, करइन सहस सहाइ ॥१८५॥
घरघर साजहिं बाहन नाना * हरषहृदय परभात पयाना
भरत जाइघरकीन्ह बिचारू * नगरबाजिगजभवनभँडारू
संपति सबरघुपति केआही * जौंबिनु जतनचलउँतजिताही
तौपरिनाम न मोरि भलाई * पापसिरोमनि सांइ दोहाई
करइस्वामि हित सेवकसोई * दूषनकोटि देइकिन कोई
असबिचारि सुचिसेवकबोले * जेसपनेहुनिज धरमन डोले
कहिसबमरमधरमभलभाषा * जोजेहिलायक सो तहराषा
करिसब जतन राषिरषवारे * राममातुपहिं भरत सिधारे
दो० आरतजननी जानिसब, भरत सनेह सुजान ॥
कहेउ बनावन पालकी, सजन सुषासन जान १८६॥
चक्कचाक्कि जिमि पुरनरनारी * चहतप्रात उरआरत भारी
जागतसबनिसिभएउबिहाना * भरतबोलाएसचिवसुजाना
कहेउलेहुसब तिलकसमाजू * बनहिंदेब मुनि रामहिराजू
बेगिचलहुसुनिसचिवजोहारे * तुरत तुरँग रथनाग सँवारे
अरुंधतीअरुअगिनिसमाऊ * रथचढिचले प्रथममुनिराऊ
बिप्रबृन्द चढि बाहननाना * चलेसकल तपतेज निधाना
नगरलोगसबसजिसजिजाना * चित्रकूटकहँ कीन्ह पयाना
सिबिकासुभगनजाहिंबषानी * चढिचढिचलतभई सबरानी

दो० सौंपि नगर सुचिसेवकनि, सादरसबहि चलाइ ॥
सुमिरिरामसियचरनतब, चलेभरत दोउभाइ ॥ १८७ ॥

रामदरसबस सब नरनारी ❀ जनुकरिकरिनिचलेतकिवारी
बनसिअरामसमुझिमनमाहीं ❀ सानुजभरत पयादेहिं जाहीं
देषि सनेह लोग अनुरागे ❀ उतरिचले हय गयरथत्यागे
जाइसमीप राषिनिजडोली ❀ राममातु मृदुबानी बोली
तात चढ़हु रथबलिमहतारी ❀ होइहिप्रिय परिवार दुषारी
तुम्हरे चलतचलिहिसबलोगू ❀ सकलसोककृसनहिंमगजोगू
सिरधरिबचन चरनसिरनाई ❀ रथचढ़िचलत भएदोउभाई
तमसाप्रथम दिवसकरिबासू ❀ दूसर गोमति तीर निवासू

दो० पय अहार फलअसनएक, निसिभोजनएकलोग ॥
करतरामहितनेमब्रत, परिहरिभूषनभोग ॥ १८८ ॥

सईतीर बसिचले बिहाने ❀ शृंगबेरपुर सब निअराने
समाचार सब सुने निषादा ❀ हृदय बिचारकरै सबिषादा
कारन कवन भरतबनजाहीं ❀ है कछु कपटभाउमनमाहीं
जौंपैजिअन होतिकुटिलाई ❀ तौंकतसंग लीन्हि कटकाई
जानहिंसानुज रामहिमारी ❀ करौं अकंटक राज सुषारी
भरतन राजनीतिउरआनी ❀ तबकलंक अब जीवनहानी
सकल सुरासुरजुरहिंजुझारा ❀ रामहि समरन जीतनिहारा
काआचरजभरतअसकरहीं ❀ नहिंविषबेलिअमियफलफरहीं

दो० असबिचारि गुहग्यातिसन, कहेउ सजगसबहोहु ॥
हथबासहु बोरहु तरनि, कीजिअ घाटारोहु ॥ १८९ ॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा ❀ ठाटहु सकल मरइकेठाटा

सनमुष लोह भरतसनलेऊँ * जिअतनसुरसरिउतरनदेऊँ
समरमरन पुनिसुरसरितीरा * रामकाज छनभंग सरीरा
भरतभाइ नृप मैंजन नीचू * बड़े भागअस पाइअमीचू
स्वामिकाजकरिहहुँ रनरारी * जसधवलिहहुँभुअनदसचारी
तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरे * दुहूँहाथ मुद मोदक मोरे
साधु समाजन जाकर लेषा * रामभगत महँजासु नरेषा
जायजिअतजगसोमहिभारू * जननीजौवन बिटपकुठारू
दो० बिगत बिषाद निषाद पति, सबहि बढाइ उछाहु ॥
सुमिरि राममाँगेउतुरत, तरकसधनुषसनाहु १९०॥
बेगहु भाइहु सजहु सजोऊ * सुनिरजाइ कदराइ न कोऊ
भलेहिनाथसबकहहिं सहरषा * एकहि एकबढावइ करषा
चलेनिषाद जोहारिजोहारी * सूर सकल रन रूचै रारी
सुमिरि रामपदपंकजपनहीं * माथाबाँधिचढाइन्हिधनुहीं
अँगरीपहिरिकूँडिसिरधरहीं * फरसाबाँस सेल सम करहीं
एककुसल अति ओडनषाँडे * कूदहिंगगनमनहुछिति छांडे
निजनिजसाजसमाज बनाई * गुहराउतहि जोहारे जाई
देषिसुभट सब लायकजाने * लै लै नाम सकल सनमाने
दो० भाइहुलावहु धोष जनि, आजकाज बड़ मोहि ॥
सुनिसरोषबोलेसुभट, बीरअधीरनहोहि ॥ १९१ ॥
राम प्रताप नाथ बलतोरे * करहिंकटकबिनुभटबिनघोरे
जीवत पाउंन पाछे धरहीं * रुंडमुंड मयमेदिनि करहीं
दीष निषाद नाथ भलटोलू * कहेउ बाजउ जुझाऊढोलू
एतना कहत छींक भइबाँए * कहेउसगुनिअन्हषेतसुहाए

बूढ़ एककह सगुन बिचारी ❋ भरतहि मिलिअनहोइहिरारी
रामहि भरत मनावनजाहीं ❋ सगुनकहइअस बिग्रहनाहीं
सुनिगुह कहइनीककहबूढ़ा ❋ सहसाकरिपछिताहिबिमूढ़ा
भरत सुभाउ सीलबिनुबूझे ❋ बडिहितहानिजानिबिनुजूझे

दो० गहहुघाट भटसिमिटिसब, लेउँमरम मिलिजाइ ॥
बूझिमित्रअरिमध्यगति, तबतसकरिहउँआइ १९२॥

लषबसनेह सुभाय सुहाए ❋ बैरप्रीति नहिं दुरइ दुराए
असकहिभेंट सँजोवन लागे ❋ कंदमूलफल पगमृगमाँगे
मीन पीन पाठीन पुराने ❋ भरिभरिभारकँहारन्ह आने
मिलनसाजसजिमिलनसिधाए ❋ मंगलमूल सगुन सुभपाए
देषि दूरिते कहि निज नामू ❋ कीन्ह मुनीसहि दंडप्रनामू
जानिरामप्रियदीन्हअसीसा ❋ भरतहिकहेउ बुझाइमुनीसा
रामसषासुनि स्यंदनत्यागा ❋ चलेउतरिउमगतअनुरागा
गाउँ जाति गुहनाउँ सुनाई ❋ कीन्हजोहारमाथमहिलाई

दो० करतदंडवत देषितेहि, भरतलीन्ह उरलाइ ॥
मनहुलषन सनभेटभइ, प्रेमनहृदय समाइ १९३॥

भेंटतभरतताहि अतिप्रीती ❋ लोग सिहाहिं प्रेमकै रीती
धन्य धन्य धुनि मंगलमूला ❋ सुरसराहितेहिबरसहिं फूला
लोकबेद सबभाँतिहि नीचा ❋ जासुछाह छुइलेइ असींचा
तेहिभरिअंकरामलघुभ्राता ❋ मिलतपुलकपरिपूरितगाता
राम राम कहि जेजमुहाहीं ❋ तिन्हहिंनपाप पुंजसमुहाहीं
यहतौ रामलाइ उर लीन्हा ❋ कुलसमेतजगपावनकीन्हा
करमनासजल सुरसरिपरई ❋ तेहिकोकहहुसीस नहिंधरई

उलटानामजपत जगजाना * बालमीकि भए ब्रह्मसमाना
दो॰ स्वपचसबरषसजमनजड, पाँवर कोलकिरात ॥
रामकहत पावनपरम, होतभुअन बिष्यात ॥ १९४ ॥
नहिंअचरजजुगजुगचलिआई * केहिनदीन्ह रघुबीर बडाई
राम नाममहिमासुर कहहीं * सुनिसुनिअवधलोगसुषलहहीं
रामसषहिमिलिभरतसप्रेमा * पूछी कुसल सुमंगल षेमा
देषि भरत कर सील सनेहू * भानिषाद तेहि समयबिदेहू
सकुचसनेह मोद मनबाढा * भरतहिचितवतएकटकठाढा
धरिधीरज पदबंदि बहोरी * बिनयसप्रेमकरत करजोरी
कुसल मूलपद पंकज पेषी * मैंतिहुँकालकुसलनिजलेषी
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे * सहितकोटिकुलमंगल मोरे
दो॰ समुझि मोरिकरतूतिकुल, प्रभुमहिमा जिअजोइ ॥
जोनभजहिरघुबीरपद, जगबिधिबंचितसोइ १९५ ॥
कपटीकायरकुमतिकुजाती * लोकबेद बाहेर सब भाँती
रामकीन्ह आपन जबहीं ते * भएउँभुअन भूषन तबहीं ते
देषिप्रीति सुनिबिनय सुहाई * मिलेउ बहोरिभरतलघुभाई
कहिनिषादनिजनामसुबानी * सादर सकल जोहारी रानी
जानिलषनसमदेहिंअसीसा * जिअहुसुषीसयलाष बरीसा
निरषि निषादनगरनरनारी * भएसुषीजनु लषन निहारी
कहहिंलहेउएहिजीवन लाहू * भेंटेउ राम भद्र भरिबाहू
सुनिनिषादनिजभागबडाई * प्रमुदित मनलैचलेउ लवाई
दो॰ सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुषपाइ ॥
घरतरुतर सरबाग बन, बासबनाएन्हिजाइ ॥ १९६ ॥

सृंगबेरपुर भरत दीष जब * भेसनेहसब अंग सिथिलतब
सोहत दिए निषादहि लागू * जनुतनधरे विनय अनुरागू
एहिबिधिभरतसेन सबसंगा * दीषजाइ जगपावनि गंगा
रामघाट कहँ कीन प्रनामू * भामनमगन मिले जनुरामू
करहिं प्रनाम नगर नरनारी * मुदित ब्रह्ममयबारि निहारी
करिमज्जनमाँगहिंकरजोरी * रामचन्द्र पदप्रीति न थोरी
भरतकहेउ सुरसरि तवरेनू * सकल सुपद सेवक सुरधेनू
जोरि पानि बरमाँगउँ एहू * सीयरामपद सहज सनेहू

दो० एहिबिधिमज्जन भरतकरि, गुरु अनुसासन पाइ ॥
मातुनहाँनी जानि सब, डेराचले लवाइ ॥ १९७ ॥

जहँतहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा * भरतसोधसबही करलीन्हा
गुरसेवा करि आयसु पाई * राम मातुपहिंगे दोउ भाई
चरनचाँपिकहिकहिमृदुबानी * जननीसकलभरतसनमानी
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई * आपुनिपादहिलीन्हबोलाई
चले सषाकरसों कर जोरे * सिथिलसरीर सनेहन थोरे
पूछत सषहि सोठाँउ देषाऊ * नेकुनयनमनजरनि जुडाऊ
जहँसियरामलषननिसिसोये * कहत भरेजल लोचनकोये
भरतबचनसुनिभएउबिषादू * तुरत तहाँ लैगएउ निषादू

दो० जहँ सिंसुपा पुनीत तरु, रघुबर किए बिस्राम ॥
अतिसनेह सादरभरत, कीन्हेउदंडप्रनाम ॥ १९८ ॥

कुससाथरी निहारि सुहाई * कीन्ह प्रनामप्रदछिन लाई
चरन रेषरज आँषिन्ह लाई * बनइनकहतप्रीतिअधिकाई
कनकबिन्दु दुइ चारिकदेषे * राषे सीस सीयसम लेषे

सजलबिलोचनहृदयगलानी * कहतसषासनबचन सुबानी
श्रीहत सीयबिरह दुतिहीना * जथाअवधनरनारि मलीना
पिताजनक देउँ पटतरकेही * करतलभोगजोग जगजेही
ससुर भानुकुलभानुभुआलू * जेहिसिहातअमरावतिपालू
प्राननाथ रघुनाथ गोसाईं * जो बड़होत सोराम बडाईं
दो० पति देवता सुतीयमनि, सीय साथरी देषि ॥
बिहरत हृदउन हहरिहर, पबितेकठिनबिसेषि १९८॥
लालन जोगलषनलघु लोने * भेनभाइ असअहहिंनहोने
पुरजन प्रियपितुमातुदुलारे * सियरघुबीरहि प्रानपियारे
मृदुमूरति सुकुमार सुभाऊ * तातबाउतन लागन काऊ
तेबनसहहिंबिपति सबभाँती * निदरेकोटिकुलिस एहिंछाती
रामजनमिजगकीन्हउजागर * रूपसील सुष सबगुनसागर
पुरजन परिजनगुरपितुमाता * रामसुभाउ सबहिसुषदाता
बैरिउ राम बडाइ करहीं * बोलनिमिलनिबिनयमनहरहीं
सादर कोटिकोटिसतसेषा * करिनसकहिंप्रभुगुनगनलेषा
दो०-सुषसरूप रघुबंस मनि, मंगलमोद निधान ॥
तेसोवतकुसडासिमहि, बिधिगतिअतिबलवान १९९॥
रामसुनादुष कानन काऊ * जीवनतरुजिमिजोगवइराऊ
पलकनयनफनिमनिजेहिभांती * जोगवहिंजननिसकलदिनराती
तेअबफिरतबिपिनपदचारी * कंदमूल फलफूल अहारी
धिग कैकई अमंगल मूला * भइसिप्रानप्रियतमप्रातिकूला
मैंधिगधिगअघउदधिअभागी * सब उतपातभएउजेहि लागी
कुलकलंककरिसृजेउबिधाता * साँइद्रोहमोहिकीन्ह कुमाता

सुनि सप्रेमसमुझावनिषादू ❋ नाथकरिअकतबादि बिषादू
रामतुम्हहिप्रियतुम्हप्रियरामहि ❋ यहनिरजोसदोसबिधिबामहि
छं० बिधिबामकी करनीकठिन जेहिंमातुकीन्हीबावरी ॥
तेहिरातिपुनिपुनिकरहिं प्रभुसादरसरहनारावरी ॥
तुलसी न तुम्हसो रामप्रीतम कहतहौं सौंहेंकिए ॥
परिनाम मंगलजानि अपनेआनिए धीरजहिए ॥
सो० अंतरजामी राम, सकुचसप्रेम कृपायतन,
चलिअकरिअबिश्राम, यहबिचारदृढआनिमन २०० ॥
सषाबचनसुनि उरधरिधीरा ❋ बासचले सुमिरत रघुबीरा
यहसुधि पाइनगर नरनारी ❋ चलेबिलोकन आरत भारी
परदाछिनाकरिकरहिंप्रनामा ❋ देहिंकैकइहिषोरि निकामा
भरिभरि बारिबिलोचनलेहीं ❋ बाम बिधातहि दूषनदेहीं
एक सराहहिं भरत सनेहू ❋ कोउकहनृपातिनिबाहेउनेहू
निंदहिंआपुसराहिनिषादहि ❋ कोकहिसकइबिमोहबिषादहि
एहिबिधिरातिलोगसबजागा ❋ भा भिनुसार गुदारा लागा
गुरहि सुनाव चढाइ सुहाई ❋ नई नावसब मातु चढाई
दंडचारि महँभा सब पारा ❋ उतरिभरततबसबहिसँभारा
दो० प्रातक्रियाकरिमातुपद, बंदिगुरहिसिरनाइ ॥
आगेकिएनिषादगन, दीन्हेउकटकचलाइ ॥ २०१ ॥
किएउनिषादनाथअगुआई ❋ मातुपालकी सकल चलाई
साथबोलाइभाइलघु दीन्हा ❋ बिप्रन्हसहितगवनगुर कीन्हा
आपुसुरसरिहिकीन्ह प्रनामू ❋ सुमिरेलषनसहितसिय रामू
गवने भरत पयादेहि पाए ❋ कोतलसंगजाहिं डोरिआए
कहहिं सुसेवक बारहिंबारा ❋ होइअनाथ अस्वअसवारा

रामपयादेहि पाय सिधाए ❀ हमकहँरथगज बाजिबनाए
सिरभरजाउँउचितअस मोरा ❀ सबते सेवक धरम कठोरा
देखिभरतगतिसुनिमृदुबानी ❀ सबसेवकगन करहिंगलानी
दो० भरत तीसरेपहर कहँ, कीन्ह प्रबेस प्रयाग ॥
कहतरामसियरामसिय, उमगिउमगिअनुराग २०२
झलकाझलकहिं पायन्हकैसे ❀ पंकजकोस ओसकन जैसे
भरत पयादेहि आए आजू ❀ भएउदुषित सुनिसकलसमाजू
षबरि लीन्ह सबलोगनहाए ❀ कीन्हप्रनामत्रिबेनिहिआए
सबिधिसितासितनीरनहाने ❀ दिएदान महिसुर सनमाने
देषत स्यामल धवल हलोरे ❀ पुलकिसरीर भरत करजोरे
सकल कामप्रद तीरथ राऊ ❀ बेदबिदित जगप्रगटप्रभाऊ
माँगउ भीषत्यागिनिजधरमू ❀ आरत काहन करइकुकरमू
असजिअजानिसुजानसुदानी ❀ सफलकरहिंजगजाचकबानी
दो० अरथन धरम न कामरुचि, गतिनचहहुँनिरबान ॥
जनमजनमरतिरामपद, यहबरदाननआन २०३ ॥
जानहुरामकुटिलकरिमोही ❀ लोग कहउगुर साहब द्रोही
सीताराम चरन रतिमोरे ❀ अनुदिन बढउ अनुग्रहतोरे
जलदजनमभरिसुरतिबिसारउ ❀ जाचतजलपबिपाहनडारउ
चातकरटनि घटे घटिजाई ❀ बढे प्रेमसब भाँति भलाई
कनकहिबानचढइजिमिदाहे ❀ तिमिप्रियतमपदप्रेमनिबाहे
भरतबचनसुनिमाँझत्रिबेनी ❀ भइमृदु बानि सुमंगल देनी
तातभरततुम्हसबबिधिसाधू ❀ रामचरन अनुराग अगाधू
बादिगलानि करहुमनमाहीं ❀ तुम्हसमरामहिकोउप्रियनाहीं

दो० तनपुलकेउ हियहरष सुनि, बेनिबचन अनुकूल ॥
भरतधन्यकहिधन्यसुर, हरषितबरषहिंफूल ॥२०४॥

प्रमुदिततीरथराज निवासी ❋ बैषानस बटुगृही उदासी
कहहिंपरसपरमिलिदसपाँचा ❋ भरतसनेह सीलसुचिसाँचा
सुनतराम गुनग्राम सुहाए ❋ भरद्वाजमुनिवर पहिं आए
दंड प्रनाम करत मुनि देषे ❋ मूरतिवंत भाग्य निजलेषे
धाइ उठाइ लाइउर लीन्हे ❋ दीन्हिअसीस कृतारथकीन्हे
आसन दीन्ह नाइसिरबैठे ❋ चहतसकुचगृहजनुभजिपैठे
मुनिपूछबकिछु यहबडसोचू ❋ बोलेरिषिलषि सीलसकोचू
सुनहुभरत हमसबसुधिपाई ❋ बिधिकरतबपरकिछुनबसाई

दो० तुम्हगलानिजिअजनिकरहु, समुझिमातुकरतूति ॥
तातकैकइहिदोसुनहि, गईगिरामतिधूति ॥ २०५॥

यहउकहतभलकहिहिनकोऊ ❋ लोक बेदबुध संमत दोऊ
ताततुम्हार बिमलजसगाई ❋ पाइहि लोकहु बेद बडाई
लोकबेद संमत सब कहई ❋ जेहि पितुदेइ राज सोलहई
राउसत्यब्रत तुम्हहिबोलाई ❋ देतराज सुषधरम बडाई
रामगवनबन अनरथ मूला ❋ जोसुनिसकलबिस्वभइसूला
सो भावी बसरानि अयानी ❋ करिकुचालिअंतहुपछितानी
तहउँतुम्हार अलपअपराधू ❋ कहइसोअधमअयानअसाधू
करतेहुराजतोतुम्हहिनदोसू ❋ रामहिहोत सुनत संतोसू

दो० अबअतिकीन्हेहु भरतभल, तुम्हहिउचितमतएहु ॥
सकलसुमंगलमूलजग, रघुबरचरनसनेहु ॥ २०६॥

सो तुम्हार धन जीवनप्राना ❋ भूरिभागको तुम्हहिसमाना

यह तुम्हार आचरजनताता * दसरथसुवनरामप्रियभ्राता
सुनहुभरतरघुपति मनमाहीं *प्रेमपात्रतुम्हसमकोउनाहीं
लषनराम सीताहिअतिप्रीती * निसिसबतुम्हहिसराहतबीती
जाना मरम नहात प्रयागा * मगनहोहिंतुम्हरे अनुरागा
तुम्हपरअस सनेह रघुबरके *सुषजीवनजगजसजडनरके
यहनअधिक रघुबीर बड़ाई * प्रनत कुटुब पाल रघुराई
तुम्हतउ भरतमोरमत एहू * धरे देह जनु राम सनेहू
दो० तुम्हकहँभरत कलंकयह, हम सब कहँ उपदेस ॥
रामभगतिरससिद्धिहित, भायहसमउ गनेस ॥२०७॥
नवबिधुबिमलतातजसतोरा * रघुबर किंकरकुमुद चकोरा
उदितसदाअथइहि कबहूँना * घटिहिनजगनभदिनदिनदूना
कोकतिलोकप्रीतिअतिकरिही * प्रभुप्रतापरबिछबिहिनहरिही
निसिदिनसुषदसदासबकाहू * ग्रसिहिन कैकइ करतबराहू
पूरन राम सुप्रेम पियूषा * गुरअपमान दोष नहिं दूषा
रामभगतअबअमिअअघाहू * कीन्हिहुसुलभसुधाबसुधाहू
भूप भगीरथ सुरसरि आनी * सुमिरत सकलसुमंगलषानी
दसरथ गुनगनबरनिनजाहीं *अधिककहाँजेहिसमजगनाहीं
दो० जासु सनेह सकोच बस, राम प्रगट भयेआइ ॥
जेहिराहिय नयननिकबहुँ, निरषे नहीं अघाइ २०८ ॥
कीरतिबिधुतुम्हकीन्हिअनूपा * जहँबस राम प्रेम मृग रूपा
तातगलानिकरहुजिअजाए * डरहु दरिद्रहि पारस पाए
सुनहु भरतहम झूँठन कहहीं * उदासीन तापसबन रहहीं
सबसाधन करसुफल सुहावा * लषन रामसियदरसनपावा

तेहिफलकरफलदरसतुम्हारा ॥ सहितप्रयाग सुभाग हमारा
भरतधन्यतुम्हजगजसजयऊ ॥ कहिअसप्रेममगन मुनिभयऊ
सुनिमुनिबचनसभासदहरषे ॥ साधु सराहि सुमनसुर बरषे
धन्यधन्यधुनिगगन प्रयागा ॥ सुनिसुनिभरतमगनअनुरागा

दो० पुलकगातहिय रामसिय, सजल सरोरुह नयन ॥
करिप्रनाममुनिमंडलिहि, बोलेगदगदबयन ॥२०९॥

मुनिसमाज अरुतीरथ राजू ॥ साँचिहुसपथअघाइ अकाजू
एहिथलजौंकिछुकहिअबनाई ॥ एहिसमअधिकनअघअधमाई
तुम्ह सर्बज्ञकहउँ सतिभाऊ ॥ उर अंतरजामी रघुराऊ
मोहिन मातुकरतबकरसोचू ॥ नहिंदुपजियजगजानिहिपोचू
नाहिंनडर बिगरिहिपरलोकू ॥ पितहुमरनकरनाहिन सोकू
सुकृतसुजसभरिभुअनसुहाए ॥ लछिमनरामसरिससुतपाए
राम बिरह तजितनछनभंगू ॥ भूप सोचकर कवन प्रसंगू
रामलषनसियबिनुपगपनहीं ॥ करिमुनिबेषफिरहिंबनबनहीं

दो० अजिनबसनफलअसनमहि, सयनडासिकुसपात ।
बसितरु तरनित सहतहिम, आतपबरपाबात २१० ॥

एहिदुष दाहदहइनितछाती ॥ भूपन बासर नीदन राती
एहिकुरोगकर औषध नाहीं ॥ सोधेउँसकलबिस्वमनमाहीं
मातुकुमत बढई अघ मूला ॥ तेहिंहमारहित कीन्हबमूला
कलिकुकाठकरकीन्हकुजंत्रू ॥ गाडिअवधपढिकठिनकुमंत्रू
मोहिलगियहकुठाटतेहिठाटा ॥ घालेसिसब जग बारहबाटा
मिटइकुरोगरामफिरिआए ॥ बसइअवधनहि आनउपाए
भरतबचनसुनिमुनिसुषपाई ॥ सबहिंकीन्हबहुभाँति बडाई

तात करहु जनि सोच बिसेषी * सब दुख मिटिहि रामपद देषी
दो० करि प्रबोध मुनिवर कहेउ, अतिथि प्रेमप्रिअ होहु।
कंद मूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहु ॥ २१२ ॥
सुनि मुनि बचन भरत हिय सोचू * भयउ कुअवसर कठिन सकोचू
जानि गरुइ गुर गिरा बहोरी * चरन बंदि बोले करजोरी
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा * परम धरम यह नाथ हमारा
भरत बचन मुनिवर मन भाए * सुचि सेवक सिष निकट बोलाए
चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई * कंद मूल फल आनहु जाई
भलेहि नाथ कहि तिन्ह सिर नाए * प्रमुदित निज निज काज सिधाए
मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता * तसि पूजा चाहिअ जस देवता
सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आई * आयसु होइ सो करहिं गोसाई
दो० राम बिरह ब्याकुल भरत, सानुज सहित समाज ॥
पहुनाई करि हरहु श्रम, कहा मुदित मुनिराज ॥ २१२ ॥
रिधि सिधि सिर धरि मुनिवर बानी * बड़भागिनि आपुहि अनुमानी
कहहिं परसपर सिधि समुदाई * अतुलित अतिथि राम लघु भाई
मुनिपद बंदि करिअ सोइ आजू * होहिं सुषी सब राज समाजू
अस कहि रचे उ रुचिर गृह नाना * जो बिलोकि बिलषाहिं बिमाना
भोग बिभूति भूरि भरि राषे * देषत जिन्हहिं अमर अभिलाषे
दासी दास साज सब लीन्हे * जोगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे
सब समाज सजि सिधि पल माहीं * जे सुष सुरपुर सपनेहु नाहीं
प्रथमहि बास दिये सब केही * सुंदर सुषद जथा रुचि जेही
दो० बहुरि सपरिजन भरत कहँ, रिषि अस आयसु दीन्ह।
बिधि बिसमय दायक बिभव, मुनिवर तपबल कीन्ह २१३

मुनिप्रभाउजबभरतबिलोका ❋ सबलघुलगे लोकपतिलोका
सुषसमाज नहिंजाइबषानी ❋ देखत बिरतिबिसारहिंज्ञानी
आसनसयनसुबसनबिताना ❋ बनबाटिकाबिहंग मृगनाना
सुरभिफूलफल अमिअसमाना ❋ बिमलजलासय बिबिधबिधाना
असनपानसुचिअमिअअमीसे ❋ देषिलोग सकुचात जमीसे
सुरसुरभी सुरतरु सबहीके ❋ लषि अभिलाषसुरेससचीके
रितुबसंत बहत्रिबिधबयारी ❋ सबकहँसुलभ पदारथचारी
स्रकचंदनबनितादिकभोगा ❋ देषिहरषबिसमयबस लोगा
दो॰ संपति चकई भरत चक, मुनिआयसु षेलवार ॥
तेहिनिसि आश्रमपिंजरा, राषेभाभिनुसार ॥२१४॥
कीन्हनिमज्जनतीरथराजा ❋ नाइमुनिहिसिरसहितसमाजा
रिषिआयसुअसीससिरराषी ❋ करिदंडवतबिनय बहुभाषी
पथगतिकुसलसाथसबलीन्हे ❋ चले चित्रकूटहि चितदीन्हे
राम सषाकर दीन्हे लागू ❋ चलतदेह धरिजनु अनुरागू
नहिंपदत्रानसीसनहिंछाया ❋ प्रेमनेम व्रतधरम अमाया
लषन रामसिय पंथकहानी ❋ पूछतसषहिं कहतमृदुबानी
रामबास थलबिटप बिलोके ❋ उरअनुराग रहत नहिंरोके
देषिदसा सुर बरिसहिं फूला ❋ भइमृदुमहि मगमंगलमूला
दो॰ किए जाहिंछाया जलद, सुषद बहइ बरबात ॥
तसमगभएउनरामकहँ, जसभा भरतहिजात २१५
जड चेतन मगजीव घनेरे ❋ जेचितए प्रभुजिन्ह प्रभुहेरे
ते सब भए परम पद जोगू ❋ भरत दरस मेटाभव रोगू
यह बडिबातभरतकइनाहीं ❋ सुमिरतजिन्हहिरामसनमाहीं

वारक रामकहत जगजेऊ * होत तरन तारन नरतेऊ
भरतरामप्रियपुनिलघुभ्राता * कसनहोयमग मंगलदाता
सिद्धसाधुमुनिवरअसकहहीं * भरतहिनिरषिहरषहियलहहीं
देषिप्रभाउ सुरेसहि सोचू * जगभलभलेहिपोचकहँपोचू
गुरसनकहेउ करियप्रभुसोई * रामहि भरतहि भेंटनहोई

दो० रामसकोची प्रेमबस, भरतसुप्रेम पयोधि ॥
बनीबातबिगरनचहति, करिअजतनछलसोधि २१६

बचनसुनतसुर गुरसुसकाने * सहसनयनबिनु लोचनजाने
कहगुरबादि छोभ छलछाँड़ु * इहाँ कपटकरि होइअभाँड़ु
मायापति सेवकसन माया * करइत उलटि परइसुरराया
तबकिछुकीन्हरामरुषजानी * अबकुचालिकरिहोइहिहानी
सुनुसुरेस रघुनाथ सुभाऊ * निजअपराधरिसाहिंनकाऊ
जो अपराध भगतकरकरई * रामरोष पावक सो जरई
लोकहुबेद बिदितइतिहासा * यहमहिमा जानहिंदुरबासा
भरत सरिसको रामसनेही * जगजपराम रामजप जेही

दो० मनहुनआनिय अमरपति, रघुबरभगतअकाज ॥
अजसलोकपरलोकदुष, दिनदिनसोकसमाज २१७॥

सुनुसुरेस उपदेस हमारा * रामहिसेवक परम पिआरा
मानत सुष सेवक सेवकाई * सेवकबयर बयर अधिकाई
जद्यपि समनहिं रागनरोषू * गहहिंन पापपुंन गुनदोषू
करमप्रधान बिस्वकरिराषा * जोजसकरइसोतसफलचाखा
तदपिकरहिंसमबिषमबिहारा * भगतअभगतहृदयअनुसारा
अगुनअलेप अमानएकरस * रामसगुनभए भगतप्रेमबस

रामसदा सेवक रुचि राषी * बेद पुरान साधु सुर साषी
असजिअजानितजहुकुटिलाई * करहु भरतपद प्रीति सुहाई

दो॰ रामभगतपरहिततिनिरत, परदुषदुषीदयाल मा॰ पा॰ १६
भगतसिरोमनिभरतते, जनिडरपहु सुरपाल ॥२१८॥

सत्यसंधप्रभु सुर हितकारी * भरतरामआयसु अनुसारी
स्वारथबिबसबिकलतुम्हहोहू * भरतदोस नहिं राउरमोहू
सुनिसुरबर सुरगुर बरबानी * भाप्रमोद मनमिटीगलानी
बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ * लगे सराहन भरत सुभाऊ
एहिबिधिभरतचलेमगजाहीं * दसादेषि मुनिसिद्ध सिहाहीं
जबहिंरामकहिलेहिंउसासा * उमगतप्रेम मनहुचहुँपासा
द्रवहिंबचनसुनिकुलिसपषाना * पुरजन प्रेमनजाइ बषाना
बीचबासकरि जमुनहिंआए * निरषिनीर लोचन जलछाए

दो॰ रघुबर बरन बिलोकि बर, बारि समेत समाज ॥
होतमगन बारिधि बिरह, चढे बिबेकजहाज ॥२१९॥

जमुनतीरतेहिदिनकरिबासू * भएउसमयसमसबहिसुपासू
रातिहि घाटघाटकी तरनी * आईअगनित जाहिंनबरनी
प्रातपार भए एकहि षेवा * तोषे राम सषाकी सेवा
चले नहाइ नदिहि सिरनाई * साथ निषादनाथ दोउभाई
आगे मुनिबर बाहन आछे * राज समाज जाइसब पाछे
तेहि पाछे दोउ बंधु पयादे * भूषन बसन बेषसुठि सादे
सेवकसुहृद सचिवसुतसाथा * सुमिरतलषन सीयरघुनाथा
जहँ जहँ रामबास बिश्रामा * तहँतहँ करहिं सप्रेमप्रनामा

दो॰ मगबासी नरनारि सुनि, धाम काम तजिधाइ ॥
देषि सरूप सनेहबस, मुदित जनम फलपाइ ॥२२०॥

कहहिं सप्रेम एकयकपाहीं ❋ रामलषनसषिहोहिंकिनाहीं
बयबपु बरनरूप सोइआली ❋ सीलसनेहसरिस समचाली
बेषन सोसषि सीयन संगा ❋ आगे अनीचली चतुरंगा
नहिप्रसन्न मुषमानस षेदा ❋ सषि संदेहहोइ एहिभेदा
तासुतरकतियगनमनमानी ❋ कहहिंसकलतोहिसमनसयानी
तेहिसराहि बानीफुरि पूजी ❋ बोलीमधुर बचन तियदूजी
कहि सप्रेम सबकथा प्रसंगू ❋ जेहिबिधिराम राजरसभंगू
भरतहिबहुरि सराहनलागी ❋ सीलसनेह सुभाय सुभागी

दो॰ चलतपयादेषातफल, पितादीन्ह तजि राज ॥
जातमनावनरघुबरहि, भरतसरिस को आज २२१॥

भायपभगति भरतआचरनू ❋ कहतसुनत दुषदूषन हरनू
जोकछु कहबथोर सषिसोई ❋ राम बंधु असकाहेन होई
हमसब सानुज भरतहिंदेषे ❋ भइन्हधन्यजुबतीजन लेषे
सुनिगुन देषिदसापछिताहीं ❋ कैकइजननि जोगसुतनाहीं
कोउकहदूषनरानिहिनाहिन ❋ बिधिसबकीन्हहमहिजोदाहिन
कहँहमलोक बेदबिधि हीनी ❋ लघुतियकुलकरतूतिमलीनी
बसहिंकुदेस कुगाँवकुबामा ❋ कहँयहदरसपुन्य परिनामा
असअनंदअचरजप्रति ग्रामा ❋ जनुमरुभूमिकलपतरुजामा

दो॰ भरत दरस देषतषुलेउ, मग लोगन्ह कर भाग ॥
जनुसिंघलबासिन्हभएउ, बिधिबससुलभप्रयाग २२२॥

निजगुनसहितरामगुनगाथा ❋ सुनतजाहिंसुमिरतरघुनाथा

तीरथमुनिआश्रमसुरधामा ❀ निरषिनिमज्जहिंकरहिंप्रनामा
मनही मनमाँगहिं बर एहू ❀ सीयराम पदपदुम सनेहू
मिलहिंकिरातकोलबनबासी ❀ बैषानस बटु जती उदासी
करिप्रनाम पूछहिंजेहितेही ❀ केहिबन लषन राम बैदेही
ते प्रभुसमाचार सब कहहीं ❀ भरतहिंदेषिजनमभल लहहीं
जेजनकहहिं कुसल हमदेषे ❀ ते प्रियरामलषन सम लेषे
एहिबिधिबूझतसबहिसुबानी ❀ सुनतरामबन बास कहानी
दो॰ तेहि बासर बसिप्रातहीं, चलेसुमिरिरघुनाथ ॥
रामदरसकी लालसा, भरत सरिस सबसाथ ॥२२३॥
मंगलसगुन होहिं सबकाहू ❀ फरकहिंसुषद बिलोचनबाहू
भरतहिसहितसमाजउछाहू ❀ मिलिहहिंरामामिटिहिदुषदाहू
करतमनोरथजसजियजाके ❀ जाहिं सनेहसुरा सब छाके
सिथिलअंगपगमगडगिडोलहिं ❀ बिहवलबचनप्रेमबसबोलहिं
रामसषा तेहिसमयदेषावा ❀ सैलसिरोमनि सहज सुहावा
जासुसमीप सरितपयतीरा ❀ सीयसमेत बसहिं दोउबीरा
देषि करहिंसब दंड प्रनामा ❀ कहिजयजानकिजीवनरामा
प्रेममगन असराज समाजू ❀ जनुफिरिअवधचले रघुराजू
दो॰ भरत प्रेमतेहि समयजस, तसकहि सकइन सेषु ॥
कबहिअगमाजिमिब्रह्मसुष,अहममममलिनजनेषु २२४॥
सकलसनेहसिथिलरघुबरके ❀ गए कोसदुइदिन करढरके
जलथल देषि बसेनिसिबीते ❀ कीन्हगवन रघुनाथ पिरीते
जहाँ राम रजनी अवसेषा ❀ जागेसीय सपन अस देषा
सहितसमाजभरतजनुआये ❀ नाथ बियोग तापतनताये

सकलमलिनमनदीनदुषारी * देषीसासु आन अनुहारी
सुनिसियसपनभरेजललोचन * भएसोचबससोच बिमोचन
लषन सपनयह नीकनहोई * कठिनकुचाहसुनाइहि कोई
असकहि बंधुसमेत नहाने * पूजिपुरारि साधु सनमाने
छं० सनमानि सुरमुनि बंदिबैठेउतर दिसिदेषत भए ॥
नभधूरिषगमृगभूरिभागे बिकलप्रभु आस्रमगए ॥
तुलसीउठेअवलोकि कारनकाहचित चकितरहे ॥
सबसमाचारकिरातकोलन्हिआइतेहिअवसरकहे ॥
सो० सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तन पुलक भर ॥
सरद सरोरुहनैन, तुलसीभरे सनेहजल ॥ २२५ ॥
बहुरि सोचबस भेसिअरवनू * कारनकवन भरतआगवनू
एक आइ अस कहा बहोरी * सेन संग चतुरंगन थोरी
सोसुनिरामहिंभाअतिसोचू * इतपितुबचउत बंधुसकोचू
भरतसुभाउसमुझिमनमाहीं * प्रभुचितहितथितिपावतनाहीं
समाधान तब भायह जाने * भरत कहेमहँ साधु सयाने
लषनलषेउप्रभुहृदयषभारू * कहतसमयसमनीति बिचारू
बिनुपूछे कछुकहउँ गोसाँई * सेवकसमय न ढीठ ढिठाई
तुम्हसर्वज्ञसिरोमनि स्वामी * आपनि समुझि कहउँअनुगामी
दो० नाथसुहृद सुठिसरलचित, सील सनेह निधान ॥
सबपरप्रीतिप्रतीतिजिय, जानियँ आपुसमान २२६
बिषई जीव पाइ प्रभुताई * मूढ मोहबस होहिं जनाई
भरतनीतिरतसाधु सुजाना * प्रभुपदप्रेमसकल जगजाना
तेऊ आज राज पद पाई * चलेधरम मरजाद मिटाई

कुटिलकुबंधुकुअवसर ताकी ❀ जानिरामबनबास एकाकी
करिकुमंत्रमनसाजिसमाजू ❀ आए करइ अकंटकराजू
कोटिप्रकारकलपिकुटिलाई ❀ आएदल बटोरि दोउभाई
जौंजिअहोति न कपटकुचाली ❀ केहिसोहातिरथ बाजिगजाली
भरतहि दोस देइ को जाए ❀ जग बौराय राज पद पाए

दो॰ ससिगुरतियगामीनहुष, चढेउभूमिसुरजान ॥
लोकबेदतें बिमुषभा, अधमनबेनुसमान ॥ २२७ ॥

सहस बाहु सुरनाथ त्रिसंकू ❀ केहिनराजमददीन्ह कलंकू
भरतकीन्हयहउचितउपाऊ ❀ रिपुरिनरंचन राषब काऊ
एककीन्हिनहिं भरतभलाई ❀ निदरे रामजानि असहाई
समुझिपरिहिसोउआजबिसेषी ❀ समरसरोष राममुष पेषी
एतना कहत नीतिरस भूला ❀ रनरसबिटपपुलकमिसफूला
प्रभुपद बंदि सीस रज राषी ❀ बोलेसत्य सहज बलभाषी
अनुचितनाथन मानबमोरा ❀ भरतहमहि उपचारनथोरा
कहँलगिसहिअरहिअमनमारें ❀ नाथसाथ धनुहाथ हमारें

दो॰ छत्रिजाति रघुकुल जनम, राम अनुज जगजान ॥
लातहुँमारें चढति सिर, नीचकोधूरि समान ॥ २२८ ॥

उठिकरजोरिरजायसुमाँगा ❀ मनहुँबीररस सोवत जागा
बाँधिजटा सिरकसिकटिभाथा ❀ साजि सरासन सायकहाथा
आज राम सेवक जस लेऊँ ❀ भरतहि समर सिषावन देऊँ
राम निरादर करफल पाई ❀ सोवहुसमर सेजदोउ भाई
आइबनाभल सकलसमाजू ❀ प्रगटकरउँरिस पाछिलआजू
जिंमिकरिनिकरदलइमृगराजू ❀ लेइलपेटि लवाजिमि बाजू

तैसेहि भरतहि सेन समेता * सानुजनिदरिनिपातउँषेत
जौं सहायकर संकर आई * तौ मारउँ रनराम दोहाई
दो० अतिसरोष माषे लषन, लषिसुनि सपथ प्रवान ॥
सभयलोकसबलोकपति, चाहतभभरिभगान २२९ ॥
जगभयमगनगगनभइबानी * लषनबाहुबलबिपुल बषानी
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा * कोकहिसकइकोजाननिहारा
अनुचितउचितकाजकछुहोऊ * समुझिकरिअभलकहसबकोऊ
सहसा करि पाछेंपछिताहीं * कहहिंबेद बुधते बुधनाहीं
सुनिसुरबचनलषनसकुचाने * रामसीय सादर सनमाने
कहीतात तुम्हनीति सुहाई * सबतेकठिन राजमद भाई
जो अँचवत नृप मातहितेई * नाहिन साधुसभाजेहिं सेई
सुनहुलषनभलभरत सरीसा * बिधिप्रपंच महंसुना नदीसा
दो० भरतहिहोइ न राजमद, बिधिहरिहरपदपाइ ॥
कबहुँकिकाँजी सीकरनि, छीरसिंधुबिनसाइ ॥२३०॥
तिमिरतरुनतरनिहिमकुगिलाई * गगनमगनमकुमेघहिमिलई
गोपदजल बूडहिं घटजोनी * सहजछमा बरुछाडइ छोनी
मसकफूक मकु मेरुउडाई * होइन नृपमद भरतहिभाई
लषनतुम्हारसपथपितुआना * सुचिसुबंधुनहिभरतसमाना
सुगुनषीरअवगुनजलु ताता * मिलइरचइ परपंच बिधाता
भरतहंस रबिबंस तडागा * जनमिकीन्हिगुनदोषबिभागा
गहिगुनपयतजिअवगुनबारी * निजजसजगतकीन्हिउजियारी
कहतभरतगुनसील सुभाऊ * प्रेमपयोधि मगन रघुराऊ
दो० सुनिरघुबरबानी बिबुध, देषिभरतपरहेतु ।
सकलसराहतरामसो, प्रभुको कृपानिकेत ॥ २३१ ॥

जौंनहोतजगजनमभरतको ❀ सकलधरमधुरधरनिधरतको
कबिकुलअगमभरतगुन गाथा ❀ कोजानइँतुम्हबिनु रघुनाथा
लषनरामासियसुनिसुखबानी ❀ अतिसुषलहे उनजाइबषानी
इहाँभरत सबसहित सहाए ❀ मंदाकिनी पुनीत नहाए
सरित समीपराषिसब लोगा ❀ मागिमातुगुरसचिवनियोगा
चलेभरत जहँसिय रघुराई ❀ साथनिषाद नाथ लघुभाई
समुझिमातुकरतबसकुचाहीं ❀ करतकुतरककोटिमनमाहीं
रामलषनसियसुनिममनाऊ ❀ उठिजनिअनत जाहिंतजिठाऊँ
दो० मातुमतेमहँमानिमोहिं, जोकछुकरहिं सो थोर ॥
अघअवगुनछमिआदरहिं, समुझिआपनीओर॥२३२॥
जौंपरिहरहिंमलिनमनजानी ❀ जौंसनमानहिं सेवक मानी
मोरे सरन रामकी पनही ❀ रामसुस्वामिदोससबजनही
जगजसभाजनचातकमीना ❀ नेमप्रेम निज निपुननबीना
अस मनगुनतचलेमगजाता ❀ सकुचसनेहसिथिलसबगाता
फेरतिमनहिं मातुकृत षोरी ❀ चलतभगति बलधीरजधोरी
जबसमुझत रघुनाथ सुभाऊ ❀ तबपथपरत उताइल पाऊ
भरतदसातेहि अवसर कैसी ❀ जलप्रवाह जलअलिगतिजैसी
देषि भरत कर सोच सनेहू ❀ भानिषादतेहि समय बिदेहू
दो० लगेहोन मंगल सगुन, सुनिगुन कहत निषाद ॥
मिटिहिसोचहोइहिहरष, पुनिपरिनाम बिषाद॥२३३॥
सेवकबचन सत्य सबजाने ❀ आश्रमनिकटजाइनियराने
भरत दीष बन सैल समाजू ❀ मुदितछुधितजनुपाइसुनाजू
ईति भीति जनुप्रजा दुषारी ❀ त्रिबिधितापपीडितग्रहभारी

जाइ सुराज सुदेससुषारी ❁ होहिभरतगतितेहिअनुहारी
राम बासबन संपति भ्राजा ❁ सुषीप्रजा जनुपाइ सुराजा
सचिवबिराग बिबेक नरेसू ❁ बिपिन सुहावन पावनदेसू
भटजमनियमसैलरजधानी ❁ सांतिसुमतिसुचिसुंदरिरानी
सकल अंगसंपन्न सुराऊ ❁ रामचरनआस्रितचितचाऊ
दो० जीतिमोह महिपाल दल, सहित बिबेकभुआल ॥
करतअकंटकराज्यपुर, सुषसंपदा सुकाल २३४ ॥
बन प्रदेसमुनि बास घनेरे ❁ जनुपुरनगर गाँवगन घेरे
बिपुलबिचित्रबिहँगमृगनाना ❁ प्रजासमाज नजाइ बषाना
षगहा करिहरिबाघ बराहा ❁ देषिमहिष वृषसाजसराहा
बयर बिहाइचरहिं एकसंगा ❁ जहँतहँ मनहुसेन चतुरंगा
झरनाझरहिंमत्तगजगाजहिं ❁ मनहुनिसानबिबिधिबिधिबाजहिं
चकचकोरचातकसुकपिकगन ❁ कूजतमंजु मरालमुदितमन
अलिगनगावत नाचतमोरा ❁ जनुसुराज मंगल चहुँओरा
बेलिबिटपत्रिनसफलसफूला ❁ सबसमाज मुदमंगलमूला
दो० रामसैल सोभा निरषि, भरत हृदय अति प्रेम ।
तापसतप फलपाइजिमि, सुषीसिरानेनेम ॥ २३५ ॥
तबकेवट ऊँचे चढि धाई ❁ कहेउभरतसन भुजाउठाई
नाथदेषिअहिबिटपबिसाला ❁ पाकरि जंबु रसाल तमाला
तिन्हतरुबरन्हमध्यबटसोहा ❁ मंजुबिसाल देषि मनमोहा
नीलसघनपल्लवफललाला ❁ अबिरलछाँहसुषदसबकाला
मानहुतिमिरअरुनमयरासी ❁ बिरचीबिधिसकेलिसुषमासी
एतरु सरित समीप गोसाँई ❁ रघुबर परनकुटी जहँछाई

तुलसीतरुवर बिबिधसोहाए * कहुँकहुँसिअकहुँलषनलगाए
बट छाया बेदिका बनाई * सियनिजपानिसरोजसुहाई
दो० जहाँबैठि मुनिगन सहित, नितसिय रामसुजान ।
सुनहिंकथा इतिहाससब, आगमनिगमपुरान २३६॥
सषावचनसुनिबिटपनिहारी * उमगे भरत बिलोचनवारी
करत प्रनाम चले दोउभाई * कहतप्रीति सारद सकुचाई
हरषहिं निरषिरामपदअंका * मानहु पारस पाएउ रंका
रजसिरधरिहियनयनन्हिलावहिं * रघुबर मिलन सरिससुषपावहिं
देषिभरतगतिअकथअतीवा * प्रेममगनमृग षगजडजीवा
सषहि सनेहबिबस मगभूला * कहिसुपंथ सुरबरषहिं फूला
निरषिसिद्ध साधकअनुरागे * सहज सनेह सराहन लागे
होतन भूतल भाउ भरतको * अचरसचरचरअचरकरतको
दो० प्रेम अमिअ मंदर बिरह, भरत पयोधि गँभीर ॥
मथि प्रगटेउ सुरसाधु हित, कृपासिंधुरघुबीर २३७॥
सषासमेत मनोहर जोटा * लषेउलषन सघनबनओटा
भरत दीषप्रभुआश्रमपावन * सकलसुमंगलसदनसुहावन
करत प्रबेस मिटेदुष दावा * जनुजोगी परमारथ पावा
देषेभरत लषन प्रभु आगें * पूछे बचन कहत अनुरागें
सीसजटा कटिमुनिपटबाँधे * तूनकसे कर सरधनु काँधे
बेदीपर मुनिसाधु समाजू * सीयसहित राजत रघुराजू
बलकलबसनजटिलतनस्यामा * जनुमुनिबेषकीन्हरतिकामा
करकमलनिधनुसायकफेरत * जिअकीजरनिहरतहँसिहेरत
दो० लसतमंजुमुनिमंडली, मध्यसीय रघुचंद ।
ज्ञानसभा जनुतन धरे, भगति सच्चिदानंद २३८॥

सानुजसषासमेत मगनमन * बिसरेहरष सोकसुषदुषगन
पाहिनाथकहि पाहिगोसाँई * भूतल परेलकुटकी नाई
बचन सप्रेमलषन पहिचाने * करतप्रनाम भरतजियँजाने
बंधुसनेह सरस इहि ओरा * उत साहिब सेवा बरजोरा
मिलिनजाइनहिगुदरतबनई * सुकबिलषनमनकीगतिभनई
रहे राषि सेवा पर भारू * चढी चंगजनु पैंच षेलारू
कहत सप्रेमनाइमहिमाथा * भरत प्रनामकरत रघुनाथा
उठेराम सुनिप्रेम अधीरा * कहुँपटकहुँ निषंग धनुतीरा
दो० बरबसलिए उठाय उर, लाएकृपा निधान ॥
भरतरामकीमिलनिलषि, बिसरासबहिअपान २३९॥
मिलनिप्रीतिकिमिजाइबषानी * कबिकुलअगमकरममनबानी
परम प्रेमपूरन दोउ भाई * मनबुधिचितअहमितिबिसराई
कहहु सुप्रेम प्रगटको करई * केहिछायाकबि मतिअनुसरई
कबिहिअरथआषरबलसांचा * अनुहरितालगतिहिनटनाचा
अगम सनेहभरतरघुबरको * जहँनजाइमनबिधिहरहरको
सोमइँकुमतिकहउँकेहिभांती * बाजसुराग किगाँडरताँती
मिलनिबिलोकिभरतरघुबरकी * सुरगनसभयधकधकीधरकी
समुझाए सुर गुरु जड जागे * बरषि प्रसून प्रसंसन लागे
दो० मिलिसप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटेउ राम ॥
भूरिभाग भेंटेभरत, लछिमन करतप्रनाम ॥ २४० ॥
भेंटेउ लषनललकिलघुभाई * बहुरिनिषाद लीन्ह उरलाई
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्हबंदे * अभिमतआसिषपाइअनंदे
सानुजभरतउमागिअनुरागा * धरिसिरासियपदपदुम परागा

पुनिपुनि करतप्रनामउठाए ❋ सिर करकमलपरसि बैठाए
सीयअसीसदीन्हिमनमाहीं ❋ मगन सनेहदेह सुधिनाहीं
सबबिधिसानुकुललषिसीता ❋ भेनिसोचउर अपडरबीता
कोउकिछुकहइनकोउकिछुपूछा ❋ प्रेमभरामनानिजगति छूछा
तेहिअवँसरकेवटधीरजधरि ❋ जोरिपानिबिनवतप्रनामकरि

दो० नाथ साथमुनि नाथके, मातुसकल पुरलोग ॥
सेवकसेनपसचिव सब, आएबिकलबियोग २४१ ॥

सील सिंधुसुनि गुरआगवनू ❋ सियसमीप राषेरिपुदवनू
चले सबेगराम तेहि काला ❋ धीरधरम धुरदीन दयाला
गुरहिदेषि सानुज अनुरागे ❋ दंड प्रनाम करन प्रभुलागे
मुनिबर धाइलिए उरलाई ❋ प्रेम उमागि भेंटे दोउभाई
प्रेमपुलकि केवट कहिनामू ❋ कीन्ह दूरिते दंड प्रनामू
रामसषारिषि बरबस भेंटा ❋ जनुमहि लुठतसनेहसमेटा
रघुपतिभगतिसुमंगलमूला ❋ नभसराहि सुरबरिषहिंफूला
एहिसमनिपटनींच कोउनाहीं ❋ बडबसिष्टसम कोजगमाहीं

दो० जेहिलषिलषनहुते अधिक, मिलेमुदितमुनिराउ ॥
सो सीतापति भजनको, प्रगट प्रताप प्रभाउ २४२॥

आरत लोग रामसब जाना ❋ करुनाकरसुजान भगवाना
जोजेहिभायरहाअभिलाषी ❋ तेहितेहिकैतसितसि रुचिराषी
सानुजमिलिपलमहँसबकाहू ❋ कीन्हदूरि दुष दारुन दाहू
यह बडि बात रामकै नाहीं ❋ जिमिघटकोटिएकरबिछाहीं
मिलिकेवटहि उमगिअनुरागा ❋ पुरजनसकल सराहहिंभागा
देषिराम दुषित महँतारी ❋ जनुसुबेलि अवलींहिममारी

प्रथम राम भेंटी कैकेई ❁ सरल सुभाय भगति मति भेई
पगपरि कीन्ह प्रबोध बहोरी ❁ कालकरमबिधिसिरधरिखोरी
दो॰ भेंटी रघुबर मातु सब, करि प्रबोध परितोष ॥
अंबईस आधीन जग, काहुन देइअ दोष ॥ २४३ ॥
गुरुतिय पदबंदे दुहुँ भाई ❁ सहित बिप्रतिय जेसँग आई
गंगगौरि समसब सनमानी ❁ देहिंअसीसमुदित मृदुबानी
गहिपद लगे सुमित्रा अंका ❁ जनुभेंटी संपति अतिरंका
पुनिजननीचरननिदोउभ्राता ❁ परेप्रेम ब्याकुल सब गाता
अति अनुराग अंबउर लाये ❁ नयनसनेहसलिलअन्हवाये
तेहिअवँसर कर हरषबिषादू ❁ किमिकबिकहइमूकजिमिस्वादू
मिलिजननिहिसानुजरघुराऊ ❁ गुरसनकहेउकिधारिअपाऊ
पुरजन पाइ मुनीस नियोगू ❁ जलथलतकितकिउतरेलोगू
दो॰ महिसुर मंत्री मातु गुर, गने लोग लिए साथ ।
पावनआस्त्रमगवनकिय, भरतलषनरघुनाथ २४४ ॥
सीय आइमुनिवर पगलागी ❁ उचितअसीसलहीमनमाँगी
गुरपतिनिहिमुनितियनसमेता ❁ मिलीप्रेमकहि जाइन जेता
बंदिबंदि पगसिय सबहीके ❁ आसिर बचन लहेप्रियजीके
सासुसकल जबसीय निहारी ❁ मूँदेनयन सहमि सुकुमारी
परींबधिकबसमनहु मरालीं ❁ काहकीन्ह करतार कुचालीं
तिन्हसियानिरषिनिपटदुषपावा ❁ सोसब सहिअजोदैउसहावा
जनकसुता तबउरधरिधीरा ❁ नीलनलिनलोचनभरिनीरा
मिलीसकलसासुन्हसियजाई ❁ तेहिअवँसर करुनामहिछाई
दो॰ लागिलागिपगसबनिसिय, भेंटतिअतिअनुराग ॥
हृदयअसीसहिंप्रेमबस, रहिअहुभरीसोहाग २४५ ॥

बिकल सनेह सीयसब रानी * बैठनसबहि कहेउ गुरग्यानी
कहिजगगतिमायिकमुनिनाथा * कहेकछुक परमारथ गाथा
नृपकर सुरपुरगवन सुनावा * सुनिरघुनाथ दुसहदुष पावा
मरन हेतुनिज नेह बिचारी * भेअति बिकल धीरधुरधारी
कुलिसकठोरसुनतकटुबानी * बिलपतलषन सीयसबरानी
सोकबिकलअतिसकलसमाजू * मानहुँराज अकाजेउआजू
मुनिबरबहुरि राम समुझाए * सहितसमाजसुसरित नहाए
ब्रतनिरंबुतेहिदिनप्रभुकीन्हा * मुनिहुकहेजलकाहुन लीन्हा
दो० भोर भए रघुनंदनहि जो मुनि आयसुदीन्हा ॥
श्रद्धाभगतिसमेतप्रभु, सोसबसादरकीन्ह २४६ ॥
करिपितुक्रियाबेदजसिबरनी * भेपुनीत पातकतम तरनी
जासु नाम पावक अघतूला * सुमिरतसकलसुमंगल मूला
सुद्धसोभएउसाधुसंमतअस * तीरथआवाहन सुरसरिजस
सुद्ध भए दुइ बासर बीते * बोले गुर सनराम पिरीते
नाथलोग सबनिपट दुषारी * कंदमूल फल अंबुअहारी
सानुजभरतसचिवसबमाता * देषिमोहिपलजिमिजुगजाता
सब समेत पुरधारिअ पाऊ * आपइहाँ अमरावति राऊ
बहुतकहेउँसबकिएउँढिठाई * उचितहोइतसकरिअगोसाँई
दो० धरमसेतुकरुनायतन, कसन कहहु अस राम ॥
लोगदुषित दिनदुइदरस, देषिलहेहुबिस्राम २४७ ॥
रामबचनसुनिसभय समाजू * जनुजलनिधिमहँबिकलजहाजू
सुनिगुरगिरा सुमंगल मूला * भएउमनहुमारुत अनुकूला
पावनिपयतिहुँ कालनहाहीं * जोबिलोकिअघओघनसाहीं

मंगलमूरतिलोचन भरिभरि * निरषहिंहरषिदंडवतिकरिकरि
राम सैलबन देषन जाहीं * जहँसुखसकलसकलदुखनाहीं
झरनाझरहिं सुधासम बारी * त्रिबिधतापहरत्रिबिधबयारी
बिटपबेलित्रिनअगनितजाती * फलप्रसून पल्लव बहुभाँती
सुंदरसिला सुषद तरुछाहीं * जाइबरनिबनछबि केहिपाहीं
दो॰ सरनि सरोरुह जलबिहग, कूँजत गुंजत भृंग ॥
बैरबिगतबिहरतबिपिन, मृग बिहंग बहुरँग २४८ ॥
कोलकिरातभिल्लबनबासी * मधुसुचिसुंदरस्वाद सुधासी
भरिभरिपरनपुटी रचिरूरी * कंद मूल फल अंकूरजूरी
सबहिंदेहिंकरिबिनयप्रनामा * कहिकहिस्वादभेदगुननामा
देहिं लोग बहुमोल न लेहीं * फेरत राम दोहाई देहीं
कहहिं सनेहमगन मृदुबानी * मानत साधुप्रेम पहिचानी
तुम्हसुकृतीहमनीचनिषादा * पावा दरसन राम प्रसादा
हमहिंअगम अतिदरसतुम्हारा * जसमरुधरनि देवधुनिधारा
रामकृपालनिषाद निवाजा * परिजनप्रजउ चहियजसराजा
दो॰ यहजिअजानिसकोच तजि, करिअछोहलषिनेहु ॥
हमहिंकृतारथ करनलगि, फलत्रिनअंकुरलेहु २४९ ॥
तुम्हप्रिय पाहुनेबन पगुधारे * सेवा जोगन भाग हमारे
देबकाह हमतुम्हहि गोसाँई * ईंधनपात किरात मिताई
यहहमारिअतिबडिसेवकाई * लेहिंन बासनबसन चोराई
हमजडजीव जीवगनघाती * कुटिलकुचाली कुमतिकुजाती
पापकरत निसिबासरजाहीं * नहिंपटकटिनाहिंपेट अघाहीं
सपनेहुधरम बुद्धिकसकाऊ * यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ

जबते प्रभुपद पदुम निहारे ❋ मिटेदुसह दुषदोष हमारे
बचनसुनत पुरजन अनुरागे ❋ तिन्हके भागसराहनलागे
छं० लागेसराहन भागसब अनुराग बचन सुनावहीं ॥
बोलनिमिलनिसियरामचरनसनेहलषिसुषपावहीं ॥
नरनारिनिदरहिंनेहनिजसुनिकोलभिल्लिनिकीगिरा॥
तुलसीकृपा रघुबंसमनिकी लोहलै नौकातिरा ॥
सो० बिहरहिंबनचहुँओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोगसब ॥
जलज्यों दादुरमोर, भएपीन पावसप्रथम २५० ॥
पुरनरनारिमगनअति प्रीती ❋ बासरजाहिंपलकसमबीती
सीय सासुप्रति बेष बनाई ❋ सादरकरइ सरिस सेवकाई
लषा न मरम राम बिनुकाहू ❋ मायासब सियमाया माहू
सीयसासुसेवा सब कीन्ही ❋ तिन्ह लहिसुषसिषआसिषदीन्ही
लषिसियसहितसरल दोउभाई ❋ कुटिल रानि पछितानिअघाई
अवनिजमहि जाँचतिकैकेई ❋ महिनबीच बिधिमीचनदेई
लोकहुबेदबिहितकबिकहहीं ❋ राम बिमुषथल नरकनलहहीं
यहसंसउ सबके मनमाहीं ❋ रामगवन बिधिअवधकिनाहीं
दो० निसिन नींदनहिंभूषदिन, भरतबिकल सुठिसोच ॥
नीचकीचबिचमगनजस,मीनहिसलिलसँकोच २५१॥
कीन्हिमातुमिसकालकुचाली ❋ ईतिभीति जसपातकसाली
केहिबिधि होइरामअभिषेकू ❋ मोहि अवकलत उपाउनएकू
अवसिफिरहिंगुरआयसुमानी ❋ मुनिपुनिकहबराम रुचिजानी
मातु कहेउबहुरहिं रघुराऊ ❋ रामजननिहठकरबिकिकाऊ
मोहिअनुचरकर केतिकबाता ❋ तेहिमहँकुसमउबामबिधाता

जौंहठकर उँतनिपटकुकरमू ❀ हरगिरिते गुरुसेवक धरमू
एकउ जुगुतिनमनठहरानी ❀ सोचतभरतहि रैनि बिहानी
प्रात नहाइ प्रभुहिसिरनाई ❀ बैठत पठए रिषय बोलाई
दो० गुरुपद कमल प्रनाम करि, बैठे आयसु पाइ ॥
बिप्र महाजन सचिवसब, जुरेसभा सदआइ २५२ ॥
बोले मुनिवर समयसमाना ❀ सुनहुसभासद भरत सुजाना
धरम धुरीन भानुकुलभानू ❀ राजा रामस्वबस भगवानू
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू ❀ राम जनम जगमंगल हेतू
गुरपितु मातुबचनअनुसारी ❀ षलदलदलन देवहितकारी
नीतिप्रीतिपरमारथस्वारथ ❀ कोउनरामसमजानजथारथ
बिधिहरिहरससिरविदिसिपाला ❀ मायाजीवकरम कुलिकाला
अहिपमहिप जहँलगिप्रभुताई ❀ जोगसिद्धि निगमागमगाई
करि बिचाराजियदेषहुनीकें ❀ राम रजाइ सीस सबहीकें
दो० राषें रामरजाइ रुष, हमसब कर हित होइ ॥
समुझिसयाने करहुअब, सबमिलिसंमतसोइ २५३ ॥
सबकहँ सुषदरामअभिषेकू ❀ मंगल मोदमूल मगएकू
केहिबिधिअवधचलहिंरघुराऊ ❀ कहहुसमुझिसोइकरिअउपाऊ
सब सादरसुनिमुनिवरबानी ❀ नयपरमारथ स्वारथ सानी
उतरन आवलोगभये भोरे ❀ तबसिर नाइभरत करजोरे
भानुबंस भये भूप घनेरे ❀ अधिक एकतें एक बडेरे
जनम हेतुसबकहँ पितुमाता ❀ करमसुभासुभ देइबिधाता
दलिदुषसजइसकलकल्याना ❀ असिअसीसराउरिजगजाना
सोगोसाँइबिधिगतिजेहिछेकी ❀ सकइकोटारि टेकजोटेकी

दो० बूझिअ मोहि उपाउ अब, सोसब मोर अभाग ॥
सुनिसनेह मयबचन गुर, उरउमगा अनुराग २५४॥
तात बात फुरि रामकृपाहीं ❋ रामबिमुषसिधिसपनेहुनाहीं
सकुचउँतातकहतएकबाता ❋ अरधतजहिंबुधसरबसजाता
तुम्हकाननगवनहुदोउभाई ❋ फेरिअहिलषनसीय रघुराई
सुनिसुबचनहरषेदोउभ्राता ❋ भे प्रमोद परिपूरन गाता
मन प्रसन्न तनतेजबिराजा ❋ जनुजियेराउ रामभएराजा
बहुतलाभलोगन्ह लघुहानी ❋ समदुषसुषसबरोवहिं रानी
कहहिंभरतमुनिकहासोकीन्हे ❋ फलजगजीवन्ह अभिमतदीन्हे
काननकरउँजनमभरिबासू ❋ एहितेअधिकन मोरसुपासू
दो० अंतरजामीरामसिय, तुम्ह सर्बज्ञ सुजान
जौंफुरकहहुँतनाथनिज, कीजिअबचनप्रमान २५५॥
भरत बचन सुनिदेषि सनेहू ❋ सभासहित मुनिभएबिदेहू
भरत महामहिमाजलरासी ❋ मुनिमतिठाढितीरअबलासी
गाचह पार जतनहिय हेरा ❋ पावति नावन बोहित बेरा
अवरकरिहिको भरतबड़ाई ❋ सरसीसीपिकि सिंधुसमाई
भरतमुनिहमन भीरतभाए ❋ सहितसमाज रामपहिंआए
प्रभुप्रनामकरिदीन्हिसुआसन ❋ बैठेसबसुनिमुनि अनुसासन
बोले मुनिवर बचनबिचारी ❋ देसकाल अवसर अनुहारी
सुनहु राम सर्बज्ञ सुजाना ❋ धरमनीतिगुनग्याननिधाना
दो० सबके उर अंतरबसहु, जानहु भाउ कुभाउ ॥
पुरजनजननीभरतहित, होइसोकहिअ उपाउ २५६॥
आरतकहहिंबिचारिनकाऊ ❋ सूझजुआरिहि आपनदाऊ

सुनिमुनिबचनकहतरघुराऊ ❋ नाथतुम्हारेहि हाथउपाऊ
सबकर हित रुषराउरि राषे ❋ आयसुकिए मुदितफुरभाषे
प्रथमजोआयसु मोकहँहोई ❋ माथेमानि करउँ सिषसोई
पुनिजेहिकहँजसकहबगुसाँई ❋ सोसबभाँतिघटिहिसेवकाई
कहमुनिरामसत्यतुम्हभाषा ❋ भरतसनेह बिचारन राषा
तेहिते कहउँ बहोरि बहोरी ❋ भरतभगतिबसभइमतिमोरी
मोरेंजान भरतरुचि राषी ❋ जोकीजियसोसुभसिवसाषी
दो॰ भरतबिनय सादरसुनिअ, करिअ बिचारबहोरि ॥
करबसाधुमतलोकमत, नृपनयनिगमनिचोरि २५७॥
गुर अनुराग भरत परदेषी ❋ राम हृदय आनंद बिसेषी
भरतहि धरम धुरंधर जानी ❋ निजसेवक तनमानसबानी
बोलेगुर आयसु अनुकूला ❋ बचन मंजुमृदु मंगलमूला
नाथसपथ पितुचरन दोहाई ❋ भएउनभुअनभरतसमभाई
जे गुरपद अंबुज अनुरागी ❋ ते लोकहुँ बेदहुँ बडभागी
राउर जापर अस अनुरागू ❋ कोकहिसकइ भरतकरभागू
लषि लघुबंधु बुद्धि सकुचाई ❋ करत बदनपर भरतबडाई
भरतकहहिंसोइ किएँभलाई ❋ असकहिराम रहे अरगाई
दो॰ तबमुनिबोले भरतसन, सब सकोच तजि तात ॥
कृपासिंधुप्रिय बंधुसन, कहहुहृदय कइबात ॥२५८॥
सुनिमुनिबचन रामरुषपाई ❋ गुरसाहिब अनुकूल अघाई
लषिअपनेंसिर सबछरभारू ❋ कहिनसकहिं कछु करहिंबिचारू
पुलकि सरीर सभा भएठाढे ❋ नीरजनयन नेहजल बाढे
कहबमोर मुनिनाथनिबाहा ❋ एहितेंअधिक कहौं मैंकाहा

मैं जानउँ निजनाथसुभाऊ * अपराधिहुँपर कोहनकाऊ
मोपर कृपा सनेह बिसेषी * षेलत षुनिस न कबहूँ देषी
सिसुपन तें परिहरेउ न संगू * कबहुँन कीन्ह मोरमनभंगू
मैंप्रभु कृपारीति जियजोही * हारिहुँषेल जितावहिं मोही
दो० महूँसनेह सकोच बस, सनमुष कहेन बयन ॥
दरसनतृपितनआजलगि, प्रेमपियासेनयन ॥२५९॥
बिधिनसकेउसहिमोरदुलारा * नीचबीच जननी मिसपारा
यहउकहतमोहिआजनसोभा * अपनीसमुझिसाधुसुचिकोभा
मातुमंदमइ साधु सुचाली * उरअसआनतकोटिकुचाली
फरइकिकोदवबालिसुसाली * मुकुताप्रसव किसंबुकताली
सपनेहु दोसकलेस न काहू * मोरअभाग उदधिअवगाहू
बिनसमुझेंनिजअघपरिपाकू * जारेउँजायजननिकहिकाकू
हृदयहेरि हारेउँ सबओरा * एकहिभाँतिभलेहिभलमोरा
गुरुगोसाइँ साहिब सियरामू * लागत मोहिनीक परिनामू
दो० साधुसभा गुरप्रभुनिकट, कहउँसुथलसतिभाउ ॥
प्रेमप्रपंच कि झूठफुर, जानहिंमुनिरघुराउ २६० ॥
भूपतिमरन प्रेम पनराषी * जननीकुमतिजगतसबसाषी
देषिनजाहिंबिकलमहतारीं * जरहिंदुसहजर पुर नरनारीं
महींसकल अनरथकरमूला * सोसुनिसमुझिसहेउँसबसूला
सुनिबनगवनकीन्हरघुनाथा * करिमुनिबेषलषनसियसाथा
बिनपानहिन्हपयादेहिपाए * संकरसाषि रहेउँ एहिघाएँ
बहुरिनिहारि निषाद सनेहू * कुलिसकठिनउरभएउनबेहू
अबसबआँषिन्ह देषेउँआई * जिअतजीव जडसबइसहाई

जिन्हहिनिरषिमगमापिनिचीछीं ❋ तजहिंविषमविषतापसुतीछीं

दो० तेइरघुनंदन लषन सिय, अनहित लागे जाहि ॥
तासुतनयताजिदुसहदुष, दैउसहावइकाहि ॥ २६१ ॥

सुनिअतिविकलभरतबरबानी ❋ आरतिप्रीतिविनयनयसानी
सोक मगन सबसभाषभारू ❋ मनहुकमलबनपरेउ तुसारू
कहिअनेकविधिकथापुरानी ❋ भरतप्रबोधकीन्हमुनिग्यानी
बोले उचित बचन रघुनंदू ❋ दिनकर कुलकैरव बनचंदू
तातजायजियकरहु गलानी ❋ ईसअधीन जीवगति जानी
तीनिकालतिभुअनमतमोरे ❋ पुन्यसलोक ताततर तोरे
उरआनततुम्हपरकुटिलाई ❋ जाइलोक परलोक नसाई
दोसदेहिं जननिहि जडतेई ❋ जिन्हगुरसाधुसभा नहिंसेई

दो० मिटिहईं पाप प्रपंचसब, अषिल अमंगल भार ॥
लोकसुजसपरलोकसुष, सुमिरतनाम तुम्हार २६२ ॥

कहउँसुभाउसत्यसिवसाषी ❋ भरतभूमिरह राउरि राषी
तात कुतरककरहुजनिजाए ❋ बैरप्रेमनहिं दुरइ दुराए
मुनिगननिकटविहँगमृगजाहीं ❋ बाधकबधिकबिलोकिपराहीं
हितअनहितपसुपंछिउजाना ❋ मानुषतनगुनग्याननिधाना
तात तुम्हहिमइँजानउँनीकें ❋ करउँकाह असमंजस जीकें
राषेउराय सत्यमोहित्यागी ❋ तनपरिहरेउ प्रेमप्रन लागी
तासुबचन मेटत मन सोचू ❋ तेहितेअधिकतुम्हारसकोचू
तापरगुरमोहिआयसुदीन्हा ❋ अवसिजोकहहुचहउँसोइकीन्हा

दो० मनप्रसन्नकरिसकुचताजि, कहहुकरउँसोइआज ॥
सत्यसंधरघुबरबचन, सुनिभासुषीसमाज ॥ २६३ ॥

सुरगनसहित सभयसुरराजू ❋ सोचहिं चाहत होनअकाजू
करतउपाउ बनतकछुनाहीं ❋ रामसरन सबगे मनमाहीं
बहुरि बिचारिपरसपरकहहीं ❋ रघुपतिभगतभगतिबसअहहीं
सुधिकरि अंबरीष दुरबासा ❋ भेसुरसुरपतिनिपट निरासा
सहेसुरन्ह बहुकाल बिषादा ❋ नरहरि किएप्रगट प्रहलादा
लगिलगिकानकहहिंधुनिमाथा ❋ अबसुरकाज भरतकें हाथा
आन उपाउन देषिअदेवा ❋ मानतराम सुसेवक सेवा
हियसप्रेमसुमिरहुसब भरतहि ❋ निजगुनसीलरामबसकरतहि

दो० सुनिसुरमत सुरगुर कहेउ, भलतुम्हार बडभाग ॥
सकलसुमंगलमूलजग, भरतचरनअनुराग ॥ २६४ ॥

सीतापति सेवक सेवकाई ❋ कामधेनुसय सरिस सुहाई
भरतभगति तुम्हरें मनआई ❋ तजहुसोचबिधि बात बनाई
देषु देवपति भरत प्रभाऊ ❋ सहजसुभाय बिबसरघुराऊ
मनथिर करहुदेव डरुनाहीं ❋ भरतहिजानिरामपरिछाहीं
सुनिसुरगुर सुरसंमत सोचू ❋ अंतरजामी प्रभुहि सकोचू
निजसिरभारभरतजियजाना ❋ करतकोटिबिधिउरअनुमाना
करि बिचारमनदीन्हीठीका ❋ रामरजायसु आपन नीका
निजपनतजिराषेउपनमोरा ❋ छोहसनेह कीन्ह नहिंथोरा

दो० कीन्ह अनुग्रहअमितअति, सबबिधिसीतानाथ ॥
करिप्रनाम बोलेभरत, जोरिजलजजुगहाथ २६५ ॥

कहउँकहावउँकाअबस्वामी ❋ कृपाअंबुनिधि अंतरजामी
गुरप्रसन्न साहेब अनुकूला ❋ मिटीमलिनमनकलपितसूला
अपडर डरेउँ नसोच समूले ❋ रबिहिन दोसदेव दिसिभूले

मोरअभाग मातु कुटिलाई * बिधि गति बिषमकालकठिनाई
पाउँरोपिसबमिलिमोहिघाला * प्रनतपालपन आपन पाला
यहनइरीति न राउरि होई * लोकहु बेदबिदित नाहिंगोई
जगअनभलभलएकगोसाँई * कहिअहोइभलकासु भलाई
देउदेवतरु सरिस सुभाऊ * सनमुष बिमुषनकाहुहिकाऊ
दो० जाइनिकटपहिचानितरु, छाँहसमनिसबसोच ॥
मांगतअभिमतपावजग, राउरंकभलपोच ॥ २६६ ॥
लषिसबबिधिगुरुस्वामिसनेहू * मिटेउछोभनहिं मनसंदेहू
अबकरुनाकर कीजिअसोई * जनहितप्रभुचितछोभनहोई
जोसेवकसाहिबहि सकोची * निजहितचहइतासु मतिपोची
सेवकहित साहेब सेवकाई * करइसकल सुषलोभबिहाई
स्वारथनाथ फिरें सबहीका * किएँरजाइकोटिबिधिनीका
यह स्वारथ परमारथ सारू * सकलसुकृतफलसुगतिसिंगारू
देवएक बिनती सुनिमोरी * उचितहोइ तसकरब बहोरी
तिलकसमाजसाजिसबआना * करिअसुफलप्रभुजौंमनमाना
दो० सानुजपठइअ मोहिंबन, कीजिअ सबहि सनाथ ।
नतरुफेरिआहि बंधुदोउ, नाथचलउँ मइँसाथ २६७॥
नतरुजाहिं बनतीनिउ भाई * बहुरिअसीय सहित रघुराई
जेहिबिधिप्रभुप्रसन्नमनहोई * करुनासागर कीजिअ सोई
देवदीन्ह सब मोहिअभारू * मोरे नीति न धरम बिचारू
कहउँ बचन सब स्वारथहेतू * रहतन आरत कें चितचेतू
उतरुदेइ सुनि स्वामिरजाई * सोसेवक लषि लाज लजाई
असमइँअवगुन उदधिअगाधू * स्वामि सनेह सराहत साधू

अबकृपालमोहिसोमतभावा ❋ सकुचस्वामिमन जाइनपावा
प्रभुपदसपथकहउँसतिभाऊ ❋ जगमंगल हितएक उपाऊ
दो० प्रभुप्रसन्न मनसकुच तजि, जो जेहि आयसुदेव ॥
सोसिरधरिधरिकरिहिसबामिटिहिअनटअवरेव २६८ ❋ नवाह ५
भरतबचनसुचिसुनि सुरहरषे ❋ साधुसराहि सुमन बहुबरषे
असमंजस बसअवधनेवासी ❋ प्रमुदितमन तापसबनबासी
चुपहि रहे रघुनाथ सकोची ❋ प्रभुगतिदेषि सभासबसोची
जनकदूततेहि अवँसरआए ❋ मुनिबसिष्ठसुनिबेगिबोलाए
करिप्रनामतिन्हरामनिहारे ❋ देषदेषि भएनिपट दुषारे
दूतन्ह मुनिवर बूझी बाता ❋ कहहु बिदेह भूपकुसलाता
सुनिसकुचाइनाइमहि नाथा ❋ बोले चरबर जोरें हाथा
बूझब राउर सादर साईं ❋ कुसल हेतु सोभएउ गोसाईं
दो० नाहित कोसल नाथकें, साथ कुसल गइ नाथ ॥
मिथिलाअवधविसेषते, जगसबभएउअनाथ २६९ ॥
कोसलपतिगतिसुनिजनकोरा ❋ भे सबलोग सोगबस बउरा
जेहिं देषेतेहि समय बिदेहू ❋ नामसत्य असलागन केहू
रानिकुचालिसुनत नरपालहि ❋ सूजन कछुजसमनिबिनुब्यालहि
भरत राज रघुबर बनबासू ❋ भामिथिलेसहि हृदयहरासू
नृपबूझे बुधसचिव समाजू ❋ कहहुबिचारिउचितकाआजू
समुझिअवधअसमंजसदोऊ ❋ चलिअकिरहि अनकहकछुकोऊ
नृपहिं धीरधरिहृदयबिचारी ❋ पठए अवध चतुरचर चारी
बूझिभरतसतिभाउकुभाऊ ❋ आएहु बेगिन होइ लषाऊ
दो० गएअवध चरभरत गति, बूझिदेषि करतूति ॥
चलेचित्रकूटहि भरत, चारचलेतेरहूति ॥ २७० ॥

दूतन्ह आइभरतकइकरनी * जनकसमाजजथामतिबरनी
सुनिगुरपरिजनसचिवमहीपति * भेसबसोचसनेहबिकलअति
धरिधीरज करि भरतबडाई * लिए सुभटसाहनी बोलाई
घरपुर देस राषि रषवारे * हयगयरथ बहुजान संवारे
दुघरीसाधि चले ततकाला * किएबिस्रामनमगमहिपाला
भोरहि आज नहाइप्रयागा * चलेजमुनउतरनसब लागा
षबरिलेनहम पठए नाथा * तिनकहिअसमहि नाएउमाथा
साथ किरातछसातकदीन्हे * मुनिवरतुरतबिदा चरकीन्हे
दो॰ सुनत जनक आगवनसब, हरषेउ अवध समाज ॥
रघुनंदनहिं सकोचबड, सोचबिबससुरराज ॥२७१॥
गरइगलानि कुटिल कइकेई * काहि कहइ केहिदूषन देई
असमनआनिमुदितनरनारी * भएउबहोरिरहब दिनचारी
येहि प्रकार गतबासर सोऊ * प्रातनहान लागसब कोऊ
करिमज्जन पूजहिंनरनारी * गनपगौरितिपुरारित मारी
रमारमन पद बंदि बहोरी * बिनवहिंअंजुलिअंचलजोरी
राजा राम जानकी रानी * आनंदअवधिअवधरजधानी
सुबसबसउफिरिसहितसमाजा * भरतहि रामकरहु जुबराजा
एहिसुष सुधसींचि सबकाहू * देवदेहु जगजीवन लाहू
दो॰ गुर समाज भाइन्ह सहित, राम राज पुरहोउ ॥
अछतरामराजाअवध, मरिअमाँगसबकोउ ॥२७२॥
मुनिसनेहमयपुरजन बानी * निंदहिंजोगबिरतिमुनिग्यानी
एहिबिधिनित्यकरमकरिपूजन * रामहिकरहिंप्रनामपुलकितन
ऊंचनीच मध्यम नरनारी * लहहिंदरसनिजानिजअनुहारी

सावधान सबहीसनमानहिं ❋ सकलसराहतकृपानिधानहिं
लरिकाइहि ते रघुबर बानी ❋ पालतनीतिप्रीतिपहिचानी
सील सकोच सिंधु रघुराऊ ❋ सुमुषसुलोचनसरल सुभाऊ
कहत रामगुन गनअनुरागे ❋ सबनिजभागसराहन लागे
हम सम पुन्यपुंजजगथोरें ❋ जिन्हहिरामजानतकरिमोरें
दो॰ प्रेममगन तेहि समयसब, सुनिआवत मिथिलेस ॥
सहितसभासंभ्रमउठेउ, रबिकुलकमलदिनेस२७३ ॥
भाइसचिव गुरपुरजनसाथा ❋ आगे गवन कीन्ह रघुनाथा
गिरिबरदीषजनकनृप जबहीं ❋ करिप्रनामरथत्यागेउतबहीं
राम दरस लालसा उछाहू ❋ पथस्रमलेसकलेसन काहू
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही ❋ बिनुमनतनदुषसुषसुधिकेही
आवतजनकचलेएहिभाँती ❋ सहितसमाज प्रेममतिमाँती
आये निकट देषिअनुरागे ❋ सादर मिलन परसपर लागे
लगेजनकमुनिजनपदबंदन ❋ रिषिन्हप्रनामकीन्हरघुनंदन
भाइन्हसहितराममिलिराजहि ❋ चलेलवाइ समेत समाजहि
दो॰ आस्रम सागर साँत रस, पूरन पावन पाथ ॥
सेन मनहु करुना सरित, लियें जात रघुनाथ २७४॥
बोरतिग्यान बिराग करारें ❋ बचनससोकमिलत नदनारें
सोचउसास समीर तरंगा ❋ धीरज तटतरुबर करभंगा
बिषमबिषादतोरावतिधारा ❋ भयभ्रमभँवर अवर्तअपारा
केवटबुध बिद्या बडिनावा ❋ सकहिंनषेइ ऐकनहिंआवा
बनचर कोलकिरातबिचारे ❋ थकेबिलोकिपथिकहिअहारे
आस्रमउदधिमिलीजबजाई ❋ मनहुउठेउअंबुधि अकुलाई

सोकबिकलदोउराजसमाजा * रहा न ज्ञान नधीरजलाजा
भूप रूप गुन सील सराही * रोअहिंसोक सिंधुअवगाही
छं० अवगाहिसोकसमुद्रसोचहिं नारिनरब्याकुलमहा ॥
दैदोषसकलसरोषबोलहिं बामबिधिकीन्होकहा ॥
सुरसिद्धतापसजोगिजन मुनिदेषिदसाविदेहकी ॥
तुलसीनसमरथकोऊजो तरिसकैसरितसनेहकी ॥
सो० किएअमितउपदेस, जहँतहँलोगनमुनिबरन ॥
धीरजधरिअनरेस, कहेउबसिष्ठबिदेहसन २७५ ॥
जासुग्यानरबिभवनिसिनासा * बचनकिरन मुनिकमलबिकासा
तेहिकिमोहममतानिअराई * यह सिअराम सनेह बड़ाई
बिषई साधक सिद्ध सयाने * त्रिबिधजीवजग बेदबषाने
राम सनेह सरस मनजासू * साधु सभा बड आदरतासू
सोहन राम प्रेम बिनुग्यानू * करनधारबिनुजिमिजलजानू
मुनिबहुबिधिबिदेहसमुझाए * रामघाट सब लोग नहाए
सकलसोक संकुल नरनारी * सो बासर बीतेउ बिनुबारी
पसुषगमृगन्हनकीन्हअहारू * प्रियपरिजनकरकवनबिचारू
दो० दोउसमाज निमिराजरघु, राजनहाने प्रात ॥
बैठेसबबटबिटपतर, मनमलीन कृसगात २७६ ॥
जे महिसुरदसरथ पुरबासी * जेमिथिलापतिनगरनिवासी
हंस बंस गुर जनक पुरोधा * जिन्हजगमगपरमारथसोधा
लगे कहन उपदेस अनेका * सहितधरमनयबिरतिबिबेका
कौसिककहिकहिकथापुरानी * समुझाई सब सभा सुबानी
तबरघुनाथकौसिकहिकहेऊ * नाथकालिजलबिनुसबरहेऊ

मुनिकहउचितकहतरघुराई * गएउबीति दिन पहरअढाई
रिषिरुषलषिकहतेरहुतिराजू * इहांउचितनहिंअसनअनाजू
कहाभूप भलसबहिसोहाना * पाइरजायसु चले नहाना
दो॰ तेहि अवसर फलफूल दल, मूल अनेक प्रकार ॥
लइआए बनचर बिपुल, भरिभरिकाँवरिभार २७७॥
कामद भेगिरि रामप्रसादा * अवलोकतअपहरतबिषादा
सरसरिताबन भूमिबिभागा * जनुउमगतआनंदअनुरागा
बेलिबिटप सबसफलसफूला * बोलतषगमृगअलिअनुकूला
तेहिंअवसरबनअधिक उछाहू * त्रिबिधसमीर सुषदसबकाहू
जाइन बरनि मनोहरताई * जनुमहिकरतिजनकपहुनाई
तब सब लोग नहाइ नहाई * रामजनकमुनि आयसुपाई
देषि देषि तरुबर अनुरागे * जहँतहँपुरजन उतरनलागे
दलफल मूल कंदबिधिनाना * पावन सुंदर सुधा समाना
दो॰ सादर सब कहँराम गुर, पठए भरि भरि भार ॥
पूजिपितरसुरअतिथिगुर, लगेकरनफलहार २७८॥
येहिबिधिबासर बीते चारी * रामनिरषि नरनारि सुषारी
दुहुँसमाजअसिरुचिमनमाहीं * बिनुसियरामफिरबभलनाहीं
सीता राम संग बन बासू * कोटि अमरपुरसरिससुपासू
परिहरि लषन राम बैदेही * जेहिघरभाव बामाबिधितेही
दाहिन दइउहोइ जबसबहीं * रामसमीपबसिअ बनतबहीं
मंदाकिनिमज्जनतिहुँकाला * रामदरस मुदमंगल माला
अटनरामगिरिबनतापसथल * असनअमियसमकंदमूलफल
सुष समेत संमत दुइसाता * पलसमहोहिंनजानिअहिजाता

दो॰ यहिसुष जोगन लोगसब, कहहिं कहाँ असभाग ॥
सहज सुभाय समाजदुहुँ, रामचरनअनुराग २७९ ॥
येहिबिधिसकलमनोरथकरहीं ❋ बचनसप्रेम सुनत मनहरहीं
सीयमातुतेहि समय पठाई ❋ दासींदेषि सुअवसर आई
सावकाससुनिसबसियसासू ❋ आएउजनकराज रनिवासू
कौसल्या सादर सनमानी ❋ आसनादिएसमयसमआनी
सीलसनेह सरस दुहुँओरा ❋ द्रवहिंदेषिसुनिकुलिसकठोरा
पुलकसिथिलतनबारिबिलोचन ❋ महिनषलिषनलगींसबसोचन
सबसियरामप्रीतिकिसिमूरति ❋ जनुकरुना बहुबेषबिसूरति
सीयमातुकहबिधिबुधिबाँकी ❋ जोपयफेन फोरिपबिटाँकी
दो॰ सुनिआसुधा देषिअहिगरल, सबकरतूति कराल ॥
जहँतहँकाकउलूकबक, मानससकृतमराल २८० ॥
सुनिससोचकहदेबि सुमित्रा ❋ बिधिगतिबड़ि बिपरीतबिचित्रा
सोसृजि पालइहरइ बहोरी ❋ बालकेलिसमाबिधिमतिभोरी
कौसल्या कह दोस नकाहू ❋ करमबिबसदुषसुषछतिलाहू
कठिनकरमगतिजानबिधाता ❋ जोसुभअसुभसकलफलदाता
ईस रजाइ सीस सबहीकें ❋ उतपतिथितिलयबिषहुअमीकें
देबि मोहबस सोचि अबादी ❋ बिधिप्रपंचअसअचलअनादी
भूपतिजिअबमरब उरआनी ❋ सोचिअसषिलषिनिजहितहानी
सीय मातु कहसत्य सुबानी ❋ सुकृतीअवधिअवधपतिरानी
दो॰ लषनरामसिय जाहुबन, भल परिनाम न पोच ॥
गहबरहियकह कौसिला, मोहिभरतकरसोच २८१ ॥
स प्रसाद असीस तुम्हारी ❋ सुतसुतबधूबिबुध सरि बारी

राम सपथ मैं कीन्हि न काऊ ❀ सो करि कहौं सषी सतिभाऊ
भरत सील गुन बिनय बड़ाई ❀ भायप भगति भरोस भलाई
कहत सारदहु कर मति हीचे ❀ सागर सीपि कि जाहिं उलीचे
जानउँ सदा भरत कुलदीपा ❀ बार बार मोहि कहेउ महीपा
कसें कनक मनि पारिषि पाएँ ❀ पुरुष परषिअहि समय सुभाएँ
अनुचित आज कहब अस मोरा ❀ सोक सनेह सयानप थोरा
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी ❀ भई सनेह बिकल सब रानी
दो० कौसल्या कह धीर धरि, सुनहु देबि मिथिलेसि ॥
को बिबेकनिधि बल्लभहि, तुम्हहि सकइ उपदेसि २८२
रानि राय सन अवसर पाई ❀ अपनी भाँति कहब समुझाई
रषिअहि लषन भरत गौनहिं बन ❀ जौं यह मत मानइ महीप मन
तौ भल जतन करब सुबिचारी ❀ मोरे सोच भरत कर भारी
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं ❀ रहें नीक मोहि लागत नाहीं
लषि सुभाउ सुनि सरल सुबानी ❀ सब भइ मगन करुन रस रानी
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि ❀ सिथिल सनेह सिद्धि जोगी मुनि
सब रनिवास बिथकि लषि रहेऊ ❀ तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ
देबि दंड जुग जामिनि बीती ❀ राम मातु सुनि उठी सप्रीती
दो० बेगि पाँउ धारिअ थलहि, कह सनेह सतिभाय ॥
हमरें तौ अब ईस गति, कै मिथिलेस सहाय २८३ ॥
लषि सनेह सुनि बचन बिनीता ❀ जनकप्रिया गहे पाय पुनीता
देबि उचित असि बिनय तुम्हारी ❀ दसरथ घरनि राम महतारी
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं ❀ अगिनि धूम गिरि सिर तिन धरहीं
सेवक राउ करम मन बानी ❀ सदा सहाय महेस भवानी

रौरे अंग जोग जग कोहै ❁ दीपसहाय कि दिनकरसोहै
रामजाइबनकरि सुरकाजू ❁ अचलअवधपुरकरिहहिंराजू
अमरनागनर रामबाहुबल ❁ सुषबसिहहिंअपनेअपनेथल
यहसबजागबलिककहिराषा ❁ देबिनहोइ मुधामुनि भाषा
दो० असकहिपगपरि प्रेमअति, सियहितबिनयसुनाइ ॥
सियसमेतसियमातुतब, चलीसुआयसुपाइ २८४ ॥
प्रियपरिजनहिमिलीबेदेही ❁ जो जेहिजोगभाँतितेहितेही
तापस बेष जानकी देषी ❁ भासबबिकलबिषाद बिसेषी
जनक रामगुर आयसुपाई ❁ चलेथलहि सियदेषी आई
लीन्हिलाइउरजनक जानकी ❁ पाहुनि पावन प्रेमप्रानकी
उरउमगेउ अंबुधिअनुरागू ❁ भएउ भूपमन मनहु प्रयागू
सियसनेह बट बाढतजोहा ❁ तापर राम प्रेम सिसुसोहा
चिरंजीवीमुनिग्यानबिकलजनु ❁ बूडतलहेउ बाल अवलंबनु
मोहमगनमतिनहिबिदेहकी ❁ महिमासियरघुबर सनेहकी
दो० सियपितु मातु सनेहबस, बिकल न सकी सँभारि ॥
धरनिसुताधीरजधरेउ, समउसुधरमबिचारि २८५॥
तापस बेष जनक सियदेषी ❁ भएउप्रेम परितोष बिसेषी
पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ ❁ सुजसधवलजगकहसबकोऊ
जितिसुरसरिकीरतिसरितोरी ❁ गवनकीन्हबिधिअंडकरोरी
गंग अवनिथल तीनि बडेरे ❁ एहिंकिए साधुसमाज घनेरे
पितु कहसत्य सनेहसुबानी ❁ सीयसकुचमहमनहुसमानी
पुनिपितुमातुलीन्हि उरलाई ❁ सिषआसिषहितदीन्हिसुहाई
कहतिनसीयसकुचिमनमाहीं ❁ इहाँ बसब रजनी भलनाहीं

लषिरुषरानि जनाएउराऊ * हृदय सराहत सीलसुभाऊ
दो० बारबार मिलि भेंटि सिय, बिदा कीन्हिसनमानि ॥
कहीसमय सिर भरत गति, रानिसुबानिसयानि २८६
सुनि भूपालभरत ब्यवहारू * सोन सुगन्धसुधा ससिसारू
मूंदे सजलनयन पुलके तन * सुजससराहनलगेमुदितमन
सावधानसुनुसुमुषि सुलोचनि * भरतकथाभवबंधबिमोचनि
धरमराज नयब्रह्म बिचारू * इहाँ जथामति मोर प्रचारू
सोमतिमोरिभरतमहिमाहीं * कहइकाहछलि छुअतिनछाहीं
बिधिगनपतिअहिपतिसिवसारद * कबिकोबिदबुधबुद्धि बिसारद
भरतचरित कीरति करतूती * धरमसीलगुनबिमलबिभूती
समुझतसुनतसुषद सबकाहू * सुचिसुरसरिरुचि निदरसुधाहू
दो० निरवधिगुननिरुपमपुरुष, भरतभरत समजानि ॥
कहिअसुमेरुकिसेरसम, कबिकुलमतिसकुचानि २८७
अगमसबहिबरनतबरबरनी * जिमिजलहीनमीनगमुधरनी
भरतअमितमहिमासुनुरानी * जानहिंरामनसकहिंबषानी
बरनिसप्रेम भरत अनुभाऊ * तिअजिअ कीरुचिलषिकहराऊ
बहुरहिं लषनभरतबनजाहीं * सबकरभलसबके मनमाहीं
देबि परंतु भरत रघुबर की * प्रीतिप्रतीतिजाइनहिं तरकी
भरतअवधिसनेहममताकी * जद्यपिराम सीमसम ताकी
परमारथ स्वारथ सुष सारे * भरतनसपनेहु मनहु निहारे
साधन सिद्धि राम पगनेहू * मोहिंलषिपरतभरत मतएहू
दो० मोरेहुँ भरत न पेलिहहिं, मनसहुँ राम रजाइ ॥
करिअन सोच सनेहबस, कहेउ भूपबिलषाइ २८८॥

रामभरतगुनगनत सप्रीती * निसिदंपतिहिपलकसमबीती
राजसमाज प्रात जुगजागे * न्हाइन्हाइ सुर पूजन लागे
गेनहाइ गुरपहिं रघुराई * बंदिचरन बोले रुषपाई
नाथभरत पुरजन महतारीं * सोकबिकल बनबास दुषारीं
सहितसमाजराउमिथिलेसू * बहुतादिवस भयेसहतकलेसू
उचितहोइसोइकीजिअनाथा * हितसबही कररौरें हाथा
असकहिअतिसकुचेरघुराऊ * मुनिपुलकेलषि सीलसुभाऊ
तुम्हबिनुरामसकलसुषसाजा * नरकसरिसदुहुँराज समाजा
दो० प्रानप्रानके जीवके, जिवसुषके सुषराम ॥
तुम्हतजितातसुहातगृह, जिन्हहितिन्हहिबिधिबाम २८९
सोसुषकरम धरमजरिजाऊ * जहँनरामपद पंकज भाऊ
जोगकुजोग ग्यानअग्यानू * जहँनहिं राम प्रेम परधानू
तुम्हबिनुदुषी सुषीतुम्हतेही * तुम्हजानहुजिअजोजेहिकेही
राउरआयसु सिर सबहीके * बिदितकृपालहिगतिसबनीके
आपआस्रमहिधारिअपाऊ * भएउसनेहसिथिलमुनिराऊ
करिप्रनामतबराम सिधाए * रिषिधरिधीरजनकपहिंआए
रामबचन गुर नृपहिसुनाए * सील सनेह सुभाय सुहाए
महाराजअबकीजिअ सोई * सबकरधरमसहित हित होई
दो० ज्ञाननिधानसुजानसुचि, धरम धीरनरपाल ॥
तुम्हबिनुअसमंजससमन, कोसमरथएहिकाल २९० ॥
सुनिमुनिबचनजनकअनुरागे * लषिगतिग्यानाबिरागबिरागे
सिथिलसनेहगुनतमनमाहीं * आएइहाँ कीन्ह भलनाहीं
रामहि रायकहेउ बनजाना * कीन्हआपुप्रिय प्रेमप्रवाना

हम अब बनते बनहिपठाई * प्रमुदित फिरबबिबेकबढाई
तापसमुनिमहिसुरसुनिदेषी * भएप्रेमबसबिकल बिसेषी
समउसमुझिधरिधीरजराजा * चलेभरतपहिंसहित समाजा
भरतआइ आगें होइलीन्हे * अवँसरसरिससुआसनदीन्हे
तातभरत कहतेरहुतिराऊ * तुम्हहिबिदितरघुबीरसुभाऊ
दो॰ रामसत्यब्रत धरतरत, सबकरसीलसनेहु मा॰ पा॰
संकट सहत सकोचबस, कहिअजोआयसुदेहु २९१॥
मुनितनपुलकिनयनभरिवारी * बोलेभरत धीरधरि भारी
प्रभुप्रियपूज्यपितासमआपू * कुलगुरसमहित मायनबापू
कौसिकादिमुनिसचिवसमाजू * ग्यानअंबुनिधिआपुनआजू
सिसुसेवकआयसुअनुगामी * जानिमोहिसिषदेइअस्वामी
येहिसमाज थलबूझबराउर * मौंनमलिन मैं बोलबबाउर
छोटे बदन कहौं बडिबाता * छमवतातलषिबामबिधाता
आँगम निगमप्रसिद्धपुराना * सेवकधरमकठिनजगजाना
स्वामिधरमस्वारथहिबिरोधू * बैरु अंधप्रेमहिन प्रबोधू
दो॰ राषि रामरुष धरमब्रत, पराधीन मोहि जानि ॥
सबकेसंमत सर्बहित, करिअप्रेम पहिचानि २९२॥
भरतबचनसुनिदेषि सुभाऊ * सहितसमाज सराहत राऊ
सुगमअगम मृदुमंजुकठोरे * अरथअमितअतिआषरथोरे
ज्यौंमुषमुकुरमुकुरनिजपानी * गहिनजाइअसअदभुतबानी
भूपभरत मुनिसाधु समाजू * गेजहाँबिबुधकुमुद द्विजराजू
सुनिसुधिसोचबिकलसबलोगा * मनहुँमीनगन नवजलजोगा
देवप्रथम कुलगुरगति देषी * निरषिबिदेहसनेह बिसेषी

रामभगति मयभरतनिहारे ❋ सुरस्वारथी हहरि हिअहारे
सब कोउ राम प्रेममयपेषा ❋ भए अलेष सोचबस लेषा
दो० रामसनेहसकोचबस, कहससोचसुरराज ॥
रचहुप्रपंचहिपंचमिलि, नाहिंतभएउअकाज २९३ ॥
सुरन्हसुमिरि सारदासराही ❋ देबि देव सरनागत पाही
फेरिभरतमतिकरिनिजमाया ❋ पालुबिबुधकुलकरिछलछाया
बिबुधबिनयसुनिदेबिसयानी ❋ बोलीसुर स्वारथ जडजानी
मोसनकहहु भरतमतिफेरू ❋ लोचनसहसन सूझ सुमेरू
बिधिहरिहरमायाबडिभारी ❋ सोउनभरतमतिसकैनिहारी
सोमतिमोहिकहतकरुभोरी ❋ चंदिनिकरकिचंड करचोरी
भरतहृदयसिय रामनिवासू ❋ तहँकितिमिरजहँतरनिप्रकासू
असकहिसारदगइबिधिलोका ❋ बिबुधबिकलनिसिमानहुकोका
दो० सुर स्वारथी मलीनमन, कीन्ह कुमंत्र कुठाट ॥
रचिप्रपंचमायाप्रबल, भयभ्रमअरतिउचाट २९४ ॥
करिकुचालिसोचतसुरराजू ❋ भरतहाथ सब काजअकाजू
गए जनक रघुनाथ समीपा ❋ सनमाने सबरबिकुल दीपा
समयसमाजधरमअबिरोधा ❋ बोलेतब रघुबंस पुरोधा
जनक भरत संबाद सुनाई ❋ भरतकहाउति कही सुहाई
तात राम जस आयसु देहू ❋ सोसब करइ मोरमत एहू
सुनिरघुनाथ जोरिजुगपानी ❋ बोले सत्य सरल मृदुबानी
बिद्यमान आपुन मिथिलेसू ❋ मोरकहब सबभाँति भदेसू
राउर राय रजायसु होई ❋ राउरि सपथ सही सिरसोई
दो० राम सपथ सुनि मुनिजनक, सकुचेसभा समेत ॥
सकलबिलोकतभरतमुष, बनइनऊतर देत ॥ २९५

समासकुचबसभरतनिहारी ✻ रामबंधु धरिधीरज भारी
कुसमउदेषि सनेह सँभारा ✻ बढतबिंजिमिघटजनिवारा
सोककनकलोचनमतिछोनी ✻ हरीबिमलगुनगनजगजोनी
भरत बिबेक वराह बिसाला ✻ अनायासउधरी तेहिकाला
करिप्रनाम सबकहँ करजोरे ✻ राम राउ गुर साधु निहोरे
छमबआजअतिअनुचितमोरा ✻ कहउँबदनमृदुबचनकठोरा
हिय सुमिरी सारदा सुहाई ✻ मानसतें मुषपंकज आई
बिमलबिबेकधरमनयसाली ✻ भरत भारती मंजु मराली
दो० निरषिबिबेकबिलोचनन्हि, सिथिलसनेहसमाज ॥
करिप्रनामबोलेभरत, सुमिरिसीयरघुराज ॥ २१६ ॥
प्रभुपितुमातुसुहृदगुरस्वामी ✻ पूज्यपरमहित अंतरजामी
सरल सुसाहिबसील निधानू ✻ प्रनतपाल सर्बज्ञ सुजानू
समरथ सरनागत हितकारी ✻ गुनगाहक अवगुनअघहारी
स्वामिगोसाँइहिसरिसगोसाँई ✻ मोहिसमानमइँसाइँदोहाई
प्रभुपितुबचन मोहबसपेली ✻ आएउँइहाँ समाज सकेली
जगभलपोच ऊँचअरुनीचू ✻ अमिअअमरपदमाहुरमीचू
राम रजाइ मेटि मनमाहीं ✻ देषासुना कतहुँ कोउनाहीं
सोमइँसबबिधिकीन्हढिठाई ✻ प्रभु मानी सनेह सेवकाई
दो० कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर ॥
दूषनभेभूषनसरिस, सुजसचारुचहुँओर ॥ २१७ ॥
राउरि रीति सुबानि बडाई ✻ जगतबिदितनिगमागमगाई
कूरकुटिलषलकुमतिकलंकी ✻ नीचनिसीलनिरीसनिसंकी
तेउ सुनि सरन सामुहेआए ✻ सकृतप्रनाम किएअपनाए

देषि दोष कबहुँन उरआने * सुनिगुनसाधु समाजबषानें
को साहिब सेवकहिनेवाजी * आपुसमान साजसबसाजी
निजकरतूतिनसमुझिअसपने * सेवकसकुच सोच उरअपने
सो गोसाँइ नहिंदूसर कोपी * भुजा उठाइ कहौं पनरोपी
पसु नाचतसुक पाठप्रबीना * गुनगतिनटपाठक आधीना
दो० यों सुधारि सनमानि जन, किएसाधु सिरमौर ॥
को कृपाल बिनु पालिहै, बिरदावलिबरजोर ॥२९८॥
सोकसनेह कि बाल सुभाएँ * आएउँ लाइ रजायसु बाँएँ
तबहुकृपाल हेरिनिज ओरा * सबहिंभाँतिभलमानेउमोरा
देषेउँ पाय सुमंगल मूला * जानेउँस्वामिसहजअनुकूला
बडे समाज बिलोकेउँ भागू * बडी चूकसाहिब अनुरागू
कृपा अनुग्रह अंग अघाई * कीन्हिकृपानिधिसबअधिकाई
राषा मोर दुलार गोसाईं * अपनेसील सुभाय भलाईं
नाथनिपटमइँकीन्हिढिठाई * स्वामिसमाजसकोचबिहाई
अबिनयबिनयजथारुचिबानी * छमिहिदेउअतिआरतजानी
दो० सुहृदसुजान सुसाहिबहि, बहुत कहत बडिषोरि ॥
आयसु देइअ देवअब, सबइ सुधारिअ मोरि २९९ ॥
प्रभुपद पदुम पराग दोहाई * सत्यसुकृत सुषसीवँ सुहाई
सोकरि कहौं हिये अपनेकी * रुचिजागत सोवत सपनेकी
सहजसनेह स्वामि सेवकाई * स्वारथछलफलचारि बिहाई
अग्या समन सुसाहिब सेवा * सो प्रसाद जनपावइ देवा
असकहिप्रेमबिबसभएभारी * पुलकसरीर बिलोचन बारी
प्रभुपद कमल गहेअकुलाई * समउ सनेहनसोकहि जाई

कृपा सिंधु सनमानि सुबानी * बैठाए समीप गहि पानी
भरतबिनयसुनिदेषिसुभाऊ * सिथिल सनेह सभारघुराऊ
छं० रघुराउसिथिलसनेहसाधुसमाजमुनिमिथिलाधनी ॥
मनमहँसराहतभरतभायपभगतिकीमहिमाघनी ॥
भरतहिप्रसंसतबिबुधबरषतसुमनमानसमालिनसे ॥
तुलसीबिकलसबलोगसुनिसकुचेनिसागमनालिनसे ॥
सो० देषि दुषारी दीन, दुहुँसमाज नरनारिसब ॥
मघवामहामलीन, मुएमारि मंगलचहत ॥ ३०० ॥
कपट कुचालिसींव सुरराजू * परअकाजप्रियआपनकाजू
काक समान पाकरिपुनीती * छलीमलीनकतहुँन प्रतीती
प्रथमकुमतिकरिकपटसकेला * सोउचाट सबके सिर मेला
सुरमाया सब लोग बिमोहे * रामप्रेम अतिसय नाबिछोहे
भएउचाटबसमनथिरनाहीं * छनबनरुचिछनसदनसोहाहीं
दुविध मनोगतिप्रजा दुषारी * सरितसिंधु संगमजनु बारी
दुचितकतहुँपरितोषनलहहीं * एकएक सनमरमन कहहीं
लषिहियहँसिकहकृपानिधानू * सरिस स्वानमघवानजुवानू
दो० भरतजनक मुनिगनसचिव, साधुसचेताबिहाय ॥
लागिदेवमायासबहि, जथा जोगजनपाय ॥ ३०१ ॥
कृपासिंधु लषि लोग दुषारे * निजसनेह सुरपतिछलभारे
सभाराउ गुरमहि सुरमंत्री * भरतभगति सबकैमतिजंत्री
रामहि चितवत चित्रलिषेसे * सकुचत बोलतबचन सिषेसे
भरतप्रीतिनतिबिनय बडाई * सुनतसुषद बरनतकठिनाई
जासुबिलोकिभगतिलवलेसू * प्रेममगनमुनिगनमिथिलेसू

महिमातासुकहइकिमितुलसी * भगतिसुभायसुमतिहियहुलसी
आपुछोटिमाहिमाबड़िजानी * कबिकुलकानि मानिसकुचानी
कहिनसकतिगुनरुचिअधिकाई * मतिगति बालबचनकीनाई
दो० भरतबिमलजसबिमलबिधु, सुमतिचकोरकुमारि ॥
उदितबिमलजनहृदयनभ, एकटकरहीनिहारि ३०२
भरतसुभाउनसुगमनिगमहूँ * लघुमतिचापलताकबिछमहूँ
कहतसुनतसतिभाव भरतको * सीयरामपद होइ नरत को
सुमिरतभरतहि प्रेमरामको * जेहिनसुलभतेहिसरिसबामको
देषि दयालदसा सबही की * रामसुजानिजानिजनजीकी
धरमधुरीन धीर नयनागर * सत्यसनेह सील सुषसागर
देसकाललषि समउसमाजू * नीतिप्रीति पालक रघुराजू
बोलेबचन बानिसर बससे * हितपरिनामसुनत ससिरससे
तातभरत तुम्हधरमधुरीना * लोक बेदबिद प्रेमप्रबीना
दो० करम बचनमानसबिमल, तुम्हसमान तुम्हतात ॥
गुरसमाजलघुबंधुगुन, कुसमयकिमिकहिजात ३०३
जानहु ताततरनिकुलरीती * सत्यसंध पितु कीरतिप्रीती
समउसमाजलाजगुरजनकी * उदासीनाहितअनाहितमनकी
तुम्हहिबिदितसबहीकरमरमू * आपनमोर परमहित धरमू
मोहिसबभाँतिभरोसतुम्हारा * तदपिकहउँअवँसरअनुसारा
तात तात बिनुबात हमारी * केवलगुर कुलकृपा सँभारी
नतरुप्रजा पुरजन परिवारू * हमहिसहितसब होतषुआरू
जौंबिनुअवँसरअँथवादिनेसू * जगकोहिकहहु न होइकलेसू
तसउतपाततात बिधिकीन्हा * मुनिमिथिलेसराषि सबलीन्हा

दो० राजकाज सब लाजपति, धरम धरनि धनधाम ॥
गुरप्रभाउपालिहिसबहि, भलहोइहिपरिनाम ३०४ ॥

सहितसमाज तुम्हारहमारा ❀ घरबन गुरप्रसाद रषवारा
मातुपिता गुरस्वामिनिदेसू ❀ सकलधरम धरनी धरसेसू
सोतुम्हकरहु करावहु मोहू ❀ ताततरनिकुल पालक होहू
साधनएक सकलसिधिदेनी ❀ कीरति सुगति भूतमयबेनी
सोबिचारिसहि संकट भारी ❀ करहु प्रजा परिवारसुषारी
बाँटीबिपतिसबहिमोहिभाई ❀ तुम्हहिअवधिभरिबडिकठिनाई
जानितुम्हहिमृदुकहउँकठोरा ❀ कुसमयतातनअनुचितमोरा
होहिंकुठाँयँ सुबंधु सहाये ❀ ओढिअहिहाथअसनिहुकेघाये

दो० सेवककरपदनयनसे, मुषसो साहेब होइ ॥
तुलसीप्रीतिकिरीतिसुनि, सुकबिसराहहिंसोइ ३०५

सभासकलसुनि रघुबरबानी ❀ प्रेमपयोधिअमिअजनुसानी
सिथिलसमाजसनेहसमाधी ❀ देषिदसा चुपसारद साधी
भरतहि भएउ परम संतोषू ❀ सनमुषस्वामि बिमुष दुषदोषू
मुषप्रसन्न मनमिटा बिषादू ❀ भाजनु गूँगेहि गिराप्रसादू
कीन्हसप्रेम प्रनाम बहोरी ❀ बोलेपानि पंकरुह जोरी
नाथभएउ सुषसाथ गएको ❀ लहेउँलाहुजगजनमभएको
अबकृपाल जसआयसु होई ❀ करउँ सीसधरि सादर सोई
सो अवलंब देउमोहि देई ❀ अवधिपारपावउँ जेहिसेई

दो० देव देव अभिषेकहित, गुर अनुसासन पाइ ॥
आनेउँसबतीरथसलिल, तेहिकहँकाहरजाइ ३०६ ॥

एकमनोरथ बड मनमाहीं ❀ सभयसकोचजातकहिनाहीं

कहहु तात प्रभु आयसुपाई * बोले बानि सनेह सुहाई
चित्रकूटमुनिथल तीरथबन * षगमृगसरिसरनिर्झरगिरिगन
प्रभुपदअंकितअबनिबिसेषी * आयसुहोइत आवउँ देषी
अवसिअत्रिआयसुसिरधरहू * तातबिगतभय काननचरहू
मुनि प्रसादबन मंगलदाता * पावन परम सुहावन भ्राता
रिषिनायक जहँआयसुदेहीं * राषेउ तीरथ जलथल तेहीं
सुनिप्रभुबचनभरतसुषपावा * मुनिपदकमलमुदितसिरनावा
दो० भरतराम संबादसुनि, सकलसुमंगलमूल ॥
सुरस्वारथीसराहिकुल, बरषतसुरतरुफूल ॥ ३०७ ॥
धन्य भरत जयरामगोसाईं * कहत देवहरषत बरिआईं
मुनिमिथिलेससभासबकाहू * भरतबचनसुनिभएउउछाहू
भरत राम गुनग्राम सनेहू * पुलकि प्रसंसतराउ बिदेहू
सेवकस्वामिसुभाउसुहावन * नेमप्रेम अतिपावन पावन
मति अनुसारसराहन लागे * सचिवसभासद सबअनुरागे
सुनिसुनि रामभरत संबादू * दुहुँसमाजहिय हरषबिषादू
राममातु दुषसुषसम जानी * कहिगुन दोषप्रबोधी रानी
एककरहिं रघुबीर बडाई * एक सराहत भरत भलाई
दो० अत्रि कहेउ तबभरत सन, सैल समीप सुकूप ॥
राषिअतीरथतोयतहँ, पावन अमल अनूप ॥ ३०८ ॥
भरत अत्रि अनुसासनपाई * जल भाजन सबदिएचलाई
सानुज आपुअत्रिमुनिसाधू * सहित गएजहँ कूपअगाधू
पावन पाथ पुन्य थल राषा * प्रमुदितप्रेमअत्रिअसभाषा
तात अनादिसिद्ध थल एहू * लोपेउकालबिदितनहिंकेहू
तब सेवकन्ह सरसथल देषा * कीन्हसुजलहितकूपबिसेषा

बिधिबसभएउबिस्वउपकारू ❋ सुगमअगमअतिधरमबिचारू
भरतकूपअबकहिहहिंलोगा ❋ अतिपावनतीरथजलजोगा
प्रेमसनेम निमज्जतप्रानी ❋ होइहहिंबिमलकरममनबानी
दो० कहत कूप महिमा सकल, गएजहाँ रघुराउ ॥
अत्रिसुनाएउ रघुबरहि, तीरथपुन्यप्रभाउ ॥ ३०९ ॥
कहत धरम इतिहाससप्रीती ❋ भएउभोरनिसिसोसुषबीती
नित्यनिबाहिभरतदोउभाई ❋ राम अत्रिगुर आयसु पाई
सहितसमाज साजसबसादें ❋ चले रामबन अटनपयादें
कोमलचरनचलतबिनुपनहीं ❋ भइमृदुभूमिसकुचिमनमनहीं
कुस कंटक काँकरी कुराईं ❋ कटुक कठोरकुबस्तु दुराईं
महिमंजुलमृदुमारग कीन्हे ❋ बहतसमीरत्रिबिध सुषलीन्हे
सुमनबरषिसुरघनकरिछाँहीं ❋ बिटपफूलिफलत्रिनमृदुलाहीं
मृगबिलोकिषगबोलिसुबानी ❋ सेवहिंसकलरामप्रियजानी
दो० सुलभ सिद्धिसब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात ॥
रामप्रानप्रियभरतकहँ, यहनहोइबडिबात ॥ ३१० ॥
एहिबिधिभरतफिरतबनमाहीं ❋ नेमप्रेमलषि मुनिसकुचाहीं
पुन्यजलास्रय भूमिबिभागा ❋ षगमृगतरुत्रिनगिरिबनबागा
चारु बिचित्र पबित्र बिसेषी ❋ बूझत भरत दिब्य सब देषी
सुनिमनमुदितकहतरिषिराऊ ❋ हेतुनाम गुन पुन्य प्रभाऊ
कतहुँनिमज्जनकतहुँप्रनामा ❋ कतहुँबिलोकतमनअभिरामा
कतहुँबैठि मुनिआयसु पाई ❋ सुमिरतसीयसहितदोउभाई
देषि सुभाव सनेह सुसेवा ❋ देहिंअसीस मुदित बनदेवा
फिरहिंगएँदिन पहरअढाई ❋ प्रभुपदकमलबिलोकहिंआई
दो० देषेथल तीरथ सकल, भरत पाँचदिन माँझ ॥
कहतसुनतहरिहरसुजस, गएउदिवसभइसाँझ॥ ३११ ॥

भोरन्हाइ सब जुरा समाजू * भरत भूमि सुर तेरहु तिराजू
भलदिन आज जानि मन माहीं * रामकृपाल कहत सकुचाहीं
गुरनृप भरत सभा अवलोकी * सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी
सील सराहि सभा सब सोची * कहुँ न राम सम स्वामि सकोची
भरत सुजान राम रुष देषी * उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी
करि दंडवत कहत करजोरी * राषी नाथ सकल रुचि मोरी
मोहि लगि सहे उ सबहिं संतापू * बहुत भांति दुष पावा आपू
अब गोसाइँ मोहि देहु रजाई * सेवउँ अवध अवधि भरि जाई
दो० जेहि उपाय पुनि पाय जन, देषइ दीन दयाल ॥
सो सिष देइअ अवधि लगि, कोसलपाल कृपाल ॥ ३१२ ॥
पुरजन परिजन प्रजा गोसाँई * सब सुचि सरस सनेह सगाई
राउर बदि भले भव दुषदाहू * प्रभु बिनु बादि परमपद लाहू
स्वामि सुजान जान सब ही की * रुचि लालसा रहनि जन जी की
प्रनतपाल पालिहि सब काहू * देव दुहूँ दिसि ओर निबाहू
अस मोहि सब बिधि भूरि भरोसो * किएँ बिचार न सोच फरोसो
आरति मोरि नाथ करि छोहू * दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू
यह बड़ दोष दूरि करि स्वामी * तजि सकोच सिषअ अनुगामी
भरत बिनय सुनि सबहि प्रसंसी * षीर नीर बिबरन गति हंसी
दो० दीनबंधु सुनि बंधु के, बचन दीन छल हीन ॥
देस काल अवँसर सरिस, बोले राम प्रबीन ॥ ३१३ ॥
तात तुम्हारि मोरि परिजन की * चिंता गुरहि नृपहि घर बन की
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू * हमहि तुम्हहि सपनेहु न कलेसू
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ * स्वारथ सुजस धरम परमारथ
पितु आयसु पालिअ दुहुँ भाई * लोक बेद भल भूप भलाई
गुर पितु मातु स्वामि सिष पालें * चलेहु कुमग पग परे न षालें

असविचारिसबसोच बिहाई * पालहुअवधअवधिभरिजाई
देसकोस पुरजन परिवारू * गुरपद रजहिलागछरभारू
तुम्हमुनिमातुसचिवसिषमानी * पालेहु पुहुमि प्रजारजधानी
दो० मुषिआ मुषसों चाहिए, षान पान कहँएक ॥
पालइ पोषइसकलअँग, तुलसीसहित बिबेक ॥ ३१४ ॥
राज धरम सरबस एतनोई * जिमिमनमाहँ मनोरथगोई
बंधुप्रबोध कीन्हबहु भाँती * बिनुअधारमनतोष नसाँती
भरतसीलगुरु सचिवसमाजू * सकुचसनेह बिबस रघुराजू
प्रभुकरि कृपा पाँवरीदीन्ही * सादर भरतसीसधरिलीन्ही
चरनपीठ करुना निधानके * जनुजुगजामिकप्रजाप्रानके
संपुट भरत सनेह रतनके * आषरजुगजनुजीव जतनके
कुलकपाटकरकुसलकरमके * बिमलनयन सेवा सुधरमके
भरत मुदितअवलंब लहेतें * असमुष जससियराम रहेंते
दो० माँगेउबिदा प्रनाम करि, राम लिए उरलाइ ॥
लोग उचाटे अमरपति, कुटिलकुअवँसरपाइ ॥ ३१५ ॥
सोकुचालिसबकहँ भइनीकी * अवधिआससवजीवनजीकी
नतरुलषनसियरामबियोगा * हहरिमरत सबलोग कुरोगा
राम कृपा अवरेब सुधारी * बिबुधधारिभइगुनदगोहारी
भेंटतभुजभरि भाइभरतसों * रामप्रेमरस कहि न परतसो
तनमनवचनउमँगअनुरागा * धीरधुरंधर धीरज त्यागा
बारिज लोचन मोचत बारी * देषिदसासुर सभा दुषारी
मुनिगनगुरधुरधीर जनकसे * ग्यानअनलमनकसेकनकसे
जे बिरंचि निरलेप उपाये * पदुमपत्रजिमिजगजलजाये

दो० तेउबिलोकि रघुबर भरत, प्रीतिअनूप अपार ॥
भएमगनमनतनबचन, सहितबिरागबिचार ॥३१६॥
जहाँजनकगुरगतिमतिभोरी * प्राकृतप्रीतिकहतबड़ि षोरी
बरनत रघुबर भरत बियोगू * सुनिकठोरकबिजानिहिलोगू
सोसकोच रसअकथसुबानी * सम उसनेहसुमिरिसकुचानी
भेंटिभरत रघुबर समुझाए * पुनिरिपुदवनहरषिहियलाए
सेवकसचिव भरतरुष पाई * निजनिज काजलगेसबजाई
सुनिदारुन दुष दुहूँसमाजा * लगेचलनके साजन साजा
प्रभुपदपदुम बंदिदोउ भाई * चलेसीस धरि राम रजाई
मुनितापस बन देव निहोरी * सबसनमानि बहोरि बहोरी
दो० लषनहि भेंटिप्रनामकरि, सिरधरिसियपद धूरि ।
चलेसप्रेम असीससुनि, सकलसुमंगल मूरि ॥ ३१७॥
सानुजराम नृपहि सिरनाई * कीन्हबहुतबिधिबिनयबडाई
देव दयाबस बडदुष पाएउ * सहितसमाजकाननहिंआएउ
पुरपगुधारिअ देइ असीसा * कीन्हधीरधरि गवन महीसा
मुनिमहिदेव साधु सनमाने * बिदाकिए हरिहर समजाने
सासु समीप गएदोउ भाई * फिरे बँदिपग आसिष पाई
कौसिक बामदेव जाबाली * परिजनपुरजनसचिवसुचाली
जथाजोगकरिबिनयप्रनामा * बिदाकिए सबसानुज रामा
नारिपुरुष लघुमध्य बडेरे * सबसनमानि कृपानिधिफेरे
दो० भरत मातु पदबंदि प्रभु सुचिसनेह मिलिभेंटि ।
बिदाकीन्हसजिपालकी, सकुचसोच सबमेटि॥३१८॥
परिजनमातुपिताहिमिलिसीता * फिरीप्रानप्रिय प्रेम पुनीता
करि प्रनाम भेंटीसब सासू * प्रीतिकहतकबिहियनहुलासू

सुनिसिषअभिमतआसिषपाई ❋ रहीसीय दुहुँप्रीति समाई
रघुपति पटु पालकी मगाईं ❋ करिप्रबोध सबमातु चढाई
बार २ हिलिमिलि दुहुँभाई ❋ सम सनेह जननी पहुँचाई
साजिबाजिगजबाहननाना ❋ भूपभरत दलकीन्ह पयाना
हृदय रामसिय लषनसमेता ❋ चलेजाहिं सब लोग अचेता
बसह बाजिगजपसुहियहारें ❋ चलेजाहिं परबस मन मारें

दो० गुरगुरतिअपद बंदिप्रभु, सीता लषन समेत ॥
फिरेहरष बिसमयसहित, आएपरननिकेत ॥३१९॥

बिदाकीन्हसनमानिनिषादू ❋ चलेउहृदयबडबिरह बिषादू
कोलकिरातभिल्लबनचारी ❋ फेरेफिरे जोहारि जोहारी
प्रभुसियलषनबैठिबटछाहीं ❋ प्रियपरिजनबियोगबिलषाहीं
भरत सनेह सुभाव सुबानी ❋ प्रिआअनुजसनकहतबषानी
प्रीतिप्रतीतिबचनमनकरनी ❋ श्रीमुष राम प्रेमबस बरनी
तेहिअवँसरषगमृगजलमीना ❋ चित्रकूट चर अचर मलीना
बिबुधबिलोकिदसारघुबरकी ❋ बरषिसुमनकहिगतिघर२की
प्रभुप्रनामकरिदीन्हभरोसो ❋ चलेमुदित मन डरनषरोसो

दो० सानुजसीय समेत प्रभु, राजत परन कुटीर ।
भगतिज्ञानबैरागजनु, सोहतधरेंसरीर ॥ ३२० ॥

मुनिमहिसुरगुरभरतभुआलू ❋ रामबिरह सबसाज बिहालू
प्रभुगुनग्रामगुनतमनमाहीं ❋ सबचुप चाप चले मग जाहीं
जमुनाउतरिपारसब भयऊ ❋ सोबासरबिनु भोजन गयऊ
उतरि देवसरि दूसर बासू ❋ रामसषा सबकीन्ह सुपासू
सई उतरि गोमती नहाए ❋ चौथे दिवस अवधपुर आए
जनक रहे पुर बासर चारी ❋ राजकाज सबसाज सँभारी

सौंपि सचिवगुरभरतहिराजू * तेरहुति चले साजिसबसाजू
नगरनारिनर गुरसिषमानी * बसे सुषेन राम रजधानी
दो० राम दरस लगि लोग सब, करत नेम उपबास ॥
तजितजिभूषनभोगसुष, जिअतअवधिकीआस ॥ ३२१
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे * निज२ काजपाइ सिषओधे
पुनिसिषदीन्हिबोलिलघुभाई * सौंपी सकल मातु सेवकाई
भूसुर बोलि भरत कर जोरे * करिप्रनाम बरबिनयनिहोरे
ऊँच नीच कारज भल पोचू * आयसुदेव न करब सकोचू
परिजन पुरजनप्रजाबोलाए * समाधान करि सुबसबसाये
सानुजगे गुर गेह बहोरी * करिदंडवत कहत करजोरी
आयसु होइतौरहउँ सनेमा * बोलेमुनितनपुलकि सप्रेमा
समुझबकहबकरब तुम्हजोई * धरम सारजग होइहि सोई
दो० मुनिसिषपाइ असीसबडि, गनकबोलि दिनसाधि ।
सिंघासनप्रभु पादुका, बैठारे निरुपाधि ॥ ३२२ ॥
राममातु गुरपद सिरनाई * प्रभुपद पीठ रजायसु पाई
नंदिगाँव करि परनकुटीरा * कीन्हनिवास धरमधुर धीरा
जटाजूटसिर मुनिपटधारी * महिषनिकुससाथरी सँवारी
असनबसनबासन ब्रतनेमा * करतकठिनरिषिधरमसप्रेमा
भूषन बसन भोग सुषभूरी * मनतनबचन तजे तिनतूरी
अवधराज सुरराज सिहाई * दसरथधनसुनि धनदलजाई
तेहिपुरबसत भरतबिनुरागा * चंचरीकजिमि चंपक बागा
रमा बिलास राम अनुरागी * तजतबमनजिमिजनबडभागी
दो० रामप्रेम भाजन भरत, बडेनएहि करतूति ॥
चातकहंससराहिअत, टेकबिबेक बिभूति ॥ ३२३ ॥
देहँ दिनहु दिनदूबरि होई * घटनतेजबल मुषछबिसोई

नित नवराम प्रेमपन पीना ❋ बढतधरमदलमननमलीना
जिमिजलनिघटतसरदप्रकासे ❋ बिलसतबेतसबनज बिकासे
समदमसंजमनियम उपासा ❋ नषतभरतहियबिमलअकासा
ध्रुवबिस्वासअवधि राकासी ❋ स्वामिसुरतिसुरबीथि बिकासी
रामप्रेम बिधुअचलअदोषा ❋ सहितसमाजसोहनित चोषा
भरतरहनिसमुझनि करतूती ❋ भगतिबिरतिगुन बिमलबिभूती
बरनतसकलसुकबि सकुचाहीं ❋ सेस गनेस गिरागम नाहीं
दो० नित पूजतप्रभु पाँवरी, प्रीति न हृदय समाति ॥
माँगिमाँगिआयसुकरत, राजकाजबहुभाँति ॥३२४॥
पुलकगातहिअसियरघुबीरू ❋ जीहनाम जप लोचन नीरू
लषनरामसियकाननबसहीं ❋ भरतभवनबसितपतनकसहीं
दोउदिसिसमुझिकहतसबलोगू ❋ सबबिधिभरत सराहनजोगू
सुनिब्रतनेम साधु सकुचाहीं ❋ देषिदसा मुनिराज लजाहीं
परम पुनीत भरत आचरनू ❋ मधुरमंजुमुद मंगल करनू
हरनकठिनकलिकलुषकलेसू ❋ महामोहनिसिदलन दिनेसू
पाप पुंज कुंजर मृगराजू ❋ समनसकल संताप समाजू
जनरंजन भंजन भव भारू ❋ राम सनेह सुधाकर सारू
छं० सियरामप्रेमपियूषपूरनहोत जनमनभरतको ॥
मुनिमनअगमजमनियमसमदमबिषमब्रतआचरतको
दुषदाहदारिददंभदूषनसुजसमिसअषहरतको ॥
कलिकालतुलसीसेसठन्हिहठिरामसनमुषकरतको ॥
सो० भरतचरितकरिनेम तुलसी जेसादरसुनहिं॥ मा० पा०१६
सीयरामपदप्रेम अवसिहोइ भवरसबिरति॥३२५॥

श्लोक संख्या २६८५

यह बिमल बैराग्य संदीपनी द्वितीय सोपान है इसकोइति श्रीगुसाईजीने गुप्तरक्खीहै

❋ श्रीः ❋

अथ रामायण आरण्यकाण्ड

श्री जानकी वल्लभो विजयतेराम

श्रीगणेशायनमः

श्लोक——मूलंधर्म्मतरोर्विवेकजलधेपूर्णेन्दुमानंददं ॥ वैराग्यांबुजभा स्करंह्यघघनंध्वांतापहंतापहं ॥ मोहांभोधरपूगपाटनविधौस्वःसंभवंशंकर बन्देब्रह्मकुलं कलंकसमनंश्रीरामभूपप्रियं ॥ १ ॥ सांद्रानंदपयोदशोभ गतनुपीतांबरंसुंदरं । पाणौवाणसरासनंकटिलसत्तूणीरभारंवरं ॥ राजी वायतलोचनंधृतजटाजूटेनसंशोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतंपथिगतं रामा भिरामंभजे ॥ २ ॥

सो॰ उमारामगुनगूढ़, पंडित मुनिपावहिंबिरति ॥
पावहिं मोहाबिमूढ़, जेहरिबिमुषन धर्म्मरति ॥

पुरनरभरत प्रीति मैं गाई ❀ मतिअनुरूप अनूप सुहाई
अबप्रभुचरितसुनहुअतिपावन ❀ करतजेबन सुरनर मुनिभावन
एकबार चुनि कुसुम सुहाए ❀ निजकर भूषनराम बनाए
सीतहि पहिराए प्रभुसादर ❀ बैठेफटिक सिलापर सुंदर
सुरपति सुतधरि बायसबेषा ❀ सठचाहत रघुपति बलदेषा
जिमिपिपीलिकासागरथाहा ❀ महामंदमति पावन चाहा
सीताचरन चोंच हतिभागा ❀ मूढ़मंदमति कारन कागा
चलारुधिर रघुनायक जाना ❀ सींकधनुष सायक संधाना

दो॰ अति कृपालरघुनायक, सदा दीन पर नेह ॥
तासन आइ कीन्ह छल, मूरष अवगुन गेह ॥ १ ॥

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा ❋ चलाभाजिबायस भयपावा
धरिनिजरूपगए उपितुपाहीं ❋ रामबिमुष रापातेहि नाहीं
भानिरासउपजी मन त्रासा ❋ जथाचक्र भयरिषि दुर्बासा
ब्रह्मधाम सिवपुर सबलोका ❋ फिराश्रमितब्याकुलभयसोका
काहू बैठनकहा न ओही ❋ रापिकोसकै रामकरद्रोही
मातुमृत्युपितुसमन समाना ❋ सुधाहोइबिषसुनुहरि जाना
मित्रकरै सत रिपुकै करनी ❋ ताकहँ बिबुधनदी बैतरनी
सबजगताहिअनलहुतेताता ❋ जो रघुबीरबिमुष सुनुभ्राता
नारददेषा बिकल जयंता ❋ लागिदया कोमलचितसंता
पठवा तुरत रामपहिं ताही ❋ कहेसिपुकारिप्रनतहितपाही
आतुर सभयगहेसिपदजाई ❋ त्राहित्राहि दयाल रघुराई
अतुलितबलअतुलितप्रभुताई ❋ मैं मतिमंद जानिनाहि पाई
निजकृतकर्म्मजनितफलपायउँ ❋ अबप्रभुपाहिसरनताकिआयउँ
सुनिकृपालअतिआरतबानी ❋ एकनयन करितजा भवानी

सो० कीन्हमोहबसद्रोह, जद्यपितेहिकरबधउचित ॥
प्रभुछाड़ेउकरिछोह, को कृपालरघुबीरसम ॥ २ ॥

रघुपति चित्रकूट बसिनाना ❋ चरितकिएश्रुतिसुधासमाना
बहुरिरामअसमनअनुमाना ❋ होइहिभीरसबहिंमोहिजाना
सकलमुनिनसनबिदाकराई ❋ सीता सहित चले दोभाई
अत्रिकेआश्रमजबप्रभुगयऊ ❋ सुनतमहामुनिहरषितभयऊ
पुलकितगातअत्रिउठिधाए ❋ देषिराम आतुर चलिआए
करत दंडवत मुनि उर लाए ❋ प्रेमबारि दोजन अन्हवाए
देषि राम छबिनयन जुड़ाने ❋ सादरनिज आश्रमतबआने

करिपूजा कहि बचन सुहाए * दियेमूल फलप्रभुमनभाए

दो० प्रभुआसनआसीन, भरिलोचनसोभानिरषि ॥
मुनिवर परमप्रबीन, जोरिपानिअस्तुतिकरत ॥ ३ ॥

छं० नमामिभक्त वत्सलं । कृपालशील कोमलं ॥
भजामिते पदांबुजं । अकामिनांस्वधामदं ॥
निकामस्याम सुंदरं । भवांबुनाथ मंदरं ॥
प्रफुल्लकंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥
प्रलंब बाहु बिक्रमं । प्रभो प्रमेय बैभवं ॥
निषंगचाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥
दिनेश बंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥
मुनिंद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ॥
मनोज बैरि बंदितं । अजादि देव सेवितं ॥
बिशुद्ध बोध बिग्रहं । समस्त दूषणापहं ॥
नमामि इंदिरापतिं । सुखाकरं सतांगतिं ॥
भजेससक्ति सानुजं । सचीपति प्रियानुजं ॥
त्वदांघ्रि मूलयेनराः । भजंतिहीन मत्सराः ॥
पतंतिनो भवार्णवे । बितर्क बीच संकुले ॥
बिविक्तबासि नस्सदा । भजंति मुक्तये मुदा ॥
निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांतिते गतिस्वकं ॥
त्वमेक मद्भुतं प्रभुं । निरीह मीश्वरं बिभुं ॥
जगद्गुरुं चशाश्वतं । तुरीय मेव केवलं ॥
भजामिभाववल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥
स्वभक्तकल्प पादपं । समं सुसेव्य मन्वहं ॥

अनूप रूप भूपतिं । नतोहं मूर्विजा पतिं ॥
प्रसीद मेनमामिते । पदाब्ज भक्ति देहिमे ॥
पठंति ये स्तवंइदं । नरादरेण ते पदं ॥
ब्रजंति नात्र संशयं । त्वदीय भक्तिसंजुताः ॥

दो० बिनती करि मुनिनाइसिर, कहकरजोरि बहोरि ॥
चरण सरोरुह नाथ जनि, कबहुँतजैमतिमोरि ॥४॥

अनसूया के पद गहि सीता * मिलीबहोरिसुसील बिनीता
रिषिपतिनीमनसुषअधिकाई * आसिषदेइ निकटबैठाई
दिव्य बसन भूषण पहिराये * जे नितनूतनअमलसुहाए
कहिरिषि बधूसरस मृदुबानी * नारिधर्मकछुब्याजबषानी
मातुपिता भ्राता हितकारी * मितप्रदसबसुनु राजकुमारी
अमितदानि भर्ता बयदेही * अधमसोनारिजो सेवनतेही
धीरज धर्म्म मित्र अरुनारी * आपदकालपरिषिअहिचारी
बृद्धरोग बस जडधन हीना * अंधबधिरक्रोधीअतिदीना
ऐसेहुपतिकर किये अपमाना * नारिपावजमपुरदुषनाना
एकै धर्म्म एक ब्रत नेमा * कायबचनमनपतिपदप्रेमा
जगपतिब्रताचारिबिधि अहहीं * बेदपुरान संत सब कहहीं
उत्तम के असबस मनमाहीं * सपनेहुआनपुरुषजगनाहीं
मध्यम परपति देषै कैसे * भ्राता पितापुत्र निज जैसे
धर्मबिचारि समुझि कुलरहई * सोनिकिष्ट त्रियस्तुतिअसकहई
बिनु अवसर भयते रह जोई * जानेहुअधमनारिजगसोई
पति बंचक परपति रतिकरई * रौरवनरक कल्पसत परई
छनसुषलागि जनमसतकोटी * दुषनसमुझतेहिसम कोषोटी

बिनु श्रमनारि परमगति लहई * पतिब्रतधर्म्म छाडिछलगहई
पति प्रतिकूलजन्म जहँजाई * बिधवाहोइ पाइ तरुनाई

सो० सहज अपावनिनारि, पति सेवतसुभगतिलहइ ॥
जसगावत श्रुतिचारि, अजहुँतुलसिकाहरिहिप्रिय ॥
सुनु सीतातव नाम, सुमिरिनारि पतिब्रतकरहिं ॥
तोहिप्रान प्रियराम, कहिउँकथासंसारहित ॥ ५ ॥

सुनि जानकी परमसुषपावा * सादर तासुचरनासिरनावा
तबमुनिसनकहकृपानिधाना * आयसुहोइजाउँबनआना
संतत मोपरकृपा करेहू * सेवकजानितजेहुजनिनेहू
धर्म्म धुरंधर प्रभु कै बानी * सुनिसप्रेम बोलेमुनिज्ञानी
जासुकृपा अजासिवसनकादी * चहतसकलपरमारथवादी
ते तुम्हराम अकाम पियारे * दीनबंधुमृदु बचन उचारे
अबजानी मैं श्री चतुराई * भजीतुम्हहिसबदेहुँबिहाई
जेहिसमानअतिसयनहिंकोई * ताकरसील कसनअसहोई
केहिबिधिकहौंजाउअबस्वामी * कहहुनाथतुम्हअंतरजामी
असकहिप्रभुबिलोकिमुनिधीरा * लोचनजलबहपुलकसरीरा

छं० तनपुलक निर्भरप्रेमपूरन नयन मुषपंकजदिए ।
मनज्ञानगुनगोतीत प्रभु मैं दीष जपतपकाकिए ॥
जपजोग धर्म्म समूह ते नरभगति अनुपमपावई ।
रघुबीर चरित पुनीत निसिदिन दासतुलसीगावई ॥

दो० कलिमल समन दमनमन, रामसुजससुषमूल ।
सादर सुनहिं जेतिन्हपर, राम रहहिं अनुकूल ॥

सो॰ कठिनकालमलकोस, धर्म्मनज्ञाननजोगजप ।
परिहरि सकलभरोस, रामहि भजहिंतेचतुरनर ॥६॥

मुनिपदकमलनाइकरिसीसा ❋ चलेवनहि सुरनर मुनिईसा
आगेराम अनुजपुनि पाछे ❋ मुनिवरवेष वने अतिकाछे
उभय बीच श्रीसोहइ कैसी ❋ ब्रह्मजीव बिच माया जैसी
सरिताबनगिरिअवघटघाटा ❋ पतिपहिचानिदेहिं वरबाटा
जहँ जहँ जाहिंदेव रघुराया ❋ करहिं मेघतहतहँनभ छाया
मिलाअसुरबिराधमगजाता ❋ आवतहीं रघुवीर निपाता
तुरतहिं रुचिर रूपतेहिं पावा ❋ देषिदुषी निज धामपठावा
पुनिआएजहँ मुनिसरभंगा ❋ सुंदरअनुज जानकी संगा

दो॰ देषिराममुषपंकज, मुनिवरलोचन भृंग ॥
सादरपानकरतआति, धन्यजन्ममसरभंग ॥ १ ॥

कहमुनिसुनुरघुवीर कृपाला ❋ संकर मानसराज मराला
जातरहेउँ बिरंचिके धामा ❋ सुनेउँश्रवनवन अहहिंरामा
चितवत पंथ रहेउँ दिनराती ❋ अवप्रभु देषिजुड़ानी छाती
नाथ सकल साधन मैंहीना ❋ कीन्ही कृपाजानिजनदीना
सोकछु देवन मोहि निहोरा ❋ निजपनरापेहुजनमनचोरा
तबलगिरहहुदीन हितलागी ❋ जबलगिमिलौंतुम्हहिंतनुत्यागी
जोगजग्यजपतपजतकीन्हा ❋ प्रभुकहँदेइ भगतिवरलीन्हा
एहिबिधिसररचिमुनिसरभंगा ❋ बैठे हृदय छाडि सब संगा

दो॰ सीताअनुज समेतप्रभु, नीलजलदतनस्याम ।
ममहिय बसहु निरंतर, सगुनरूप श्रीराम ॥ २ ॥

असकहिजोगअगिनितनजारा ❋ रामकृपा वैकुंठ सिधारा

तातेंमुनिहरि लीनन भयऊ * प्रथमहिंभेदभगति बरलयऊ
रिषिनिकायमुनिवर गतिदेषी * सुषीभयेनिज हृदय बिसेषी
अस्तुतिकरहिंसकलमुनिबृंदा * जयतिप्रनतहितकरुनाकंदा
पुनिरघुनाथ चले बन आगे * मुनिवरबृंद बिपुल सँगलागे
अस्थिसमूह देषि रघुराया * पूछीमुनिन्हलागिअतिदाया
जानतहूं पूछि अकसस्वामी * सबदरसी तुम्हअंतर जामी
निसिचरनिकर सकलमुनिषाए * सुनि रघुबीर नयन जलछाए

दो० निसिचरहीनकरौंमहि, भुजउठाइ पन कीन्ह ॥
सकलमुनिन्हकेआश्रमन्हि, जाइजाइ सुषदीन्ह ॥ ३ ॥

मुनिअगस्तिकरसिष्यसुजाना * नाम सुतीछनरति भगवाना
मनक्रमबचनरामपद सेवक * सपनेहु आनभरोसन देवक
प्रभुआगवनश्रवनसुनिपावा * करत मनोरथ आतुर धावा
हेबिधि दीनबंधु रघुराया * मोसे सठपर करिहहिं दाया
सहितअनुजमोहिरामगोसाईं * मिलिहहिंनिजसेवककीनाईं
मोरे जिय भरोसदृढ़ नाहीं * भगतिबिरतिनज्ञानमन माहीं
नहिं सतसंगजोगजपजागा * नहिंदृढ़चरनकमलअनुरागा
एकबानि करुना निधानकी * सोप्रियजाकेगतिनआनकी
होइहैंसुफलआजममलोचन * देषिबदनपंकज भवमोचन
निर्भर प्रेममगन मुनिज्ञानी * कहि नजाइसो दसाभवानी
दिसिअरुबिदिसिपंथनहिंसूझा * को मैं चलेउँकहाँ नहिंबूझा
कबहुँक फिरिपाछे पुनिजाईं * कबहुँक नृत्यकरइ गुनगाईं
अबिरलप्रेम भगतिमुनिपाई * प्रभुदेषैं तरु ओट लुकाई
अतिसै प्रीति देषि रघुबीरा * प्रगटे हृदय हरनभवभीरा

मुनिमगमाँझअचलहोइबैसा ❀ पुलकसरीर पनसफलजैसा
तबरघुनाथनिकटचलिआए ❀ देषिदसानिजजन मनभाए
मुनिहिरामबहुभाँतिजगावा ❀ जागनध्यानजनितसुषपावा
भूप रूप तब राम दुरावा ❀ हृदय चतुर्भुजरूप देषावा
मुनिअकुलाइ उठातबकैसें ❀ बिकलहीनमनिफनिवरजैसें
आगे देषि राम तन स्यामा ❀ सीताअनुजसहितसुषधामा
परेउलकुटइवचरनन्हिलागी ❀ प्रेममगन मुनिवरबडभागी
भुजबिसाल गहिलिए उठाई ❀ परम प्रीति राषे उर लाई
मुनिहिमिलतअससोहकृपाला ❀ कनकतरुहिजनुभेंटतमाला
रामबदनबिलोक मुनिठाढा ❀ मानहुँचित्रमाँझलिषिकाढा

दो० तबमुनिहृदय धीरधरि, गहिपद बारहिं बार ।
निज आश्रमप्रभुआनिकरि, पूजाविविधिप्रकार ॥४॥

कहमुनिप्रभुसुनुबिनतीमोरी ❀ अस्तुतिकरौंकवन बिधितोरी
महिमाअमितमोरिमतिथोरी ❀ रबिसन्मुष षद्योत अँजोरी
स्याम तामरस दाम सरीरं ❀ जटामुकुट परिधनमुनिचीरं
पानि चाप सरकटि तू नीरं ❀ नौमि निरंतर श्री रघुबीरं
मोहबिपिनघनदहनकृसानुः ❀ संतसरोरुह कानन भानुः
निसिचरकरिबरूथमृगराजः ❀ त्रातु सदानो भवषगबाजः
अरुन नयन राजीव सुबेसं ❀ सीतानयन चकोर निसेसं
हर हृदिमानस राज मरालं ❀ नौमिरामउर बाहु बिसालं
संसय सर्प ग्रसन उरगादः ❀ समनसुकर्कसतर्क बिषादः
भय भंजन रंजन सुर जूथः ❀ त्रातु सदानो कृपा बरूथः
निर्गुन सगुन बिषम समरूपं ❀ ज्ञानागिरा गोतीत मनूपं

अमलमखिल मनबद्यम पारं ❀ नौमिरामभंजन महिभारं
भक्त कल्प पादप आरामः ❀ तर्ज्जनक्रोध लोभ मदकामः
अतिनागरभव सागर सेतुः ❀ त्रातुसदादिनकरकुलकेतुः
अतुलितभुजप्रताप बलधामः ❀ कलिमलविपुलविभंजननामः
धर्मवर्म नर्मद गुन ग्रामः ❀ संतत संतनोतुमम रामः
जदपिबिरजव्यापक अबिनासी ❀ सबके हृदय निरंतरबासी
तदपिअनुज श्रीसहितखरारी ❀ बसतुमनसिमम काननचारी
जे जानहिं तें जानहुँ स्वामी ❀ सगुनअगुन उरअंतर जामी
जोकोसलपति राजिवनयना ❀ करौसोरामहृदय ममअयना
असअभिमानजाइ जनिभोरे ❀ मैं सेवक रघुपतिपतिमोरे
सुनिमुनिबचन राम मनभाए ❀ बहुरिहरषिमुनिवर उरलाए
परम प्रसन्न जानुमुनि मोही ❀ जो बरमागहुदेउँसोतोही
मुनिकहमैंबरकबहुँ न जाँचा ❀ समुझिनपरै झूठका साँचा
तुम्हहि नीक लागै रघुराई ❀ सो मोहिंदेहु दाससुखदाई
अबिरलभगतिबिरतिबिज्ञाना ❀ होहुसकलगुनज्ञाननिधाना
प्रभुजो दीन्ह सोबर मैं पावा ❀ अब सोदेहुमोहिजोभावा

दो० अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बान धरराम ॥
ममहियगगनइंदुइव, बसहुसदा निःकाम ॥ ९ ॥

एवमस्तुकहि रमा निवासा ❀ हरषिचलेकुंभजरिषिपासा
बहुत दिवस गुर दरसनपाए ❀ भएमोहिएहिआश्रम आए
अब प्रभुसंग जाउँ गुरपाहीं ❀ तुम्हकहँनाथनिहोरानाहीं
देखि कृपानिधिमुनि चतुराई ❀ लिए संग बिहँसे दोभाई
पंथकहत निज भगतिअनूपा ❀ मुनिआश्रम पहुँचेसुरभूपा

तुरत सुतीछन गुरपहिं गयऊ ❋ करिदंडवतकहत असभयऊ
नाथ कोसलाधीस कुमारा ❋ आएमिलनजगतआधारा
राम अनुज समेत बैदेही ❋ निसिदिनदेवजपतहहुजेही
सुनतअगास्तितुरत उठिधाए ❋ हरिबिलोकि लोचनजलछाए
मुनि पद कमलपरे दौ भाई ❋ रिषिअतिप्रीति लिएउरलाई
सादर कुसलपूछिमुनि ज्ञानी ❋ आसन पर बैठारे आनी
पुनिकरि बहुप्रकार प्रभुपूजा ❋ मोहिसमभाग्यवंतनहिंदूजा
जहँलगिरहे अपर मुनिबृंदा ❋ हरषेसब बिलोकिसुषकंदा

दो० मुनिसमूह महँ बैठे, सन्मुष सबकी ओर ॥
सरदइंदुतनचितवत, मानहुँ निकर चकोर ॥ ६ ॥

तबरघुबीर कहा मुनिपाहीं ❋ तुम्हसनप्रभुदुरावकछुनाहीं
तुम्हजानहुजेहिकारनआएउँ ❋ तातेतातनकहिसमुझाएउँ
अब सो मंत्र देहु प्रभुमोही ❋ जेहिप्रकारमारौंमुनिद्रोही
मुनिमुसुकाने सुनिप्रभुबानी ❋ पूछेहुनाथ मोहिका जानी
तुम्हरेइ भजनप्रभावअघारी ❋ जानौंमहिमाकछुकतुम्हारी
उमरितरु बिसाल तवमाया ❋ फलब्रह्मांडअनेकनिकाया
जीव चराचर जंतु समाना ❋ भीतरबसहिंन जानहिंआना
तेफलभच्छक कठिनकराला ❋ तवभयडरतसदासोउकाला
तेतुम्हसकल लोकपति साँई ❋ पूछेहु मोहि मनुजकीनाईं
यह बरमागौं कृपा निकेता ❋ बसहु हृदय श्रीअनुजसमेता
अबिरलभगतिबिरतिसतसंगा ❋ चरनसरोरुहप्रीतिअभंगा
जद्यपि ब्रह्म अषंड अनंता ❋ अनुभवगम्य भजहिंजेहिसंता
असतव रूप बखानौं जानौं ❋ फिरिफिरिसगुनब्रह्मरतिमानौं

संतत दासन देहु बड़ाई * ताते मोहि पूँछेहु रघुराई
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ * पावन पंचबटी तेहि नाऊँ
दंडकबन पुनीत प्रभु करहू * उग्रसाप मुनिवर करहरहू
बास करहुतहँ रघुकुलराया * कीजेसकलमुनिन्हपरदाया
चलेराममुनिआयसु पाई * तुरतहिं पंचबटी निअराई
दो० गीधराज सें भेंट भइ, बहुबिधि प्रीति बढ़ाइ ॥
गोदावरी निकटप्रभु, रहे पर्न गृह छाइ ॥ ७ ॥
जबते राम कीन्ह तहँ बासा * सुषीभए मुनि बीती त्रासा
गिरिबननदी तालछबिछाए * दिनंदिनप्रतिअतिहोहिं सुहाए
षगमृग बृंद अनंदित रहहीं * मधुपमधुरगुंजतछबिलहहीं
सोबनबरनिनसकअहिराजा * जहाँ प्रगट रघुबीर बिराजा
एकबार प्रभु सुष आसीना * लछिमनबचनकहेछलहीना
सुरनर मुनि सचराचर साईं * मैं पूछौं निज प्रभुकी नाईं
मोहिसमुझाइकहहुसोइदेवा * सबतजिकरौं चरनरज सेवा
कहहु ज्ञानबिराग अरुमाया * कहहुसोभगतिकरहुजेहिदाया
दो० इस्वर जीवभेद प्रभु, सकल कहौ समुझाय ॥
जातें होइ चरन रति, सोकमोह भ्रमजाय ॥ ८ ॥
थोरेहिमहँ सबकहौं बुझाई * सुनहुतातमतिमनचितलाई
मैं अरु मोर तोर तैं माया * जेहिबसकीन्हेजीवनिकाया
गोगोचर जहँलगि मनजाई * सो सब माया जानेहु भाई
तेहिकरभेदसुनहु तुम्हसोऊ * बिद्या अपर अबिद्या दोऊ
एकदुष्ट अतिसय दुषरूपा * जाबस जीव परा भवकूपा
एक रचै जग गुनबस जाके * प्रभुप्रेरितनहिं निजबलताके

ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं ❋ देषब्रह्म समान सबमाहीं
कहियताततसो परमबिरागी ❋ तृनसमसिद्धितीनिगुनत्यागी

दो० माया ईसन आपु कहँ, जानिकहिय सो जीव ॥
बंधमोक्ष प्रद सर्ब पर, माया प्रेरक सीव ॥ ९ ॥

धर्मते बिरति जोग ते ज्ञाना ❋ ज्ञानमोक्ष प्रद वेद बषाना
जाते बेगि द्रवौं मै भाई ❋ सोममभगति भगतसुषदाई
सो स्वतंत्र अवलंब नआना ❋ तेहिआधीन ज्ञान बिज्ञाना
भगतितातअनुपम सुषमूला ❋ मिलइजोसंतहोहिंअनुकूला
भक्तिके साधन कहौंबषानी ❋ सुगमपंथ मोहिपावहिंप्रानी
प्रथमहिंबिप्रचरनअतिप्रीती ❋ निजनिजधर्म निरतश्रुतिरीती
यहकरफलमनबिषयाबिरागा ❋ तबममचरनउपजअनुरागा
श्रवनादिकनवभक्ति दृढाहीं ❋ ममलीलारतिअतिमनमाहीं
संतचरन पंकजअति प्रेमा ❋ मनक्रमवचनभजनदृढनेमा
गुरुपितु मातु बंधुपति देवा ❋ सबमोहिकहँ जानैदृढसेवा
ममगुनगावत पुलकसरीरा ❋ गदगद गिरा नेन बहनीरा
काम आदि मददंभनजाके ❋ तात निरंतर बसमै ताके

दो० बचनकर्म मनमोरिगति, भजन करहिं निःकाम ॥
तिन्हकेहृदयकमलमहँ, करौंसदाबिश्राम ॥ १० ॥

भक्तिजोगसुनिअतिसुषपावा ❋ लछिमनप्रभुचरनन्हिसिरनावा
एहिबिधिगएकछुकदिनबीती ❋ कहतबिराग ज्ञानगुननीती
सूपनषा रावनकै बहिनी ❋ दुष्टहृदयदारुनिजासिअहिनी
पंचबटी सो गै इकबारा ❋ देषिबिकलभइजुगलकुमारा
भ्राता पिता पुत्र उरगारी ❋ पुरुष मनोहर निरषतनारी

होइविकलसकमननहिंरोकी * जिमिरबिमनिद्रवरबिहिबिलोकी
रुचिर रूपधरिप्रभु पहिंजाई * बोलीबचन मधुर मुसुकाई
तुम्हसमपुरुषनमोसमनारी * यहसँजोगबिधिरचा बिचारी
ममअनुरूप पुरुषजग माहीं * देषेउँषोजिलोक तिहुँनाहीं
तातें अबलगिरहिउँकुमारी * मनमानाकछुतुम्हहिंनिहारी
सीतहि चितै कही प्रभुबाता * अहैकुमार मोरलघु भ्राता
गइलछिमनरिपु भगिनीजानी * प्रभुबिलोकि बोलेमृदु बानी
सुंदरि सुनुमैं उन्हकर दासा * पराधीन नहिं तोर सुपासा
प्रभुसमर्थ कोसलपुर राजा * जोकछुकरहिं उन्हहिंसबछाजा
सेवकसुषचह मान भिषारी * ब्यसनीधनसुभगतिब्यभिचारी
लोभी जस चह चारगुमानी * नभदुहि दूधचहत एप्रानी
पुनिफिरिरामनिकटसोआई * प्रभुलछिमनपहँबहुरिपठाई
लछिमन कहा तोहिसोबरई * जोतृन तोरिलाजपरिहरई
तबषिसिआनि राम पहँ गई * रूप भयंकर प्रगटत भई
सीतहि सभय देषि रघुराई * कहा अनुजसनसैन बुझाई

दो० लछिमनअतिलाघवसो, नाक कान बिनु कीन्हि ।
ताके कररावनकहँ, मनो चुनौती दीन्हि ॥ ११ ॥

नाककान बिनुभइबिकरारा * जनुश्रव सैल गेरुकै धारा
षरदूषन पहिंगै बिलपाता * धिगधिगतवपौरुषबलभ्राता
तेहिंपूछा सबकहेसि बुझाई * जातुधानसुनि सेनबनाई
धाए निसिचरनिकरबरूथा * जनुसपक्षकज्जलगिरिजूथा
नाना बाहन नाना कारा * नानायुध धर घोरअपारा
सूपनषा आगे करि लीनी * असुभरूप श्रुतिनासाहीनी

असगुनअमितहोहिंभयकारी * गनहिंनमृत्युविबसमदमारी
गर्जहिंतर्जहिं गगन उडाहीं * देषिकटकभट अतिहरषाहीं
कोउकहजियतधरहुदोउभाई * धरि मारहु तियलेहुछडाई
धूरि पूरि नभ मंडल रहा * रामबोलाइअनुजसनकहा
लैजानकिहि जाहु गिरिकंदर * आवा निसिचर कटकभयंकर
रहेहुसजग सुनि प्रभुकै बानी * चलेसहित श्रीसरधनुपानी
देषिराम रिपुदल चलिआवा * बिहँसिकठिनको दंडचढावा

छं० कोदंडकठिनचढाइसिरजटजूटबाँधतसोहक्यों ॥
मरकतसैलपरलरतदामिनिकोटिसोंजुगभुजगज्यों॥
कटिकसिनिषंगबिसालभुजगहिचापबिसिषसुधारिकै
चितवतमनहुँमृगराजप्रभुगजराजघटानिहारिकै ॥

सो० आइगएबगमेल, धरहुधरहु धावत सुभट ॥
जथाबिलोकिअकेल, बालरबिहिघेरतदनुज ॥ १२ ॥

प्रभुबिलोकिसरसकहिंन डारी * थकितभई रजनीचरधारी
सचिवबोलि बोले षरदूषन * यहकोउनृपबालकनरभूषन
नाग असुर सुरनर मुनि जेते * देषे जिते हते हम केते
हमभरिजन्म सुनहु सबभाई * देषीनहिं असि सुंदरताई
जद्यपिभगिनी कीन्ह कुरूपा * बधलायकनहिंपुरुषअनूपा
देहिं तुरतनिज नारि दुराई * जीअतभवनजाहिंद्वौभाई
मोरकहा तुम्ह ताहि सुनावहु * तासुबचनसुनिआतुरआवहु
दूतन्ह कहा राम सनजाई * सुनतराम बोले मुसुकाई
हमछत्री मृगया बन करहीं * तुम्हसेषलमृगषोजतफिरहीं
रिपुबलवंत देषिनहिं डरहीं * एकबार कालहु सन लरहीं

जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक * मुनि पालक षल सालक बालक
जौं न होइ बल घर फिरि जाहू * समर बिमुष मैं हतौं न काहू
रन चढ़ि करिय कपट चतुराई * रिपु पर कृपा परम कदराई
दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ * सुनि षर दूषन उर अति दहेऊ

छं० उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाए बिकट भट रजनीचरा ।
सर चाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु धरा ॥
प्रभु कीन्हि धनुष टकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा ।
भए बधिर ब्याकुल जातुधान न ज्ञान तेहि अवसर रहा ॥

दो० सावधान होइ धाए, जानि सबल आराति ।
लागे बरषन राम पर, अस्त्र सस्त्र बहु भाँति ॥
तिन के आयुध तिल सम, करि काटे रघुबीर ।
तानि सरासन श्रवन लगि, पुनि छाँडे निज तीर ॥ १३ ॥

छं० तब चले बान कराल । फुंकरत जनु बहु ब्याल ॥
कोपेउ समर श्रीराम । चले बिसिष निसित निकाम ॥
अवलोकि षरतर तीर । मुरि चले निसिचर बीर ॥
भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ । जो भागि रन ते जाइ ॥
तेहि बध बहम निज पानि। फिरे मरन मन महँ ठानि॥
आयुध अनेक प्रकार । सनमुष ते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपे जानि । प्रभु धनुष सर संधानि ❀
छाडे बिपुल नाराच । लगे कटन बिकट पिसाच ॥
उर सीस भुज कर चरन । जहँ तहँ लगे महि परन ॥
चिक्करत लागत बान । धर परत कुधर समान ॥
भट कटत तन सत षंड । पुनि उठत करि पाषंड ॥

नभउडतबहुभुजमुंड । बिनुमौलि धावत रुंड ॥
षगकंककाकसृकाल । कटकटहिंकठिनकराल॥

छं० कटकटहिं जंबुकभूत प्रेत पिसाच षप्परसंचहीं ॥
बेताल बीरकपाल तालबजाइ जोगिनि नंचहीं ॥
रघुबीरबान प्रचंडषंडहिं भटन्हके उरभुजासिरा ॥
जहँतहँपरहिंउठिलरहिंधरुधरुधरुकरहिंभयकरगिरा ॥
अंतावरींगहिउडत गीधपिसाच करगहिधावहीं ॥
संग्रामपुर बासीमनहु बहुबालगुडी उडावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट कहँरत परे ॥
अवलोकिनिजदलबिकलभटतिसिरादिषरदूषनफिरे ॥
सरसक्तितोमरपरसुसूलकृपानएकहिबारहीं ॥
करिकोप श्रीरघुबीरपरअगनितनिसाचरडारहीं ॥
प्रभुनिमिषमहँरिपुसरनिवारिपचारिडारे सायका ॥
दसदसबिसिषउरमाँझमारेसकलनिसिचरनायका ॥
महिपरतउठिभटभिरतमरतनकरतमायाअतिघनी ॥
सुरडरतचौदहसहसप्रेत बिलोकि एकअवधधनी ॥
सुरमुनिसभयप्रभुदेषिमायानाथअतिकौतुककरयौ ॥
देषहिंपरस्पररामकरिसंग्रामरिपुदललरिमरयौ ॥

दो० रामराम कहितन तजहिं, पावहिं पद निर्बान ॥
करि उपाइ रिपु मारे, छन महँ कृपानिधान ॥
हरषित बरषहिंसुमन सुर, बाजहिं गगन निसान ॥
अस्तुतिकरिकरिसबचले,सोभितबिबिधबिमान १४॥

जब रघुनाथसमर रिपुजीते ❋ सुरनरमुनि सबके भयबीते

तबलछिमन सीतहि लैआए * प्रभुपदपरतहरषि उरलाए
सीताचितव स्यामम्रदुगाता * परमप्रेम लोचननअघाता
पंचबटीबसि श्री रघुनायक * करतचरित सुरमुनिसुषदायक
धुआँदेषि परदूषन केरा * जाइ सुपनषा रावन प्रेरा
बोलीबचन क्रोधकरि भारी * देसकोसकै सुरति बिसारी
करसिपान सो वसिदिनराती * सुधिनहिंतब सिरपरआराती
राजनीति बिनुधन बिनुधर्मा * हरिहिसमर्पे बिनुसतकर्मा
बिद्याबिनु बिबेक उपजाए * श्रमफल पढेकिए अरुपाए
संग ते जती कुमंत्र तें राजा * मानतें ज्ञान पानते लाजा
प्रीतिप्रनय बिनु मदतेंगुनी * नासहिंबेगिनीतिअससुनी

सो॰ रिपुरुजपावक पाप, प्रभुअहिगानियनछोटकरि ।
असकहिबिबिधबिलाप, करिलागीरोदनकरन ॥

दो॰ सभामाँझपरिब्याकुल, बहुप्रकारकहरोइ ।
तोहिजिअत दसकंधर, मोरिकिअसिगतिहोइ॥ १५॥

सुनतसभासद उठे अकुलाई * समुझाई गहि बाँहउठाई
कहलंकेसकहसि निजबाता * केइतवनासाकाननिपाता
अवधन्रपति दसरथ के जाए * पुरुष सिंघवन षेलनआए
समुझिपरीमोहि उन्हकैकरनी * रहितनिसाचरकरिहहिधरनी
जिन्हकरभुजबलपाइदसानन * अभयभए बिचरतमुनिकानन
देषत बालक काल समाना * परमधीर धन्वी गुननाना
अतुलितबल प्रतापद्वौ भ्राता * षलबधरतसुरमुनिसुषदाता
सोभाधाम राम असनामा * तिन्हकेसंगनारिएकस्यामा
रूपरासिबिधि नारि सँवारी * रतिसतकोटि तासुबलिहारी

तासु अनुज काटेश्रुतिनासा ❀ सुनितव भगिनि करहिंपरिहासा
खरदूषन सुनि लगे पुकारा ❀ छनमहँसकल कटकउन्हमारा
खरदूषन त्रिसिरा कर घाता ❀ सुनिदससीस जरेसबगाता

दो० सूपनखहि समुझायकरि, बलबोलेसि बहुभांति ।
गएउभवन अतिसोचबस, नीदपरैनाहिंराति १६

सुरनर असुरनाग खगमाहीं ❀ मोरेअनुचरकहँकोउनाहीं
खरदूषन मोहिसम बलवंता ❀ तिन्हहि कोमारहिबिन भगवंता
सुररंजन भंजन महिभारा ❀ जौंभगवंतलीन्हअवतारा
तउमैंजाइ बयर हठि करऊँ ❀ प्रभुसर प्रानतजे भवतरऊँ
होइहि भजन न तामस देहा ❀ मनक्रम बचनमंत्रदृढएहा
जौंनररूप भूपसुत कोऊ ❀ हरिहौंनारिजीतिरनदोऊ
चलाअकेलजान चढितहवाँ ❀ बसमारीचसिंधुतटजहवाँ
इहाँराम जसिजुगति बनाई ❀ सुनहु उमासो कथासुहाई

दो० लछिमनगए बनहिजब, लेनमूलफलकंद ।
जनकसुतासनबोले बिहँसि कृपा सुखवृंद १७

सुनहुप्रियाव्रत रुचिर सुसीला ❀ मैंकछुकरबि ललितनरलीला
तुम्हपावकमहँ करहु निवासा ❀ जौंलगिकरौं निसाचरनासा
जबहिं रामसब कहा बखानी ❀ प्रभुपद धरिहियअनलसमानी
निजप्रतिबिंब राखितहँ सीता ❀ तैसेइ सीलरूप सुबिनीता
लछिमनहूँ यहमरम न जाना ❀ जोकछुचरितरचा भगवाना
दसमुख गएउ जहाँ मारीचा ❀ नाइमाथस्वारथ रतनीचा
नवनिनीचके अति दुखदाई ❀ जिमिअंकुसधनुउरगबिलाई
भयदायकखल के प्रियबानी ❀ जिमिअकालकेकुसुमभवानी

दो० करिपूजा मारीच तब, सादर पूछी बात ॥
कवनहेतुमनब्यग्रअति, अकसरआएहुतात ॥१८॥

दसमुषसकलकथातेहिआगें * कहीसहितअभिमानअभागे
होहुकपटमृगतुम्हछलकारी * जेहिबिधिहरिआनौंनृपनारी
तेहिपुनिकहासुनहुदससीसा * ते नररूप चराचर ईसा
तासों तात बयरनहि कीजै * मारे मरिअ जिआए जीजै
मुनिमषराषनगयउकुमारा * बिनुफरसररघुपतिमोहिमारा
सतजोजनआएउँछनमाहीं * तिन्हसनबयरकिएभलनाहीं
भइ ममकीट भृंगकी नाईं * जहँतहँ मैं देषौं दोउ भाई
जौंनरतात तदपिअतिसूरा * तिन्हहिबिरोधनआइहिपूरा

दो० जेहिताडका सुबाहुहति, षंडेउ हरकोदंड ॥
षरदूषन तिसिराबधेउ, मनुजकिअसबरिबंड ॥१९॥

जाहुभवनकुलकुसलबिचारी * सुनतजरादीन्हिसिबहुगारी
गुरुजिमिमूढ़करसिममबोधा * कहुजगमोहिसमानकोजोधा
तबमारीचहृदय अनुमाना * नवहिबिरोधे नहि कल्याना
सस्त्री मर्मी प्रभुसठ धनी * बैद बंदिकबि मानस गुनी
उभयभांतिदेषानिजमरना * तबताकिसिरघुनायकसरना
उतरुदेतमोहिबधबअभागे * कसनमरौं रघुपति सर लागे
असजियजानिदसाननसंगा * चला रामपद प्रेम अभंगा
मनअतिहरषजनावनतेही * आज देषिहौं परम सनेही

छं० निजपरमप्रीतमदेषिलोचनसुफलकरिसुषपाइहौं ॥
श्रीसहितअनुजसमेत कृपानिकेतपदमनलाइहौं ॥
निर्बानदायकक्रोधजाकरभगतिअबसहिबसकरी ॥
निजपानिसरसंधानिसोमोहिबधिहिसुषसागरहरी ॥

दो० ममपाछे धर धावत, धरे सरासन बान ॥
फिरिफिरिप्रभुहिबिलोकिहौं, धन्यनमोसमआन॥२०॥

तेहिबननिकटदसाननगएऊ ❋ तबमारीच कपटमृग भयऊ
अतिबिचित्रकछुबरनिनजाई ❋ कनकदेह मनिरचित बनाई
सीता परम रुचिर मृग देषा ❋ अङ्ग अङ्ग सुमनोहर बेषा
सुनहु देव रघुबीर कृपाला ❋ येहिमृगकरअतिसुंदरछाला
सत्यसंधप्रभु बध करिएही ❋ आनहु चर्म कहति बैदेही
तबरघुपतिजानतसबकारन ❋ उठे हरषि सुरकाज सँवारन
मृगबिलोकिकटिपरिकरबाँधा ❋ करतलचाप रुचिरसरसाँधा
प्रभुलछिमनहिंकहासमुझाई ❋ फिरतबिपिननिसिचरबहुभाई
सीताकेरि करेहु रषवारी ❋ बुधिबिबेकबलसमयबिचारी
प्रभुहिबिलोकिचलामृगभाजी ❋ धाएराम सरासन साजी
निगमनेतिसिवध्यानन पावा ❋ माया मृगपाछे सोइधावा
कबहुँ निकट पुनिदूरिपराई ❋ कबहुँकप्रगटै कबहुँ छपाई
प्रगटतदुरत करतछल भूरी ❋ येहिबिधिप्रभुहि गयोलैदूरी
तबतकि रामकठिनसरमारा ❋ धरनिपरेउकरि घोरपुकारा
लछिमनकरप्रथमहिलैनामा ❋ पाछेसुमिरेसि मनमहरामा
प्रानतजतप्रगटेसिनिजदेहा ❋ सुमिरेसिराम समेत सनेहा
अंतर प्रेम तासु पहिचाना ❋ मुनिदुर्ल्लभगतिदीन्हिसुजाना

दो० बिपुलसुमनसुरबरषहिं, गावहिंप्रभुगुननाथ मा० पा० २०
निजपददीन्हिअसुरकहँ, दीनबन्धुरघुनाथ ॥ २१ ॥

षलबधि तुरतफिरे रघुबीरा ❋ सोहचापकर कटि तूनीरा
आरत गिरा सुनीजब सीता ❋ कहलछिमनसनपरमसभीता

जाहुबेगि संकट अति भ्राता * लछिमनबिहँसिकहासुनुमाता
भृकुटि बिलास सृष्टिलयहोई * सपनेहु संकटपरैकि सोई
मरम बचन जब सीताबोली * हरिप्रेरितलछिमनमतिडोली
बनदिसिदेव सौंपि सब काहू * चलेजहां रावन ससिराहू
सूनबीच दसकंधर देषा * आवा निकट जतीकेबेषा
जाके डर सुर असुर डेराहीं * निसिननींद दिन अन्ननषाहीं
सोदससीस स्वान की नाईं * इतउतचितइचला भडिहाईं
इमिकुपंथ पगदेत षगेसा * रहनतेजतनबुधिबल लेसा
नानाबिधि कहि कथासुहाई * राजनीतिभय प्रीतिदेषाई
कहसीता सुनुजती गोसाँई * बोलेहु बचन दुष्टकी नाईं
तबरावन निजरूप देषावा * भईसभयजबनामसुनावा
कहसीता धरिधीरज गाढा * आइगएउप्रभुरहुषलठाढा
जिमिहरिबधुहिछुद्रससचाहा * भयेसिकालबसनिसिचरनाहा
सुनतबचन दससीस रिसाना * मनमहँचरनबंदिसुषमाना

दो० क्रोधवंत तब रावन, लीन्हिसि रथ बैठाइ ॥
चला गगन पथआतुर, भयरथहाँकिनजाइ ॥ २२ ॥

हा जगदेक बीर रघुराया * केहिअपराधबिसारेहुदाया
आरति हरनसरन सुषदायक * हारघुकुलसरोजदिननायक
हालछिमनतुम्हार नहिंदोसा * सोफलपाएउँकीन्हेउँरोसा
बिबिध बिलाप करति बैदेही * भूरिकृपा प्रभु दूरि सनेही
बिपतिमोरिकोप्रभुहि सुनावा * पुरोडास चह रासभ षावा
सीताके बिलाप सुनि भारी * भए चराचर जीव दुषारी
गीधराज सुनि आरत बानी * रघुकुलतिलकनारिपहिचानी

अधम निसाचर लीन्हे जाई ❀ जिमिमलेछबस कपिलागाई
सीतेपुत्रि करसि जनि त्रासा ❀ करिहौं जातुधानकरनासा
धावा क्रोध वंत षग कैसे ❀ छूटै पबि पर्बत कहँ जैसे
रेरे दुष्ट ठाढ किन होही ❀ निर्भय चलेसिन जानेहिमोही
आवत देषि कृतांत समाना ❀ फिरिदसकंधरकर अनुमाना
की मैनाक कि षगपति होई ❀ ममबलजानसहित पतिसोई
जाना जरठ जटायू एहा ❀ ममकरतीरथछाडिहिदेहा
सुनत गीध क्रोधातुर धावा ❀ कहसुनुरावन मोरसिषावा
तजिजानकिहिकुसलगृहजाहू ❀ नाहितअस होइहिबहुबाहू
रामरोष पावक अतिघोरा ❀ होइहिसकलसलभकुलतोरा
उतरन देत दसानन जोधा ❀ तबहिगीधधावाकरि क्रोधा
धरिकचबिरथकीन्हमहिगिरा ❀ सीतहिराषिगीधपुनिफिरा
चोचन्हमारि बिदारेसि देही ❀ दंड एक भइ मुरछा तेही
तबसक्रोध निसचर षिसिआना ❀ काढेसिपरमकरालकृपाना
काटेसि पंष पराषग धरनी ❀ सुमिरिरामकरि अद्भुतकरनी
सीतहि जान चढाइ बहोरी ❀ चला उतायल त्रासनथोरी
करतिबिलापजातिनभसीता ❀ व्याधबिबसजनुमृगीसभीता
गिरिपर बैठे कपिन्ह निहारी ❀ कहिहरिनामदीन्ह पटडारी
एहिबिधिसीतहि सोलैगएऊ ❀ बनअसोकमहँराषतभएउ

दो० हारि पराषल बहुबिधि, भय अरु प्रीति देषाइ ॥
तबअसोक पादपतर, राषेसि जतन कराइ ॥
जेहिबिधि कपट कुरंग सँग, धाइचले श्रीराम ॥
सोछबि सीताराषि उर, रटतिरहति हरिनाम ॥२३॥

रघुपतिअनुजहिआवतिदेषी * बाहिजचिन्ताकीन्ह बिसेषी
जनकसुतापरिहरेहु अकेली * आएहुतात बचनममपेली
निसिचरनिकरफिरहिं बनमाहीं * मममनसीताआश्रमनाहीं
गहिपदकमलअनुजकरजोरी * कहेउनाथकछुमोहिंनखोरी
अनुज समेत गए प्रभुतहँवा * गोदावरितठआश्रमजहँवा
आश्रमदेषि जानकी हीना * भएबिकलजसपाकृतदीना
हागुनषानि जानकी सीता * रूपसील ब्रतनेम पुनीता
लछिमन समुझाए बहुभाँती * पूछत चले लता तरुपाँती
हेषगमृग हेमधुकर श्रेनी * तुम्हदेषी सीतामृग नैनी
षंजनसुक कपोत मृग मीना * मधुपनिकर कोकिलाप्रबीना
कुंदकली दाडिम दामिनी * कमलसरदससिअहिभामिनी
बनरुपास मनोज धनुहंसा * गजकेहरिनिजसुनतप्रसंसा
श्रीफल कनक कदलि हर्षाहीं * नेकनसकसकुच मनमाहीं
सुनुजानकी तोहि बिनुआजू * हरषे सकल पाइजनु राजू
किमिसहिजात अनषतोहिपाहीं * प्रिय।बेगिप्रगटासि कसनाहीं
एहिबिधिषोजत बिलपतस्वामी * मनहुमहाबिरहीअति कामी
पूरन काम राम सुषरासी * मनुजचरितकरअजअबिनासी
आगे परा गीधपति देषा * सुमिरत रामचरनकी रेषा

दो० करसरोज सिरपरसेउ, कृपा सिंधु रघुबीर ॥
निरषिरामछबिधाममुष, बिगतभईसबपीर २४ ॥

तबकह गीधबचन धरि धीरा * सुनहु रामभंजनभवभीरा
नाथदसानन एह गतिकीन्ही * तेहिंषल जनकसुताहरिलीन्ही
लैदछिनदिसि गएउ गोसाईं * बिलपतिअतिकुररी कीनाईं

दरसलागिप्रभु राषेउँ प्राना ❋ चलनचहतअब कृपानिधाना
रामकहा तनराषहु ताता ❋ मुषमुसुकाइकहीतेहिंबाता
जाकरनाम मरतमुष आवा ❋ अधमौमुकुतहोइ श्रुतिगावा
सोमम लोचन गोचर आगे ❋ राषौं देहनाथ केहि षाँगे
जलभरिनयन कहहिं रघुराई ❋ तातकर्मनिज ते गतिपाई
परहितबसजिन्हके मनमाहीं ❋ तिन्हकहँ जगदुर्लभकछुनाहीं
तनतजि तातजाहु ममधामा ❋ देउँ काहतुम्ह पूरनकामा

दो० सीता हरन तातजनि, कहेउ पिता सनजाइ ॥
जौं मैरामत कुल सहित, कहिहिदसाननआइ २५

गीध देहतजि धरि हरिरूपा ❋ भूषनबहुपट पीतअनूपा
स्यामगात बिसाल भुजचारी ❋ अस्तुतिकरत नयनभरिबारी

छं० जयराम रूपअनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरकसही ॥
दससीसबाहु प्रचंड षंडन चंड सर मंडन मही ॥
पाथोदगात सरोज मुषराजीव आयत लोचनं ॥
नितनौमिरामकृपालबाहु बिसाल भवभयमोचनं ॥
बलमप्रमेय मनादि मज मब्यक्त मेकम गोचरं ॥
गोबिंद गोपर द्वंदहर बिज्ञान घन धरनी धरं ॥
जेराम मंत्र जपंत संत अनंत जनमन रंजनं ॥
नितनौमिरामअकाम प्रियकामादिषलदलगंजनं ॥
जेहिश्रुतिनिरंजनब्रह्मब्यापकबिरजअजकहिगावहीं
करिध्यानग्यानबिरागजोगअनेकमुनिजेहिपावहीं ॥
सोप्रगट करुनाकंद सोभा बृंदअग जग मोहई ॥
ममहृदय पंकजभृंग अंगअनंग बहुछबि सोहई ॥
जोअगमसुगमसुभावनिर्मलअसमसमसीतलसदा ॥

पस्यंतिजंजोगीजतनकरि करतमन गोबससदा ॥
सोरामरमानिवास संतत दास बस त्रिभुवनधनी ॥
ममउरबसउसोसमन संसृतिजासु कीरतिपावनी ॥

दो० अबिरलि भगति माँगिबर, गीधगएउहरिधाम ॥
तेहिकीक्रियाजथोचित, निजकरकीन्हीराम ॥ २६ ॥

कोमलचितअतिदीनदयाला * कारनबिनु रघुनाथ कृपाला
गीधअधमषगआमिषभोगी * गतिदीन्हीजो जाचतजोगी
सुनहुउमा ते लोग अभागी * हरितजिहोहिं बिषय अनुरागी
पुनि सीतहि षोजत द्वौभाई * चलेबिलोकत बन बहुताई
संकुललताबिटपघनकानन * बहुषगमृग तहँ गजपंचानन
आवत पंथ कबंध निपाता * तेहिंसबकही सापकै बाता
दुर्बासा मोहिदीन्ही सापा * प्रभुपद पेषि मिटासोपापा
सुनु गंधर्ब कहौं मैं तोही * मोहिनसोहाइब्रह्मकुलद्रोही

दो० मनक्रम बचन कपट तजि, जोकर भूसुर सेव ॥
मोहिसमेत बिरंचि सिव, बसताके सबदेव ॥ २७ ॥

सापत ताड़त परुष कहंता * बिप्रपूज्य अस गावहिंसंता
पूजिअ बिप्रसील गुनहीना * सूद्रनगुनगन ग्यानप्रबीना
कहिनिजधर्मताहिसमुझावा * निजपदप्रीतिदेषिमनभावा
रघुपतिचरनकमल सिरनाई * गएउगगनआपनिगतिपाई
ताहिदेइ गति राम उदारा * सबरीके आश्रम पगुधारा
सबरी देषि रामगृह आए * मुनिकेबचनसमुझिजियभाए
सरसिजलोचनबाहुबिसाला * जटामुकुटसिरउरबनमाला
स्याम गौर सुंदर दोउभाई * सबरी परी चरन लपटाई

प्रेम मगनमुषबचननआवा * पुनिपुनिपदसरोजसिरनावा
सादर जल लै चरन पषारे * पुनिसुंदर आसन बैठारे
दो० कंद मूलफल सुरस अति, दिएराम कहँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु षाए, बारंबार बषानि॥ २८॥
पानिजोरि आगे भइ ठाढी * प्रभुहिंबिलोकिप्रीतिअतिबाढी
केहिबिधिअस्तुतिकरौंतुम्हारी * अधमजातिमैंजडमतिभारी
अधमतेअधमअधमअतिनारी * तिन्हमहँ मैं अतिमंदअघारी
कहरघुपतिसुनुभामिनिबाता * मानौंएक भगति करनाता
जाति पाँतिकुल धर्मबडाई * धनबलपरिजन गुनचतुराई
भगतिहीन नरसोहै कैसा * बिनुजलबारिद देषिअजैसा
नवधाभगतिकहौंतोहिपाहीं * सावधान सुनुधरु मनमाहीं
प्रथमभगति संतनकरसंगा * दूसरिरति ममकथा प्रसंगा
दो० गुरुपद पंकज सेवा, तीसरि भगति अमान॥
चौथिभगति ममगुनगन, करइकपट तजिगान॥ २९॥
मंत्रजाप मम दृढ बिश्वासा * पंचमभजन सोबेद प्रकासा
छठदम सीलबिरत बहुकर्मा * निरत निरंतर सज्जनधर्मा
सातँवसममोहिमयजगदेषा * मोतेंसंत अधिक करिलेषा
आठवँ जथा लाभ संतोषा * सपनेहु नहिंदेषइ परदोषा
नवमसरलसबसनछलहीना * ममभरोसहिय हरषनदीना
नवमहँ एको जिन्हके होई * नारिपुरुष सचराचर कोई
सोइअतिसयप्रियभामिनिमोरे * सकलप्रकार भगतिदृढ तोरे
जोगि बृंद दुर्लभ गतिजोई * तोकहँआज सुलभभइ सोई
ममदरसनफल परमअनूपा * जीवपाव निजसहज सरूपा

जनकसुताकइसुधिभामिनी * जानहिकहुकरिबर गामिनी
पंपासरहि जाहु रघुराई * तहँहोइहि सुग्रीव मिताई
सो सब कहिहि देव रघुबीरा * जानतहूँ पूँछहु मतिधीरा
बार बार प्रभु पद सिरनाई * प्रेमसहित सब कथा सुनाई
छं० कहिकथासकलबिलोकिहरिमुष हृदयपदपंकजधरे ॥
तजिजोगपावक देहहरिपदलीनभइ जहँनाहिंफिरे ॥
नरबिबिधिकर्म अधर्म बहुमतसोक प्रदसबत्यागहू ॥
बिस्वास करिकह दासतुलसी रामपद अनुरागहू ॥
दो० जातिहीनअघजन्ममहि, मुक्तकीन्हि असिनारि ॥
महामंदमन सुषचहासि, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ ३० ॥
चले राम त्यागा बन सोऊ * अतुलितबल नरकेहरिदोऊ
बिरही इवप्रभुकरत बिषादा * कहत कथा अनेक संबादा
लछिमनदेषुबिपिनकइसोभा * देषतकेहिकरमननहिंछोभा
नारिसहित सब षगमृग बृंदा * मानहुमोरि करतहहिं निंदा
हमहिंदेषि मृगनिकरपराहीं * मृगीकहहिंतुमकहँभयनाहीं
तुम्ह आनंद करहु मृगजाए * कंचन मृग षोजन ए आए
संगलाइ करिनी करि लेहीं * मानहु मोहिसिषावन देहीं
सास्त्रसुचिंतित पुनि पुनिदेषिअ * भूपसुसेवितबसनहिं लेषिअ
राषिअनारिजदपिउरमाहीं * जुबती सास्त्रनृपति बसनाहीं
देषहु तात बसंत सुहावा * प्रियाहीनमोहिभयउपजावा
दो० बिरहबिकलबलहीनमोहि, जानेसिनिपट अकेल ॥
सहित बिपिनमधुकर षग, मदनकीन्हि बगमेल ॥
देषिगएउ भ्रातासहित, तासु दूत सुनि बात ॥
डेराकीन्हेउमनहुतब, कटकहटकिमनजात ॥ ३१ ॥

बिटपबिसालल्लताअरुझानी ❋ बिबिधिबितानदिएजनुतानी
कदलितालबरध्वजापताका ❋ देषिनमोह धीर मनजाका
बिबिधिभाँतिफूले तरुनाना ❋ जनुबानैत बने बहु बाना
कहुँ कहुँ सुंदरबिटप सुहाए ❋ जनुभट बिलग २ होइछाए
कूजत पिकमानहु गजमाते ❋ ढेक महोष ऊँट बिसराते
मोर चकोर कीर बर बाजी ❋ पारावत मराल सब ताजी
तीतर लावक पदचर जूथा ❋ बरनिनजाइ मनोज बरूथा
रथगिरि सिलादुंदुभी झरना ❋ चातक बंदीगुन गन बरना
मधुकर मुषरभेरि सहनाई ❋ त्रिबिधिबयारि बसीठी आई
चतुरंगिनी सेन संग लीन्हे ❋ बिचरत सबहि चुनौतीदीन्हे
लछिमनदेषत कामअनीका ❋ रहहिंधीरतिन्हकैजगलीका
एहिके एक परम बल नारी ❋ तेहितेउबरसु भटसोइभारी

दो० ताततीनि अति प्रबलषल, कामक्रोध अरुलोभ ॥
मुनिबिज्ञान धाममन, करहिं निमिष महँछोभ ॥
लोभ के इच्छा दंभबल, कामके केवल नारि।
क्रोधकेपरुषबचनबल, मुनिवर कहहिं बिचारि ॥३२॥

गुनातात सचराचर स्वामी ❋ रामउमा सब अंतरयामी
कामिन्हकै दीनता दिषाई ❋ धीरन्हकेमनबिरति दृढाई
क्रोधमनोज लोभमदमाया ❋ छूटहिं सकल रामकी दाया
सोनर इन्द्रजाल नहिंभूला ❋ जापरहोइ सो नट अनुकूला
उमाकहौंमैंअनुभवअपना ❋ सतहरिभजनजगतसबसपना
पुनिप्रभु गए सरोबर तीरा ❋ पंपानाम सुभग गंभीरा
संतहृदय जस निर्मल बारी ❋ बाँधे घाट मनोहर चारी

जहँतहँपिअहिंबिबिधिमृगनीरा * जनुउदारगृह जाचक भीरा
दो० पुरइनिसघनओटजल, बेगिनपाइअमर्म ॥
मायाछन्न न देषिए, जैसे निर्गुण ब्रह्म ॥
सुषीमीनसबएकरस, अतिअगाधजलमाहिं ॥
जथाधर्मसीलन्ह के, दिन सुषसंजुत जाहिं ॥
बिकसेसरसिज नाना रंगा * मधुरमुषर गुंजत बहुभ्रंगा
बोलतजलकुक्कुटकलहंसा * प्रभुबिलोकिजनुकरतप्रसंसा
चक्रबाक बक षग समुदाई * देषतबनइ बरनि नहिं जाई
सुंदर षगगन गिरा सोहाई * जातपथिक जनुलेत बोलाई
तालसमीपमुनिन्हगृहछाए * चहुँदिसिकाननबिटपसुहाए
चंपकबकुल कदंब तमाला * पाटलपनस पलास रसाला
नवपल्लवकुसुमिततरुनाना * चंचरीक पटली कर गाना
सीतल मंद सुगंध सुभाऊ * संततबहै मनोहर बाऊ
कुहूकुहूकोकिल धुनिकरहीं * सुनिरवसरसध्यानमुनिटरहीं
दो० फलभरनम्रिबिटप सब, रहेभूमिनिअराइ ॥
परउपकारीपुरुषजिमि, नवहिंसुसंपतिपाइ ३४ ॥
देषिराम अतिरुचिरतलावा * मज्जनकीन्ह परमसुषपावा
देषी सुंदर तरुबर छाया * बैठेअनुज सहित रघुराया
तहँपुनिसकलदेवमुनिआए * अस्तुतिकरिनिजधामसिधाए
बैठे परम प्रसन्न कृपाला * कहतअनुजसनकथारसाला
बिरहवंत भगवंतहि देषी * नारदमनभा सोच बिसेषी
मोरसाप करि अंगीकारा * सहत राम नाना दुषभारा
ऐसेप्रभुहि बिलोकौं जाई * पुनिनबनिहिअसअवँसरआई

यहबिचारि नारद करबीना * गएजहाँ प्रभु सुष आसीना
गावत रामचरित मृदुबानी * प्रेमसहितबहुभाँति बषानी
करत दंडवत लिए उठाई * राषे बहुति बार उरलाई
स्वागत पूछि निकट बैठारे * लछिमन सादर चरन पषारे
दो० नानाबिधि बिनतीकरि, प्रभुप्रसन्न जियजानि ॥
नारदबोलेबचनतब, जोरिसरोरुहपानि ॥ ३५ ॥
सुनहुउदार परमरघुनायक * सुंदरअगम सुगम बरदायक
देहु एक बर मागौं स्वामी * जद्यपि जानत अंतरजामी
जानहुमुनितुम्हमोरसुभाऊ * जनसनकबहुँकि करौंदुराऊ
कवनबस्तुअसिप्रियमोहिलागी * जोमुनिवरनसकहुतुम्हमागी
जनकहुँ कछुअदेयनाहिंमोरे * असबिस्वास तजहुजनिभोरे
तब नारद बोले हरषाई * अस बर माँगौं करौं ढिठाई
जद्यपि प्रभुके नाम अनेका * श्रुतिकहअधिक एकतेंएका
रामसकलनामन्हतेअधिका * होउनाथअघषगगनबधिका
दो० राकारजनी भगति तव, रामनाम सोइ सोम ।
अपरनामउडगनबिमल, बसहु भगत उरब्योम ॥
एवमस्तु मुनिसन कहेउ, कृपासिंधु रघुनाथ ।
तबनारदमनहरषअति, प्रभुपदनाएउमाथ ॥ ३६ ॥
अतिप्रसन्न रघुनाथहिजानी * पुनि नारद बोले मृदुबानी
रामजबहिं प्रेरेहु निजमाया * मोहेहुमोहि सुनहु रघुराया
तब बिबाहमैं चाहेंउकीन्हा * प्रभुकेहिकारन करैनदीन्हा
सुनुमुनिकहौं तोहिसहरोसा * भजहिंजेमोहितजिसकलभरोसा
करौं सदा तिन्हकै रषवारी * जिमिबालकहिंराषमहतारी
गहसिसुबच्छअनलअहिधाई * तहँ राषै जननी अरगाई

प्राढभए तेहिसुतपर माता ❀ प्रीतिकरै नहिं पाछिलबाता
मोरे प्रौढ तनय समज्ञानी ❀ बालकसुतसमदासअमानी
जनहिमोरबलनिजबलताही ❀ दुहुँकहँकामक्रोधरिपुआही
एहबिचारिपंडितमोहिभजहीं ❀ पाएहुज्ञानभगतिनहिंतजहीं
दो० कामक्रोध लोभादिमद, प्रबल मोह कै धारि ॥
तिन्हमहँअतिदारुनदुषद, मायारूपीनारि ॥ ३७ ॥
सुनुमुनिकहपुरानश्रुतिसंता ❀ मोहबिपिनकहँ नारि बसंता
जपतप नेम जलास्रय झारी ❀ होइ ग्रीषम सोषै सब नारी
कामक्रोध मदमत्सर भेका ❀ इन्हहिहरष प्रद बरषा एका
दुर्बासना कुमुद समुदाई ❀ तिन्हकहँ सरदसदा सुषदाई
धर्मसकल सरसीरुह वृंदा ❀ होइहिमातिन्हहिदहैसुषमंदा
पुनि ममता जवास बहुताई ❀ पलुहइनारिसिसिर रितुपाई
पापउलूक निकर सुषकारी ❀ नारिनिबिडिरजनीअँधिआरी
बुधिबलसीलसत्यसबमीना ❀ बनसीसमत्रियकहहिंप्रबीना
दो० अवगुन मूल सूल प्रद, प्रमदा सबदुष षानि ॥
ताते कीन्ह निवारन, मुनि मैं यह जियजानि ३८ ॥
सुनिरघुपतिके बचन सुहाए ❀ मुनितनपुलकनयनभरिआए
कहहुकवन प्रभुकै असरीती ❀ सेवकपरम मता अरु प्रीती
जेनभजहिंअसप्रभुभ्रमत्यागी ❀ ग्यानरंकनर मंद अभागी
पुनिसादर बोले मुनिनारद ❀ सुनहुराम बिज्ञान बिसारद
संतन्हके लच्छन रघुबीरा ❀ कहहुनाथ भवभंजनभीरा
सुनुमुनि संतन्हकेगुनकहऊँ ❀ जिन्हते मैं उनके बस रहऊँ
षटबिकारजितअनघअकामा ❀ अचलअकिंचन सुचिसुषधामा
अमितबोधअनीहामितभोगी ❀ सत्यसार कबिकोबिदजोगी

सावधान मानद मद हीना ❁ धीरभक्तिपथ परम प्रबीना

दो० गुनागार संसारदुष, रहित बिगत संदेह ।
तजिममचरनसरोजप्रिय, तिन्हकहँदेहनगेह ॥ ३९ ॥

निजगुनश्रवनसुनत सकुचाहीं ❁ परगुनसुनतअधिकहरषाहीं
समसीतलनहिंत्यागहिंनीती ❁ सरलसुभाउसबहिसनप्रीती
जप तप ब्रतदमसंयम नेमा ❁ गुरगोबिंद बिप्र पद प्रेमा
श्रद्धा छमा मयत्री दाया ❁ मुदितामम पदप्रीतिअमाया
बिरतिबिबेकबिनयबिग्याना ❁ बोध जथारथ बेद पुराना
दंभमानमद करहिं न काऊ ❁ भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
गावहिंसुनहिं सदाममलीला ❁ हेतु रहित परहित रतसीला
मुनिसुनु साधुन्हके गुनजेते ❁ कहिनसकैं सारदश्रुति तेते

छं० कहिसकन सारदशेषनारद सुनत पदपंकज गहे ॥
असदीनबंधुकृपाल अपनेभगतगुननिज मुषकहे ॥
सिरनाइ बारहिबार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारदगए ॥
ते धन्यतुलसीदास आसबिहाइ जेहरि रंगरँए ॥

दो० रावनारि जसपावन, गावहिं सुनहिं जे लोग ।
रामभगति दृढपावहिं, बिनु बिराग जपजोग ॥
दीपसिषासम जुबतितन, मनजानिहोसिपतंग । नवाह ६
भजहिरामतजिकाममद, करहिसदासतसंग ॥ ४० ॥

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलिकलुष बिध्वंसने बिमल
बैराग सम्पादिनी नाम तृतीयः सोपानः समाप्तम् ॥

ग्रंथसंख्या ५६० श्लोक

शुभम् भवतु ।

* शुद्धाशुद्ध पत्र आरण्यकाण्ड १

आरण्यकाण्ड ।

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२५	१०	कहि	कह
३२८	१८	राजा:	राज:
३२९	७	चारा	चारी
३४३	१२	बनक	बकन
३४८	१७	गुनासात	गुनातीत
३५१	१	पाढ़	पौढ़

इति

* श्रीः *

अथ रामायण किष्किन्धाकाण्ड ।

श्रीगणेशायनमः

* श्रीजानकीवल्लभो विजयते *

श्लोक——कुंदेंदीवरसुंदरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ ॥ शोभाढ्यौवर धन्विनौश्रुतिनुतौगोविप्रबृंदप्रियौ ॥ मायामानुषरूपिणौ रघुवरौसद्धर्म वर्म्मौहितौ ॥ सीतान्वेषणतत्परौपथिगतौभक्तिप्रदौतौहिनः ॥ १ ॥ ब्रह्मां भोधिसमुद्भवंकलिमलप्रध्वंशनंचाव्ययं श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुंदरवरेसंशो भितंसर्वदा संसारामयभेषजंसुखकरं श्रीजानकीजीवनं ॥ धन्यास्तेकृतिनः पिवंतिसततं श्रीरामनामामृतं ॥ २ ॥

सो० मुक्तिजन्ममहिजानि, ज्ञानषानि अघहानिकर ॥
जहँबस संभु भवानि, सो कासी सेइय कसन ॥
जरत सकल सुरबृंद, बिषमगरल जेहिंपानकिय ॥
तेहिनभजसिमनमंद, को कृपाल संकर सरिस ॥

आगे चले बहुरि रघुराया * रिष्यमूक पर्वत नियराया
तहँरह सचिवसहित सुग्रीवाँ * आवतदेषि अतुलबलसीवाँ
अतिसभीतकहसुनुहनुमाना * पुरुषजुगलबलरूप निधाना
धरि बटु रूप देषु तैं जाई * कहेसुजानिजियसयनबुझाई
पठए बालि होहिं मन मैला * भागौं तुरततजौं यह सैला
बिप्ररूपधरि कपितहँ गयऊ * माथनाइ पूछतअस भयऊ
को तुम्हस्यामल गौरसरीरा * छत्रीरूप फिरहु बन बीरा

कठिनभूमिकोमलपदगामी ※ कवनहेतु बिचरहु बनस्वामी
मृदुल मनोहर सुंदर गाता ※ सहत दुसहबन आतपबाता
की तुम्ह तीनिदेवमहँ कोऊ ※ नर नारायन कीतुम्ह दोऊ
दो० जग कारन तारन भव, भंजन धरनी भार ॥
कीतुम्हअखिलभुवनपति, लीन्हमनुजअवतार ॥१॥
कोसलेस दसरथके जाए ※ हमपितुबचनमानिबनआए
नामरामलछिमन दोउभाई ※ संगनारि सुकुमारि सुहाई
इहाँ हरी निसिचर वैदेही ※ बिप्रफिराहिं हमषोजत तेही
आपनचरित कहा हम गाई ※ कहहुबिप्रनिज कथा बुझाई
प्रभुपहिचानिपरेउगहिचरना ※ सोसुषउमा जाइनहिंबरना
पुलकिततनमुषआवनबचना ※ देषत रुचिर वेष कै रचना
पुनिधीरजधरिस्तुतिकीन्ही ※ हरषहृदयनिजनाथहिचीन्ही
मोरन्याउ मैं पूछा साँई ※ तुम्हपूछहु कसनरकी नाँई
तबमाया बसफिरौं भुलाना ※ तातें मइँनहिं प्रभुपहिचाना
दो० एक मैं मंद मोहवस, कुटिल हृदय अज्ञान ॥
पुनिप्रभु मोहि बिसारेउ, दीनबंधु भगवान ॥ २ ॥
जदपिनाथ बहु अवगुनमोरे ※ सेवक प्रभुहि परैजनि भोरे
नाथ जीव तव माया मोहा ※ सोनिस्तरै तुम्हारेहि छोहा
तापर मैं रघुबीर दोहाई ※ जानौंनहिं कछुभजनउपाई
सेवक सुतपति मातु भरोसे ※ रहै असोच बनैप्रभु पोसे
असकहिपरेउचरनअकुलाई ※ निजतनप्रगटिपीतिउरछाई
तब रघुपति उठाइ उरलावा ※ निजलोचनजलसींचि जुड़ावा
सुनु कपिजियमानसिजनिऊना ※ तैंममप्रिय लछिमनते दूना

समदरसीमोहिकहसब कोऊ ॥ सेवकप्रियअनन्यगतिसोऊ

दो० सो अनन्य जाके असि, मति नटरइ हनुमंत ।
मैं सेवक सचराचर, रूप स्वामि भगवंत ॥ ३ ॥

देखिपवनसुत पतिअनुकूला ॥ हृदय हरष बीती सबसूला
नाथ सैलपर कपिपति रहई ॥ सो सुग्रीव दासतव अहई
तेहि सननाथ मयत्री कीजे ॥ दीनजानितेहिअभय करीजे
सो सीताकर षोज कराइहि ॥ जहँतहँमरकटकोटि पठाइहि
एहिबिधि सकल कथासमुझाई ॥ लिएदुऔजन पीठि चढ़ाई
जब सुग्रीव राम कहँ देषा ॥ अतिसय जन्मधन्य करिलेषा
सादरामिलेउ नाइ पदमाथा ॥ भेटेउअनुजसहितरघुनाथा
कपिकरमनबिचारएहि रीती ॥ करिहहिंबिधिमोसनएप्रीती

दो० तब हनुमंत उभयदिसि, की सब कथा सुनाइ ।
पावक साषी देइकरि, जोरी प्रीति दृढाइ ॥ ४ ॥

कीन्हिप्रीतिकछुबीचनराषा ॥ लछिमनरामचरितसबभाषा
कहसुग्रीव नयनभरि बारी ॥ मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी
मंत्रिन्हसहित इहाँएकबारा ॥ बैठरहेउँ मैं करत बिचारा
गगन पंथ देषी मैं जाता ॥ परबसपरी बहुत बिलपाता
राम राम हा राम पुकारी ॥ हमहिदेषि दीन्हेउ पटडारी
मागा रामतुरत तेहिंदीन्हा ॥ पटउरलाइसोचअतिकीन्हा
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा ॥ तजहु सोचमन आनहुधीरा
सब प्रकार करिहौं सेवकाई ॥ जेहिबिधि मिलिहिजानकीआई

दो० सषा बचन सुनि हरषे, कृपा सिंधु बल सींव ।
कारन कवन बसहुबन, मोहि कहहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

नाथ बालि अरुमइँ द्वौभाई ❀ प्रीतिरही कछु बरनिन जाई
मयसुत मायावी तेहिनाऊँ ❀ आवासो प्रभु हमरे गाऊँ
अर्द्ध राति पुर द्वार पुकारा ❀ बाली रिपुबल सहैन पारा
धावा बालि देषि सो भागा ❀ मैं पुनिगएउँ बंधु सँगलागा
गिरिबर गुहा पैठ सो जाई ❀ तबबाली मोहि कहाबुझाई
परषेसु मोहि एक पषवारा ❀ नहिंआवौं तबजानेसु मारा
मासदिवस तहँ रहेउँपरारी ❀ निसरीरुधिर धारतहँ भारी
बालिहतेसिमोहिमारिहिआई ❀ सिलादेइ तहँ चलेउँ पराई
मंत्रिन्ह पुर देषा बिनु साँई ❀ दीन्हेउमोहि राजबरिआँई
बाली ताहि मारिगृहआवा ❀ देषिमोहि जियभेद बढावा
रिपुसममोहिमारेसिअतिभारी ❀ हरिलीन्हेसिसर्बस अरुनारी
ताके भय रघुबीर कृपाला ❀ सकलभुवनमइँफिरेउँबिहाला
इहाँ साप बस आवतनाहीं ❀ तदपिसभीत रहौं मनमाहीं
सुनिसेवक दुष दीनदयाला ❀ फरकिउठी द्वैभुजाबिशाला

दो॰ सुनु सुग्रीव मारिहौं, बालिहि एकहि बान।
ब्रह्मरुद्र सरनागत, गएन उबरिहि प्रान॥ ६॥

जेनमित्र दुषहोहिं दुषारी ❀ तिन्हहिबिलोकत पातकभारी
निजदुषगिरिसमरजकरिजाना ❀ मित्रके दुषरजमेरु समाना
तिन्हकेअसिमत सहजनआई ❀ तेसठकतहठि करत मिताई
कुपथनिवारिसुपंथ चलावा ❀ गुनप्रगटइअवगुनन्हिदुरावा
देतलेत मनसंक न धरई ❀ बलअनुमानसदा हितकरई
बिपतिकालकरसतगुननेहा ❀ श्रुतिकह संतमित्र गुनएहा
आगे कहमृदु बचन बनाई ❀ पाछेअनहित मनकुटिलाई

जाकरचितअहिगतिसमभाई ❀ असकुमित्रपरिहरेहिभलाई
सेवकसठ नृपकृपिन कुनारी ❀ कपटी मित्र सूलसम चारी
सषासोच त्यागहु बल मोरें ❀ सबविधिघटब काज मैं तोरें
कहसुग्रीव सुनहु रघुबीरा ❀ बालिमहाबल अतिरनधीरा
दुंदुभि अस्थिताल देषराए ❀ बिनप्रयास रघुनाथ ढहाये
देषि अमितबल बाढीप्रीती ❀ बालिबधब इन्हभइपरतीती
बारबार नावइ पद सीसा ❀ प्रभुहिजान मनहरषकपीसा
उपजाज्ञान बचन तब बोला ❀ नाथकृपामन भएउअलोला
सुषसंपति परिवार बडाई ❀ सबपरिहरि करिहौं सेवकाई
एसब रामभगति के बाधक ❀ कहहिं संततबपदअवराधक
सत्रुमित्र सुषदुष जगमाहीं ❀ मायाकृत परमारथ नाहीं
बालिपरमहित जासुप्रसादा ❀ मिलेहुरामतुम्हसमनबिषादा
सपने जेहिसन होइ लराई ❀ जागे समुझत मन सकुचाई
अबप्रभुकृपाकरहुएहिभाँती ❀ सबतजिभजनकरौंदिनराती
सुनिबिरागसंजुतकपिबानी ❀ बोले बिहँसि रामधनु पानी
जोकछुकहेहु सत्य सब सोई ❀ सषाबचन मम मृषानहोई
नटमर्कट इवसबहिनचावत ❀ राम षगेसबेद अस गावत
लैसुग्रीव संग रघुनाथा ❀ चले चाप सायक गहिहाथा
तब रघुपति सुग्रीव पठावा ❀ गर्जेसिजाइ निकटबलपावा
सुनतबालि क्रोधातुर धावा ❀ गहिकरचरन नारिसमुझावा
सुनुपतिजिन्हहिमिलेउसुग्रीवाँ ❀ तेद्वौबंधु तेजबल सींवाँ
कोसलेससुत लछिमनरामा ❀ कालहुजीति सकहिंसंग्रामा

दो० कहबाली सुनुभीरुप्रिय, समदरसी रघुनाथ।
जौंकदाचि मोहि मारिहिं, तौपुनि होवसनाथ ॥ ७ ॥

असकहिचलामहाअभिमानी ❀ तृनसमान सुग्रीवहिं जानी
भिरे उभौ बाली अतितर्जा ❀ मुठिकामारिमहाधुनिगर्जा
तब सुग्रीवँ बिकलहोइभागा ❀ मुष्टिप्रहार बज्र सम लागा
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला ❀ बंधुनहोइ मोर यह काला
एक रूप तुम्ह भ्राता दोऊ ❀ तेहिभ्रमतेनहिं मारेउँसोऊ
करपरसा सुग्रीव सरीरा ❀ तनुभा कुलिस गई सब पीरा
मेली कंठ सुमन कै माला ❀ पठवापुनिबल देइ बिसाला
पुनि नाना बिधि भई लराई ❀ बिटप ओट देषहिं रघुराई

दो॰ बहुछल बल सुग्रीवकर, हिय हारा भय मानि ॥
मारा बालिहि राम तब, हृदय माँझ सरतानि ॥ ८ ॥

परा बिकल महिसरके लागे ❀ पुनिउठि बैठदेषिप्रभुआगे
स्यामगात सिर जटाबनाए ❀ अरुननयन सरचाप चढाए
पुनि२ चितैचरनचितदीन्हा ❀ सुफलजन्ममानाप्रभुचीन्हा
हृदयप्रीति मुषबचनकठोरा ❀ बोला चितै रामकी ओरा
धर्म हेतु अवतरेहु गोसाँई ❀ मारेहु मोहि ब्याधकी नाँई
मैं बैरी सुग्रीवँ पियारा ❀ अवगुनकवननाथमोहिमारा
अनुजबधू भगिनीसुतनारी ❀ सुनुसठ कन्यासम ए चारी
इन्हहिकुदृष्टि बिलोकै जोई ❀ ताहि बधे कछु पाप न होई
मूढतोहिअतिसयअभिमाना ❀ नारिसिषावनकरसिनकाना
ममभुजबलआश्रिततेहिजानी ❀ माराचहसिअधम अभिमानी

दो॰ सुनहुराम स्वामी सन, चलन चातुरी मोरि ॥
प्रभुअजहूँ मैं पापी, अंत काल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनतराम अतिकोमल बानी * बालिसीस परसेउ निजपानी
अचल करौं तन राखहु प्राना * बालि कहा सुनु कृपानिधाना
जन्मजन्म मुनि जतन कराहीं * अंत राम कहि आवत नाहीं
जासु नाम बल संकर कासी * देत सबहिं समगति अबिनासी
मम लोचन गोचर सोइ आवा * बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा

छं० सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं
मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरहीं
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरहीं
अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊँ
जेहि जोनि जन्मौं कर्म बस तहँ रामपद अनुरागऊँ
यह तनय मम सम बिनय बल कल्यानप्रद प्रभु लीजिए
गहि बाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए

दो० रामचरन दृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनत्याग ॥
सुमनमाल जिमि कंठतें, गिरत न जानै नाग ॥ १० ॥

राम बालि निजधाम पठावा * नगर लोग सब ब्याकुल धावा
नाना बिधि बिलाप कर तारा * छूटे केस न देह सँभारा
तारा बिकल देखि रघुराया * दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया
छिति जल पावक गगन समीरा * पंच रचित अति अधम सरीरा
प्रगट सो तन तव आगे सोवा * जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा
उपजा ज्ञान चरन तब लागी * लीन्हेसि परम भगति बर मांगी
उमा दारु जोषित की नाईं * सबहिं नचावत राम गोसाईं
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा * मृतक कर्म बिधिवत सब कीन्हा

रामकहाअनुजहि समुझाई ❋ राज देहु सुग्रींवहिं जाई
रघुपतिचरननाइकरिमाथा ❋ चले सकल प्रेरित रघुनाथा
दो० लछिमन तुरत बोलाए, पुरजन बिप्र समाज ॥
राजदीन्ह सुग्रींवकहँ, अंगद कहँ जुवराज ॥
उमारामसमहित जगमाहीं ❋ गुरपितुमातु बंधु प्रभुनाहीं
सुरनरमुनि सबके यह रीती ❋ स्वारथलागि करहिंसबप्रीती
बालित्रासब्याकुलदिनराती ❋ तनबहुब्रन चिंताजरछाती
सोइसुग्रींव कीन्ह कपिराऊ ❋ अतिकृपाल रघुबीर सुभाऊ
जानतहू असप्रभुपरि हरहीं ❋ काहे नबिपतिजालनरपरहीं
पुनिसुग्रींवहिं लीन्हबोलाई ❋ बहुप्रकार नृपनीति सिषाई
कहप्रभु सुनुसुग्रीव हरीसा ❋ पुरनजाउँ दसचारि बरीसा
गतग्रीषम बरषारितु आई ❋ रहिहौं निकट सैलपर छाई
अंगद सहितकरहु तुम्हराजू ❋ संततहृदय धरेहु ममकाजू
जब सुग्रींवभवनफिरिआए ❋ राम प्रबरषण गिरिपरछाए
दो० प्रथमहिं देवन्हगिरिगुहा, राषेउ रुचिर बनाइ ॥
राम कृपानिधि कछुदिन, बासकरहिंगेआइ ॥१२॥
सुंदरबन कुसमित अतिसोभा ❋ गुंजतमधुप निकरमधुलोभा
कंद मूल फल पत्र सुहाए ❋ भए बहुत जबते प्रभुआए
देषि मनोहर सैल अनूपा ❋ रहे तहँअनुजसहितसुरभूपा
मधुकरषगमृगतन धरिदेवा ❋ करहिंसिद्धमुनि प्रभुकीसेवा
मंगलरूप भएउ बन तबतें ❋ कीन्हानिवासरमापति जबतें
फटिकसिलाअतिसुभ्रसुहाई ❋ सुष आसीन तहाँ द्वौभाई
कहतअनुजसनकथाअनेका ❋ भगतिबिरतिनृप नीतिबिबेका

बरषा काल मेघ नभछाये * गरजत लागतपरम सुहाए
दो० लछिमन देषु मोर गन, नाचत वारिद पेषि ॥
गृही।बिरतिरतहरषजस, बिष्णुभगतकहँदेषि ॥ १३ ॥
घन घमंडनभगरजत घोरा * प्रियाहीन डरपत मनमोरा
दामिनिदमकरहनघनमाहीं * पलकैप्रीति जथा थिरनाहीं
बरषाहिंजलदभूमि निअराए * जथानवहिं बुधविद्या पाए
बूँदअघात सहहिं गिरि कैसे * पलके बचनसंत सहजैसे
छुद्रनदी भरि चली तोराई * जसथोरेहु धनपल इतराई
भूमि परत भाढाबर पानी * जनुजीवहि माया लपटानी
समिटिसमिटि जलभरहिंतलावा * जिमिसदगुनसज्जन पहिंआवा
सरिताजलजलनिधिमहुजाई * होइअचलजिमिजिव हरिपाई
दो० हरित भूमित्रिन संकुल, समुझि परहि नहिं पंथ ॥
जिमि पाषंड बादतें, गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥ १४ ॥
दादुर धुनि चहुँदिसा सुहाई * बेदपढहिं जनुबटु समुदाई
नवपल्लवभएबिटपअनेका * साधकमनजसमिलेबिबेका
अर्क जवासपातबिनु भएऊ * जससुराजषल उद्यम गयऊ
षोजतकतहुँमिलइ नहिंधूरी * करैक्रोध जिमिधरमहि दूरी
ससिसंपन्न सोहमहि कैसी * उपकारी के संपति जैसी
निसितमघनषद्योत बिराजा * जनुदंभिन्हकरमिला समाजा
महावृष्टिचलिफूटि किआरी * जिमिस्वतंत्रभयेबिगरहिनारी
कृषीनिरावहिंचतुर किसाना * जिमिबुधतजहिं मोहमदमाना
देषियत चक्कबाकषग नाहीं * कलिहिपाइजिमिधर्मपराहीं
ऊसर बरषै तृन नहिं जामा * जिमिहरिजन हियउपजनकामा

विविधजंतुसंकुलमहिभ्राजा ❋ प्रजाबाढजिमिपाइ सुराजा
जहँ तहँरहेपाथिकथाकिनाना ❋ जिमिइंद्रियगन उपजेज्ञाना

दो० कबहुँ प्रबल बहमारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ॥
जिमि कपूतके उपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं ॥
कबहुँदिवसमहँनिबिडतम, कबहुँक प्रगट पतंग ॥
बिनसइउपजइज्ञानजिमि, पाइ कुसँग सुसंग ॥१५॥

बरषा बिगत सरद रितुआई ❋ लछिमन देषहु परम सुहाई
फूलेकास सकल महिछाई ❋ जनुबरषा कृत प्रगट बुढाई
उदितअगास्तिपंथजलसोषा ❋ जिमिलोभहिसोषइ संतोषा
सरितासर निर्मल जलसोहा ❋ संतहृदयजस गतमद मोहा
रसरस सूषसरित सर पानी ❋ ममतात्यागकरहिंजिमिज्ञानी
जानि सरदरितु षंजन आए ❋ पाइसमयजिमिसुकृतसुहाए
पंकनरेनु सोहअसि धरनी ❋ नीतिनिपुननृपकेजसिकरनी
जलसंकोचबिकल भइमीना ❋ अबुधकुटुंबीजिमिधनहीना
बिनुघननिर्मलसोहअकासा ❋ हरिजनइवपरिहरिसबआसा
कहुँ कहुँ बृष्टिसारदी थोरी ❋ कोउएकपावभगतिजिमिमोरी

दो० चले हरषितजिनगरनृप, तापसबनिक भिषारि ॥
जिमिहरि भगतिपाइस्रम, तजहिंआश्रमीचारि॥१६॥

सुषीमीन जेनीर अगाधा ❋ जिमिहरिसरननएकौ बाधा
फूले कमल सोहसर कैसा ❋ निर्गुन ब्रह्मसगुन भएजैसा
गुंजत मधुकर मुषर अनूपा ❋ सुंदर षगरव नाना रूपा
चक्र बाकमन दुषनिसिपेषी ❋ जिमिदुर्जन परसंपति देषी
चातकरटततृषा अतिओही ❋ जिमिसुषलहइनसंकरद्रोही

सरदातपनिसिससिअप हरई * संतदरस जिमिपातक टरई
देषिइंदु चकोर समुदाई * चितवहिंजिमि हरिजनहरिपाई
मसक दंसबीते हिम त्रासा * जिमिद्विजद्रोह किएकुलनासा
दो० भूमिजीव संकुल रहे, गएसरद रितुपाइ ॥ मा० ष० २१
सदगुर मिलेजाहिंजिमि, संसय भ्रमसमुदाइ ॥१७॥
बरषागत निर्मल रितुआई * सुधिन तात सीताकै पाई
एकबार कैसेहुँ सुधि जानौं * कालहु जीति निमिषमहँआनौं
कतहुँ रहौजौं जीवति होई * तातजतन करि आनौंसोई
सुग्रीवहुसुधि मोरि बिसारी * पावा राज कोसपुर नारी
जेहि सायक मारामैं बाली * तेहिसर हतहुँमूढ कहँकाली
जासुकृपा छूटहिं मदमोहा * ताकहुँउमा किसपनेहुकोहा
जानहिंयहचरित्रमुनिज्ञानी * जिन्हरघुबीरचरनरतिमानी
लछिमनक्रोधवंतप्रभुजाना * धनुष चढाइ गहेकर बाना
दो० तब अनुजहि समुझावा, रघुपति करुना सींव ॥
भयदेषाइ लैआवहु, तातसषा सुग्रीव ॥ १८ ॥
इहाँ पवनसुत हृदयबिचारा * रामकाज सुग्रीव बिसारा
निकटजाइचरनन्हिसिरनावा * चारिहुबिधितेहिकहिसमुझावा
सुनिसुग्रीवँ परम भयमाना * बिषयमोरहरिलीन्हेउज्ञाना
अबमारुत सुत दूत समूहा * पठवहु जहँतहँ बानर जूहा
कहहु पाषमहँ आवन जोई * मोरे कर ताकर बध होई
तब हनुमंत बोलाए दूता * सबकरकरि सनमान बहूता
भएअरु प्रीतिनीति देषराई * चलेसकलचरनन्हि सिरनाई
एहिअवँसरलछिमनपुरआए * क्रोधदेषि जहँतहँ कपिधाए

दो० धनुष चढ़ाइ कहा तब, जारि करौं पुरछार ॥
व्याकुल नगर देषि तब, आएउ बालिकुमार ॥१९॥

चरननाइसिरबिनतीकीन्ही * लछिमनअभय बांहतेहिदीन्ही
क्रोधवंतलछिमनसुनिकाना * कहकपीसअतिभयअकुलाना
सुनु हनुमंत संग लै तारा * करिबिनतीसमुझाउकुमारा
तारा सहित जाइ हनुमाना * चरनबंदिप्रभु सुजस बषाना
करि बिनती मंदिर लै आए * चरन पषारि पलंग बैठाए
तबकपीसचरनन्हिसिरनावा * गहिभुजलछिमनकंठलगावा
नाथबिषयसममदकछुनाहीं * मुनिमनमोह करैछनमाहीं
सुनतबिनीतबचनसुषपावा * लछिमनतेहिबहुबिधिसमझावा
पवनतनय सबकथा सुनाई * जेहि बिधिगए दूत समुदाई

दो० हरषि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपिसाथ ।
रामानुज आगेकरि, आए जहँ रघुनाथ ॥ २० ॥

नाइचरन सिर कहकरजोरी * नाथमोहि कछुनाहिंनषोरी
अतिसय प्रबलदेवतबमाया * छूटहिराम करहु जौं दाया
बिषयबस्यसुरनरमुनि स्वामी * मैंपाँवरपसुकपिअतिकामी
नारिनयनसरजाहिन लागा * घोरक्रोधतमनिसिजोजागा
लोभपासजेहिगरन बधाया * सोनरतुम्ह समान रघुराया
यहगुन साधनतें नहि होई * तुम्हरीकृपा पाव कोइ कोई
तब रघुपति बोले मुसकाई * तुम्हप्रियमोहिभरतजिमिभाई
अबसोइजतनकरहुमनलाई * जेहि बिधिसीताकैसुधिपाई

दो० एहिबिधि होत बतकही, आए बानर जूथ ।
नानाबरन सकल दिसि, देषिअ कीस बरूथ ॥२१॥

बानर कटक उमा मैं देषा * सोमूरष जो करन चह लेषा
आइराम पदनावहिं माथा * निरषिबदनसबहोहिंसनाथा
असकपि एकन सेनामाहीं * रामकुसल जेहि पूछी नाहीं
यहकछुनहिंप्रभुकइअधिकाई * बिस्वरूप ब्यापक रघुराई
ठाढे जहँ तहँ आयसु पाई * कहसुग्रीव सबहि समुझाई
रामकाज अरु मोर निहोरा * बानर जूथजाहु चहुँ ओरा
जनकसुता कहँ षोजहु जाई * मासदिवसमहँ आएहु भाई
अवधिमेटिजोबिनुसुधिपाए * आवइबनिहिसो मोहिमराए

दो॰ बचन सुनत सब बानर, जहँ तहँ चले तुरंत ॥
तबसुग्रीव बोलाए, अंगद नल हनुमंत ॥२२॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना * जामवंत मतिधीर सुजाना
सकलसुभटमिलिदच्छिनजाहू * सीतासुधि पूँछेहु सब काहू
मनक्रमबचनसोजतनबिचारेहु * रामचंद्र कर काज सँवारेहु
भानुपीठि सेइअ उरआगी * स्वामिहिसर्बभावछलत्यागी
तजिमाया सेइअ परलोका * मिटहिंसकलभवसंभवसोका
देहधरे कर यह फल भाई * भजिअराम सबकामबिहाई
सोइ गुनज्ञ सोई बड भागी * जो रघुबीर चरन अनुरागी
आयसुमागि चरन सिरनाई * चले हरषि सुमिरत रघुराई
पाछेपवन तनय सिरनावा * जानिकाजप्रभुनिकटबोलावा
परसा सीस सरोरुह पानी * करमुद्रिका दीन्ह सहिदानी
बहुप्रकार सीतहि समुझाएहु * कहिबलबिरहबेगितुम्हआएहु
हनुमतजन्मसुफलकरिमाना * चलेउहृदयधरिकृपानिधाना
जद्यपिप्रभु जानत सबबाता * राजनीति राषत सुरत्राता

दो० चले सकल बन षोजत, सरिता सरगिरि षोह ॥
रामकाज लयलीन मन, बिसरातनकरछोह ॥ २३ ॥

कतहुँ होइनिसिचर सें भेंटा * प्रानलेहिं एक एक चपेटा
बहुप्रकारगिरिकानन हेरहिं * कोउमुनिमिलिइताहिसबघेरहिं
लागितृषाअतिसयअकुलाने * मिलैनजल घनगहन भुलाने
मनहनुमानकीन्हअनुमाना * मरनचहतसबबिनुजलपाना
चढिगिरिसिषरचहूँदिसिदेषा * भूमिबिबर एक कौतुक पेषा
चक्रबाक बकहंस उडाहीं * बहुतकषगप्रबिसहिंतेहिमाहीं
गिरितेउतरिपवनसुतआवा * सबकहलै सोइ बिबर देषावा
आगे कै हनुमंतहि लीन्हा * पैठेबिबर बिलंब न कीन्हा

दो० दीषि जाइ उपबन बर, सरबिगसित बहु कंज ॥
मंदिर एकरुचिर तहँ बैठिनारितप पुंज ॥ २४ ॥

दूरितेताहिसबन्हिसिरनावा * पूछे निज बृत्तांत सुनावा
तेहितब कहाकरहुजलपाना * षाहु सुरससुंदर फल नाना
मज्जनकीन्हमधुरफलषाए * तासुनिकटपुनिसबचलिआए
तेहिंसब आपनिकथासुनाई * मैं अबजाब जहाँ रघुराई
मूँदहुनयन बिबर तजिजाहू * पैहहु सीतहि जनिपछिताहू
नयन मूँदिपुनि देषहिं बीरा * ठाढे सकल सिंधुके तीरा
सोपुनिगई जहाँ रघुनाथा * जाइकमलपद नाएसिमाथा
नाना भाँतिबिनयतेहिंकीन्ही * अनपायनी भगतिप्रभुदीन्ही

दो० बदरीबन कहँ सोगई, प्रभु आज्ञा धरिसीस ॥
उर धरिराम चरन जुग, जेबंदत अज ईस ॥ २५ ॥

इहाँबिचारहिं कपिमनमाहीं * बीतीअवधि काजकछुनाहीं

सबमिलिकहहिंपरसपरबाता * बिनुसुधिलिएकरबका भ्राता
कह अंगद लोचनभरि बारी * दुहुप्रकार भइमृत्यु हमारी
इहाँ नसुधि सीता कै पाई * उहाँगए मारिहिं कपिराई
पिता बधे पर मारत मोहीं * राषा राम निहोरन ओहीं
पुनिपुनिअंगद कहसबपाहीं * मरनभएउकछुसंसय नाहीं
अंगदबचन सुनत कपिबीरा * बोलिनसकहिंनयनबहनींरा
छनएकसोच मगनहोइ गए * पुनिअसबचनकहतसब भए
हमसीताकैसुधिलीन्हे बिना * नाहिं जैहैं जुबराज प्रबीना
असकहिलवनासिंधुतटजाई * बैठेकपि सब दर्भ डसाई
जामवंत अंगद दुष देषी * कहीकिथा उपदेस बिसेषी
तातराम कहँनरजानिमानहु * निर्गुनब्रह्मअजितअजजानहु
हमसबसेवकअतिबडभागी * संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी

दो० निजइच्छा प्रभुअवतरइ, सुरमहि गोद्विजलागि ॥
सगुन उपासकसंगतहँ, रहहिंमोच्छसबत्यागि ॥२६॥

एहिबिधिकहहिंकथाबहुभांती * गिरि कंदरा सुनी संपाती
बाहेर होइ देषि बहु कीसा * मोहिअहारदीन्ह जगदीसा
आजसबहिकहँ भछनकरऊँ * दिनबहुचलेउअहारबिनमरऊँ
कबहुँनामिलैभरिउदर अहारा * आजदीन्हबिधिएकहिबारा
डरपे गीधबचनसुनि काना * अबभा मरनसत्यहमजाना
कपिसब उठे गीधकहँ देषी * जामवंत मनसोच बिसेषी
कहअंगद बिचारिमनमाहीं * धन्यजटायूसम कोउनाहीं
रामकाज कारन तनत्यागी * हरिपुरगएउपरम बडभागी
सुनिषगहरषसोकजुतबानी * आवानिकटकपिन्ह भयमानी

तिन्हहिअभयकरिपूछेसिजाई ❋ कथासकलतिन्हताहिसुनाई
सुनि संपाति बंधुकै करनी ❋ रघुपतिमहिमाबहुबिधिबरनी
दो० मोहिलै जाहु सिंधुतट, देउँतिलाँजलिताहि ॥
बचन सहाइ करबि मइँ, पैहहु षोजहु जाहि ॥२७॥
अनुजक्रियाकरिसागरतीरा ❋ कहिनिजकथासुनहुकपिबीरा
हमद्वौ बंधु प्रथम तरुनाई ❋ गगनगएरबिनिकट उडाई
तेजनसहिसकसोफिरिआवा ❋ मैंअभिमानीरबिनिअरावा
जरेपंष अतितेज अपारा ❋ परेउँ भूमिकरिघोरचिकारा
मुनिएक नाम चंद्रमाओही ❋ लागीदया देखिकरि मोही
बहुप्रकारतेहिं ज्ञान सुनावा ❋ देहजनितअभिमानछडावा
त्रेता ब्रह्म मनुज तनधरिही ❋ तासुनारिनिसिचरपतिहरिही
तासुषोज पठइहि प्रभु दूता ❋ तिन्हहिं मिलेतें होबपुनीता
जमिहहिंपंषकरसिजनिचिंता ❋ तिन्हहिं देषाइदिहेसुतेंसीता
मुनिकइगिरासत्यभइआजू ❋ सुनिममबचनकरहुप्रभु काजू
गिरित्रिकूट ऊपर बसलंका ❋ तहँरह रावन सहज असंका
तहँ असोकउपबन जहँरहई ❋ सीता बैठि सोचरत अहई
दो० मैंदेषउँ तुम्ह नाहीं, गीधहि दृष्टि अपार ॥
बूढभएऊँ नत करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार ॥२८॥
जोनाघै सतयोजन सागर ❋ करैसो रामकाजमतिआगर
मोहिंबिलोकिधरहुमनधीरा ❋ रामकृपा कस भएउसरीरा
पापिउ जाकरनामसुमिरहीं ❋ अतिअपार भवसागरतरहीं
तासुदूत तुम्हताजि कदराई ❋ रामहृदय धरि करहु उपाई
असकहिगरुडगीध जबगयऊ ❋ तिन्हकेमनअति बिसमयभयऊ

निजनिजबलसबकाहूभाषा * पार जाइकै संसय राषा
जरठभएउँ अब कहौरिछेसा * नहिंतनरहा प्रथम बललेसा
जबहिं त्रिविक्रमभए खरारी * तबमैं तरुन रहेउँ बलभारी

दो० बलिबाँधत प्रभुबाढेउ, सोतन बरनि न जाइ ।
उभयघरी महदीन्ही, सातप्रदछिन धाइ ॥ २९ ॥

अंगदकहै जाउँ मैं पारा * जियसंसयकछु फिरतीबारा
जामवंतकहतुम्हसबलायक * पठइअकिमिसबहीकरनायक
कहइ रीछपतिसुनुहनुमाना * काचपसाधि रहेहु बलवाना
पवनतनयबलपवनसमाना * बुधिबिबेकविज्ञान निधाना
कवनसोकाजकठिनजगमाहीं * जोनाहिहोइ तात तुम्ह पाहीं
रामकाज लगितवअवतारा * सुनतहिं भयउ पर्वताकारा
कनकबरनतनतेज बिराजा * मानहुअपरगिरिन्हकरराजा
सिंहनाद करि बारहिबारा * लीलहिनाघउँजलनिधिषारा
सहितसहाय रावनहिमारी * आनौं इहाँ त्रिकूट उपारी
जामवंत मैं पूँछउँ तोही * उचित सिषावन दीजहुमोही
एतनाकरहु तात तुम्हजाई * सीतहि देषि कहहुसुधिआई
तबनिजभुजबलराजिवनैना * कउतुकलागिसंगकपिसयना

छं० कपिसेनसंगसँघारि निसिचर रामसीतहि आनिहैं ॥
त्रैलोक पावन सुजस सुरमुनिनारदादि बषानिहैं ॥
जोसुनतगावत कहतसमुझत परमपदनर पावई ॥
रघुबीर पदपाथोजमधुकर दासतुलसी गावई ॥

दो० भवभेषजरघुनाथजस, सुनहिंजेनरअरुनारि ।
तिन्हकरसकलमनोरथ, सिद्धकरहिंत्रिपुरारि ॥

सो० नीलोत्पलतनस्याम, कामकोटि सोभाअधिक ॥
सुनियतासुगुनग्राम, जासुनामअघषगबधिक ॥३०॥

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने विसुद्ध संतोष सम्पादिनी नाम चतुर्थ सोपानः समाप्तः ॥

ग्रंथसंख्या ३०९

शुभम् ।

❀ श्रीः ❀

अथ रामायण सुन्दरकाण्ड ।

श्रीगणेशायनमः

❀ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❀

श्लोक—शांतंसाश्वतमप्रमेयमनघं गीर्वाणशांतिप्रदं ॥ ब्रह्माशंभुफणींद्र सेव्यमनिशंबेदान्तवेद्यंबिभुं ॥ रामाख्यं जगदीश्वरंसुरगुरुंमायामनुष्यंहरिं बंदेहंकरुणाकरंरघुबरंभूपालचूडामणिं ॥ १ ॥ नान्यास्पृहारघुपतेहृदयेस्म दीये। सत्यं बदामिचभवानखिलांतरात्मा ॥ भक्तिंप्रयच्छरघुपुंगवनिर्भरामे। कामादिदोषरहितंकुरुमानसंच ॥ २ ॥ अतुलितबलधामंस्वर्णसैलाभदेहं। दनुजबनकृशानुंग्यानिनामग्रगण्यं ॥ सकलगुणनिधानंबानराणामधीशं ॥ रघुपतिबरदूतंवातजातंनमामि ॥ ३ ॥

जामवंतके बचन सुहाये ❀ सुनि हनुमन्तहृदय अतिभाये
तबलगिमोहितुम्हपरिखहुभाई ❀ सहिदुष कंदमूल फलषाई
जबलगि आवों सीतहिदेषी ❀ होइकाजमोहि हरष बिसेषी
असकहिनाइसबन्हिकहँमाथा ❀ चलेउहरषिहियधरिरघुनाथा
सिंधुतीर एक भूधर सुंदर ❀ कौतुककूदि चढेउता ऊपर
बारबार रघुबीर सँभारी ❀ तरकेउपवनतनय बलभारी
जेहिंगिरिचरन देइहनुमंता ❀ चलेउसोगा पाताल तुरंता
जिमिअमोघरघुपतिकरबाना ❀ एहीभाँति चला हनुमाना
जलनिधिरघुपतिदूतबिचारी ❀ तैं मैनाक होइ श्रमहारी
दो० हनूमानतेहि परसा, करपुनिकीन्ह प्रनाम ॥
रामकाज कीन्हेबिनु, मोहिंकहाँ बिश्राम ॥ १ ॥

जातपवन सुत देवन्ह देषा * जानै कहं बल बुद्धि बिसेषा
सुरसानाम अहिनके माता * पठइन्हिआइ कही तिहिबाता
आजसुरन्हमोहिदीन्हअहारा * सुनतबचनकहपवनकुमारा
रामकाज करि फिरिमै आवौं * सीताकइसुधिप्रभुहि सुनावौं
तबतुअबदन पइठिहौं आई * सत्यकहौं मोहिजान देमाई
कवनेहुजतनदेइ नहिंजाना * ग्रससिनमोहिकहेउहनुमाना
जोजनभरितेहिंबदनपसारा * कपितनकीन्हदुगुनाबिस्तारा
सोरहजोजनमुषतेहिं ठएऊ * तुरतपवनसुतबात्तिस भयऊ
जसजससुरसा बदनबढावा * तासुदून कपिरूप देषावा
सतजोजनतेहिंआननकीन्हा * अतिलघुरूपपवनसुतलीन्हा
बदनपइठपुनि बाहरआवा * मागा बिदाताहि सिरनावा
मोहिसुरन्हजेहिलागि पठावा * बुधिबल मरमतोर मैं पावा

दो॰ रामकाज सब करिहहु, तुम्ह बलबुद्धि निधान॥
आसिष देइ गईसो, हरषि चलेउ हनुमान॥ २॥

निसिचरिएकसिंधु महरहई * करि मायानभके षग गहई
जीव जंतुजे गगन उडाहीं * जलबिलोकितिन्ह केपरिछाहीं
गहै छाँह सकसोन उडाई * एहिबिधि सदागगनचरषाई
सोइछलहनूमानकहँकीन्हा * तासुकपटकपितुरतहि चीन्हा
ताहिमारि मारुत सुतबीरा * बारिधि पारगएउमतिधीरा
तहाँ जाइ देषी बन सोभा * गुंजत चंचरीक मधु लोभा
नाना तरु फल फूल सुहाए * षगमृग बृंद देषि मन भाए
सैल बिसाल देखियकआगें * तापर धाइचढेउ भयत्यागें
उमानकछुकपिकेअधिकाई * प्रभुप्रताप जो कालहि षाई

गिरिपरचढ़िलंका तेहिंदेषी * कहिनजाइ अतिदुर्गविसेषी
अतिउतंग जलनिधिचहुँपासा * कनक कोटकरपरमप्रकासा

छं० कनक कोट बिचित्रमनि कृतसुंदरायत अतिघना ॥
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारुपुर बहु बिधिबना ॥
गजबाजिषच्चर निकरपदचर रथबरूथन्हिकोगनै ॥
बहुरूपनिसिचरजूथ अतिबलसेन बरनतनहिबनै ॥
बनबाग उपबन बाटिका सरकूप बापी सोहहीं ॥
नरनाग सुरगंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुँमाल देह बिसाल सैलसमान अतिबलगर्जहीं ॥
नानाअषारेन्ह भिरहिंबहुबिधि एकएकन्हतर्जहीं ॥
करिजतनभटकोटिन्हबिकटतननगरचहुँदिसिरछहीं
कहुँमहिषमानुषधेनुषर अजषलनिसाचरभछहीं ॥
एहिलागितुलसीदास इन्हकीकथाकछु एकहैकही ॥
रघुबीर सरतीरथ सरीरन्हि त्यागिगतिपैहहिंसही ॥

दो० पुररषवारे देषिबहु, कपिमन कीन्ह बिचार ॥
अति लघुरूप धरौंनिसि, नगर करौं पइसार ॥ ३ ॥

मसक समान रूपकपिधरी * लंकहिचलेउसुमिरि नरहरी
नामलंकिनी एक निसिचरी * सोकहचलेसि मोहि निंदरी
जानेहिं नहींमरम सठमोरा * मोरअहार लंक कर चोरा
मुठिका एकमहा कपि हनी * रुधिरबमत धरनी ढनमनी
पुनि संभारि उठी सो लंका * जोरिपानिकरबिनयससंका
जबरावनहि ब्रह्मबर दीन्हा * चलताबिरंचिकहामोहिंचीन्हा
बिकल होसितैं कपिकेंमारें * तबजानेसु निसिचर संघारें

तात मोर अति पुन्य बहूता ❋ देषेउँ नयन रामकर दूता

दो० तातस्वर्ग अपबर्ग सुष, धरियतुला एक अंग ॥
तूलन ताहि सकल मिलि, जो सुष लवसतसंग ॥ ४ ॥

प्रबिसिनगरकीजे सबकाजा ❋ हृदयराषि कोसल पुरराजा
गरल सुधा रिपुकरैं मिताई ❋ गोपदसिंधुअनल सितलाई
गरुड सुमेरु रेनु सम ताही ❋ रामकृपाकरि चितवाजाही
अतिलघुरूप धरेउ हनुमाना ❋ पैठानगर सुमिरिभगवाना
मंदिर मंदिर प्रतिकरि सोधा ❋ देषे जहँतहँ अगनित जोधा
गएउदसानन मंदिर माहीं ❋ अतिबिचित्रकहिजातसोनाहीं
सयन किए देषा कपि तेही ❋ मंदिर महँ न दीष बैदेही
भवन एक पुनिदीष सोहावा ❋ हरिमंदिर तहँ भिन्नबनावा

दो० रामायुध अंकित गृह, सोभा बरानिन जाइ ।
नव तुलसिका बृंदतहँ, देषिहरष कपिराइ ॥ ५ ॥

लंकानिसिचरनिकरनिवासा ❋ इहाँ कहाँ सज्जनकरबासा
मनमहँ तरककरैकपिलागा ❋ तेहीं समय बिभीषन जागा
रामरामतेहिंसुमिरनकीन्हा ❋ हृदयहरषकपिसज्जनचीन्हा
एहिसनहठिकरिहौं पहिचानी ❋ साधुते होइन कारज हानी
बिप्ररूप धरि बचन सुनाए ❋ सुनतबिभीषन उठितहँआए
करिप्रनाम पूँछी कुसलाई ❋ बिप्रकहहुनिजकथा बुझाई
की तुम्हहरिदासन्हमहँकोई ❋ मोरेंहृदय प्रीति अति होई
की तुम्हराम दीन अनुरागी ❋ आएहुमोहि करनबडभागी

दो० तब हनुमंत कही सब, राम कथा निजनाम ॥
सुनत जुगलतन पुलकमन, मगनसुमिरिगुनग्राम ॥ ६ ॥

सुनहुपवन सुतरहनि हमारी * जिमिदसनन्हि महजीभविचारी
तातकबहुँमोहिजानिअनाथा * करिहहिंकृपाभानुकुलनाथा
तामस तनकछुसाधननाहीं * प्रीतिनपद सरोजमनमाहीं
अबमोहिभाभरोस हनुमंता * बिनुहरिकृपामिलहिं नहिसंता
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा * तौतुन्हमोहिदरसहठिदीन्हा
सुनहुबिभीषन प्रभुकइरीती * करहिंसदा सेवक परप्रीती
कहहुकवनमैं परम कुलीना * कपिचंचलसबहींबिधिहीना
प्रात लेइ जो नाम हमारा * तेहिदिनताहिनामिलैअहारा
दो० असमैं अधम सषासुनु, मोहूपर रघुबीर ॥
कीन्ही कृपासुमिरिगुन, भरे बिलोचन नीर ॥ ७ ॥
जानतहूअसस्वामि बिसारी * फिरहिंते काहेनहोहिंदुषारी
एहिबिधिकहतरामगुनग्रामा * पावा आनिर्बाच्य बिश्रामा
पुनिसबकथा बिभीषनकही * जेहिबिधिजनकसुतातहँरही
तबहनुमंत कहासुनु भ्राता * देषीचहौं जानकी माता
जुगुतिबिभीषनसकलसुनाई * चलउपवन सुताबिदा कराई
करिसोइरूपगयउपुनितहवाँ * बनअसोक सीतारह जहवाँ
देखिमनहिमहँकीन्हप्रनामा * बैठेहिबीतिजातानिसिजामा
कृसतनसीस जटा एकबेनीं * जपतहृदय रघुपतिगुनश्रेनी
दो० निजपद नयन दिएँमन, रामचरण महँ लीन ॥
परमदुषी भा पवनसुत, देषिजानकी दीन ॥ ८ ॥
तरुपल्लव महँ रहा लुकाई * करै बिचार करौंका भाई
तेहिअवसर रावनतहँआवा * संग नारि बहुकिए बनावा
बहुबिधिषलसीतहिसमुझावा * सामदाम भयभेद दिषावा

कहरावनसुनुसुमुषिसयानी ❋ मंदोदरी आदि सब रानी
तवअनुचरी करौं पनमोरा ❋ एकबारबिलोकु मम ओरा
तृनधरि ओट कहतिबैदेही ❋ सुमिरिअवधपतिपरमसनेही
सुनुदसमुष षद्योत प्रकासा ❋ कबहुँकिनलिनीकरइबिकासा
असमनसमुझकहतिजानकी ❋ षलसुधिनहिंरघुबीरबानकी
सठ सूनेहरिआनेहि मोहीं ❋ अधमनिलज्जलाजनहितोहीं

दो० आपुहि सुनि षद्योतसम, रामहि भानु समान ॥
परुषबचनसुनिकाढिआसि, बोलाअतिषिसिआन ९ ॥

सीतातें ममकृत अपमाना ❋ कटिहौंतबसिरकठिनकृपाना
नाहितसपदिमानुमम बानी ❋ सुमुषिहोतिनत जीवनहानी
स्यामसरोजदामसम सुन्दर ❋ प्रभुभुजकरिकरसमदसकंधर
सोभुजकंठकितबआसिघोरा ❋ सुनुसठ असप्रमानपनमोरा
चंद्रहास हर मम परितापं ❋ रघुपति बिरह अनलसंजातं
सीतलनिसितबआसिबरधारा ❋ कहसीताहरु मम दुष भारा
सुनतबचनपुनि मारनधावा ❋ मयतनयाकहिनीतिबुझावा
कहेसिसकलनिसिचरिन्हबोलाई ❋ सीतहिबहु बिधित्रासहुजाई
मासदिवस महँकहानमाना ❋ तो मैंमारबि काढि कृपाना

दो० भवन गएउ दसकंधर, इहाँ पिसाचिनिबृंद ॥
सीतहित्रासदिषावहिं, धरहिं रूप बहुमंद ॥ १० ॥

त्रिजटानाम राछसी एका ❋ रामचरनरतिनिपुन बिबेका
सबन्हौंबोलिसुनाएसिसपना ❋ सीतहिसेइकरहुहित अपना
सपने बानर लंका जारी ❋ जातु धान सेना सबमारी
षरआरूढ नगन दससीसा ❋ मुंडितसिर षंडितभुजबीसी

एहिबिधिसोदछिनदिसिजाई * लंकामनहु बिभीषन पाई
नगरफिरी रघुबीर दोहाई * तबप्रभु सीताबोलि पठाई
यह सपना मैं कहौं पुकारी * होइहि सत्यगएँदिन चारी
तासु बचन सुनिते सबडरीं * जनक सुताकेचरनन्हिपरीं

दो० जहँतहँगईं सकलतब, सीता करमन सोच ॥
मासदिवस बीतेमोहि, मारिहि निसिचर पोच ॥११॥

त्रिजटा सनबोली करजोरी * मातुबिपतिसंगिनितँइमोरी
तजौं देह करु बेगि उपाई * दुसहबिरहअबनहिंसहिजाई
आनि काठरचु चिताबनाई * मातु अनल पुनिदेहिलगाई
सत्यकरहिममप्रीतिसयानी * सुनैको श्रवन सूलसमबानी
सुनतबचनपदगहिसमुझाएसि * प्रभुप्रतापबलसुजससुनाएसि
निसिनअनलमिलसुनुसुकुमारी * असकहिसोनिजभवनसिधारी
कहसीताबिधिभा प्रतिकूला * मिलिहिनपावक मिटिहिनसूला
देषिअत प्रगटगगनअंगारा * अवनिन आवत एकौतारा
पावकमयससिश्रवतनआगी * मानहुमोहि जानिहतभागी
सुनहिबिनयममबिटपअसोका * सत्यनाम करुहरु ममसोका
नूतनकिसलयअनलसमाना * देहिअगिनितनकरहिनिदाना
देषिपरम बिरहाकुल सीता * सोछनकपिहिकलपसमबीता

सो० कपिकरि हृदय बिचार, दीन्हिमुद्रिका डारितब ॥
जनुअसोक अंगार, दीन्हहरषिउठिकरगहेउ ॥१२॥

तबदेषी मुद्रिका मनोहर * रामनामअंकितअतिसुन्दर
चकितचितवमुदरीपहिचानी * हरषबिषादहृदय अकुलानी
जीतिकोसकैअजय रघुराई * मायाते असिरचिनहिं जाई

सीतामन बिचारकर नाना ❁ मधुरवचन बोलेउ हनुमाना
रामचंद्र गुनवरनै लागा ❁ सुनतहिसीता करदुषभागा
लागीं सुनै श्रवन मनलाई ❁ आदिहुते सब कथा सुनाई
श्रवनामृत जेहि कथासुहाई ❁ कही सोप्रगटहोताकिनभाई
तबहनुमंतनिकटचलिगयऊ ❁ फिरिबैठीमनबिसमयभयऊ
रामदूतमैं मातु जानकी ❁ सत्यसपथकरुनानिधानकी
यह मुद्रिका मातुमैं आनी ❁ दीन्हिरामतुम्हकहँसहिदानी
नर बानरहिं संगकहु कैसें ❁ कही कथा भै संगति जैसें

दो० कपिके बचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिस्वास ॥
जाना मनक्रमबचनयह, कृपासिंधुकर दास ॥ १३ ॥

हरिजनजानिप्रीतिअतिगाढी ❁ सजलनयनपुलकावलिठाढी
बूडतबिरहजलधि हनुमाना ❁ भएउतातमोकहँ जलजाना
अबकहुकुसलजाउँबलिहारी ❁ अनुजसहितसुषभवनषरारी
कोमलचित कृपाल रघुराई ❁ कपिकेहिहेतु धरी निठुराई
सहजबानि सेवकसुषदायक ❁ कबहुँकसुरतिकरतरघुनायक
कबहुँनयन ममसीतलताता ❁ होइहहिंनिरषिस्याममृदुगाता
बचननआवनयन भरिवारी ❁ अहहनाथहौं निपटबिसारी
देषि परमबिरहा कुलसीता ❁ बोलाकपि मृदुबचनबिनीता
मातुकुसलप्रभुअनुजसमेता ❁ तवदुष दुषीसुकृपा निकेता
जनिजननीमानहुँजिअऊँना ❁ तुम्हते प्रेम रामके दूना

दो० रघुपति संदेस अब, सुनुजननी धरिधीर ॥
असकहिकपिगदगदभयउ, भरेबिलोचननीर ॥ १४ ॥

कहेउ रामबियोग तवसीता ❁ मोकहँ सकलभए बिपरीता

नवतरुकिसलयमनहुँकृसानू * कालनिसासमनिसिससिभानू
कुबलयबिपिनकुंत बनसरिसा * बारिदतपततेल जनुबरिसा
जेहित रहे करत तेइपीरा * उरगस्वाससम त्रिबिधिसमीरा
कहेहुतें कछुदुष घटि होई * काहिकहौं यह जानन कोई
तत्व प्रेमकर ममअरु तोरा * जानत प्रियाएक मनमोरा
सोमनसदा रहततोहि पाहीं * जानुप्रीति रसएतनेहिमाहीं
प्रभु संदेस सुनत बैदेही * मगनप्रेम तनसुधिनहितेही
कहकपि हृदय धीरधरुमाता * सुमिरुराम सेवकसुपदाता
उरआनहु रघुपति प्रभुताई * सुनिममबचनतजहु कदराई
दो० निसिचर निकरपतंग सम, रघुपति बान कृसानु।
जननी हृदय धीरधरु, जरे निसाचर जानु॥ १५॥
जौं रघुबीर होत सुधि पाई * करते नहिंबिलंब रघुराई
रामबान रबिउए जानकी * तमबरुथ कहँजातु धानकी
अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई * प्रभुआयसु नहिंरामदोहाई
कछुकदिवसजननीधरुधीरा * कपिन्हसहितअइहहिंरघुबीरा
निसिचरमारितोहिलैजैहहिं * तिहुँपुर नारदादिजसगैहहिं
हैंसुतकपिसबतुम्हहिंसमाना * जातुधानअतिभटबलवाना
मोरे हृदय परम संदेहा * सुनिकपि प्रगट कीन्हि निजदेहा
कनक भूधराकार सरीरा * समर भयंकर अतिबलबीरा
सीता मन भरोस तबभयऊ * पुनिलघुरूप पवनसुतलएऊ
दो० सुनुमाता सापा मृगहि, नहिं बलबुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रतापतें गरुड़हि, षाइ परम लघु ब्याल॥ १६॥
मनसंतोष सुनत कपि बानी * भगति प्रतापतेज बलसानी

आसिषदीन्हिरामप्रियजाना ❋ होहुतात बलसीलनिधाना
अजरअमर गुननिधिसुतहोहू ❋ करहुबहुत रघुनायक छोहू
करहुकृपाप्रभुअससुनिकाना ❋ निर्भर प्रेममगन हनुमाना
बार बार नाएसि पद सीसा ❋ बोलाबचन जोरिकरकीसा
अबकृत कृत्य भएउमैंमाता ❋ आसिषतबअमोघ बिष्याता
सुनहुमातमोहिअतिसयभूषा ❋ लागिदेषि सुन्दरफल रूषा
सुनुसुतकरहिंबिपिनरषवारी ❋ परमसुभट रजनीचर भारी
तिन्हकरभयमाता मोहिनाहीं ❋ जौंतुम्हसुषमानहु मनमाहीं

दो॰ देषिबुद्धि बलनिपुन कपि, कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपति चरन हृदयधरि, तातमधुरफलषाहु ॥ १७॥

चलेउ नाइसिर पैठेउ बागा ❋ फलषाएसि तरुतोरै लागा
रहे तहाँ बहुभट रषवारे ❋ कछुमारेसि कछुजाइपुकारे
नाथ एकआवा कपि भारी ❋ तेहिअसोकबाटिकाउजारी
षाएसिफलअरु बिटप उपारे ❋ रच्छक मर्दि मर्दिमहि डारे
सुनिरावन पठेएउ भटनाना ❋ तिन्हहिंदेषिगर्जेउहनुमाना
सब रजनीचर कपि संघारे ❋ गए पुकारतकछु अधमारे
पुनिपठएउतेहिअछकुमारा ❋ चला संगलै सुभट अपारा
आवत देषिबिटप गहितर्जा ❋ ताहिनिपातिमहाधुनिगर्जा

दो॰ कछुमारेसि कछुमर्देसि, कछु मिलएसि धरिधूरि ।
कछुपुनिजाइपुकारे, प्रभुमर्कट बलभूरि ॥ १८॥

सुनिसुतबध लंकेस रिसाना ❋ पठएसि मेघनाद बलवाना
मारसिजानिसुतबाँधेसुताही ❋ देषिअकपिहिकहाँकरआही
चलाइंद्रजितअतुलितजोधा ❋ बंधुनिधनसुनिउपजाक्रोधा

कपिदेषा दारुन भट आवा * कटकटाइ गर्जा अरुधावा
अतिबिसालतरुएक उपारा * बिरथकीन्ह लंकेस कुमारा
रहे महाभट ताके संगा * गहिगहिकपिमर्दइ निजअंगा
तिन्हहिनिपातिताहिसनबाजा * भिरेजुगुल मानहु गजराजा
मुठिका मारि चढातरुजाई * ताहिएकछन मुरछा आई
उठिबहोरिकीन्हेसिबहुमाया * जीतिनजाइप्रभंजन जाया

दो० ब्रह्म अस्त्र तेहि साधा, कपि मन कीन्ह बिचार।
जौंनब्रह्मसर मानौं, महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥

ब्रह्मबान कपिकहँ तेहिमारा * परतिहुबार कटक संघारा
तेहिदेषाकपिमुरछितभएऊ * नागपास बाँधेसि लै गएऊ
जासुनामजपिसुनहुभवानी * भवबंधन काटहिं नरज्ञानी
तासु दूतकि बंधतर आवा * प्रभुकारजलगिकपिहिबँधावा
कपिबंधनसुनिनिसचरधाए * कौतुकलागि सभा सबआए
दसमुखसभादीषिकपिजाई * कहिनजाइकछुअतिप्रभुताई
करजोरेसुर दिसिपबिनीता * भृकुटिबिलोकतसकलसभीता
देषिप्रतापन कपि मनसंका * जिमिअहिगनमहगरुडअसंका

दो० कपिहि बिलोकि दसानन, बिहँसाकहिदुबाद ॥
सुतबधसुरति कीन्हिपुनि, उपजाहृदयबिषाद ॥२०॥

कहलंकेस कवनतइ कीसा * केहिकेबलघालेहि बनषीसा
कीधौंश्रवनसुनेहिनहिंमोही * देषौंअति असंक सठतोही
मारेनिसिचर केहिअपराधा * कहुसठतोहिन प्रानकैबाधा
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया * पायजासुबलबिरचतिमाया
जाकेबल बिरंचि हरिईसा * पालतसृजत हरत दससीसा

जावलसीस धरत सहसासन * अंडकोससमेतगिरि कानन
धरै जोबिबिधिदेहसुरत्राता * तुम्हसेसठन्ह सिषावनदाता
हरकोदंड कठिनजेहिभंजा * तोहिसमेत नृपदल मदगंजा
षरदूषन त्रिसिरा अरुबाली * बधेसकलअतुलितबलसाली

दो० जाके बल लवलेस तें, जितेहु चराचर झारि ॥
तासु दूत मै जाकरि, हरिआनिहु प्रियनारि ॥ २१ ॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई * सहसबाहुसन परी लराई
समरबालिसनकरिजस पावा * सुनिकपिबचनबिहँसिबहरावा
पायउँ फलप्रभु लागीभूषा * कपि सुभावते तोरेउँरूषा
सबके देहपरम प्रियस्वामी * मारहिं मोहि कुमारगगामी
जिन्ह मोहिमारा ते मैं मारे * तोहिपर बांधे उतनयतुम्हारे
मोहिन कछुबाँधेकइ लाजा * कीन्हचहौंनिजप्रभु करकाजा
बिनतीकरौं जोरिकररावन * सुनहुमानताजिमोरसिषावन
देषहुतुम्हनिजकुलहिबिचारी * भ्रमताजिभजहुभगत भयहारी
जाके डर अतिकाल डेराई * जोसुर असुर चराचर षाई
तासों बयरुकबहुँनहिं कीजै * मोरे कहे जानकी दीजै

दो० प्रनत पाल रघुनायक * करुनासिंधु परारि ॥
गएसरन प्रभुराषिहैं, तवअपराध बिसारि ॥ २२ ॥

रामचरन पंकज उर धरहू * लंकाअचलराज तुम्ह करहू
रिषिपुलस्तिजस बिमलमयंका * तोहिससिमहँजनि होउकलंका
रामनाम बिनुगिरान सोहा * देषुबिचारित्यागि मदमोहा
बसन हीन नहि सोहसुरारी * सबभूषन भूषित बरनारी
राम बिमुख संपति प्रभुताई * जोइरही पाई बिनु पाई

सजलमूलजिन्हसरितन्हनाहीं * बरषिगएपुनि तबहिंसुषाहीं
सुनुदसकंठ कहौं पनरोपी * बिमुषराम त्राता नाहिंकोपी
संकरसहसबिष्णु अजतोही * सकहिंनराषि रामकरद्रोही

दो० मोहमूल बहुसूल प्रद, त्यागहु तमअभिमान।
भजहुराम रघुनायक, कृपासिंधु भगवान॥२३॥

जदपिकहीकपिअतिहितबानी * भगतिविवेकबिरति नयसानी
बोलाबिहँसिमहाअभिमानी * मिलाहमहिंकपि गुरुबड़ग्यानी
मृत्युनिकट आई षलतोही * लागेसिअधमसिषावनमोही
उलटा होइहि कहहनुमाना * मतिभ्रमतोरिप्रगट मैं जाना
सुनिकपिबचनबहुतषिसियाना * बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना
सुनत निसाचर मारनधाए * सचिवनसहितबिभीषणआये
नाइसीस करि बिनय बहूता * नीतिबिरोध न मारिय दूता
आनदंड कछु करियगोसांई * सबहीं कहा मंत्र भल भाई
सुनत बिहँसिबोलादसकंधर * अंगभंग करि पठइअ बंदर

दो० कपिके ममतापूँछपर, सबहि कह्यो समुझाय।
तेलबोरि पटबाँधिपुनि, पावकदेहु लगाय॥२४॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि * तबसठ निजनाथहिलइआइहि
जिन्हकैकीन्हिसिबहुत बड़ाई * देषौं मैं तिन्ह कै प्रभुताई
बचनसुनतकपिमनमुसुकाना * भइ सहाय सारद मैं जाना
जातुधान सुनिरावन बचना * लागेरचै मूढ़ सोई रचना
रहान नगर बसन घृत तेला * बाढ़ी पूँछकीन्ह कपि षेला
कौतुक कहँ आए पुरबासी * मारहिंचरनकरहिं बहुहाँसी
बाजहिं ढोलदेहिं सब तारी * नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी

पावक जरत देषि हनुमंता ❋ भएउ परम लघुरूप तुरंता
निबुकिचढेउकपिकनकअटारी ❋ भईं सभीत निसाचरनारी

दो॰ हरिप्रेरित तेहि अवसर, चलेमरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा, कपिबढि लाग अकास ॥ २५ ॥

देह बिसाल परम हरुआई ❋ मंदिरते मंदिर चढ धाई
जरइ नगरभा लोग बिहाला ❋ झपट लपटबहुकोटिकराला
तात मातु हासुनिअ पुकारा ❋ एहिअवसरकोहमहिंउबारा
हमजोकहायहकपिनहिहोई ❋ बानर रूप धरे सुर कोई
साधु अवज्ञा कर फल अैसा ❋ जरै नगर अनाथ कर जैसा
जारानगर निमिषएकमाहीं ❋ एक बिभीषन कर गृहनाहीं
ताकरदूतअनलजेहिसिरजा ❋ जरानसोतेहिकारनगिरिजा
उलटिपलटिलंका सबजारी ❋ कूदिपरा पुनि सिंधु मझारी

दो॰ पूँछबुझाइ षोइ श्रम, धरि लघुरूप बहोरि। मा॰ पा॰२२
जनक सुताके आगे, ठाढ भयउ कर जोरि ॥ २६ ॥

मातुमोहि दीजे कछुचीन्हा ❋ जैसे रघुनायक मोहिदीन्हा
चूडामनि उतारि तब दयऊ ❋ हरषसमेत पवनसुत लयऊ
कहेहुतात असमोर प्रनामा ❋ सबप्रकार प्रभु पूरन कामा
दीन दयाल बिरिद संभारी ❋ हरहु नाथमम संकट भारी
तात सक्रसुत कथा सुनायहु ❋ बानप्रतापप्रभुहि समुझायहु
मासदिवसमहँ नाथनआवा ❋ तौपुनिमोहिजियतनहिपावा
कहुकपिकेहिबिधिराषौंप्राना ❋ तुम्हहूतातकहत अबजाना
तोहिदेषि सीतलि भइछाती ❋ पुनिमोकहँ सोदिन सोराती

दो० जनक सुतहिसमुझाइकरि, बहुबिधि धीरज दीन्ह ॥
चरनकमल सिरनाइकपि. गवनरामपहिंकीन्ह ॥२७॥

चलतमहाधुनिगर्जेसि भारी ॥ गर्भश्रवहिंसुनिनिसिचरनारी
नाघिसिंधुएहिपारहि आवा ॥ सबदकिलिकिला कपिन्हसुनावा
हरषेसब बिलोकि हनुमाना ॥ नूतनजनमकपिन्हतबजाना
मुषप्रसन्न तन तेज बिराजा ॥ कीन्हेसिरामचन्द्रकरकाजा
मिले सकलअतिभएसुषारी ॥ तलफत मीनपावजिमिबारी
चलेहरषि रघुनायक पासा ॥ पूँछतकहत नवल इतिहासा
तबमधुबन भीरतसब आए ॥ अंगद संमत मधुफल षाए
रषवारे जब बरिजइ लागे ॥ मुष्टिप्रहार हनत सब भागे

दो० जाइ पुकारे ते सब. बनउजार जुबराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि, करि आए प्रभुकाज ॥ २८ ॥

जौंन होत सीता सुधि पाई ॥ मधुबनकेफलसकहिंकिषाई
एहिबिधिमनबिचारकरराजा ॥ आइगयेकपिसहितसमाजा
आइ सबहिं नावापद सीसा ॥ मिलेउसबन्हिअतिप्रीतिकपीसा
पूँछी कुसल कुसल पददेषी ॥ रामकृपा भाकाज बिसेषी
नाथकाज कीन्हेउहनुमाना ॥ राषेसकल कपिन्हके प्राना
सुनिसुग्रीवबहुरितेहिमिलेऊ ॥ कपिन्हसहितरघुपतिपहिचलेऊ
रामकपिन्ह जबआवतदेषा ॥ किए काजमन हरषबिसेषा
फटिक सिला बैठे द्वौभाई ॥ परेसकलकपिचरनन्हिआई

दो० प्रीति सहित सब भेंटे, रघुपति करुनापुंज।
पूछी कुसलनाथ अब, कुसल देषि पदकंज ॥ २९ ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया ॥ जापरनाथ करहु तुम्हदाया

ताहिसदासुभकुसल निरंतर * सुरनरमुनि प्रसन्नता ऊपर
सोइविजई बिनई गुनसागर * तासु सुजसत्रैलोक उजागर
प्रभुकीकृपा भएउ सबकाजू * जन्महमारसुफल भा आजू
नाथपवनसुतकीन्हिजोकरनी * सहसहुमुषन जाइसो बरनी
पवन तनयके चरित सुहाए * जामवंत रघुपतिहि सुनाए
सुनतकृपानिधिमनअतिभाए * पुनिहनुमानहरषिहियलाए
कहहुतातकेहिभाँतिजानकी * रहतिकरतिरच्छास्वप्रानकी

दो॰ नामपाहरू रातिदिन, ध्यानतुम्हार कपाट ।
लोचननिजपदजंत्रित, जाहिंप्रानकेहिबाट ॥ ३० ॥

चलतमोहि चूडामनिदीन्ही * रघुपतिहृदयलाइसोइलीन्ही
नाथ जुगललोचनभरि बारी * बचनकहे कछुजनककुमारी
अनुजसमेत गहेहुप्रभुचरना * दीनबंधु प्रनतारति हरना
मनक्रमबचनचरनअनुरागी * केहिअपराध नाथहौंत्यागी
अवगुन एकमोर मैं माना * बिछुरतप्रानन कीन्हपयाना
नाथसोनयनन्हिकरअपराधा * निसरतप्रानकरहिंहठिबाधा
बिरहअगिनितनतूलसमीरा * स्वाँसजरइछन माहिं सरीरा
नयनस्रवहिंजलनिजहितलागी * जरैन पाव देह बिरहागी
सीताकैअतिबिपतिबिसाला * बिनहिंकहेभलिदीनदयाला

दो॰ निमिषनिमिष करुनानिधि, जाहिंकलपसमबीति ।
बेगिचलियप्रभुआनिअ, भुजबलषलदलजीति ॥ ३१ ॥

सुनिसीतादुषप्रभुसुषअयना * भरिआएजल राजिवनयना
बचनकायमनममगातिजाही * सपनेहुबूझियबिपातिकिताही
कहहनुमंत बिपति प्रभुसोई * जबतबसुमिरन भजननहोई

केतिकबातप्रभुजातुधानकी * रिपुहिजीतिआनिबी जानकी
सुनुकपितोहिसमानउपकारी * नहिंकोउसुरनरमुनितनधारी
प्रतिउपकार करौंका तोरा * सन्मुखहोइनसकतमनमोरा
सुनुसुत तोहि उरिनमैंनाहीं * देषेउँकरि बिचार मनमाहीं
पुनिपुनिकपिहिचितवसुरत्राता * लोचननीरपुलक अतिगाता

दो० सुनिप्रभु बचनबिलोकिमुष, गातहरषि हनुमन्त ॥
चरनपरेउ प्रेमाकुल, त्राहित्राहि भगवंत ॥ ३२ ॥

बारबार प्रभु चहैं उठावा * प्रेममगनतेहि उठबनभावा
प्रभुकरपंकज कपिके सीसा * सुमिरिसोदसामगनगौरीसा
सावधानमनकरिपुनिसंकर * लागेकहन कथाअतिसुन्दर
कपिउठाइ प्रभुहृदवलगावा * करगहिपरमनिकट बैठावा
कहुकपिरावन पालितलंका * केहिबिधिदहेहुदुर्गअतिबंका
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना * बोलाबचनबिगतअभिमाना
साषामृग कै बडि मनुसाई * साषाते साषा परजाई
नाघि सिंधुहाटक पुरजारा * निसिचरगनबधिबिपिनउजारा
सोसब तव प्रताप रघुराई * नाथन कछूमोरि प्रभुताई

दो० ताकहँ प्रभुकछु अगमनहिं, जापर तुम्ह अनुकूल ॥
तवप्रताप बडवानलहि, जारि सकैषलु तूल ॥ ३३ ॥

नाथभगतिअतिसुषदायनी * देहु कृपाकरि अनपायनी
सुनिप्रभुपरमसरलकपिबानी * एवमस्तु तवकहेउ भवानी
उमारामसुभाउजेहिजाना * ताहिभजनतजिभावनआना
यह संबाद जासुउर आवा * रघुपतिचरनभगतिसोइपावा
सुनिप्रभुबचनकहहिंकपिबृंदा * जयजयजय कृपालुसुषकंदा

तबरघुपतिकपिपतिहिबोलावा * कहा चलै करकरहु बनावा
अबबिलंब केहिकारनकीजै * तुरतकपिन्हकहँआयसुदीजै
कौतुक देषिसुमन बहुबरषी * नभते भवनचलेसुर हरषी

दो॰ कपि पति बेगि बोलाए, आए जूथप जूथ ॥
नानाबरन अतुलबल, बानर भालुबरूथ ॥ ३४ ॥

प्रभुपद पंकज नावहिं सीसा * गरजहिंभालु महाबलकीसा
देषीराम सकल कपि सैना * चितइकृपाकरि राजिवनैना
राम कृपाबल पाइ कपिन्दा * भए पक्षजुत मनहुँगिरिंदा
हरषि रामतबकीन्हपयाना * सगुन भएसुंदर सुभनाना
जासुसकल मंगलमयकीती * तासुपयान सगुन यहनीती
प्रभु पयान जाना बैदेहीं * फरकिबामअंगजनुकहिदेहीं
जोइजोइ सगुन जानकिहिहोई * असगुनभयउ रावनहिसोई
चला कटकको बरनै पारा * गरजहिंबानर भालुअपारा
नषआयुधगिरिपादप धारी * चलेगगन महिइच्छा चारी
केहरिनाद भालुकपिकरहीं * डगमगमहि दिग्गज चिक्करहीं

छं॰ चिक्करहिंदिग्गजडोल महिगिरिलोलसागरषरभरे ॥
मनहर्ष दिनकर सोमसुरमुनि नागकिन्नर दुषटरे ॥
कटकटहिंमर्कटबिकटभटबहुकोटिकोटिन्हधावँहीं ॥
जयराम प्रबलप्रताप कोसल नाथगुनगन गावहीं ॥
महिसकनभारउदारअहिपति बारबारहिं मोहई ॥
गहदसनपुनिपुनि कमठपृष्टकठोरसोकिमिसोहई ॥
रघुबीररुचिरपयानप्रस्थिति जानिपरम सुहावनी ॥
जनुकमठषप्परसर्पराज सोलिषतअबिचलपावनी ॥

दो० येहिविधि जाइकृपानिधि, उतरे सागरतीर ॥
जहँतहँ लागे षानफल, भालुबिपुल कपिबीर ॥ ३६ ॥

उहाँनिसाचर रहहिं ससंका ❋ जबतेजारिगएउ कपिलंका
निजरगृहसबकरहिंबिचारा ❋ नहिंनिसिचरकुलकेरउबारा
जासु दूत बल बरनि न जाई ❋ तेहि आए पुरकवन भलाई
दूतिन्हसनसुनिपुरजनबानी ❋ मंदोदरी अधिक अकुलानी
रहसिजोरिकरपतिपदलागी ❋ बोली बचन नीतिरस पागी
कंतकरष हरिसन परिहरहू ❋ मोरकहाअतिहितहियधरहू
समुझत जासुदूत कइकरनी ❋ स्रवहिंगर्भ रजनीचर घरनी
तासुनारिनिजसचिवबोलाई ❋ पठवहुकंत जो चहहु भलाई
तवकुलकमलबिपिनदुषदाई ❋ सीतासीत निसासम आई
सुनहु नाथसीता बिनुदीन्हे ❋ हितनतुम्हारसंभुअजकीन्हे

दो० रामवान अहिगन सरिस, निकरनिसाचर भेक ॥
जबलगिग्रसतनतबलगि, जतनकरहु तजि टेक ॥

स्रवनसुनी सठताकरिवानी ❋ बिहँसाजगतबिदितअभिमानी
सभयसुभाउनारिकर साँचा ❋ मंगलमहँभयमनअतिकाँचा
जौं आवै मर्कट कटकाई ❋ जियहिंबिचारेनिसिचरषाई
कंपहिंलोकपजाकी त्रासा ❋ तासुनारिसभीत बडिहासा
असकहिबिहँसिताहिउरलाई ❋ चलेउसभाममताअधिकाई
मंदोदरी हृदयकर चिंता ❋ भएउकंतपर बिधिबिपरीता
बैठेउसभा षबरि अस पाई ❋ सिंधुपार सेना सब आई
बूझेसिसचिवउचितमतकहहू ❋ तेसब हँसे मष्ट करि रहहू
जितेहुसुरासुर तब स्रमनाहीं ❋ नर बानर केहि लेष माहीं

दो॰ सचिवबैदगुर तीनिजौं, प्रिय बोलहि भयआस ॥
राजधर्म तनतीनिकर, होइबेगिही नास ॥ ३७ ॥

सोइ रावन कहँ बनी सहाई * अस्तुतिकरहिंसुनाइ सुनाई
अवसरजानिबिभीषनआवा * भ्राताचरन सीस तेहिंनावा
पुनिसिरनाइबैठनिजआसन * बोलाबचन पाइ अनुसासन
जौंकृपाल पूँछेहु मोहिंबाता * मतिअनुरूपकहौंहिततता
जो आपन चाहइ कल्याना * सुजससुमतिसुभगतिसुषनाना
सो परनारि लिलार गोसाँई * तजौ चौथिके चंदाकि नाँई
चौदह भुवन एक पति होई * भूत द्रोह तिष्टै नहि सोई
गुन सागर नागर नर जोऊ * अलपलोभ भल कहैनकोऊ

दो॰ काम क्रोध मदलोभ सब, नाथ नरकके पंथ ॥
सबपरिहरिरघुबीरहि, भजहु भजहिंजेहिसंत ॥ ३८ ॥

तातराम नहिं नर भूपाला * भुवनेस्वर कालहुकर काला
ब्रह्मअनामय अजभगवंता * ब्यापकअजितअनादिअनंता
गोद्विज धेनु देव हितकारी * कृपासिंधु मानुष तनधारी
जन रंजन भंजन षलब्राता * बेद धर्म रक्षकसुनु भ्राता
ताहिबयरतजि नाइयमाथा * प्रनतारति भंजन रघुनाथा
देहुनाथ प्रभु कहँ बैदेही * भजहु राम बिनुहेतु सनेही
सरनगए प्रभुताहु न त्यागा * बिस्वद्रोहकृतअघजेहिलागा
जासुनाम त्रयतापनसावन * सोइप्रभुप्रगटसमुझुजियरावन

दो॰ बारबार पदलागउँ, बिनयकरउँ दससीस ॥
परिहरिमानमोहमद, भजहु कोसलाधीस ॥

मुनिपुलस्ति निज सिष्यसन, कहिपठई यहबात ॥
तुरतसोमैंप्रभुसनकही, पाइसुअवसरतात ॥ ३९ ॥
माल्यवंतअतिसचिवसयाना ❀ तासुबचन सुनि अतिसुषमाना
तातअनुजतबनीतिबिभूषन ❀ सोउरधरहुजोकहत बिभीषन
रिपु उतकर्ष कहतसठदोऊ ❀ दूरिन करहु इहाँहइ कोऊ
माल्यवंत गृहगएउ बहोरी ❀ कहइबिभीषनपुनिकरजोरी
सुमतिकुमतिसबकेउररहहीं ❀ नाथपुराननिगमअसकहहीं
जहाँसुमतितहँ संपतिनाना ❀ जहाँकुमतितहँबिपतिनिदाना
तबउरकुमतिबसीविपरीता ❀ हितअनहितमानहुरिपुप्रीता
कालरातिनिसिचरकुलकेरी ❀ तोहि सीतापर प्रीति घनेरी

दो० तात चरन गहि मागौं, राषहु मोर दुलार ।
सीतादेहु रामकहँ, अहित न होइ तुम्हार ॥ ४० ॥

बुधपुरान श्रुतिसंमत बानी ❀ कहीबिभीषन नीतिबषानी
सुनत दसानन उठारिसाई ❀ षलतोहिनिकटमृत्यु अबआई
जियसिसदासठमोरजिआवा ❀ रिपुकर पच्छमूढ़ तोहिभावा
कहसिनषलअसको जगमाहीं ❀ भुजबलजाहि जितामैंनाहीं
ममपुरबसितपसिनपरप्रीती ❀ सठमिलुजाइ तिन्हहिकहुनीती
असकहिकीन्हेसिचरनप्रहारा ❀ अनुजगहे पद बारहि बारा
उमासंत कइ इहइ बड़ाई ❀ मंदकरत जो करइ भलाई
तुम्हपितुसरिसभलेहिमोहिमारा ❀ रामभजेंहित नाथ तुम्हारा
सचिव संगलै नभपथगएऊ ❀ सबहिसुनाइकहतअसभएऊ

दो० राम सत्य संकल्प प्रभु, सभा काल बस तोरि ॥
मैं रघुबीर सरन अब, जाउँ देहु जनि षोरि ॥ ४०

असकहिचलाबिभीषनजबहीं ❀ आयूहीन भएसब तबहीं
साधु अवज्ञा तुरत भवानी ❀ करकल्यान अषिलकैहानी
रावनजबहिंबिभीषनत्यागा ❀ भएउबिभवबिनु तबहिंअभागा
चलेउहरषि रघुनायकपाहीं ❀ करत मनोरथबहु मनमाहीं
देषिहौंजाइ चरनजलजाता ❀ अरुनमृदुल सेवक सुषदाता
जे पद परसि तरीरिषिनारी ❀ दंडक कानन पावन कारी
जे पद जनकसुता उरलाए ❀ कपट कुरंगसंग धर धाए
हरउर सर सरोज पद जेई ❀ अहो भाग्य मैं देषिहौं तेई

दो॰ जिन्हपायन्हके पादुकन्हि, भरत रहे मनलाइ ।
तेपदआजबिलोकिहौं, इन्हनयनन्हिअबजाइ ४२

एहिबिधि करतसप्रेमबिचारा ❀ आएउसपदि सिंधुयेहिपारा
कपिन्हबिभीषनआवतदेषा ❀ जानाकोउ रिपुदूत बिसेषा
ताहिराषि कपीस पहिआए ❀ समाचार सब ताहि सुनाए
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ❀ आवा मिलनदसानन आई
कह प्रभुसषा बूझिये काहा ❀ कहै कपीस सुनहु नरनाहा
जानिनजाइनिसाचरमाया ❀ कामरूपकेहि कारन आया
भेद हमार लेन सठ आवा ❀ राषिअबाँधिमोहिअसभावा
सषानीतितुम्हनीकिबिचारी ❀ ममपन सरनागत भयहारी
सुनिप्रभुबचनहरष हनुमाना ❀ सरनागत बच्छल भगवाना

दो॰ सरनागत कहँजेतजहिं, निज अनहित अनुमानि ॥
तेनर पावर पाप मय, तिन्हहिबिलोकतहानि ४३

कोटि बिप्र बधलागहिंजाहू ❀ आएसरन तजौंनहिं ताहू
सन्मुषहोइजीवमोहिजबहीं ❀ जन्मकोटिअघनासहिं तबहीं

पापवंत कर सहज सुभाऊ ❋ भजनमोरतेहि भावनकाऊ
जौंपै दुष्ट हृदै सोइ होई ❋ मोरे सनमुष आवकि सोई
निर्मलमनजनसोमोहिपावा ❋ मोहिकपटछलछिद्रनभावा
भेद लेन पठवा दस सीसा ❋ तबहुँनकछुभयहानिकपीसा
जगमहँ सषा निसाचर जेते ❋ लछिमनहनइनिमिषमहंतेते
जौं सभीत आवा सरनाई ❋ रषिहौं ताहि प्रानकी नाई
दो॰ उभय भाँतितेहि आनहु, हँसि कह कृपानिकेत ॥
जयकृपाल कहिकपिचले, अंगद हनू समेत ॥ ४४ ॥
सादरतेहि आगे करिबानर ❋ चलेजहाँरघुपति करुनाकर
दूरिहि ते देषे द्वौ भ्राता ❋ नयनानंद दान के दाता
बहुरिरामछबिधामबिलोकी ❋ रहेउठठुकिएकटकपलरोकी
भुज प्रलंबकंजारुन लोचन ❋ स्यामलगातप्रनतभय मोचन
सिंघकंध आयत उर सोहा ❋ आननअमितमदनमनमोहा
नयननीरपुलकितअतिगाता ❋ मनधरिधीर कहीमृदुबाता
नाथ दसानन करमैं भ्राता ❋ निसिचर बंसजन्मसुर त्राता
सहजपाप प्रिय तामस देहा ❋ जथाऊलूकहि तम परनेहा
दो॰ श्रवन सुजस सुनि आएउँ, प्रभु भंजन भव भीर ॥
त्राहि त्राहि आरातिहरन, सरन सुषदरघुबीर ॥ ४५ ॥
असकहि करत दंडवत देषा ❋ तुरत उठे प्रभुहरष बिसेषा
दीन बचनसुनिप्रभुमनभावा ❋ भुजबिसालगाहिहृदय लगावा
अनुज सहित मिलि ढिगबैठारी ❋ बोलेबचन भगत भयहारी
कहु लंकेस सहित परिवारा ❋ कुसलकुठाहरबास तुम्हारा
षलमंडली बसहु दिनराती ❋ सषा धर्मनिबहइ केहिभाँती

मैंजानौं तुम्हारि सब रीती * अतिनयनिपुनिन भावअनीती
बरुभलबासनरक करताता * दुष्टसंग जनि देइ बिधाता
अबपद देषिकुसल रघुराया * जौंतुम्हकीन्हि जानि जनदाया
दो० तबलगि कुसलन जीवकहँ, सपनेहु मन बिश्राम ॥
जबलगिभजतनरामकहँ, सोकधाम तजिकाम ॥४६॥
तबलगिहृदयबसतषलनाना * लोभमोह मत्सरमद माना
जबलगि उरनबसतरघुनाथा * धरेचाप सायक कटिभाथा
ममता तरुनतमीअँधियारी * राग द्वेष उलूक सुषकारी
तबलगिबसतिजीवमनमाहीं * जबलगिप्रभुप्रतापरबिनाहीं
अबमैं कुसल मिटेभय भारे * देषिराम पदकमल तुम्हारे
तुम्हकृपाल जापरअनुकूला * ताहिनब्यापत्रिबिधभवसूला
मैंनिसिचरअति अधम सुभाऊ * सुभआचरनकीन्हनहिकाऊ
जासुरूपमुनि ध्याननआवा * तेहिंप्रभुहरषिहृदय मोहिलावा
दो० अहोभाग्य ममअमित अति, रामकृपा सुषपुंज ॥
देषेउँनयनबिरंचिसिव, सेब्यजुगलपदकंज ॥ ४७ ॥
सुनहुसषानिजकँहउँसुभाऊ * जानभुसुंडि संभुगिरिजाऊ
जौंनर होइ चराचर द्रोही * आवइसभयसरनतकिमोही
तजिमदमोहकपटछलनाना * करौंसद्यतेहि साधु समाना
जननीजनक बंधु सुतदारा * तनधनभवनसुहृदपरिवारा
सबकै ममता ताग बटोरी * ममपदमनहिबाँधबरिडोरी
समदरसी इच्छा कछुनाहीं * हरषसोकभयनहिमनमाहीं
अस सज्जनममउरबसकैसे * लोभी हृदय बसैधन जैसे
तुम्ह सारिषे संतप्रिय मोरे * धरौंदेह नहिआन निहोरे

दो० सगुन उपासक परहित, निरतनीति दृढनेम ॥
तेनर प्रानसमान मम, जिन्हके द्विजपदप्रेम ४८ ॥

सुनुलंकेस सकल गुनतोरे ❋ तातेतुम्ह अतिसयप्रियमोरे
राम बचन सुनिबानर जूथा ❋ सकलकहहिंजयकृपाबरूथा
सुनत बिभीषन प्रभुकेबानी ❋ नहिंअघातश्रवनामृतजानी
पदअंबुज गहि बारहि बारा ❋ हृदय समातन प्रेम अपारा
सुनहु देव सचराचर स्वामी ❋ प्रनत पालउर अंतरजामी
उरकछु प्रथम बासना रही ❋ प्रभुपदप्रीति सरित सोबही
अबकृपालनिजभगतिपावनी ❋ देहु सदासिव मन भावनी
एवमस्तु कहि प्रभुरन धीरा ❋ मागा तुरतसिंधु करनीरा
जदपि सषा तव इछा नाहीं ❋ मोरदरस अमोघ जगमाहीं
असकहिरामातिलकतेहिसारा ❋ सुमनबृष्टि नभभई अपारा

दो० रावन क्रोध अनल निज, स्वास समीर प्रचंड ॥
जरत बिभीषन राषेउ, दीन्हेउ राज अषंड ॥
जोसंपति सिवरावनहिं, दीन्हि दिए दसमाथ ॥
सोइसंपदा बिभीषनहि, सकुचिदीन्हिरघुनाथ ४९ ॥

असप्रभुछाँडिभजहिंजेआना ❋ तेनरपसु बिनुपूंछ बिषाना
निजजनजानिताहिअपनावा ❋ प्रभुसुभावकपिकुलमनभावा
पुनि सरबग्य सर्बउर बासी ❋ सर्बरूप सबरहित उदासी
बोलेबचननीति प्रतिपालक ❋ कारनमनुजदनुजकुलघालक
सुनुकपीस लंकापति बीरा ❋ केहिबिधितरिअजलधिगभीरा
संकुल मकर उरगझष जाती ❋ अतिअगाध दुस्तरसबभाँती

कहलंकेस सुनहु रघुनायक ❋ कोटिसिंधुसोषकतबसायक
जद्यपि तदपिनीतिअसगाई ❋ बिनयकरिअसागरसनजाई

दो० प्रभु तुम्हारकुलगुरजलधि, कहिहिउपायबिचारि ॥
बिनुप्रयाससागरतरिहिं, सकलभालुकपिधारि ५० ॥

सषाकही तुम्हनीकि उपाई ❋ करिअ दैव जौंहोइ सहाई
मंत्रनयह लछिमनमनभावा ❋ रामबचनसुनिअतिदुषपावा
नाथदैव करकवन भरोसा ❋ सोषिअसिंधुकरिअमनरोसा
कादरमनकहँ एक अधारा ❋ दैव दैव आलसी पुकारा
सुनत बिहँसि बोले रघुबीरा ❋ ऐसइकरब धरहुमन धीरा
असकहिप्रभुअनुजहिसमुझाई ❋ सिंधु समीप गए रघुराई
प्रथम प्रनामकीन्ह सिरनाई ❋ बैठे पुनि तटदर्भ डसाई
जबहिंबिभीषनप्रभुपहिंआए ❋ पाछे रावन दूत पठाए

दो० सकल चरित तिन देषे, धरे कपट कपि देह ॥
प्रभुगुन हृदय सराहहिं, सरनागत परनेह ५१ ॥

प्रगट बषानहिं रामसुभाऊ ❋ अतिसप्रेम गाबिसिर दुराऊ
रिपुकेदूत कपिन्ह तबजाने ❋ सकलबाँधिकपीसपहिंआने
कह सुग्रीव सुनहुसबबनचर ❋ अंगभंगकरिपठवहुनिसिचर
सुनि सुग्रीव बचन कपिधाए ❋ बाँधिकटकचहुपास फिराए
बहुप्रकार मारन कपि लागे ❋ दीनपुकारत तदपिन त्यागे
जोहमार हरनासा काना ❋ तेहिकोसलाधीसकै आना
सुनिलछिमनसबनिकटबोलाए ❋ दयालागिहँसितुरत छोडाए
रावन करदीजहु यह पाती ❋ लछिमनबचनबाँचुकुलघाती

दो० कहेउ मुषागर मूढ सन, मम संदेस उदार ॥
सीता देइ मिलहु नत, आवा काल तुम्हार ५२ ॥

तुरतनाइ लछिमनपदमाथा ❀ चले दूतबरनत गुनगाथा
कहत राम जस लंका आए ❀ रावनचरनसीसतिन्ह नाए
बिहँसिदसानन पूँछी बाता ❀ कहसिनसुकआपनिकुसलाता
पुनिकहुषबरि बिभीषनकेरी ❀ जाहिमृत्यु आई अतिनेरी
करत राज लंकासठ त्यागी ❀ होइहिजवकरकीट अभागी
पुनिकहुभालुकीस कटकाई ❀ कठिनकालप्रेरितचलि आई
जिन्हके जीवनकर रषवारा ❀ भएउमृदुलचितसिंधुबिचारा
कहु तपसिन्हकै बातबहोरी ❀ जिन्हकेहृदयत्रासअतिमोरी

दो० कीभइ भेंट किफिरि गए, श्रवनसुजससुनिमोर ॥
कहसिन रिपुदलतेजबल, बहुतचकित चिततोर॥५३॥

नाथ कृपाकरि पूँछहु जैसे ❀ मानहु कहाक्रोध तजितैसे
मिलाजाइजबअनुजतुम्हारा ❀ जातहिरामतिलकतेहिसारा
रावनदूत हमहि सुनिकाना ❀ कपिन्हबाँधि दीन्हेदुषनाना
श्रवन नासिका काटइ लागे ❀ राम सपथदीन्हे हमत्यागे
पूँछिहु नाथ कीस कटकाई ❀ बदनकोटिसतबरनिन जाई
नाना बरन भालुकपि धारी ❀ बिकटाननबिसालभयकारी
जेहिंपुरदहेउहतेउ सुततोरा ❀ सकलकपिन्हमहँतेहिबलथोरा
अमितनामभटकठिन कराला ❀ अमितनागबलबिपुलबिसाला

दो० द्विविद मयंद नीलनल, अंगद गद बिकटासि ॥
दधिमुष केहरि निसठ सठ, जामवंत बलरासि॥५४॥

ए कपिसब सुग्रीवसमाना ❀ इन्हसमकोटिन्हगनइकोनाना

रामकृपाअतुलितबलतिन्हहीं ❀ तृनसमान त्रैलोकहि गनहीं
असमैं सुना श्रवन दसकंधर ❀ पदुम अठारह जूथप बंदर
नाथकटक महँसोकपिनाहीं ❀ जोनतुम्हहिजीतहिरनमाहीं
परमक्रोधमीजहिं सबहाथा ❀ आएसु पैनदेहिं रघुनाथा
सोषहिंसिंधुसहितझषब्याला ❀ पूरहिंनतभरिकुधर बिसाला
मर्दिगर्द मिलवहिं दससीसा ❀ ऐसेइबचनकहहिं सबकीसा
गर्जहिंतर्जहिं सहज असंका ❀ मानहु ग्रसनचहतहहिंलंका

दो० सहज सूरकपि भालुसब, पुनि सिरपर प्रभुराम ॥
रावन कालकोटि कहुँ, जीतिसकहिंसंग्राम ॥५५॥

रामतेज बलबुधि बिपुलाई ❀ सेषसहस सत सकहिं नगाई
सकसरएक सोषि सतसागर ❀ तबभ्रातहिपूंछेउ नयनागर
तासुबचन सुनि सागरपाहीं ❀ मागतपंथ कृपा मन माहीं
सुनतबचनबिहँसादससीसा ❀ जौंअसिमतिसहायकृतकीसा
सहज भीरुकरबचन दिढाई ❀ सागर मन ठानी मचलाई
मूढ मृषाका करसि बडाई ❀ रिपुबल बुद्धिथाह मइँ पाई
सचिवसभीतबिभीषनजाके ❀ बिजयबिभूतिकहाँजगताके
सुनिषलबचन दूतरिस बाढी ❀ समयबिचारि पत्रिकाकाढी
रामानुज दीन्ही यह पाती ❀ नाथ बचाइ जुडावहु छाती
बिहँसि बामकरलीन्हीरावन ❀ सचिवबोलिसठलागबचावन

दो० बातनमनहि रिझाइसठ, जनिघालसि कुलषीस ॥
राम बिरोधन उबरसि, सरन बिष्नु अज ईस ॥

कीतजि मान अनुज इव, प्रभुपद पंकज भृंग ॥
होइ कि रामसरान ऊ, षलकुल सहित पतंग ॥५६॥

सुनतसभयमनमुषमुसुकाई * कहतदसानन सबहिसुनाई
भूमिपराकर गहत अकासा * लघुतापसकर बागबिलासा
कहसुकनाथ सत्यसब बानी * समुझहुछाडि प्रकृतिअभिमानी
सुनहुबचनममपरिहरि क्रोधा * नाथरामसन तजहु बिरोधा
अतिकोमल रघुबीर सुभाऊ * जद्यपिअषिललोक कराऊ
मिलतकृपातुह्मपरप्रभुकरिही * उरअपराध न एकौ धरिही
जनकसुता रघुनाथहि दीजे * एतनाकहा मोर प्रभु कीजे
जबतेहि कहा दैन बैदेही * चरनप्रहार कीन्ह सठतेही
नाइ चरन सिरचलासो तहाँ * कृपासिंधु रघुनायक जहाँ
करिप्रनाम निजकथासुनाई * रामकृपा आपनि गतिपाई
रिषिअगस्तिकीसापभवानी * राछसभएउरहा मुनिज्ञानी
बंदिराम पद बारहिं बारा * मुनिनिजआश्रम कहँपगुधारा

दो० बिनय न मानत जलधिजड, गएतीनि दिनबीति ॥
बोलेराम सकोपतब, भयबिनहोइ न प्रीति ॥ ५७ ॥

लछिमन बान सरासनआनू * सोषौंबारिधिबिसिष कृसानू
सठसनबिनयकुटिलसनप्रीती * सहजकृपिनसन सुंदरनीती
ममतारत सन ज्ञानकहानी * अतिलोभीसनबिरति बषानी
क्रोधिहिसमकामिहिहरिकथा * ऊसरबीज बोए फल जथा
असकहिरघुपतिचाप चढावा * यहमतलछिमनकेमनभावा
संधानेउप्रभुबिसिष कराला * उठीउदधिउरअंतर ज्वाला
मकरउरगझषगन अकुलाने * जरतजंतुजलनिधिजबजाने

कनकथारभरिमनगननाना ❋ बिप्ररूप आएउ तजिमाना

दो० काटेहि पइ कदरी फरै, कोटि जतन कोउ सींचि ॥
बिनयनमानषगेससुनु, डाटेहिपइनवैनीचि ५८ ॥

सभय सिंधुगहि पदप्रभु केरे ❋ छमहुनाथ सब अवगुन मेरे
गगनसमीरअनल जलधरनी ❋ इन्हकइनाथसहजजड करनी
तब प्रेरित माया उपजाए ❋ सृष्टिहेतु सब ग्रंथन्हि गाए
प्रभुआयसु जेहिकहँ जसिअहई ❋ सोतेहि भाँतिरहे सुषलहई
प्रभुभलकीन्हमोहिसिषदीन्ही ❋ मरजादापुनि तुह्मरिअ कीन्ही
ढोल गँवार सूद्र पसु नारी ❋ सकलताडना के अधिकारी
प्रभु प्रताप मैं जाब सुषाई ❋ उतरिहिकटकनमोरिबडाई
प्रभु अज्ञा अपेल श्रुति गाई ❋ करौंसोबेगिजोतुह्महहि सोहाई

दो० सुनत बिनीत बचन अति, कह कृपाल मुसुकाइ ॥
जेहिबिधिउतरहिकपिकटक, तातसोकहहुउपाइ ५९

नाथनील नल कपि द्वौभाई ❋ लरिकाई रिषि आसिषपाई
तिनकेपरसाकिए गिरि भारे ❋ तरिहहिंजलधिप्रताप तुम्हारे
मैं पुनि उरधरि प्रभु प्रभुताई ❋ करिहौंबल अनुमान सहाई
एहिबिधिनाथपयोधि बँधाइअ ❋ जेहिएहसुजसलोकतिहुँ गाइअ
एहिसर मम उत्तरतटबासी ❋ हतहुनाथ पलनर अघरासी
सुनिकृपाल सागरमन पीरा ❋ तुरतहि हरीराम रनधीरा
देषिराम बल पौरुष भारी ❋ हरषिपयोनिधिभय उसुषारी
सकलचरितकहि प्रभुहिसुनावा ❋ चरनबांदिपाथोधि सिधावा

छं० निजभवनगवनेउसिंधुश्रीरघुपतिहियहमतभायऊ ॥
यहचरितकलिमलहरजथामतिदासतुलसीगायऊ ॥

सुषभवन संसयसमनदमन बिषादरघुपतिगुनगना ।
तजिसकलआसभरोसगावहिसुनहिसंततसठमना ॥
दो० सकल सुमंगल दायक, रघुनायकगुनगान मा० प० २३
सादरसुनहिंतेतरहिंभव, सिंधुबिनाजल जान ॥६०॥

इति श्रीराम चरित मानसे सकलकलिकलुष विध्वंसने ज्ञान
सम्पादिनी नाम पंचमः सोपान समाप्तः ॥

ग्रंथसंख्या ५४०

शुभम् ।
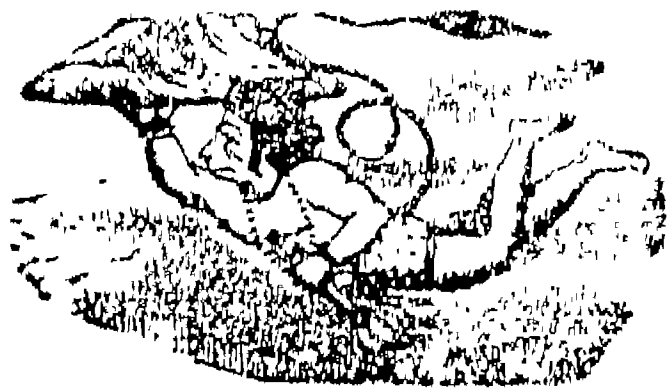
सुन्दरकाण्ड ।

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३७८	२१	रघुपति	रघुपतिकर
४००	११	करौं	करां

इति

❋ श्रीः ❋

अथ रामायण लंकाकाण्ड ।

❋ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❋

श्रीगणेशायनमः

दो० लवनिमेष परबान जुग, बरषकल्पसरचंड ॥
भजसितमनतोहिरामकहँ कालजासुको दंड ॥

श्लोक—रामं कामारि सेव्यं भव भयहरणं कालमत्तेभसिंहं ॥ योगीन्द्रज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितंनिर्गुणं निर्विकारं ॥ माया तीतं सुरेशं खलबध निरतंब्रह्म बृंदैक देवं ॥ बंदेकंदावदातं सरसिजनयनंदेवमूर्वीशरूपं ॥ १ ॥ संखेंद्वाभमतीवसुंदरतनुं शार्दूलचर्मांबरं ॥ कालव्याल कराल भूषण धरंगंगासशांकप्रियं ॥ कासीशंकलि कलमषौघ समनं कल्याण कल्पद्रुमं ॥ नौमीड्यं गिरिजापतिंगुणनिधिंश्रीशंकरंकामहं॥२॥ योददातिसतांशंभुः कैवल्यमपिदुर्लभं ॥ खलानां दंडकृद्यो सौशंकरः शंतनोतुमां ॥ ३ ॥ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

सो० सिंधुवचनसुनिराम, सचिवबोलिप्रभुअसकहेउ ॥
अबबिलंबकेहिकाम, करहुसेतुउतरइकटक ॥
सुनहुभानुकुलकेतु, जामवंतकरजोरिकह ॥
नाथनामतबसेतु, नरचढिभवसागरतरहिं ॥

यहलघुजलधितरतकतिबारा ❋ असमुनिपुनिकहपवनकुमारा
प्रभु प्रताप बडवानल भारी ❋ सोषेउप्रथमपयोनिधिबारी

तबरिपु नारि रुदनजलधारा * भरेउबहोरिभएउतेहि षारा
सुनिअतिउक्तिपवनसुतकेरी * हरषेकपि रघुपति तनहेरी
जामवंत बोले दोउ भाई * नलनीलहि सबकथा सुनाई
रामप्रताप सुमिरिमनमाहीं * करहु सेतुप्रयास कछु नाहीं
बोलिलिएकपिनिकरबहोरी * सकलसुनहुबिनतीकछुमोरी
राम चरन पंकज उर धरहू * कौतुकएक भालुकपि करहू
धावहु मर्कट बिकट बरूथा * आनहुबिटपागिरिन्हकेजूथा
सुनिकपिभालु चलेकरिहूहा * जय रघुबीर प्रताप समूहा

दो० अति उतंग गिरि पादप, लीलहि लेहिं उठाइ ॥
आनिदेहिंनलनीलहि, रचहिंतेसेतुबनाइ ॥ १ ॥

सैल बिसालआनि कपिदेहीं * कंदुक इवनलनीलते लेहीं
देषिसेतु अति सुंदर रचना * बिहँसिकृपानिधिबोलेबचना
परमरम्य उत्तम यह धरनी * महिमाअमितजाइनहिंबरनी
करिहौं इहाँ संभु थापना * मोरे हृदय परम कलपना
सुनि कपीस बहुदूत पठाए * मुनिवरसकल बोलिलै आए
लिंगथापिबिधिवतकरिपूजा * सिवसमानप्रियमोहिनदूजा
सिवद्रोही ममभगतकहावा * सोनरसपनेहुमोहि न पावा
संकरबिमुषभगति चहमोरी * सो नारकी मूढमति थोरी

दो० संकर प्रिय मम द्रोही, सिव द्रोही मम दास ॥
तेनर करहिं कलप भरि, घोरनरकमहँ बास ॥ २ ॥

जेरामेस्वर दरसन करिहहिं * तेतनताजिममलोकसिधरिहहिं
जोगंगाजल आनिचढाइहि * सोसाजुज्य मुक्ति नरपाइहि
होइअकामजोछलतजिसेइहि * भगतिमोरि तेहिसंकरदेइहि

ममकृतसेतुजोदरसनकरिही * सोबिनुश्रमभवसागरतरिही
रामबचन सबके जिय भाए * मुनिवरनिजनिज आस्रमआए
गिरिजा रघुपतिकै यहरीती * संततकरहिं प्रनतपरप्रीती
बाँधासेतु नीलनल नागर * रामकृपाजसभएउ उजागर
बूडहिं आनहि बोरहि जेई * भए उपल बोहित समतेई
महिमायहनजलधिकइबरनी * पाहनगुननकपिन्हकइकरनी

दो० श्री रघुबीर प्रताप ते, सिंधुतरे पाषान ॥
ते मति मंदजे रामतजि, भजहिंजाइप्रभुआन ॥ ३ ॥

बाँधिसेतुअति सुदृढ़ बनावा * देषिकृपानिधिके मनभावा
चली सेनकछु बरनिन जाई * गर्जहिं मर्कटभट समुदाई
सेतु बंधढिग चढि रघुराई * चितवकृपाल सिंधुबहुताई
देषन कहँ प्रभु करुना कंदा * प्रगटभए सबजलचर बृंदा
मकर नक्र नाना झषब्याला * सतजोजनतनपरमाबिसाला
अइसेउएकतिन्हहिजेपाहीं * एकन्हके डरतेपि डेराहीं
प्रभुहिबिलोकहिंटरहिंनटारे * मनहरषित सब भएसुषारे
तिन्हकीओटनदेषिअबारी * मगनभएहरि रूपनिहारी
चला कटकप्रभु आयसुपाई * कोकहिसककपिदल बिपुलाई

दो० सेतबंध भइ भीर अति, कपि नभ पंथ उडाहिं ॥
अपर जलचरन्हि ऊपर, चढि चढि पारहि जाहिं ॥ ४ ॥

असकौतुकबिलोकिद्वौभाई * बिहँसि चलेकृपाल रघुराई
सेनसहित उतरे रघुबीरा * कहिनजाइ कपिजूथपभीरा
सिंधुपार प्रभूडेराकीन्हा * सकलकपिन्हकहँआयसुदीन्हा
षाहुजाइ फल मूल सुहाए * सुनतभालुकपिजहँतहँधाए

सबतरु फरेरामहितलागी ❋ रितुअरुकुरितुकालगतित्यागी
षाहिंमधुरफल बिटप हलावहिं ❋ लंकासन्मुष सिषरचलावहिं
जहँकहुँफिरतनिसाचरपावहिं ❋ घेरिमकलबहु नाचनचावहिं
दसनन्हिकाटि नासिकाकाना ❋ कहिप्रभुसुजसदेहिंतबजाना
जिन्हकरनासाकाननिपाता ❋ तिन्हरावनहि कहीसबबाता
सुनतश्रवन बारिधि बंधाना ❋ दसमुषबोलिउठाअकुलाना

दो० बाँध्योबननिधि नीरनिधि, जलधिसिंधुबारीस।
सत्यतोयनिधिकंपति, उदधिपयोधिनदीस ॥ ५ ॥

निजबिकलताबिचारिबहोरी ❋ बिहँसिगएउग्रहकरि भयभोरी
मंदोदरी सुन्यो प्रभुआयो ❋ कौतुकही पाथोधि बंधायो
करगहिपतिहि भवननिजआनी ❋ बोली परम मनोहर बानी
चरननाइसिर अंचल रोपा ❋ सुनहुबचनपियपरिहरिकोपा
नाथबयरु कीजे ताहीसो ❋ बुधिबलसकिअ जीतिजाहीसो
तुम्हहिरघुपतिहिअंतरकैसा ❋ षलुपद्योत दिनकरहि जैसा
अतिबलमधुकैटभजेहिमारें ❋ महाबीर दिति सुत संघारें
जेहिंबलिबाँधिसहसभुजमारा ❋ सोइअवतरेउहरनमहिभारा
तासुबिरोधन कीजिअनाथा ❋ कालकरम जिवजाकेहाथा

दो० रामहिं सौंपिअ जानकी, नाइ कमल पद माथ ॥
सुतकहँ राजसमर्पिबन, जाइभजिअ रघुनाथ ॥ ६ ॥

नाथदीन दयाल रघुराई ❋ बाघौ सनमुष गएन षाई
चाहिअकरनसोसबकरिबीते ❋ तुह्म सुरअसुरचराचर जीते
संतकहहिंआसिनीतिदसानन ❋ चौथेपन जाइहि नृपकानन
तासुभजनकीजिअ तहँभरता ❋ जोकरता पालक संहरता

सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी ❋ भजहु नाथ ममता मद त्यागी
मुनिवर जतन करहिं जेहि लागी ❋ भूप राज ताजि होहिं बिरागी
सोइ कोसलाधीस रघुराया ❋ आएउ करन तोहि पर दाया
जौं पिय मानहु मोर सिषावन ❋ सुजस होइ तिहुँ पुर अति पावन
दो० अस कहि नयन नीर भरि, गहि पद कंपित गात ॥
नाथ भजहु रघुनाथहि, अचल होइ अहिवात ॥ ७ ॥
तब रावन मयसुता उठाई ❋ कहइ लाग षल निज प्रभुताई
सुनतइँ प्रिया बृथा भय माना ❋ जग जोधा को मोहि समाना
बरुन कुबेर पवन जम काला ❋ भुजबल जितेउँ सकल दिगपाला
देव दनुज नर सब बस मोरे ❋ कवन हेतु उपजा भय तोरे
नानाबिधि तेहि कहेसि बुझाई ❋ सभा बहोरि बैठ सो जाई
मंदोदरी हृदय अस जाना ❋ कालबस्य उपजा अभिमाना
सभा आइ मंत्रिन्ह तेंहिं बूझा ❋ करब कवन बिधि रिपु सैं जूझा
कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा ❋ बार बार प्रभु पूछहु काहा
कहहु कवन भय करिअ बिचारा ❋ नर कपि भालु अहार हमारा
दो० सब के बचन स्रवन सुनि, कह प्रहस्त कर जोरि ।
नीति बिरोध न करिअ प्रभु, मंत्रिन्ह मति अति थोरि ८ ॥
कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती ❋ नाथ न पूर आव एहि भाँती
बारिधि नाघि एक कपि आवा ❋ तासु चरित मन महँ सब गावा
छुधा न रही तुम्हहि तब काहू ❋ जारत नगर कस न धरि षाहू
सुनत नीक आगे दुष पावा ❋ सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा
जेहिं बारीस बँधाएउ हेला ❋ उतरे सेन समेत सुबेला
सो भनु मनुज षाब हम भाई ❋ बचन कहहिं सब गाल फुलाई

तातबचनममसुनुअतिआदर ❀ जनिमनगुनहुमोहिकरिकादर
प्रियबानीजेसुनहिं जेकहहीं ❀ अइसे नरनिकाइजगअहहीं
बचनपरमहित सुनतकठोरे ❀ सुनहिंजेकहहिंतेनरप्रभुथोरे
प्रथमबसीठ पठउसुनुनीती ❀ सीतादेइ करहु पुनि प्रीती

दो० नारिपाइ फिरिजाहिं जौं, तौ न बढाइअ रारि ॥
नाहितसनमुषसमरमहिं, तातकरिअहठिमारि ॥ ९ ॥

यहमत जउँ मानहुप्रभुमोरा ❀ उभयप्रकार सुजसजगतोरा
सुतसन कहदसकंठ रिसाई ❀ असिमतिसठकेहिंतोहिसिषाई
अबहीं ते उर संसय होई ❀ बेनु मूलसुत भएहु घमोई
सुनिपितुगिरापरुषअतिघोरा ❀ चलाभवनकहिबचनकठोरा
हितमत तोहिन लागतकैसे ❀ कालबिबसकहुँ भेषज जैसे
संध्यासमयजानि दससीसा ❀ भवनचलेउनिरषतभुजबीसा
लंका सिषर उपर अगारा ❀ अतिबिचित्र तहँहोइअषारा
बैठ जाइतेहि मंदिर रावन ❀ लागे किन्नर गुनगन गावन
बाजहिं तालपषाउज बीना ❀ नृत्यकरहिं अपछरा प्रबीना

दो० सुनासीरसत सरिससो, संतत करइ बिलास ।
परम प्रबलरिपु सीसपर, तद्यपिसोचनत्रास ॥ १० ॥

इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा ❀ उतरे सेनसहित अतिभीरा
सिषर एक उतंग अतिदेषी ❀ परमरम्य समसुभ्र बिसेषी
तहँतरुकिसलयसुमनसुहाए ❀ लछिमनरचिनिजहाथडसाये
तापररुचिरमृदुल मृगछाला ❀ तेहिआसनआसीन कृपाला
प्रभुकृतसीसकपीस उछंगा ❀ बामदहिनदिसिचापनिषंगा
दुहुँकरकमल सुधारत बाना ❀ कहलंकेस मंत्रलगि काना

बड़भागी अंगद हनुमाना * चरनकमलचापतबिधिनाना
प्रभुपाछे लछिमन बीरासन * कटिनिषंगकर बानसरासन
दो० एहिबिधि कृपारूपगुन, धामराम आसीन ॥
धन्य तेनरएहि ध्यानजे, रहत सदा लयलीन ॥
पूरबदिसा बिलोकि प्रभु, देषा उदितमयंक ॥
कहतसबहिदेषहु ससिहि, मृगपति सरिसअसंक ११
पूरबदिसिगिरिगुहानिवासी * परम प्रताप तेजबलरासी
मत्त नाग तम कुंभबिदारी * ससिकेसरी गगन बनचारी
बिथुरे नभ मुकताहलतारा * निसि सुंदरी केर सिंगारा
कहप्रभु ससिमहँमेचकताई * कहहुकाहनिजनिजमतिभाई
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई * ससिमहँ प्रगट भूमिकैझाँई
मारेहु राहुससिहि कह कोई * उरमहँ परी स्यामता सोई
कोउकहजबबिधिरतिमुषकीन्हा * सारभागससिकरहरिलीन्हा
छिद्रसो प्रगटइंदु उरमाहीं * तेहिमगदेषिअनभपरिछाहीं
प्रभुकहगरल बंधु ससिकेरा * अतिप्रियनिजउर दीन्हबसेरा
बिष संजुतकरनिकरपसारी * जारत बिरहवंत नरनारी
दो० कह हनुमंत सुनहु प्रभु, ससितुम्हार प्रियदास ।
तवमूरति बिधुउर बसति, सोइ स्यामता अभास ॥
पवन तनयके बचनसुनि, बिहँसेराम सुजान ॥
दछिनदिसिअवलोकिप्रभु, बोलेकृपानिधान १२ ॥
देषु बिभीषन दछिन आसा * घनघमंड दामिनीबिलासा
मधुर मधुर गरजै घनघोरा * होइबृष्टिजन उपल कठोरा
कहतबिभीषनसुनहुकृपाला * होइनतडितन बारिदमाला

लंका सिषर उपर अगारा ❋ तहँ दसकंधर देष अषारा
छत्र मेघडंबर सिर धारी ❋ सोइजनुजलदघटा अतिकारी
मंदोदरी स्रवन ताटंका ❋ सोइप्रभु जनुदामिनीदमंका
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा ❋ सोइरवमधुर सुनहु सुरभूपा
प्रभुमुसुकानसमुझिअभिमाना ❋ चाप चढाइ बान संधाना

दो० छत्र मुकुट ताटंकसब, हते एकही बान ॥
सबके देषत महि परे, मरमन कोऊ जान ॥
असकौतुक करि रामसर, प्रबिसेउ आइनिषंग ॥
रावन सभा ससंक सब, देषिमहा रसभंग १३ ॥

कंपन भूमिन मरुत बिसेषा ❋ अस्त्रसस्त्र कछुनयनन देषा
सोचहिंसबनिजहृदयमझारी ❋ असगुनभयउ भयंकरभारी
दसमुष देषि सभा भय पाई ❋ बिहँसिबचनकह जुगतिबनाई
सिरौगिरे संततसुभ जाही ❋ मुकुटपरेकस असगुनताही
सयनकरहुनिजनिजगृहजाई ❋ गवनेभवन सकल सिरनाई
मंदोदरी सोच उर बसेऊ ❋ जबतेस्रवनपूर महि षसेऊ
सजलनयनकहजुगकरजोरी ❋ सुनहुप्रानपतिबिनतीमोरी
कंत राम बिरोध परिहरहू ❋ जानिमनुजजनिहठ उरधरहू

दो० बिस्व रूप रघुबंसमनि, करहु बचन बिस्वासु ॥
लोक कल्पना बेदकर, अंगअंग प्रतिजासु १४ ॥

पदपाताल सीसअज धामा ❋ अपरलोकअँगअँगबिश्रामा
भृकुटिबिलासभयंकरकाला ❋ नयनदिवाकरकचघनमाला
जासुघ्रान अस्विनी कुमारा ❋ निसिअरुदिवस निमेषअपारा
स्रवन दिसादस बेदबषानी ❋ मारुतस्वाससनिगम निजबानी

अधरलोभजमदसन कराला * मायाहास बाहुदिग पाला
आननअनलअंबुपतिजीहा * उतपतिपालनप्रलयसमीहा
रोम राजि अष्टा दस भारा * अस्थिसैल सरितानसजारा
उदर उदधि अधगोजातना * जगमयप्रभुकहबेद कलपना
दो० अंहकार सिवबुद्धि अज, मन ससि चित्त महान ॥
मनुज बास सचराचर,रूप राम भगवान ॥
असबिचारिसुनु प्रानपति, प्रभुसनबयर बिहाइ ॥
प्रीतिकरहु रघुबीरपद, ममअहिवात नजाइ १५ ॥
बिहँसानारिबचनसुनिकाना * अहोमोह महिमा बलवाना
नारिसुभाउसत्यकबिकहहीं * अवगुनआठ सदा उर रहहीं
साहसअनृत चपलतामाया * भयअबिबेकअसौचअदाया
रिपुकर रूपसकल तैं गावा * अतिबिसालभयमोहिसुनावा
सोसब प्रिया सहज बसमोरे * समुझिपरा प्रसाद अबतोरे
जानिउँ प्रियातोरि चतुराई * एहिबिधिकहेउमोरिप्रभुताई
तबबतकही गूढमृग लोचनि * समुझतसुपदसुनतभयमोचनि
मंदोदरिमनमहँअसठयऊ * पिअहिकालबसमतिभ्रमभयऊ
दो० एहिबिधि करत बिनोदबहु, प्रात प्रगट दसकंध ॥
सहज असंक लंक पति, सभा गएउ मदअंध ॥
सो० फूलइ फरइ न बेत, जदपि सुधा बरषहिं जलद ॥
मूरुषहृदयनचेत, जौंगुरमिलहिंबिरंचिसिव १६ ॥
इहाँ प्रात जागे रघुराई * पूछामतसब सचिव बोलाई
कहहुबेगिका करिअ उपाई * जामवंत कह पद सिरनाई
सुनुसरबज्ञ सकल उरबासी * बुधिबलतेज धर्मगुन रासी

मंत्रकहौंनिजमतिअनुसारा * दूत पठाइअ बालि कुमारा
नींकमंत्र सबके मन माना * अंगदसनकह कृपानिधाना
बालितनयबुधिबलगुनधामा * लंकाजाहु तातमम कामा
बहुतबुझाइतुम्हाहिंकाकहऊँ * परम चतुरमैं जानत अहऊँ
काज हमार तासु हित होई * रिपुसनकरेहु बतकही सोई
सो० प्रभुअज्ञाधरिसीस, चरनबंदिअंगदउठेउ ॥
सोइगुनसागरईस, रामकृपाजापरकरउ ॥
स्वयंसिद्धतबकाज, नाथमोहिअदारदिए ॥
असबिचारिजुबराज, तनपुलकितहरषितहिए १७ ॥
बंदिबचन उरधरि प्रभुताई * अंगदचलेउसबहि सिरनाई
प्रभुप्रताप उरसहज असंका * रनबाँकुरा बालि सुतबंका
पुर पैठत रावन कर बेटा * षेलत रहा होइगै भेटा
बातहिं बात करष बढिआई * जुगलअतुलबलपुनितरुनाई
तेहि अंगदकहँ लात उठाई * गहिपदपटकेउभूमि भँवाई
निसिचरनिकरदेषिभटभारी * जहँतहँचलेनसकहिं पुकारी
एकएकसन मरमन कहहीं * समुझितासुबधचुपकरिरहहीं
भएउकोलाहलनगरमझारी * आवाकपि लंका जेहिजारी
अबधौंकाहकरिहि करतारा * अतिसभीतसबकरहिंबिचारा
बिनुपूंछे मगदेहिं दिषाई * जेहिबिलोक सो जाइसुषाई
दो० गएउ सभा दरबार तब, सुमिरि राम पदकंज ॥
सिंह ठवनिइतउतचितव, धीरबीरबलपुंज ॥ १८ ॥
तुरत निसाचर एक पठावा * समाचार रावनहि जनावा
सुनतबिहँसिबोलादससीसा * आनहु बोलिकहाँकर कीसा

आएसु पाइ दूतबहु धाए * कपिकुंजरहिबोलि लै आए
अंगद दीष दसानन बैसे * सहितप्रानकज्जलगिरिजैसे
भुजाबिटप सिरसृंग समाना * रोमावली लताजनु नाना
मुषनासिकानयनअरुकाना * गिरिकंदरा षोहअनुमाना
गएउसभा मननेकुन मुरा * बालितनय अतिबलबाँकुरा
उठे सभासदकपि कहँदेषी * रावन उरभा क्रोध बिसेषी
दो० जथा मत्तगज जूथमहँ, पंचाननचालि जाइ ॥
रामप्रताप सुमिरि मन, बैठसभा सिरनाइ ॥ १९ ॥
कह दसकंठ कवनतै बंदर * मैं रघुबीर दूत दसकंधर
ममजनकहितोहिरही मिताई * तवहित कारनआएउँ भाई
उत्तमकुल पुलस्तिकरनाती * सिवबिरंचि पूजेहु बहुभाँती
बरपाएहु कीन्हेहु सबकाजा * जीतेहु लोकपालसब राजा
नृपअभिमानमोहवसकिंबा * हरिआनिहु सीताजगदंबा
अबसुभकहासुनहुतुम्हमोरा * सबअपराधछमिहिप्रभुतोरा
दसन गहहुत्रिन कंठकुठारी * परिजनसहितसंगनिजनारी
सादरजनक सुताकरिआगे * एहिबिधिचलहु सकलभयत्यागे
दो० प्रनतपाल रघुबंस मनि, त्राहि त्राहि अबमोहि ॥
आरतगिरासुनतप्रभु, अभयकरैंगे तोहि ॥ २० ॥
रेकपिपोत बोलु सँभारी * मूढनजानेहि मोहि सुरारी
कहुनिजनामजनककरभाई * केहिनाते मानिए मिताई
अंगद नाम बालि कर बेटा * तासो कबहुँ भइही भेटा
अंगदबचन सुनतसकुचाना * रहाबालि बानर मैंजाना
अंगदतहीं बालिकर बालक * उपजेहुबंसअनलकुलघालक

गर्भनगएहुब्यर्थतुम्हजाएहु * निज मुषतापस दूतकहाएहु
अबकहुकुसलबालिकहँअहई * बिहँसिवचनतब अंगदकहई
दिनदसगए बालि पहिं जाई * बूझेहुकुसलसषा उरलाई
रामबिरोध कुसलजसिहोई * सोसब तोहि सुनाइहि सोई
सुनुसठ भेद होइ मन ताके * श्रीरघुबीर हृदय नहिं जाके

दो० हमकुल घालक सत्य तुम्ह, कुलपालकदससीस ॥
अंधौबधिरन असकहहिं, नयन कानतबबीस ॥२१॥

सिवबिरंचिसुर मुनिसमुदाई * चाहत जासुचरन सेवकाई
तासुदूत होइ हम कुलबोरा * अइसिहुमति उरबिहरनतोरा
सुनिकठोर बानी कपिकेरी * कहत दसानन नयन तरेरी
षलतबकठिन बचनसबसहऊँ * नीतिधर्म में जानत अहऊँ
कहकपिधर्म सीलता तोरी * हमहुँ सुनीकृतपरत्रियचोरी
देष्यों नयन दूत रषवारी * बूडिन मरहु धर्म्मब्रत धारी
काननाकबिनभगिनिनिहारी * छमाकीन्हि तुमधरमबिचारी
धर्मसीलता तवजग जागी * पावा दरस हमहु बडभागी

दो० जनिजल्पसिजडजंतुकपि, सठबिलोकुममबाहु ॥
लोकपाल बलबिपुलससि, ग्रसन हेतु सबराहु ॥
पुनिनभसरममकरनिकर, कमलन्हिपरकरिबास ॥
सोभत भयउमरालइव, संभुसहित कैलास ॥ २२ ॥

तुम्हरेकटकमांझ सुनुअंगद * मोसनभिरिहिकवनजोधाबद
तबप्रभु नारिबिरह बलहीना * अनुजतासु दुषदुषीमलीना
तुम सुग्रीव कुलद्रुम दोऊ * अनुजहमार भीरुअतिसोऊ
जामवंत मंत्री अति बूढा * सोकिहोइ अब समरारूढा

सिल्पिकर्मजानहिनलनीला ❀ है कपिएक महाबल सीला
आवाप्रथमनगरजेहिं जारा ❀ सुनतबचनकहबालिकुमारा
सत्यबचनकहुनिसिचरनाहा ❀ साँचेहुकीस कीन्ह पुरदाहा
रावननगर अल्पकपि दहई ❀ सुनिअसबचनसत्यकोकहई
जो अतिसुभटसराहेहुरावन ❀ सो सुग्रीवकेर लघु धावन
चलै बहुत सो बीर न होई ❀ पठवाखबरि लेन हम सोई

दो० सत्य नगर कपि जारेउ, बिनुप्रभु आयसु पाइ ॥
फिरिन गएउ सुग्रीवपहिं, तेहिभय रहा लुकाइ ॥
सत्य कहहि दसकंठ सब, मोहि न सुनि कछुकोह ॥
कोउन हमारे कटक अस, तोसन लरतजो सोह ॥
प्रीतिबिरोधसमानसन, करिअनीतिअसिआहि ॥
जौंमृगपतिबधमेडुकन्हि, भलकिकहै कोउताहि ॥
जद्यपि लघुता राम कहँ, तोहि बधे बड दोष ॥
तदपि कठिन दसकंठ सुनु, छत्रि जाति कर रोष ॥
बक्रउक्ति धनबचन सर, हृदय दहेउ रिपुकीस ॥
प्रतिउत्तर सडसिन्ह मनहु, काढतभटदससीस ॥
हँसिबोलेउ दसमौलि तब, कपिकरबडगुन एक ॥
जो प्रतिपालै तासुहित, करै उपाय अनेक २३ ॥

धन्यकीसजोनिजप्रभुकाजा ❀ जहँतहँनाचै परिहरि लाजा
नाचिकूदिकरि लोग रिझाई ❀ पतिहित करै धर्म निपुनाई
अंगदस्वामि भक्तबजाती ❀ प्रभुगुनकसनकहसिएहिभांती
मैंगुनगाहक परम सुजाना ❀ तबकटुरटनिकरौंनाहिंकाना
कहकपितब गुनगाहकताई ❀ सत्य पवनसुत मोहि सुनाई

बनबिधंसिसुतबाधि पुरजारा ❀ तदपिनतेहिकछुकृतअपकारा
सोइबिचारितवप्रकृतिसुहाई ❀ दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई
देषेउँआइजोकछुकपिभाषा ❀ तुम्हरे लाज न रोषनमाषा
जौंअसिमतिपितुषाएहुकीसा ❀ कहिअसबचनहँसादससीसा
पितहिषाइ षातेउँपुनितोही ❀ अबहींसमुझिपरा कछुमोही
बालिबिमलजसभाजनजानी ❀ हतौंनतोहिअधमअभिमानी
कहु रावन रावन जगकेते ❀ मैं निजस्रवन सुनेसुनु जेते
बलिहिजितनएकगएउपताला ❀ राषेउबाँधिसिसुन्हहयसाला
षेलहिं बालक मारहिं जाई ❀ दयालागिबलिदीन्हछोडाई
एक बहोरि सहस भुज देषा ❀ धाइधराजिमि जंतुबिसेषा
कौतुकलागिभवन लै आवा ❀ सोपुलस्तिमुनिजाइछोडावा

दो० एक कहतमोहि सकुच अति, रहाबालिकी काँष ॥
इन्हमहँ रावनतैं कवन, सत्यबदहि तजिमाँष २४॥

सुनुसठ सोइरावनबलसीला ❀ हरगिरिजानजासुभुजलीला
जान उमापति जासु सुराई ❀ पूजेउँजेहिसुर सुमन चढाई
सिरसरोजनिजकरन्हिउतारी ❀ पूजेउँअमितबार त्रिपुरारी
भुजबिक्रमजानहिंदिगपाला ❀ सठअजहूँजिन्हके उरसाला
जानहिंदिग्गजउरकठिनाई ❀ जबजबभिरउँजाइबरिआई
जिन्हके दसनकरालनफूटे ❀ उर लागत मूलकइव टूटे
जासुचलतडोलतिइमिधरनी ❀ चढतमत्तगजजिमिलघुतरनी
सोइरावनजगबिदितप्रतापी ❀ सुनेंहिनस्रवनअलीकप्रलापी

दो० तेहिरावन कहँलघुकहसि, नरकर करसिबषान ॥
रेकपि बर्बर षर्बषल, अबजाना तबज्ञान ॥ २५ ॥

सुनिअंगदसकोप कहबानी * बोलुसँभारिअधम अभिमानी
सहसबाहुभुज गहन अपारा * दहनअनलसमजासुकुठारा
जासुपरसु सागर परधारा * बूड़ेनृप अगनित बहुबारा
तासुगर्ब जेहि देषत भागा * सोनरक्यों दससीसअभागा
राममनुज कसरे सठ बंगा * धन्वी काम नदीपुनि गंगा
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूषा * अन्नदान अरु रस पीयूषा
बैनतेयषग अहिसहसानन * चिंतामनिपुनिउपल दसानन
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा * लाभकिरघुपतिभगति अकुंठा

दो० सेनसहित तबमानमथि, बन उजारि पुरजारि ॥
कसरेसठहनुमान कपि, गएउजोतबसुतमारि ॥२६॥

सुनुरावन परिहरि चतुराई * भजसिन कृपासिंधु रघुराई
जौंषल भएसिरामकरद्रोही * ब्रह्मरुद्र सकराषि न तोही
मूढ़वृथाजनि मारसिगाला * रामबयर असहोइहि हाला
तबसिरनिकरकपिन्हकेआगे * परिहहिं धरनि रामसरलागे
तेतव सिर कंदुकसमनाना * षेलिहहिंभालुकीसचौगाना
जबहिंसमरकोपिहिरघुनायक * छुटिहहिं अतिकरालबहुसायक
तबकिचलिहिअसगालतुम्हारा * अस बिचारिभुजरामउदारा
सुनत बचन रावन परजरा * जरतमहानल जनु घृतपरा

दो० कुंभकरन असबंधुमम, सुतप्रसिद्ध सक्रारि ॥
मोरपराक्रमनहिंसुनेहि, जितेउँचराचरझारि ॥२७॥

सठ साषामृग जोरि सहाई * बाँधा सिंधु इहै प्रभुताई
नाघहिं षग अनेक बारीसा * सूरनहोहिंते सुनु सठकीसा

ममभुज सागर बलजलपूरा ❋ जहं बूडेबहु सुरनर सूरा
बीसपयोधि अगाध अपारा ❋ कोअसबीर जो पाइहिपारा
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा ❋ भूपसुजस षलमोहिं सुनावा
जौंपैसमरसुभट तव नाथा ❋ पुनिपुनिकहसिजासुगुनगाथा
तबबसीठपठवतकेहि काजा ❋ रिपुसनप्रीतिकरतनहिं लाजा
हरिगिरिमथननिरषि ममबाहू ❋ पुनिसठकपिनिज प्रभुहिसराहू

दो॰ सूरकवन रावन सरिस, स्वकर काटि जेहिसीस ॥
हुने अनलअतिहरष बहु, बारसाषि गौरीस २८ ॥

जरतबिलोकेउँजबहिं कपाला ❋ बिधिकेलिषेअंकनिजभाला
नरकेकर आपन बध बाँची ❋ हसेउँजानिबिधिगिराअसांची
सोउमनसमुझित्रासनहिंमोरे ❋ लिषाबिरंचिजरठ मतिभोरे
आनबीरबल सठ ममआगे ❋ पुनिपुनिकहसि लाजपतित्यागे
कहअंगद सलज्जजगमाहीं ❋ रावनतोहिसमानकोउनाहीं
लाजवंततव सहज सुभाऊ ❋ निजमुषनिजगुन कहसिनकाऊ
सिरअरु सैलकथा चितरही ❋ ताते बार बीस तैं कही
सोभुजबल राषेहु उरघाली ❋ जीतेहु सहसबाहु बलिबाली
सुनु मतिमंद देहि अबपूरा ❋ काटेसीस कि होइ असूरा
इंद्रजालिकहँकहिअन बीरा ❋ काटइनिजकर सकलसरीरा

दो॰ जरहि पतंग मोहबस, भार बहहिं परबृंद ॥
तेनहिं सूर कहावहिं, समुझि देषु मतिमंद ॥ २९ ॥

अबजनिबतबढावषल करही ❋ सुनुममबचनमानपरिहरही
दसमुखमैंन बसीठी आएउ ❋ असबिचारिरघुबीर पठाएउ

बारबार अस कहइ कृपाला * नहिंगजारिजसबधेमृकाला
मनमहँसमुझिबचन प्रभुकेरे * सहेउँ कठोर बचन सठतेरे
नाहितकरि मुषभंजन तोरा * लैजातेउँ सीतहि बरजोरा
जानेउँतवबलअधम सुरारी * सूनेहरि आनिहि परनारी
तै निसिचर पतिगर्ब बहूता * मैंरघुपति सेवक करदूता
जौंनराम अपमानहिं उरऊँ * तोहिदेषतअसकौतुककरऊँ

दो० तोहिपटकिमहि सेनहति, चौपटकरि तबगाउँ ॥
तबजुबतिन्हसमेतसठ, जनकसुतहिलैजाउँ ॥ ३० ॥

जौं असकरौं तदपिनबडाई * मुएहिबधेनाहिकछु मनुसाई
कौलकामबस कृपिनबिमूढ़ा * अतिदरिद्रअजसीअतिबूढ़ा
सदा रोग बस संतत क्रोधी * बिस्नुबिमुषश्रुतिसंतबिरोधी
तनपोषक निंदक अघषानी * जीवतसव समचौदह प्रानी
असबिचारिषलबधउँनतोही * अबजनिरिसउपजावसिमोही
सुनिसकोपकहनिसिचरनाथा * अधरदसनदसिमीजतहाथा
रेकपिअधममरनअबचहसी * छोटेबदन बातबड़ि कहसी
कटुजल्पसिजडकपिबलजाके * बलप्रताप बुधितेजन ताके

दो० अगुनअमान जानितेहि, दीन्हपिताबनबास ॥
सोदुषअरुजुबतीबिरह, पुनिनिसिदिनममत्रास ॥
जिन्हकेबलकर गर्वतोहि, अइसेमनुजअनेक ॥
षाहिंनिसाचरदिवसनिसि, मूढ़समुझुतजिटेक ३० ॥

जबतोहिंकीन्ह रामकै निंदा * क्रोधवंतअतिभएउकपिंदा
हरिहर निंदासुनै जो काना * होतपाप गोघात समाना
कटकटानकपिकुंजर भारी * दुहुँ भुजदंढतमकिमहिमारी

डोलतधरनि सभासद षसे ॥ चलेभाजि भयमारुत ग्रसे
गिरत सँभारि उठादसकंधर ॥ भूतलपरे मुकुटअति सुंदर
कछुतेहिंलैनिजसिरन्हिसवारे ॥ कछुअंगद प्रभुपास पवारे
आवतमुकुट देषिकपिभागे ॥ दिनहींलूकपरन बिधिलागे
की रावन करिकोप चलाए ॥ कुलिसचारिआवतअतिधाए
कहप्रभुहँसिजानिहृदयडेराहू ॥ लूकनअसनिकेतुनहिं राहू
ए किरीट दसकंधर केरे ॥ आवतबालि तनयके प्रेरे

दो॰ तरकि पवनसुत करगहेउ, आनि धरे प्रभुपास ॥
कौतुक देषहिं भालुकपि, दिनकर सरिस प्रकास ॥
उहाँ सकोप दसानन, सबसन कहत रिसाइ ॥
धरहुकपिहिधरिमारहु, सुनिअंगदमुसुकाइ ॥ ३१ ॥

एहिबिधिबेगिसुभटसबधावहु ॥ षाहुभालुकपिजहँजहँपावहु
मर्कटहीन करहु महिजाई ॥ जिअतधरहु तापस दोभाई
पुनिसकोप बोलेउजुबराजा ॥ गालबजावत तोहि नलाजा
मरुगरकाटिनिलजकुलघाती ॥ बलबिलोकिबिहरातिनहिछाती
रेत्रिय चोर कुमारग गामी ॥ षलमलरासिमंदमतिकामी
सन्यपात जलपसि दुर्बादा ॥ भयेसिकालबसषलमनुजादा
याको फल पावहुगे आगे ॥ बानरभालु चपेटन्हि लागे
राममनुजबोलत असिबानी ॥ गिरहिंनतबरसनाअभिमानी
गिरिहहिंरसना संसय नाहीं ॥ सिरन्हिसमेतसमरमहिमाहीं

सो॰ सोनरक्यों दसकंध, बालि बध्योजेहिंएकसर ।
बीसहुलोचनअंध, धिगतबजन्मकुजातिजड ॥

तबसोनितकी प्यास, तृषितराममसायकनिकर ।
तजौंतोहितेहित्रास, कटुजल्पकनिसिचरअधम ३२॥

मैंतव दसन तोरिबेलायक * आएसुमोहिनदीन्हरघुनायक
असिरिसहोतिदसौमुखतोरौं * लंकागहि समुद्रमहँ बोरौं
गूलरिफल समान तबलंका * बसहुमध्यतुम्हजंतु असंका
मैं बानर फल पातन बारा * आयसु दीन्हनराम उदारा
जुगुतिसुनत रावन मुसुकाई * मूढसिषिहिकहँ बहुतझुठाई
बालिनकबहुँ गालअसमारा * मिलितपसिन्हतैंभएसिलबारा
साँचहु मैं लबार भुजबीहा * जौंन उपारिउँतबदसजीहा
समुझिरामप्रतापकपिकोपा * सभामाँझपनकरि पदरोपा
जउँममचरनसकसिसठटारी * फिरहिं राम सीता मैं हारी
सुनहुसुभटसबकहदससीसा * पदगहि धरनिपछारहुकीसा
इंद्रजीत आदिक बलवाना * हरषिउठे जहँतहँभटनाना
झहटहिंकरिबलबिपुलउपाई * पदनटरै बैठहिंसिर नाई
पुनि उठिझपटहिंसुरआराती * टरैनकीसचरन एहिभाँती
पुरुषकुयोगी जिमि उरगारी * मोहबिटपनहिसकहिउपारी

दो॰ कोटिन्ह मेघनाद सम, सुभट उठे हरषाइ ॥
झपटहिं टरै न कपिचरन, पुनि बैठहिं सिरनाइ ॥
भूमिनछाडतकपि चरन, देषत रिपु मद भाग ॥
कोटिबिघ्नतेसंतकर, मनजिमिनीतिनत्याग ॥ ३३ ॥

कपिबलदेषि सकलहियहारे * उठाआपुकपि के परचारे
गहतचरन कहबालिकुमारा * ममपदगहेन तोर उबारा
गहसिन रामचरन सठजाई * सुनताफिरामन अतिसकुचाई

भयउ तेज हत श्री सब गई * मध्यदिवस जिमि ससिसोहई
सिंहासन बैठेउ सिरनाई * मानहुँसंपति सकल गँवाई
जगदात्माप्रान पतिरामा * तासुबिमुषकिमिलह बिस्रामा
उमारामकीभृकुटिबिलासा * होइ बिस्वपुनि पावइनासा
तृनतेकुलिसकुलिसतृनकरई * तासुदूत पनकहुकिमिटरई
पुनिकपिकहीनीतिबिधिनाना * माननताहि कालनिअराना
रिपुमदमथिप्रभुसुजससुनायो * यहकहिचल्योबालिनृपजायो
हतौंन षेत षेलाइ षेलाई * तोहिअबहिं काकरौं बडाई
प्रथमहितासुतनयकपिमारा * सोसुनिरावन भयउ दुषारा
जातुधान अंगद पनदेषी * भयब्याकुलसब भएबिसेषी

दो० रिपुबलधरषि हरषिकपि. बालितनयबलपुंज ॥ मा० प० २४
पुलक सरीर नयन जल, गहेराम पदकंज ॥
सांझजानि दसकंधर, भवन गएउबिलषाइ ॥ नवाह ॥
मन्दोदरी रावनहि, बहुरिकहा समुझाय ॥ ३४ ॥

कंतसमुझिमनतजहु कुमतिही * सोहन समरतुम्हहि रघुपतिही
रामानुज लघुरेष षचाई * सोउनहिंनाँघेहुअसि मनुसाई
पियतुम्हताहिजितबसंग्रामा * जाकेदूत केर यह कामा
कौतुक सिंधुनाघि तबलंका * आएउ कपिकेहरी असंका
रषवारे हतिबिपिन उजारा * देषततोहि अक्षतेहिं मारा
जारिसकलपुरकीन्हेसिछारा * कहाँरहा बलगर्ब तुम्हारा
अबपतिमृषागालजनिमारहु * मोरकहाकछु हृदयबिचारहु
पतिरघुपतिहिनृपतिजनिमानहु * अग जगनाथ अतुलबल जानहु
बान प्रताप जान मारीचा * तासुकहानहिं मानेहिनीचा

जनकसभाअगिनितभुअपाला * रहेतुम्हौबलअतुल बिसाला
भंजिधनुषजानकी बिआही * तबसंग्रामजितेहु किनताही
सुरपति सुतजानै बल थोरा * राषाजियतआँषि एकफोरा
सूपनषाके गतितुम्ह देषी * तदपिहृदयनहिलाजबिसेषी
दो० बधिबिराधषरदूषनहि, लीला हत्यौ कबंध।
बालिएकसरमार्यो, तेहिजानहुदसकंध ॥ ३५ ॥
जेहिंजलनाथ बँधाएउहेला * उतरेप्रभु दलसहित सुबेला
कारुनीक दिनकरकुल केतू * दूतपठाएउ तव हित हेतू
सभामाँझ जेहिंतब बलमथा * करिबरूथमहँ मृगपतिजथा
अंगदहनुमत अनुचर जाके * रनबाँकुरे बीर अति बांके
तेहिकहँपियपुनिपुनिनरकहहू * सुधामान ममता मद बहहू
अहहकंत कृतराम बिरोधा * कालबिबसमन उपजनबोधा
कालदंडगहि काहुन मारा * हरै धर्म बलबुद्धि बिचारा
निकटकालजेहिआवतसाँई * तेहिभ्रमहोइ तुम्हारेहिनांई
दो० दुइसुतमारे दहेउपुर, अजहुँ पूरपियदेहु ॥
कृपासिंधुरघुनाथभजि, नाथबिमल जसलेहु ॥ ३६ ॥
नारिबचनसुनिबिसिषसमाना * सभागएउ उठिहोतबिहाना
बैठजाइ सिंघासन फूली * अतिअभिमानत्राससबभूली
इहाँराम अंगदहि बोलावा * आइ चरन पंकज सिरनावा
अति आदर समीप बैठारी * बोलेबिहँसि कृपाल षरारी
बालितनयकौतुकअतिमोही * तातसत्य कहुपूछउँ तोही
रावन जातुधान कुलटीका * भुजबलअतुलजासुजगलीका
तासुमुकुट तुम्हचारिचलाए * कहहुतातकवनी बिधिपाए

सुनुसर्वज्ञ प्रनत सुषकारी * मुकुटनहोहिं भूपगुन चारी
सामदाम अरुदंड बिभेदा * नृपउरवसहिं नाथकह बेदा
नीति धर्मके चरन सुहाए * असजियजानिनाथपहिं आए

दो॰ धर्महीन प्रभुपद बिमुष, काल बिवसदससीस ॥
तेहि परिहरि गुन आए, सुनहु कोसलाधीस ॥
परम चतुरताश्रवन सुनि, बिहँसे राम उदार ॥
समाचार पुनिसबकहे, गढ़के बालिकुमार ३७ ॥

रिपुके समाचार जब पाए * रामसचिवसबनिकटबोलाए
लंका बाँके चारि दुआरा * केहिबिधिलागिअ करहुबिचारा
तबकपीसरिच्छेसबिभीषन * सुमिरिहृदयादिनकरकुलभूषन
करिबिचारतिन्हमंत्र दृढ़ावा * चारिअनीकपिकटकबनावा
जथाजोग सेनापति कीन्हे * जूथपसकल बोलि तब लीन्हे
प्रभुप्रताप कहिसबसमुझाए * सुनिकपिसिंहनादकरिधाए
हरषितरामचरनसिरनावहिं * गहिगिरिसिषरबीरसबधावहिं
गर्जहिं तर्जहिंभालुकपीसा * जयरघुबीर कोसलाधीसा
जानतपरमदुर्ग अतिलंका * प्रभुप्रतापकपिचलेउअसंका
घटाटोपकरि चहुँदिसिघेरी * मुषहिनिसान बजावहिंभेरी

दो॰ जयतिराम जयलछिमन, जयकपीससुग्रीव ॥
गर्जहिंसिंहनादकपि, भालुमहाबलसींव ॥ ३८ ॥

लंकाभएउ कोलाहलभारी * सुनादसाननअतिअहँकारी
देषहु बनरन्ह केरि ढिठाई * बिहँसिनिसाचर सेनबोलाई
आए कीस काल के प्रेरे * छुधावंत सब निसिचर मेरे
असकहिअट्टाहाससठकीन्हा * गृहबैठे अहार बिधि दीन्हा

सुभटसकलचारिहु दिसिजाहू * धरिधरिमालुकीस सब षाहू
उमारावनहिअस अभिमाना * जिमिटिट्टिभषगसूतउताना
चले निसाचर आयसुमाँगी * गहिकरभिंडि पालबरसाँगी
तोमर मुद्गर परसु प्रचंडा * सूलकृपान परिघरि षंडा
जिमिअरुनो पलनिकरनिहारी * धावहिंसठषगमाँस अहारी
चोचभंगदुखतिन्हहिनसूझा * तिमिधाए मनुजाद अबूझा
दो० नानायुध सरचापधर, जातु धान बलबीर ॥
कोटकगूरन्हिचढिगए, कोटिकोटिरनधीर ३९
कोटिकगूरन्हि सोहहिंकैसे * मेरुकेसृंगन्हि जनुघन बैसे
बाजहिंढोलनिसान जुझाऊ * सुनिधुनिहोइभटन्हिमनचाऊ
बाजहिं भेरिनफीरि अपारा * सुनिकादर उरजाहिं दरारा
देषिन्हजाइ कपिन्हके ठट्टा * अतिबिसालतनभालुसुभट्टा
धावहिंगनहिनअवघटघाटा * पर्बतफोरि करहिं गहिबाटा
कटकटाहिंकोटिन भटगर्जहिं * दसनओठकाटहिं अतितर्जहिं
उतरावन इत राम दोहाई * जयति जयतिजयपरीलराई
निसिचरसिषरसमूह ढहावहिं * कूदिधरहिंकपिफेरि चलावहिं
छं० धरि कुधर षंड प्रचंड, मर्कट भालुगढपर डारहीं ॥
झपटहिंचरनगहिपटकिमहिभजिचलतबहुरिपचारहीं
अतितरलतरुनप्रताप तर्पहिंतमकिगढचढिचढिगए ॥
कपिभालु चढि मंदिरन्ह जहँतहँरामजसगावतभाए ॥
दो० एक एक निसिचर गहि, पुनिकपिचले पराइ ॥
ऊपर आपुहेठभट, गिरहिधरनि पर आइ ॥ ४० ॥
रामप्रताप प्रबल कपिजूथा * मर्दहिंनिसिचरसुभटबरूथा

चढे दुर्ग पुनि जहँतहँ बानर * जयरघुबीर प्रताप दिवाकर
चले निसाचर निकर पराई * प्रबलपवनजिमिघन समुदाई
हा हा कार भएउ पुरभारी * रोवहिं बालक आतुर नारी
सब मिलिदेहिंरावनहिंगारी * राजकरत एहिमृत्यु हँकारी
निजदलबिचलसुनीतेहिकाना * फेरिसुभट लंकेस रिसाना
जोरन बिमुख फिरामैंजाना * मोमैं हतब कराल कृपाना
सर्बसषाइ भोग करिनाना * समरभूमिभए बल्लभप्राना
उग्रबचनसुनि सकलडेराने * चलेक्रोधकरि सुभट लजाने
सन्मुष मरन बीरकै सोभा * तबतिन्हतजाप्रानकरलोभा

दो० बहु आयुध धरसुभटसब, भिरहिं पचारि पचारि ॥
ब्याकुलकिएभालुकपि, परिघात्रिसूलन्हिमारि ॥ ४१ ॥

भयआतुर कपि भागनलागे * जद्यपि उमाजीतिहहिं आगे
कोउकहकहँअंगदहनुमंता * कहँनलनील दुबिदबलवंता
निजदलबिकलसुनाहनुमाना * पछिम द्वार रहा बलवाना
मेघनाद तहँ करै लराई * टूटन द्वार परम कठिनाई
पवनतनयमनभाअतिक्रोधा * गर्जेउप्रलयकालसमजोधा
कूदिलंक गढ ऊपर आवा * गहिगिरिमेघनाद कहँधावा
भंजेउ रथ सारथी निपाता * ताहिहृदय महँमारेसिलाता
दुसरे सूत बिकल तेहिजाना * स्यंदनघालितुरतगृह आना

दो० अंगद सुना पवनसुत, गढपर गएउ अकेल ॥
रनबाँकुरा बालिसुत, तरकिचढेउकपि षेल ॥ ४२ ॥

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर * रामप्रतापसुमिरि उरअंतर
रावन भवन चढे द्वौ धाई * करहिं कोसलाधीस दोहाई

दौ दलप्रबल पचारि पचारी * लरतसुभटनहिंमानहिंहारी
महाबीर निसिचर सबकारे * नाना बरन बलीमुष भारे
सबलजुगलदलसमबलजोधा * कौतुककरतलरतकरिक्रोधा
प्राबिट सरद पयोद घनेरे * लरत मनहु मारुतके प्रेरे
अनिपअकंपनअरुअतिकाया * बिचलतसेनकीन्हि इन्हमाया
भएउनिमिषमहँअतिअँधियारा * वृष्टि होइ रुधि रोपल छारा

दो॰ देषिनिबिडतमदसहुदिसि, कपिदलभएउषभार ॥
एकहिएकनदेषई, जहँतहँकरहिंपुकार ॥ ४५ ॥

सकलमरम रघुनायकजाना * लिएबोलि अंगद हनुमाना
समाचार सबकहि समुझाए * सुनतकोपिकपि कुंजरधाए
पुनिकृपालहँसिचापचढावा * पावक सायकसपदिचलावा
भएउप्रकासकतहुँतमनाहीं * ज्ञानउदयजिमिसंसयजाहीं
भालु बलीमुष पाई प्रकासा * धाएहरषि बिगत स्रमत्रासा
हनूमान अंगद रन गाजे * हाँकसुनत रजनीचर भाजे
भागतभटपटकहिं धरिधरनी * करहिं भालुकपि अद्भुतकरनी
गहिपदडारहिं सागर माहीं * मकरउरगझषधरिधरिषाहीं

दो॰ कछु मारे कछु घायल, कछु गढ चढे पराइ ॥
गर्जहिं भालु बलीमुष, रिपुदलबल बिचलाइ ॥ ४६ ॥

निसाजानिकपि चारिउअनी * आएजहाँ कोसला धनी
रामकृपाकरि चितवाजबहीं * भएबिगत स्रमबानर तबहीं
उहाँदसानन सचिव हँकारे * सबसनकहेसि सुभटजेमारे
आधा कटककपिन संघरा * कहहुबेगिकाकरिअबिचारा
माल्यवंतअतिजरठनिसाचर * रावन मातु पिता मंत्रीवर

बोलाबचननीतिअतिपावन ❋ सुनहुतातकछुमोरसिषावन
जबते तुम्ह सीताहरिआनी ❋ असगुनहोहिंनजाहिंबषानी
बेद पुरान जासु जस गायो ❋ रामबिमुषकाहु न सुषपायो

दो॰ हिरन्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान ॥
जेहि मारे सोइ अवतरेउ, कृपा सिंधु भगवान ॥
कालरूप षलबन दहन, गुनागार घन बोध ॥
सिवबिरंचिजेहिसेवहिं, तासों कवन बिरोध ॥ ४७ ॥

परिहरि बयर देहु बैदेही ❋ भजहुकृपानिधि परमसनेही
ताके बचन बान सम लागे ❋ करिआमुहँकरिजाहिअभागे
बूढभएसि नतमरतेउँ तोही ❋ अबजनिनयनदेषावसिमोही
तेहिंअपनेमनअसअनुमाना ❋ बध्योचहतएहिकृपानिधाना
सोउठिगयउ कहत दुर्बादा ❋ तबसकोप बोलेउ घननादा
कौतुक प्रात देषिअहु मोरा ❋ करिहौंबहुत कहौं का थोरा
सुनिसुतबचनभरोसाआवा ❋ प्रीति समेत अंक बैठावा
करतबिचारभएउभिनुसारा ❋ लागेकपि पुनि चहूँ दुआरा
कोपिकपिन्ह दुर्घट गढघेरा ❋ नगरकोलाहल भएउघनेरा
बिबिधायुधधरनिसिचरधाए ❋ गढते पर्बत सिषर ढहाए

छं॰ ढाहेमहीधरसिषरकोटिन्हबिबिधबिधिगोलाचले ॥
घहरातजिमिपबिपात गर्जतजनुप्रलयके बादले ॥
मर्कटबिकटभटजुटतकटतनलटततनजर्जरभए ॥
गहिसैलतेहिगढपरचलावहिंजहँसोतहँनिसिचरहए ॥

दो॰ मेघनाद सुनिस्रवन अस, गढपुनि छेका आइ ॥
उतर्‍यो बीर दुर्गते, सन्मुष चल्यो बजाइ ४८ ॥

कहँ कोसलाधीस दोउ भ्राता ❋ धन्वीसकललोक बिष्याता
कहँ नल नील दुबिद सुग्रीवा ❋ अंगद हनुमंत बलसींवा
कहाँ बिभीषन भ्राता द्रोही ❋ आजसबहिहठि मारौंओही
असकहिकठिनबान संधाने ❋ अतिसयक्रोधस्रवनलगिताने
सर समूह सो छाड़ै लागा ❋ जनुसपक्ष धावहिं बहुनागा
जहँतहँपरतदेषिअहि बानर ❋ सन्मुषहोइनसकेतोहिअवसर
जहँतहँ भागिचलेकपिरीछा ❋ बिसरी सबहि युद्धकै ईछा
सो कपिभालु नरनमइँदेषा ❋ कीन्हेसिजेहिनप्रानअवसेषा
दो० दस दस सर सब मारेसि, परे भूमि कपि बीर ॥
सिंहनाद करि गर्जा, मेघनाद बल धीर ॥४९॥
देषिपवनसुतकटक बेहाला ❋ क्रोधवंत जनुधायेउ काला
महासैल एक तुरत उपारा ❋ अतिरिस मेघनाद परडारा
आवत देषि गयो नभ सोई ❋ रथ सारथी तुरग सब षोई
बार बार पचार हनुमाना ❋ निकटनआवमरमसोजाना
रघुपतिनिकटगएउघननादा ❋ नाना भांतिकहेसि दुर्बादा
अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे ❋ कौतुकहीं प्रभुकाटि निवारे
देषिप्रताप मूढ़ षिसिआना ❋ करैलागमाया बिधि नाना
जिमिकोउकरै गरुडसेंषेला ❋ डरपावै गहिस्वल्प सपेला
दो० जासु प्रबल माया बस, सिव बिरंचि बड छोट ।
ताहि देषावै निसिचर, निजमायामतिषोट ॥ ५० ॥
नभचढिबरषबिपुल अंगारा ❋ महितेप्रगट होहिं जलधारा
नानाभांति पिसाचपिसाची ❋ मारुकाटुधुनिबोलहिंनाची
बिष्टा पूयरुधिर कचहाडा ❋ बरषइकबहुँ उपलबहु छाडा

बरषिधूरिकीन्हेसिअंधियारा * सूझन आपन हाथ पसारा
कपि अकुलाने माया देषे * सबकरमरन बनाएहि लेषे
कौतुक दषिराम मुसुकाने * भएसभीतसकल कपिजाने
एक बान काटी सब माया * जिमिदिनकरहरतिमिरनिकाया
कृपादृष्टि कपिभालुबिलोके * भएप्रबल रनरहहिं नरोके

दो० आयसु मांगि राम पहिं, अंगदादि कपि साथ ॥
लछिमन चले क्रुद्धहोइ, बान सरासन हाथ ॥ ५१ ॥

छतजनयन उरबाहु बिसाला * हिमगिरिनिभतनकछुएकलाला
उहाँ दसानन सुभट पठाए * नाना अस्त्र सस्त्रगहि धाए
भूधर नष बिटपायुध धारी * धाए कपि जयराम पुकारी
भिरेसकल जोरी सनजोरी * इतउतजय इच्छानहिंथोरी
मुठिकन्हलातन्हदांतन्हकाटहिं * कपिजयसीलमारिपुनिडाटहिं
मारु मारु धरुधरु धरुमारू * सीसतोरि गहिभुजा उपारू
असिरव पूरिरही नव षंडा * धावहिं जहँतहँरुंड प्रचंडा
देषहिं कौतुक नभसुर बृंदा * कबहुँकबिसमयकबहुँअनंदा

दो० रुधिर गाडभरिभरि जम्यो, ऊपर धूरिउडाइ ।
जनुअंगाररासिन्हपर, मृतकधूमरह्योछाइ ॥ ५२ ॥

घायलबीर बिराजहिं कैसे * कुसुमितकिंसुककेतरु जैसे
लछिमन मेघनाद द्वौजोधा * भिरहिंपरसपरकरिअतिक्रोधा
एकहि एकसकै नाहिं जीती * निसिचरछलबलकरैअनीती
क्रोधवंत तब भएउ अनंता * भजेउ रथ सारथी तुरंता
नाना बिधि प्रहारकर सेषा * राक्षस भएउ प्रानअवसेषा
रावनसुतनिजमनअनुमाना * संकटभएउहरिहिममप्राना

बीर घातिनी छाडिसिसाँगी ❋ तेजपुंजलछिमन उर लागी
मुरुछा भईसक्तिके लागे ❋ तबचालिगए उनिकट भयत्यागे

दो० मेगनाद समकोटि सत, जोधा रहे उठाइ ॥
जगदाधार सेषकिमि, उठइ चले षिसिआइ ॥ ५३ ॥

सुनुगिरिजा क्रोधानलजासू ❋ जारेभुवन चारि दसआसू
सक संग्राम जीतिको ताही ❋ सेवहिसुरनर अगजगजाही
यह कौतूहल जानै सोई ❋ जापर कृपा रामकी होई
संध्या भई फिरी दौ बाहनी ❋ लगेसँभारननिजनिजअनी
व्यापकब्रह्मअजितभुवनेस्वर ❋ लछिमनकहाँ बूझकरुनाकर
तबलगिलै आएउ हनुमाना ❋ अनुजदेषिप्रभुअतिदुषमाना
जामवंत कह बैद सुषेना ❋ लंकारह को पठई लेना
धरि लघुरूपगएउ हनुमंता ❋ आनेउभवन समेत तुरंता

दो० राम पदार बिंद सिर, नाएउ आइ सुषेन ॥
कहा नामगिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन ॥ ५४ ॥

रामचरन सरसिज उरराषी ❋ चलाप्रभंजन सुतबल भाषी
उहाँदूत एक मरम जनावा ❋ रावनकाल नेमिगृह आवा
दसमुष कहामरमतेंहिसुना ❋ पुनिपुनिकालनेमिसिरधुना
देषततुम्हींहिनगरजेंहिजारा ❋ तासुपंथ को रोकन पारा
भजिरघुपतिकरुहितआपना ❋ छाँडहु नाथ मृषा जल्पना
नीलकंज तन सुंदर स्यामा ❋ हृदय राषु लोचनाभिरामा
मैं तैं मोर मूढता त्यागू ❋ महामोह निसि सूततजागू
कालब्याल करभक्षक जोई ❋ सपनेहुसमरकिजीतिअसोई

दो० सुनि दसकंठ रिसानअति, तेहिमनकीन्ह बिचार ॥
रामदूत कर मरौंबरु, येहषल रतमल भार ५५ ॥
असकहिचलाररचिसिमगमाया ❀ सरमंदिर बरबाग बनाया
मारुतसुतदेषा सुभ आश्रम ❀ मुनिहिबूझि जलपिअउँजाइश्रम
राछस कपट बेषतहँ सोहा ❀ मायापति दूतहिचह मोहा
जाइ पवनसुत नाएउमाथा ❀ लाग सो कहै रामगुन गाथा
होतमहा रनरावन रामहि ❀ जितिहहिंरामनसंसय यामहि
इहाँ भए मैं देषौं भाई ❀ ज्ञानदृष्टिबलमोहिअधिकाई
माँगाजलतेहिदीन्हकमंडल ❀ कहकपिनहिंअघाउँ थोरेजल
सरमज्जनकरि आतुरआवहु ❀ दिक्षादेउँ ज्ञान जेहि पावहु
दो० सरपैठतकपि पदगहा, मकरी तब अकुलान ॥
मारीसोधरिदिव्यतन, चलीगगन चढिजान ५६ ॥
कपितबदरसभइउँनिःपापा ❀ मिटातातमुनिवर करसापा
मुनिनहोइयह निसिचरघोरा ❀ मानहुसत्य बचनकपिमोरा
असकहिगई अपछराजबहीं ❀ निसिचरनिकटगएउकपितबहीं
कहकपि मुनिगुरदक्षिनालेहू ❀ पाछे हमहिंमंत्र तुम्ह देहू
सिर लंगूर लपेटि पछारा ❀ निजतन प्रगटेसि मरतीबारा
रामरामकहिछाँडेसि प्राना ❀ सुनिमनहरषिचलेउ हनुमाना
देषा सैलन औषध चीन्हा ❀ सहसाकपिउपारि गिरिलीन्हा
गहिगिरिनिसिनभधावतभएऊ ❀ अवधपुरीऊपर कपि गएऊ
दो० देषाभरत बिसालअति, निसिचरमन अनुमानि ॥
बिनुफर सायकमारेउ, चापश्रवनलगितानि ५७ ॥
परेउमुरुछिमहि लागतसायक ❀ सुमिरत रामराम रघुनायक

मुनिप्रियबचनभरत तबआए * कपिसमीपअति आतुरआए
विकलबिलोकिकीसउरलावा * जागतनहिं बहुभाँतिजगावा
मुषमलीन मनभए दुषारी * कहतवचनभरि लोचनबारी
जेहिबिधिरामबिमुषमोहिकीन्हा * तेहिपुनियहदारुनदुषदीन्हा
जौं मोरेमनबच अरुकाया * प्रीतिरामपदकमल अमाया
तौकपिहोउबिगतश्रमसूला * जौं मोपररघुपति अनुकूला
सुनतबचनउठिबैठकपीसा * कहिजयजयतिकोसलाधीसा

सो० लीन्हकपिहिउरलाइ, पुलकिततन लोचनसजल ॥
प्रीतिनहृदयसमाइ, सुमिरिरामरघुकुल तिलक ५८॥

तातकुसलकहुसुषनिधानकी * सहितअनुजअरुमातु जानकी
कपिसबचरितसमानबषाने * भएदुषी मनमहँ पछिताने
अहहदैव मैंकतजगजाएउँ * प्रभुके एकहु काज नआएउँ
जानिकुअवँसरमनधरिधीरा * पुनिकपि मनबोले बलबीरा
तातगहरुहोइहितोहिजाता * काज नसाइहिहोत प्रभाता
चढ़ममसायक सैलसमेता * पठवउँ तोहिजहँकृपा निकेता
सुनिकपिमनउपजाअभिमाना * मोरेभारचलिहि किमिबाना
राम प्रभाव बिचारिबहोरी * बंदिचरनगहिकपि करजोरी

दो० तब प्रताप उर राषि प्रभु, जैहौं नाथ तुरंत ॥
अस कहि आयसु पाइपद, बंदि चले हनुमंत ॥
भरत बाहुबल सीलगुन, प्रभु पद्र प्रीतिअपार ॥
मनमहँजात सराहत, पुनिपुनिपवनकुमार ५९ ॥

उहाँ राम लछिमननहिंनिहारी * बोले बचन मनुज अनुहारी
अर्धरातिगईकपिनहिआयउ * रामउठाइ अनुज उरलायउ

सकहुनदुषितदेषिमोहिकाऊ * बंधुसदातवमृदुल सुभाऊ
ममहितलागि तजेहुपितुमाता * सहेहुबिपिन हिमआतपबाता
सो अनुराग कहाँ अबभाई * उठहुनसुनि ममबचबिकलाई
जौं जनतेउँ बनबंधु बिछोहू * पिताबचनमनतेउँनहिंओहू
सुतावितनारिभवनपरिवारा * होहिंजाहिं जगवारहिं वारा
असविचारिजिय जागहुताता * मिलैन जगतसहोदर भ्राता
जथापंषबिनु षगअतिदीना * मनिबिनुफनिकरिवरकरहीना
अससमजिवनबंधुबिनुतोही * जौं जडदैव जियावै मोही
जैहौं अवध कौन मुहँलाई * नारिहेतु प्रियभाइ गँवाई
बरुअपजससहतेउँजगमाहीं * नारिहानि बिसेषछातिनाहीं
अब अपलोकसोकसुततोरा * सहिहिनिठुरकठोर उरमोरा
निज जननी के एक कुमारा * ताततासु तुम्ह प्रानअधारा
सौंपेसिमोहितुम्हहिगहिपानी * सबबिधिसुषदपरमहितजानी
उतर काह देहौं तेहिजाई * उठिकिनमोहिसिषावहु भाई
बहुबिधिसोचतसोचबिमोचन * स्रवतसलिलराजिवदललोचन
उमा एक अषंड रघुराई * नरगतिभगत कृपाल देषाई

सो० प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकलभए बानर निकर ॥
आइ गएउ हनुमान, जिमिकरुनामहँबीररस ॥ ६० ॥

हरषिराम भेटेउ हनुमाना * अतिकृतज्ञप्रभुपरमसुजाना
तुरतबैद तब कीन्हि उपाई * उठिबैठे लछिमन हरषाई
हृदयलाइ प्रभु भेटेउ भ्राता * हरषे सकलभालु कपिब्राता
कपिपुनि बैदतहाँ पहुँचावा * जेहिंबिधितबहिंताहिलैआवा
यहवृतांत दसानन सुनेऊ * अतिबिषादपुनिपुनिसिरधुनेऊ

ब्याकुलकुंभकरनपहिंआवा * बिबिधजतनकरि ताहिजगावा
जागानिसिचर देखियकैसा * मानहुकाल देहधरि बैसा
कुंभकरन बूझा कहु भाई * काहे तव मुषरहे सुषाई
कथाकही सबतेहिं अभिमानी * जेहिप्रकार सीताहरिआनी
तातकपिन्हसबनिसिचरमारे * महा महा जोधा संघारे
दुर्मुष सुररिपु मनुज अहारी * भटअतिकाय अकंपनभारी
अपरमहोदर आदिक बीरा * परे समरमहि सबरन धीरा

दो० सुनि दसकंधर बचनतव, कुंभकरन बिलषान ॥
जगदंबाहरिआनिअब, सठ चाहत कल्यान ॥ ६१ ॥

भलनकीन्हतैंनिसिचरनाहा * अबमोहिआइजगएहिकाहा
अजहूँताततयागिअभिमाना * भजहुराम होइहि कल्याना
हैं दससीस मनुजरघुनायक * जाके हनूमान से पायक
अहह बंधुतैं कीन्हि षोटाई * प्रथमहि मोहिनसुनाएहिआई
कीन्हेउंप्रभुबिरोधतेहिदेवक * सिवबिरंचि हरिजाके सेवक
नारदमुनिमोहिज्ञानजोकहा * कहतेउँतोहि समय निर्बहा
अबभरिअंकभेटुमोहिंभाई * लोचन सुफल करौंमैं जाई
स्यामगात सरसीरुह लोचन * देषौंजाइ तापत्रय मोचन

दो० राम रूपगुन सुमिरत, मगन भएउ छनएक ॥
रावनमाँगेउ कोटिघट, मदअरुमहिषअनेक ॥ ६२ ॥

महिषषाइकरिमदिरापाना * गर्जा बज्रा घात समाना
कुंभकरन दुर्मद रन रंगा * चलादुर्गतजि सेनन संगा
देषिबिभीषन आगे आएउ * परेउचरननिजनामसुनाएउ
अनुजउठाइहृदयतेहिंलायो * रघुपतिभक्तजानिमनभायो

तातलात रावनमोहि मारा ❀ कहतपरमहित मंत्रविचारा
तेहिगलानिरघुपतिपहिंआएउं ❀ देषिदीन प्रभुके मनभाएउँ
सुनुसुतभएउकालबसरावन ❀ सोकिमानअबपरम सिषावन
धन्यधन्य तैंधन्य बिभीषन ❀ भएहुतातनिसिचरकुलभूषन
बंधुबंस तें कीन्ह उजागर ❀ भजेहुरामसोभा सुष सागर

दो० बचनकर्ममनकपटतजि, भजेहुरामरनधीर।
जाहुनिजपरसूझमोहि, भएउँकालबसबीर ॥ ६३ ॥

बंधुबचनसुनिचलाबिभीषन ❀ आएउजहँत्रैलोक बिभूषन
नाथ भूधरा कार सरीरा ❀ कुंभकरन आवत रनधीरा
एतनाकपिन्हसुनाजबकाना ❀ किलकिलाइ धाए बलवाना
लिए उठाइ बिटपअरु भूधर ❀ कटकटाइ डारहिं ताऊपर
कोटिकोटिगिरिसिषरप्रहारा ❀ करहिभालुकपिएक२ बारा
मुरयोनमनतनटरयोनटरयो ❀ जिमिगजअर्कफलनिकोमारयो
तबमारुतसुत मुठिकाहन्यो ❀ परयोधरनिब्याकुलसिरधुन्यो
पुनिउठितेहिंमारेउहनुमंता ❀ घुर्मित भूतल परेउ तुरंता
पुनिनलनीलहिअवनिपछारेसि ❀ जहँतहँपटकि२ भटडारेसि
चलीबली मुषसेन पराई ❀ अतिभयत्रसितनकोउसमुहाई

दो० अंगदादिकपिमुरछित, करिसमेतसुग्रीव ॥
काँषदाबिकपिराजकहँ, चलाअमितबलसीव ॥ ६४ ॥

उमाकरतरघुपति नरलीला ❀ षेलगरुडजिमिअहिगनमीला
भृकुटि भंगजो कालहिषाई ❀ ताहिकि सोहै ऐसि लराई
जगपावनिकीरतिबिस्तारिहहिं ❀ गाइगाइभवनिधिनरतरिहहिं
मुरछागइ मारुत सुतजागा ❀ सुग्रीवहिं तब षोजन लागा

सुग्रीवहुँ के मुरछा बीती * निबुकिगए उतेहि मृतकप्रतीती
काटेसिदसननासिकाकाना * गर्जिअकासचले उतेहि जाना
गहे उचरनगहि भूमि पछारा * अतिलाघव उठिपुनि तेहिमारा
पुनिआए उप्रभुपहिंबलवाना * जयतिजयतिजयकृपानिधाना
नाककानकाटे जियजानी * फिराक्रोधकरिभइमनग्लानी
सहजभीमपुनिबिनुश्रुतिनासा * देषतकपिदल उपजी त्रासा

दो० जयजयजयरघुबंसमनि, धाएकपि देहूह ।
एकहिबारतासुपर, छाडेन्हिगिरितरुजूह ॥

कुंभ करन रनरंग बिरुद्धा * सन्मुषचला कालजनु क्रुद्धा
कोटिकोटिकपिधरिधरिषाई * जनु टिड्डीगिरि गुहासमाई
कोटिन्हगहिसरीर सनमर्दा * कोटिन्हमीजिमिलवमहिगर्दा
मुषनासा श्रवनन्हिकीबाटा * निसरिपराहिंभालुकपिठाटा
रनमदमत्त निसाचर दर्पा * बिस्वग्रसिहिजनुएहिबिधिअर्पा
मुरेसुभट सबफिरहिं न फेरे * सूझन नयन सुनहिं नहिंटेरे
कुंभकरनकपिफौजबिडारी * सुनिधाई रजनीचर धारी
देषी राम बिकल कटकाई * रिपुअनीकनाना बिधिआई

दो० सुनु सुग्रीव बिभीषन, अनुज समारेहु सेन ॥
मैं देषौं षलबल दलहि, बोले राजिवनयन ॥ ६६ ॥

कर सारंग साजिकटिभाथा * अरिदलदलनचले रघुनाथा
प्रथमकीन्हप्रभुधनुषटंकोरा * रिपुदलबधिरभय उसुनिसोरा
सत्यसंध छाँडे सर लक्षा * कालसर्प जनुचले सपक्षा
जहँतहँ चले बिपुल नाराचा * लगेकटनभटबिकटपिसाचा
कटहिंचरनउरसिरभुजदंडा * बहुतकबीर होहिं सतषंडा

घुर्मिघुर्मिघायल महि परहीं * उठिसंभारिसुभटपुनिलरहीं
लागतबानजलदजिमिगाजहिं * बहुतकदेषिकठिनसरभाजहि
रुंड प्रचंड मुंड बिनुधावहिं * धरुधरुमारुमारुधुनिगावहिं
दो० छनमहँ प्रभुके सायकन्हि, काटे बिकट पिसाच ॥
पुनिरघुवीर निषंगमहँ, प्रबिसे सबनाराच ॥ ६७ ॥
कुंभकरन मन दीष बिचारी * हतिछनमाँझ निसाचरधारी
भाअतिक्रुद्ध महाबल बीरा * कियोमृगनायकनादगंभीरा
कोपि महीधरलेइ उपारी * डारै जहँ मर्कट भटभारी
आवत देषिसैल प्रभु भारे * सरन्हिकाटिरजसमकरिडारे
पुनिधनुतानिकोपिरघुनायक * छाँडेअति करालबहु सायक
तनमहँप्रबिसिनिसरिसरजाहीं * जिमिदामिनिघनमांझसमाहीं
सोनित श्रवत सोहतनकारे * जनुकज्जल गिरिगेरुपनारे
बिकलबिलोकिभालुकपिधाए * बिहँसाजबहिंनिकटकपिआए
दो० महा नाद करि गर्जा, कोटि कोटि गहि कीस ॥
महिपटकै गजराजइव, सपथ करैदससीस ३८ ॥
भागे भालु बलीमुष जूथा * वृकबिलोकिजिमिमेषबरूथा
चलेभागिकपि भालुभवानी * बिकल पुकारत आरतबानी
यहनिसिचरदुकालसमअहई * कपिकुलदेसपरन अबचहई
कृपा बारिधरराम षरारी * पाहि पाहि प्रनतारतिहारी
सकरुनबचनसुनतभगवाना * चलेसुधारि सरासन बाना
रामसेन निज पाछे घाली * चले सकोप महाबल साली
षैंचि धनुष सरसत संधाने * छूटे तीर सरीर समाने
लागत सरधावा रिस भरा * कुधरडगमगत डोलतिधरा

लीन्हएकतेहि सैल उपाटी * रघुकुलतिलकभुजासोइकाटी
धावा बाँम बाहुँ गिरिधारी * प्रभुसो उभुजाकाटिमहिपारी
काटे भुजा सोहखल कैसा * पक्षहीन मंदर गिरि जैसा
उग्रबिलोकनिप्रभुहिबिलोका * ग्रसन चहत मानहु त्रैलोका

दो० करिचिक्कारघोरअति धावा बदनपसारि ।
गगनसिद्धसुरत्रासित हा हा होतिपुकारि ६० ॥

सभयदेवकरुनानिधिजान्यो * स्रवनप्रजंतसरासन तान्यो
बिसिषनिकरनिसिचरमुखभरेऊ * तदपि महाबल भूमिनपरेऊ
सरन्हिभरामुखसन्मुख धावा * काल त्रोन सजीवजनु आवा
तबप्रभुकोपितीब्रसरलीन्हा * धरते भिन्नतासुसिर कीन्हा
सोसिरपरेउ दसानन आगे * बिकल भएउजिमिफनिमनित्यागे
धरनि धसै धरधाव प्रचंडा * तबप्रभुकाटिकीन्हदुइखंडा
परे भूमिजिमि नभते भूधर * हेठदाबिकपिभालुनिसाचर
तासु तेजप्रभु बदन समाना * सुरमुनिसबहिंअचंभवमाना
सुरदुंदुभी बजावहिं हरषहिं * अस्तुतिकरहिंसुमनबहुबरषहिं
करिबिनतीसुरसकलसिधाए * तेही समय देवरिषि आए
गगनो परिहरि गुनगनगाए * रुचिरबीर रसप्रभु मनभाए
बेगिहतहु खलकहि मुनिगए * राम समरमहि सोभतभए

छं० संग्रामभूमिबिराजरघुपति अतुलबलकोशलधनी ॥
श्रमबिंदुमुखराजीवलोचनरुचिरतनसोनितकनी ॥
भुजजुगलफेरतसरसरासनभालुकपिचहुँदिसिबने ॥
कहदासतुलसी कहिनसकछबिसेषजेहिआननघने ॥

दो० निसिचर अधममलाकर, ताहिदीन्ह निजधाम ॥
गिरिजातेनरमंदमति, जेनभजहिं श्रीराम ॥ ७० ॥

दिनके अंत फिरी द्वौ अनी ❀ समरभईसुभटन्ह स्रमघनी
रामकृपा कपिदल बलवाढा ❀ जिमितृनपाइलागअतिडाढा
छीजहिंनिसिचरदिनअरुराती ❀ निजमुषकहेसुकृत जेहिभाँती
बहु बिलाप दसकंधर करई ❀ बंधुसीस पुनि पुनि उरधरई
रोवहिंनारि हृदयहतिपानी ❀ तासुतेजबल बिपुल बषानी
मेघनादतेहिअवसरआएउ ❀ कहिबहुकथापितासमुझाएउ
देषेहु कालि मोरि मनुसाई ❀ अबहिंबहुतका करौं बडाई
इष्टदेव सें बलरथ पाएउँ ❀ सो बलतातनतोहि देषाएउँ
एहि बिधि जल्पतभएउबिहाना ❀ चहुँदुआर लागे कपि नाना
इतकपिभालुकालसमबीरा ❀ उतरजनीचरअति रनधीरा
लरहिंसुभटनिज निजजयहेतू ❀ बरनिन जाइ समर षगकेतू

दो० मेघनाद माया मय, रथ चढिगएउ अकास ॥
गर्जेउअट्टहासकरि, भइकपिकटकहित्रास ॥ ७१ ॥

सक्तिसूल तरवारि कृपाना ❀ अस्त्रसस्त्रकुलि सायुध नाना
डारै परसु परिघ पाषाना ❀ लागेउ बृष्टि करै बहु बाना
दसदिसि रहेबान नभ छाई ❀ मानहु मघा मेघ झरिलाई
धरुधरुमारु सुनिअधुनिकाना ❀ जोमारै तेहि कोउन जाना
गहिगिरितरुअकासकपिधावहिं ❀ देषहिंतेहिनदुषित फिरिआवहिं
अवघटबाटघाटगिरिकंदर ❀ मायाबल कीन्हेसि सरपंजर
जाहिंकहाँब्याकुलभयेबंदर ❀ सुरपति बंदि परेउजनुमंदर
मारुतसुत अंगद नलनीला ❀ कीन्हेसिबिकलसकलबलसीला

पुनिलछिमनसुग्रीव बिभीषन * सरन्हिमारि कीन्हेसिजर्जरतन
पुनि रघुपति सें जूझै लागा * सरछाँडै होइलागहिं नागा
ब्याल पासबस भए खरारी * स्वबसअनंतएक अबिकारी
नटइवकपटचरितकरनाना * सदा स्वतंत्रएक भगवाना
रनसोभा लगिप्रभुहिंबँधायो * नागपास देवन्ह भयपायो

दो॰ गिरिजा जासुनामजपि, मुनिकाटहिं भवपास ॥
मोकि बंधतर आवै, ब्यापकबिस्व निवास ७२ ॥

चरित रामके सगुनभवानी * तर्किनजाहिं बुद्धि बलबानी
अस बिचारि जेतज्ञबिरागी * रामहिंभजहिंतर्कसबत्यागी
ब्याकुलकटक कीन्हघननादा * पुनिभा प्रगट कहै दुर्बादा
जामवंत कह खलरहु ठाढा * सुनिकरिताहिक्रोध अतिबाढा
बूढजानि सठ छाडेउँ तोही * लागेसिअधम पचारै मोही
असकहितरलत्रिसूलचलायो * जामवंतकरगहि सोइधायो
मारेसि मेघनाद कैछाती * पराभूमि घुर्मित सुरघाती
पुनिरिसानगहि चरनफिरायो * महिपछारिनिजबल देखरायो
बर प्रसाद सो मरैन मारा * तबगहि पदलंका परडारा
इहाँदेव रिषिगरुड पठायो * रामसमीपसपदि सो आयो

दो॰ खग पति सब धरिषाए, माया नाग बरूथ ॥
माया बिगतभएसब, हरषे बानर जूथ ॥
गहिगिरि पादप उपलनख, धाएकीसरिसाइ ॥ मा॰ पा॰ २५
चले तमीचर बिकलतर, गढपरचढेपराइ ७३ ॥

मेघनाद कै मुरछा जागी * पितहिबिलोकिलाजअतिलागी
तुरत गएउ गिरिबर कंदरा * करौंअजयमख असमनधरा

इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा ❋ सुनहुनाथबल अतुलउदारा
मेघनाद मषकरै अपावन ❋ षलमायाबी देव सतावन
जौंप्रभु सिद्धहोइ सोपाइहि ❋ नाथबेगिपुनिजीतिनजाइहि
सुनिरघुपतिअतिसयसुषमाना ❋ बोले अंगदादि कपिनाना
लछिमन संग जाहु सब भाई ❋ करहु बिधंसयज्ञ करजाई
तुम्हलछिमनमारेहुरनओही ❋ देषिसभयसुरदुषअतिमोही
मारेहु तेहि बलबुद्धि उपाई ❋ जेहिछीजै निसिचरसुनुभाई
जामवंत सुग्रीव बिभीषन ❋ सेनसमेतरहेहु तीनिउजन
जबरघुबीरदीन्ह अनुसासन ❋ कटिनिषंगकसिसाजिसरासन
प्रभुप्रताप उर धरिरन धीरा ❋ बोले घनइवगिरा गँभीरा
जौंतेहिआजबधेबिनुआवउँ ❋ तौरघुपति सेवक नकहावउँ
जौं सतसंकर करहिं सहाई ❋ तदपि हतौं रघुबीर दोहाई

दो० रघुपति चरन नाइसिर, चलेउ तुरंत अनंत ॥
अङ्गद नीलमयंद नल, संगसुभट हनुमंत ॥ ७४ ॥

जाइ कपिन्हसो देषा बैसा ❋ आहुतिदेतरुधिर अरुभैंसा
कीन्हकपिन्हसबजज्ञबिधंसा ❋ जबन उठै तबकरहिं प्रसंसा
तदपिनउठैधरेन्हिकचजाई ❋ लातन्हिहतिहति चलेपराई
लैत्रिसूल धावा कपि भागे ❋ आएजहँ रामानुज आगे
आवा परम क्रोध कर मारा ❋ गर्जघोर रवबारहिं बारा
कोपिमरुत सुतअंगद धाए ❋ हतित्रिसूलउरधरनिगिराए
प्रभुकहँछाडिसिसूल प्रचंडा ❋ सरहति कृतअनंत जुगषंडा
उठिबहोरिमारुति जुबराजा ❋ हतहिंकोपितेहिघाउनबाजा
फिरे बीररिपु मरैन मारा ❋ तबधावाकरि घोर चिकारा

आवतदेषिक्रुद्ध जनु काला ❋ लछिमनछाँडेबिसिषकराला
देषिसिआवतपबिसमबाना ❋ तुरतभएउ पलअन्तरधाना
बिबिध बेषधरि करै लराई ❋ कबहुँकप्रगट कबहुँदुरिजाई
देषि अजय रिपुडरपेकीसा ❋ परमक्रुद्धतब भएउअहीसा
लछिमनमनअसमंत्रदृढावा ❋ एहिपापिहि मैं बहुत पेलावा
सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा ❋ सरसंधानकीन्ह करिदापा
छाँडा बान माझ उर लागा ❋ मरतीबार कपटसब त्यागा

दो० रामानुज कहँराम कहँ, असकहिछाँडेसि प्रान ॥
धन्य धन्यतबजननी, कहअंगद हनुमान ॥ ७५ ॥

बिनुप्रयास हनुमानउठायो ❋ लंकाद्वारराषि पुनिआयो
तासु मरन सुनि सुर गंधर्बा ❋ चढिबिमान आए नभसर्बा
बराषिसुमन दुंदुभी बजावहिं ❋ श्रीरघुनाथबिमलजसगावहिं
जय अनंत जय जगदाधारा ❋ तुम्हप्रभुसबदेवन्हिनिस्तारा
अस्तुतिकरि सुरसिद्धसिधाए ❋ लछिमनकृपासिंधुपहिंआए
सुतबधसुना दसाननजबहीं ❋ मुरछितभएउ परेउमहितबहीं
मंदोदरी रुदन कर भारी ❋ उरताडतिबहु भाँतिपुकारी
नगरलोग सबब्याकुलसोचा ❋ सकलकहहिं दसकंधरपोचा

दो० तब दसकंठ बिबिध बिधि, समुझाई सबनारि ॥
नस्वररूप जगतसब, देषहुहृदय बिचारि ॥ ७६ ॥

तिन्हहिज्ञान उपदेसा रावन ❋ आपुनमंदकथा सुभपावन
पर उपदेस कुसल बहुतेरे ❋ जे आचरहिंते नरन घनेरे
निसासिरानि भएउभिनुसारा ❋ लगेभालु कपिचारिहु द्वारा
सुभट बोलाइ दसाननबोला ❋ रनसन्मुष जाकरमनडोला

सो अवहीं वरु जाउ पराई * संजुगविमुषभए न भलाई
निजभुजबलमइँवयरवढावा * देहौंउतरुजोरिपुचढिआवा
असकहि मरुतवेगरथसाजा * बाजे सकल जुझाऊ बाजा
चलेवीर सव अतुलित वली * जनुकज्जलकै आंधी चली
असगुनअमितहोहिंतेहिकाला * गनैनभुजबलगर्व बिसाला

छं० अतिगर्वगनइनसगुनअसगुनस्रवहिंआयुधहाथतें ॥
भटगिरतरथतेबाजिगज चिक्करतभाजहिंसाथतें ॥
गोमायुगीधकरार षर स्वस्वान बोलहिंअतिघने ॥
जनुकालदूत उलूकबोलहिं बचन परमभयावने ॥

दो० ताहि किसंपति सगुनसुभ, सपनेहु मन बिश्राम ॥
भूतद्रोहरत मोहबस, रामबिमुष रतिकाम ॥ ७७ ॥

चलेउनिसाचरकटकअपारा * चतुरंगिनी अनीबहु धारा
बिबिध भाँतिबाहनरथयाना * बिपुलबरनपताकध्वजनाना
चले मत्त गज जूथ घनेरे * प्राविटजलद मरुतजनुप्रेरे
बरनबरन बिरदैत निकाया * समरसूरजानिहिं बहुमाया
अतिबिचित्रबाहिनीबिराजी * बीरबसंत सेन जनुसाजी
चलतकटकदिगसिंधुरडगहीं * छुभितपयोधिकुधरडगमगहीं
उठी रेनुरबि गएउ छपाई * मरुतथकितबसुधाअकुलाई
पवननिमान घोररवबाजहिं * प्रलयसमयकेघनजनुगाजहिं
भेरि नफीरि बाज सहनाई * मारू राग सुभट सुषदाई
केहरिनाद बीर सव करहीं * निजनिज बल पौरुष उचरहीं
कहै दसानन सुनहु सुभट्टा * मर्दहुभालु कपिन्हके ठट्टा
हौं मारिहौं भूप द्वौ भाई * असकहिसन्मुषफौज रेंगाई

यहसुधिसकलकपिन्हजबपाई ❋ धाए करि रघुबीर दोहाई

छं० धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समानते ॥
मानहु सपक्ष उडाहिं भूधर बृंद नाना बानते ॥
नषदसन सैल महा द्रुमायुध सबलसंकन मानहीं ॥
जयराम रावनमत्तगजमृगराज सुजसबषानहीं ॥

दो० दुहुंदिसि जयजयकारकरि, निजनिज जोरीजानि ॥
भिरेबीरइत रामहित. उतरावनहि बषानि ॥७८॥

रावन रथी बिरथ रघुबीरा ❋ देषिबिभीषनभएउ अधीरा
अधिक प्रीतिमन भासंदेहा ❋ बंदिचरनकह सहित सनेहा
नाथनरथ नहिंतनपदत्राना ❋ केहिबिधिजितबबीर बलवाना
सुनहुसषाकह कृपानिधाना ❋ जेहिजयहोइसोस्यंदनआना
सौरजधीरज तेहिरथ चाका ❋ सत्यसीलदृढध्वजा पताका
बलबिबेक दमपरहित घोरे ❋ क्षमा कृपा समता रजुजोरे
ईस भजन सारथी सुजाना ❋ बिरतिचर्म संतोष कृपाना
दान परसु बुधि सक्तिप्रचंडा ❋ बरबिज्ञान कठिनको दंडा
अमलअचलमनत्रोन समाना ❋ संजमनियमसिलीमुषनाना
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा ❋ एहिसमबिजय उपायनदूजा
सषाधर्म मयअस रथ जाके ❋ जीतनकहँन कतहुँरिपुताके

दो० महा अजय संसार रिपु, जीति सकै सोबीर ॥
जाके असरथ होइदृढ, सुनहुसषा मतिधीर ॥
सुनिप्रभु बचन बिभीषन. हरषि गहे पदकंज ॥
एहिमिसि मोहि उपदेसहु, रामकृपासुषपुंज ॥
उतपचार दसकंधर, इत अंगद हनुमान ॥
लरतनिसाचरभालुकपि, करिनिजनिजप्रभुआन ७९

सुरब्रह्मादि सिद्ध मुनिनाना * देषत रन नभ चढ़े बिमाना
हमहूं उमा रहे तेहि संगा * देषत राम चरित रन रंगा
सुभट समर रस दुहु दिसि माते * कपि जयसील राम बल ताते
एक एक सन भिरहिं पचारहिं * एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं
मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं * सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं * गहि पद अवनि पटकि भट डारहि
निसिचर भट महि गाडहिं भालू * ऊपर ढारि देहिं बहु बालू
बीर बली मुष जुद्ध बिरुद्धे * देषिअत बिपुल काल जनु क्रुद्धे

छं० क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन स्रवत सोनित राजहीं ॥
मर्दहिं निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजहीं ॥
मारहिं चपेटन्हि डाटि दांतन्ह काटि लातन्ह मीजहीं ॥
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहिं षल छीजहीं ॥
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अंतावरि मेलहीं ॥
प्रहलाद पति जनु बिबिध तन धरि समर अंगन षेलहीं ॥
धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ॥
जय राम जो तृन ते कुलिस कर कुलिस ते कर तृन सही ॥

दो० निज दल बिचलत देषेसि बीस भुजा दस चाप ॥
रथ चढ़ि चलेउ दसानन फिरहु फिरहु करि दाप ८० ॥

धाएउ परम क्रुद्ध दसकंधर * सन्मुष चले हूह दै बंदर
गहि कर पादप उपल पहारा * डारेन्हि ता पर एकहि बारा
लागहिं सैल बज्र तन तासू * षंड षंड होइ फूटहिं आसू
चला न अचल रहा रथ रोपी * रन दुर्मद रावन अति कोपी
इत उत झपटि दपटि कपि जोधा * मर्दै लाग भएउ अति क्रोधा

चलेपराइ भालु कपि नाना * त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना
पाहि पाहि रघुबीर गोसांई * यहषल षाइकालकी नांई
तेहिदेषे कपि सकल पराने * दसहुचाप सायक संधाने

छं० संधानिधनुसरनिकरछाडेसिउरगजिमिउड़िलागहीं॥
रहेपूरिसरधरनीगगनादिसि बिदिसिकहँकपिभागहीं॥
भयोअतिकोलाहलबिकलकपिदलभालुबोलहिंआतुरे
रघुबीर करुनासिंधु आरत बंधु जनरक्षक हरे॥

दो० निजदल बिकल देषिकटि, कसि निषंग धनुहाथ॥
लछिमनचले क्रुद्धहोइ, नाइराम पदमाथ ८१॥

रे षलका मारसिकपि भालू * मोहिबिलोकु तोरमैं कालू
षोजत रहेउँ तोहिसुतघाती * आजनिपाति जुड़ावौंछाती
असकहिछाडेसिबानप्रचंडा * लछिमनकियेसकलसतषंडा
कोटिन्ह आयधुरावन डारे * तिलप्रवानकरिकाटिनिवारे
पुनिनिजबानन्हकीन्हप्रहारा * स्यंदनभंजि सारथी मारा
सतसत सरमारे दस भाला * गिरिसृंगन्हजनुप्रबिसहिंब्याला
पुनि सतसर मारा उर माहीं * परेउधरनितलसुधिकछु नाहीं
उठाप्रबल पुनिमुरछा जागी * छाडिसिब्रह्मदीन्हिजोसाँगी

छं० जो ब्रह्मदत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही॥
पर्योबीरबिकलउठाव दसमुषअतुलबलमहिमारही
ब्रह्मांडभुवन बिराजजाके एकसिरजिमिरजकनी॥
तेहिचहउठावनमूढरावनजाननहिंत्रिभुअनधनी॥

दो० देषि पवनसुत धाएउ, बोलत बचन कठोर॥
आवतकपिहिन्हयोतेहिं, मुष्टिप्रहार प्रघोर ८२॥

जानु टेककपि भूमिनगिरा * उठासँभारि बहुत रिसभरा
मुठिकाएक ताहिकपिमारा * परेउसैल जनुबज्र प्रहारा
मुरुछागे बहोरि सो जागा * कपिबलबिपुलसराहनलागा
धिगाधिगममपौरुष धिगमोही * जौंतैं जियतउठेसिसुरद्रोही
असकहिलछिमनककहँपिल्यायो * देषिदसानन बिसमयपायो
कहरघुबीरसमुझि जियभ्राता * तुम्हकृतांत भक्षक सुरत्राता
सुनतबचन उठिबैठकृपाला * गईगगन सोसकति कराला
पुनिकोदंड बानगहि धाए * रिपुसन्मुषअतिआतुरआए

छं० आतुरबहोरिबिभंजिस्यंदनमूतहतिब्याकुलकियो ।
गिरयोधरनिदसकंधरबिकलतरबानसतबेध्योहियो ॥
सारथी दूसरघालिरथतेहितुरतलंकालै गयो ।
रघुबीरबंधुप्रतापपुंजबहोरि प्रभुचरनन्हिनयो ॥ १ ॥

दो० उहाँदसानन जागिकर, करैलाग कछुजग्य ॥
रामबिरोधबिजयचह, सठहठबसअतिअग्य ॥ ८३ ॥

इहाँबिभीषन सब सुधिपाई * सपदि जाइरघुपतिहिसुनाई
नाथकरै रावन एकजागा * सिद्धभएनहिंमरिहिअभागा
पठवहुनाथ बेगिभट बंदर * करहिं बिधंस आवदसकंधर
प्रातहोतप्रभु सुभट पठाए * हनुमदादि अंगद सबधाए
कौतुककूदि चढे कपिलंका * पैठे रावन भवन असंका
जग्यकरत जबही सो देषा * सकलकपिन्हभाक्रोध बिसेषा
रनतेनिलजभाजिगृहआवा * इहाँआइ बकध्यान लगावा
असकहिअंगद मारालाता * चितवनसठस्वारथमनराता

छं० नहिंचितवजबकरिकोपकपिगहिदसन्हलातन्हमारहीं।
धरिकेसनारिनिकारिबाहेरतेंति दीनपुकारहीं ॥
तबउठेउक्रुद्धकृतांतसमगहिचरनबानरडारई ।
एहिबीचकपिन्हबिधंसिकृतमषदेषिमनमहहारई॥१०॥

दो० जज्ञबिधंसि कुसल कपि, आए रघुपति पास ॥
चलेउनिसाचरक्रुद्धहोइ, त्यागिजिवनकैआस॥८४॥

चलतहोहिंअति असुभभयंकर ❋ बैठहिंगीधउडाइ सिरन्हपर
भएउकालबसकाहुनमाना ❋ कहेसिबजावहुजुद्ध निसाना
चली तमीचर अनीअपारा ❋ बहुगजरथपदाति असवारा
प्रभु सन्मुष धाए षल कैसे ❋ सलभसमूह अनल कहँजैसे
इहाँदेवतन्हअस्तुतिकीन्ही ❋ दारुनबिपतिहमहिंएहिदीन्ही
अबजनिराम षेलावहु एही ❋ अतिसयदुषित होति बैदेही
देवबचनसुनिप्रभुमुसुकाना ❋ उठि रघुबीर सुधारे बाना
जटा जूट दृढबाँधे माथे ❋ सोहहिं सुमनबीचबिचगाँथे
अरुननयनबारिद तनस्यामा ❋ अषिललोकलोचनाभिरामा
कटितटपरिकरकस्योनिषंगा ❋ करकोदंड कठिन सारंगा

छं० सारंग कर सुंदरनिषंग सिलीमुषाकरकटिकस्यो ॥
भुजदंडपीन मनोहरायत उरधरासुरपद लस्यो ॥
कहदासतुलसी जबहिंप्रभु सरचापकर फेरनलगे ॥
ब्रह्मांडदिग्गजकमठअहिमाहिसिंधुभूधरडगमगे ॥

दो० सोभा देषिहराषि सुर, बरषहिं सुमन अपार ॥
जयजयजय करुनानिधि, छबिबलगुनआगार ॥८५॥

एही बीच निसाचर अनी ❋ कसमसातआई अति घनी

देषि चले सन्मुष कपि भट्टा * प्रलय कालकेजनु घनघट्टा
बहुकृपनि तरवार चमंकहिं * जनुदहदिसिदामिनीदमंकहिं
गजरथतुरग चिकारकठोरा * गर्जहिं मनहुँ बलाहक घोरा
कपि लंगूर बिपुल नभछाए * मनहु इंद्रधनु उए सुहाए
उठेधूरि मानहुँ जलधारा * बान बुंदभै वृष्टि अपारा
दुहुँदिसि पर्बत करहिंप्रहारा * बज्रपात जनु बारहिं बारा
रघुपति कोपिबानझरिलाई * घायल भै निसिचरसमुदाई
लागत बान बीर चिक्करहीं * घुर्मिघुर्मिजहँतहँ महिपरहीं
श्रवहिं सैलजनु निर्झरभारी * सोनित सरिकादरभयकारी

छं० कादरभयंकर रुधिरसरिता बाढिपरम अपावनी ॥
दोउकूल दलरथ रेतचक्र अवर्त्त बहति भयावनी ॥
जलजंतु गजपदचरतुरग परबिबिधबाहनकोगने ॥
सरसक्ति तोमरसर्पचाप तरंग चर्म कमठघने ॥

दो० बीर परहिं जनुतीर तरु, मज्जाबहु बह फेन ॥
कादर देषि डरहिं तहँ, सुभटन्ह के मनचेन ॥ ८६ ॥

मज्जहिंभूपपिसाच बेताला * प्रथममहा झोटिंग कराला
काककंकलै भुजा उडाहीं * एकते छीनि एकलै षाहीं
एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई * सठहु तुम्हार दरिद्रन जाई
कहरत भटघायेल तट गिरे * जहँ तहँ मनहु अर्द्धजलपरे
षैंचहिं गीध आँततट भए * जनु बंसीषेलहिं चितदए
बहुभट ब्रहहिं चढेषग जाहीं * जनुनावरिषेलहिं सरिमाहीं
जोगिनि भरिभरिषप्परसंचहिं * भूतपिसाच बधू नभनंचहिं
भटकपालकरतालबजावहिं * चामुंडानाना बिधि गावहिं

जंबुक निकर कटक्कटकट्टहिं ❋ षाँहिंहुआहिंअघाहिंदपट्टहिं
कोटिन्ह रुंडमुंडबिनु डोल्लहिं ❋ सीसपरेमहिं जयजय बोल्लहिं
छं० बोल्लहिंजो जयजय मुंडरुंड प्रचंडासिरबिनुधावहीं ॥
षप्परन्हिषग्गअलुझ्झिजुझ्झहिंसुभटभटन्हढहावहीं ॥
बानरनिसाचर निकरमर्द्दहिं रामबल दर्प्पितभए ॥
संग्रामअंगनसुभटसोवहिं रामसर निकरन्हिहये ॥
दो० रावन हृदय बिचारा, भा निसिचर संघार ॥
मैं अकेलकपि भालुबहु, माया करउँ अपार ॥ ८७ ॥
देवन्ह प्रभुहि पयादे देषा ❋ उपजाउरअतिछोभबिसेषा
सुरपतिनिजरथतुरतपठावा ❋ हरषसहितमातलिलै आवा
तेजपुंज रथ दिब्य अनूपा ❋ हराषिचढे कोसलपुर भूपा
चंचल तुरग मनोहर चारी ❋ अजरअमरमनसम गतिकारी
रथारूढ रघुनाथहि देषी ❋ धाएकपि बलपाइ बिसेषी
सहीनजाइ कपिन्हकेमारी ❋ तब रावन माया बिस्तारी
सो माया रघुबीरहिं बांची ❋ लछिमनकपिन्हसो मानीसांची
देषीकपिन्ह निसाचरअनी ❋ बहुअंगदलछिमन कपिधनी
छं० बहुबालिसुतलछिमनकपीसबिलोकिमरकटअपडरे ॥
जनुचित्रलिषितसमेतलछिमनजहँसोतहँचितवहिंषरे ॥
निजसेनचकिताबिलोकिहँसिसरचापसजिकोसलधनी
मायाहरीहरिनिमिषमहँ हरषी सकल मर्कटअनी ॥
दो० बहुरि राम सबतन चितइ, बोले बचन गँभीर ॥
द्वंद्वजुद्धदेषहु सकल, स्रमित भएअति बीर ॥ ८८ ॥
असकहिरथरघुनाथचलावा ❋ बिप्रचरनपंकज सिरनावा

तब लंकेस क्रोध उरछावा * गर्जत तर्जत सन्मुष धावा
जीतेहु जेभट संजुग माहीं * सुनुतापस मैंतिन्हसमनाहीं
रावननाम जगतजसजाना * लोकप जाके बंदी षाना
षरदूषन बिराध तुम्ह मारा * बधेहुब्याधइवबालि बिचारा
निसिचरनिकरसुभटसंघारेहु * कुंभकरनघननादहि मारेहु
आज बयर सब लेउँनिबाही * जौंरन भूमिभाजिनहिंजाही
आजुकरौंषलु काल हवाले * परेहु कठिन रावनके पाले
सुनिदुर्बचन कालबस जाना * बिहँसिबचनकहकृपानिधाना
सत्यसत्य सबतब प्रभुताई * जल्पसिजानिदेषाउमनुसाई

छं० जनिजल्पनाकरिसुजसनासहिनीतिसुनहिकरहिछमा
संसारमहँपूरुषत्रिबिधिपाटलरसालपनससमा ॥
एकसुमनप्रदइकसुमनफलएकफलइकेवललागहीं ॥
एककहहिंकहहिंकरहिंअपरएककरहिंकहतनबागहीं॥

दो० राम बचन सुनि बिहँसा, मोहिं सिषावत ज्ञान ॥
बयरकरतनहिं तबडारे, अबलागे प्रियप्रान ॥ ८९ ॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर * कुलिससमान लागछाँडैसर
नानाकारसिली मुष धाए * दिसिअरुबिदिसिगगनमहिछाए
पावकसर छाँडेउ रघुबीरा * छनमहँजरे निचासर तीरा
छाडिसितीव्रसक्तिषिसिआई * बान संगप्रभु फेरि चलाई
कोटिन्हचक्र त्रिसूलपबारइ * बिनुप्रयासप्रभुकाटिनिवारइ
निफल होहिं रावन सरकैसे * षलकेसकल मनोरथ जैसे
तब सतबान सारथी मारेसि * परेउ भूमिजयरामपुकारेसि
राम कृपाकरि सूत उठावा * तबप्रभुपरम क्रोध कहँपावा

छं० भयेक्रुद्धजुद्धबिरुद्ध रघुपति त्रोनसायक कसमसे ॥
कोदंडधुनिअतिचंडसुनिमनुजाद भयमारुतग्रसे ॥
मंदोदरी उर कंप कपति कमठ भू भूधर त्रसे ॥
चिक्करहिंदिग्गजदसनगहिमहिदेषिकौतुकसुरहंसे ॥

दो० तानेउ चाप श्रवन लगि, छांडे बिसिष कराल ॥
राममार्गनगन चले, लहलहात जनुव्याल ॥ ९० ॥

चलेबान सपक्ष जनु उरगा * प्रथमहिहत्यो सारथीतुरगा
रथबिभंजिहति केतुपताका * गर्जाअति अंतरबल थाका
तुरतआनरथचढिषिसिआना * अस्त्रसस्त्रछांडेसिबिधिनाना
बिफलहोहिं सब उद्यमताके * जिमिपरद्रोहनिरतमनसाके
तब रावन दससूल चलावा * बाजिचारिमहिमारिगिरावा
तुरग उठाइ कोपिरघुनायक * षैंचिसरासन छांडे सायक
रावन सिर सरोज बन चारी * चलिरघुबीर सिलीमुषधारी
दस दस बान भालदस मारे * निसरि गयेचलेरुधिर पनारे
स्रवतरुधिर धाएउबलवाना * प्रभुपुनिकृत धनुसरसंधाना
तीस तीर रघुबीर पबारे * भुजन्हिसमेतसीसमहि पारे
रामबहोरि भुजा सिर छीने * काटतही पुनिभए नबीने
प्रभुबहु बारबाहु सिरहए * कटतझटितपुनि नूतनभए
पुनिपुनिप्रभुकाटतभुजसीसा * अतिकौतुकीकोसला धीसा
रहेछाइ नभ सिरअरु बाहू * मानहुँ अमितकेतु अरुराहू

छं० जनुराहुकेतु अनेक नभपथ स्रवतसोनितधावहीं ॥
रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं भूमिगिरनन पावहीं ॥
एकएकसरसिर निकर छेदेनभ उडतइमि सोहहीं ॥
जनुकोपिदिनकरकरनिकरजहँतहँ बिधुंतुदपोहहीं ॥

दो॰ जिमिजिमिप्रभुहरतासुसिर, तिमितिमिहोहिंअपार॥
सेवतविषय बिबर्धजिमि, नितनितनूतनमार ॥९१॥

दसमुषदेषि सिरन्हकै बाढी ❀ बिसरामरनभई रिसगाढी
गर्जेउमूढ महा अभिमानी ❀ धाएउदसौ सरासन तानी
समरभूमिदसकंधर कोप्यो ❀ बरषिबानरघुपतिरथतोप्यो
दंड एक रथ देषिन परेऊ ❀ जनुनिहारमहँदिनकरदुरेऊ
हाहाकारसुरन्हजब कीन्हा ❀ तबप्रभुकोपिकार्मुक लीन्हा
सरनिवारिरिपुके सिरकाटे ❀ तेसिदिसिविदिसिगगनमहिपाटे
काटेसिरनभ मारग धावहिं ❀ जयजयधुनि करिभय उपजावहिं
कहँलछिमन सुग्रीव कपीसा ❀ कहँरघुबीर कोसला धीसा

छं॰ कहँरामकहिसिरनिकरधाएदेषिमर्कटभाजिचले।
संधानिधनुरघुबंसमनिहँसिसरनिसिरबेधेभले॥
सिरमालिकाकरकालिकागहिबृंदबृंदन्हिबहुमिलीं
करिरुधिरसरिमज्जनमनहुँसंग्रामबटपूजनचलीं।

दो॰ पुनिदसकंठ क्रुद्ध होइ, छाँडी सक्तिप्रचंड
चलीबिभीषन सन्मुष, मनहुँ कालकरदंड ॥ ९२ ॥

आवतदेषिसक्ति अतिघोरा ❀ प्रनतारति भंजनपन मोरा
तुरत बिभीषन पाछे मेला ❀ सन्मुषराम सहेउसो सेला
लागिसक्ति मुरछा कछु भई ❀ प्रभुकृतषेल सुरन्ह बिकलई
देषिबिभीषन प्रभुस्रमपायो ❀ गहिकरगदा क्रुद्ध होइधायो
रेकुभाग्य सठमंद कुबुद्धे ❀ तैंसुरनर मुनि नाग बिरुद्धे
सादर सिवकहँ सीसचढाए ❀ एकएक के कोटिन्ह पाए
तेहिकारनषल अबलगिबांच्यो ❀ अबतबकालसीसपर नाच्यो

रामबिमुषसठचहसि संपदा ❋ असकहिहनेसिमाँझउरगदा
छं० उरमाँझगदा प्रहार घोरकठोर लागतमहिपरयो ॥
दसबदनसोनितस्रवतपुनिसंभारिधायोरिसभर्‌यो ॥
द्वौभिरेअति बलमल्लजुद्धबिरुद्ध एक एकहिहने ॥
रघुबीरबलदर्पित बिभीषन घालिनहिंताकहुँ गने ॥
दो० उमा बिभीषन रावनहिं, सन्मुष चितवाकिकाउ ॥
सोअबभिरत कालज्यौं, श्रीरघुबीर प्रभाउ ॥
देषा स्रमित बिभीषनभारी ❋ धाएउ हनूमान गिरिधारी
रथतुरंग सारथी निपाता ❋ हृदयमाँझतेहि मारेसिलाता
ठाढरहा अतिकंपित गाता ❋ गएउबिभीषनजहँजनत्राता
पुनिरावनकपिहतेउप्रचारी ❋ चलेउगगनकपि पूँछपसारी
गहेसिपूँछकपिसहित उडाना ❋ पुनिफिरिभिरेउप्रबलहनुमाना
लरतअकासजुगलसमयोधा ❋ एकहिएक हनत करिक्रोधा
सोहहिंनभछलबलबहु करहीं ❋ कज्जलगिरिसुमेरुजनुलरहीं
बुधिबलनिसिचरपरैनपार्‌यो ❋ तबमारुतसुतप्रभु सँभार्‌यो
छं० संभारिश्रीरघुबीरधीरपचारिकपि रावनहन्यो ॥
महिपरतपुनिउठिलरतदेवन्हजुगलकहँजयजयभन्यो
हनुमंत संकट देषि मर्कट भालु क्रोधातुरचले ॥
रनमत्तरावन सकलसुभट प्रचंड भुजबल दलमले ॥
दो० तब रघुबीर पचारे, धाए कीस प्रचंड ॥
कपिबलप्रबलदेषितेहिं, कीन्हप्रगट पाषंड ॥
अंतर्ध्यान भएउ छनएका ❋ पुनि प्रगटे षलरूप अनेका
रघुपतिकटकभालुकपिजेते ❋ जहँतहँ प्रगट दसानन तेते

देषेकपिन्ह अमितदससीसा * जहँतहँभजेभालु अरुकीसा
भागे बानर धरहिं न धीरा * त्राहित्राहिलछिमनरघुबीरा
दहदिसिधावहिंकोटिन्हरावन * गर्जहिंघोरकठोर भयावन
डरे सकल सुर चले पराई * जयकै आस तजहुअबभाई
सबसुर जिते एक दसकंधर * अबबहुभएतकहु गिरिकंदर
रहेबिरंचि संभु मुनि ज्ञानी * जिन्हजिन्हप्रभुमहिमाकछुजानी

छं० जाना प्रताप तेरहेनिर्भय कपिन्हरिपुमानेफुरे ॥
चलेबिचलि मर्कटभालुसकलकृपालपाहिभयातुरे ॥
हनुमंत अंगद नीलनल अतिबल्लरतरनबाँकुरे ॥
मर्द्दहि दसाननकोटिकोटिन्ह कपटभूभटअंकुरे ॥

दो० सुरबानर देषे बिकल, हस्यौ कोसलाधीस ॥
सजि सारंग एकसर, हतेसकलदससीस ॥९५॥

प्रभुछनमहँ मायासबकाटी * जिमिरबिउएजाहिंतमफाटी
रावन एकदेषि सुर हरषे * फिरेसुमन बहुप्रभु पर बरषे
भुजउठायरघुपति कपिफेरे * फिरे एक एकन्ह तब टेरे
प्रभुबलपाइ भालुकपि धाए * तरलतमकिसंजुगमहिआए
अस्तुति करत देवतन्हिदेषे * भएउँ एकमैं इन्हके लेषे
सठहुसदातुम्हमोर मरायल * असकहिकोपिगगनपथधायल
हा हा कार करत सुरभागे * षलहु जाहु कहँ मोरे आगे
देषिबिकल सुर अंगदधायो * कूदिचरनगहिभूमि गिरायो

छं० गहिभूमिपारयोलातमारयोबालिसुतप्रभुपहिंगयो ॥
संभारिउठि दसकंठ घोर कठोर रवगर्जतभयो ॥

करिदाप चापचढाइ दससंधानि सरबहु बरषई ॥
किएसकलभटघायलभयाकुलदेषिनिजबलहरषई ॥
दो० तब रघुपति रावनके, सीस भुजा सरचाप ॥
काटे भए बहोरिजिमि, कर्ममूढ कर पाप ॥ ९६ ॥

सिरभुजबाढि देषि रिपुकेरी * भालुकपिन्हरिसभई घनेरी
मरतनमूढ कटेहु भुजसीसा * धाएकोपिभालु भटकीसा
बालितनयमारुतिनलनीला * बानरराजदुबिद बलसीला
बिटपमहीधर करहिं प्रहारा * सोइगिरितरुगहिकपिन्हसोमारा
एकनषन्हिरिपुबपुषबिदारी * भागिचलहिंएकलातन्हमारी
तबनलनीलसिरन्हचढिगयऊ * नषन्हिलिलारबिदारतभयऊ
रुधिरदेषिबिषाद उर भारी * तिन्हहिधरन्हकहँभुजापसारी
गहेनजाहिंकरन्हिपरफिरहीं * जनुजुगमधुपकमलबनचरहीं
कोपिकूदि द्वौ धरेसि बहोरी * महिपटकतभजेभुजामरोरी
पुनिसकोपदसधनुकरलीन्हे * सरन्हिमारिघायलकपिकीन्हे
हनुमदादिमुरछितकरिबंदर * पाइप्रदोष हरष दसकंधर
मुरछितदेषिसकलकपिबीरा * जामवंत धाएउ रनधीरा
संग भालु भूधर तरुधारी * मारनलगे पचारि पचारी
भएउ क्रुद्ध रावन बलवाना * गहिपदमहिपटकैभटनाना
देषिभालुपतिनिजदलघाता * कोपिमाँझ उरमारेसि लाता

छं० उरलात घात प्रचंडलागत बिकलरथते महिपरा ॥
गहेभालुबीसहुकरमनहुँकमलन्हिबसेनिसिमधुकरा ।
मुरछितबिलोकिबहोरिपदहतिभालुपतिप्रभुपहिंगयो
निसिजानिस्यंदनघालितेहितबसुतजतनकरतभयो

दो॰ मुरछा बिगत भालु कपि, सब आए प्रभुपास ॥
निसिचर सकल रावनहिं, घेरिरहेअतित्रास ॥ ९७ ॥

तेहीनिसि सीता पहिंजाई * त्रिजटाकहिसबकथासुनाई
सिरभुजबाढिसुनतरिपुकेरी * सीता उरभइ त्रास घनेरी
मुषमलीन उपजा मनभीता * त्रिजटा सनबोली तबसीता
होइहिकहाकहसिकिनमाता * केहिबिधिमरिहि बिस्वदुषदाता
रघुपति सरसिरकटेहुनमरई * बिधिबिपरीतचरितसबकरई
मोरअभाग्यजिआवतओही * जेहिंहौंहरिपद कमलबिछोही
जेहिंकृतकपटकनकमृगझूठा * अजहुँसोदैव मोहि पररूठा
जेहिबिधिमोहिदुषदुसहसहाए * लछिमनकहँकटु बचनकहाए
रघुपतिबिरहसबिषसरभारी * तकितकि मारबार बहुमारी
ऐसेहुदुष जोराष ममप्राना * सोइबिधिताहिजिआवनआना
बहुबिधिकरति बिलापजानकी * करिकरिसुरतिकृपानिधानकी
कह त्रिजटासुनुराजकुमारी * उरसर लागत मरै सुरारी
प्रभुताते उर हतै न तेही * एहिके हृदयबसति बैदेही

छं॰ एहिके हृदयबस जानकी जानकी उरमम बास है ॥
ममउदरभुअनअनेक लागतबानसब करनास है ॥
सुनिबचनहरषबिषादमनअतिदेषिपुनित्रिजटाकहा ॥
अबमरिहिरिपुएहिबिधिसुनहिसुंदरितजहिसंसयमहा

दो॰ काटतासिरहोइहि बिकल, छुटिजाइहि तब ध्यान ॥
तबरावनाहिहृदयमहँ, मरिहहिंरामसुजान ॥ ९८ ॥

असकहिबहुतभाँतिसमुझाई * पुनित्रिजटानिज भवनसिधाई
राम सुभाउ सुमिरि बैदेही * उपजी बिरहबिथाअतितेही

निसिहिसामिहिनिंदतिबहुभाँती * जुगसमभई सिरातिनराती
करतिबिलापमनहिंमनभारी * रामबिरह जानकी दुषारी
जबअतिभएउबिरहउरदाहू * फरकेउ बामनयनअरुबाहू
सगुनबिचारि धरीमनधीरा * अबमिलिहहिंकृपालरघुबीरा
इहाँ अर्द्धनिसि रावनजागा * निजसारथिमनषीझनलागा
सठरन भूमिछडाइसि मोही * धिगधिगअधम मंदमतितोही
तेहिपदगहिबहु बिधिसमुझावा * भोरभए रथचढि पुनिधावा
सुनि आगवनदसाननकेरा * कपिदलषर भरभयउघनेरा
जहँतहँ भूधर बिटपउपारी * धाएकट कटाइ भटभारी

छं० धाएजो मर्कट बिकटभालु करालकर भूधरधरा ॥
अतिकोप करहिं प्रहारमारतभजिचलेरजनीचरा ॥
बिचलाइ दल बलवंतकीसन्ह घेरि पुनिरावनालयो ॥
चहुँदिसिचपेटन्हिमारिनषन्हिबिदारितनब्याकुलकियो॥

दो० देषि महा मर्कट प्रबल, रावन कीन्ह बिचार ।
अंतरहित होइनिमिषमहँ, कृत माया बिस्तार॥९९॥

छं० जब कीन्ह तेहिपाषंड । भए प्रकट जंतु प्रचण्ड ॥
बेताल भूत पिसाच । कर धरे धनु नाराच ॥
जोगिनि गहे करवाल । एकहाथ मनुज कपाल ॥
करिमद्य सोनित पान । नाचहिं करहिं बहुगान ॥
धरु मारुबोलहिं घोर । रहिपूरि धुनि चहुँओर ॥
मुषबाइ धावहिं षान । तब लगे कीस परान ॥
जहँजाहिमर्कट भागि । तहँ बरत देषहिं आगि ॥
भएबिकल बानरभालु । पुनि लाग बरषै बालु ॥

जहँतहँथकितकरिकीस । गर्जेउ बहुरि दससीस ॥
लछिमन कपीस समेत । भए सकलबीर अचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ । कहिसुभट मींजहिंहाथ ॥
एहिबिधिसकलबलतोरि । तेहिंकीन्ह कपट बहोरि ॥
प्रगटेसिबिपुल हनुमान । धाए गहे पाषान ॥
तिन्हराम घेरे जाइ । चहुँदिसि बरूथ बनाइ ॥
मारहुधरहु जानिजाइ । कट कटहिं पूँछ उठाइ ॥
दहँदिसि लंगूर बिराज । तेहिमध्य कोसल राज ॥

छं० तेहिमध्यकोसलराज सुंदरस्याम तनसोभालही ॥
जनुइन्द्र धनुषअनेक कीबरबारि तुंग तमालही ॥
प्रभुदेषिहरष बिषाद उरसुरबृंदजयजयजयकरी ॥
रघुबीर एकहितीर कोपिनिमेषमहँ माया हरी ॥
मायाबिगतकपिभालुहरषेबिटपिगिरिगहिसबफिरे ॥
सरनिकर छाँडेरामरावनबाहु सिरपुनि महिगिरे ॥
श्रीराम रावनसमरचरित अनेककल्प जोगावहीं ॥
सतसेषसारद निगमकबि तेउ तदपिपारनपावहीं ॥

दो० ताकेगुन गन कछु कहे, जडमति तुलसी दास ॥
जिमि निजबल अनुरूपते, माछी उडै अकाश ॥
काटेसिर भुज बारबहु, मरतन भट लंकेस ॥
प्रभुक्रीडत सुरसिद्ध मुनि, ब्याकुलदेषिकलेस १०० ॥

काटत बढहिंसीस समुदाई * जिमिप्रतिलाभलोभ अधिकाई
मरैन रिपुस्रमभएउ बिसेषा * राम बिभीषनतन तब देषा
उमा काल मरुजाकी इच्छा * सोप्रभुजनकर प्रीतिपरीछा

सुनुसर्बग्य चराचर नायक ❋ प्रनतपालसुरमुनिसुषदायक
नाभि कुंड पियूष बसयाके ❋ नाथजिअतरावन बलताके
सुनतबिभीषनबचनकृपाला ❋ हरषिगहेकर बान कराला
असुभ होन लागे तब नाना ❋ रोवहिंषरसृकाल बहुस्वाना
बोलहिं षग जग आरतिहेतू ❋ प्रगट भएनभ जहँतहँ केतू
दसदिसिदाहहोनअतिलागा ❋ भएउपरबबिनुरबि उपरागा
मंदोदरि उरकंपित भारी ❋ प्रतिमास्रवहिंनयनमगबारी

छं० प्रतिमारुदहिंपबिपातनभअतिबातबहडोलतिमही ॥
बरषहिंबलाहकरुधिरकचरजअसुभअतिसककोकही
उतपातअमितबिलोकिनभसुरबिकलबोलहिंजयजए
सुरसभयजानिकृपालरघुपति चापसरजोरतभए ॥

दो० षैंचि सरासन स्रवन लगि, छाडे सर एकतीस ॥
रघुनायक सायक चले मानहुँकाल फनीस १०१ ॥

सायकएक नाभिसर सोषा ❋ अपरलगे भुजसिरकरिरोषा
लैसिर बाहु चले नाराचा ❋ सिरभुजहीन रुंडमहिनाचा
धरनि धसै धरधाव प्रचंडा ❋ तबसरहति प्रभुकृतदुइषंडा
गर्जेउ मरत घोर रवभारी ❋ कहाँ राम रनहतौं पचारी
डोली भूमि गिरतदसकंधर ❋ छुभितसिंधुसरिदिग्गजभूधर
धरनिपरेउ द्वौ षंड बढाई ❋ चापिभालु मर्कट समुदाई
मंदोदरि आगे भुज सीसा ❋ धरिसरचलेजहाँ जग दीसा
प्रबिसे सब निषंग महुँआई ❋ देषि सुरन्ह दुंदुभी बजाई
तासुतेज समान प्रभुआनन ❋ हरषे देषि संभु चतुरानन
जयजय धुनि पूरीब्रह्मण्डा ❋ जयरघुबीर प्रबलभुजदण्डा

बरषहिंसुमन देव मुनिबृंदा * जयकृपाल जय जयतिमुकुंदा
छं० जय कृपाकंद मुकुंदद्वंद्व हरनसरन सुषप्रदप्रभो ॥
पलदलबिदारन परमकारन कारुनीकसदाबिभो ॥
सुरसुमन बरषहिं हरषसंकुल बाजदुंदुभि गहगही ॥
संग्राम अंगन राम अंग अनंद बहु सोभालही ॥
सिरजटामुकुटप्रसूनबिचबिचअतिमनोहरराजहीं ॥
जनुनीलगिरिपरतडितपटलसमेत उडगनभ्राजहीं ॥
भुजदंड सरकोदंड फेरतरुधिर कनतन अतिबने ॥
जनु रायमुनी तमाल परबैठी बिपुल सुषआपने ॥
दो० कृपादृष्टि करिबृष्टि प्रभु, अभय किए सुरबृंद ॥
भालुकीस सबहरषे, जयसुष धाममुकुंद १०२ ॥
पति सिर देषत मंदोदरी * मुरुछिताबिकल धरनिषसिपरी
जुबतिबृंद रोवत उठिधाईं * तेहिउठाइ रावन पहिआईं
पतिगतिदेषितेकरहिंपुकारा * छूटे कचनहिं बपुष सँभारा
उरताडनाकरहिंबिधिनाना * रोवत करहिं प्रताप बषाना
तवबल नाथडोल नितधरनी * तेजहीन पावकससि तरनी
सेषकमठसहिसकहिंनभारा * सोतनुभूमि परेउ भरिछारा
बरुन कुबेर सुरेस समीरा * रनसन्मुष धरकाहु न धीरा
भुजबलजितेहुकालजमसाँई * आज परेहु अनाथकी नाँई
जगतबिदिततुम्हारि प्रभुताई * सुतपरिजनबलबरनि नजाई
रामबिमुषअसहालतुम्हारा * रहानकोउकुल रोवनिहारा
तवबसबिधिप्रपंच सबनाथा * सभय दिसिप नितनावहिमाथा
अबतवसिरभुजजंबकषाहीं * रामबिमुषयहअनुचितनाहीं

कालबिबसपतिकहानमाना ॥ अगजगनाथमनुज करिजाना

छं० जानेउमनुजकरिदनुजकाननदहनपावकहरिस्वयं ॥
जेहिनमतसिवब्रह्मादिसुरपियभजेहुनहिंकरुनामयं ॥
आजन्मते परद्रोहरतपापौघमय तवतन अयं ॥
तुम्हहूँदियोनिजधाम रामनमामि ब्रह्मनिरामयं ॥

दो० अहह नाथ रघुनाथसम, कृपासिंधु नहिंआन ॥
जोगिबृंददुर्लभगति, तोहिदीन्हिभगवान ॥१०३॥

मंदोदरी बचन सुनि काना ॥ सुरमुनिसिद्धसबन्हि सुषमाना
अजमहेस नारद सनकादी ॥ जेमुनिवर परमारथ बादी
भरिलोचनरघुपतिहिनिहारी ॥ प्रेममगन सबभएउ सुषारी
रुदन करत देषी सब नारी ॥ गएउबिभीषन मनदुषभारी
बंधुदसाबिलोकिदुष कीन्हा ॥ तबप्रभुअनुजहि आयेसुदीन्हा
लछिमन तेहिबहुबिधिसमुझायो ॥ बहुरिबिभीषनप्रभुपहिंआयो
कृपादृष्टि प्रभुताहिबिलोका ॥ करहुक्रियापरिहरि सबसोका
कीन्हिक्रियाप्रभुआएसुमानी ॥ बिधिवतदेसकाल जियजानी

दो० मंदोदरी आदि सब, देइ तिलांजलि ताहि ॥
भवनगईं रघुपतिगुन, गन बरनत मनमाहिं ॥१०४॥

आइबिभीषनपुनि सिरनायो ॥ कृपासिंधुतबअनुजबोलायो
तुम्हकपीसअंगद नलनीला ॥ जामवंत मारुतिनय सीला
सब मिलिजाहु बिभीषनसाथा ॥ सारेहुतिलककहेउ रघुनाथा
पितावचनमैं नगरनआवौं ॥ आपुसरिसकपिअनुजपठावौं
तुरतचलेकपिसुनिप्रभुबचना ॥ कीन्हीजाइतिलककीरचना
सादर सिंघासन बैठारी ॥ तिलकसारिअस्तुतिअनुसारी

जोरिपानि सबहीसिर नाए ❀ सहितबिभीषनप्रभुपहिंआए
तबरघुबीर बोलिकपिलीन्हे ❀ कहिप्रियबचनसुषीसबकीन्हे
छं० किएसुषीकहिबानीसुधासमबलतुम्हारेरिपुहयो ।
पायोबिभीषनराजातिहुँपुरजसतुम्हारोनितनयो ॥
मोहिसहितसुभकीरतितुम्हारीपरमप्रीतिजेगाइहैं ।
संसार सिंधुअपारपारप्रयासबिनुनरपाइहैं ॥
दो० प्रभुकेबचनस्रवनसुनि, नहिंअघाहिंकपिपुंज ।
बारबारसिरनावहिं, गहहिंसकलपदकंज १०५मा०पा०२६
पुनिप्रभुबोलिलिएउहनुमाना ❀ लंका जाहु कहेउ भगवाना
समाचारजानकिहिसुनावहु ❀ तासुकुसललैतुम्हचलिआवहु
तबहनुमंत नगरमहँ आए ❀सुनिनिसिचरीनिसाचरधाए
बहुप्रकार तिन्हपूजाकीन्ही ❀ जनकसुतादेषाइपुनिदीन्ही
दूरिहिते प्रनामकपिकीन्हा ❀ रघुपति दूत जानकीचीन्हा
कहहुतातप्रभु कृपानिकेता ❀ कुसलअनुजकपिसेनसमेता
सबबिधिकुसलकोसलाधीसा ❀ मातुसमर जीत्यौ दससीसा
अबिचलराजबिभीषनपायो ❀सुनिकपिबचनहरषउरछायो
छं० अतिहरषमनतनपुलकलोचनसजलकहपुनिपुनिरमा ॥
कादेउँतोहित्रैलोकमहँकपिकिमपिनहिंबानीसमा ॥
सुनुमातुमैंपायोंअषिलजगराजआजनसंसयं ॥
रनजीतिरिपुदलबंधुजुतपस्यामिराममनामयं ॥
दो० सुनुसुतसदगुनसकलतब, हृदयबसहुहनुमंत ।
सानुकूलकोसलपति, रहहुसमेत अनंत १०६ ॥
अबसोइजतनकरहुतुमताता ❀ देषौंनयन स्याम मृदुगाता

तबहनुमान रामपहिं जाई * जनकसुता कै कुसलसुनाई
सुनिसंदेस भानुकुल भूषन * बोलिलिएजुबराजबिभीषन
मारुतसुतकेसंग सिधावहु * सादरजनकसुतहिलै आवहु
तुरतहिसकलगएजहँ सीता * सेवहिंसबनिसिचरी बिनीता
बेगिबिभीषनतिन्हहिसिषायो * तिन्हबहुबिधिमज्जनकरवायो
दिव्यबसन भूषन पहिराए * सिबिकारुचिरसाजिपुनिल्याए
तापरहरषि चढ़ी बैदेही * सुमिरिराम सुषधामसनेही
बेतपानिरक्षकचहुं पासा * चलेसकलमन परम हुलासा
देषनभालु कीस सब आए * रक्षककोपि निवारन धाए
कहरघुबीर कहा ममम्मानहु * सीतहि सषापयादे आनहु
देषहु कपिजननी की नांई * बिहसिकहारघुनाथ गोसाँई
सुनिप्रभुबचनभालुकपिहरषे * नभतेसुरन्ह सुमन बहुबरषे
सीता प्रथम अनल महँराषी * प्रकटकीन्हिचहअंतरसाषी

दो० तेहि कारन करुना निधि, कहे कछुक दुर्बाद ॥
सुनतजातुधानीसब, लागी करै बिषाद ॥ १०७ ॥

प्रभुके बचन सीस धरिसीता * बोलीमनक्रम बचनपुनीता
लछिमनहोहु धरमके नेगी * पावकप्रकटकरहु तुम्हबेगी
सुनिलछिमनसीताकै बानी * बिरहबिबेकधरमनितिसानी
लोचनसजलजोरिकर दोऊ * प्रभुसनकछुकहिसकतनकोऊ
देषिराम रुष लछिमन धाए * पावकप्रगटि काठ बहुलाए
पावक प्रबल देषि बैदेही * हृदयहरषनहि भयकछुतेही
जौंमनबचक्रममम उरमाहीं * तजिरघुबीर आनगतिनाहीं
तौकृसान सबकै गतिजाना * मोकहँहोउ श्रीषंड समाना

छं० श्रीषंडसमपावकप्रवेस कियोसुमिरि प्रभुमैथिली ॥
जयकोसलेसमहेसबंदित चरनरजअति निर्मली ॥
प्रतिबिंबअरुलौकिक कलंक प्रचंड पावक महँजरे ॥
प्रभुचरित काहुनलषेनभ सुरसिद्ध मुनिदेषहिंषरे ॥
तब अनल भूसुररूपकरगहिसत्य श्रीश्रुतिबिदितजो ॥
जिमिछीर सागरइंदिरा रामहिसमर्पी आनिसो ॥
सोरामबामबिभागराजातिरुचिर अति सोभाभली ॥
नवनीलनीरजनिकट मानहु कनकपंकजकीकली ॥

दो० बरषहिं सुमनहरषि सुर, बाजहिं गगनानिसान ॥
गावहिं किन्नर सुरबधू, नाचहिं चढ़ी बिमान ॥
जनकसुता समेत प्रभु, सोभा अमित अपार ॥
देषिभालुकपिहरषे जयरघुपतिसुषसार ॥ १०८ ॥

तबरघुपति अनुसासन पाई ॥ मातलिचलेउ चरनसिरनाई
आए देव सदा स्वारथी ॥ बचनकहहिंजनु परमारथी
दीनबंधु दयाल रघुराया ॥ देवकीन्हि देवन्ह परदाया
बिस्वद्रोहरत यहषलकामी ॥ निजअघगएउकुमारगगामी
तुम्हसमरूपब्रह्म अबिनासी ॥ सदाएक रससहज उदासी
अकल अगुनअजअनघअनामय ॥ अजितअमोघ सक्तिकरुनामय
मीन कमठ सूकर नरहरी ॥ बामन परसुराम बपुधरी
जब जबनाथ सुरन्हदुषपायो ॥ नानातन धरितुम्हइनसायो
यहषल मलिनसदासुरद्रोही ॥ कामलोभमदरतअतिकोही
अधमसिरोमनितवपदपावा ॥ यहहमरेमन बिसमयआवा
हम देवता परम अधिकारी ॥ स्वारथरतप्रभुभगतिबिसारी

भव प्रबाह संतत हम परे ❋ अब प्रभुपाहिसरन अनुसरे
दो॰ करिबिनती सुरसिद्ध सब, रहे जहँतहँ करजोरि ॥
अतिसप्रेमतनपुलकिबिधि, अस्तुतिकरतबहोरि १०९
जय राम सदा सुष धामहरे ❋ रघुनायक सायक चाप धरे
भव बारन दारन सिंहप्रभो ❋ गुनसागर नागरनाथ बिभो
तनकाम अनेक अनूपछबी ❋ गुनगावत सिद्ध मुनींद्रकबी
जसुपावन रावन नाग महा ❋ षगनाथजथा करिकोपगहा
जनरंजन भंजन सोकभयं ❋ गतक्रोध सदाप्रभु बोधमयं
अवतार उदार अपार गुनं ❋ महिभार बिभंजनज्ञानघनं
अजब्यापकमेकमनादिसदा ❋ करुना कररामनमामिमुदा
रघुबंस बिभूषन दूषनहा ❋ कृतभूत बिभीषन दीनरहा
गुनग्याननिधानअमानअजं ❋ नितरामनमामिबिभुंबिरजं
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं ❋ पलबृंद निकंद महाकुसलं
बिनुकारन दीन दयालहितं ❋ छबिधामनमामिरमासहितं
भवतारन कारन काज परं ❋ मन संभव दारुन दोषहरं
सरचाप मनोहर त्रोनधरं ❋ जलजारुन लोचनभूप बरं
सुषमंदिर सुंदर श्री रमनं ❋ मदमार मुधाममता समनं
अनवद्य अषंडन गोचरगो ❋ सवरूप सदासब होइनसो
इति बेदवदंति नदंत कथा ❋ रविआतपभिन्ननभिन्नजथा
कृतकृत्य बिभोसब बानरए ❋ निरषंतितवानन सादरए
धिग जीवन देव सरीर हरे ❋ तवभक्ति बिनाभव भूलिपरे
अबदीन दयाल दया करिए ❋ मतिमोरिबिभेद करीहरिए
जेहिते बिपरीत कृया करिए ❋ दुषसोसुषमानि सुषीचरिए

षल षंडन मंडन रम्य छमा ❋ पदपंकज सेवित संभुउमा
नृप नायक दे बरदान मिदं ❋ चरनांबुज प्रेम सदासुभदं

दो॰ बिनयकीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलक अतिगात ॥
सोभासिंधुबिलोकत, लोचननहीं अघात ॥ ११० ॥

तेहिअवँसरदसरथतहँ आए ❋ तनयबिलोकिनयनजलछाए
अनुजसहितप्रभुबंदनकीन्हा ❋ आसिरबादपिता तबदीन्हा
तातसकल तब पुन्यप्रभाऊ ❋ जीत्यौअजयनिसाचर राऊ
सुनिसुतबचनप्रीतिअतिबाढ़ी ❋ नयनसलिलरोमावलिठाढ़ी
रघुपति प्रथमप्रेमअनुमाना ❋ चितैपितहिदीन्हेउदृढज्ञाना
ताते उमा मोक्ष नहिं पायो ❋ दसरथभेदभगति मनलायो
सगुनोपासक मोक्षन लेहीं ❋ तिन्हकहँरामभगतिनिजदे
बारबार करि प्रभुहिप्रनामा ❋ दसरथहरषि गये सुरधामा

दो॰ अनुजजानकी सहित प्रभु, कुसल कोसलाधीस ॥
सोभादेषिहरषिमन, अस्तुतिकरसुरईस ॥ १११ ॥

छं॰ जयराम सोभाधाम । दायकप्रनत बिस्राम ॥
धृतत्रोन बरसर चाप । भुजदंडप्रबल प्रताप ॥
जयदूषनारि षरारि । मर्दन निसाचरधारि ॥
यहदुष्ट मारेउ नाथ । भएदेव सकलसनाथ ॥
जयहरन धरनी भार । महिमा उदारअपार ॥
जय रावनारि कृपाल । किएजातुधानबिहाल ॥
लंकेस अति बलगर्ब । किए बस्य सुर गंधर्ब ॥
मुनिसिद्धनरषगनाग । हठि पंथ सबके लाग ॥
परद्रोह रतअति दुष्ट । पायो सो फल पापिष्ट ॥

अबसुनहु दीनदयाल । राजीव नयन विसाल ॥
मोहिरहाअतिअभिमान। नहिंकोउमोहिसमान ॥
अबदेषि प्रभु पदकंज । गतमान प्रददुष पुंज ॥
कोउब्रह्मनिर्गुनध्याव । अव्यक्तजेहिश्रुतिगाव ॥
मोहिभावकोसलभूप । श्री राम सगुनसरूप ॥
बैदेहि अनुज समेत । ममहृदय करहु निकेत ॥
मोहि जानिएनिजदास। दे भक्ति रमा निवास ॥

छं० दे भक्ति रमानिवास त्रास हरनसरन सुषदायकं ॥
सुषधामरामनमामिकामअनेक छवि रघुनायकं ॥
सुरबृंद रंजनद्वंद्वभंजन मनुजतन अतुलितबलं ॥
ब्रह्मादि संकर सेव्यराम नमामि करुना कोमलं ॥

दो० अबकरि कृपाबिलोकिमोहि आयसु देहु कृपाल ॥
काहकरौंसुनि प्रियबचन, बोले दीन दयाल ॥११२॥

सुनुसुरपतिकपिभालु हमारे * परेभूमिनिसिचरन्हि जेमारे
ममहितलागितजेइन्हप्राना * सकलजिआउसुरेससुजाना
सुनुषगेस प्रभुकै यह बानी * अतिअगाधजानहिंमुनिज्ञानी
प्रभुसकात्रिभुवनमारिजिआई * केवल सक्रहिदीन्हि बडाई
सुधाबराषिकपिभालुजिआए * हरषिउठेसब प्रभुपहिं आए
सुधाबृष्टि भै दुहुँ दल ऊपर * जिएभालुकपिनहिंरजनीचर
रामाकार भए तिन्हकेमन * मुक्त भए छूटे भव बंधन
सुरअंसिकसबकपिअरुरीछा * जिएसकल रघुपतिकी इछा
रामसरिको दीनहितकारी * कीन्हेमुकुत निसाचर झारी
षलमल धामकामरतरावन * गतिपाई जोमुनिबर पावन

दो॰ सुमनबरषि सबसुरचले, चढ़िचढ़िरुचिर बिमान ॥
देषि सुअवसर प्रभुपहिं, आएउ संभु सुजान ॥
परमप्रीतिकरजोरिजुग, नलिन नयन भरिबारि ॥
पुलकिततनगदगदगिरा, बिनयकरतत्रिपुरारि ११३

मामभिरक्षयरघुकुलनायक * धृतबरचाप रुचिरकरसायक
मोहमहाघनं पटलप्रभंजन * संसयबिपिनअनलसुररंजन
अगुनसगुनगुनमंदिर सुंदर * भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर
कामक्रोधमदगज पंचानन * बसहुनिरंतरजनमनकानन
बिषयमनोरथ पुंजकंजबन * प्रबल तुषार उदार पारमन
भवबारिधि मंदर परमंदर * तारय तारय संसृतिदुस्तर
स्यामगातराजीव बिलोचन * दीनबंधु प्रनतारति मोचन
अनुजजानकीसहितनिरंतर * बसहुरामनृप मम उर अंतर
मुनिरंजनमहि मंडलमंडन * तुलसिदासप्रभुत्रास बिषंडन

दो॰ नाथजबहिं कोसलपुरी, होइहि तिलक तुम्हार ॥
कृपासिंधु मैं आउब, देषन चरितउदार ॥ ११४ ॥

करिबिनती जबसंभुसिधाए * तबप्रभुनिकटबिभीषनआए
नाइचरनसिर कहमृदुबानी * बिनयसुनहुप्रभुसारँगपानी
सकुलसदलप्रभुरावनमारयो * पावनजसत्रिभुवनबिस्तारयो
दीनमलीनहीनमति जाती * मोपरकृपाकीन्हि बहुभाँती
अबजन गृहपुनीतप्रभुकीजै * मज्जनकरियसमरश्रमछीजै
देसकोस मंदिर संपदा * देहुकृपालकपिन्ह कहँ मुदा
सबबिधिनाथमोहि अपनाइअ * पुनिमोहिसहित अवधपुर जाइअ
सुनतबचन मृदुदीनदयाला * सजलभएद्वौ नयनबिसाला

दो० तोरकोसगृह मोरसब, सत्यबचन सुनुभ्रात ॥
भरतदसासुमिरतमोहि, निमिषकल्पसमजात ॥
तापस बेषगात कृस, जपत निरंतर मोहि ॥
देषोंबेगिसो जतन करु, सषा निहोरों तोहि ॥
बीते अवधि जाउँ जौं, जिअत न पावौं बीर ॥
सुमिरतअनुज प्रीतिप्रभु, पुनिपुनिपुलकसरीर ॥
कोहुकल्पभरिराजतुम्ह, मोहिसुमिरेहुमनमाहिं ॥
पुनिममधामपाइहहु, जहांसंतसबजाहिं ॥ ११५ ॥

सुनतबिभीषन बचनरामके ❋ हरषिगहेपद कृपा धामके
बानर भालु सकल हरषाने ❋ गहिप्रभुपदगुनबिमलबषाने
बहुरिबिभीषनभवनसिधायो ❋ मनिगनबसनबिमानभरायो
लैपुष्पक प्रभु आगे राषा ❋ हँसिकरि कृपासिंधुतबभाषा
चढिबिमानसुनुसषाबिभीषन ❋ गगनजाइ बरषहु पटभूषन
नभपरजाइ बिभीषनतबहीं ❋ बरषिदिएमनिअँबर सबहीं
जोइजोइमनभावै सोइलेहीं ❋ मनिमुषमेलिडारिकपिदेहीं
हँसेरामश्री अनुज समेता ❋ परमकौतुकी कृपा निकेता

दो० मुनिजेहिध्यान न पावहिं, नेतिनेति कहबेद ॥
कृपासिंधुसोइ कपिन्हसन, करतअनेक बिनोद ॥
उमाजोगजपदानतप, नानामषव्रतनेम ॥
रामकृपानहिंकरहिंतसि, जसिनिष्केवलप्रेम ११६॥

भालुकपिन्हपट भूषणपाये ❋ पहिरिपहिरिरघुपतिपहिंआए
नानाजिनसदेषि सबकीसा ❋ पुनिपुनिहँसतकोसलाधीसा
चितैसबन्हिपरकीन्हीदाया ❋ बोले मृदुल बचन रघुराया

तुम्हरे बलमैं रावन मार्‌यौं * तिलकबिभीषनकहँपुनिसार्‌यौं
निजनिजगृहअब तुम्हसबजाहू * सुमिरेहुमोहिडरपहुजनिकाहू
सुनत बचन प्रेमाकुलबानर * जोरिपानि बोले सब सादर
प्रभुजोइकहहुतुम्हहि समोहा * हमरेहोत बचन सुनि मोहा
दीनजानिकपिकिएसनाथा * तुम्हत्रैलोक ईस रघुनाथा
सुनिप्रभुबचनलाज हममरहीं * मसककहूं षगपति हितकरहीं
देषिराम रुष बानर रीछा * प्रेममगन नहिं गृह कै ईछा

दो० प्रभु प्रेरित कपि भालु सब, राम रूप उरराषि ॥
हरषबिषादसहितचले, बिनय बिबिधबिधिभाषि ॥
कपिपति नील रीछ पति अंगद नल हनुमान ॥
सहित बिभीषन अपरजे, जूथपकपि बलवान ॥
कहिनसकहिंकछु प्रेमबस, भरिभरिलोचन बारि ॥
सन्मुषचितवहिंरामतन, नयननिमेषनिवारि ॥ ११७

अतिसय प्रीतिदेषि रघुराई * लीन्हेसकल बिमान चढाई
मनमहँ बिप्रचरनसिरनायो * उत्तरदिसिहिबिमान चलायो
चलतबिमान कोलाहलहोई * जय रघुबीर कहै सब कोई
सिंघासनअति उच्चमनोहर * श्रीसमेत प्रभु बैठे तापर
राजतराम सहित भामिनी * मेरुसृंग जनुघन दामिनी
रुचिरबिमानचलेउअतिआतुर * कीन्हीसुमन बृष्टिहरषेसुर
परमसुषदचलित्रिबिधबयारी * सागरसरसरि निर्मल बारी
सगुन होहिं सुंदर चहुं पासा * मनप्रसन्ननिर्मल नभआसा
कह रघुबीर देषुरन सीता * लछिमनइहांहत्योइंद्रजीता
हनूमान अंगद के मारे * रनमहि परे निसाचर भारे

कुंभकरन रावन दौ भाई * इहां हते सुरमुनि दुषदाई

दो॰ इहाँ सेतु बाँध्यो अरु, थापेउँ सिव सुष धाम ॥
सीता सहित कृपानिधि, संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥
जहँ जहँ कृपासिंधु बन, कीन्ह बास बिस्राम ॥
सकलदेषाएजानकिहि, कहेसबन्हिकेनाम ॥११८॥

तुरतबिमानतहाँचलिआवा * दंडकबन जहँ परमसुहावा
कुंभजादिमुनि नायकनाना * गए राम सबके अस्थाना
सकलरिषिन्हसन पाइअसीसा * चित्रकूट आएउ जगदीसा
तहँकरि मुनिन्हकर संतोषा * चला बिमान तहाँ ते चोषा
बहुरिराम जानकिहि देषाई * जमुनाकलिमलहरनिसोहाई
पुनि देषी सुरसरी पुनीता * रामकहाप्रनाम करु सीता
तीरथपति पुनि देषुप्रयागा * निरषतजन्मकोटि अघभागा
देषुपरम पावनि पुनि बेनी * हरनिसोकहरिलोक निसेनी
पुनिदेषुअवधपुरी अतिपावनि * त्रिबिधतापभवरोग नसावनि

दो॰ सीता सहित अवध कहँ, कीन्ह कृपाल प्रनाम ॥
सजल नयन तन पुलकित, पुनिपुनि हरषितराम ॥
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी, हरषित मज्जनकीन्ह ॥
कपिन्हसहितविप्रन्हकहँ, दानाबिबिधबिधिदीन्ह ११९

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई * धरिबटुरूप अवधपुर जाई
भरतहिकुसल हमारिसुनाएहु * समाचारलैतुम्हचलिआएहु
तुरतपवनसुतगवनत भयऊ * तबप्रभु भरद्वाज पहिंगयऊ
नानाबिधिमुनिपूजाकीन्ही * अस्तुतिकरिपुनिआसिषदीन्ही
मुनिपदबंदिजुगलकरजोरी * चढ़िबिमान प्रभुचलेबहोरी

इहां निषाद सुना प्रभुआए * नावनाव कहँलोग बुलाए
सुरसरिनाघिजानतबआयो * उतरेउतट प्रभुआयसुपायो
तब सीता पूजी सुरसरी * बहुप्रकार पुनिचरनन्हिपरी
दीन्हिअसीस हराषिमनगंगा * सुंदरितवअहिवात अभंगा
सुनत गुहाधाएउ प्रेमाकुल * आएउ निकटपरम सुषसंकुल
प्रभुहिसहित बिलोकिबैदेही * परेउअवनितनसुधिनहितेही
प्रीतिपरम विलोकि रघुराई * हराषिउठाइ लियो उरलाई

छं० लियोहृदयलाइकृपानिधान सुजान रायरमापती ॥
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सोकर बीनती ॥
अबकुसलपदपंकज बिलोकिबिरंचिसंकर सेव्यजे ॥
सुषधाम पूरन कामराम नमामि राम नमामिते ॥
सबभाँतिअधमनिषादसोहरिभरतज्यौंउरलायउ ॥
मतिमंद तुलसीदास सोप्रभु मोहबस बिसरायउ ॥
यहरावनारिचरित्र पावनराम पदरति प्रदसदा ॥
कामादिहरबिग्यान करसुरसिद्धमुनिगावहिंमुदा ॥

दो० समरविजय रघुबीर के, चरितजे सुनहिं सुजान ॥
विजयविवेक विभूति नित, तिन्हहिंदेहिं भगवान ॥
यह कलिकाल मलाय तन, मन करिदेषु बिचार ॥
श्रीरघुनाथनामतजि, नाहिनआनअधार १२० ॥

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने
विमल विज्ञान संपादिनी नामषष्ठः

* सोपानः संपूर्ण *

ग्रंथसंख्या १३०४

लंकाकाण्ड ।

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४०३	६	भजसित	भजसिन
	१०	मंताव	मतीव
४०९	२२	जन	जनु
४११	१५	सुपद	सुषद
४१५	१५	धन	धनु
४१९	२२	होत	होइ
	२३	दंढ	दंड
४१८	६	हरि	हर
४२०	१२	एहिविधि	एहिवधि
	१२	जहँजहँ	जहँतहँ
४२३	११	सुधा	मुधा
४२४	१२	जूथ	जूथप
४२५	४	परिघरि	परिघगिरि
	९	कोटि	कोट
४३२	३	मेगनाद	मेघनाद
	९	पूझ	बूझ
४३७	१७	गहिकपि	कहिकपि
	२०	प्रभुपद्र	प्रभुपद
४४२	९	तझ	तझ
४४५	१९	पवन	एनव
४४६	१	टेक	टेकि
	४	सेल	सैल
४४९	१	जानुटेक	जानुटेकि
	५	ककहँपि	कहँकपि
४५१	२	कृपनि	कृपान
	१६	भूप+प्रथम	भूत+प्रमथ
	२१	ब्रह्महि	बहहि
४५२	१९	हँसिर	हँसि
४५३	१५	डारे	डरे
४५४	३	कपति	कंपति
४५५	८	तेसिदिसि	तेदिसि
४५६	१०	अति अंपित	अतिकंपित
	१५	प्रभु	प्रभुहि
४५८	२३	सुत	सूत
४६०	१२	रावनालयो	रावनलियो
४६१	१४	महिनिरे	महिगिरे
४६२	२१	ओई	आई
४६३	५	अनन	अनंग
४६८	९	घन	घनं
	११	कृतभूत	कृतभूप
४६९	११	निजदे	निजदेहिं
	७	जीत्यौ	जीत्यौं
४७२	७	कोहु	करेहु
४७४	९	कर	करे

इति

❀ श्रीः ❀

अथ रामायण उत्तरकाण्ड ।

श्रीगणेशायनमः

❀ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❀

श्लोक—केकीकंठाभनीलंसुरवरविलशद्विप्रपादाब्जचिन्हं । शोभाढ्यं पीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्वदासुप्रसन्नं ॥ पाणौनाराचचापंकपिनिकरजुतंबंधुनासेव्यमानं । नौमीड्यंजानकीशंरघुवरमनिशंपुष्पकारूढरामं ॥१॥ कोशलेंद्रपदकंजमंजुलौकोमलावजमहेशबंदितौ । जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्यमनभृंगसंगिनौ ॥ २ ॥ कुंदइंदुदरगौर सुंदरंअंबिकापतिमभीष्टसिद्धिदं । कारुनीककलकंजलोचनंनौमिशंकरमनंग मोचनं ॥ ३ ॥

दो० रहाएकदिन अवधिकर, अति आरत पुर लोग ॥
जहँतहँ सोचहिं नारिनर, कृसतन रामबियोग ॥
सगुन होहिं सुंदर सकल, मन प्रसंन सबकेर ॥
प्रभु आगवन जनाव जनु, नगर रम्यचहु फेर ॥
कौसल्यादि मातु सब, मन अनंद असहोइ ॥
आएउप्रभु श्रीअनुज जुत, कहनचहतअबकोइ ॥
भरत नयन भुज दक्षिन, फरकत बारहिं बार ॥
जानिसगुन मनहरष अति, लागे करन बिचार ॥

रहेउएकदिनअवधिअधारा ❀ समुझतमनदुषभएउअपारा
कारनकवननाथनहिआएउ ❀ जानिकुटिलकिधोमोहिबिसराएउ
अहहधन्यलछिमनबडभागी ❀ राम पदारबिंद अनुरागी
कपटीकुटिलमोहिप्रभुचीन्हा ❀ तातेनाथ संगनहिं लीन्हा

जौकरनी समुझै प्रभु मोरी * नहिंनिस्तारकलपसतकोरी
जनअवगुनप्रभुमाननकाऊ * दीनबंधु अतिमृदुल सुभाऊ
मोरे जिअ भरोस दृढ सोई * मिलिहहिंरामसगुनसुभहोई
बीते अवधि रहहिंजौं प्राना * अधमकवनजगमोहिसमाना

दो॰ राम बिरह सागर महँ, भरत मगन मन होत ॥
बिप्ररूप धरि पवन सुत, आइ गएउ जनु पोत ॥
बैठे देषि कुसासन, जटा मुकुट कृत गात ॥
रामरामरघुपतिजपत, स्रवतनयनजलजात ॥ १ ॥

देषत हनूमान अति हरषेउ * पुलकगातलोचनजलबरषेउ
मनमहँबहुतभाँतिसुषमानी * बोलेउ स्रवनसुधासमबानी
जासुबिरह सोचहु दिनराती * रटहुनिरंतर गुनगन पाँती
रघुकुलतिलकसुजनसुषदाता * आएउकुसलदेवमुनित्राता
रिपुरनजीतिसुजससुरगावत * सीतासहितअनुजप्रभुआवत
सुनत बचन बिसरे सबदूषा * तृषावंत जिमि पाइपियूषा
कोतुम्ह तात कहाँते आए * मोहिपरमप्रिय बचनसुनाए
मारुत सुतमैं कपिहनुमाना * नाममोरसुनु कृपा निधाना
दीनबंधु रघुपति करकिंकर * सुनतभरत भेंटेउठि सादर
मिलतप्रेमनहिंहृदयसमाता * नयनस्रवतजलपुलकितगाता
कपितवदरससकल दुषबीते * मिलेआजमोहि रामपिरीते
बार बार बूझी कुसलाता * तोकहंदेउँ काह सुनु भ्राता
यह संदेस सरिस जगमाहीं * करिबिचारदेषेउँकछु नाहीं
नाहिन तात उरिनमैं तोही * अबप्रभु चरितसुनावहुमोही
तब हनुमंत नाइ पद माथा * कहेसकलरघुपतिगुन गाथा

कहुकपिकबहुँ कृपालुगुसाँई ❋ सुमिरहिंमोहि दासकी नाँई
छं॰ निजदासज्योंरघुबंसभूषनकबहुँ ममसुमिरनकर्यो ॥
सुनिभरतबचनबिनीतअतिकपिपुलकितनचरनन्हिपर्यो
रघुबीरनिजमुषजासुगुनगनकहत अगजग नाथजो ॥
काहेनहोइ बिनीत परम पुनीत सदगुन सिंधुसो ॥
दो॰ रामप्रान प्रियनाथ तुम्ह, सत्य बचनममतात ॥
पुनिपुनि मिलतभरतसुनि, हरषन हृदय समात ॥
सो॰ भरतचरनसिरनाइ, तुरतगएउ कपिरामपहिं ॥
कहीकुसलसबजाइ, हरषिचलेउप्रभुजानचढ़ि ॥ २ ॥
हरषि भरतकोसलपुर आए ❋ समाचार सबगुरहि सुनाए
पुनि मंदिर महँ बातजनाई ❋ आवत नगर कुसल रघुराई
सुनतसकलजननी उठिधाई ❋ कहिप्रभुकुसलभरतसमुझाई
समाचार पुरबासिन्ह पाए ❋ नरअरुनारिहरषि सभधाए
दधिदुर्बा रोचन फलफूला ❋ नव तुलसीदल मंगल मूला
भरिभरिहेमथारबर भामिनि ❋ गावतचली सिंधुरगामिनि
जेजैसेहिंतैसेहिं उठि धावहिं ❋ बालबृद्ध कहँ संगन लावहिं
एक एकन्हकहँ बूझहिभाई ❋ तुम्ह देषे दयाल रघुराई
अवधपुरी प्रभुआवत जानी ❋ भई सकल सोभाकै षानी
बहइसुहावन त्रिबिधसमीरा ❋ भइसरजूअति निर्मल नीरा
दो॰ हरषित गुर परिजनअनुज, भूसुरबृंद समेत ॥
चलेभरतमन प्रेम अति, सन्मुष कृपा निकेत ॥
बहुतकचढ़ीअटारिन्हि, निरषहिं गगन बिमान ॥
देषि मधुर सुर हरषित, करहिं, सुमंगल गान ॥

राकाससि रघुपति पुर सिंधुदेषि हरषान ॥
बढ्योकोलाहलकरतजनु नारितरंगसमान ॥ ३ ॥

इहाँ भानुकुलकमलदिवाकर * कपिन्हदेषावतनगर मनोहर
सुनु कपीस अंगद लंकेसा * पावनपुरी रुचिर यह देसा
जद्यपि सब बैकुंठ बषाना * बेदपुरान बिदित जगजाना
अवधपुरीसमाप्रियनहिंसोऊ * यहप्रसंग जानइ कोउकोऊ
जन्म भूमिममपुरीसुहावनि * उत्तरदिसिबहसरजू पावनि
जामज्जनते बिनहिप्रयासा * ममसमीपनर पावहिं बासा
अतिप्रियमोहि इहांकेबासी * मम धामदापुरी सुषरासी
हरषेसबकपि सुनि प्रभुबानी * धन्यअवधजो राम बषानी

दो॰ आवत देषि लोग सब कृपासिंधु भगवान ॥
नगर निकट प्रभुप्रेरेउ, उतरेउ भूमिबिमान ॥
उतरिकहेउप्रभु पुष्पकहिं, तुम्हकुबेर पहिंजाहु ॥
प्रेरितरामचलेउसो, हरष बिरहअतिताहु ॥ ४ ॥

आए भरत संग सब लोगा * कृसतनश्री रघुबीर बियोगा
बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक * देषेप्रभुमहिधरि धनुसायक
धाइधरे गुर चरन सरोरुह * अनुजसहित अतिपुलकतनोरुह
भेटिकुसल बूझी मुनिराया * हमरेकुसल तुम्हारिहिदाया
सकलद्विजन्हमिलि नाएउमाथा * धर्मधुरंधर रघुकुल नाथा
गहेभरतपुनि प्रभुपद पंकज * नमत जिन्हहिसुरमुनिसंकरअज
परेभूमि नहि उठत उठाए * बलकरि कृपासिंधु उरलाए
स्यामल गात रोमभये ठाढे * नवराजीव नयन जल बाढे

छं० राजीवलोचनस्रवतजलतनललितपुलकावलिबनी ॥
अतिप्रेमहृदयलगाइअनुजहिमिलेप्रभुत्रिभुअनधनी॥
प्रभुमिलतअनुजहिसोहमोपहिंजातिनहिं उपमाकही॥
जनुप्रेम अरुसिंगारतन धरिमिले बरसुषमालही ॥
बूझतकृपानिधिकुमलभरतहिबचन बेगिन आवई ॥
सुनुसिवासोसुषबचन मनतेंभिन्नजानि जोपावई ॥
अबकुसलकोसलनाथआरतजानि जनदरसनदियो ॥
बूडतबिरहबारीसकृपानिधान मोहिकरगहिलियो ॥

दो० पुनिप्रभुहरषिसत्रुहन, भेंटेहृदय लगाय ।
लछिमन भरतामिलेतब, परमप्रेमदोउभाइ ॥ ५ ॥

भरतानुजलछिमनपुनिभेटे ❋ दुसह बिरह संभव दुषमेटे
सीताचरन भरत सिरनावा ❋ अनुजसमेत परम सुषपावा
प्रभुबिलोकि हरषे पुरबासी ❋ जनितबियोगबिपतिसबनासी
प्रेमातुर सब लोग निहारी ❋ कौतुक कीन्ह कृपालषरारी
अमितिरूपप्रगटेतेहिकाला ❋ जथाजोगमिलेसबहिकृपाला
कृपादृष्टिरघुबीर बिलोकी ❋ किएसकलनरनारिबिसोकी
छनमहिसबहिमिलेभगवाना ❋ उमामरम यह काहुनजाना
एहिबिधिसबहिसुषीकरिरामा ❋ आगे चले सीलगुन धामा
कौसल्यादि मातु सब धाई ❋ निरषिबछजनु धेनु लवाई

छं० जनुधेनुबालकबच्छतजिगृहचरनबनपरबसगईं ॥
दिनअंतपुररुष स्रवतथनहुँकारकरि धावतभईं ॥
अतिप्रेमप्रभुसबमातुभेटीबचनमृदुबहुबिधिकहे ॥
गइबिषमबिपतिबियोगभवातिन्हहरषसुषअगनितलहे

दो० भेंटेउ तनय सुमित्रा, राम चरन रतिजानि ॥
रामहिं मिलत कइकई, हृदय बहुत सकुचानि ॥
लछिमनसब मातन्हमिलि, हरषेआसिष पाइ ॥
कैकइ कहँपुनिपुनिमिले, मनकर छोभन जाइ ॥ ६ ॥

सासुन्हसबनि मिली बैदेही * चरनन्हिलागिहरषअतितेही
देहिं असीसबूझि कुसलाता * होइअचलतुम्हारअहिवाता
सबरघुपतिमुषकमलबिलोकहिं * मंगलजानिनयनजलरोकहिं
कनकथार आरती उतारहिं * बारबार प्रभुगात निहारहिं
नानाभांति निछावरिकरहीं * परमानंद हरष उर भरहीं
कौसल्यापुनिपुनिरघुबीरहि * चितवतिपाकृसिंधुरनधीरहि
हृदयबिचारति बारहि बारा * कवनभांतिलंकापति मारा
अतिसुकुमार जुगुल मेरेबारे * निसिचरसुभटमहाबलभारे

दो० लछिमन अरुसीतासहित प्रभुहि बिलोकति मातु ॥
परमानंद मगन मन, पुनिपुनिपुलकित गातु ॥ ७ ॥

लंकापति कपीस नलनीला * जामवंत अगद सुभसीला
हनुमदादि सब बानर बीरा * धरे मनोहर मनुज सरीरा
भरत सनेह सीलब्रत नेमा * सादरसबबरनहिं अतिप्रेमा
देषि नगर बासिन्हकै रीती * सकलसराहहिं प्रभुपदप्रीती
पुनिरघुपतिसबसषाबोलाए * मुनिपदलागहुसकलसिषाये
गुरबसिष्ट कुलपूज्य हमारे * इन्हकी कृपा दनुजरन मारे
एसब सषा सुनहु मुनि मेरे * भए समर सागर कहँ बेरे
ममहितलागिजन्मइन्हहारे * भरतहुतेमोहिअधिकपियारे
सुनिप्रभुबचन मगनसबभए * निमिषनिमिषउपजतसुषनए

दो॰ कौसल्या के चरनन्हि, पुनितिन्ह नाएउ माथ ॥
आसिष दीन्हेहरषितुम्ह, प्रिय ममजिमिरघुनाथ ॥
सुमन वृष्टि नभ संकुल, भवनचले सुष कंद ॥
चढे अटारिन्ह देषाहिं, नगर नारि नर वृंद ॥ ८ ॥

कंचन कलसबिचित्रसवारे ※ सबहिधरेसजिनिजनिजद्वारे
बंदनवार पताका केतू ※ सबन्हि बनाए मंगल हेतू
बीथी सकल सुगंध सिचाई ※ गजमनिरचि बहुचौकपुराई
नाना भाँति सुमंगल साजे ※ हरषिनगर निसान बहुबाजे
जहँतहँनारिनिछावरिकरहीं ※ देहिंअसीस हरष उर भरहीं
कंचन थार आरती नाना ※ जुबतीसजेकरहिं सुभगाना
करहिं आरतीआरति हरके ※ रघुकुलकमल बिपनदिनकरके
पुर सोभा संपति कल्याना ※ निगमसेष सारदा बषाना
तेउयहचारितदेषिठगिरहहीं ※ उमा तासुगुननर किमिकहहीं

दो॰ नारिकुमुदिनीअवधसर, रघुपतिबिरहादिनेस ।
अस्तभएबिकसतभईं, निरषिराम राकेस ॥
होहिंसगुनसुभ बिबिधिबिधि, बाजहिंगगननिसान ।
पुरनरनारिसनाथकरि, भवनचले भगवान ॥ ९ ॥

प्रभुजानी कैकई लजानी ※ प्रथम तासुगृहगए भवानी
ताहिप्रबोधिबहुतसुषदीन्हा ※ पुनिनिजभवनगवनहरिकीन्हा
कृपासिंधु जबमंदिर गए ※ पुरनरनारि सुषीसब भए
गुरबसिष्ट द्विज लिए बोलाई ※ आजसुघरी सुदिन समुदाई
सबद्विजदेहुहरषिअनुसासन ※ रामचंद्र बैठहिं सिंघासन
मुनिबसिष्ट केबचन सुहाए ※ सुनतसकलबिप्रन्हअतिभाए

कहहिंबचनमृदु बिप्रअनेका ❀ जगअभिरामरामअभिषेका
अबमुनिबरबिलंबनहिंकीजे ❀ महाराजकहँ तिलककरीजे

दो० तबमुनिकहेउसुमंत्रसन, सुनतचलेउहरषाइ ॥
रथअनेकबहुबाजिगज, तुरतसँवारेजाइ ॥
जहँतहँधावनपठइपुनि, मंगलद्रब्यमगाइ ॥
हरषसमेतबसिष्टपद, पुनिसिरनाएउआइ ॥ १० ॥

अवधपुरी अतिरुचिर बनाई ❀ देवन्हसुमन वृष्टिझरलाई
रामकहा सेवकन्ह बुलाई ❀ प्रथमसषन्हअन्हवावहुजाई
सुनतबचनजहँतहँ जनधाए ❀ सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए
पुनिकरुनानिधिभरतहँकारे ❀ निज कररामजटा निरुआरे
अन्हवाएप्रभु तीनिउ भाई ❀ भगतबछल कृपाल रघुराई
भरत भाग्यप्रभु कोमलताई ❀ सेषकोटिसतसकहिं नगाई
पुनिनिज जटा रामबिबराए ❀ गुर अनुसासन मागिनहाए
करिमज्जन प्रभु भूषन साजे ❀ अंगअनंग कोटिछबिलाजे

दो० सासुन्ह सादर जानकिहि, मज्जन तुरत कराइ ॥
दिब्य बसन बर भूषन, अँग अँग सजे बनाइ ॥
रामबाम दिसि सोभति, रमारूप गुन षानि ॥
देषिमातुसब हरषीं, जन्म सुफल निजजानि ॥
सुनुषगेस तेहिं अवसर, ब्रह्मा सिव मुनिवृंद ॥
चढिबिमान आएसब, सुरदेषनसुषकंद ॥ ११ ॥

प्रभुबिलोकिमुनिमनअनुरागा ❀ तुरतदिब्य सिंघासन मागा
रबिसमतेजसो बरनिनजाई ❀ बैठेरामद्विजन्ह सिरनाई
जनकसुता समेत रघुराई ❀ पेषिप्रहरषेमुनि समुदाई

बेदमंत्र तबद्विजन उचारे * नभसुरमुनिजयजयतिपुकारे
प्रथमतिलकबसिष्टमुनिकीन्हा * पुनिसबबिप्रन्हआयसुदीन्हा
सुतबिलोकि हरषीमहँतारी * बारबार आरती उतारी
बिप्रन्हदानबिबिधिबिधिदीन्हे * जाचकसकलअजाचककीन्हे
सिंघासनपर त्रिभुवन साँई * देषिसुरन्ह दुंदुभी बजाई

छं० नभदुंदुभी बाजहिं बिपुल गंधर्ब किन्नर गावहीं ॥
नाचहिंअपछरा वृंदपरमानंद सुर मुनिपावहीं ॥
भरतादिअनुज बिभीषनाँगदहनुमदादिसमेतते ॥
गहेछत्रचामरब्यजनधनुअसिचर्मसक्ति बिराजते ॥
श्रीसहित दिनकर बसभूषन कामबहुछबि सोहई ॥
नवअंबुधर बरगात अंबर पीत सुर मनमोहई ॥
मुकुटाँगदादिबिचित्रभूषन अंगअंगन्हिप्रतिसजे ॥
अंभोजनयनबिसालउरभुज धन्यनरनिरषंतिजे ॥

दो० वह सोभा समाज सुष, कहतुन बनै षगेस ॥
बरनै सारद सेषश्रुति, सोरस जान महेस ॥
भिन्नभिन्नअस्तुतिकरि, गएसुरनिजनिजधाम ॥
बंदी बेषबेदतब, आए जहँ श्रीराम ॥
प्रभ सर्बज्ञ कीन्ह अति, आदर क्रिपा निधान ॥
लषे उनकाहू मरमकछु, लगेकरनगुनगान ॥ १२ ॥

छं० जयसगुन निर्गुन रूपरूप अनूप भूप सिरोमने ॥
दसकंधरादिप्रचंडनिसिचर प्रबलषलभुजबलहने ॥
अवतार नरसंसार भारबिभंजि दारुन दुषदहे ॥
जयप्रनतपाल दयाल प्रभुसंजुक्त सक्ति नाममहे ॥

तवबिषममायाबसमुरासुर नागनर अगजगहरे ॥
भवपंथभ्रमतअमित दिवसनिसिकालकर्मगुननिभरे॥
जेनाथकरि करुना बिलोके त्रिबिधि दुषतेनिर्बहे ॥
भवषेद छेदनदक्षहमकह रक्षराम नमामहे ॥
जेज्ञानमान बिमत्ततवभव हरनिभक्तिन आदरी ॥
तेपाइ सुरदुर्लभ पदादपि परतहम देषत हरी ॥
बिस्वासकरि सब आसपरिहरिदासतब जे होइ रहे ॥
जपिनामतब बिनुस्रमतरहिं भवनाथ सोस्मरामहे ॥
जेचरनसिवअजपूज्यरजसुभपरसिमुनिपतिनीतरी ॥
नषनिर्गता मुनिबंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ॥
ध्वजकुलिसअंकुसकंजजुतबनफिरतकंटककिनलहे ॥
पदकंज द्वंद्वमुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ॥
अब्यक्तमूलमनादितरुत्वचचारि निगमागमभने ॥
षटकंध साषा पंचबीस अनेक पर्न सुमन घने ॥
फलजुगलबिधिकटुमधुरबेलिअकेलिजेहिआश्रितरहे॥
पल्लवतफूलत नवलनित संसार बिटप नमामहे ॥
जेब्रह्म अजमद्वैतमनुभव गम्यमनपर ध्यावहीं ॥
तेकहहुजानहुनाथहमतबसगुनजसनित गावहीं ॥
करुनायतन प्रभुसदगुनाकरदेव यहबर मागहीं ॥
मनबचनकर्मबिकारतजि तवचरनहम अनुरागहीं ॥

दो० सबके देषत बेदन, बिनती कीन्हि उदार ॥
अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार ॥

बैनतेय सुनु संभु तब, आए जहँ रघुबीर ॥
बिनय करत गदगद गिरा, पूरित पुलकसरीर ॥१३॥

छन्द ।

जयराम रमारमनं समनं । भवतापभयाकुलपाहिजनं ॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो । सरनागतमागतपाहिप्रभो ॥
दससीसबिनासनबीसभुजा । कृतदूरिमहामहि भूरिरुजा ॥
रजनीचर बृंद पतंग रहे । सरपावक तेज प्रचंड दहे ॥
महिमंडल मंडन चारुतरं । धृतसायक चाप निषंगवरं ॥
मदमोह महा ममतारजनी । तमपुंज दिवाकर तेजअनी ॥
मनजातकिरातनिपातकिए । मृगलोगकुभोगसरे न हिए ॥
हतिनाथअनाथनिपाहिहरे । बिषयाबन पाँवर भूलि परे ॥
बहुरोगबियोगन्हि लोगहए । भवदंघ्रि निरादरके फलए ॥
भवसिंधु अगाध परे नरते । पदपंकज प्रेमन जे करते ॥
अतिदीनमलीनदुखीनितहीं । जिन्हकेपदपंकजप्रीतिनहीं ॥
अवलंबभवंत कथाजिन्हके । प्रियसंतअनंतसदातिन्हके ॥
नहिरागन रोषन मानमुदा । तिन्हकेसमबैभववा बिपदा ॥
एहिते तब सेवक होत मुदा । मुनित्यागतजोगभरोससदा ॥
करिप्रेमनिरंतर नेम लिये । पद पंकज सेवतसुद्ध हिये ॥
सम मानि निरादर आदरही । सबसंतसुखी बिचरंतिमही ॥
मुनिमानस पंकजभृंगभजे । रघुबीर महारन धीर अजे ॥
तवनामजपामिनमामिहरी । भवरोगमहागद मानअरी ॥
गुनसील कृपा परमा यतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनंद निकंदय द्वंदघनं । महिपालबिलोकयदीनजनं ॥

दो॰ बारबार बर मागौं, हरषि देहु श्रीरंग।
पदसरोज अनपायनी, भगतिसदासतसंग ॥
बरनिउमापतिरामगुन, हरषिगएकैलास।
तबप्रभुकपिन्हदिवाए, सबबिधिसुषप्रदबास ॥ १४ ॥

सुनुषगपतियहकथापावनी * त्रिबिधतापभवभय दावनी
महाराजकरसुभ अभिषेका * सुनतलहहिंनरबिरतिबिबेका
जेसकामनरसुनहिंजेगावहिं * सुषसंपतिनानाबिधिपावहिं
सुरदुर्लभ सुषकरि जगमाहीं * अंतकाल रघुपति पुरजाहीं
सुनहिंबिमुक्तबिरतिअरुबिषई * लहहिंभगतिगतिसंपतिनितई
षगपति रामकथा मैं बरनी * स्वमतिबिलासत्रासदुषहरनी
बिरतिबिबेकभगतिदृढ़करनी * मोहनदी कहँ सुंदर तरनी
नित नवमंगल कौसलपुरी * हरषित रहहिं लोग सबकुरी
नितनइप्रीति रामपदपंकज * सबकेजिन्हहिनमतसिवमुनिअज
मंगन बहुप्रकार पहिराये * द्विजन्हदाननानाबिधिपाए

दो॰ ब्रह्मानंद मगनकपि, सबके प्रभुपद प्रीति ॥
जातन जानेदिवस तिन्ह, गए मासषट बीति १५ ॥

बिसरे गृहसपनेहुसुधिनाहीं * जिमिपरद्रोह संतमनमाहीं
तबरघुपति सबसषा बोलाए * आइसबन्हि सादरसिरनाये
परम प्रीति समीप बैठारे * भगतसुषद मृदुबचन उचारे
तुम्हअतिकीन्हिमोरिसेवकाई * मुषपरकेहिबिधि करौंबड़ाई
तातेमोहितुम्हअतिप्रियलागे * ममहितलागिभवनसुषत्यागे
अनुजराज संपति बैदेही * देह गेह परिवार सनेही
सबममप्रियनहिंतुम्हहिसमाना * मृषानकहहुँ मोर यह बाना

सबके प्रिय सेवक यहनीती * मोरे अधिक दासपर प्रीती

दो० अवगृह जाहुसषा सब, भजेहु मोहि दृढ नेम ॥
　　सदा सर्वगत सर्बहित, जानिकरेहु अतिप्रेम ॥ १६ ॥

सुनिप्रभुबचनमगनसब भए * को हमकहाँ बिसरितनगए
एकटकरहे जोरि करआगे * सकहिंनकछु कहिअतिअनुरागे
परम प्रेम तिन्हकरप्रभुदेषा * कहाबिबिध बिधि ज्ञानबिसेषा
प्रभुसन्मुष कछु कहननपारहिं * पुनिपुनिचरन सरोजनिहारहिं
तबप्रभुभूषन बसन मगाए * नाना रंग अनूप सुहाए
सुग्रीवहिं प्रथमहि पहिराए * बसनभरतनिजहाथ बनाए
प्रभुप्रेरित,लछिमन पहिराए * लंकापति रघुपति मनभाए
अंगद बैठरहा नहिं डोला * प्रीतिदेषि प्रभुताहिन बोला

दो० जामवंत नीलादि सब, पहिराए रघुनाथ ॥
　　हिएधरि रामरूप सब, चले नाइ पद माथ ॥
　　तबअंगद उठिनाइ सिर, सजलनयनकरजोरि ॥
　　अतिबिनीत बोलेउबचन, मनहुप्रेमरसबोरि ॥ १७ ॥

सुनुसर्बज्ञ कृपा सुषसिंधो * दीन दयाकरि आरत बंधो
मरती बेरनाथ मोहि बाली * गएउ तुम्हारे कोछे घाली
असरनसरन बिरद संभारी * मोहिजनितजहु भगतहितकारी
मोरेतुम्ह प्रभुगुर पितुमाता * जाउँकहाँताजिपदजलजाता
तुम्हहिबिचारि कहहुनरनाहा * प्रभुतजि भवन काजममकाहा
बालकज्ञान बुद्धि बलहीना * राषहुसरन नाथ जनदीना
नीचिटहलगृहकेसबकरिहों * पदपंकज बिलोकि भवतरिहों
असकहिचरनपरेउप्रभुपाही * अबजनिनाथकहहुगृहजाही

दो० अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुना सीव ॥
प्रभु उठाइ उर लाएउ, सजल नयन राजीव ॥
निज उरमाल बसन मनि. बालि तनय पहिराइ ॥
बिदाकीन्हिभगवानतब, बहुप्रकार समुझाइ ॥ १८ ॥

भरतअनुज सौमित्रिसमेता ❋ पठवनचले भगतकृतचेता
अंगद हृदयप्रेम नहिं थोरा ❋ फिरिफिरिचितवरामकीओरा
बार बार कर दंड प्रनामा ❋ मनअसरहनकहहिं मोहिरामा
रामबिलोकनिबोलनिचलनी ❋ सुमिरिसुमिरिसोचतिहँसिमिलनी
प्रभुरुषदेषिबिनय बहुभाषी ❋ चलेउ हृदयपद पंकजराषी
अतिआदरसबकपिपहुचाए ❋ भाइन्हसहितभरतपुनिआए
तबसुग्रीव चरनगहि नाना ❋ भाँतिबिनयकीन्हेहनुमाना
दिनदसकरिरघुपतिपदसेवा ❋ पुनितब चरन देषिहौं देवा
पुन्यपुंज तुम्ह पवनकुमारा ❋ सेवहु जाइ क्रिपा आगारा
असकहिकपिसबचलेतुरंता ❋ अंगद कहै सुनहु हनुमंता

दो० कहेहु दंडवत प्रभुसें, तुम्हहिंकहौं कर जोरि ॥
बार बार रघुनायकहि, सुरति कराएहु मोरि ॥
असकहिचलेउ बालिसुत. फिरिआएउ हनुमंत ॥
तासुप्रीति प्रभुसन कही, मगन भए भगवंत ॥
कुलिसहुचाहि कठोरअति, कोमलकुसुमहुचाहि ॥
चित्तषगेस राम कर, समुझिपरै कहुकाहि ॥ १९ ॥

पुनिकृपालालियो बोलिनिषादा ❋ दीन्हे भूषन बसन प्रसादा
जाहुभवनममसुमिरनकरेहू ❋ मनक्रम बचनधर्मअनुसरेहू
तुम्हममसषाभरतसम भ्राता ❋ सदारहेउ पुर आवतजाता

बचनसुनतउपजा सुषभारी * परेउचरन भरिलोचन बारी
चरननलिन उरधरिगृहआवा * प्रभुसुभाउपरिजनन्हिसुनावा
रघुपतिचरित देषि पुरबासी * पुनिपुनिकहहिंधन्य सुषरासी
राम राज बैठे त्रैलोका * हरषित भएगएसब सोका
बयरन कर काहसन कोई * राम प्रताप बिषमता षोई
दो॰ बरनास्त्रम निजनिज धरम, निरत बेदपथ लोग।
चलहिंसदापावहिं सुषहिं, नहिंभयसोकनरोग ॥२०॥
देहिकदैबिक भौतिक तापा * रामराजनहिं काहुहिब्यापा
सबनर करहिं परस्पर प्रीती * चलहिंस्वधर्मनिरतश्रुतिनीति
चारिउ चरनधर्म जगमाहीं * पूरिरहा सपनेहुँ अघनाहीं
राम भगतिरतनरअरुनारी * सकलपरमगतिकेअधिकारी
अल्पमृत्यु नहिंकवनिउपीरा * सबसुंदर सबबिरुज सरीरा
नहिंदरिद्रकोउदुषीन दीना * नहिंकोउअबुधनलक्षनहीना
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी * नर अरुनारि चतुरसब गुनी
सबगुनज्ञ पंडित सबज्ञानी * सबकृतज्ञ नहिंकपटसयानी
दो॰ राम राज नभगेससुनु, सचराचर जगमाहिं ॥
कालकर्म सुभाव गुन, कृतदुष काहुहि नाहिं ॥२१॥
भूमि सप्त सागर मेषला * एकभूप रघुपति कोसला
भुअनअनेक रोमप्रतिजासू * यहप्रभुता कछुबहुतन तासू
सो महिमा समुझत प्रभुकेरी * यह बरनतहीनता घनेरी
सोउमहिमाषगेसजिन्हजानी * फिरियह चरिततिन्हहुरतिमानी
सोउजानेकर फलयहलीला * कहहिंमहामुनिबरदमसीला
राम राज करसुष संपदा * बरानिन सकैफनीस सारदा

सब उदार सब परउपकारी * बिप्रचरन सेवक नरनारी
एक नारिव्रत रतसबझारी * तेमनबचक्रमपतिहितकारी
दो० दंडजतिन्हकर भेदजहँ, नर्त्तकनृत्य समाज मा०पा०२७
जीतहुमनहिसुनिअअस, रामचन्द्र के राज ॥ २२ ॥
फूलहिंफरहिंसदातरुकानन * रहहिंएकसँग गज पंचानन
षगमृग सहज बयर बिसराई * सबन्हिपरस्पर प्रीति बढाई
कूंजहिंषगमृग नाना वृंदा * अभयचरहिंबनकरहिंअनंदा
सीतल सुरभि पवनबहमंदा * गुंजतअलिलै चलि मकरंदा
लताबिटप मागेमधु चवहीं * मनभावतो धेनुपय स्रवहीं
ससिसंपन्न सदारह धरनी * त्रेताभइकृत जुगकै करनी
प्रगटीगिरिन्हविविधिमनिपानी * जगदात्मा भूपजिय जानी
सरिता सकल बहहिंबरबारी * सीतलअमलस्वादसुषकारी
सागर निज मरजादा रहहीं * डारहिंरत्न तटन्हिनरलहहीं
सरसिजसंकुलसकलतडागा * अतिप्रसन्नदसदिसाबिभागा
दो० बिधुमहि पूरमयूषन्हि, रबितप जेतनेहिं काज ॥
मागे बारिद देहिं जल, रामचंद्र के राज ॥ २३ ॥
कोटिन्हबाजिमेधप्रभुकीन्हे * दानअनेकद्विजन्हकहँदीन्हे
श्रुतिपथ पालक धर्मधुरंधर * गुनातीत अरुभोग पुरंदर
पति अनुकूल सदारहसीता * सोभाषानिसुसील बिनीता
जानति कृपासिंधु प्रभुताई * सेवति चरनकमल मनलाई
जद्यपि गृहसेवक सेवकिनी * बिपुलसकल सेवाबिधिगुनी
निजकरगृह परिचरजाकरई * रामचंद्र आयसु अनुसरई
जेहिबिधि कृपासिंधुसुषमानइ * सोइकरश्रीसेवा बिधिजानई

कौसल्यादि सासुगृह माहीं * सेवइसबन्हि मानमदनाहीं
उमा रमा ब्रह्मानि बंदिता * जगदंबा संतत मनिंदिता
दो॰ जासु कृपा कटाक्ष सुर, चाहत चितवन सोइ ॥
रामपदारबिंदरति, करतिसुभावहि षोइ ॥ २४ ॥
सेवहिं सानुकूल सब भाई * रामचरनरतिअतिअधिकाई
प्रभुमुषकमलबिलोकतरहहीं * कबहुंकृपालहमहिकछु कहहीं
राम करहिं भ्रातन्हपरप्रीती * नानाभाँति सिषावहिंनीती
हरषित रहहिं नगरकेलोगा * करहिंसकलसुरदुर्लभ भोगा
अहनिसिबिधिहिमनावतरहहीं * श्रीरघुबीर चरनरति चहहीं
दुइसुत सुंदर सीता जाए * लवकुस बेद पुरानन्ह गाए
दोउ बिजईबिनईगुन मंदिर * हरिप्रतिबिंबमनहुअतिसुंदर
दुइदुइ सुतसब भ्रातन्ह केरे * भएरूप गुनसील घनेरे
दो॰ ज्ञानगिरा गोतीत अज, माया मन गुनपार ॥
सोइसच्चिदानंदघन, करनर चरित उदार ॥ २५ ॥
प्रातकाल सरजूकरिमज्जन * बैठहिंसभासंगद्विजसज्जन
बेद पुरान बसिष्ट बषानहिं * सुनहिंरामजद्यपिसबजानहिं
अनुजन्हसंजुतभोजनकरहीं * देषिसकलजननीसुष भरहीं
भरत सत्रुहन दोनौ भाई * सहितपवनसुत उपवनजाई
बूझहिं बैठि राम गुनगाहा * कहहनुमानसुमतिअवगाहा
सुनतबिमलगुनअतिसुषपावहिं * बहुरिबहुरिकरिबिनयकहावहिं
सबके गृहगृह होहिं पुराना * रामचरितपावनबिधिनाना
नरअरुनारिरामगुन गानहिं * करहिंदिवसनिसिजातनजानहिं
दो॰ अवध पुरी बासिन्ह कर, सुष संपदा समाज ॥
सहससेषनहिंकहिसकहिं, जहंनृपराजबिराज २६ ॥

नारदादि सनकादि मुनीसा * दरसन लागि कोसलाधीसा
दिनप्रतिसकल अयोध्याआवहिं * देषिनगर बिरागबिसरावहिं
जातरूपमनिरचित अटारी * नाना रंग रुचिर गचढारी
पुरचहुँ पास कोटअतिसुंदर * रचे कँगूरा रंग रंगबर
नवग्रहनिकर अनीकबनाई * जनुघेरी अमरावति आई
महिबहु रंगरचितगचकाँचा * जोबिलोकिमुनिवरमननाँचा
धवलधाम ऊपर नभ चुंबत * कलसमनहुँरबिससिदुतिनिंदत
बहुमनिरचितझरोषा भ्राजहिं * गृहगृहप्रतिमनिदीपबिराजहिं
छं० मनिदीप राजहिं भवनभ्राजहिं देहरीबिद्रुमरची ॥
मनिषंभभीतिबिरंचिबिरचीकनकमनिमरकतषची ॥
सुंदरमनोहर मंदिरायतअजिररुचिफटिकन्हिरचे ॥
प्रति द्वारद्वार कपाटपुरट बनाइबहु बज्रन्हिषचे ॥
दो० चारु चित्र साला गृह, गृहप्रति लिषे बनाइ ॥
रामचरितजेनिरषमुनि, तेमनलेहिंचोराइ ॥
सुमन बाटिकासबहिं लगाई * बिबिधिभाँतिकरि जतनबनाई
लताललित बहुजाति सुहाई * फूलहिंसदा बसंतकी नाँई
गुंजत मधुकरमुषर मनोहर * मारुतत्रिबिधिसदाबहसुंदर
नानाषगबालकन्हिजिआए * बोलतमधुर उडात सुहाए
मोरहंस सारस पारावत * भवननिपरसोभाअतिपावत
जहँतहँदेषहिं निजपरिछाहीं * बहुबिधिकूजहिंनृत्यकराहीं
सुकसारिका पढावहिंबालक * कहहुरामरघुपतिजनपालक
राजदुआरसकलबिधि चारू * बीथी चौहट रुचिर बजारू
छं० बाजार रुचिर न बनैबरनत बस्तुबिनुगथ पाइए ॥
जहँभूपरमानिवास तहँकीसंपदा किमिगाइए ॥

बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुकुबेरते ॥
सबसुषी सबसच्चरित सुंदरनारिनर सिसु जरठजे ॥
दो० उत्तरदिसि सरजूबह, निर्मल जल गंभीर ॥
बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंकनहिं तीर ॥ २८ ॥
दूरि फराक रुचिरसो घाटा * जहँजलपिअहिं बाजिगजठाटा
पनिघट परममनोहरनाना * तहाँनपुरुषकरहिं अस्नाना
राजघाट सबबिधि सुंदरबर * मज्जहितहाँबरनचारिउनर
तीर तीर देवन्हके मंदिर * चहुँदिसितिन्हके उपबनसुंदर
कहुँकहुँ सरितातीर उदासी * बसहिंज्ञानरतमुनिसन्यासी
तीर तीर तुलसिका सुहाई * बृंद बृंद बहुमुनिन्ह लगाई
पुरसोभाकछुबरनि न जाई * बाहेरनगर परम रुचिराई
देषतपुरी अषिल अघभागा * बन उपबन बापिकातडागा
छं० बापी तडाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं ॥
सोपान सुंदर नीर निर्मलदेषि सुरमुनिमोहहीं ॥
बहुरंग कंजअनेक षगकूजहिं मधुप गुंजारहीं ॥
आराम रम्य पिकादि षगरवजनुपथिक हंकारहीं ॥
दो० रमानाथ जहँ राजा, सो पुर बरनि किजाइ ॥
अनिमादिक सुषसंपदा, रहीअवध सबछाइ २९ ॥
जहँतहँनररघुपतिगुन गावहिं * बैठिपरसपर इहै सिषावहिं
भजहुप्रनतप्रातिपालकरामहिं * सोभासील रूपगुन धामहिं
जलजबिलोचनस्यामलगातहि * पलकनयनइवसेवकत्रातहि
धृत सररुचिर चापतुनीरहि * संतकंजबनरबि रनधीरहि
कालकरालब्यालषगराजहि * नमतरामअकाम ममताजहि

लोभमोहमृगजूथकिरातहि * मनसिजकरिहरिजनसुषदातहि
संसयसोकनिविड़तमभानुहि * दनुजगहनघनदहनकृसानुहि
जनकसुता समेतरघुवीरहि * कसनभजहुभंजनभवभीरहि
वहुवासनामसकहिमरासिहि * सदाएकरसअजअविनासिहि
सुनिरंजनभंजनमहिभारहि * तुलसिदासकेप्रभुहि उदारहि
दो॰ एहिविधि नगरनारिनर, करहिंराम गुनगान ॥
सानुकूल सबपर रहहिं, संतत कृपानिधान ३० ॥
जबते राम प्रताप षगेसा * उदितभए उअतिप्रबलदिनेसा
पूरिप्रकास रहेउ तिहुंलोका * बहुतन्हसुषबहुतनमनसोका
जिन्हहिसोकतेकहौंवषानी * प्रथमअविद्यानिसानसानी
अघउलूकजहंतहाँ लुकाने * काम क्रोधकैरव सकुचाने
विविधिकर्मगुनकालसुभाऊ * एचकोर सुषलहिंन काऊ
मत्सर मानमोह मदचोरा * इन्हकरहुंनरनकवनिहुँओरा
धरम तड़ागज्ञान विज्ञाना * एपंकज विकसे विधिनाना
सुषसंतोष विराग विवेका * विगतसोकए कोक अनेका
दो॰ यहप्रताप रविजाकें, उरजबकरै प्रकाम ॥ नवाह ८
पछिले बाढ़हिं प्रथमजे, कहेते पावहिंनाम ॥ ३१ ॥
भ्रातन्हसहितराम एकबारा * संगपरमप्रिय पवन कुमारा
सुंदर उपवन देषन गए * सवतरु कुसुमितपल्लवनए
जानिसमयसनकादिकआए * तेजपुंज गुनसील सुहाए
ब्रह्मानंद सदा लयलीना * देषत बालक बहु कालीना
रूपधरे जनु चारिउ बेदा * समदरसीमुनिबिगतबिभेदा
आसाबसनव्यसन यहतिनहीं * रघुपतिचरितहोइतहँसुनहीं

तहाँ रहे सनकादि भवानी * जहँघट संभवमुनिबरज्ञानी
रामकथा मुनिवरबहु बरनी * ज्ञानजोनिपावकजिमिअरनी

दो० देषिराममुनि आवत, हरषि दंडवत कीन्ह ॥
स्वागतपूछि पीतपट, प्रभु बैठन कहँदीन्ह ॥ ३२ ॥

कीन्ह दंडवत तीनिउ भाई * सहितपवनसुतसुषअधिकाई
मुनिरघुपतिछबिअतुलबिलोकी * भएमगनमन सके न रोकी
स्यामलगातसरोरुह लोचन * सुंदरता मंदिर भवमोचन
एकटकरहे निमेषन लावहिं * प्रभुकरजोरे सीस नवावहिं
तिन्हकै दसा देषि रघुबीरा * श्रवतनयनजलपुलकसरीरा
करगहि प्रभु मुनिवर बैठारे * परममनोहर बचन उचारे
आजुधन्यमैं सुनहु मुनीसा * तुम्हरे दरसजाइ अघषीसा
बडे भाग पाइय सतसंगा * बिनहिप्रयासहोहिभवभंगा

दो० संतसंग अपबर्गकर, कामीभव कर पंथ ॥
कहहिंसंतकबि कोबिद, श्रुतिपुरान सदग्रंथ ॥ ३३ ॥

सुनिप्रभुबचनहरषिमुनिचारी * पुलकिततनअस्तुतिअनुसारी
जयभगवंतअनंत अनामय * अनघअनेक एककरुनामय
जयनिर्गुनजयजयगुनसागर * सुषमंदिरसुंदर अतिनागर
जयइंदिरा रमन जय भूधर * अनुपमअजअनादिसोभाकर
ज्ञाननिधानअमानमानप्रद * पावन सुजस पुरान बेदबद
तज्ञकृतज्ञ अज्ञता भंजन * नामअनेक अनामनिरंजन
सर्ब सर्बगत सर्ब उरालय * बससिसदाहमकहुँपरिपालय
द्वंदबिपति भवफंद बिभंजय * हृदिबसिरामकाममदगंजय

दो० परमानंदकृपाय तन, मनपरिपूरन काम ॥
प्रेमभगतिअनपायनी, देहुहमाहिं श्रीराम ॥ ३४ ॥

देहुभगतिरघुपति अतिपावनि * त्रिविधितापभवदापनसावनि
प्रनतकामसुरधेनु कलपतरु * होइप्रसन्न दीजे प्रभु यहबरु
भवबारिधिकुंभजरघुनायक * सेवतसुलभसकलसुषदायक
मनसंभव दारुन दुषदारय * दीनबंधु समता बिस्तारय
आसत्रासइरिषादिनिवारक * बिनयबिबेकबिरति बिस्तारक
भूपमौलिमनि मंडनधरनी * देहिभगतिसंसृतिसरितरनी
मुनिमन मानसहंसनिरंतर * चरनकमलबंदित अजसंकर
रघुकुलकेतु सेतुप्रति रक्षक * कालकरमसुभावगुनभक्षक
तारनतरन हरन सब दूषन * तुलसिदासप्रभुत्रिभुवनभूषन

दो० बार बार अस्तुतिकरि, प्रेमसहित सिरनाइ ।
ब्रह्मभवनसनकादिगे, अतिअभीष्ट वरपाइ ॥ ३५ ॥

सनकादिकबिधिलोकसिधाए * भ्रातन्ह रामचरन सिरनाए
पूछतप्रभुहिसकलसकुचाहीं * चितवहिंसब मारुतसुतपाहीं
सुनीचहहिं प्रभुमुषकै बानी * जोसुनिहोइसकलभ्रमहानी
अंतर जामी प्रभुसब जाना * बूझत कहहु काह हनुमाना
जोरिपानि कहतबहनुमंता * सुनहु दीनदयाल भगवंता
नाथभरत कछु पूछनचहहीं * प्रस्नकरतमनसकुचतअहहीं
तुम्हजानहुकपिमोरसुभाऊ * भरतहिमोहिकछुअंतरकाऊ
सुनिप्रभुबचनभरतगहेचरना * सुनहुनाथप्रनतारति हरना

दो० नाथन मोहि संदेह कछु, सपनेहु सोक न मोह ।
केवल कृपा तुम्हारिहि, कृपा नंद संदोह ॥ ३६ ॥

करौं क्रिपानिधिएक ढिठाई * मैं सेवक तुम्ह जन सुषदाई
संतन्ह कै महिमा रघुराई * बहुबिधिबेद पुरानन्ह गाई
श्रीमुषतुम्हपुनिकीन्हि बडाई * तिनपरप्रभुहिप्रीति अधिकाई
सुनाचहौंप्रभुतिन्हकरलक्षन * क्रिपासिंधुगुनज्ञानाबिचक्षन
संत असंत भेद बिलगाई * प्रनतपाल मोहिकहहुबुझाई
संतन्ह कै लक्षन सुनु भ्राता * अगनितश्रुतिपुरानाबिष्याता
संतअसंतन्हिकैअसिकरनी * जिमिकुठारचंदनआचरनी
काटै परसु मलय सुनु भाई * निजगुन देइसुगंध बसाई

दो० ताते सुरसीसन्ह चढत, जग बल्लभ श्री षंड ॥
अनलदाहि पीटतघनहिं, परसुबदनयहदंड ॥ ३७ ॥

बिषयअलंपट सीलगुनाकर * परदुष दुष सुष सुष देषेपर
समअभूतरिपुबिमदबिरागी * लोभामरषहरष भयत्यागी
कोमलचितदीनन्हपरदाया * मनबचक्रममममभगतिअमाया
सबहिमानप्रदआपुअमानी * भरत प्रानसम ममतेप्रानी
बिगतकाममनामपरायन * साँति बिरति बिनीत मुदितायन
सीतलता सरलता मयत्री * द्विज पदप्रीति धर्मजनयत्री
एसब लक्षन बसहिं जासुउर * जानेहु तात संत संततफुर
समदमनियमनीतिनहिंडोलहिं * परुषबचनकबहूँनहिंबोलहिं

दो० निंदा अस्तुति उभयसम, ममता मम पदकंज ॥
ते सज्जन ममप्रान प्रिय, गुनमंदिर सुषपुंज ॥ ३८ ॥

सुनहु असंतन्ह केरसुभाऊ * भूलेहुसंगति करियन काऊ
तिन्हकर संग सदा दुषदाई * जिमिकपिलहिघालइहरहाई
षलन्ह हृदयअतितापबिसेषी * जरहिंसदापर संपति देषी

जहँकहुँ निंदा सुनहिं पराई * हरषहिं मनहुँपरी निधिपाई
कामक्रोध मदलोभ परायन * निर्दयकपटीकुटिलमलायन
बयर अकारन सब काहूसो * जोकराहित अनहिततासो
झूठइ लेना झूठइ देना * झूठइ भोजन झूठ चबेना
बोलहिंमधुर बचनजिमिमोरा * षाइमहा अहिहृदय कठोरा

दो० पर द्रोही परदार रत, पर धन पर अपवाद ॥
ते नर पाँवर पापमय, देहधरे मनुजाद ॥ ३९ ॥

लोभइ ओढनलोभइ डासन * सिस्नोदरपरजमपुर त्रासन
काहूकी जौ सुनहिं बडाई * स्वास लहिंजनु जूडीआई
जब काहूकै देषहिं बिपती * सुषीभए मानहुजग नृपती
स्वारथरत परिवार बिरोधी * लंपटकाम लोभअतिक्रोधी
मातुपितागुरबिप्रन मानहिं * आपुगएअरुघालहिंआनहिं
करहिं मोहबस द्रोह परावा * संतसंग हरिकथा न भावा
अवगुनसिंधुमंद मतिकामी * बेदबिदूषक परधन स्वामी
बिप्र द्रोह परद्रोह बिसेषा * दंभ कपट जियधरे सुबेषा

दो० ऐसे अधम मनुज षल, क्रितजुग त्रेता नाहिं ॥
द्वापरकछुकबृंदबहु, होइहहिंकलिजुगमाहिं ॥ ४० ॥

परहितसरिस धर्मनहिं भाई * परपीडा समनहिं अधमाई
निर्नय सकल पुरान बेदकर * कहेउँतातजानहिंकोबिदनर
नर सरीर धरि जेपरपीरा * करहिंतेसहहिं महाभवभीरा
करहिंमोहबसनरअघनाना * स्वारथरतपरलोक नसाना
कालरूप तिन्हकहँ मैंभ्राता * सुभअरुअसुभकर्मफलदाता
अस बिचारि जेपरम सयाने * भजहिं मोहिसंसृत दुषजाने

त्यागहिंकर्मसुभासुभदायक ❋ भजहिंमोहिंसुरनरमुनिनायक
संत असंतन्ह के गुन भाषे ❋ तेनपरहिंभवजिन्हलषिराषे

दो० सुनहु तात माया कृत, गुन अरु दोष अनेक ॥
गुनयहउभयनदेषिअहि, देषिअसो अबिबेक ॥४१॥

श्रीमुषबचन सुनत सबभाई ❋ हरषे प्रेम न हृदय समाई
करहिंबिनयअतिबारहिबारा ❋ हनूमानहिय हरष अपारा
पुनिरघुपति निज मंदिरगए ❋ एहिबिधिचरितकरतनितनए
बारबार नारद मुनिआवहिं ❋ चरितपुनीत रामके गावहिं
नितनवचरितदेषिमुनिजाहीं ❋ ब्रह्मलोकसब कथा कहाहीं
सुनिबिरंचिअतिसयसुषमानहिं ❋ पुनिपुनितातकरहुगुनगानहिं
सनकादिकनारदहिसराहहिं ❋ जद्यपिब्रह्मनिरतमुनिआहहिं
सुनिगुनगानसमाधिबिसारी ❋ सादरसुनहिंपरमअधिकारी

दो० जीवन मुक्त ब्रह्मपर, चरित सुनहिं तजिध्यान ॥
जे हरिकथानकरहिं रति, हिन्हके हियपाषान ॥४२॥

एकबार रघुनाथ बोलाए ❋ गुरद्विज पुरबासी सब आये
बैठेगुरमुनिअरुद्विजसज्जन ❋ बोले बचन भगत भवभंजन
सुनहुसकलपुरजनममबानी ❋ कहौंनकछुममता उरआनी
नहिंअनीतिनहिंकछुप्रभुताई ❋ सुनहुकरहु जौतुमहिसुहाई
सोइसेवक प्रियतमममसोई ❋ ममअनुसासन मानै जोई
जौं अनीति कछुभाषौंभाई ❋ तौमोहिबरजहु भयबिसराई
बडे भाग मानुष तन पावा ❋ सुरदुर्लभ सदग्रंथन्हि गावा
साधन धाम मोछकर द्वारा ❋ पाइनजेहिं परलोक सँवारा

दो० सोपरत्र दुषपावै, सिर धुनि धुनि पछिताइ ॥
कालहि कर्महि ईश्वरहि, मिथ्या दोसलगाइ॥४३॥

एहितनकरफलबिषयनभाई ❋ स्वर्गौस्वल्प अंत दुषदाई
नरतनपाइ बिषय मनदेहीं ❋ पलटिसुधाते सठ बिष लेहीं
ताहिकबहुँ भलकहै न कोई ❋ गुंजा ग्रहै परस मनि षोई
आकरचारि लछ चौरासी ❋ जोनिभ्रमतयहजिवअबिनासी
फिरत सदा मायाकर प्रेरा ❋ कालकर्म सुभाव गुन घेरा
कबहुँककरि करुनानर देही ❋ देतईस बिनु हेतु सनेही
नरतन भवबारिधि कहँ बेरो ❋ सन्मुष मरुत अनुग्रह मेरो
करन धार सदगुर दृढनावा ❋ दुर्लभसाज सुलभ करिपावा

दो० जो न तरै भवसागर, नर समाज असपाइ ॥
सोकृतनिंदक मंदमति, आत्माहनगतिजाइ॥४४॥

जौं परलोक इहाँ सुष चहहू ❋ सुनिममबचनहृदयदृढगहहू
सुलभ सुषद मारग यहभाई ❋ भगतिमोरिपुरान श्रुतिगाई
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका ❋ साधनकठिननमनकहँटेका
करत कष्ट बहु पावै कोऊ ❋ भक्तिहीनमोहिप्रियनहिंसोऊ
भक्ति सुतंत्र सकलसुषषानी ❋ बिनुसतसंग न पावहिंप्रानी
पुन्यपुंजबिनुमिलहिं नसंता ❋ सतसंगति संसृत कर अंता
पुन्यएक जगमहँनहिं दूजा ❋ मनक्रम बचन बिप्रपदपूजा
सानुकूल तेहि पर मुनिदेवा ❋ जोतजि कपटकरै द्विजसेवा

दो० औरो एक गुपुत मत, सबहि कहौं करजोरि ॥
संकर भजन बिनानर, भगति न पावै मोरि ॥ ४५॥

कहहुभगतिपथकवनप्रयासा ❋ जोगनमषजपतपउपबासा

सरलसुभावनमन कुटिलाई * जथालाभ संतोष सदाई
मोरदास कहाइ नर आसा * करइतौकहहुकहा बिस्वासा
बहुत कहौंका कथा बढाई * एहि आचरन बस्यमैं भाई
बैरन बिग्रह आसन त्रासा * सुषमयताहिसदासबआसा
अनारंभ अनिकेत अमानी * अनघ अरोषदक्ष बिज्ञानी
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा * त्रिनसमबिषयस्वर्गअपबर्गा
भगतिपक्षहठ नहिं सठताई * दुष्ट तर्कसब दूरि बहाई
दो॰ ममगुन ग्राम नामरत, गत ममतामदमोह ॥
ता कर सुष सोइ जानै, परा नंद संदोह ॥ ४६ ॥
सुनतसुधासम बचन रामके * गहेसब निपद कृपा धामके
जननि जनकगुर बंधु हमारे * कृपा निधान प्रानते प्यारे
तनधन धामराम हितकारी *सबबिधितुम्हप्रनतारतिहारी
असिसिषतुम्हबिनुदइनकाऊ * मातु पिता स्वारथरतओऊ
हेतरहित जगजुग उपकारी * तुम्हतुम्हार सेवक असुरारी
स्वारथमीतसकलजगमाहीं * सपनेहु प्रभुपरमारथ नाहीं
सबके बचन प्रेमरस साने * सुनिरघुनाथ हृदय हरषाने
निजनिजगृहगएआयसुपाई * बरनत प्रभु बतकही सुहाई
दो॰ उमा अवध बासी नर, नारिकृता रूप ॥
ब्रह्मसच्चिदानंदघन, रघुनायक जहँ भूप ॥ ४७ ॥
एकबार बसिष्ठ मुनि आए * जहाँराम सुषधाम सुहाए
अतिआदररघुनायककीन्हा * पदपषारि पादोदक लीन्हा
रामसुनहु मुनिकहकरजोरी * क्रिपासिंधुबिनतीकछुमोरी
देषि देषि आचरन तुम्हारा * होतमोह ममहृदय अपारा

महिमाअमितिबेदनहिंजाना * मैंकेहि भाँतिकहौं भगवाना
उपरोहित्य कर्म अति मंदा * बेदपुरान सुमृति करनिंदा
जबनलेउँ मैं तबबिधिमोही * कहालाभ आगे सुततोही
परमात्मा ब्रह्म नर रूपा * होइहि रघुकुल भूषन भूपा

दो० तबमैंहृदयबिचारा, जोगजग्यव्रतदान ॥
जाकहँकरिअसोपैहौं, धमनएहिसमआन ॥

जपतपनियमजोगानिजधर्मा * श्रुतिसंभव नाना सुभकर्मा
ज्ञानदयादमतीरथ मज्जन * जहँलगिधर्मकहतश्रुतिसज्जन
आगमनिगम पुराणअनेका * पढ़ेसुनेकर भलप्रभु एका
तबपदपंकज प्रीति निरंतर * सबसाधन करयहफल सुंदर
छूटै मलकि मलहिके धोए * घृतकिपावकोइबारिबिलोए
प्रेमभगति जलबिनु रघुराई * अभिअंतरमलक बहुनजाई
सोइसर्वज्ञतज्ञ सोइ पंडित्त * सोइगुनग्रह बिज्ञानअषंडित
दक्षसकल लक्षन जुत सोई * जाकेपद सरोज रतिहोई

दो० नाथ एकबर मागौं, रामकृपा करिदेहु ॥
जन्मजन्मप्रभुपदकमल, कबहुँघटै जानिनेहु ॥ ४९ ॥

असकहिमुनिबासिष्टगृहआए * कृपासिंधुक मनअति भाए
हनूमानभरतादिक भ्राता * संगलिए सेवक सुखदाता
पुनिकृपालु पुरबाहेर गए * गजरथ तुरंग मँगावत भए
देखिकृपाकरिसकल सराहे * दिएउचितजिन्ह जिन्हजेइचाहे
हरनसकलश्रम प्रभुश्रमपाई * गएजहाँ सीतल अंबराई
भरतदीन्हनिजबसनडसाई * बैठेप्रभु सेवहिं सब भाई
मारुत सुततब मारुतकरई * पुलकबपुष लोचनजलभरई

हनूमान सम नहिं बडभागी ✻ नहिं कोउ रामचरनअनुरागी
गिरिजा जासुप्रीतिसेवकाई ✻ बारबारप्रभु निजमुष गाई
दो॰ तेहि अवसर मुनिनारद, आए करतल बीन ॥
गावनलगेरामकल, कीरतिसदा नवीन ॥ ५० ॥
मामवलोकय पंकज लोचन ✻ कृपाबिलोकनिसोच बिमोचन
नीलतामरसस्याम कामअरि ✻ हृदय कंजमकरंद मधुपहरि
जातुधान बरूथ बलभंजन ✻ मुनिसज्जनरंजनअघगंजन
भूसुर ससिनव बृंदबलाहक ✻ असरनसरनदीनजनगाहक
भुजबलबिपुल भारमहिषंडित ✻ षरदूषन बिराध बध पंडित
रावनारि सुष रूप भूपबर ✻ जय दसरथकुलकुमुद सुधाकर
सुजसपुरानाबिदित निगमागम ✻ गावतसुरमुनि संतसमागम
कारुनीकव्यलीकमदषंडन ✻ सबबिधिकुसलकोसलामंडन
कलिमलमथन नाम ममताहन ✻ तुलसिदासप्रभुपाहि प्रनतजन
दो॰ प्रेम सहित मुनि नारद, बरनि राम गुन ग्राम ॥
सोभासिंधु हृदयधरि, गएजहाँबिधिधाम ॥ ५१ ॥
गिरिजासुनहुबिसदयहकथा ✻ मैंसबकही मोरिमति जथा
रामचरितसतकोटिअपारा ✻ श्रुति सारदान बरनै पारा
राम अनंत अनंत गुनानी ✻ जन्मकर्म अनंत नामानी
जलसीकरमहिरज गनिजाहीं ✻ रघुपतिचरितनबरनि सिराहीं
बिमलकथा हरिपद दायनी ✻ भगतिहोइ सुनिअनपायनी
उमाकहेउँ सब कथासुहाई ✻ जोभुसुंडि षगपतिहिसुनाई
कछुकरामगुनकहेउँबषानी ✻ अबकाकहौंसोकहहुभवानी
सुनिसुभकथा उमाहरषानी ✻ बोलीअति बिनीतमृदुबानी

धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी ❋ सुनेउँ रामगुन भवभयहारी

दो० तुम्हरी क्रिपा कृपायतन, अबकृत कृत्य न मोह ॥
जानेउँ राम प्रताप प्रभु, चिदानंदसंदोह ॥
नाथ तवानन ससि श्रवत, कथा सुधा रघुबीर ॥
श्रवनपुटन्हिमनपानकरि, नहिअघातमतिधीर ५२॥

राम चरित जेसुनत अघाहीं ❋ रस बिसेषजानातिन्ह नाहीं
जीवन मुक्त महामुनि जेऊ ❋ हरिगुनसूनहिं निरंतरतेऊ
भवसागर चह पारजो पावा ❋ रामकथा ताकहँ दृढनावा
बिषइन्हकहँपुनिहरिगुनग्रामा ❋ श्रवनसुषदअरुमन अभिरामा
श्रवनवंत असकोजग माहीं ❋ जाहिनरघुपतिचरितसुहाहीं
तेजड जीवनिजात्माघाती ❋ जिन्हहिनरघुपति कथासोहाती
हरिचरित्र मानस तुम्हगावा ❋ सुनिमैंनाथअमितिसुषपावा
तुम्हजोकहीयह कथासुहाई ❋ कागभुसुंडि गरुड प्रतिगाई

दो० बिरति ज्ञान बिज्ञान दृढ, राम चरन अतिनेह ॥
बायसतन रघुपति भगति, मोहि परम संदेह ५३ ॥

नर सहस्रमहँ सुनहु पुरारी ❋ कोउएकहोइ धर्मब्रत धारी
धर्मसीलकोटिक महँकोई ❋ बिषयबिमुष बिरागरत होई
कोटिबिरक्तमध्य श्रुतिकहई ❋ सम्यकज्ञानसकृतकोउलहई
ज्ञानवंत कोटिक महँकोऊ ❋ जीवन मुक्तसकृतजग सोऊ
तिन्हसहस्रमहसबसुषपानी ❋ दुर्लभ ब्रह्म लीन बिज्ञानी
धर्मसील बिरक्त अरुज्ञानी ❋ जीवनमुक्त ब्रह्म पर प्रानी
सबते सो दुर्लभ सुर राया ❋ रामभगति रतगतमद माया
सोहरिभगतिकागकिमिपाई ❋ बिस्वनाथ मोहिकहहुबुझाई

दो० राम परायन ज्ञान रत, गुनागार मति धीर ॥
नाथ कहहु केहि कारन, पाएउ काग सरीर ५४॥

यहप्रभुचरित पवित्र सुहावा * कहहुकृपाल कागकहँ पावा
तुम्हकेहिभाँतिसुनामदनारी * कहहुमोहिअतिकौतुकभारी
गरुड महाज्ञानी गुन रासी * हरिसेवकअतिनिकटनिवासी
तेहिकेहिहेतु कागसन जाई * सुनीकथामुनिनिकरबिहाई
कहहु कवनबिधि भासंबादा * दोउहरिभगतकागउरगादा
गौरिगिरा सुनि सरलसुहाई * बोले सिव सादर सुषपाई
धन्यसती पावन मति तोरी * रघुपतिचरनप्रीतिनहिं थोरी
सुनहु परमपुनीत इतिहासा * जोसुनिसकलसोकभ्रमनासा
उपजै रामचरन बिस्वासा * भवनिधितरनरबिनहिप्रयासा

दो० ऐसिय प्रस्नबिहंग पति, कीन्हि कागसन जाइ ॥
सो सब सादर कहिहौं, सुनहु उमामनलाइ ५५॥

मैंजिमिकथासुनीभवमोचनि * सोप्रसंगसुनुसुमुखिसुलोचनि
प्रथमदक्ष गृह तब अवतारा * सतीनाम तब रहा तुम्हारा
दक्षयज्ञ तवभा अपमाना * तुम्हअतिक्रोधतजेतबप्राना
ममअनुचरन्हकीन्हमषभंगा * जानहुतुम्हसो सकलप्रसंगा
तबअतिसोचभएउ मनमोरे * दुषीभएउँ बियोग प्रियतोरे
सुंदर बनगिरि सरिततडागा * कौतुक देषतफिरौंबिभागा
गिरिसुमेर उत्तर दिसि दूरी * नीलसैल एक सुंदर भूरी
तासुकनकमयसिषरसोहाए * चारि चारु मोरे मन भाए
तिन्हपरएकएक बिटपबिसाला * बटपीपर पाकरी रसाला
सैलो परि सर सुंदर सोहा * मानिसोपानदेषिमनमोहा

दो० सीतल अमल मधुरजल, जलज बिपुल बहुरंग ॥
कूँजत कलरव हंसगन, गुंजत मंजुल भृंग ॥५६॥

तेहिगिरि रुचिरबसैषगसोई ※ तासुनास कल्पांत न होई
मायाकृत गुनदोष अनेका ※ मोहमनोज आदिअविवेका
रहेब्यापि समस्त जगमाहीं ※तेहिगिरिनिकट कबहुंनहिंजाहीं
तहँबसिहरिहिभजेजिमिकागा ※ सोसुनु उमासहितअनुरागा
पीपर तरुतर ध्यानसो धरई ※ जापजग्य पाकरितर करई
आँमछाँह कर मानस पूजा ※तजिहरिभजनकाजनहिंदूजा
बरतर कहहरि कथा प्रसंगा ※ आवहिंसुनहिंअनेकबिहंगा
रामचरितबिचित्रबिधिनाना ※ प्रेम सहितकर सादर गाना
सुनहिंसकलमतिबिमलमराला ※ बसहिंनिरंतरजे तेहि ताला
जबमैं जाइसो कौतुक देषा ※ उरउपजा आनंद बिसेषा

दो० तबकछुकाल मरालतन, धरितहँ कीन्ह निवास ॥
सादर सुनि रघुपति गुन, पुनि आएउँ कैलास ॥५७॥

गिरिजाकहेउँसोसबइतिहासा ※ मैंजेहिसमयगएउँषगपासा
अबसो कथा सुनहु जेहिहेतू ※ गएउकागपहिं षगकुलकेतू
जबरघुनाथकीन्हरनक्रीडा ※ समुझतचरितहोतमोहिब्रीडा
इंद्रजीत कर आपु बँधायो ※ तब नारदमुनिगरुडपठायो
बंधन काटि गयो उरगादा ※ उपजा हृदय प्रचंड बिषादा
प्रभुबंधन समुझत बहुभाँती ※ करत बिचार उरग आराती
ब्यापकब्रह्म बिरजबागीसा ※ माया मोह पार परमीसा
सो अवतार सुनेउँजगमाहीं ※ देखेउँ सो प्रभाव कछुनाहीं

दो० भव बंधनते छूटहिं, नर जप जाकर नाम ।
एवं निशाचर बाँधउ, नागपास सोइ राम ॥ ५८ ॥
नानाभाँति मनहिसमुझावा * प्रगटनज्ञानहृदयभ्रमछावा
षेद षिन्न मनतर्क बढाई * भएउमोहबसतुम्हरिहिनाई
ब्याकुलगएउदेवरिषिपाहीं * कहसिजोसंसयनिजमनमांहीं
सुनिनारदहिलागिअतिदाया * सुनुषगप्रबल रामकै माया
जोज्ञानिन्हकरचितअपहरई * बरिआई बिमोह मन करई
जेहिं बहुबार नचावा मोही * सोइब्यापी बिहंगपतितोही
महा मोह उपजा उर तोरे * मिटिहिनबेगिकहेषग मोरे
चतुरानन पहि जाहु षगेसा * सोइकरेहु जेहिहोइ निदेसा
दो० असकहि चले देवरिषि, करत राम गुन गान ।
हरि मायाबल बरनत, पुनिपुनि परमसुजान ॥५९॥
तबषगपतिबिरंचिपहिंगएउ * निज संदेह सुनावत भएउ
सुनिबिरंचिरामहिंसिरनावा * समुझिप्रतापप्रेमअतिछावा
मनमहँकरइबिचार बिधाता * मायाबसकबिकोविद ज्ञाता
हरिमायाकरअमितप्रभावा * बिपुलबारजेहिमोहिनचावा
अगजगमयजगममउहराजा * नहिंआचरजमोहिषगराजा
तब बोले बिधि गिरा सुहाई * जान महेश राम प्रभुताई
बयन तेय संकर पहिं जाहू * तात अनतपूछहु जनिकाहू
तहँ होइहि तब संसयहानी * चलेउबिहंगसुनताबिधिबानी
दो० परमातुरबिहंग पति, आएउ तब मोपास ।
जातरहेउँ कुबेरग्रिह, रहिहु उमा कैलास ॥ ६० ॥
तेहिममपदसादरशिरनावा * पुनि आपन संदेह सुनावा

मुनिताकरबिनती मृदुबानी * प्रेमसहितमैं कहेउँभवानी
मिलेहुगरुडमारगमहँ मोही * कवनभाँति समुझावौंतोही
तबहि होइ सब संसय भंगा * जबबहुकालकरियसतसंगा
सुनिअ तहाँ हरिकथासुहाई * नानाभाँतिमुनिन्हजोगाई
जेहिमहँआदिमध्यअवसाना * प्रभुप्रतिपाद्य रामभगवाना
नितहरि कथाहोत जहँभाई * पठवौंतहाँ सुनहुतुम्ह जाई
जाइहि सुनत सकल संदेहा * रामचरन होइहि अतिनेहा
दो० बिन सतसंगन हरिकथा, तेहिबिनु मोह न भाग।
मोहगए बिनु राम पद, होइन दृढ अनुराग ॥६१॥
मिलहिनरघुपतिबिनअनुरागा * किएजोग तपज्ञान बिरागा
उत्तरदिसिसुन्दरगिरिनीला * तहँरहकाकभसुंडि सुसीला
रामभगति पथपरमप्रबीना * ज्ञानी गुनगृह बहुकालीना
रामकथा सो कहइ निरंतर * सादरसुनहिंबिबिधबिहंगबर
जाइसुनहु तहँ हरिगुनभूरी * होइहिमोहजनित दुष दूरी
मैं जबतेहि सबकहा बुझाई * चलेउहरषिममपदसिरनाई
ताते उमा न मैं समुझावा * रघुपति कृपामरममैं पावा
होइहिकीन्हकबहुँअभिमाना * सोषोवै चह कृपा निधाना
कछुतेहितेपुनिमैं नहिराषा * समुझै षग षगही कै भाषा
प्रभुमाया बलवंत भवानी * जाहि न मोहकवनअसज्ञानी
दो० ज्ञानी भगत सिरोमनि, त्रिभुवन पति करजान।
ताहि मोह माया नर, पाँवर करहिं गुमान ॥
सिव बिरंचि कहँ मोहै, कोहै बपुरा आन।
असजियजानिभजहिंमुनि, मायापतिभगवान॥६२॥

गएउ गरुड जहँबसैभुसुंडी ❋ मतिअकुंठहरिभगतिअषंडी
देषिसैल प्रसन्न मन भएऊ ❋ मायामोह सोच सब गएऊ
करितडागमज्जनजलपाना ❋ बटतर गयउ हृदय हरषाना
वृद्ध वृद्ध बिहंग तहँ आए ❋ सुनै रामके चरित सुहाए
कथा अरंभकरइ सोइचाहा ❋ तेही समयगयउ षगनाहा
आवत देषिसकलषगराजा ❋ हरषेउ बायससहितसमाजा
अतिआदरषगपतिकरकीन्हा ❋ स्वागतपूछिसुआसन दीन्हा
करिपूजा समेत अनुरागा ❋ मधुरबचन तबबोलेउ कागा

दो॰ नाथ कृतारथ भयउँमइँ, तब दरसन षगराज ॥
आयसु देहु सोकरौं अब, प्रभु आयहु केहिकाज ॥
सदा कृतारथरूतुम्ह, कहमृदुबचनषगेस॥ मा॰ प॰ २८
जेहिकै अस्तुति सादर, निजमुष कीन्हिमहेस॥६३॥

सुनहुतातजेहिकारन आएउं ❋ सोसबभएउदरस तबपाएउँ
देषिपरम पावनतबआश्रम ❋ गएउ मोहसंसयनाना भ्रम
अबश्रीरामकथाअतिपावनि ❋ सदासुषद दुष पुंजनसावनि
सादर तात सुनावहु मोही ❋ बारबार बिनवौं प्रभु तोही
सुनतगरुडकै गिराबिनीता ❋ सरल सुप्रेम सुषद सुपुनीता
भएउतासुमनपरमउछाहा ❋ लागकहइ रघुपति गुनगाहा
प्रथमहिंअतिअनुरागभवानी ❋ रामचरित सरकहेसि बषानी
पुनिनारदकर मोहअपारा ❋ कहेसिबहुरि रावन अवतारा
प्रभु अवतार कथापुनिगाई ❋ तबसिसुचरितकहेसिमनलाई

दो॰ बालचरितकहिबिबिधिबिधि, मनमहँपरम उछाह ॥
रिषिआगमनकहेसिपुनि, श्रीरघुबीर बिवाह ॥ ६४ ॥

बहुरिराम अभिषेक प्रसंगा ❀ पुनिनृप बचन राजरसभंगा
पुरबासिन्हकरबिरहबिषादा ❀ कहेसिराम लछिमन संबादा
बिपिनगवनकेवटअनुरागा ❀ सुरसरिउतारिनिवास प्रयागा
बालमीकप्रभुमिलनबषाना ❀ चित्रकूटजिमिबसे भगवाना
सचिवागवननगरनृपमरना ❀ भरतागवन प्रेम बहु बरना
करिनृप क्रिया संगपुरबासी ❀ भरत गए जहँ प्रभु सुषरासी
पुनिरघुपतिबहुबिधिसमुझाए ❀ लै पादुका अवधपुर आए
भरतरहनिसुरपतिसुतकरनी ❀ प्रभुअरुअत्रिभेंट पुनिबरनी
दो० कहि बिराधबध जेहिबिधि, देहतजी सरभंग ॥
बरनि सुतीछन प्रीतिपुनि, प्रभुअगस्तिसतसंग॥६५॥
कहि दंडकबन पावनताई ❀ गीधमइत्री पुनि तेहिं गाई
पुनिप्रभु पंचबटी कृतबासा ❀ भंजीसकलमुनिन्हकी त्रासा
पुनिलछिमन उपदेसअनूपा ❀ सूपनषाजिमिकीन्हिकुरूपा
षरदूषन बधबहुरि बषाना ❀ जिमिसबमरमदसाननजाना
दसकंधर मारीच बतकही ❀ जेहिबिधिभइसोसबतेहिकही
पुनि माया सीता करहरना ❀ श्रीरघुबीरबिरहकछु बरना
पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्ही ❀ बधिकबंधसबरिहिगतिदीन्ही
बहुरिबिरह बरनत रघुबीरा ❀ जेहिबिधि गएसरोवर तीरा
दो० प्रभु नारद संबाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग ॥
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रान कर भंग ॥
कपिहिं तिलक करिप्रभुकृत, सैल प्रबरषनबास ॥
बरनतबरषा सरद रितु, रामरोष कपि त्रास ॥ ६६ ॥
जेहिबिधिकपिपतिकीसपठाए ❀ सीताषोज सकलदिसि धाए

विवरप्रवेस कीन्हजेहिभाँती * कपिन्ह वहोरिमिलासंपाती
सुनिसबकथा समीरकुमारा * नाघतभएउपयोधि अपारा
लंकाकपिप्रवेसजिमिकीन्हा * पुनिसीताहिधीरजजिमिदीन्हा
वनउजारिरावनहि प्रबोधी * पुरदहिनाघेउबहुरि पयोधी
आए कपिसब जहँ रघुराई * वैदेहीकी कुसल सुनाई
सेनसमेत जथा रघुवीरा * उतरेजाइ वारिनिधि तीरा
मिलाविभीषनजेहिविधिआई * सागर निग्रह कथा सुनाई

दो० सेतुवाँधिकपिसेनाजिमि, उतरी सागरपार ।
गएउबसीठिवीरवर, जिहिविधिवालिकुमार ॥
निसिचरकीस लराई, वरनिसिविविधि प्रकार ।
कुंभकरनघननादकर, वलपौरुषसंघार ॥ ६७ ॥

निसिचरनिकरमरनविधिनाना * रघुपति रावनसमर बषाना
रावनवध मंदोदरि सोका * राज विभीषन देवअसोका
सीता रघुपति मिलनवहोरी * सुरन्हकीन्हि अस्तुतिकरजोरी
पुनिपुष्पकचढ़िकपिन्हसमेता * अवधचलेप्रभुक्रिपानिकेता
जेहिविधिरामनगरनिजआए * वायस विसदचरित सबगाए
कहेसिबहोरिरामअभिषेका * पुरवरननन्रप नीतिअनेका
कथासमस्त भुसुंड बषानी * जोमैं तुम्हसनकही भवानी
सुनिसबराम कथाषगनाहा * कहतबचनमनपरम उछाहा

सो० गएउमोरसंदेह, सुनेउँसकलरघुपतिचरित ।
भएउरामपदनेह, तवप्रसादवायसतिलक ॥
मोहिभएउअतिमोह, प्रभुबंधनरनमहँनिराषि ॥
चिदानंदसंदोह, रामविकलकारनकवन ॥ ६८ ॥

देषिचरितअतिनरअनुसारी ❋ भएउ हृदयमम संसयभारी
सोइभ्रमअवहित करिमैमाना ❋ कीन्हअनुग्रहक्रिपानिधाना
जोअतिआतपब्याकुलहोई ❋ तरुछाया सुषजानै सोई
जौंनहिहोतमोहअतिमोही ❋ मिलतेउँतातकवन विधितोही
सुनतेउँ किमिहरि कथासुहाई ❋ अतिविचित्रवहुविधितुम्हगाई
निगमागम पुरान मतएहा ❋ कहहिंसिद्धमुनि नहिंसंदेहा
संतविसुद्ध मिलहिं परितेही ❋ चितवहिंरामक्रिपाकरिजेही
रामकृपातव दरसन भएऊ ❋ तवप्रसादसब संसय भएऊ

दो॰ सुनिविहंगपतिवानी, सहितविनयअनुराग ।
पुलकगातलोचनसजल, मनहरषेउअतिकाग ॥
श्रोतासुमतिसुसीलसुचि, कथारसिकहरिदास ।
पाइउमाअतिगोप्यमत, सज्जनकरहिंप्रकास ॥६९॥

बोलेउकाक भुसुंडि बहोरी ❋ नभग नाथपर प्रीतिनथोरी
सबविधि नाथपूज्यतुम्हमेरे ❋ कृपापात्र रघुनायक केरे
तुम्हहिनसंसय मोहनमाया ❋ मोपरनाथ कीन्हितुम्हदाया
पठैमोहमिस षगपति तोही ❋ रघुपतिदीन्हिबडाई मोही
तुम्हनिजमोह कहीषगसाईं ❋ सोनहिकछुआचरजगोसाईं
नारदभवविरंचि सनकादी ❋ जेमुनिनायक आतम वादी
मोहनअंधकीन्ह केहिकेही ❋ कोजगकाम नचावन जेही
त्रिस्नाकेहिन कीन्ह बौरहा ❋ केहिकरहृदय क्रोधनहिदहा

दो॰ ज्ञानी तापस सूरकवि, कोविद गुन आगार ॥
केहिकै लोभ बिडंबना, कीन्हिन एहिंसंसार ॥

श्रीमदवक्रन कीन्ह केहि, प्रभुता बधिरन काहि ।
मृगलोचनिकेनैनसर, कोअसलागनजाहि ॥७०॥
गुनकृत सन्यपातनहि केही * कोउनमानमदतजेउनिबेही
जोवनज्वरकेहिनहिंबलकावा *ममताकेहिकरजसननसावा
मत्सर काहि कलंकन लावा * काहिनसोकसमीरडोलावा
चिंतासापिनि कोनाहिंषाया * कोजगजाहिनब्यापीमाया
कीट मनोरथ दारु सरीरा * जेहिनलागघुनकोअसधीरा
सुतविक लोक ईषना तीनी * केहिकैमतिइन्हकृतनमलीनी
यस सब मायाकर परिवारा * प्रवलअमितिकोवरनै पारा
सिव चतुराननजाहिडेराहीं * अपरजीव केहि लेषे माहीं
दो० ब्यापि रहेउ संसार महँ, माया कटक प्रचंड ।
सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाषंड ॥
सो दासी रघुबीर के, समुझे मिथ्या सोपि ।
छूटन राम कृपाबिन, नाथ कहौं पदरोप ॥७१॥
जोमायासब जगहि नचावा * जासुचरितलषिकाहुनपावा
सोइप्रभुभ्रूबिलास षगराजा * नाचनटीइवसहितसमाजा
सोह सच्चिदानंदघन रामा * अज विज्ञानरूपबल धामा
ब्यापकब्याप्यअषंडअनंता *अषिलअमोघसक्तिभगवंता
अगुन अदभ्र गिरागोतीता * समदरसी अनवद्यअजीता
निर्मम निराकार निरमोहा * नित्य निरंजन सुष संदोहा
प्रकृतिपारप्रभु सबउरबासी * ब्रह्मनिरीहबिरजअबिनासी
इहाँ मोहकर कारन नाहीं * रबिसन्मुषतमकबहुँनजाहीं
दो० भगत हेतु भगवान प्रभु, रामधरेउ तन भूप ।
किए चरित पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप ॥

यथा अनेक वेष धरि, नृत्य करै नटकोइ ।
सोइसोइ भाव देषावै, आपुन होइन सोइ ॥ ७२ ॥

असि रघुपतिलीलाउरगारी * दनुजविमोहनिजनसुषकारी
जेमतिमलिनबिषयबसकामी * प्रभुपरमोहधरहिंइमिस्वामी
नयनदोष जाकहँ जब होई * पीतबरनससिकहुँ कहसोई
जबजेहिदिसिभ्रमहोइषगेसा * सोकहपछिमगएउदिनेसा
नौकारूढ़ चलत जग देषा * अचलमोहबसआपुहिलेषा
बालकभ्रमहिनभ्रमहिंगृहादी * कहहिंपरस्पर मिथ्याबादी
हरिबिषइक असमोहाबिहंगा * सपनेहुनहिं अज्ञान प्रसंगा
मायाबस मतिमंद अभागी * हृदयजमनिकाबहुबिधिलागी
तेसठ हठबस संसय करहीं * निजअज्ञान रामपरधरहीं

दो० काम क्रोध मदलोभरत, गृहासक्त दुषरूप ।
तेहिकिमिजानाहिंरघुपतिहि, मूढ़परे तम कूप ॥
निर्गुन रूपसुलभ अति, सगुन जान नहिं कोइ ।
सुगमअगमनानाचरित, सुनिमुनिमनभ्रमहोइ ७३॥

सुनुषगेस रघुपति प्रभुताई * कहौंजथामति कथासुहाई
जेहिविधिमोहभएउप्रभुमोहीं * सोउसबकथासुनावौं तोहीं
रामकृपा भाजनतुम्ह ताता * हरिगुनप्रीतिमोहिसुषदाता
तातेनहिं कछुतुम्हहिंदुरावौं * परमरहस्य मनोहर गावौं
सुनहु रामकर सहजसुभाऊ * जनअभिमाननराषहिंकाऊ
संसृत मूल सूल प्रद नाना * सकलसोकदायकअभिमाना
तातें करहिं कृपानिधिदूरी * सेवकपर ममता अतिभूरी
जिमिसिसुतनब्रनहोइगुसाईं * मातुचिराव कठिनकी नाईं

दो॰ जदपि प्रथम दुषपावै, रोवै बाल अधीर ॥
व्याधि नास हित जननी, गनतिनसो सिसुपीर ॥
तिमिरघुपति निजदासकर, हरहिं मानहित लागि॥
तुलसिदास ऐसेप्रभुहि, कसनभजहु भ्रमत्यागि ७४

रामकृपा आपनि जडताई * कहौंषगेस सुनहु मनलाई
जबजबराममनुजतनधरहीं * भक्तहेतु लीला बहुकरहीं
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ * बालचरितबिलोकिहरषाऊँ
जन्म महोत्सव देषौं जाई * बरषपांचतहँ रहउँ लुभाई
इष्टदेव मम बालक रामा * सोभावपुषकोटि सतकामा
निजप्रभुबदननिहारिनिहारी * लोचनसुफलकरौं उरगारी
लघुवायस बपुधरि हरिसंगा * देषौं बाल चरित बहुरंगा

दो॰ लरिकाई जहँ जहँ फिरत, तहँ तहँ संग उडाउँ ॥
जूठनि परइ अजिर महँ, सो उठाइ करि षाउँ ॥
एकबार अतिसै सब, चरित किए रघुबीर ॥
सुमिरतप्रभुलीलासोइ, पुलकित भएउसरीर ७५ ॥

कहै भुसुंडि सुनहु षगनायन * राम चरितसेवक सुषदायक
नृपमंदिर सुंदर सब भांती * षचितकनकमनिनानाजाती
बरनिनजाइ रुचिरअंगनाई * जहँषेलहिं नितचारिउ भाई
बालविनोद करत रघुराई * विचरतअजिरजननिसुषदाई
मरकतमृदुलकलेवरस्यामा * अंगअंग प्रतिछबिबहुकामा
नवराजीव अरुन मृदुचरना * पदजरुचिरनषससिदुतिहरना
ललितअंककुलिसादिकचारी * नूपुर चारु मधुर रवकारी
चारुपुरट मनिरचित बनाई * कटिकिंकिनिकलमुषरसुहाई

दो॰ रेषात्रय सुंदर उदर, नाभी रुचिर गंभीर ॥
उरआयतभ्राजतबिबिधि, बालबिभूषनचीर ॥७६॥

अरुनपानिनषकरज मनोहर * बाहुबिसाल बिभूषन सुंदर
कंधबाल केहरि दर ग्रीवा *चारुचिबुकआननछबिसींवाँ
कलवलबचन अधरअरुनारे * दुइदुइदसन बिसद बरवारे
ललितकपोल मनोहरनासा * सकलसुषदससिकरसमहासा
नीलकंजलोचन भवमोचन * भ्राजतभालतिलकगोरोचन
बिकटभृकुटिसमश्रवनसुहाए * कुंचितकचमेचकछबिछाए
पीतझीनिझँगुली तन सोही * किलकनिचितवनि भावतिमोही
रूपरासि नृपअजिरबिहारी *नाचहिंनिजप्रतिबिंबनिहारी
मोहिसनकरहिबिबिधिबिधिक्रीडा *बरनतमोहिहोतिअतिब्रीडा
किलकतमोहिधरनजबधावहिं * चलौंभागि तबपूप देषावहिं

दो॰ आवत निकट हसहिंप्रभु, भाजत रुदन कराहिं ॥
जाउँ समीप गहनपद, फिरिफिरि चितइ पराहिं ॥
प्राकृत सिसुइव लीला, देषि भएउ. मोहि मोह ॥
कवन चरित्र करतप्रभु, चिदानंद संदोह ॥ ७७ ॥

एतना मन आनत षगराया * रघुपतिप्रेरित ब्यापी माया
सोमायान दुषद मोहिकाहीं * आनजीव इवसंसृत नाहीं
नाथ इहांकछु कारन आना * सुनहुसोसावधानहरिजाना
ज्ञान अषंड एक सीता बर * माया बस्यजीव सचराचर
जौं सबके रह ज्ञान एकरस * ईश्वरजीवहिभेद कहहुकस
मायाबस्य जीव अभिमानी * ईसबस्य माया गुन षानी
परबसजीव स्वबस भगवंता * जीव अनेक एक श्रीकंता

मुधाभेद जद्यपि कृतमाया * बिनुहरिजाइनकोटिउपाया
दो॰ राम चन्द्रके भजन बिनु, जोचह पद निर्वान ॥
ज्ञानवंत अपिसो नर, पसु बिनु पूँछ बिषान ॥
राका पति षोडसउअहिं, तारा गन समुदाइ ॥
सकलगिरिन्हदवलाइअ, बिनुरबिरातिनजाइ ॥७८॥
ऐसेहिंहरिबिनुभजनषगेसा * मिटइन जीवन्ह केरकलेसा
हरिसेवकहिनब्यापअबिद्या * प्रभुप्रेरितब्यापै तेहि बिद्या
तातें नासन होइ दासकर * भेदभगति बाढै बिहंगब
भ्रमतेचकित राममोहिदेषा * बिहँसे सोसुनु चरितबिसेषा
तेहिकौतुककर मरमनकाहू * जाना अनुजन मातुपिताहू
जानुपानिधाए मोहिधरना * स्यामलगातअरुनकरचरना
तबमैं भागि चलेउँउरगारी * रामगहन कहँ भुजा पसारी
जिमिजिमिदूरिउडाउँअकासा * तहँहरि भुजदेषौं निज पासा
दो॰ ब्रह्मलोक लगि गएउँ मैं. चितएउँ पाछे उडात ॥
जुग अंगुलकर बीचसब, रामभुजहि मोहि तात ॥
सप्तावरन भेद करि, जहाँ लगे गति मोरि ॥
गएउँतहाँप्रभुभुजानिरषि, ब्याकुलभएउँबहोरि ७९॥
मूँदेउँनयनत्रसितजबभएउँ * पुनिचितवतकोसलपुरगएउँ
मोहिबिलोकिराममुसुकाहीं * बिहँसततुरतगएउँमुषमाहीं
उदरमाँझ सुनु अंडज राया * देषउँबहु ब्रह्मांड निकाया
अतिबिचित्रतहँलोकअनेका * रचनाअधिक एकते एका
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा * अगनितउडगनरबिरजनीसा
अगनितलोकपालजमकाला * अगनितभूधरभूमि बिसाला

सागरसरिसरबिपिनअपारा * नानाभाँति सृष्टि बिस्तारा
सुरमुनिसिद्धनागनरकिन्नर * चारि प्रकारजीव सचराचर

दो० जोनहिं देषा नहिं सुना, जो मन हूँन समाइ ॥
सोसब अद्भुत देषेउँ, बरनि कवनि बिधि जाइ ॥
एक एक ब्रह्मांड महँ, रहौं बरष सत एक ॥
एहिबिधि देषत फिरौंमें, अंड कटाह अनेक ॥

लोकलोकप्रतिभिन्नबिधाता * भिन्नबिस्नुसिवमनुदिसित्राता
नर गंधर्ब भूत बेताला * किन्नरनिसिचरपसुषगब्याला
देव दनुज गननाना जाती * सकलजीवतहँआनहिभांती
महिसरिसागरसरगिरिनाना * सबप्रपंच तहँ आनै आना
अंडकोस प्रतिप्रतिनिजरूपा * देषेउँजिनसअनेक अनूपा
अवधपुरी प्रतिभुवननिनारी * सरजू भिन्नभिन्न नरनारी
दसरथ कौसल्या सुनुताता * बिबिधरूपभरतादिकभ्राता
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा * देषौं बाल बिनोद अपारा

दो० भिन्न भिन्नमैं दीषसब, अतिबिचित्र हरिजान ॥
अगनित भुवन फिरेउँप्रभु, रामन देषेउँ आन ॥
सोइसिसुपनसोइसोभा, सोइक्रिपालरघुबीर ॥
भुवनभुवनदेषताफिरौं, प्रेरितमोहसमीर ॥ ८१ ॥

भ्रमतमोहि ब्रह्मांड अनेका * बीते मनहु कलप सतएका
फिरतफिरतनिजआश्रमआएउँ * तहँपुनिराहिकछुकालगँवाएउँ
निजप्रभुजन्मअवधसुनिपाएउँ * निर्भरप्रेमहरषि उठिधाएउँ
देषौं जन्म महोत्सव जाई * जेहिबिधिप्रथम कहामैंगाई

राम उदर देषेउँ जगजाना * देषत बनइन जाइ बषाना
तहँ पुनि देषेउँ रामसुजाना * मायापति कृपाल भगवाना
करौं बिचार बहोरि बहोरी * मोहकलिलब्यापितमतिमोरी
उभ एघरी महँ मैं सबदेषा * भएउँ भ्रमातिमनमोहबिसेषा

दो० देषिकृपाल बिकल मोहि, बिहँसे तब रघुबीर ॥
बिहँसतहीं मुष बाहेर, आएउँ सुनु मतिधीर ॥
सोइ लरिकाई मोसन, करन लगे पुनिराम ॥
कोटि भांति समुझावौं, मनन लहै बिश्राम ॥ ८३ ॥

देषिचरित येह सो प्रभुताई * समुझत देह दसा बिसराई
धरनिपरेउँमुषआव न बाता * त्राहित्राहिआरतजनत्राता
प्रेमाकुलप्रभुमोहि बिलोकी * निजमायाप्रभुता तबरोकी
करसरोजप्रभुमम सिरधरेऊ * दीनदयाल सकल दुष हरेऊ
कीन्हराममोहिबिगतबिमोहा * सेवक सुषद कृपा संदोहा
प्रभुताप्रथमबिचारिबिचारी * मनमहँहोइ हरषअतिभारी
भगत बछलता प्रभुकै देषी * उपजीममउर प्रीतिबिसेषी
सजलनयनपुलकित करजोरी * कीन्हिउँबहुबिधिबिनयबहोरी

दो० सुनि सप्रेम मम बानी, देषिदीन निज दास ॥
बचन सुषद गंभीर मृदु बोले रमा निवास ॥
काग भसुंडी माँगुबर, अति प्रसन्न मोहिजानि ॥
अनिमादिकसिधिअपररिधि, मोछसकलसुषषानि ८३

ज्ञानबिवेक बिरति बिज्ञाना * मुनिदुर्लभगुनजे जगनाना
आजु देउँ सब संसयनाहीं * मागुजोतोहिभावमनमाहीं
सुनिप्रभुबचनअधिकअनुरागेउं * मनअनुमानकरनतबलागेउँ

प्रभुकह देन सकल सुषमही ❋ भगति आपनी देन न कही
भगतिहीन गुनसबसुष ऐसे ❋ लवनबिना बहुबिंजन जैसे
भजनहीन सुषकवने काजा ❋ असबिचारिबोलेउँषगराजा
जौंप्रभुहोइ प्रसन्न बरदेहू ❋ मोपर करहु कृपा अरु नेहू
मनभावत बर मागउँस्वामी ❋ तुम्ह उदारउर अंतरजामी

दो० अविरल भगति बिसुद्धि तव, श्रुतिपुरान जोगाव ॥
जेहिषोजत जोगीसमुनि, प्रभुप्रसाद कोउपाव ॥
भगत कल्पतरु प्रनतहित, कृपासिंधु सुषधाम ॥
सोइनिजभगतिमोहि प्रभु, देहुदयाकरिराम ॥ ८४ ॥

एवमस्तुकहिरघुकुलनायक ❋ बोले बचन परम सुषदायक
सुनुवायसतइँ सहज सयाना ❋ काहेनमागसि असबरदाना
सबसुषषानि भगतितैंमागी ❋ नहिंजगकोउतोहिसमबडभागी
जोमुनिकोटिजतननहिंलहहीं ❋ जेजपजोग अनलतनदहहीं
रीझेउँ देषि तोरि चतुराई ❋ मागेहुभगतिमोहिअतिभाई
सुनु बिहँग प्रसाद अब मोरे ❋ सबसुभगुनबसिहहिं उरतोरे
भगतिज्ञान बिज्ञान बिरागा ❋ जोगचरित्र रहस्य बिभागा
जानबतैं सबही कर भेदा ❋ मम प्रसादनहिं साधनषेदा

दो० माया संभव भ्रम सब, अब न ब्यापिहहिं तोहि ॥
जानेसु ब्रह्मअनादि अज, अगुन गुनाकर मोहि ॥
मोहि भगत प्रिय संतत, अस बिचारि सुनुकाग ॥
कायबचनमनममपद, करेसुअचलअनुराग ॥ ८५ ॥

अब सुनुपरमबिमलममबानी ❋ सत्यसुगमनिगमादिबषानी
निज सिद्धांत सुनावौं तोही ❋ सुनिमनधरुसबतजिभजुमोही

मम माया संभव संसारा * जीव चराचरविविध प्रकारा
सबममप्रियसबममउपजाए * सबते अधिक मनुजमोहिभाए
तिन्हमहँद्विजद्विजमहँश्रुतिधारी * तिन्हमहँनिगमधर्म अनुसारी
तिन्हमहँप्रियविरक्तपुनिज्ञानी * ज्ञानिहुते अतिप्रिय विज्ञानी
तिन्हतेपुनिमोहिप्रियनिजदासा * जेहिगति मोरिनदूसरिआसा
पुनिपुनि सत्यकहौं तोहिपाहीं * मोहिसेवकसमप्रिय कोउनाहीं
भगतिहीन विरंचि किनहोई * सबजीवहु समप्रिय मोहिसोई
भगतिवंत अतिनीचौ प्रानी * मोहिप्रानप्रियअसि ममबानी

दो० सुचिसुसीलसेवकसुमति, प्रिय कहु काहि न लाग ॥
श्रुतिपुरान कहनीतिअसि, सावधान सुनुकाग ८६ ॥

एकपिताके विपुल कुमारा * होहिंप्रिथकगुनसीलअचारा
कोउपंडितकोउतापसज्ञाता * कोउ धनवंतसूर कोउदाता
कोउ सर्बज्ञ धर्मरत कोई * सबपरपितहिप्रीति समहोई
कोउपितुभगतबचन मनकर्मा * सपनेहु जानन दूसर धर्मा
सोसुतप्रिय पितुप्रानसमाना * जद्यपिसोसबभाँतिअयाना
एहिविधि जीव चराचर जेते * त्रिजगदेवनर असुरसमेते
अषिलविस्वयहमोरउपाया * सबपरमोहि बराबरि दाया
तिन्हमहँजोपरिहरिमदमाया * भजहिमोहिमन बचअरुकाया

दो० पुरुष नपुंसक नारिवा, जीव चराचर कोइ ॥
सर्बभाव भजकपट तजि, मोहिपरम प्रिय सोइ ॥

सो० सत्यकहौं षगतोहि, सुचि सेवक मम प्रान प्रिय ॥
असविचारिभजुमोहि, परिहरिआस भरोससब ८७॥

कबहूँकालन ब्यापिहितोही * सुमिरेसुभजेसुनिरंतरमोही

प्रभुवचनामृतसुनिनअघाऊँ ❋ तनपुलकितमनअति हरषाऊँ
सोसुष जानैमन अरुकाना ❋ नहिं रसनापहिंजाइ बषाना
प्रभुसोभासुषजानहिंनयना ❋ कहिकिमिसकहिंतिन्हहिनहिबयना
वहुबिधिमोहिप्रवोधिसुषदेई ❋ लगे करन सिसु कौतुक तेई
सजलनयनकछुमुषकरिरूषा ❋ चितैमातु लागी अति भूषा
देषि मातु आतुर उठिधाई ❋ कहि मृदुबचनलिए उरलाई
गोद राषि कराव पयपाना ❋ रघुपतिचरितललितकरगाना

सो० जेहिसुषलागि पुरारि, असुभ वेषकृत सिवसुषद ॥
अवधपुरी नर नारि, तेहिसुष महँसंतत मगन ॥
सोई सुष लवलेस, जिन्ह बारक सपनेहु लहेउ ॥
तेनहिंगनहिं षगेस, ब्रह्मसुषहि सज्जन सुमति ८८ ॥

मैं पुनिअवधरहेउँकछुकाला ❋ देषेउँबाल बिनोद रसाला
रामप्रसाद भगति बरपाएउँ ❋ प्रभुपदवंदिनिजाश्रमआएउँ
तबते मोहिन व्यापी माया ❋ जवतेरघुनायक अपनाया
यह सब गुप्त चरितमैं गावा ❋ हरिमायाजिमिमोहिनचावा
निजअनुभवअबकहौंषगेसा ❋ बिनुहरिभजननजाहिंकलेसा
राम कृपाबिनु सुनु षगराई ❋ जानिन जाइ राम प्रभुताई
जाने बिनुन होइ परतीती ❋ बिनुपरतीति होइनहिंप्रीती
प्रीतिबिनानहिंभगतिदिढाई ❋ जिमिषगपति जलकैचिकनाई

सो० बिनुगुर होइकिज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग बिनु ॥
गावहिं वेद पुरान, सुषकिलहिअ हरिभगतिबिनु ॥
कोउबिश्राम किपाव, तातसहज संतोष बिनु ॥
चलैकिजलबिनुनाव, कोटिजतनपचिपचिमरिअ ८९

बिनु संतोष न कामनसाहीं * कामअछतसुषसपनेहुँनाहीं
रामभजनबिनुमिहिंकि कामा * थलविहीनतरुकबहुँकिजामा
बिनु बिज्ञान किसमताआवै * कोउअवकासकिनभ बिनुपावै
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई * बिनुमहिगंधकि पावै कोई
बिनुतपतेजकिकराविस्तारा * जलबिनुरसकि होइ संसारा
सीलकिमिलबिनुबुधसेवकाई * जिमिबिनुतेजनरूपगोसांई
निज सुषबिनुमनहोइकिथीरा * परसकिहोइविहीन समीरा
कवनि उसिद्धकिबिन बिस्वासा * बिनुहरिभजनन भवभयनासा
दो॰ बिनुबिस्वास भगति नहिं, तेहिबिनुद्रवहिंनराम ।
राम कृपाबिनु सपनेहु, जीवन लह बिश्राम ॥
सो॰ असबिचारमतिधीर, तजिकुतर्क संसय सकल ॥
भजहु रामरघुबीर, करुनाकरसुंदरसुषद ॥ ९० ॥
निजमतिसरिसनाथ मैं गाई * प्रभुप्रताप महिमा षगराई
कहेउँनकछुकरिजुगुति विसेषा * यहसबमैंनिजनयनन्हिदेषा
महिमा नाम रूप गुनगाथा * सकलअमितअनंतरघुनाथा
निजनिजमतिमुनिहरिगुनगावहिं * निगमसेषसिवपारनपावहिं
तुम्हहिआदिषगमसकप्रजंता * नभउडाहिनहिपावहिंअंता
तिमिरघुपतिमहिमा अवगाहा * तातकबहुँकोउपावकिथाहा
रामकामसतकोट सुभगतन * दुर्गाकोटिअमितअरिमर्दन
सक्रकोटिसतसारिसविलासा * नभसतकोटिअमितअवकासा
दो॰ मरुतकोटिसत बिपुल बल, रविसतकोटिप्रकास ।
ससिसत कोटि सुसीतल, समन सकल भवत्रास ॥
कालकोटि सत सरिस अति, दुस्तर दुर्ग दुरंत ।
धूमकेतुसतकोटिसम दुराधरष भगवंत ॥ ९१ ॥

प्रभुअगाध ततकोटिपताला * समनकोटिसतसरिसकराला
तरिथअमितकोटिसमपावन * नामअषिलअघपूगनसावन
हिमगिरिकोटिअचलरघुबीरा * सिंधुकोटिसत सम गंभीरा
कामधेनु सतकोटि समाना * सकलकामदायकभगवाना
सारदकोटि अमित चतुराई * बिधिसतकोटिसृष्टि निपुनाई
बिश्नुकोटिसत पालनकर्त्ता * रुद्रकोटि सत सम संघर्त्ता
धनदकोटिसतसमधनवाना * माया कोटि प्रपंचनिधाना
भारधरनसतकोटि अहीसा * निरवधिनिरुपमप्रभु जगदीसा

छं० निरुपमन उपमाआनरामसमान रामनिगमकहै ।
जिमिकोटिसत षद्योतसमरबिकहतअतिलघुतालहै ॥
एहिभाँतिनिजनिजमतिबिलासमुनीसहरिहि बषानहीं
प्रभुभाव गाहकअतिकृपाल सप्रेमसुनिसुषमानहीं ॥

दो० राम अमित गुन सागर, थाहकि पावै कोइ ।
संतनसनजसकछु सुनेउँ, तुम्हहिंसुनाएउँसोइ ॥

सो० भावबस्य भगवान, सुषनिधान करुना भवन ।
तजिममतामदमान, भजिअसदासीतारवन ॥९२॥

सुनि भुसुंडिकेबचन सुहाए * हरषित षगपतिपंष फुलाए
नयननीरमनअति हरषाना * श्रीरघुपति प्रताप उरआना
पाछिलमोहसमुझिपछिताना * ब्रह्मअनादिमनुजकरिमाना
पुनिपुनिकागचरनासिरनावा * जानि राम सम प्रेमबढावा
गुरबिनुभव निधितरैनकोई * जौंबिरंचि संकर सम होई
संसय सर्पग्रसेउमोहिताता * दुषदलहरिकुतर्क बहु बाता
तवसरूप गारुडिरघुनायक * मोहिजियाएउजनसुषदायक

तवप्रसादममभोह नसाना * रामरहस्य अनूपम जाना

दो॰ ताहि प्रसंसि बिबिधि बिधि, सीसनाइ कर जोरि ॥
बचन बिनीत सप्रेममृदु, बोलेउ गरुड बहोरि ॥
प्रभु अपने अविवेकते, बूझौं स्वामी तोहि ॥
कृपासिंधुसादरकहहु, जानिदासनिज मोहि ॥ ९३ ॥

तुम्ह सरवज्ञ तज्ञतमपारा * सुमतिसुसीलसरल आचारा
ज्ञानविरति विज्ञाननिवासा * रघुनायकके तुम्ह प्रियदासा
कारन कवन देहयह पाई * तातसकलमोहिकहहु बुझाई
रामचरित सरसुंदरस्वामी * पाएहुकहाँ कहहु नभगामी
नाथसुनामैं असासिवपाहीं * महाप्रलयहुँ नास तव नाहीं
मुधाबचन नहिंईश्वरकहईं * सोउ मोरे मन संसय अहई
अगजग जीव नागनरदेवा * नाथसकलजग कालकलेवा
अंडकटाहअमितलयकारी * काल सदादुरति क्रमभारी

सो॰ तुम्हहिंनव्यापतकाल, अतिकराल कारन कवन ॥
मोहि सोकहहु कृपाल, ज्ञान प्रभाव किजोगबल ॥

दो॰ प्रभु तव आश्रम आए, मोर मोह भ्रम भाग ॥
कारनकवनसोनरथसब, कहहु सहित अनुराग ॥ ९४ ॥

गरुडगिरासुनिहरषेउ कागा * बोलेउ उमापरम अनुरागा
धन्यधन्यतवमतिउरगारी * प्रस्नतुम्हारिमोहिअतिप्यारी
सुनितव प्रस्नसप्रेम सुहाई * बहुतजनमकैसुधिमोहिआई
सबनिज कथाकहौं मैंगाई * तात सुनहु सादर मनलाई
जपतपमखसमदमब्रतदाना * बिरति विवेकजोग विज्ञाना
सबकर फलरघुपतिपदप्रेमा * तेहिबिनु कोउनपावै छेमा

एहितन राम भगतिमैंपाई * तातें मोहि ममताअधिकाई
जेहितें कछुनिजस्वारथहोई * तेहिपर ममताकरसब कोई
सो॰ पन्नगारिअसि नीति श्रुतिसम्मत सज्जन कहहिं ॥
अतिनीचहुसनप्रीति, करिअजानिनिजपरम हित ॥
पाट कीट तें होइ, तेहि तें पाटंबर रुचिर ॥
कृमपालै सब कोइ, परम अपावन प्रान सम ॥९५॥
स्वारथ साँच जीवकहँएहा * मनक्रम बचनरामपद नेहा
सोइपावनसोइसुभगसरीरा * जोतन पाइ भजै रघुबीरा
रामबिमुषलहिविधिसमदेही * कविकोविदन प्रसंसहि तेही
रामभगतिएहितनउरजामी * तातेमोहि परमप्रिय स्वामी
तजौंन तननिजइछामरना * तनबिनुवेदभजननहिं वरना
प्रथममोहमोहिबहुतबिगोवा * रामबिमुष सुषकबहुँन सोवा
नाना जन्म कर्मपुनिनाना * किए जोग जपतपमष दाना
कवनजोनिजनमेउजहँनाहीं * मैंषगेसभ्रमिभ्रमि जगमाहीं
देषेउँकरि सबकरम गोसाईं * सुषीनभएउँ अबहि कीनाईं
सुधिमोहिनाथजन्मबहुकेरी * सिवप्रसादमति मोहन घेरी
दो॰प्रथम जन्मके चरित अब, कहौं सुनहु विहगेस ॥
सुनि प्रभु पदरति उपजै, जातें मिटहि कलेस ॥
पूरुव कल्प एक प्रभ, जुग कलिजुग मल मूल ॥
नरअरुनारिअधर्मरत, सकलनिगम प्रतिकूल ॥९६॥
तेहिंकलिजुगकोसलपुरजाई * जनमत भएउँ सूद्र तनपाई
सिवसेवकमनक्रमअरुवानी * आनदेवनिंदक अभिमानी
धनमदमत्त परम बाचाला * उग्रबुद्धि उरदंभ बिसाला

जदपिरहे उरगपतिरजधानी * तदपिनकछुमहिमातबजानी
अबजानामइँ अवधप्रभावा * निगमागम पुरानअसगावा
कवनेहुजन्म अवधवसजोई * राम परायन सो परि होई
अवधप्रभाव जान तबप्रानी * जबउरबसहिं रामधनुपानी
सोकलिकालकठिनउरगारी * पापपरायन सब नरनारी
दो० कलिमल ग्रसेधर्मसब, लुप्त भएसदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमति कल्पिकरि, प्रगटकिएबहुपंथ॥
भएलोग सबमोहबस, लोभग्रसे सुभकर्म।
सुनुहरिजानज्ञाननिधि, कहौंकछुककलिधर्म॥ ९७॥
बरनधर्मनहिं आश्रम चारी * श्रुतिबिरोधरत सबनरनारी
द्विजश्रुतिबेचकभूपप्रजासन * कोउनहिंमाननिगमअनुसासन
मारगसोइजाकहँजोइभावा * पंडितसोइ जो गालबजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँसंत कहै सब कोई
सोइसयान जो परधन हारी * जोकरदंभ सोबड आचारी
जोकह झूठ मसषरी जाना * कलिजुगसोइगुनवंतबषाना
निराचार जोश्रुतिपथत्यागी * कलिजुगसोइज्ञानीसोबिरागी
जाकेनषअरुजटा बिसाला * सोइतापसप्रसिद्धकलिकाला
दो० असुभ बेष भूषनधरें, भक्षा भक्ष जेपाहिं।
तेइजोगी तेइसिद्धनर, पूजितकलिजुगमाहिं॥
सो० जेअपकारी चार, तिन्हकरगौरवमान्यतेइ।
मनक्रमबचन लवार, तेइवकताकलिकालमहँ॥ ९८॥
नारिबिवसनरसकलगोसाँई * नाचहिंनट मर्कट की नाईं
सूद्रद्विजन्ह उपदेसहिंज्ञाना * मेलिजनेऊ लेहिं कुदाना

सबनरकाम लोभरत क्रोधी * देवबिप्र गुरुसंत बिरोधी
गुनमंदिर सुंदर पतित्यागी * भजहिंनारिपरपुरुषअभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सृंगारनवीना
गुरसिष बधिर अंधकालेषा * एकनसुनै एकनहिं देषा
हरैसिष्यधन सोक न हरई * सोगुर घोरनरकमहँ परई
मातुपिताबालकन्हिबोलावहिं * उदरभरैसोइ धर्मसिषावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनुनारिनर, कहहिंनदूसरिबात ।
कौडीलागि मोहबस, करहिं बिप्रगुरघात ॥
बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन, हमतुमते कछुघाटि ।
जानैब्रह्मसोबिप्रबर, आँषिदेषावहिंडाटि ॥ ९९ ॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोहद्रोह ममता लपटाने
तेइअभेदवादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुगकर
आपुगए अरु तिन्हहूँघालहिं * जेकहुँसतमारगप्रतिपालहिं
कल्पकल्पभरिएकएकनरका * परहिंजेदूषहिंश्रुतिकरितरका
जेवरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपचकिरातकोलकलवारा
नारिमुई गृह संपति नासी * मूडमुडाइ होहिं सन्यासी
तेबिप्रनसन आपु पुजावहिं * उभयलोकनिजहाथनसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुपकामी * निराचारसठ बृषलीस्वामी
सुद्रकरहिं जपतपब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनरकल्पितकरहिंअचारा * जाइनबरनिअनीतिअपारा

दो० भए बरनसंकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग ।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग ॥

श्रुति संमत हरिभक्ति पथ, संजुतबिरति बिबेक ॥
तेहिनचलहिंनरमोहबस, कल्पहिंपंथअनेक ॥१००॥

बहुदाम सवारहिं धाम जती * बिषयाहरिलीन्हिरहीबिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुकतातनजातकही
कुलवंतिनिकारहिंनारिसती * गृहआनहिं चेरिनिबेरिगती
सुतमानहिंमातुपितातबलौं * अबलानन दीषनहीं जबलौं
ससुरारि पिआरि लगीजबतें * रिपुरूप कुटुंब भए तबतें
नृप पाप परायन धर्मनहीं * करिदंडबिडंब प्रजानितहीं
धनवंत कुलीन मलीन अपी * द्विजचिन्हजनेउउघारतपी
नहिमान पुरानन वेदहिजो * हरि सेवकसंतसही कलिसो
कबिबृंद उदार दुनी नसुनी * गुनदूषक ब्रातन कोपिगुनी
कलिबारहिं बार दुकाल परै * बिनु अन्नदुषी सबलोग मरै

दो० सुनु षगेस कलि कपट हठ, दंभ द्वेष पाषंड ॥
मान मोह मारादि मद, व्यापि रहे ब्रह्मंड ॥
तामस धर्म करहिं नर, जपतप ब्रतमष दान ॥
देवनवरषहिंधरनिपर, वएनजामहिंधान ॥ १०१ ॥

अबलाकच भूषन भूरि छुधा * धनहीनदुषी ममता बहुधा
सुष चाहहिं मूढन धर्म रता * मतिथोरिकठोरिनकोमलता
नरपीडित रोगन भोगकहीं * अभिमानबिरोधअकारनहीं
लघु जीवन संबत पंच दसा * कलपांतननास गुमानअसा
कलिकालबिहालकिएमनुजा * नहिंमानतकोअनुजातनुजा
नहिंतोष बिचारन सीतलता * सबजातिकुजातिभएमँगता
इरिषा परुषाक्षर लोलुपता * भरिपूरिरही ममता बिगता

सबलोगबियोग बिसोक हए ❀ बरनाश्रम धर्म अचार गए
दमदान दयानहिं जानपनी ❀ जडता परबंचनताति घनी
तनपोषक नारि नरा सगरे ❀ परनिंदकजे जगमो बगरे

दो॰ सुनुव्यालारि काल कलि, मल अवगुन आगार ॥
गुनौबहुत कलि जुगकर, बिनु प्रयास निसतार ॥
कृतजुग त्रेता द्वापर, पूजा मष अरु जोग ॥
जोगतिहोइसोकलिहरि, नामतेंपावहिंलोग ॥ १०२ ॥

कृतजुग सबजोगी बिज्ञानी ❀ करिहरिध्यानतरहिं भवप्रानी
त्रेताबिबिध जग्य नर करहीं ❀ प्रभुहि समापिकर्मभव तरहीं
द्वापरकरि रघुपति पद पूजा ❀ नरभवतरहिं उपायन दूजा
कलिजुगकेवलहरिगुनगाहा ❀ गावतनर पावहिं भवथाहा
कलियुगजोगनजग्यनज्ञाना ❀ एकअधार राम गुनगाना
सबभरोसताजिजोभजरामहि ❀ प्रेमसमेत गावगुन ग्रामहिं
सोइभवतर कछुसंसय नाहीं ❀ नामप्रतापप्रगट कलिमाहीं
कलिकर एकपुनीत प्रतापा ❀ मानस पुन्यहोहिं नहिपापा

दो॰ कलिजुग समजुगआन नहिं, जौंनरकर बिश्वास ॥
गाइराम गुनगन बिमल, भवतर बिनहिंप्रयास ॥
प्रगट चारिपद धर्मकें, कलिमहँ एक प्रधान ॥
जेनकेन बिधि दीन्हे, दानकरै कल्यान ॥ १०३ ॥

नितजुग धर्म होहिं सबकेरे ❀ हृदय राम मायाके प्रेरे
सुद्ध सत्व समता बिग्याना ❀ कृतप्रभाव प्रसंन मनजाना
सत्वबहुत रजकछु रतिकर्मा ❀ सबबिधिसुष त्रेताकर धर्मा
बहुरजस्वल्पसत्व कछुतामस ❀ द्वापर धर्महरष भयमानस

तामम बहुत रजोगुन थोरा ❀ कलिप्रभावविरोधचहुँओरा
बुधजुग धर्मजानिमनमाहीं ❀ तजि अघमंरतिधर्म कराहीं
कालधर्मनहिं व्यापहिंताही ❀ रघुपतिचरनप्रीतिअति जाही
नटकृतविकटकपटपगराया ❀ नटसेवकहिन व्यापै माया

दो॰ हरिमायाकृतदोषगुन, बिनुहरि भजनन जाहिं ।
भजियरामतजिकामसब, असबिचारमनमाहिं ॥
तेहिकलिकालबरषबहु, बसेउँअवध बिहगेस मा॰पा॰ २९
परेउदुकालबिपतिबस, तब मैं एगउँ बिदेस ॥१०४॥

गएउँ उजेनी सुनु उरगारी ❀ दीन मलीन दरिद्र दुषारी
गएँ कालकछु संपति पाई ❀ तहंपुनि करौं संभु सेवकाई
विप्रएक बैदिक सिव पूजा ❀ करैसदातेहि काजन दूजा
परम साधु परमारथ बिंदक ❀ संभुउपासकनहिंहरिनिंदक
तेहि सेवौं मैं कपट समेता ❀ द्विजदयालअतिनीति निकेता
वाहिजनम्र देषि मोहिसाईं ❀ विप्र पढाव पुत्र की नाईं
संभुमंत्रमोहिद्विजवरदीन्हा ❀ सुभउपदेसबिबिधबिधकीन्हा
जपौंमंत्र सिव मंदिर जाई ❀ हृदयदंभअहमितिअधिकाई

दो॰ मैं षलमल संकुल मति, नीच जाति बस मोह ॥
हरिजन द्विजदेषे जरौं, करौं विष्णु कर द्रोह ॥

सो॰ गुरनित मोहि प्रबोध, दुषित देषि आचरनमम ।
मोहिउपजै अतिक्रोध, दंभिहिनीतिकिभावई १०५

एकबार गुरु लीन्ह बोलाई ❀ मोहिनीतिबहुभांति सिषाई
सिव सेवाकर फलसुत सोई ❀ अबिरलभगतिरामपद होई
रामहिंभजहिंतातसिवधाता ❀ नरपांवर कै केतिक बाता

जासुचरनअजसिवअनुरागी * तासुद्रोहसुषचहसिअभागी
हरिकहँ हरिसेवक गुरकहेऊ * सुनिषगनाथहृदयममदहेऊ
अधम जाति मैं बिद्या पाए * भएउँजथाअहिदूधपिआए
मानीकुटिलकुभाग्यकुजाती * गुरकर द्रोहकरौं दिन राती
अतिदयालगुरस्वल्पनक्रोधा * पुनिपुनिमोहिसिषावसुबोधा
जेहिते नीच बडाई पावा * सोप्रथमहिहठिताहिनसावा
धूमअनल संभव सुनु भाई * तेहि बुझावघन पदवी पाई
रज मगपरी निरादर रहई * सबकर पदप्रहारनित सहई
मरुतउडावप्रथम तेहिभरई * पुनिनृपनयनकिरीटन्हि परई
सुनुषगपतिअसमसमुझिप्रसंगा * बुधनहिंकरहिंअधमकरसंगा
कबिकोबिदगावहिंअसनीती * षलसनकलहनभलनहिं प्रीती
उदासीनानितरहिअ गोसाईं * षलपरिहरिअस्वानकीनाईं
मैंषलहृदयकपट कुटिलाई * गुरहित कहैंनमोहि सोहाई

दो० एकबार हरमंदिर, जपतरहेउँ सिव नाम ।
गुरआएउ अभिमानतें, उठिनहिंकीन्ह प्रनाम ॥
सोदयालनहिं कहेउ कछु, उरन रोष लवलेस ॥
अतिअघगुर अपमानता, सहिनहिंसके महेस १०६॥

मंदिर माझ भई नभ बानी * रेहतभाग्य अज्ञअभिमानी
जद्यपि बतगुरके नाहिंक्रोधा * अतिकृपालचितसम्यकबोधा
तदपि सापसठ देहौं तोही * नीतिबिरोध सुहाइन मोही
जौंनहिं दंडकरौं षलतोरा * भ्रष्टहोइ श्रुति मारग मोरा
जेसठ गुरसनइरिषा करहीं * रौरव नरक कोटिजुगपरहीं
त्रिजगजोनिपुनिधरहिंसरीरा * अयुतजन्मभरिपावहिंपीरा

बैठिरहेसि अजगरइवपापी * सर्पहोसिपलमलमतिब्यापी
महा विपट कोटरमहँजाई * रहुअधमाधमअधगति पाई

दो० हाहाकार कीन्ह गुर, दारुनसुनि सिवसाप ॥
कंपित मोहि बिलोकि अति, उरउपजा परिताप ॥
करि दंडवत सप्रेमद्विज, सिवसन्मुष करजोरि ॥
बिनयकरतगदगदस्वर, समुझिघोरगतिमोरि॥१०७॥

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं * विभुंव्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं
निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं * चिदाकासमाकासवासंभजेहं
निराकार मोंकारमूलं तुरीयं * गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं
करालंमहाकालकालंकृपालं * गुणागार संसार पारं नतोहं
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गँभीरं * मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरं
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा * लसद्भालबालें दुकंठे भुजंगा
चलत्कुंडलं भ्रूसुनेत्रंविसालं * प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं
मृगाधीशचर्मांवरं मुंडमालं * प्रियंशंकरंसर्बनाथं भजामि
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं * अखंडंअजंभानुकोटिप्रकाशं
त्रयःशूलनिर्मूलनंशूलपाणिं * भजेहंभवानीपतिंभावगम्यं
कलातीतकल्याणकल्पांतकारी * सदासज्जनानंददाता पुरारी
चिदानंदसंदोहमोहापहारी * प्रसीद प्रसीदप्रभोमन्मथारी
नयावदुमानाथपादारविंदं * भजंतीह लोके परेवानराणां
नतावत्सुखंशांतिसंतापनाशं * प्रसीतप्रभोसर्व भूताधिवासं
नजानामियोगंजपंनैवपूजा * नतोहं सदासर्वदाशंभुतुभ्यं
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं * प्रभोपाहिआपंनमामीशशंभो

श्लोक—रुद्राष्टक मिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ॥
जेपठंतिनराभक्त्यास्तेषांशंभुःप्रसीदति ॥

दो॰ सुनि बिनती सर्वज्ञ सिव, देखिबिप्र अनुरागु ।
पुनिमंदिर नभबानी, भइद्विजवरवरमागु ॥
जौंप्रसन्न प्रभु मोपर, नाथदीन परनेहु ।
निजपदभगति देइप्रभु, पुनिदूसर बरदेहु ॥
तवमायाबस जीवजड, संतत फिरै भुलान ।
तिहिपर क्रोधनकरिअ प्रभु, कृपासिंधु भगवान ॥
संकर दीनदयाल अब, इहिपरहोहु कृपाल ।
सापअनुग्रह होइ जेहि, नाथ थोरही काल ॥

एहिकर होइपरमकल्याना * सोइकरहुअब कृपा निधाना
बिप्रगिरासुनिपरहितसानी * एवमस्तुइतिभइ नभबानी
जदपिकीन्हएहिंदारुनपापा * मैंपुनिदीन्हक्रोधकरि सापा
तदपि तुम्हारिसाधुतादेषी * करिहौं एहिपरकृपा बिसेषी
छमा सील जेपर उपकारी * तेद्विजमोहिप्रियजथा षरारी
मोरसापद्विज ब्यर्थनजाइहि * जन्मसहसअवस्ययहपाइहि
जनमतमरतदुसहदुष होई * एहिस्वल्पौनहिंब्यापिहिसोई
कवनेउजन्म मटिहिनहिंज्ञाना * सुनहिसूद्रमम वचन प्रवाना
रघुपति पुरीजन्मतवभएऊ * पुनितैंमम सेवामन दएऊ
पुरी प्रभाउ अनुग्रह मोरे * रामभगति उपजिहि उरतोरे
सुनुममबचनसत्यअबभाई * हरितोषनब्रत द्विज सेवकाई
अवजनिकरेसुबिप्र अपमाना * जाने सुसंतअनंत समाना
इंद्रकुलिसमम सूलबिसाला * कालदंड हरिचक्र कराला

छूटी त्रिबिधि ईषना गाढ़ी * एक लालसा उरअतिबाढ़ी
रामचरन बारिज जब देषौं * तबनिजजन्मसुफलकरिलेषौं
जेहिपूछौंसोइमुनिअसकहई * इस्वर सर्व भूतमय अहई
निर्गुन मतनहिंमोहिसुहाई * सगुनब्रह्मरति उरअधिकाई

दो० गुरकेवचन सुरति करि, रामचरन मनलाग ॥
रघुपति जसगावत फिरौं, छनछननवअनुराग ॥
मेरु सिषरवट छाया, मुनि लोमस आसीन ॥
देषिचरन सिरनाएउँ, बचन कहेउँ अतिदीन ॥
सुनिममबचन बिनीत मृदु, मुनिकृपाल षगराग ॥
मोहिसादर पूँछत भए, द्विज आएहु केहिकाज ॥
तबमैं कहा कृपानिधि, तुम्हसर्बज्ञ सुजान ॥
सगुनब्रह्म अवराधन, मोहि कहहु भगवान ॥११०॥

तबमुनीस रघुपतिगुनगाथा * कहेकछुक सादर षगनाथा
ब्रह्मज्ञान रतमुनि बिज्ञानी * मोहिपरम अधिकारीजानी
लागे करन ब्रह्म उपदेसा * अज अद्वैत अगुन हृदयेसा
अकलअनीहअनामअरूपा * अनुभवगम्य अषंड अनूपा
मनगोतीतअमलअविनासी * निर्बिकारनिरवधिसुषरासी
सोतैं ताहि तोहिनहि भेदा * बारि बीचिइव गावहिं बेदा
बिबिधिभातिमोहिमुनिसमुझावा * निर्गुनमतममहृदयनआवा
पुनिमैं कहेउँनाइ पदसीसा * सगुन उपासन कहहुमुनीसा
रामभगतिजलममनमीना * किमिबिलगाइमुनीसप्रबीना
सोइउपदेस कहहुकरिदाया * निजनयनन्हिदेषौं रघुराया
भरिलोचनबिलोकिअवधेसा * तबसुनिहौं निर्गुन उपदेसा

मुनिपुनिकहिहरिकथा अनूपा * पंडितसगुनमत अगुननिरूपा
तब में निगुन मतकरि दूरी * सगुन निरूपों करिहठभूरी
उत्तर प्रति उत्तर में कीन्हा * मुनितनभए क्रोधकेचीन्हा
सुनुप्रभु बहुत अवज्ञा किए * उपजक्रोध ज्ञानिहुँ केहिए
अति संघरषन जौंकर कोई * अनल प्रगट चंदन ते होई

दो० बारंबार सकोप मुनि, करै निरूपन ज्ञान ॥
मैं अपनेमन बैठ तब, करौं बिबिधि अनुमान ॥
क्रोधकि द्वैत बुद्धिबिनु, द्वैतकिबिनु अज्ञान ॥
मायाबस परिछिन्नजड, जीवकिईस समान ॥१११॥

कबहुँकिदुषसबकरहितताके * तेहिकिदरिद्रपरसमनिजाके
परद्रोही की होहिं निसंका * कामीपुनिकिरहहिंअकलंका
बंसकिरह द्विजअन हितकीन्हे * कर्म किहोहिंस्वरूपहिचीन्हे
काहूसुमतिकिषलसँगजामी * सुभगतिपावकिपर त्रियगामी
भवकिपरहिपरमात्माबिंदक * सुषी किहोहिंकबहुँहरिनिंदक
राजकिरहै नीतिबिनु जाने * अघकीरहहिंहरिचरितबषाने
पावनजस किपुन्यबिनुहोई * बिनुअघअजसकि पावैकोई
लाभकिकिछुहरिभगतिसमाना * जेहिगावहिं श्रुतिसंतपुराना
हानिकिजगयेहिसमकिछुभाई * भजियन रामहि नरतनपाई
अघकिपिसुनतासमकछुआना * धर्मकिदया सरिसहरिजाना
एहिबिधिअमिति जुगुतिमनगुनऊँ * मुनि उपदेसन सादर सुनऊँ
पुनिपुनि सगुन पक्षमें रोपा * तबमुनिबोलेउबचनसकोपा
मूढपरमसिषदेउँनमानिसि * उत्तर प्रति उत्तरबहु आनसि
सत्यबचन बिस्वासनकरही * बायस इव सबहीते डरही

सठस्वपक्षतवहृदय बिसाला * सपदि होहि पक्षी चंडाला
लीन्हि सापमें सीस चढाई * नहिंकछुभय न दीनता आई
दो॰ तुरत भएउँ मैं कागतब, पुनिमुनि पदसिरनाइ ॥
सुमिरि रामरघुबंस मनि, हरषित चलेउँ उडाइ ॥
उमाजे रामचरन रत, बिगतकाम मदक्रोध ॥
निजप्रभुमयदेषहिंजगत, केहिसन करहिं बिरोध ॥
सुनुषगेसनहिंकछुरिषिदूषन * उरप्रेरक रघुबंस बिभूषन
कृपासिंधुमुनिमतिकरिभोरी * लीन्ही प्रेम परीक्षा मोरी
मनबचक्रममोहिनिजजनजाना * मुनिमतिपुनिफेरीभगवाना
रिषिमम महत सीलतादेषी * रामचरन बिस्वास बिसेषी
अतिबिसमैपुनिपुनिपछिताई * सादरमुनिमोहिलीन्हबोलाई
ममपरितोषबिबिधिबिधिकीन्हा * हरषितराममंत्र तब दीन्हा
बालकरूप रामकर ध्याना * कहेउमोहिमुनिकृपानिधाना
संदरसुषद मोहिअतिभावा * सोप्रथमहिं मैंतुमहिंसुनावा
मुनिमोहिकछुककालतहँराषा * रामचरित मानस तबभाषा
सादर मोहि यहकथासुनाई * पुनिबोले मुनिगिरा सुहाई
रामचरित सर गुप्त सुहावा * संभु प्रसाद तात मैं पावा
तोहिनिजभगतरामकरजानी * ताते मैं सब कहेउ बषानी
रामभगतिजिन्हकेउरनाहीं * कबहुँनतातकहियतिन्हपाहीं
मुनिमोहिबिबिधिभांति समुझावा * मइँसप्रेममुनिपद सिरनावा
निजकरकमलपरसिममसीसा * हरषितआसिषदीन्हिमुनीसा
रामभगति अबिरल उरतोरे * बसिहिसदा प्रसाद अबमोरे
दो॰ सदारामप्रिय होवतुम्ह, सुभगुन भवन अमान ॥
काम रूप इछा मरन, ज्ञान बिराग निधान ॥

जेहिआश्रम तुम्हबसबपुनि, सुमिरत श्रीभगवंत ॥
ब्यापिहि तहँन अबिद्या, जोजन एक प्रजंत॥११३॥

कालकरमगुन दोष सुभाऊ ❀ कछुदुषतुम्हहिनब्यापिहिकाऊ
रामरहस्यललितविधिनाना ❀ गुप्तप्रगट इतिहास पुराना
विनुश्रमतुम्हजानबसबसोऊ ❀ नितनवनेह रामपद होऊ
जोइक्षा करिहहु मनमाहीं ❀ हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं
सुनिमुनिआसिषसुनुमतिधीरा ❀ ब्रह्मगिराभइ गगन गँभीरा
एवमस्तु तवबचमुनिज्ञानी ❀ यहममभगतकर्म मन बानी
सुनिनभगिराहरषमोहिभएऊ ❀ प्रेम मगनसबसंसय गएऊ
करिबिनतीमुनिआयसुपाई ❀ पदसरोज पुनिपुनि सिरनाई
हरषसहितएहिआश्रमआएउँ ❀ प्रभुप्रसाद दुर्लभ बर पाएउँ
इहांबसतमोहिसुनुषगईसा ❀ बीतेकलप सात अरु बीसा
करौंसदा रघुपतिगुनगाना ❀ सादरसुनहि बिहंग सुजाना
जबजब अवधपुरी रघुबीरा ❀ धरहिंभगतहितमनुजसरीरा
तबतब जाइ रामपुर रहऊँ ❀ सिसुलीला बिलोकि सुषलहऊँ
पुनिउरराषिराममिसुरूपा ❀ निजआश्रम आवौं षगभूपा
कथासकलमैंतुम्हहिंसुनाई ❀ कागदेह जेहि कारन पाई
कहेउँतातसबप्रश्नतुम्हारी ❀ रामभगतिमहिमाअतिभारी

दो॰ तातें यहतनमोहि प्रिय, भएउ रामपद नेह ।
निजप्रभु दरसन पाएउँ, गएउसकलसंदेह ॥
भगति पक्ष हठकरि रहेउँ, दीन्हमहारिषिसाप ।
मुनिदुर्लभ बरपाएउँ, देषहुभजन प्रताप ॥ ११४ ॥

जेअसिभगतिजानिपरिहरहीं ❀ केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं

तेजड कामधेनु ग्रिहत्यागी * षोजतआकफिरहिंपयलागी
सुनुषगेस हरिभगतिबिहाई * जेसुष चाहहिंआन उपाई
तेसठ महासिंधु बिनुतरनी * पैरिपार चाहहिं जडकरनी
सुनिभुसुंडिके बचनभवानी * बोले गरुडहरषि मृदुबानी
तबप्रसाद प्रभुममउरमाहीं * संसयसोक मोहभ्रम नाहीं
सुनेउँ पुनीतरामगुनग्रामा * तुम्हरीकृपा लहेउँ बिश्रामा
एक बात प्रभु पूछौं तोही * कहहुबुझाइकृपानिधि मोही
कहहिं संत मुनिबेदपुराना * नहिंकछुदुर्लभ ज्ञान समाना
सोइमुनितुम्हसनकहेउगुसाँई * नहिंआदरेहु भगतिकी नांई
ज्ञानहिभगतिहिंअंतरकेता * सकलकहहुप्रभुकृपा निकेता
सुनिउरगारिबचनसुषमाना * सादर बोलेउकाग सुजाना
भगतिहिज्ञानहिनहिंकछुभेदा * उभय हरहिंभव संभव षेदा
नाथमुनीसकहहिंकछुअंतर * सावधान सोउसुनु बिहंगबर
ज्ञानबिराग जोग बिज्ञाना * एसब पुरुष सुनहु हरिजाना
पुरुषप्रताप प्रबलसबभाँती * अबलाअबलसहजजडजाती

दो० पुरुष त्याग सकनारिहि, जो बिरक्त मति धीर ।
जो कामी बिषया बस, बिमुष जो पद रघुबीर ॥

सो० सोउमुनिज्ञाननिधान, मृगनयनीबिधुमुषनिरषि ।
बिबसहोइहरिजान, नारिबिस्वमायाप्रगट ॥ ११५ ॥

इहाँन पक्षपात कछु राषौं * बेद पुरान संत मत भाषौं
मोहन नारि नारिके रूपा * पन्नगारि यह रीति अनूपा
मायाभगतिसुनहुतुम्हदोऊ * नारिबर्ग जानै सब कोऊ
पुनिरघुबीरहिंभगतिपियारी * मायाषलुनरतकी बिचारी

भगतिहि सानुकूल रघुराया ❀ तातेतेहिडरपतिअतिमाया
रामभगतिनिरुपमनिरुपाधी ❀ बसै जासुउर सदा अबाधी
तेहिबिलोकि मायासकुचाई ❀ करिनसकैकछुनिजप्रभुताई
असबिचारिजेमुनिबिज्ञानी ❀ जाचहिंभगतिसकलसुषषानी

दो० यह रहस्य रघुनाथ कर, वेगि न जानै कोइ ॥
जो जानै रघुपति कृपा, सपनेहु मोह न होइ ॥
औरौ ज्ञान भगति कर, भेद सुनहु सुप्रबीन ॥
जोसुनिहोइ रामपद, प्रीति सदा अबिछीन ॥११६॥

सुनहुतातयहअकथकहानी ❀ समुझत बनै न जाइ बषानी
ईश्वर अंसजीव अबिनासी ❀ चेतनअमल सहजसुषरासी
सोमाया बस भएउ गोसाँई ❀ बँध्योकीर मर्कट की नाँई
जड चेतनहिं ग्रंथिपरिगई ❀ जदपि मृषा छूटत कठिनई
तबते जीव भएउ संसारी ❀ छूटन ग्रंथिनहोइ सुषारी
श्रुति पुरानबहु कहेउ उपाई ❀ छूटनअधिकअधिक अरुझाई
जीवहृदय तम मोहबिसेषी ❀ ग्रंथिछूटि किमिपरै नदेषी
अस सजोग ईसजब करई ❀ तबहुँ कदाचित सोनिरुअरई
सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई ❀ जौंहरिकृपा हृदय बस आई
जपतपव्रतजमानियम अपारा ❀ जेश्रुतिकहसुभ धर्मअचारा
तेइत्रिनहरित चरैजब गाई ❀ भाव बछसिसुपाइ पेन्हाई
नोइनिवृति पात्र बिस्वासा ❀ निर्मलमनअहीर निजदासा
परम धर्ममयपय दुहि भाई ❀ अवटै अनलअकाम बनाई
तोष मरुत तब छमा जुडावै ❀ धृतिसमजावन देइ जमावै
मुदित मथै विचार मथानी ❀ दमअधार रजुसत्व सुबानी

तव मथिकाढिलेइ नवनीता ❀ विमलविरागसुभगसुपुनीता

दो० जोगअगिनि करि प्रगटतव· कर्म सुभासुभलाइ ॥
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत, ममता मल जरि जाय ॥
तव बिज्ञान निरूपिनी, बुद्धि बिसद घृत पाइ ॥
चित्त दियाभरि धरै दृढ, ममता दिअटि बनाइ ॥
तीनि अवस्था तीनि गुन, तेहि कपासतें काढि ॥
तूलतुरीय सँवारि पुनि, बाती करै सुगाढि ॥

सो० एहिविधिलेसैदीप, तेजरासि विज्ञानमय ॥
जातहिजासुसमीप, जरहिंमदादिक मलभमव ११७

सोहमास्मिइति वृत्तिअषंडा ❀ दीप सिपासोइपरम प्रचंडा
आतमअनुभवसुषसुप्रकासा ❀ तव भवमूल भेद भ्रमनासा
प्रबल अबिद्याकरपरिवारा ❀ मोह आदितम मिटैअपारा
तबसोइ बुद्धिपाइउँजियारा ❀ उरगृहबैठि ग्रंथि निरुआरा
छोरन ग्रंथि पावजों सोई ❀ तवयहजीव कृतारथ होई
छोरत ग्रंथि जानि षगराया ❀ विघ्न अनेक करैतव माया
रिद्धिसिद्धि प्रेरइ बहुभाई ❀ बुद्धिहि लोभदिषावहिं आई
कलबलछलकरिजाहिंसमीपा ❀ अंचल बात बुझावहिंदीपा
होइ बुद्धिजों परम सयानी ❀ तिन्हतन चितवनअनहितजानी
जौंतेहिबिघ्नबुद्धिनहिबाधी ❀ तौंबहोरिसुर करहिं उपाधी
इंद्री द्वार झरोषा नाना ❀ तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना
आवत देषहिं बिषयबयारी ❀ तेहठिदेहिं कपाट उघारी
जबसो प्रभंजन उरगृहजाई ❀ तबहिंदीप बिज्ञान बुझाई
ग्रंथिनछूटिमिटासोप्रकासा ❀ बुद्धिबिकलभइबिषयबतासा

इंद्रिन्हसुरन्ह ज्ञान सोहाई * विषय भोग पर प्रीतिसदाई
विषय समीरबुद्धिकृतभोरी * तेहिबिनुदीपकोबारं बहोरी

दो० तबफिरि जीव बिबिधि बिधि, पावैंसंसृत क्लेश ॥
हरिमाया अतिदुस्तर, तरिन जाइ बिहगेश ॥
कहत कठिनसमुझत कठिन, साधतकाठिन बिबेक
होइ घुनाक्षर न्यायजौं, पुनिप्रत्यूह अनेक ॥११८॥

ज्ञानपंथ कृपान कै धारा * परत षगेस होइ नहिं बारा
जो निबिघ्न पंथ निर्बहई * सोकैवल्य परम पद लहई
अतिदुर्लभकैवल्यपरमपद * संतपुराननिगमआगम बद
रामभजतसोइमुकुतिगोसांई * अनइछित आवै बरिआंई
जिमिथलबिनुजलरहिनसकाई * कोटिभांतिकोउकरइ उपाई
तथामोक्ष सुष सुनु षगराई * रहिनसकैहरिभगति बिहाई
असबिचारिहरिभगतसयाने * मुक्तिनिरादरभगति लुभाने
भगतिकरतबिनुजतनप्रयासा * संसृतमूल अबिद्या नासा
भोजनकरिअतृप्तिहितलागी * जिमिसोअसनपचवइजठरागी
असिहरिभगतिसुगमसुषदाई * कोअस मूढनजाहि सोहाई

दो० सेवक सेव्य भावबिनु, भव न तरिय उरगारि ॥
भजहु रामपद पंकज, अससिद्धान्त बिचारि ॥
जोचेतन कहं जड करै, जडहि करै चैतन्य ॥
अस समर्थ रघुनायकहि, भजहिंजीवतेधन्य ॥११९॥

कहेउँज्ञान सिद्धान्त बुझाई * सुनहुभगतिमनिकै प्रभुताई
रामभगतिचिंतामनिसुंदर * बसै गरुड जाकेउर अंतर
परमप्रकासरूप दिनराती * नहिंकछुचाहिअदिआघृतबाती

मोहदरिद्रनिकटनहिआवा ❀ लोभबातनहिंताहि बझावा
प्रबलअबिद्यातममिटिजाई ❀ हारहिंसकलसलभ समुदाई
षलकामादिनिकटनहिंजाहीं ❀ बसैभगति जाके उर माहीं
गरलसुधासमअरिहितहोई ❀ तेहिमनिबिनुसुषपावन कोई
ब्यापहि मानसरोगनभारी ❀ जिन्हकेबस सबजीव दुषारी
रामभगतिमनि उरबसजाके ❀ दुष लवलेसन सपनेहु ताके
चतुरसिरोमनितेइजगमाहीं ❀ जेमनिलागि सुजतनकराहीं
सोमनिजदपिप्रगट जगअहई ❀ रामक्रिपाबिनुनहिंकोउलहई
सुगम उपाय पाइबे केरे ❀ नरहत भाग्य देहिं भट भेरे
पावन पर्बत बेद पुराना ❀ राम कथारुचिराकर नाना
मर्मीसज्जनसुमतिकुदारी ❀ ग्यानबिराग नयन उरगारी
भावसहित षोजै जो प्रानी ❀ पावभगतिमनिसबसुषषानी
मोरेमन प्रभुअस बिस्वासा ❀ रामतेअधिकराम कर दासा
रामसिंधुघन सज्जनधीरा ❀ चंदन तरुहरि संत समीरा
सबकरफलहरिभगतिसुहाई ❀ सोबिनु संतन काहू पाई
असबिचारिजोइकरसतसंगा ❀ रामभगतितेहिसुलभबिहंगा

दो॰ ब्रह्मपयोनिधि मंदर, ज्ञान संत सुर आहि ॥
कथा सुधामथि काढहिं भगति मधुरता जाहिं ॥
बिरतिचर्म असिज्ञान मद, लोभ मोह रिपुमारि ॥
जयपाइअसोहरिभगति, देषुषगेस बिचारि ॥१२० ॥

पुनि सप्रेम बोलेउ षगराऊ ❀ जोकृपाल मोहिऊपर भाऊ
नाथ मोहिनिजसेवकजानी ❀ सप्तप्रश्नमम कहहु बषानी
प्रथमहिकहहुनाथमतिधीरा ❀ सबते दुर्लभ कवन सरीरा
बडदुषकवनकवनसुषभारी ❀ सोउसंछेपहि कहहु बिचारी

संतअसंत मरमतुम्हजानहु * तिन्हकरसहजसुभावबषानहु
कवनपुन्यश्रुतिबिदितबिसाला * कहहुकवनअघपरमकराला
मानसरोग कहहु समुझाई * तुम्हसर्बज्ञ कृपा अधिकाई
तातसुनहु सादर अतिप्रीती * मैं संछेप कहौं यह नीती
नरतनसमनहिंकवनिउँदेही * जीवचराचर जाचत जेही
नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी * ज्ञानबिरागभगति सुभदेनी
सोतनधरिहरिभजहिंनजेनर * होहिं बिषयरत मंद मंदतर
काँच किरिच बदलेते लेहीं * करते डारि परसमनि देहीं
नहिंदरिद्रसम दुषजगमाहीं * संतमिलनसमसुषजगनाहीं
परउपकार बचन मनकाया * संतसहज सुभाउ षगराया
संतसहहिं दुषपरहित लागी * परदुषहेतु असंत अभागी
भूर्जतरूसम संत कृपाला * परहितानितसहाबिपति बिसाला
सनइवषल परबंधन करई * षालकढाइबिपतिसहिमरई
षलबिनुस्वारथपरअपकारी * अहिमूषकइवसुनु उरगारी
परसंपदा बिनासि नसाहीं * जिमि ससिहतिहिमउपलबिलाहीं
दुष्टउदय जगअनरथ हेतू * जथाप्रसिद्ध अधम ग्रहकेतू
संत उदय संतत सुषकारी * बिस्वसुषद जिमिइंदुतमारी
परमधर्मश्रुतिबिदितअहिंसा * परनिंदासम अघ नगरिंसा
हरिगुर निंदक दादुर होई * जन्म सहस्र पावतन सोई
द्विजनिंदकबहुनरकभोगकरि * जगजनमै बायस सरीरधरि
सुरश्रुतिनिंदकजेअभिमानी * रौरव नरक परहिं ते प्रानी
होहिं उलूक संत निंदारत * मोहनिसाप्रियज्ञानभानुगत
सबकै निंदाजे जड करहीं * तेचमगादुर होइ अवतरहीं

सुनहुतात अब मानसरोगा * जिन्हते दुषपावहिंसबलोगा
मोहसकलव्याधिन्हकरमूला * तेहितेपुनि उपजहिंबहुसूला
कामबात कफलोभ अपारा * क्रोधपित्त नितछाती जारा
प्रीतिकरहिं जौं तीनिउभाई * उपजै सन्यपात दुखदाई
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना * तेसब सूलनाम को जाना
ममता दादु कुंड इरषाई * हरष बिषाद गरह बहुताई
परसुष देषिजरनि सोइछई * कुष्ट दुष्टतामन कुटिलई
अहंकारअतिदुषदडमरुआ * दंभकपटमदमान नेहरुआ
तृष्णाउदर बृद्धिअतिभारी * त्रिबिधिईषनातरुन तिजारी
जुगविधिज्वरमत्सरअबिबेका * कहँलगिकहौं कुरोगअनेका
दो० एकब्याधि वस नरमरहिं, एअसाधि बहुब्याधि ॥
पीडहिंसंतत जीवकहँ, सोकिमि लहइ समाधि ॥
नेमधर्म आचार तप, ज्ञान जज्ञ जप दान ॥
भेषजपुनिकोटिन्हनाहिं, रोगजाहिं हरिजान १२१॥
एहिबिधिसकलजीवजगरोगा * सोकहरषभय प्रीतिबियोगी
मानस रोग कछुक मैं गाए * हहिंसबकेलषिबिरलेन्हपाये
जानेते छीजहिं कछु पापी * नासनपावहिंजनपरितापी
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे * मुनिहु हृदयकानर बापुरे
रामकृपा नासहिं सबरोगा * जौं इहिभांति बनै संजोगा
सदगुर बैद बचन बिस्वासा * संजम यहनाबिषयकै आसा
रघुपतिभगतिसजीवनिमूरी * अनूपान श्रद्धामति पूरी
एहिबिधिभलेहिसोरोगनसाहीं * नाहितजतनकोटिनाहिंजाहीं
जानिअतबमनाबिरुजगोसाँई * जबउरबलबिरागअधिकाई

सुमतिछुधा बाढ़ै नित नई * बिषय आस दुर्बलता गई
बिमलाज्ञानजलजब सोनहाई * तबरह राम भगति उरछाई
सिवअजसुकसनकादिकनारद * जेमुनि ब्रह्मबिचार बिसारद
सबकर मतषगनायक एहा * करिअ रामपद पंकजनेहा
श्रुतिपुरान सदग्रंथ कहाहीं * रघुपतिभगतिबिनासुषनाहीं
कमठपीठ जामहिं बरुबारा * बंध्यासुत बरुकाहुहि मारा
फूलहिंनभबरुबहुबिधिफूला * जीवन लहसुषहरिप्रातिकूला
तृषाजाइ बरुमृगजल पाना * बरुजामहिंसससीसाबिषाना
अंधकार बरुरबिहि नसावै * रामबिमुष न जीव सुषपावै
हिमते अनल प्रगटबरुहोई * बिमुषराम सुष पावन कोई

दो० बारि मथे घृतहोइ बरु, सिकता ते बरु तेल ॥
बिनुहरि भजननभवतारिअ, यहसिद्धान्तअपेल ॥
मसकहि करैंबिरंचि प्रभु, अजहि मसक तेहीन ॥
असबिचारि तजि संसय, रामहि भजहिं प्रबीन ॥

श्लोक—बिनिश्चितंबदामिते नअन्यथाबचांसिमे ॥
हरिंनराभजंतिजेतिदुस्तरंतरंतिते ॥ १२२ ॥

कहेउँनाथहरि चरितअनूपा * ब्याससमासस्वमाति अनरूपा
श्रुति सिद्धान्त इहै उरगारी * रामभजियसबकाजबिसारी
प्रभुरघुपतितजिसेइअकाही * मोहिसेसठ परममता जाही
तुम्ह बिज्ञान रूपनहिं मोहा * नाथकीन्हिमोपरअतिछोहा
पूछेहु रामकथाअति पावनि * सुकसनकादिसंभुमन भावनि
सतसंगति दुर्लभ संसारा * निमिषि दंडभरि एकोबारा
देषुगरुडनिज हृदयबिचारी * मैं रघुबीरभजन अधिकारी

मकुनाधमसबभाँतिअपावन * प्रभुमोहिकीन्हिविदितजगपावन

दो० आजुधन्यमैं धन्यअति, जद्यपिसबबिधिहीन ॥
निजजनजानि राममोहि, संतसमागमदीन ॥
नाथजथामति भाषेउँ, राषेउँ नाहिंकछुगोइ ॥
चरितसिंधुरघुनायक, थाहाकि पावै कोइ ॥ १२३ ॥

सुमिरि रामके गुनगननाना * पुनिपुनिहरषभुसुंडिसुजाना
महिमानिगम नेतिकरिगाई * अतुलित बलप्रताप प्रभुताई
सिवअज पूज्यचरन रघुराई * मोपरकृपा परम मृदुलाई
असमुभाउकहुँ सुनउँनदेषौं * केहिषगेसरघुपति समलेषौं
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी * कबिकोबिदकृतज्ञ सन्यासी
जोगी सूर सुतापस ज्ञानी * धर्म निरत पंडित बिज्ञानी
तरहिंनबिनुसेए ममस्वामी * रामनमामिनमामिनमामी
सरन गए मोसे अघ रासी * होहिंसुद्धनमामिअबिनासी

दो० जासु नाम भव भेषज, हरन घोर त्रय सूल ॥
सो कृपाल मोहितोहिपर, सदा रहउ अनुकूल ॥
सुनि भुसुंडिके बचन सुभ, देषिराम पदनेह ॥
बोलेउ प्रेमसहित गिरा, गरुड बिगत संदेह ॥ १२४ ॥

मैंकृत कृत्य भएउँतवबानी * सुनिरघुबीरभगतिरससानी
रामचरन नूतन रति भई * मायाजनितबिपति सबगई
मोहजलधिबोहिततुम्हभए * मोकहँ नाथबिबिध सुषदए
मोपहिंहोइन प्रतिउपकारा * बंदौंतव पदबारहिं बारा
पूरन काम राम अनुरागी * तुम्हसमतातनकोउबडभागी
संतबिटपसरितागिरिधरनी * परहित हेतुसबन्ह कैकरनी

संतहृदय नवनीत समाना ❀ कहाकबिन्हपरिकहैनजाना
निज परिताप द्रवैनवनीता ❀ परदुष द्रवहिंसंत सुपुनीता
जीवनजन्मसुफलमम भएऊ ❀ तवप्रसाद सब संसय गएऊ
जानेहुसदामोहिनिजकिंकर ❀ पुनिपुनिउमाकहइबिहंगवर

दो० तासुचरनसिरनाइकरि, प्रेमसहित मतिधीर ॥
गएउगरुड बैकुंठतब, हृदयराषि रघुबीर ॥
गिरिजासंत समागम, समन लाभ कछुआन ॥
बिनुहरि कृपान होइसो, गावहिं बेदपुरान ॥ १२५ ॥

कहेउँपरम पुनीतइतिहासा ❀ सुनतश्रवनछूटहिंभव पासा
प्रनत कल्पतरुकरुणा पुंजा ❀ उपजै प्रीति रामपद कंजा
मनक्रमबचनजानिअघजाई ❀ सुनहिंजेकथा श्रवन मनलाई
तीर्थाटन साधन समुदाई ❀ जोग बिराग ज्ञान निपुनाई
नानाकर्म धर्म ब्रत दाना ❀ संजमदम जपतपमष नाना
भूत दयाद्विज गुर सेवकाई ❀ बिद्या बिनय बिबेक बडाई
जहँ लगिसाधनबेद बषानी ❀ सबकरफलहरिभगतिभवानी
सोरघुनाथभगतिश्रुति गाई ❀ राम कृपा काहू एक पाई

दो० मुनिदुर्लभ हरिभगति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास ॥
जेयहकथा निरंतर, सुनहिं मानि बिस्वास ॥ १२६ ॥

सोइ सर्वज्ञगुनी सोइ ज्ञाता ❀ सोइमहिमंडित पंडितदाता
धर्मपरायनसोइ कुल त्राता ❀ रामचरन जाकर मन राता
नीतिनिपुनसोइपरमसयाना ❀ श्रुतिसिद्धान्तनीकतेहि जाना
सोइकबिकोबिदसोइरनधीरा ❀ जो छल छाँडिभजै रघुबीरा
धन्य देस सो जहँ सुरसरी ❀ धन्यनारिपतिब्रत अनुसरी

धन्यसो भूप नीति जोकरई * धन्यसोद्विजनिजधर्मनटरई
सोधनधन्यप्रथमगतिजाकी * धन्यपुन्यरतमतिसोईपाकी
धन्यघरीसोइ जब सतसंगा * धन्यजन्मद्विजभगतिअभंगा

दो० सोकुल धन्य उमा सुनु, जगत पूज्य सुपुनीत ॥
श्रीरघुबीर परायन, जेहिनर उपज बिनीत ॥१२७॥

मति अनुरूप कथामैं भाषी * जद्यापिप्रथम गुप्तकरि राषी
तबमनप्रीतिदेषि अधिकाई * तौ मैं रघुपति कथा सुनाई
यहनकहियसठहीहठसीलहि * जो मन लाइनसुनहरि लीलहि
कहियनलोभिहिक्रोधिहिकामिहि * जोनभजइसचराचरस्वामिहि
द्विजद्रोहिहिनसुनाइअकबहूँ * सुरपतिसरिसहोइनृप जबहूँ
रामकथा के तेइअधिकारी * जिन्हकेसतसंगतिअतिप्यारी
गुरुपद प्रीति नीति रत जेई * द्विज सेवक अधिकारी तेई
ताकहँ यहबिसेष सुषदाई * जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई

दो० रामचरन रति जोचह, अथवाँ पद निर्बान ॥
भावसहित सोयह कथा, करौश्रवन पुटपान १२८॥

रामकथा गिरजा मैं बरनी * कलिमलसमनि मनोमलहरनी
संसृत रोग सजीवन मूरी * रामकथा गावहिं श्रुतिसूरी
एहिमह रुचिर सप्तसोपाना * रघुपति भगतिकेर पंथाना
अतिहरि कृपाजाहि परहोई * पाउँ देइ एहि मारग सोई
मनकामना सिद्धिनर पावा * जेयहकथाकपटतजि गावा
कहहिंसुनहिंअनुमोदनकरहीं * तेगोपदइवभव निधि तरहीं
सुनिसबकथाहृदयअतिभाई * गिरिजाबोली गिरासोहाई
नाथ कृपा ममगत संदेहा * रामचरनउपजेउ नव नेहा

दो० मैं कृत कृत्य भइउँ अब, तवप्रसाद बिस्वेस ॥
उपजीराम भगति दृढ़, बीते सकल कलेस ॥ १२९ ॥

यह सुभ संभुउमा संबादा * सुषसंपादन समन बिषादा
भव भंजन गंजन संदेहा * जनरंजन सज्जन प्रियएहा
राम उपासक जेजग माहीं * यहसमप्रियतिन्हकेकछुनाहीं
रघुपतिकृपाजथामतिगावा * मैं यह पावन चरितसुहावा
एहिकलिकालनसाधनदूजा * जोगजग्य जपतप ब्रतपूजा
रामहि सुमिरिय गाइअरामहिं * संततसुनिअरामगुनग्रामहि
जासुपतित पावन बडबाना * गावहिंकबि श्रुतिसंतपुराना
ताहिभजिअमनतजिकुटिलाई * रामभजे गतिकेहि नहिंपाई

छं० पाईनकेहिगतिपतितपावनरामभजिसुनुसठमना ॥
गनिकाअजामिलब्याधगीधगजादिषलतारेघना ॥
आभीरजमनकिरातषसस्वपचादिअतिअघरूपजे ॥
कहिनाम बारकतेपिपावन होहिंराम नमामिते ॥
रघुबंसभूषनचरित यहनरनारि सुनहिं जेगावहीं ॥
कलिमलमनोमलधोइबिनुश्रमरामधामसिधावहीं ॥
सत पंचचौपाई मनोहर जानि जोनर उर धरे ॥
दारुन अविद्या पंचजनित बिकार श्रीरघुबरहरे ॥
सुंदरसुजानकृपानिधान अनाथपरकरप्रीतिजो ॥
सो एकराम अकामहितनिर्बानप्रदसम आनको ॥
जाकी कृपालवलेसते मतिमन्द तुलसी दासहूँ ॥
पायो परम बिश्राम राम समान प्रभुनाहीं कहूँ ॥

दो० मोमम दीनन दीनहित, तुम्ह समान रघुबीर मा०प०३०
अस बिचारि रघुबंसमनि, हरहु बिषम भवभीर ॥
कामिहिनारिपिआरिजिमिलोभिहिप्रियजिमिदाम नवाह ९
तिमिरघुनाथनिरंतरप्रियलागहुमोहिराम ॥ १३० ॥

श्लोक—यत्पूर्वंप्रभुणाकृतंसुकविना श्रीशंभुनादुर्ग्गमं ॥
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यैतुरामायणं ॥
मत्वातद्रघुनाथनामनिरतंस्वांतस्तमःशांतये ॥
भाषाबद्धमिदंचकारतुलसीदासस्तथामानसं १ ॥
पुण्यंपापहरं सदा शिवकरं बिज्ञान भक्तिप्रदं ॥
मायामोहमलापहंसुबिमलंप्रेमांबुपूरंशुभं ॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदंभक्त्यावगाहंतिये ॥
तेसंसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यंतिनोमानवाः ॥ २ ॥

इति श्रीराम चरित मानसे सकलकलिकलुप विध्वंसने
अविरल हरिभक्ति सम्पादिनो नामसप्तमः
✳ सोपानः संपूर्ण शुभं ✳
श्रीजानकी वल्लभो विजयते ॥
ग्रंथसंख्या श्लोक १४१८

॥ आरती ॥

आरतिश्रीरामायनजीकी । कीरतिकलितललितसियपीकी
गावतब्रह्मादिकमुनिनारद । बालमीक बिज्ञान बिसारद ॥
सुकसनकादिसेसअरुसारद । बरनिपवनसुतकीरतिनीकी १
गावत बेदपुरान अष्टदस । छवोसास्त्रसब ग्रंथन को रस ॥
मुनिजनधनसंतनकोसर्वस । सारअंससम्मतसबहीकी॥२॥
गावत संततसंभु भवानी । अरुघटसंभव मुनि बिज्ञानी ॥
व्यासआदि कबिबर्जबषानी । कागभुसुंडिगरुडकेहीकी३॥
कलिमलहरनिबिषयरसफीकी । सुभगसिंगारभक्तिजुवतीकी
दलनिरोग भवमूरि अमीकी । तातमातुसबबिधितुलसीकी ४

* इति आरती संपूर्णम् *

॥ आरती ॥

जगमगजगमगजोतिजगी है।रामआरतीहोनलगीहै ॥ टेक
कंचनभवनरतनसिंहासन । दामनडाँसेझिलिमिलिदामन ॥
तापरराजतजगतप्रकासन।देखतछबिमतिप्रेमपगीहै राम आरती
महकतधूपबरतमहताबी । झलकत कुंडल रबिछबिदाबी ॥
अंगअंगसुन्दरताफाबी । आनँदकीसरिताउमगीहै रामआरती
घंटाघडी मृदंग बजावत । नूपुर पगभरि नाचत गावत ॥
पूरितसंखहिचवरडोलावत।सुनतहिदूरिबलायभगी रामआरती

रूप देषि जननी हरषतुहैं । अंजुरिनदेव सुमन बरसतुहैं ॥
करिदंडवतचरनपरसतुहैं । सुमतिरामकेरंगररँगीहैं राम आरती
नषसिष छबिथरकी । आरती करिये सियबरकी ॥ टेक ॥
लालपीतअंबरअतिसाजें । मुषनिरषत सारद भामि लाजें॥
तिलक चिलक भालन परराजें । कुंकुमकेसरकी ॥आ०॥१
सीस फूल कुंडल झलकतुहैं । चन्द्रहार मोती हलकतुहैं ॥
करकंकनकीछबि छलकतुहैं । जगमगादिनकरकी ॥आ०२
मृदुतरवन में अधिकललाई । हास बिलासनकछुकहिजाई॥
चितवनकीगतिअतिसुखदाई । मनहीमनफरकी॥आ०३॥
सिंहासन पर चवँर दुरतहैं । साजत बाजतजैजै उँचरतुहैं॥
सादरअस्तुतिदेवकरतुहैं । लोटरानि अनुचरकी ॥ आरती४

॥ इति ॥

भवप्रकारकी पुस्तकें मिलने का पता

मुन्शी मथुराप्रसाद बुकसेलर

मु० राजगोपाल पाठशाला के नीके

श्री० अयोध्याजी

दूसरा पता

भार्गव बुकडिपो चौक काशीजी

तीसरा पता—

पंडित रामरत्न वाजपेयी,

मैनेजर

लखनऊ स्टीम प्रिंटिङ्ग प्रेस लखनऊ

उत्तरकाण्ड ।

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७८	१४	पइ	पाइ
	१६	मोर	मोर
४७६	३	र्थ्यौ	पर्थ्यौ
	१७	एकयएकन्ह	एक एकन्ह
४८०	१२	नरग	नगर
	१३	प्रभ	प्रभु
४८३	६	भहीं	भरहीं
४८५	१८	प्रभ	प्रभु
४८६	८	मव	भव
४८७	१६	मुदा	मदा
४८६	१६	दयाकरि	दायाकर
४६२	११	विविथ	विविध
४६३	२३	महस	महेस
४६८	१०	प्रति	श्रुति
५०३	१३	काऊ	कोऊ
५०४	६	धम	धरम
	१३	ग्रह	ग्रिह
	१७	कृपासिंधुक	कृपासिंधुके
५०५	१५	विघि	विधि
५०७	२३	पार	पर
५०८	२३	कटु	कछु
५०६	१	जप	जपि
	१७	उह	उप
५१०	८	विन	विनु
	१०	विन	विनु
	११	भसुंडि	भुसुंडि
५१४	८	भयउ	गयउ
५१२	६	विघि	विधि
५१५	८	विक	वित
	६	यस	यह
	१४	विन	विनु
	१७	साह	सोइ

शुद्धाशुद्ध पत्र अरण्यकाण्ड २

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५१६	१	करें	करें
	६	दिम्म	दिसि
	१७	नहि	नें
५१६	१६	पपेस	पपेस
५१७	१८	फिरन	फिरहिं
५१८	१४	पाले	पाल
५२१	१	नात	नाना
	४	श्रमनि	श्रमित
	२१	नाना	जाना
५२२	२	जैसे	कैसे
५२४	८	सिद्ध	सिद्धि
	२	मिति	मिटिहि
	८	विन	विनु
	१४	विसेषी देषा	विसेषी दूषा
	१८	कोट	कोटि
५२६	१	नतकोटि	सतकोटि
	१२	प्रभुमाव	प्रभुमाव
५२७	१७	सोनरथ	सोनाथ
	२	विधि	विधि
५३१	२२	सब जानि	सब जाति
५३३	२	अधर्म	अधम
	६	विचर	विचरि
	६	काम	काम
५३४	२	हरि	हर
५३५	२१	प्रसीत	प्रसाद
५३६	१	पंडित	पंडि
	२	निगुन	निर्गुन
५४०	१६	माह	मांहि
५४२	२	उपाह	उपाह
५४३	२	अवाघी	अवाधी
	१६	सँजोग	संजोग
५४४	५	दड	दढ
५४६	४	मुप	सुप
५४७	२०	घरि	धरि
५४८	६	कुंड	कंडु

इति